अर्पण

𑒁𑒩𑓂𑒣𑒝

(अंक- 39)

स्वर्ण जयंती वर्ष विशेषांक

मिथिला विभूति-पर्व-समारोह

06, 07 एवं 08 नवम्बर 2022

सम्पादक

डॉ. महेन्द्र नारायण राम

प्रवीण कुमार झा



विद्यापति सेवा संस्थान

मिथिला भवन, विद्यापति चौक, दरभंगा

पंजीयन सं० : 239/84-85



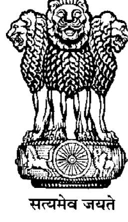
अनुक्रमणिका





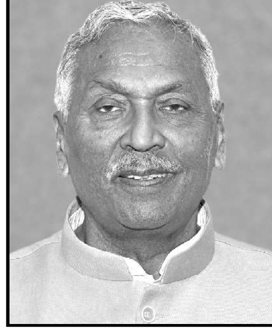
फागू चौहान
PHAGU CHAUHAN

राज भवन
पटना–800022
RAJ BHAVAN
PATNA-800022



राज्यपाल, बिहार
GOVERNOR OF BIHAR

दिनांकः...............................



संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा के तत्वावधान में ''मिथिला विभूति पर्व समारोह-2022 का त्रि-दिवसीय आयोजन आगामी 06 नवम्बर, 2022 से प्रारंभ होने जा रहा है।

आशा है, मिथिला की ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विरासत पर आधारित इस समारोह के माध्यम से बिहार राज्य की भी गरिमा बढ़ेगी।

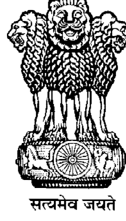
मैं '50वें मिथिला विभूति पर्व-2022' के आयोजन तथा इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली स्मारिका- 'अर्पण' की समग्र सफलता हेतु अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

फागू चौहान

(फागू चौहान)

अश्विनी कुमार चौबे

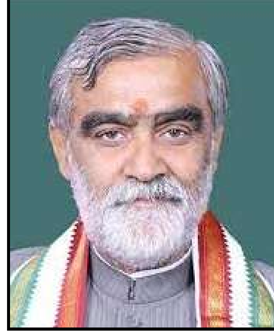
राज्य मंत्री
उपभोक्ता मामले, खाद्य और
सार्वजनिक वितरण
भारत सरकार



30 डॉ. ए.पी.जे.
अब्दुल कलाम रोड
नई दिल्ली- 110011

पत्रांक :...............................

दिनांक: 01.11.2022



शुभकामना संदेश

ई जानि अत्यधिक प्रसन्नता भेल जे विद्यापति सेवा संस्थान द्वारा महाकवि विद्यापतिक महानिर्वाण दिवस अवसर पर तीन दिवसीय **'मिथिला विभूति स्वर्ण-जयंती पर्व समारोह'** केर आयोजन 6 सँ 8 नवम्बर 2022 धरि कयल जा रहल अछि। संगहि एहि अवसर पर स्मारिका **''अर्पण''** केर संग्रहनीय प्रकाशन सेहो आह्लादकारी अछि।

हम समारोह एवं स्मारिकाक सफलताक कामना करैत छी।

(अश्विनी कुमार चौबे)

मदन सहनी
Madan Sahni



मंत्री
समाज कल्याण
बिहार सरकार

पत्रांक/Ref .... दिनांक/Date ....



शुभकामना संदेश

श्री महेन्द्र नारायण रामजी,

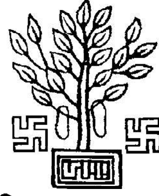
अहाँक पत्र प्राप्त भेट। ई जानि प्रसन्नता भेल जे विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा दिनांक- 06, 07 एवं 08 नवम्बर 2022कें **''मिथिला विभूति पर्व''** स्वर्ण जयंती समारोह रूप मे मनाबऽ जा रहल अछि। इहो जनतब भेल जे ई समारोह 50म छी। एहि अवसर पर 'अर्पण' नामक स्मारिकाक 39म अंक सेहो प्रकाशित होएत। समारोहक आयोजन सँ समस्त मिथिलावासीमे अपन अस्मिताक संग मिथिलाक पौराणिक, ऐतिहासिक- प्रागैतिहासिक, सांस्कृतिक-आध्यात्मिक ओ विद्यामूलक अवदानक प्रति नवोन्मेंष, नव-चेतना एवं नव-सांस्कृतिक उत्कर्षमूलक जागरण होएत।

अस्तु समारोहक संग स्मारिकाक सफलताक लेल हमर हार्दिक शुभकामना अछि।

असीम शुभकामनाक संग,

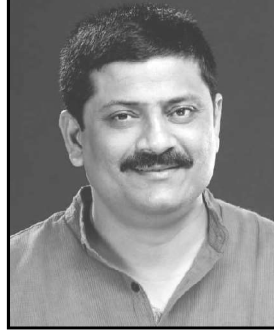
(मदन सहनी)

संजय कुमार झा
मंत्री
जल संसाधन विभाग
सूचना सह जन सम्पर्क विभाग
बिहार, पटना


बिहार सरकार

प्रथम तल, सिंचाई भवन,
हार्डिंग रोड, पटना- 800015
0612-2217696 (का.)
फैक्स : 0612-2215331 (फैक्स)
0612-2200371
E-mail : wrdministercell@gmail.com

पत्रांक :................................ दिनांकः................................



शुभकामना संदेश

ई अत्यंत हर्षक विषय अछि जे दरभंगा में विद्यापति सेवा संस्थान द्वारा दिनांक 06 से 08 नवम्बर, 2022 धरि त्रि-दिवसीय **'मिथिला विभूति पर्व'** समारोहक आयोजन स्वर्ण जयंतीक रूपमे ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा परिसर स्थित डॉ. नागेन्द्र झा स्टेडियम मे कयल जा रहल अछि। मिथिलाक धरती अपन सभ्यता एवं सांस्कृतिक संग लोक परम्परा खान-पान आ मधुरवाणी लेल जगत प्रसिद्ध अछि। एहिठामक मिथिला पेंटिंग विश्वक पटल पर एकटा नव परिचिति देलक अछि। सामा-चकेवा, जट-जटिन जेहन लोक विधा मिथिलाक विरासत ओ लोक संस्कृति के समृद्ध करैत अछि। पर्व समारोह ओ एहि अवसर पर निकालल जा रहल स्मारिका **'अर्पण'**, हमरा निश्चित रूप सँ आह्लादित करैत अछि।

हम मिथिला विभूति पर्व समारोहक सफलता तथा एहि अवसर पर प्रकाशित होमयवला स्मारिकाक सफल प्रकाशनक सुमंगलकामना करैत छी।

(संजय कुमार झा)

ललित कुमार यादव
मंत्री
लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग
बिहार सरकार, पटना



बिहार सरकार

पत्रांक :................................ दिनांकः



शुभकामना संदेश

ई जानि क अत्यन्त प्रसन्नता भेल अछि जे विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा अपन संस्कृति एवं मैथिली भाषा के संरक्षण तथा संवर्धन हेतु सतत् प्रयत्नशील रहल अछि । विद्यापति सेवा संस्थान 50म ‘‘मिथिला विभूति पर्व समारोह’’ 06, 07 आ 08 नवम्बर 2022 क मनाब जा रहल अछि। इ कार्यक्रम ताहि दिशा में महत्वपूर्ण डेग प्रमाणित होयत से विश्वास अछि।

प्राचीन काल सँ महान विभूति सबहक मिथिला के राजा सलहेश, दीनाभद्री, दुर्गादयाल, बंठा चमार सदृश महान विभूति सब अपन अमिट छाप छोड़लनि अछि। मिथिलाक धरती राजा जनक, मंडन भारती, गार्गी, मैत्रेयी, कपिल, कणाद, कालीदास, आयाची ज्योतिश्वर, महाकवि विद्यापति, वाचस्पति सहित अनेक विद्वानक जन्म स्थली रहल अछि।

एहि अवसर पर संस्थान ‘‘अर्पण’’ नामक स्मारिका के प्रकाशन सेहो कऽ रहल अछि। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे स्मारिका पठनीय एवं संग्रहणीय होयत। एहि स्मारिका के माध्यम सँ मिथिला आ मैथिली के गौरवमयी इतिहास, परम्परा एवं महान संस्कृति के जानकारी सम्पूर्ण देश मे जन-जन तक पहुँचत से आशा अछि।

‘‘अर्पण’’ के सफल प्रकाशन तथा सम्पूर्ण आयोजन के सफलता हेतु हमर हार्दिक शुभकामना प्रेषित अछि ।

(ललित कुमार यादव)

विवेक ठाकुर
संसद सदस्य–राज्य सभा
VIVEK TAHKUR
MEMBER OF PARLIAMENT
(RAJYA SABHA)



नई दिल्ली

पत्रांक :................................ दिनांकः................................



शुभकामना संदेश

ई जानि प्रसन्नता भेल जे विद्यापति सेवा संस्थानक तत्वावधान मे 50म त्रि-दिवसीय मिथिला विभूति पर्व समारोहक आयोजन नवम्बर मासक 06, 07आ 08 तारीख कें होमय जा रहल अछि। ई जानि आओर मोन प्रफुल्लित भेल जे एहि अवसर पर महामनिषी गीतकार रवीन्द्र नाथ ठाकुर ओ साहित्यकार उमाकांत सहित अहि साल भरिक अंतराल मे दिवंगत भेल साहित्यकार, सामाजिक, सांस्कृतिक, संस्थानिक आदि क्षेत्र मे उत्कृष्ट योगदान देनिहार विशिष्ट व्यक्ति लोकनिक कृतित्व ओ व्यक्तित्व पर केंद्रित स्मारिका प्रकाशित भ' रहल अछि।

हम एहि समारोहक सफलता आ स्मारिकाक सफल प्रकाशन लेल हार्दिक शुकामना संग एहि समारोह मे आगन्तुक अतिथि, कवि, कलाकार आ गायक लोकनिक अभिनन्दन करैत छी।

(विवेक ठाकुर)

गोपाल जी ठाकुर
संसद सदस्य–लोक सभा
GOPAL JEE TAHKUR
MEMBER OF PARLIAMENT
(Darbhanga - LOK SABHA)



201, Western Court
Janpath, New Delhi
Mob. : 9473199995
8709784233

पत्रांक :................................ **दिनांकः**................................



शुभकामना संदेश

ई जानि कऽ अत्यंत प्रसन्नता भेल जे विद्यापति सेवा संस्थान दरिभंगा केर तत्वावधान मे 50म **''मिथिला विभूति पर्व समारोह''** दिनांक- 06, 07 आ 08 नवम्बर 2022 केँ स्वर्ण जयंतीक रूप मे मनाओल जायत। एहि समय **''अर्पण''** नामक समारिका सेहो प्रकाशित होयत। मिथिलाक सभ्यता आ संस्कृति केर अपन प्रेरणादायी इतिहास आ विरासत रहल अछि। जाहि मे ई समारोह आ स्मारिका केर भूमिका प्रेरणादायक होयत।

हम एहि समारोह आ स्मारिका कऽ सफलताक सुमंगलकामना करैत छी।

असीम मंगलकामना संग-

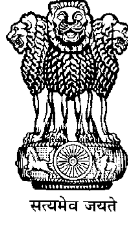
(गोपाल जी ठाकुर)

डॉ. अशोक कुमार यादव

संसद सदस्य

(लोक सभा)

मधुबनी (बिहार)



103, वेस्टर्न कोर्ट

नई दिल्ली

मोबाईल : 9431210204

पत्रांक :.................................

दिनांक:.................................



शुभकामना संदेश

ई जानि प्रसन्नता भेल जे विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगाक 50म् ‘‘मिथिला विभूति पर्व समारोह एहिबेर दिनांक- 06, 07 एवं 08 नवम्बर 2022 कें मनाव जा रहल अछि। एहि अवसर पर ‘अर्पण’ नामक स्मारिका सेहो प्रकाशित होयत, ई मिथिलाक सभ्यता एवं संस्कृतिक गौरवशाली इतिहास कें आओर श्रीवृद्धि करत।

हम समारोह एवं स्मारिकाक सफलताक शुभकामना व्यक्त करैत छी।

(डा. अशोक कुमार यादव)

रामप्रीत मंडल
संसद सदस्य (लोक सभा)
झंझारपुर (बिहार)



108, वेस्टर्न कोर्ट एनेक्सी
नई दिल्ली- 110 001
मोबाईल : 9939735375

पत्रांक :................................ **दिनांकः**...............................



शुभकामना संदेश

मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास अति प्राचीन अछि। मिथिलाक गौरव-गाथा शास्त्र सभमे प्रकाशित अछि। मिथिला विद्वान ओ कलाकार लोकनिक भूमि अछि। पर्व समारोहक आयोजन सँ समाजमे सांस्कृतिक चेतना अबैत अछि। स्मारिकाक प्रकाशन सँ सम्पूर्ण बुद्धिजीवि लोकनिक विचार एवं अभिव्यक्ति प्रसारित होइत अछि।

प्रसन्नता अछि जे विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा दिनांक- 06, 07 एवं 08 नवम्बर 2022 केँ **''मिथिला विभूति पर्व समारोह''** केर आयोजन स्वर्ण-जयंतीक रूप मे भऽ रहल अछि। आ एहि अवसर पर **'अर्पण'** नामक स्मारिकाक प्रकाशन सेहो भऽ रहल अछि।

पर्व समारोह ओ स्मारिकाक सफलता हेतु हम हार्दिक शुभकामना दैत छी।

(रामप्रीत मंडल)

डॉ० मदन मोहन झा स०वि०प०
अध्यक्ष
बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी
सह अध्यक्ष राजभाषा समिति
बिहार विधान परिषद्, पटना
नेता कांग्रेस विधान परिषद् दल



आवास : 127, कौटिल्या नगर, बिहार वेटनरी कॉलेज, पटना -14
आ० कार्यालय : आवास सं०-07, बिहार विधान परिषद् आवासीय परिसर आर-ब्लॉक, पटना-1
फोन/फैक्स : 0612 2951200
मोबाईल नं० : 9431019240 / 9931922110
E-Mail : madanmohanjha56@gmail.com
: officeofmmj@gmail.com

पत्रांक –MMJ2/74

दिनांक -14.10.2022

शुभकामना संदेश



ई जानि अत्यन्त प्रसन्नता भेल जे विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा केर तत्वावधान मे आने वर्षक सदृश्य महाकवि कोकिल बाबा विद्यापतिक निर्वाण दिवस कार्तिक धवल त्रयोदशीक अवसर पर त्रि-दिवसीय मिथिला विभूति पर्वक स्वर्ण जयंती वर्ष समारोहक आयोजन 6, 7 आ 8 नवम्बर 2022 कें ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा परिसर स्थित डा नागेन्द्र झा स्टेडियम मे कयल जा रहल अछि।

संस्थान द्वारा आयोजित एहि साहित्यिक-सांस्कृतिक महाकुम्भक माध्यमे अखिल भारतीय स्तर के कलाकार, सुप्रसिद्ध कवि आ विभिन्न विषयक विद्वान लोकनिक जुटान होयब आह्लादपूर्ण अछि। संस्थानक एहि आयोजन सँ सामाजिक समरसता मे अभिवृद्धि होयबाक संगहि युवा तुर्क कें अपन अमूल्य सांस्कृतिक विरासत सँ परिचित होयबाक सुअवसर सहित मातृभूमि ओ मातृभाषाक संग राष्ट्रप्रेम केर प्रेरणा सेहो भेटैछ।

हम मिथिला विभूति पर्वक स्वर्ण जयंती समारोहक तीन दिन केर कार्यक्रमक सफलता के कामना करैत एहि अवसर पर 'अर्पण' नाम सँ प्रकाशित होबय वला स्मारिका हेतु अपन अशेष शुभकामना प्रेषित करैत छी ।

मदन मोहन झा
(डॉ मदन मोहन झा)

विनोद नारायण झा

पूर्व मंत्री

बिहार पटना



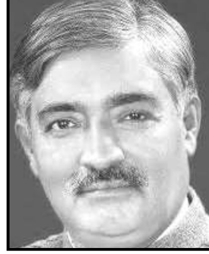
8 एम. स्टैण्ड रोड, पटना

80001

मोबाईल : 9431815798

E-mail : ministerphed0099@gmail.com

पत्रांक : **दिनांकः**



शुभकामना संदेश

ई जानि क अत्यन्त प्रसन्नता भेल अछि जे विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा अपन गौरवमयी परम्परा के अनुरूप आने वर्ष जकाँ अहू वर्ष **मिथिला विभूति पर्व समारोह**, 06, 07 एवं 08 नवम्बर 2022 क मनाबय जा रहल अछि। विद्यापति सेवा संस्थान अपन संस्कृति एवं मैथिली भाषा के संरक्षण तथा सम्वर्धन हेतु विगत 49 साल सँ प्रयत्नशील रहल अछि। ई कार्यक्रम ताहि दिशा में महत्वपूर्ण डेग प्रमाणित होयत-से विश्वास अछि।

मैथिली भाषा साहित्यक इतिहास मे मातृभाषाक स्वरूप मे मैथिलीक संरक्षण, संबर्द्धन आ प्रबर्द्धनक अभियान लगभग 1920ई. मे आरंभ लेल छल। विद्यापतिक 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' केर उद्घोष संग अपन भाषाक प्रति जन जागरण केर अभियान सेहो एहि लगपास 1920-30 केर मध्य मानल जाइछ। तँ मातृभाषा लेल समर्पण संग विभिन्न कार्यक्रम आ आधुनिक सृजनकर्मक आयु करीब 100 वर्ष 2020ई. मे पूर्ण भेल ई कहल जा सकैत अछि।

एखन हमरा लोकनि देखि रहल छी जे मैथिली सृजन कर्म खूब गतिमान अछि। कियो अपन मातृभाषाक अनुपम सृजनक अनुवाद कय अंग्रेजी मे वृहत पटल पर अनबाक काज क रहलाह अछि, तऽ कियो फिल्म निर्माण केर कार्य कऽ भाषा लेल आधुनिक पोषण देबाक कार्य क रहलाह अछि, कियो विद्यालय आ गाम-गाम मे घुमि कऽ धिया-पुता मे मातृभाषा सृजन करबाक कर्म सीखा रहलाह अछि, सैकड़ो के संख्या मे मिथिलाक्षर प्रशिक्षण करा रहलाह अछि, अपनहुं जेबीक पैसा लगा क मैथिली पोथी प्रकाशन करा रहलाह अछि, कियो लेखनीसंग समाज लेल नेतृत्व करबाक प्रशिक्षण करा रहलाह अछि, जिनका जहि तरहें होइ छनि से अपना मातृभाषा लेल समर्पित सेवादान कऽ रहलाह अछि। इ सब शुभ लक्षण अछि।

एहिलेल डॉ. बैद्यनाथ चौधरी बैजू, डॉ. महेन्द्र नारायण राम एवं प्रवीण कुमार झा सहित संस्थाक सब सहयोगी लोकनि के संग पर्व समारोह एवं स्मारिकाक सफलता कऽ शुभकामना समर्पित करैत छी।

भवदीय

विनोद नारायण झा

(विनोद नारायण झा)

डॉ. रामप्रीत पासवान
पूर्व मंत्री
बिहार सरकार, पटना



निवास
आर. ब्लॉक
मोबाईल : 9431801258, 9431402258
ई–मेल : paswanramprit@gmail.com

पत्रांक :................................. **दिनांकः**



शुभकामना संदेश

अत्यधिक हर्षित ओ आह्लादित भेलहुँ ई जानि जे विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा 50वाँ **"मिथिला विभूति पर्व समारोह"** दिनांक 06, 07 आ 08 नवम्बर 2022कें मनाओल जायत। एहि अवसर पर **'अर्पण'** नामक स्मारिकाक प्रकाशन सेहो कयल जायत। एहि माध्यम सँ निस्संदेह अपन मातृभाषा मैथिली आ मिथिलाक ऐतिहासिक समृद्ध संस्कृति सर्वत्र संरक्षित होयत रहत।

अस्तु दूधक भाषा मैथिली आयोजनक स्मारिकाक सफल प्रकाशन लेल हमर हार्दिक शुभकामना स्वीकार कैल जाय।

असीम शुभकामनाक संग!

(रामप्रीत पासवान)

जीबेश मिश्र

पूर्व मंत्री

बिहार, पटना



बिहार सरकार

पत्रांक :............................... दिनांकः...............................



शुभकामना संदेश

ई जानि प्रसन्नता भेल जे विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा द्वारा आने सालक भांति एहू साल मिथिला विभूति पर्व समारोह मनाओल जा रहल अछि। ई आओर हर्षक विषय थिक जे एहि पुनीत अवसर पर ‘‘अर्पण’’ केर संग्रहणीय विशेष अंक प्रकाशित करबाक सेहो निर्णय भेल अछि।

हम कवि कोकिल विद्यापतिक प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करैत समारोह केर सफल आयोजन एवं स्मारिकाक उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु शुभकामना प्रेषित करैत छी ।

असीम शुभकामनाक संग ।

(जीवेश मिश्र)

डॉ० आलोक रंजन
पूर्व मंत्री
बिहार, पटना



Dr. Alok Ranjan
Ex-Minister
Bihar, Patna

पत्रांक :.............................. **दिनांकः..............................**



उद्‌गार आ शुभाशंसा

विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा आगामी 06-08 नवम्बर 2022 कऽ आयोज्य त्रिदिवसीय मिथिला विभूति पर्व समारोहक अवसर पर प्रकाश्य स्मारिकाक सूचना लिखल प्रेषित पत्र सँ ज्ञात भेल। एहि निमित्त सम्पादक द्वय कें कोटिशः साधुवाद।

कोनो समाजक जीवन्तताक परिचय भोजन में निहित्त कैलोरी, वस्त्रक रूप, आवास आ ओकर निर्मितिक अवयव वा अन्यान्य भौतिक उपकरण वा संसाधन मात्रे सँ नहि भेटैत छैक अपितु ओ समाज अपन भाषा, साहित्य, दर्शन, इतिहास, परम्परा, रीति-रिवाज, संस्कृति सभ्यता आ संस्कार-गीत-प्रगीत, अस्तित्व आ अस्मिता आदिक प्रति कतेक सचेष्ट आ संकल्पित अछि आकुल व्याकुल अछि, आ आबद्ध आ प्रतिबद्ध अछि, दक्ष आ प्रवीण अछि..... तदर्थे ओकर घ्राण-प्राण- सम्मानक परिमिति आ परिचितिक प्रमाण बनैत अछि। मैथिल कुल पुरुष विद्यापति, चिति-भित्ति पुरुष विद्यापति, कृतिकार - सरोकार पुरुष विद्यापति, मंत्र-यंत्र पुरुष विद्यापति कृति कीर्त्ति पुरुष विद्यापति, आप्त-व्याप्त पुरुष विद्यापति सम्मान-अभिमान पुरुष विद्यापति....क श्रद्धास्पद स्मरण स्फुरण ओही आत्मावलोकन आ आत्मप्रबोधनक प्रमाण थीक।

किछु गोटे इतिहास पढैत छथि, किछु गोटे इतिहास बांचौत छथि, किछु गोटे इतिहास में जीवैत छथि, किछु गोटे इतिहास रचैत छथि आ किछु गोटे स्वयं इतिहास पुरुष के रूप में अवलोकित होइत छथि। श्री वैद्यनाथ चौधरी वस्तुतः मैथिलीक इतिहास पुरुष रूप में स्वतः ख्यात छथि।

शुभकामना संदेश पठेबाक योग्य हमरा बुझलहुँ एतदर्थ हम आभारी छी।

मिथिला विभूति पर्व समारोहक यशस्वी आयोजन आ संग्रहणीय स्मारिकाक प्रकाशन हेतु हम हृदय सँ शुभकामना आ शुभाशंसा प्रेषित करैत छी।

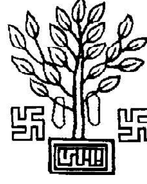
जय मैथिली

आलोक रंजन

(डॉ० आलोक रंजन)

संजय सरावगी

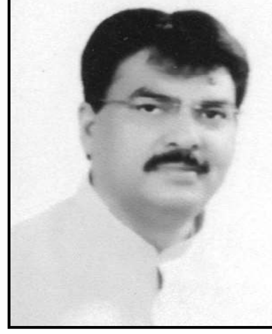
विधायक (दरभंगा सदर)



Sanjay Saraogi

MLA, (Darbhanga Sadar)

Ref. No. .... Date ....



शुभकामना संदेश

विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा एहि बेर 50म् ''मिथिला विभूति पर्व समारोह'', दिनांक- 06, 07 एवं 08 नवम्बर, 2022 केँ मनाबऽ जा रहल अछि। एहि अवसर पर 'अर्पण' नामक स्मारिकाक 39म् अंक सेहो प्रकाशित कराबऽ जा रहल अछि, ई जानि बेसी प्रसन्नता भेल।

मिथिला अपन संस्कृति एवं सभ्यताक लेल जगतप्रसिद्ध अछि। एहि ठामक खान-पान, रहन-सहन ओ मधुरवाणी सेहो जगतप्रसिद्ध अछि। एकर लोकसंस्कृति एवं विरासत अक्षुण्ण अछि। मिथिला विभूति पर्व समारोह एवं 'अर्पण' मिथिलाक गौरवमयी इतिहास केँ विकास मे एकटा आओर डेग अछि।

हम समारोह एवं स्मारिकाक पूर्ण सफलताक शुभकामना करैत छी।

असीम शुभमंगलकामनाक संग

(संजय सरावगी)

डॉ. रामचन्द्र प्रसाद
सदस्य
बिहार विधान सभा
हायाघाट (दरभंगा)



बिहार सरकार

पटना

पत्रांक :................................ दिनांकः................................



शुभकामना संदेश

मिथिला अति प्राचीन काल सँ विद्वान ओ मनीषीक भूमि रहल अछि। एहि ठाम लोरिक, सलहेस, दीनाभद्री, मंडन, अयाची, भारती, गार्गी, विद्यापति आदिक अवतरण होइत रहलनि अछि। हमरा खुशी अछि जे विद्यापति सेवा संस्था, दरभंगा द्वारा **"मिथिला विभूति पर्व समारोह"** मनाओल जाइत रहलैक अछि। एहि बेर 50म आयोजन दिनांक- 06, 07 एवं 08 नवम्बर 2022 के होमऽ जा रहल अछि। संगहि 39म अंक **'अर्पण'** केर प्रकाशन सेहो होयत।

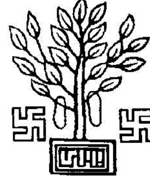
हम समारोह एवं स्मारिकाक पूर्ण सफलताक शुभकामना करैत छी।

असीम शुभकामना संग

डॉ० रामचन्द्र प्रसाद

डॉ. मिश्री लाल यादव

सदस्य
बिहार विधान सभा, पटना



Ref. No. .... Date ....



शुभकामना संदेश

विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा एहि बेर 50म् ''मिथिला विभूति पर्व समारोह'', दिनांक- 06, 07 एवं 08 नवम्बर, 2022 केँ मनाबऽ जा रहल अछि। एहि अवसर पर 'अर्पण' नामक स्मारिकाक 39म् अंक सेहो प्रकाशित कराबऽ जा रहल अछि, ई जानि बेसी प्रसन्नता भेल।

मिथिला अपन संस्कृति एवं सभ्यताक लेल जगतप्रसिद्ध अछि। एहि ठामक खान-पान, रहन-सहन ओ मधुरवाणी सेहो जगतप्रसिद्ध अछि। एकर लोकसंस्कृति एवं विरासत अक्षुण्ण अछि। मिथिला विभूति पर्व समारोह एवं 'अर्पण' मिथिलाक गौरवमयी इतिहास केँ विकास मे एकटा आओर डेग अछि।

हम समारोह एवं स्मारिकाक पूर्ण सफलताक शुभकामना करैत छी।

असीम शुभमंगलकामनाक संग

(डॉ. मिश्री लाल यादव)

डॉ. मुरारी मोहन झा

सदस्य

बिहार विधान सभा, पटना



Ref. No. .... Date ....



शुभकामना संदेश

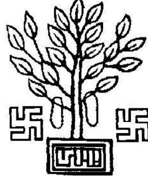
विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा एहि बेर 50म् ''मिथिला विभूति पर्व समारोह'', दिनांक-06, 07 एवं 08 नवम्बर, 2022 केँ मनाबऽ जा रहल अछि। एहि अवसर पर 'अर्पण' नामक स्मारिकाक 39म् अंक सेहो प्रकाशित कराबऽ जा रहल अछि, ई जानि बेसी प्रसन्नता भेल।

हम समारोह एवं स्मारिकाक पूर्ण सफलताक शुभकामना करैत छी।

असीम शुभमंगलकामनाक संग

(डॉ. मुरारी मोहन झा)

डॉ. विनय कुमार चौधरी
सदस्य
बिहार विधान सभा, पटना



Ref. No. .... Date ....



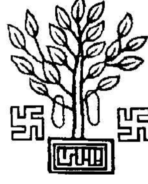
शुभकामना संदेश

ई जानि अत्यधिक प्रसन्नता भेल जे विद्यापति सेवा संस्थान द्वारा गत वर्षक सदृश एहू साल महाकवि विद्यापतिक महानिर्वाण दिवस अवसर तीन दिवसीय **मिथिला विभूति पर्वक स्वर्ण-जयंती** समारोह मनाबय जा रहल अछि। संगहि एहि अवसर पर स्मारिका ‘‘अर्पण’’ केर संग्रहणीय प्रकाशन सेहो आह्लादकारी अछि ।

हम समारोह एवं स्मारिकाक सफलताक कामना करैत छी ।

(डॉ. विनय कुमार चौधरी)

वीरेन्द्र पासवान
सदस्य
बिहार विधान सभा, पटना



Ref. No. .... Date ....



शुभकामना संदेश

ई जानि प्रसन्नता भेल जे विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा द्वारा आने सालक भांति एहू साल मिथिला विभूति पर्व समारोह मनाओल जा रहल अछि। ई आओर हर्षक विषय थिक जे एहि पुनीत अवसर पर ''अर्पण'' केर संग्रहणीय विशेष अंक प्रकाशित करबाक निर्णय भेल अछि।

हम कवि कोकिल विद्यापतिक प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करैत समारोह केर सफल आयोजन एवं स्मारिकाक उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु शुभकामना प्रेषित करैत छी ।

(वीरेन्द्र पासवान)

रामलषण राम 'रमण'

पूर्व सदस्य, बिहार विधान परिषद

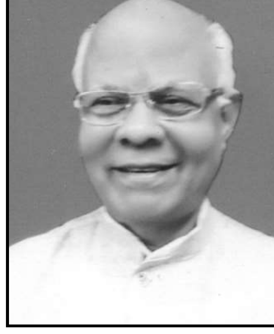
पूर्व अध्यक्ष, अनुसूचित जाति एवं अनु. जनजाति
कल्याण समिति, बिहार विधान परिषद्, पटना
पूर्व मंत्री, शिक्षा विभाग, खान एवं भूतत्व विभाग,
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग
तथा स्वास्थ्य विभाग, बिहार सरकार



बिहार सरकार

158, सांसद-विधायक कॉलोनी,
कौटिल्य नगर (नेटनरी कॉलोनी),
पटना- 800014
मो०- 9473199415, 9431694699

पत्रांक :................................ दिनांकः................................



शुभकामना संदेश

ई अति प्रसन्नताक विषय अछि जे विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा 06, 07 एवं 08 नवम्बर, 2022 कऽ 50म् मिथिला विभूति पर्व समारोह स्वर्ण-जयंतीक रूप मे ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगाक डॉ. नागेन्द्र झा स्टेडियम परिसर मे आयोजित भऽ रहल अछि।

वर्ष 1980 सँ कतेको बेर विद्यापति सेवा संस्थान द्वारा आयोजित मिथिला विभूति पर्व समारोह मे भाग लेबाक सौभाग्य प्राप्त होइत रहल अछि।

हमरा प्रसन्नता अछि जे एहि साल प्रकाशित होमऽ वाला स्मारिका 'अर्पण' केर 39म अंक मिथिला आंदोलनक स्वर्णिम इतिहास, मिथिला मैथिली आन्दोलन में विद्यापति सेवा संस्थानक योगदान ओ मिथिला केर सर्वांगीण विकास लेल पृथक मिथिला राज्यक गठन केर औचित्य सहित गीतकार रवीन्द्र नाथ ठाकुर ओ साहित्यकार उमाकांत सहित साल भरिक अंतराल मे दिवंगत भेल साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, सांस्थानिक आदि क्षेत्र मे उत्कृष्ट योगदान देनिहार विशिष्ट लोकनि यथा- पं. हरिद्वार प्रसाद खंडेवाल, छत्रानन्द सिंह, शंभू नाथ झा, मंजू चतुर्वेदी आदिक व्यक्तित्व ओ कृतित्व पर केन्द्रित विशेषांक निकलि रहल अछि।

हम अपन हार्दिक शुभकामना प्रकट करैत छी।

रामलषण राम रमण

(रामलषण राम 'रमण')

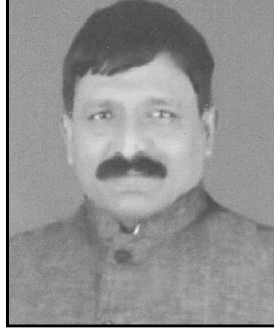
लक्ष्मेश्वर राय
Lakshmeshwar Roy



पूर्व मंत्री
बिहार सरकार
Ex. Minister
Govt. of Bihar

पत्रांक :.................................

दिनांकः



शुभकामना संदेश

ई हर्षक विषय अछि जे विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा आगामी 06, 07, एवं 08 नवम्बर, 2022 के **'मिथिला विभूति पर्व समारोह'** 50म् आयोजन करऽ जा रहल अछि। एहि अवसर पर **'अर्पण'** नामक स्मारिकाक प्रकाशन सेहो करऽ जा रहल अछि। ई संस्थान मैथिली भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण एवं संबर्द्धनक काज मे पछिला सैंतालिस वर्ष सँ सक्रिय अछि। मैथिली भाषाक गौरवपूर्ण इतिहास रहल अछि। राजनीतिक, साहित्यिक, सामाजिक, कला एवं संस्कृति सँ सम्बन्धित सभ क्षेत्र में एहि ठामक लोक अपन प्रतिभा, लगन, मेहनति एवं समृद्ध संस्कृतिक छाप छोड़लनि अछि।

हम, एहि शुभ अवसर पर समस्त मिथिला समाज के बधाई दैत छी आ 'अपर्ण' नामक स्मारिकाक सफल प्रकाशनक कामना करैत छी।

(लक्ष्मेश्वर राय)

Office : Ground Floor, Old Secretariate, Patna, Tel. No. : 0612-2217705 (O), 0612-2286905 (Res.)
Fax No. : 0612-2217704, Mob. : 9430446648, E-mail : ministerdmd@gmail.com

डॉ. दिलीप कुमार चौधरी

Dr. Dilip Kr. Choudhary



पूर्व सदस्य

बिहार विधान परिषद्, पटना

पत्रांक :...............................

दिनांक:



शुभकामना संदेश

ई जानि अत्यन्त प्रसन्नता भेल जे विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा केर तत्वावधान मे महाकवि कोकिल बाबा विद्यापतिक निर्वाण दिवस कार्तिक धवल त्रयोदशी अवसर 50म त्रि-दिवसीय मिथिला विभूति पर्व समारोहक आयोजन 06, 07 आ 08 नवम्बर 2022 कें कयल जा रहल अछि।

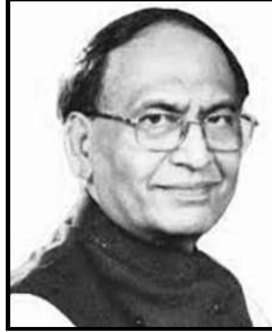
संस्थान द्वारा आयोजित एहि साहित्यिक-सांस्कृतिक महाकुम्भ मे अनेक विशिष्ट कलाकार, सुप्रसिद्ध कवि आ विभिन्न विषयक विद्वानक जुटान होयब आह्लादपूर्ण अछि।

हम 50म मिथिला विभूति पर्व समारोहक तीन दिन केर कार्यक्रमक सफलता के कामना करैत एहि आयोजन सँ जुड़ल सभ मातृभूमि आ मातृभाषा अनुरागी लोकनिक प्रति कृतज्ञताक भाव प्रदर्शित करैत एहि अवसर पर 'अर्पण' नाम सँ प्रकाशित होबय वला स्मारिका हेतु अपन अशेष शुभकामना प्रेषित करैत छी ।

(डा. दिलीप कुमार चौधरी)

Dr. C. P. Thakur
Chancellor, South Bihar Central University, Gaya
Former Member of Parliament (Lok Sabha & Rajya Sabha)
Former Union Minister, Govt. of India
MBBS (Hons. & Gold Medalist) MD Pat MRCP (London & Edin)
FRCP (London & Edin)
Emeritus Prof. of Medicine, Patna Medical College, Padam Shree
Dr. B. C. Roy Awardee, P. N. Raju Awardee (ICMR)
B. N. Aiket Awardee (ICMR), Ranbaxy Research Awardee,
Dr. B. C. Roy Awardee (Major), D. Sc. (Hons.), Manipur
Expert WHO (Geneva)
PHYSICIAN AND CARDIOLOGIST

Uma Complex
Fraser Road, Patna - 800001
Ph. : 0612-2226545 / 2221797
Fax : 0612-2972579
E-Mail : cpthakur1@rediffmail.com
thakurcp@gmail.com
Website : www.bus.org.in



शुभकामना संदेश

ई जानि अत्यन्त प्रसन्नता भेल जे विद्यापति सेवा संस्थान एहि बेर 06, 07 आ 08 नवम्बर 2022 कें त्रि-दिवसीय मिथिला विभूति पर्व समारोहक आयोजन स्वर्ण जयंतीक रूप मे क' रहल अछि। हम एहि समारोहक सफलता केर कामना करैत छी आ एहन तरहक आयोजनक लेल अपने सब गोटे कें हृदय सँ बधाई दैत छी।

एहि तरहक आयोजन समाज कें साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास में सहायता प्रदान करैछ। विशेष रूप सँ समाजक युवा वर्ग कें बहुत रास नीक चीज सीखबाक अवसर भेटैछ। एहन अवसर समाजक गुणी आओर विद्वान लोकनिक साक्षात्कार, हुनक अनमोल वचन आदि सुनबाक सेहो अवसर प्रदान करैत अछि। हमरा जनैत एहि तरहक विद्वत आ शाश्वत आयोजन एकटा प्रशिक्षण स्थली बनि जाइत अछि।

हम पुनः एहि आयोजन आ स्मारिका प्रकाशन केर पूर्ण सफलताक कामना करैत छी।

C. P. Thakur

प्रोफेसर सुरेन्द्र प्रताप सिंह
कुलपति
Prof. Surendra Pratap Singh
Vice-Chancellor



ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY
कामेश्वरनगर, दरभंगा - 846004 बिहार
Kameshwaranagar, Darbhanga - 846004 Bihar

Letter No. ....
Date ....



शुभकामना संदेश

हम ई बुझि कए अभिभूत छी जे विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा अपन मिथिला विभूति पर्व समारोहक स्वर्ण-जयंतीक सुअवसर पर स्मारिका ‘‘अर्पण’’ केर 39म् अंकक प्रकाशन करए जा रहल अछि। एहि संस्थानक गतिविधि पर आधारित पत्रिकाक पूर्वहिसँ प्रकाशन होइत आबि रहल अछि। ई स्मारिकाक संस्थानक एक एहन महत्त्वपूर्ण अभिलेख अछि जकर आधारपर संस्थान अपन विवेकपूर्ण मूल्यांकन एकटा भविष्यक हेतु विकासक सम्यक दिशाक निर्धारण कऽ सकत।

मिथिला प्राचीन कालहिसँ शिक्षा, संस्कृति एवं सभ्यताक केन्द्र बनल रहल अछि। एहि प्रकारक स्मारिकाक प्रकाशन एकटा सार्थक आओर सुखद पहल अछि। हम एकर सराहना करैत छी।

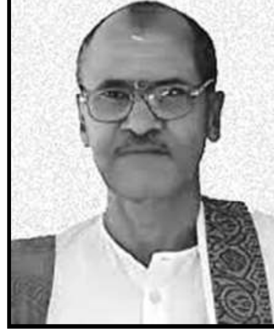
सुरेन्द्र प्रताप सिंह

प्रो० शशिनाथ झा
कुलपति
कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृतविश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार- 846008



Prof. Shashi Nath Jha
Vice-Chancellor
Kameshwarsingh Darbhanga Sanskrit
University, Darbhanga, Bihar - 846008
Email-ksdsuvc@gmail.com
Mob. : 9199475909

पत्रांक :............................... दिनांक:...............................



शुभकामना संदेश

मिथिला विभूति पर्व समारोह 2022 विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा पूर्व वर्षहि जकाँ एहू साल सोल्लास मनाओल जाएत ओ ताहि अवसर पर महत्त्वपूर्ण सामायिक प्रसंग पर केन्द्रित स्मारिका 'अर्पण' लोकार्पित होएत। एहि लेल संस्थापक महासचिव डॉ. वैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' ओ स्मारिकाक सम्पादक डॉ. महेन्द्र नारायण राम ओ प्रवीण कुमार झाजी केँ अनेक साधुवाद।

विशेष कऽ विशिष्ट स्वर्णजयंती समारोहक एहि विराट आयोजनक ऐतिहासिक महत्त्व रहत आ तकरा स्मारिका सेहो जोगा कऽ रखबा योग्य रहत, किएकतँ एहिमे मिथिला-मैथिलीक विकासात्मक आन्दोलनक प्रामाणिक विवरण, ताहि आन्दोलन मे एहि संस्थानक सहभागिताक विवेचन, मिथिला राज्यक औचित्य पर प्रकाश ओ विगत वर्ष में दिवंगत विविध क्षेत्र में कीर्त्ति स्थापित कएनिहार विद्वान् ओ कलाकार आदिक विषय मे जानकारी प्रस्तुत रहत। एहि सँ स्मारिका, संस्थान ओ सम्पूर्ण मिथिला गौरवान्वित होएत। अतः एहि लेल संस्थानक सभ सदस्यक संग स्मारिका केँ शुभकामना प्रेषित करैछी।

शशिनाथ झा

कमलाकान्त झा

पूर्व अध्यक्ष, मैथिली अकादमी,
बिहार सरकार सह अध्यक्ष
सलाहकार समिति, विद्यपति सेवा संस्थान

पत्रांक :................................ दिनांकः................................



शुभकामना संदेश

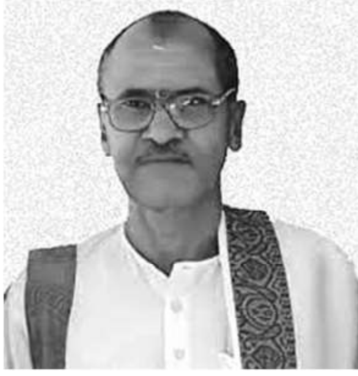
विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा अपन 50म मिथिला विभूति पर्व समारोहक अवसर पर संग्रणीय स्मारिकाक प्रकाशन करय जा रहल अछि जे प्रशंसनीय अछि।

संस्थानक यशोलतिका चतुर्दिक लतरल चतरल ओ पसरल अछि। संस्थानक उपलब्धि सम्पूर्ण देशक मैथिली भाषीक बीच चर्चित, परिचित आ अर्चित अछि। एहि बेर डॉ. महेन्द्र नारायण रामक ओ प्रवीण कुमार झाक सम्पादकत्व मे आकर्षक मनोहारी आ नयनाभिराम स्मारिकाक प्रकाशन भऽ रहल अछि।

संस्थानक अध्यक्ष, महासचिव ओ सभ सदस्य कें अनन्त मंगल कामना सम्प्रेषित करैत एकेटा सेहन्ता उद्घाटित करब जे मिथिला राज्य कोना हो ताहि पर सभक चिन्तन, मनन ओ अनुशीलन आवश्यक।

कमला कान्त झा

(कमलाकान्त झा)



अध्यक्षीय वक्तव्य

विद्यापति सेवा संस्थान मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक अधिकार प्राप्ति, संरक्षण, विकास ओ प्रचार-प्रसारक लेल विगत 50 वर्ष सँ तत्पर रहल अछि। एहि सम्बन्ध मे साहित्य-संगोष्ठी, विचारगोष्ठी, समारोह, आन्दोलन, जनसम्पर्क, साहित्यकार सम्पर्क, नव तूरक उत्साहवर्धन इत्यादि कार्यक्रम यथावसर एहि संस्था द्वारा चलैत रहैत अछि। एहिमे सभ वर्गक ओ स्तरक लोकक सहयोग एकर विकास हेतु प्राप्त रहैत अछि।

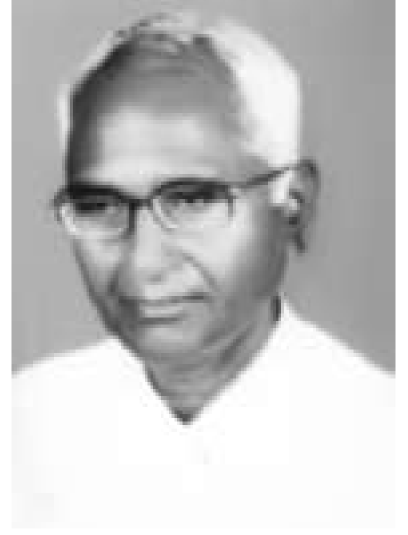
एहि बेर एकर पचासम स्थापना वर्षक उपलक्ष्य मे एकर स्वर्णजयन्तीक विराट् आयोजन भऽ रहल अछि ताहि मे सभक उत्साह देखि पड़ि रहल अछि। पर्वू-वर्षक परम्परानुसार एहू बरे एहि मिथिलाविभूति पर्वक अवसर पर विद्वान, कलाकार, साहित्यकार आदि विशिष्ट व्यक्ति केँ 'मिथिला विभूति' उपधि सँ अलंकृत कएल जाएत। कविसम्मेलन, विचार गोष्ठी, रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, विद्वद्गण तथा नेतागणक भाषण आदि कार्यक्रम विस्तृत स्थान 'नागेन्द्र झा स्टेडियम' मे होएत। एहि प्रकारक विशाल आयोजनक महत्त्व चिरकाल धरि स्मरणीय रहत।

एहि अवसर पर पूर्ववर्षक भाँति एक विशिष्ट स्मारिका 'अर्पण' प्रकाशित भए रहल अछि जकर आरम्भ 39 पूर्व भेल छल आ तहिआ सँ लगातार चलैत सम्प्रति उनचालिसम अंक ई थिक। एकर विशेषता पाठकवृन्द स्वयं बुझताह। महासचिव डॉ. बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू', सम्पादक डॉ. महेन्द्रनारायण राम ओ श्री प्रवीण कुमार झा केँ एहि लेल धन्यवाद दैत छियनि जे एहि स्मारिका केँ सुव्यवस्थित गौरवपूर्ण बनओलनि अछि।

शशिनाथ झा

(शशि नाथ झा)
अध्यक्ष
विद्यापति सेवा संस्थान
दरभंगा

कार्यकारी अध्यक्षक शुभाशंसा



मिथिला स्वयंमे सिद्धपीठ अछि। ताहि मिथिलाक हृदयस्थली दरभंगा आ दरभंगाक गौरवशाली संस्थान ''विद्यापति सेवा संस्थान'' आइ अपन स्थापना काल सँ पचासम वर्ष पूर कऽ रहल अछि। एहि अवसर पर ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालयक नागेन्द्र झा स्टेडियम परिसरमे स्वर्ण जयंती मिथिला विभूति पर्व समारोह 6,7 एवं 8 नवम्बर, 2022 को मनाबऽ जा रहल अछि। एहि संस्थानक गरिमायुक्त अध्यक्ष मान्यवर डॉ. मणिपद्म, वरेण्य सुरेन्द्र झा सुमन, पं. अमरजीक संग कार्यकारी अधीक्षक रूपमे पंडित देव नारायण झा सन लोकनिक संस्थानक कर्त्तव्य बोध सँ अवगत करौलनि एहि कड़ीमे हमहूँ आइ एक्कैस वर्ष सँ कार्यकारी अध्यक्षक भार अपन कर्त्तव्य बुझि वहन करैत आबि रहल छी। पुरुष स्थापना कालहि सँ एहि मे महादेवक अंशीय महासचिवकेर पद के दुशोभित करऽवला डा. बैजनाथ चौधरी 'बैजू'जीक अमूल्य योगदान के बिसरब महापाप के बरोबरि हयत। ओ सम्पूर्ण जीवन मिथिला आ मैथिली केँ समर्पित कऽ देलनि अछि ओ एकटा आदर्श व्यक्तिक रुपमे सतत् संस्थानक मध्य ठाढ़ रहलाह अछि। ओ मैथिली भाषा, मिथिलाक अस्तित्व ओ मिथिला राज्य लेल सतत् संघर्ष आ आन्दोलन करैत आबि रहल छथि। ओ एकर नेतृत्वकर्त्ता रहलाह अछि। हम सब हुनका सहयोग करैत आबि रहल छी। मुदा तइयो ओ बहुत रास झंझावात एखनो झेलिये रहल छथि।

मिथिला विभूति पर्व समारोह विगत पचास वर्ष सँ अनवरत मनबैत अबैत छथि। ई ऐतिहासिक कार्य थिक। एहि बेर ई स्वर्ण जयंतीक रूपमे विस्तार सँ मनोबाक योजना फलीभूत हयत। एहि लेल ओ धन्यवादक पात्र छथि। संगहि एहि अवसर पर निकलऽवला 'अर्पण' नामक मुखपोथीक ई 39म् अंक प्रकाशित होयत जाहिमे संपादक डॉ. महेन्द्र नारायण राम ओ प्रवीण कुमार झा बहुत मनोयोगपूर्वक एकर विशिष्ट बनेबामे सफल होइत छथि, सेहो धन्यवादक पात्र थिकाह।

अंतमे फेर हम प्रत्यक्ष ओ परोक्ष रूपेँ लागल सहयोगी लोकनिक संग संस्थानक ऊर्जावान कर्मठ, जुझारू महासचिवमे अनवरत मिथिला मैथिलीक संघ बीच डॉ. बैजनाथ चौधरी 'बैजू' के पुनः साधुवाद दैत छियनि।

मिथिलावासी सँ इहो अपील जे माँ मैथिलीक सेवामे अनवरत सहयोग करैत रही।

जय मिथिला..... जय मैथिली.....

(डॉ. बुचरू पासवान)

महासचिवक प्रतिवेदन...........



अदौ काल सँ अपन पृथक अस्तित्व लेल आबि रहल एक स्वतंत्र भाषा मैथिली कोनो आन भारतीय भाषा सँ ऊपर अछि।

विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा अपन स्थापना काल 1972ई. सँ मिथिला ओ मैथिलीक सर्वांगीण विकास लेल समस्त देश-प्रदेश-विदेशक मैथिली के जोड़ि विचार-विमर्श कऽ एकर समृद्धि लेल अनवरत संघर्ष करैत रहल अछि, जाहि पदमूश्री सी.पी. ठाकुर, अटल बिहारी बाजपेयी सँ लऽ कऽ मिथिलाक कतेको व्यक्तित्व लोकनि महत्वपूर्ण योगदान के बिसरल नहि जा सकैत अछि। आई मैथिली अष्टम अनुसूचीमे अछि, मुदा तइयो मैथिली भाषा के विस्मृत करबाक लेल मगही, भोजपुरी, अंगिका आ बज्जिका नामे साजिश आ षडयंत्र प्रकारान्तो सेहो चलिए रहल अछि। एहि लेल सावधान ओ अगिला लड़ाइ लड़बाक लेल तैयार रहब सेहो आवश्यक अछि।

मिथिलाक साहित्यक, सांस्कृतिक ओ गौरवशाली धरोहर के सहेजैत एकर सर्वांगीण विकास लेल विद्यापति सेवा संस्थान कृत संकल्पित अछि आ अपन एहि संकल्प के क्रियान्वित करबा लेल विगत 49साल सँ कवि कोकिल विद्यापतिक अवसान दिवस कार्तिक धवल त्रयोदसी सँ लगातार तीन दिवसीय मिथिला विभूति पर्व समारोहक निरंतर भव्य आयोजन करैत आबि रहल अदि, जाहिमे आम मिथिलावासी आ देश-विदेशमे रहनिहार प्रवासी ओ अप्रवासी मैथिली जनक संग अनेक साहित्यकार, गीतकार, शिक्षाविद, राजनेता, गायक ओ गायिका सहित संस्कृति कर्मी लोकनि एक मंच पर आबि अपन गौरवशाली संस्कृति के जीवन्त बनयबा लेल सामूहिक एक जुटताक प्रदर्शन करैत छथि।

एहि वर्ष ई समारोह 6,7 आ 8 नवम्बर 2022 के ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा परिसरमे स्थित डा. नागेन्द्र झा स्टेडियममे संस्थान परिवार दिस सँ मनोयोग पूर्वक मनावऽ जा रहल अछि जे पचास वर्षक ई स्वर्ण जयन्ती समारोह के रूपमे अछि। एहि अवसर पर साहित्यिक, सामाजिक शैक्षणिक, पत्रकारिता, चिकित्सा, संस्थानिक ओ जन सरोकार सँ जुड़ल विभिन्न क्षेत्रमे उत्कृष्ट योगदान देनिहार विशिष्ट लोक के ''मिथिला विभूति सम्मानोपाधि'' सँ अलंकृत कयल जयबाक संग 'अर्पण'' नाम सँ प्रकाशित संस्थानक मुखपोथीक 'अर्पण' अतीतक दस्तावेज के सहेजैत भविष्य निर्माणमे अनुगामिनी बनैत अछि। स्वर्ण जयंतीक अवसर पर संपादक डा. महेन्द्र नारायण राम ओ प्रवीण कुमार झाजीक द्वारा एहि बेर संस्थानक मुखपोथीमे मिथिला मैथिली आन्दोलनक स्वर्णिम इतिहास, मिथिला मैथिली आन्दोलनमे विद्यापति सेवा संस्थानक योगदान ओ मिथिला केर सर्वांगीण विकास लेल पृथ्क मिथिला राज्यक गठन केर औचित्य सहित गीतकार रवीन्द्र नाथ ठाकुर ओ साहित्यकार उमाकांत सहित विगत साल भरिक अंतरालमे दिवंगत भेल साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, संस्थानिक आदि क्षेत्रमे उत्कृष्ठ योगदान देनिहार विशिष्ट यथा हरिद्वार प्रसाद खंडेलवाल, मंजु चतुर्वेदी, शंभूनाथ झा, बटुक भाइ आदि महान व्यक्तित्वक प्रति श्रद्धाजंलि समर्पित करैत अछि। एहेन श्रद्धांजलि प्रत्येक वर्ष करैत हमरा ह्दयमे बहुत कचोट पहुँचबैत अछि, मिथिला आ मैथिलीक लेल ई क्षति-पूर्ति असंभव सन अछि। तथापि आश पर जीवन टिकल अछि।

संस्थान परिवार हुनका सभ केँ हार्दिक विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित तऽ करिते अछि, ईश्वर हुनका सभक परिवार-सखा-संतान के सांत्वना प्रदान करबाक लेल, धैर्य एवं शांति प्रदान करथ।

जय मिथिला...... जय मैथिली.......

बैद्य नाथ चौधरी

(बैद्यनाथ चौधरी)



सम्पादकीय



विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा विगत 49 वर्ष सँ मिथिला विभूति पर्व समारोह मनबैत आबि रहल अछि। आ एहि अवसर पर 38 वर्ष सँ 'अर्पण' नामक मुखपोथीक प्रकाशन सेहो करैत आबि रहल अछि। एहि बेर मिथिला विभूति पर्व समारोहक पचासम वर्ष आ अर्पणक 39 अंक छी। ई समारोह स्वर्ण जयंती समारोह छी आ मुखपोथी अर्पण केर सम्पादन कार्यमे एक छोड़ि दू गोटे जुड़ि कऽ एकरा अनुपम बनयबाक यथोचित प्रयास कयल अछि।

ज्ञान लोकक भौतिक ओ बौद्धिक सामाजिक क्रिया-कलापक उपज, संकेतादिक रूपमे जगतक वस्तुनिष्ठ गुण आ संबंध सभ, प्राकृतिक आ मानवीय तत्व सभक संबंधमे विचारक अभिव्यक्ति अछि। ज्ञान दैनंदिन तथा वैज्ञानिक भऽ सकैत अछि। वैज्ञानिक ज्ञान आनुभविक आ सैद्धान्तिक वर्ग सभमे विभक्त होइत अछि। एकर अतिरिक्त समाजमे ज्ञानक मिथकीय, कलात्मक, धार्मिक ओ आन कतेको अनुभूति सभ होइत अछि। सिद्धान्ततः सामाजिक ऐतिहासिसक अवस्था सभ पर मनुक्खक क्रिया-कलापक निर्माता के प्रकट करैत अछि आ विषयीकृत होइत अछि। ई तथ्य मनुक्ख केँ बौद्धिक कार्यकलापक प्रमुखता आ आत्म निर्भर स्वरूपक बारेमे आत्मगत प्रत्ययवादी सिद्धान्तक आधार अछि। स्वाभाविक आ सहज रूपेँ ज्ञान अनुभवक अनुभूतिमे ज्ञान कहबैत अछि। चिंतन अवधारणा, संकल्प, निर्णय आ सिद्धान्तादिमे वस्तुगत जगत केँ परावर्तित करऽ वाली संक्रिया अछि जे विभिन्न समस्याक समाधान सँ जुड़ल अछि। चिंतन विशेष रूप सँ संगठित भूतद्रव्य-मस्तिष्क उच्चतम उपज थिक। चिंतनक संबंध मात्र जैविक विकासक्रम सँ नहि अछि, अपितु सामाजिक विकास सँ सेहो अछि। चिंतनक उद्‌भव लोकक उत्पादन कार्यकलापक प्रक्रियाक क्रममे होइत अछि आ ओ यथार्थक व्यवहृत परावर्त्तन सुनिश्चित करैत अछि। अपन विशिष्ट मूल, क्रिया-कलापक ढ़ंग आ परिणामक दृष्टि सँ ओकर स्वरूप सामाजिक होइत अछि। एकर पुष्टि एहि बात सँ अछि जे चिंतन श्रम आ वाणी के कार्यकलाप सँ, जे मात्र मानव समाजक अभिलाक्षपकता सभ अछि, अविच्छेद रूप सँ वाणीक संग घनिष्ठ रखैत मूर्त रूप ग्रहण करैत अछि आ ओकर परिणाम भाषाक रूपमे व्यक्त होइत अछि।

'अर्पण' ज्ञान आ चिंतनक सम्मिश्रण एकटा संभावनाक समेकित उद्‌घोष तऽ अछिए संवत्सरणक चरण चेहक सादगीपूरित अवधारणा आ ओकर रेखांकन सेहो अछि। संवत्सर पुरातन, मान्यताक धरोहर आ नवप्रतिमानक समर्थन खे'छी। पहिला अंकमे हम एहि बातक उल्लेख कयने रही। इहो उल्लेख कयने रही जे अर्पण पुरातन ओ नव अवधारणाक समन्वय आ एकरा संस्कृति मानवक धर्म-निर्वाह कयलक अछि। संस्कृति समाज सँ सबल होइत अछि,

जकरा अर्पण आइ धरि सहेजऽमे पाछाँ नहि रहल अछि। एहि बेर ई स्वर्णजयंती समारोहक 39म् अंक के रूपमे सभहक समक्ष अछि, जाहिमे मिथिला आ मैथिली लेल अनवरत संघर्षरत विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगाक विशेष योगदानमे आ अपन अतीतक दस्तावेज के सहेजैत भविष्य निर्माणमे एकटा अनुगामिनीक रूपमे मिथिला मैथिली आन्दोलन के अंकित करैत मिथिला केर सर्वांगीण विकास लेल पृथक राज्यक गठन केर औचित्य सहित साल भरिमे दिवंगत भेल साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सांस्थानिक आदि क्षेत्रमे उत्कृष्ट योगदान देनिहार विशिष्ट व्यक्ति के श्रद्धांजलि अर्पित करब हृदय के कचोटैत अछि।

ई व्यक्तित्व वस्तुतः मिथिला आ मैथिलीक धरोहर छलाह, जकर क्षति-पूर्ति असंभव जकाँ बुझना जाइत अछि।

एहि बेर समाविष्ट इतिहास, आलेख संस्मरण, कथा, कविता, श्रद्धांजलिमे अपन विशिष्ट रचना सँ जे लोकनि 'अर्पण' के विशिष्ट बनौलनि अछि से धन्यवादक अधिकारी तऽ छथिये, जे लोकनि अपन रचना समय पर नहि पठा सकलाह, मुदा हृदय सँ संग छथि सेहो व्यक्ति लोकनि धन्यवादक अधिकारी छथि। सभ गोटे के संस्थान परिवारक दिस सँ आभार अभिनंदन। ओहो माननीय लोकनिक केँ आभार एवं अभिनन्दन जे लोकनि ससमय हमरा अपन शुभकामना संदेश पठा 'अर्पण' के दीर्घजीवी बनौलनि अछि।

सामग्री संयोजन मे तकनीकी असुविधाक कारणें वरिष्ठ अथवा कनिष्ठ केर यथोचित क्रम निर्माण नहि कऽ सकबा लेल मोन दुःख केर भाव सँ ग्रसित अछि।

जय मिथिला...... जय मैथिली......... जय मिथिलाक्षर.........

(प्रवीण कुमार झा) **(डॉ. महेन्द्र नारायण राम)**

मिथिलाक गौरव विद्यापति सेवा संस्थान

✍ सुनीति झा

मिथिला वैदिक युग सं आर्य सभ्यताक केन्द्र रहल अछि। मैथिली-मिथिला क्षेत्रक एक अति प्राचीन भाषा रहल अछि। एकर अपन भिन्न अस्तित्व छैक। प्राचीन कालमे मिथिला अपन सभ्यता संस्कृतिक बलें विश्वप्रख्यात छल विश्वक विभिन्न भागक लोककें एहिठामसं सोझ दृष्टिसं देखब तश्स्वयं अपराधीक बोध होइत छलैक। जाहि मिथिला राज्यक संघर्ष क रहल छी, ताहि मिथिलाक बुद्धिजीवी लोकनिकें दृष्टिगोचर होएब आवश्यक अछि जे 'लिपि' मिथिलाक्षरकें छोड़ि अपन अस्मिता के गमौने छी।

विद्यापति सेवा संस्थान 1972 सँ स्थापित ओ 1984-85सँ निबंधित अछि। महासचिव डाक्टर बैजू जीक संस्थानक प्रति समर्पण भाव,जनिक क्रिया कलापक इतिहास लिखा रहल अछि। निश्चित कर्मठ सुयोग्य पुत्रक कर्मठता, निःसंदेह अवर्णनीय अछि।

सुनल अछि जे 1959ई0 क अगस्तमे मिश्रटोला, दरभंगामे प्रोफेसर दिनेश्वर झा दीन के आवास पर मैथिली क्रांतिदूतक स्थापना भेल छल। जकर सेक्रेटरीक रूपमे संचालनक भार श्री मैथिली पुत्र प्रदीप जी लेने छलाह। सदस्यता के संग एक पंक्ति सृजन सेहो केने छलाह.....जकर मातृभाषा अपमानित से की गाल बजाओत। एहन एहन संतान कहियो कतहु सम्मान नहिं पाओत।

क्रांतिदूतक समाचारक संग हिनक कविताक पंक्ति सेहो मैथिली पत्रिका सभमे प्रकशित भेल छल। श्री कांची नाथ झा 'किरण', डा. व्रजकिशोर वर्मा, श्री मणिपद्मजी सेहो एकर सदस्य ता ग्रहण कयने छथि। श्री प्रदीप जीकें मैथिली पुत्रक उपनाम प्राप्त छलनि।

पुनः स्वर्गीय ललित बाबू सं जखन प्रदीप जीकें साक्षात्कार भेल तखन पुनः नामकरण भेल मैथिलीक बदला मिथिलाक क्रान्तिदूत संघ, जाहिसं सम्पूर्ण मिथिलाक भविष्य उज्जवलक संकेत भेटल छल।

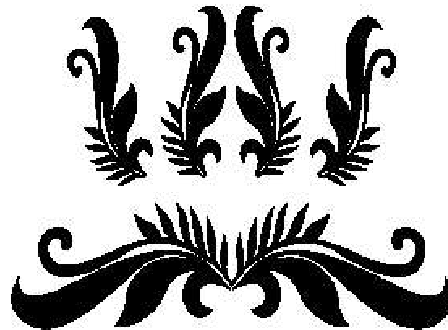
पुरूषक पहिल कर्तव्य थिक पारिवारिक भरण पोषण करब। गृहस्थ जीवन मे ओकर बादे अन्यान्य कार्यक सम्पादन क सकैछ। अर्थक प्रयोजन के कारणे प्रदीप जीकें आन्दोलन छोड़ि कर्तव्यक पालन कऽर पड़लनि मुदा मन सं नहिं छोड़लनि। मैथिलीक संग आ आन्दोलनक सहकर्मी अन्ततक रहलाह।

बहेड़ा मे श्री व्रजकिशोर वर्मा, मनिपद्म जी, पं. देवनारायण झाक समक्ष श्री बैजूजीसं प्रदीप जीकें भेंट भेल रहनि तखन श्री बैजू जी प्रश्न कयलखिन हुनकासं.....यदि मिथिला मैथिलीक लेल कोनो प्रकारक प्रखर क्रांतिकारी आंदोलन ठाढ करी तं अपनेक आशीष हमरा भेटत? प्रदीप जीक जबाब भेटलनि अहां निर्भिक आ स्वतंत्र युवक छी, मिथिला मैथिली कें अहांक आवश्यकत छैक मुदा संस्थाक नाम साहित्यक हेबाक चाही।

जाहि पर सब उपस्थित गण बहुत प्रसन्न भेलाह आ तखनहि नव नामकरण भेल.....विद्यापति सेवा संस्थान।

डाक्टर बैजूजी सन कर्मठ नेतृत्व मे संस्थान आ एहि माध्यम सं लक्ष्य प्राप्त होएब निश्चित अछि। मिथिला राज्य भेटत से विश्वास अछि।

■



विद्यापति सेवा संस्थान आ हम

 **मैथिलीपुत्र प्रदीप**

डा. श्रीबैजूजी जखन बहेड़ामे डा. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' तथा पं. देवनारायणझाक बीचमे हमरा पुछने छलाह जे हम जँ मिथिला-मैथिलीक लेल कोनो प्रखर क्रान्तिकारी आन्दोलन ठाढ़ करी तँ कि अपनेक शुभाशिर्वाद भेटि सकत?

हमर मोन छनगल छल। मिथिला क्रान्तिदूत संघक सचिव तथा क्रान्तिगीतक लेल मैथिली भाषी सी.बी.आई. कर्मचारी डा. लक्ष्मण झाक प्रेरणा पर हमरा कहने रहथि- अपने एकटा सर्वसाधरण परिवारक सदस्य छी। नोकरी करहि पड़त। मुदा, एखन दू मेसँ एकटा छोड़य पड़त। नोकरी अथवा मिथिला क्रान्तिदूत संघक सेक्रेटरीक पद। छगायलमोन जखन मिथिला क्रान्तिदूत संघक सचिवक रूपमे ई गीत लिखने रही-

एकटा बात कहब हम संदिखन, अपना मिथिलावासीसँ।
मैथिलीक उद्धार करु, नहि डरु जहल आ फाँसीसँ।।

ई पंक्ति सी बी आई कर्मचारीक डायरीमे उदधृत छल। छगायल मोन छल तेँ बैजूजीकेँ कहने रहियनि - अपने एकटा निर्भीक स्वतंत्र युवक छी। मिथिला-मैथिलीकेँ अपनेक आवश्यकता छैक। मुदा, संस्थाक नाम साहित्यिक एवं सांस्कृतिक हेबाक चाही। एहि उक्तिसँ श्रद्धेय मणिपद्मजी तथा पं देवनारायण झाजी बहुत प्रसन्न भेल छलाह आ बाजल छलाह- प्रदीपजीक ई विचार सर्वथा अनुमोदनीय अछि। अस्तु, सर्वसम्मतिसँ संस्थाक नाम 'विद्यापति सेवा संस्थान' राखल गेल आ हम एकर आजीवन सदस्य भऽ गेलहुँ। श्रीबैजूजी सन कर्मठ युवककेँ प्रोत्साहित करब समीचिन छल। हिनक नेतृत्वमे विद्यापति सेवा संस्थान आइ बहुत उच्च शिखर पर पहुँचि गेल अछि। हमर शुभ चिन्तकमे श्री अमरनाथ झाजी, डा. भ्रमरजी, श्री उदयजी, चन्द्रेशजी तथा श्रद्धावान शिष्य श्री अनलजी, डा. योगानन्द झाजी, मणिकान्त लाल दासजी तथा हमर पत्नी, पुत्र, बेटी, जमाय, शिष्य, शिष्या, नाति-नातिन, श्रद्धालु समाज सभ गोटा 'विद्यापति सेवा संस्थान'क संग सतत हमर विचारक संग रहलाह। क्रान्तिकारी भावनाक लोक जेम्हरे झूकत ओम्हरे क्रान्ति करत। हम तँ कहियो राजनीतिमे नहि रहलहुँ। मुदा, राजनीतिज्ञ लोकनिक स्नेह-सद्भावना निरंतर बनल रहल। जन्म-जन्मान्तरसँ सुषुप्त हमर आध्यात्मिक भावना हमरा भगवती त्रिशूलिनि दुर्गाक चरण तलमे आध्यात्मिक प्रेरणा भेटैत रहल। विद्यापति सेवा संस्थानक सभ सदस्य सतत हमर संपोषक रहलाह तथा बैजूजीक श्रद्धा सतत बनल रहल।

माँ भगवतीक परम साधक श्रद्धेय रामकृष्ण परमहंसजी बंगालक महान साधक कवि श्रीचण्डी दासजी कविताक एक पंक्ति सतत गबैत छलाह -

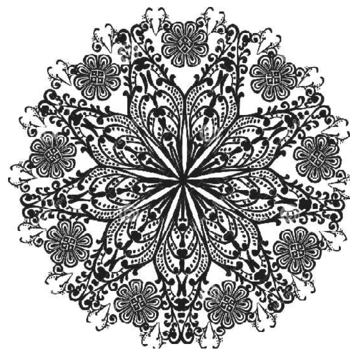
सकलि तुमार इच्छा, इच्छमयी तारा तुमि। तोमार कर्म तुमी करो माँ, लोके बोले करी आमी।।

अस्तु ई इच्छामयी भगवती थिकी। सभ कर्य हिनकेसँ भऽ रहल अछि। हिनक इच्छा बिना किछु ने भऽ सकैत अछि। विद्यापति सेवा संस्थानो तँ महाकवि विद्यापतिक-

जय-जय भैरवि असुर भयाओनि,
पशुपति भामिनीमाया।
सहज सुमति वर दायिनी।
हुनके प्रेरणा थिक।

साभार : अर्पण-2016

■



विद्यापति सेवा संस्थान

ꣳ अशोक कुमार ठाकुर

विद्यापित पर्व मनेबाक परम्परा 1930ई. सँ आ कि एहूसँ पूर्वसँ अछि से जानकार लोकनि कहताह। पूर्वमे एकर की स्वरूप छलैक कि उद्देश्य छलैक ताहि पर कते ठाम लिखल पढ़बाक अवसर भेटल अछि। किछु व्यक्ति जेना बाबू भोलालाल दास, पं. शशिनाथ चौधरी, किरणजी आदि महान मैथिल भक्त लोकनिक नाम एहि पर्वक आरम्भ, कयनिहारमे लेल जाइत अछि। बहुत पूर्वक तँ नहि, मुदा 1966-67ई. सँ पटनाक चेतना समितिमे ई पर्व देखबाक अवसर भेटैत रहल अछि। चेतना समिति एहि अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, कवि-सम्मेलन, सम्मान आदि कार्यकम करैत छल। एकटा एहनो समय अयलैक जे भारत वर्षक पैघ-छोट नगर एवं मिथिलाक गाम सभमे सेहो एकर आयोजन होमय लागल। इहो कहि सकैत छी जे देखा-देखी एकर प्रसार होइते गेल। ई पर्व कतहु मनाओल जाय, मुदा मूल उद्देश्य रहैत छलैक मैथिलीक उत्थान आ अपन मैथिली भाषीकेँ संगठितकऽ एक मंच पर अनबाक। एहि आयोजनक उपलब्धि कोनो नगण्य छैक से कहब वास्तविकताकेँ नकारब होयत। पटनामे पूर्वमे जखन देखी जे पैघ-पैघ नेता, पदाधिकारी, प्रोफेसर, ओकीलसँ लऽ सामान्य स्तरक कर्मचारी, कहुनाकऽ गुजर कयनिहार लोक सभ एहि दू-तीन दिन एक भऽ जाथि आ एकरा सफल बनाबथि। हम अपन गाम लग एकटा गाम सरहदमे एकर आयोजन सेहो देखलहुँ आ सुनी जे कते गाममे ई होइत अछि तँ प्रसन्नता होअय। दरभंगामे कने विलम्बेसँ, मुदा लहेरियासरायमे ‘‘संकल्प लोक’’ नामक संस्था एकर सफल आयोजन करब आरम्भ कयलक। समस्तीपुरमे सेहो 1982-83मे ई आयोजित होइत छल। संकल्प लोक एकरा आगू नहि बढ़ा सकल मुदा विद्यापति सेवा संस्थान मिथिला विभूति पर्व मनेबाक जे संकल्प लेलक से उत्तरोत्तर नमहर भेल जा रहल अछि। तीन दिनक कार्यक्रम आ से विशाल स्तर पर होइत अछि। राजनेता, कलाकार, विद्वान, साहित्यकार सम्मेलन होइत अछि आ तीन दिन-तीन राति सम्पूर्ण वातावरण मैथिलीमय भऽ जाइत अछि। कत-कत सँ ने लोक एकरा देखऽ आ आनन्दक संग ई बुझऽ अबैत अछि जे ओकर भाषा जाहिमे ओ बजैत अछि तकरामे कते सामर्थ्य छैक। एक सूत्रमे बन्हबाक एकरामे शक्ति छैक आ बौक भेल मैथिलीकेँ मुखर बनेबामे एक नमहर भूमिका छैक, अपन विसरल इतिहासकेँ मन पाड़बाक एकबेर बर्खमे अवसर दैत छैक। पटनाक चेतना समिति, रहिकाक मैथिल समाज एवं दरभंगाक विद्यापति सेवा संस्थान ई तीन टा संस्था एकरा धार्मिक पर्व जकाँ मनबितहि अछि आ मैथिलीक बड़ पैघ सेवा करैत अछि।

विद्यापति सेवा संस्थानक स्थापना कहिया भेलैक, एकर की उद्देश्य छलैक, एकर की संविधान छैक ताहि सभहक हमरा जनतब नहि अछि। 1991-92 ई.क बात थिक, परम पूज्य आचार्य सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ जीक ओतऽ सांध्य गोष्ठीमे जाइत छलहुँ, किछु गोटाकेँ ओतऽसँ घुरिकऽ अबैत देखलियनि। सुमनजीसँ भेट कयनिहार लोकसभमे राजनेता, विद्वान, साहित्यकार आ सामान्य लोक रहैत छलाह। ओतऽ पहुँचला पर सुमनजी पुछलनि ओ लोकनि भेट भेल छलाह? हम कहलियनि-देखने छलियनि, मुदा कियो चिन्हार व्यक्ति नहि छलाह। सुमनजी पुछलनि विद्यापति सेवा संस्थानमे नहि जाइत छी? जाइत छलहुँ कने काल कातेसँ देखि घुरि अबैत छलहुँ। सुमनजीक आग्रह पर ओकर अगिला दिन हुनका रिक्सा पर बैसा एम.एल.एस.एम. कॉलेजक परिसरमे एकटा बैसारमे गेलहुँ। ओतऽ जाहि व्यक्तिसँ परिचय भेल ओ नामसँ सुपरिचित छलाह। ओहि कॉलेजक कतेक प्राध्यापक अपने लोक रहथि। बैजू बाबू-डा. बैद्यनाथ चौधरी ‘‘बैजू’’, उर्जासँ कन-कन करैत दिव्य, सुदर्शन, नीक व्यक्तित्वक युवक, सभकाज अपने कान्हपर उठबैत, आश्चर्य चकित भऽ गेलहुँ। सुमनजी बेसी नहि कहलथिन, मुदा किछु निर्देश अवश्य कयलथिन। हमरा ओहि कॉलेजक स्थापनाक विषयमे जे सुनल छल सभटा फ्लैश बैकमे अपने अबैत गेल। नियमित रूपसँ प्रतिवर्ष कार्यक्रम देखबाक लेल जाइते छी। एकटा ई एहन संगम छैक जतऽ समाजक सभ वर्गक, सभ क्षेत्रकलोककेँ देखैत छी। गीत-नाद, कवि-सम्मेलन, सम्मान, सेमिनार, पोथी-पत्रिकाक लोकार्पण, प्रकाशन बहु-विधि एकर कार्यक्रम रहैत छैक आ श्रोता-दर्शक मन्त्रमुग्ध भेल बैसल रहैत अछि।

विद्यापति सेवा संस्थान, एकर अपने भवन कार्यालय छैक आ नियमित रूपेँ कोनो-ने-कोनो बैसार, प्रेस कॉन्फ्रेन्स, धरना प्रदर्शन, साहित्यकार, समाजसेवी लोकनिक जन्म दिन, पुण्य तिथि, पुस्तक लोकार्पण, साहित्यकार जनिका कोनो उपलब्धि भेलनि अछि, जेना पुरस्कार प्राप्तिक उपरान्त सम्मान से सभ होइते रहैत अछि। स्थानीय समाचारमे विद्यापति सेवा-संस्थानक कोनो-ने-कोनो खबरि रहिते अछि। कते गोटे

पुछैत छथि ई राजनीति संस्था थिक कि साहित्यिक? हम उत्तरमे एकटा और जोड़ि दैत छियनि सांस्कृतिक। मिथिला राज्यक माँग, मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान, मैथिलीक आ मिथिलाक न्याय अधिकारक माँग आ ताहि लेल संघर्षक जे एकर एकटा नमहर अध्याय छैक से देखि किनको एकरा राजनीतिक संस्था मनबामे आपत्ति नहि होयतनि।

बैजू बाबू छात्रनेताक रूपमे ख्याति पओलनि, संगहि मिथिलाक विकासमे हिनका द्वारा कयलगेल काज सभ कहियो लोक बिसरि नहि सकैत अछि। दरभंगा धरि बड़ी लाइन (ब्रांड गेज) लेल धरनामे ई लाठीसँ धूनि देल गेल रहथि। एहन कते काज अछि जे हिनका समाजमे स्मरणीय बना देने छनि। आइ दरभंगा में एम.एल.एस.एम. कॉलेज एकटा प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थान अछि। दरभंगामे नीक पढ़ाइक हेतु एकर आ लहेरियासरायमे नागेन्द्र झा महिला महाविद्यालयक नाम लेल जाइत अछि। एम. एल.एस.एम. कॉलेजक संस्थापक बैजू बाबू छथि। जाहि महान पुरुषक नामपर ई कॉलेज अछि ओ इतिहासक अन्हारमे हेरा गेल छलाह। महाराज लक्ष्मेश्वर सिंह उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्धमे मिथिलाक एकटा एहन राजा भेलाह जे स्वतंत्रता संग्राममे अप्पन विशाल सम्पत्ति झोँकि देलनि। मिथिलाक विद्वान-गुणी लोकनिकेँ अपन राज-दरवारमे सम्मानित स्थान देलनि। म.म.पं. चित्रधर मिश्र एवं कवीश्वर चन्दा झा हिनके राज्याश्रयमे रहथिन। कवीश्वर रामायणक रचना कयलनि आ असंख्य गीत लिखलनि जाहिसभमे तत्कालीक मिथिलाक जीवन सजीव भऽ जाइत अछि। पुरान लोकनिक मुँहसँ सुनल अछि जे कवीश्वरक आवास एहि कॉलेजक समीपे छलनि। विद्यापति चौक, रमेश्वरी लता संस्कृत विद्यालय जे दरभंगाक प्राचीनतम शिक्षण संस्थान थिक एत्तहि अछि। विद्यापति चौक पर विद्यापतिक आवास प्रतिमा लगौल गेल अछि, हराही पोखरिक पछबरिया उत्तरबरिया कोन पर आचार्य सुमनजीक (आदमकद) प्रतिभा लगौल गेल अछि, ई दुनू प्रतिमा विद्यापति सेवा संस्थान लगौलक अछि। अन्य स्थान सभमे सेहो एहन-एहन काज संस्थान कयलक अछि जे सर्वविदित अछि।

एकटा बात मानवामे किनको आपत्ति नहि होयतनि जे विद्यापति सेवा संस्थान एम.एल.एस.एम. कॉलेजक देन थिक। पूर्वमे उत्तर कि आबो एहि कॉलेजक शिक्षक, प्राचार्य एवं अन्य कर्मचारी सभ विद्यापति पर्व समारोहमे एक टाँग पर ठाढ़ भेल अपन काज जकाँ एकर सम्पादन करैत छथि। ई स्कजूटता एकर बल थिकैक जे कॉलेजक विकासक संगहि संस्थानक विकासमे योगदान करैत छैक। संस्थान एके ठाम दरभंगा धरि सीमित अछि से बात नहि छैक। कलकत्ताक मैथिली सेवी संस्थान, दिल्लीक मैथिली सेवा संस्थान आ गाम सभहक संस्था सभसँ ई जुड़ल अछि आ बहुविधि कार्यक्रममे अपन सक्रिय उपस्थिति बनबैत अछि। जनकपुर-काठमाँडूसँ सेहो एकर सूत्र जोड़ल छैक जकरा संग सुदूर चेन्नइ आदि स्थानमे सेहो ई कार्यक्रम करैत अछि।

संस्थानक भव्यमंच पर कोनो एक राजनीतिक दलक नेता लोकनि नहि अपितु राजनीतिसँ उत्तर उठि मिथिला-मैथिलीक अभ्युत्थानमे सभ ठाढ़ भऽ जाइत छथि। एकटा स्थाइ चित्र एहि मंचक मनमे खचित अछि। स्व. भोगेन्द्र झा सामाजवादी नेता एवं स्व. सुमन जी (जनसंघ) बी.जे.पी. नेता पाग डोपटामे मंच पर आसीन छथि। काँग्रेस समाजवादी पाटी-राजद-जदयू, साम्यवादी बी.जे.पी. सभहक जुटान मंच पर देखि कियो विस्मित भऽ सकैत छथि। मंत्री, पूर्वमंत्री, सांसद, विधायक, विधान पार्षद, शिक्षा जगतक महान हस्ती, कलाक्षेत्रक हस्ती, साहित्यकार, लोककलाकार सभहक जुटान तँ रहितहि अछि जे नेपालक राजनेता विद्वान लोकनिक उपस्थितिसँ ई गरिमा मंडित भऽ जाइत अछि। संगीत एहि भव्य मंचक स्थाइ भाव रहैत छैक। पैघसँ पैघ गायक एवं वादय वादक नर्तक अपन कलाक प्रदर्शन करैत छथि आ श्रोता-दर्शक मंत्रमुग्ध भेल रसास्वादन करैत रहैत अछि।

ई एकटा साहित्यिक संस्था थिक तकर प्रमाणक आवश्यकता नहि छैक। ई दिल्लीक केन्द्रीय साहित्य अकादेमीसँ संबद्ध अछि। साहित्य अकादेमीक पैघ-पैघ कार्यक्रम अकादेमीक संग ई कयलक अछि जेना ''मीट द आथर'' ''मेरे झरोखे से'', ''व्यक्ति एवं कृति'' आदि। बर्खमे एकटा स्मारिका प्रकाशित करैत अछि जाहिमे विद्वान, साहित्यकार लोकनिक रचना रहिते अछि। ई पर्वमे पोथी सेहो प्रकाशित करैत छल जकर उदाहरण अछि श्रीभीमनाथ झाक ''विविधा'' जे साहित्यक अकादेमीसँ सम्मानित भेल आ अपन लेखककेँ पुरस्कार दिओलकनि। एकर विशाल कवि-सम्मेलन आकर्षणक मुख्य केन्द्र रहैत अछि। सम्पूर्ण मिथिलाक प्रसिद्ध एवं नवोदित कवि लोकनि अपन कविता पाठसँ श्रोताकेँ आनदित करैत छथि संगहि समसामयिक समस्या सभ पर गंम्भीर विचार व्यक्त होइत अछि। जँ एहि कवि-सम्मेलनक एकटा कविताकेँ प्रतिवर्ष छपेबाक व्यवस्था रहितैक तँ एखन धरि कतेक कविता संग्रह भऽ गेल रहैत। विचार गोष्ठीक आयोजनमे कोनो-ने-कोना ज्वलन्त भाषिक वा अन्य समस्या पर गम्भीर आलेख सभ पढ़ल जाइत अछि।

विद्यापति संस्थानक मंचक मैथिलीक प्रसिद्ध उदघोषक

श्रीकमलाकान्त झा एकटा अभिन्न अंग छथि। अपन सुमधुर उद्घोषण एवं व्यंग्य-हास्यसँ दर्शक-श्रोताकेँ साँझसँ भोर धरि बन्हने रहैत छथि। वर्तमानमे श्री झा मैथिली अकादमी पटनाक अध्यक्षक पद सुशोभित कऽ रहल छथि। एखनो हुनका सेवा एवं गरिमामय उपस्थिति संस्थानकेँ उपलब्ध रहैत छैक। एकटा बात सेहो मन पड़ैत अछि जे दरभंगा दुनू विश्वविद्यालयक संस्कृत वि. वि. एवं मिथिला वि.वि., भी.सी., रजिष्ट्रार एवं अन्य पैघ पदाधिकारी लोकनि एहिमंचकेँ सुशोभित करैत छथि। हुनका लोकनिक उदगारमे विश्वविद्यालयक गतिविधिक चर्च रहैत अछि जाहिसँ सामान्य लोक अवगत होइत अछि जकर बाल-बच्चा एतऽ पढ़ैत छैक। विश्वविद्यालयक पदाधिकारी लोकनिकेँ आमलोकक बीच अनबाक काज संस्थान करैत अछि। दरभंगा एकटा पैघ प्रमण्डल अछि, एत, पुलिस विभागक आइ जी, कमिश्नर, मुख्य अभियन्ता, आदि तँ रहिते छथि संगहि दरभंगामे कते केन्द्रीय सरकारक पैघ-पैघ कार्यालय सभ अछि, अति प्रसिद्ध चिकित्सा महाविद्यालय सेहो एतऽ अछि। पैघ-पैघ पदाधिकारी लोकनिक जुटान मंच पर देखैत छी। पूर्व कमिश्नर सुश्री अमिता पॉल आई. ए.एस. विद्यापतिक मूर्तिक अनावरण कयने रहथि, सिलापट्ट पर से उल्लिखित अछि। वर्तमान आई.जी. श्री आर.के. मिश्र आई. पी.एस. अपन व्यस्त कार्यक्रममेसँ कने समय निकालि अपन मातृभाषाक पूजनमे श्रद्धाक पुष्प अर्पित कयने छथि। कते उच्चन्यायालयक माननीय न्यायाधीशकेँ एहि मंच परसँ अपन माइक भाषाक उत्थानक लेल संकल्प लैत सुनलहुँ अछि। बैजू बाबू, डा. सी.पी. ठाकुर प्रसिद्ध चिकित्सक एवं बी.जे.पी.क पैघ नेताकेँ साग्रह सादर मंच अनितहि अछि, मैथिलीकेँ अष्टम् अनुसूचीमे लयबामे ओ भागीरथक भूमिकामे रहथि से मैथिल कोना बिसरत। एहि रूपेँ जँ देखीतँ विद्यापति सेवा संस्थान मैथिली भाषा एवं साहित्यक उत्थानमे लागल अछि।

एकर राजनीतिक इकाइ सेहो छैक जेना एकबारमे पढ़ैत छी, मिथिला राज्य संघर्ष समिति एकर ई इकाइ पटना, दिल्ली, दरभंगा, सौंसे प्रदर्शन-धरना करैत अछि। केन्द्रक गृहमंत्री एवं अन्य संबंधित अधिकारी सभसँ भेटकऽ अपन माँग रखैत अछि। हेबनि तेलंगाना राज्य संर्घष समिति अपन आन्दोलनक चरम पर छल तँ अन्य जाहि ठाम पृथक राज्यक माँग भऽ रहल छैक ओहि सभमे एकर उल्लेख छल। पृथक मिथिला राज्यक माँगसँ कने गोटे सहमत छथि। कने गोटे असहमत छथि, मुदा ई माँग छैक से नकारल नहि जा सकैत छैक। पैघ-पैघ विचारक लोकनिक दृष्टिमे छोट-छोट राज्यसँ विकासक गति बढ़ैत छैक, ओकर भाषाक विकास होइत छैक, जेबात संभव आइ बुझि पड़ैत अछि ओ काल्हि संभव भऽ सकैत छैक।

एकर जे समिति होइक हमरा ओते नहि बुझल अछि, मुदा पहिने सुरेन्द्र झा ''सुमन'' एकर अध्यक्ष छलथिन। हुनकर मृत्युक बाद पं. चन्द्रनाथ मिश्र ''अमर'' अध्यक्ष छथिन। डा. बुचरू पासवान कार्यकारी अध्यक्ष छथि आ सचिव डा. बैद्यनाथ चौधरी ''बैजू बाबू'' छथि। अन्य पदाधिकारी लोकनि सेहो होयबे करताह। एकटा बात देखबामे अबैत अछि जे मैथिलीक अधिकांश संस्था व्यक्ति केन्द्रित रहैत अछि। जाधरि ओ ओकर संचालन करैत रहलाह ता धरि तँ बड़ नीक, मुदा हुनकर बाद ओ संस्था मृतप्राय भऽ जाइत अछि। उदाहरणक लेल वैदेही समितिकेँ लेल जा सकैत अछि। जे संस्था अपन जीवन्तताक एते प्रमाण द' देलक अछि ओ जीवैत रहय आ मिथिला-मैथिली-मैथिलक सेवामे लागल रहय ई कोनो व्यक्तिक आन्तरिक अभिलाषा भऽ सकैत छैक आ यैह हमरो ई अभिलाषा अछि जे एकर स्वरूप दिनानुदिन प्रजातांत्रिक होइक, ई सौंसे मिथिलाक एवं देश-विदेशमे बसल मैथिलक प्रतिनिधित्व करय तकर आवश्यकता सभ बुझैत अछि।

विद्यापति सेवा संस्थानक औखन कते महात्वाकांक्षी योजना छैक यथा विद्यापति भवन निर्माण प्राथमिक कक्षामे मैथिलीक माध्यमसँ पढ़ौनी, मिथिला विभूति लोकनिक मूर्ति लगैब आदि। एकर स्मारिका ''अर्पण'' नामसँ प्रकाशित होइत अछि जकर पहिने संपादक रहैत छलाह प्रो उमाकान्त झा जे अपनहुँ साहित्यकार छथि, मुदा एम्हर अस्वस्थ भऽ जेबाक कारणे समय नहि द पाबि रहल छथिन। हुनक सहयोगी प्रसिद्ध साहित्यकार एवं मैथिलीस्ट चन्द्रेशजीक कान्ह पर ई भार छनि ओहो सहर्ष एहि भारक वहन कऽ रहल छथि। दरभंगाक तँ सहजाहेँ जे सौंसे मिथिलाक साहित्यकारक सहयोग संस्थानकेँ भेटैत छैक। मैथिल समाज अपन उदारताक परिचय दऽ एकर विकासमे योगदान दैक जाहिसँ मिथिलाक उज्ज्वल भविष्यक मार्ग प्रशस्त होइक।



एक नजरिमे विद्यापति सेवा संस्थान

✍ मिथिलेश कुमार झा

कहबी छै जे दसक लाठी एक बोझ, माने, फराक-फराक लाठी ओतेक बलगर नहि होइछ जतेक एकट्ठा कएल, बान्हिकऽ बोझ बनाओल लाठी। एकट्ठा रहबाक ई महत्व अदौसँ अछि आ जे रहत मनुक्ख जखन वनमे रहैत छल तऽ एकट्ठा रहिए कऽ शिकार करैत छल आकि बनैया पशु सभसँ बाँचि पबै छल। आगू एकर महत्व विभिन्न तरहें आर बढ़ैत गेल।

एकट्ठा रहबाक लाभ वर्तमानहुमे आँखिदेखल अछि। जे समाज संघबद्ध भऽ, संगठित भऽ सामूहिक भावें क्रियाशील नहि अछि से पछुआएल अछि। एहि सन्दर्भमे मिथिलाक स्थिति पर विचार करी तऽ 'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना' स्पष्ट देखार होइछ। भाषा, संस्कृति, शिक्षा आदिक संगहि विकासक कोनहु बिन्दु पर मिथिलावासी संगठिन नहि छथि। मुदा, एहनो परिस्थितिमे किछु संस्था संगठन-शक्तिकेँ चीन्हि अपना भरि मिथिलाक विकासक हेतु सामूहिक भावेँ चेष्टारत अछि। एहन संगठन-संस्थाक संख्या ओना बड़ थोड़ अछि तथापि नीक भविष्यक आशा आवश्यक जगबैत अछि। मिथिलाक सर्वांगीण विकासक हेतु क्रियाशील एहने किछु संस्थामे दड़िभंगाक विद्यापति सेवा संस्थान प्रमुख अछि।

विद्यापति सेवा संस्थानक स्थापना प्रायः उनचालीस बर्ख पूर्व मिथिला समाजक बहुमुखी विकासक लक्ष्यकें सोझाँ राखि भेल छल जाहि दिस डेग-डेग चलैत संस्था बहुत रास काज कएलक अछि आ अपन लक्ष्य दिस निरंतर बढ़ैत जा रहल अछि।

दड़िभंगाक ऐतिहासिक हड़ाही लग विद्यापति चौकक निकट संस्थाक अप्पन भूमि पर कार्यालय छैक। विद्यापतिक तिरोधान दिवस पर प्रत्येक बर्ख ई संस्था मेमोरियल कॉलेजक प्रांगणमे तीन दिनक मिथिला विभूति-पर्व-समारोहक भव्य आयोजन करैत अछि। एहि अवसर पर मिथिला-विभूति सभक गौरवपूर्ण स्मरण, मिथिलाक सपूत लोकनिक सम्मान, कवि, सम्मेलन, गीतनाद आदिक आयोजन होइत अछि। एहि आयोजनसँ समस्त दड़िभंगा मैथिलीमय भए जाइत अछि। नवका पीढ़ीकेँ अपन गौरवक ज्ञान होइत छनि आ प्रेरणा भेटैत छनि। समाज जागृत होइत अछि। विद्यापति पर्व समारोहक माध्यमे समाजमे जागरण अनबाक जे सपना किरणजी, मधुपजी आदि देखने छलाह से किछु हद धरि पूरा होइत देखाइत अछि। अपन भाषा ओ साहित्यक प्रति लोकक आकर्षण बढ़ैत छैक। अपन अधिकार आ कर्तव्यक ज्ञान समाजकेँ होइत छैक। सरकार मिथिलाक आबाज दिस साकांक्ष होइत अछि। विभिन्न क्षेत्रमे काज कएनिहार मिथिलाक सपूत अपनाकेँ माटिसँ जोड़बाक प्रेरणा ग्रहण करैत छथि। सामाजिक विषमता घटैत अछि आ मिथिलाक एकता मजगूत होइत अछि।

मिथिलाक मानसिकता 'बाड़ीक पटुआ तीत' वला अछि। एहि समाजक लोक अनका तऽ खूब सम्मानित करैए, उनका नाम पर चौक आ बाटक नाम रखैए, अनकर मूर्ति स्थापित करैए। किंतु, लोककेँ अपन गौरवक बोध नहि, अपना मनीषीक महत्वक ज्ञान नहि, अपन मनीषीकेँ सम्मानित करबाक ज्ञान नहि। विद्यापति सेवा संस्थान एहि स्थितिमे सुधार अनलक अछि। अपना मनीषी लोकनिकेँ ताकि-ताकि सम्मानित करैत अछि। ततबे नहि, अपना पूर्वजकेँ सेहो पूर्व सम्मान दैत अछि। विद्यापतिक पहिल मूर्ति (1980) इएह संस्था स्थापित कएलक जे दड़िभंगामे हड़ाही टीसनसँ थोड़बे हटिकऽ एखनो शोभायमान अछि। तकरा संगहि आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन', आरसी प्रसाद सिंह तथा बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क मूति सेहो स्थापित कऽ चुकल अछि। समस्तीपुर-दड़िभंगा छोटी लाइनकेँ बड़ी लाइनमे बदलबाक योजना बहुत पूर्व ललिते बाबू स्वीकृत कएने छलाह, मुदा कार्य बढ़ि नहि सकल छल। एहि कार्य हेतु विद्यापति सेवा संस्थान आन्दोलन कएलक तथा कार्य रामविलास पासवानक रेलमंत्रीत्व कालमे फलीभूत भेल। ई संस्था मिथिला विभूति-पर्व-समारोहमे कवि-सम्मेलनक आयोजन आ मोटगर-गतगर ज्ञानवर्द्धक स्मारिका 'अर्पण'क प्रकाशन नियमित रूपेँ करैत अछि। एहि सबसँ निश्चित रूपेँ एकटा साहित्यिक परिवेशक निर्माण होइत छै तथा नवोदित रचनाकर प्रोत्साहित होइत छथि। एखन धरि अठाइस गोट स्मारिकाक प्रकाशन भेल अछि।

मैथिलीकें भारतीय संविधानक आठम अनुसूचीमे सम्मिलित करेबाक निमित्त देशक अनेक संस्था ओ व्यक्ति चेष्टा कएलनि। ई संस्था बेसी सचेष्ट भेल। दड़िभंगासँ दिल्ली धरि लगातार ज्ञापन, धरना, प्रदर्शन आदि कएलक। राजनीतिक गोटी बैसेलक आ अंततः एहि लक्ष्यकें पओलक। मिथिला राज्यक सपना समस्त मैथिलक आँखिमे बहुत दिनसँ अछि। मिथिलावासीक एहि सपनाकेँ साकार करबाक हेतु विद्यापति सेवा संस्थान लगातार सचेष्ट अछि। जिला स्तरसँ लऽ दिल्ली धरि सभा, प्रदर्शन, धरना, ज्ञापन आदिक आयोजन लगातार कऽ रहल अछि। ओना, मिथिला राज्यक आन्दोलन हेतु जतेक तैयारी हेबाक चाही, होमवर्क हेबाक चाही, माटिसँ जड़िआएल हेबाक चाही ताहिमे बेस कमी अछि। तथापि आन्दोलनकेँ जगा कऽ रखबाक कार्य इएह संस्था कऽ रहल अछि।

काज आरो भऽ सकैत छै, जेना-मैथिलीकेँ राज्य सरकारक स्तर पर स्वीकृत कराएब, क्षेत्रीय भाषाक दर्जा दिआएब, शिक्षामे समुचित स्थान दिआएब, निजी व्यवहारमे मैथिलीक अधिकाधिक प्रयोगक हेतु जनगणकेँ प्रेरित करब, मिथिलाक इतिहासकेँ देखार करबाक हेतु शोध व्यवस्था, सांस्कृतिक जागरणक चेष्टा, मैथिलीक उचित हिस्सेदारी रेडियो आ दूरदर्शनमे दिआएबाक चेष्टा, निजी क्षेत्रमे मैथिलीकेँ समर्पित रेडियो आ टीवी चैनलक हेतु सामर्थ्यवानकें प्रेरित-प्रोत्साहित करब आदि आदि। किन्तु, साधन सीमित। ओहुना एक्कहि गोट संस्थासँ कतेक अपेक्षा राखत समाज-सेहो निष्क्रिय पड़ल लोकक माझ! तथापि संस्थानक पछिला कार्य सभकेँ देखैत आशा तऽ कएले जा सकैछ। विद्यापति सेवा संस्थानक प्रति समाजक इएह आशा संस्थाक शक्ति आ भविष्य दुनू अछि।

■

महाकवि विद्यापति आ विद्यापति सेवा संस्थान

✍ डा. उषा चौधरी

महाकवि विद्यापतिक आविर्भाव चौदहम शताब्दीक मध्यभागमे भेल छल। कविपति अपना कालमे जेहन प्रासांगिक छलाह आइयो तहिना छथि। आइ-काल्हि साहित्यमे भोगल यथार्थक अनुभवक प्रामाणिकता आदिक चर्चा होइछ। तहिन विद्यापति सेहो अपना कालमे आन साहित्यकारसँ पफराक तत्कालीन समस्यासँ जन-जनकेँ अवगत करौलनि। देश-काल-परिवेशसँ पफराक कऽ कोनो रचनाकारकेँ प्रभावित करैछ। ओकर रचनाक गति प्रकृति स्वर-स्वरूप निरूपित-निर्धारित करबामे सहायक होइछ। ओइ समय मुसलमानी आक्रमणक कारणे सामाजिक सामंजस्यक अभाव छल। नैतिक मूल्यक अवनति भऽ रहल छल तँ अपन कीर्तिलतामे ओ लिखने छथि -

खले सज्जन परिभाविअ कोइ नहि होइ विचारक।
जाति-अजाति विवाह, अधम उत्तम का पारक।।

ताहि समयमे प्रबुद्ध वर्ग लोक भाषाकेँ हेय दृष्टिएँ देखैत छल तएँ विद्यापतियो के उपहासक सामना करए पड़लनि। तकर निराकरण ओ एना लीखिकऽ कएलनि -

वालचन्द विज्जावइ भाषा, दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा।
ओ परमेसर हर सिर सोहइ, इ निच्चइ नाअर मन मोहई।

देसिल वयना सबजन मिट्ठा। तेँ तइसन जम्पमो अवहट्ठा। इ गर्वोक्ति इतिहासमे विरल अछि जे हुनक प्रतिभाक अनुरूप अछि। विद्यापति केवल कवि नहि छलाह, ओ एक संग कवि, कथाकार, नाट्यकार, शिक्षक, दार्शनिक, ऐतिहासिक, भूवृतान्त लेखक, स्मार्त निबन्धकार, धर्मकर्मक, व्यवस्थादाता, कानूनक प्रमाझय ग्रन्थ लेखक राजनीतिविद् योद्धा, संगीतज्ञ आ सुकंठ गायक छलाह। लेकिन हुनक असल परिचय देसिल वयना मैथिलीक पदावली थिक। एहि पदावलीक करणे ओ दर्जनो उपाधिसँ विभूषित भेलाह आ छः सए वर्षक उपरान्तो हुनक छवि अम्लान अछि। इएह पदावली हुनका युग-द्रष्टासँ युगस्त्रष्टाक आसन पर आसीन कएलक। एक दिस विद्यापतिक प्रतिभासँ लोकभाषा मैथिली मर्यादित भेल तँ दोसर दिस मैथिलीमे रचना कए ओ अमर भऽ गेलाह।

विद्यापति सर्वसाधारणक कथा-व्यथा, प्रेम, विरह, मिलनक कथा-गाथा थिक। प्रेम जीवनक रस थिक जकर अभावमे जीवन सुखाएल काठसन प्राणहीन भऽ जाइछ। विद्यापतिक पदावली एही प्रेम सुधाक कल-कल, छल-छल प्रवाहित होइत सदा नीर थीक। मुदा, हुनक नचारी सर्वसाधारणक दिनचर्चा थिक। ओकर कथा-व्यथाक जीवंत छवि थिक -

केहन भेलहुँ भोला गरिबक दिन
एकटा लोटा छनि बेटा छनि तीन
पानि पीबैत काल होइ छनि छीना छीन।

आइयो ओतबे सत्य अछि, जते ताहि युगमे। आ एकर भोगल यथार्थ वा अनुभवक प्रामाणिकता पर प्रश्नचिन्ह नहि लगाओल जा सकैछ-धनिकक आदर सब जग होइ। निर्धन बापुर पुछय न कोइ।

सन पदक मर्म, एकर वेदना कोनो गरीबसँ जानल जा सकैछ। तहिना -

सखि हे हमर दुःखक नहि ओर, पिया मोरा वालक हम तरूणी गे।
माधव हमर रहल दूर देश, केओ ने कहय-सखि कुशल सनेस।

आइयो पेटक आगि मिझेबाक लेल आसाम, दिल्ली, मुम्बई, पंजाबक चर-चांचर, खेत-खरिहानमे फिफिआइत, आतंकबादीक शिकारक परिवारक मुँहसँ सुनल जा सकैछ। हिनका लेल एके टा शब्द अहि तोहर सरिस जग एक तोहें माधव।

हमरा जनैत इ गप्प सन 1977-78 ई. क अछि ओहि समयमे डॉ. वैद्यनाथ चौधरी बैजू (AISF) ऑल इन्डिया स्टूडेंट फेडरेशनक सम्पूर्ण बिहारक नेता रहथि आ मिथिलांचलमे भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टीक दबदबा रहै। राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सेहो नाम-यश एहि पार्टीकेँ रहै। हिनक राजनीतिक गुरु पहिल तऽ का भोगेन्द्र झा आ दोसर का. श्रीकान्त मिश्र दुनु मीलिकऽ बैजू बाबूकेँ उत्साह बर्द्धन करैत कहलनि जे मिथिला आ मैथिली भाषाक लेल एकर उत्थान आ विकासक लेल एकटा अलग संस्था होअकेँ चाही जाहिमे कोनो पार्टी विशेष नहि बल्कि जे एकर शुभचिंतक होअय ताहि सभ व्यक्तिकेँ एहि संस्थामे शामिल कएल जाए। आ एहि शुभकार्यक लेल बैजू बाबू परम उत्साहक संग संस्था बनाबएमे ततपर भऽ गेलाह। एहि संस्थाक नामकरण तँ स्व. श्री ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म जी' कएने छथि। मुदा एकरा लेल तेरह सूत्री माँगक स्वरूप निर्धारण कामरेड भोगेन्द्र झा कएने छथि। एहि तेरह सूत्री माँगकेँ लऽ कऽ जे जेल भरो आन्दोलन कएल गेल ताहि मे विभिन्न पार्टीक लोक शामिल भेला। ताहि मे प्रमुख व्यक्ति छलाह- का. भोगेन्द्व झा केन्द्रीय मंत्री हुकुमदेव नारायण यादव, नागेन्द्र झा, धनिक लाल मंडल, भागवत झा आजाद, स्व. सुरेन्द्र झा 'सुमन', चुनचुन

मिश्र (रहिका), स्व. पं. देव नारायण झा, स्व. श्रीकान्त मिश्र, श्रीविमल कान्त चौधरी, श्री राम कुमार झा इत्यादि नेता लोकनि जेकि विभिन्न पार्टीक छलाह।

'विद्यापति सेवा संस्थानक' पहिल अध्यक्ष मणिपद्म जीकेँ बनाओल गेल छल जे कि कोनो विशेष राजनीतिक दलक सदस्य नहि छलाह आ आरंभिक कार्य सभ हुनकेँ अध्यक्षतामे होइत रहल। मणिपद्मजी संत स्वभावक साहित्यिक लोक छलाह। तएँ सभ मैथिली भाषाक प्रेमी लोकनि एहि संस्थासँ जूड़ि गेलाह।

'विद्यापति सेवा संस्थान' आरंभेसँ एकटा आन्दोलनीक रूपमे कार्य कएलक अछि एकर एखन धरिक जे तीनटा प्रमुख कार्य भेल अछि से पहिल थिक समस्तीपुरसँ दरभंगा बड़ी रेल लाइन, दोसर आकाशवाणी दरभंगासँ मैथिलीमे दैनिक समाचार, तेसर जे सभसँ उत्तम कार्य अछि से थिक संविधानक अष्टम सूचीमे मैथिलीक स्थान। एहि तीनू कार्यमे प्रमुख साहित्यकार, बुद्धिजीवी, विभिन्न राजनीतिक दलक नेता लोकनि बढ़ि-चढ़ि कऽ भाग लेने छथि।

संस्थानक सचिव श्री बैद्यनाथ चौधरी बैजूजी क नेतृत्वमे पहिल बड़ी लाइनक लेल आन्दोलन संस्था कएने छल ताहिमे का भोगेन्द्र झा, श्री राजीव कुमार चौधरी (पू. मुखिया, पंचोभ), हुकुमदेव नारायण यादव, धनिकलाल मंडल, पं. देव नारायण झा, डॉ. सुरेश्वर झा, श्री विमल कान्त चौधरी, श्री राम कुमार झा आदि नेता लोकनिक प्रमुख योगदाल छल।

दोसर आकाशवाणी दरभंगासँ मैथिलीमे समाचारक लेल बैजू बाबूक नेतृत्वमे मैथिली साहित्यक प्रमुख साहित्यकार स्व सुरेन्द्र झा सुमन, पं. चन्द्रनाथ मिश्र, डॉ. सुरेश्वर झा, डॉ. भीम नाथ झा, श्री चन्द्रेश, डॉ. बुचरू पासवान, डॉ. कमला कान्त झा, प्रदीप जी, बूढ़ा भाई इत्यादि लोकनि बढ़ि-चढ़ि कऽ हिस्सा लेने रहथि। हिनका लोकनि अथक प्रयाससँ इ कार्य भेल। मैथिलीकेँ अष्टम सूचीमे स्थान- तेसर जे एखन तक केँ सर्वोत्तम कार्य थिक एहि संस्थानक से पहिल बेर स्व. का. भोगेन्द्र झाक नेतृत्वमे डेलीगेशन गेल छल जाहिमे योजनाकर्त्ता आ सरकारकेँ प्रभावित करबामे अहम योगदान छलए डॉ. सी. पी. ठाकुरक। पूर्व प्रधान मंत्री श्रीअटल बिहारी वाजपेयी जीक समयमे आडवाणीजीक प्रयाससँ 2003 ई क 22 दिसम्बरकेँ लोकसभामे आ 23 दिसम्बरकेँ राज्य सभामे पारित भेल। एहिमे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार आ पं. ताराकान्त झा एवं मैथिली भाषा प्रेमी सभ नेता लोकनिक योगदान रहल छनि। मिथिलांचलक बुद्धिजीवी वर्गसँ लऽ कऽ आम आदमी तक ओहि दिन खूशीसँ झूमि उठल छल। डॉ. बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' अपन एहि कार्यसँ अमर रहताह। भलेही अनेकानेक विद्वान आ नेता लोकनिक सत्तप्रयास एहि वास्ते दिन-राति होइत रहलनि, मुदा यशक झंडा तँ बैजूए बाबूक माथ पर रहतनि।

जहिना छः सए वर्षसँ विद्यापतिक नाम लोक सदिखन याद रखने अछि तहिना बैजू बाबू नाम सेहो मैथिला भाषाक अष्टम् सूचीमे नाम दिअएबा कारणे युग-युग धरि तक लोक याद राखत।

एतबे नहि, संस्थान प्रत्येक साल अपन पत्रिका 'अर्पण' प्रकाशित करैत अछि। अनेको प्रमुख विद्वान आ समाजिक कार्यकर्त्ता केँ एखन धरि पुरस्कृत कएने अहि। चेतना समिति पटनाक बाद 'विद्यापति सेवा संस्थान मैथिलीक विकासमे अहम् भूमिका निभौने अछि।

मैथिलीक अष्टम् सूचीमे आयलाक बाद जे सभसँ प्रमुख कार्य इ संस्थान कऽ रहल अछि ओ अछि मिथिला राज्यक माँग। एहि लेल पं. श्री अमरजीक अध्यक्षतामे सचिवक रूपमे श्री बैजूजी अनवरत प्रयासमे लागल छथि।

'वृहत् विष्णु पुरान'क अनुसार लम्बा एवं दक्षिण दिस गंगा नदीसँ लऽ कऽ हिमालयक जंगल धरि सोलह योजन (64 मील) आ गंडक धरि चौबीस योजन (96 मील) धरिमे पसरल भू-भागकेँ (मिथिला देश) कहल जाइत छल जे तीनू लोकमे प्रसिद्ध अछि। डॉ. ग्रियर्सनक अनुसार- बिहारक (झारखंड सहित) 22 जिला आ नेपालक पाँच जिला (आब सात जिला) अछि जे मिथिला कहल जाइत अछि। इ तँ सर्वविदित अछि जे वृहत्तर मिथिला (नेपाल सहित) पर कहियो मिथिलाक राजा जनक शासन-प्रशासन रहल अछि। से थोड़ दिन नहि, अधिकांश समय धरि।

संभवतः एहि बातसँ प्रेरित भऽ डॉ. लक्ष्मण झा (पूर्व कुलपति) बीसमी शताब्दीमे जोरदार ढ़ंगसँ मिथिला राज्यक माँग कएलन्हि। जकरा अनेकानेक नेता लोकनि तखनसँ एखन धरि तक अपना-अपना ढ़ंगसँ समर्थन कऽ रहल छथि। एहन मैथिली सेनानी केँ नमन करैत छियनि। मिथिला, मैथिली लेल हिनक आन्दोलन चलैत रहतनि अनवरत तकर हम कामना करैत छी। हिनक सफलताक हम मंगल कामना करैत छी।

■

विद्यापति सेवा संस्थानक यथार्थ

✍ विजय कुमार मिश्र

विद्यापति स्मृति पर्व-समारोहक अवसर पर महान लोकनायक महापुरुषक संगहि मिथिला माटिक महान विभूति लोकनिक कृर्ति, यश, संस्कार, संस्कृति आदिक संरक्षण आ सम्वर्द्धन द्वारा मिथिलांचलमे जागृति अनबाक उद्देश्यसँ उक्त पर्वक आयोजन होइत अछि। कविकुल कुमुद विद्यापति देशक कला, संस्कृति आ परम्पराक अपन कृतिसँ प्रतिपादित आ परिभाषित होइत रहलाह। एकरहि परिणाम छल जे मिथिलाक अतिरिक्त बंगाल, उड़ीसा, असमिया आदि सेहो हिनका नमन विभूति मानैत रहल आ महाकवि धर्मशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, गीत-संगीत, कला आदिमे निष्णात बनल रहलाह।

एहि आयोजनसँ हमर धरोहरक अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर संरक्षण आ सम्वर्धन निःसन्देह सेवा भावनाकें परिलक्षित करैछ। ताहि कारणे मिथिलाक ''वसुधैव कुटुम्बकम'' प्रतिपादित जे वैदिक सिद्धान्तक चिन्तन-मनन, अनुशीलन, अध्ययन-अध्यापन, मनोरंजनक मूल्यांकन आदिक आयोजनसँ प्रचारित-प्रसारित आ समाजोपयोगी बनल रहल। न्याय, साँख्य, वेदान्त, मीमांसा, ब्रह्मवाद आदि-आदि विषयक एहि सिद्धान्तक परिभ्रमण करैत जनक, याज्ञवल्क्य, कणाद, गौतम, कपिल, व्यास, गंगेश आ विद्यापति आदि मिथिला विभूतिक जे श्रृंखला बनल तकरा आराध्य बुझि मिथिला विभूति पर्वक रूपमे मिथिलाक कतिपय सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थान अपन अहर्निश सेवाक रूपमे अद्धतन स्मरण करैछ आ महाकविक कृति यशसँ देश-देशान्तर सिंचित होइत रहल।

एहि अहर्निश सेवा भावनाक श्रृंखलामे विद्यापति सेवा संस्थान चर्चित कड़ीक रूपमे मानल जाइछ। मुदा, श्रृंखलाक पहिल कड़ी चेतना समिति, पटनाक चर्च आवश्यक नहि होयत। चारि-पांच दशक पूर्वहिँसँ चेतना समिति अपन उद्देश्यपूर्ण यात्राक क्रममे मिथिला विभूति पर्वक विशिष्ट आयोजनक अन्तर्गत कवि-गोष्ठी, विचार गोष्ठी, समलंकरण, सांस्कृतिक कार्यक्रमक अतिरिक्त मिथिलांचलक विभूतिक स्मरण कऽ अपन सेवा भावना प्रदर्शित कयने अछि। अनेको बुद्धिजीवी, विचारक, उपन्यासकार, कथाकार, कलाकार, गीतकार, संगीतकार, नाटककार संग विभूति लोकनिक सेवा लैत रहल आ एहि आयोजनक अग्रणी बनबाक सुअवसर सेहो उठौलक। एहि भावना के मिथिलाक आनो-आनो स्थान पर मिथिला विभूति पर्वक आयोजन होयब प्रारम्भ भेल। जाहिमे दरभंगा स्थिति ''संकल्पलोक'', लहेरियासरायकें आयोजन अपन विशिष्टता बनबयमे सेहो सपफल रहल। दुर्भाग्यवश ''संकल्पलोक'' नहि चलि सकल। मुदा, ओहि अभावकें अपन दृढ़ संकल्पक संग विद्यापति सेवा संस्थान पूर्ण कऽ विधिवत चर्चित भऽ गेल।

कोनो क्षेत्रक कथ्य, तथ्य वा वास्तविकता ओकर सभ्यता, संस्कृति, साहित्यसँ समाजसँ अपन अन्तर्सम्बन्ध बनौने रहैछ। वास्तवमे सभ्यता, संस्कृति आ साहित्यक अन्तर्सम्बन्धक एकीकरण वास्ते संस्थान आ संगठनक आवश्यकता होइछ जकर उद्देश्य अपन जनसामान्यकें ओहि धरोहरक जाग्रत करबाक होइछ। विद्यापति सेवा संस्थान ओहि जागरूकताक अलाव जगबय लेल प्रतिबद्ध होइत मिथिलाक मानवीय जीवनक ज्ञान अपना मंचसँ प्रदान करबाक यात्रा पर निकलि पड़ल। कोनो कथ्य वा तथ्यक जतेक जानकारी एहि तरहक सशक्त संस्थानसँ भऽ सकैछ से अन्य माध्यमसँ प्रायः सम्भव नहि बुझाइछ। उपरोक्त धरोहरक दस्तावेजी रूप मंच द्वारा उपलब्ध करब सुलभ होइछ। मिथिला विभूति पर्वक आयोजनक क्रममे विद्यापति सेवा संस्थान तकर निर्वद्ध कयलक अछि।

प्रायः तीन दशक पूर्व मणिपद्मजीक देख-रेखमे जे चार्ट डिमाण्ड बनाओल गेल छल तकरहि अनुसारें संस्थान मिथिला विभूति-पर्वक आयोजन, भाषाक संरक्षण आ प्रचार-प्रसार क्षेत्रक समस्याक निदान, सांस्कृतिक धरोहरक संरक्षणक लेल अनेको प्रभावी कार्यक्रम बनौलक। जकर मुख्य संचालक बैद्यनाथ चौधरी ''बैजू'' अपन सकारात्मक सोच द्वारा आगां बढ़बैत गेलाह। उपरोक्त कार्यक्रमक सफलताक लेल अनेको मंत्री, सांसद, विधायक, उपन्यासकार, साहित्यकार, कवि, कलाकार विद्यापति सेवा संस्थानकें बल प्रदान करैत रहल। परिणामस्वरूप संस्थानक कार्यक्रम आन्दोलनक रूप लऽ लेलक आ अपन मंचसँ समाजक सब वर्गक प्रतिनिधिकें प्रोत्साहन, संरक्षण दऽ अपन धरोहरक संरक्षण कयलक। विशेष कऽ अनेको उपेक्षित आ बिसरल कलाकारकें समाजक समक्ष अनलक।

अपन कार्यक्रमक अन्तर्गत मिथिला भवन, स्थायी दैनिक पत्र-पत्रिका, लोक गाथाक आ लोक जीवनक संरक्षण आ सम्वर्धन, मैथिलीवासी मनोरंजनार्थ शिक्षाप्रद आ समाजोपयोगी मैथिली फिल्मक निर्माण, कालजयी रचनाक प्रकाशन आ समस्या समाधानक निहितार्थ जनसामान्यकें सेहो निवेदन करैत रहल। एहि कारणे दरभंगासँ जयनगर धरि बड़ी लाइनक महत्वाकांक्षी आन्दोलन सपफल भेलैक। जिला प्रशासन आ राज्य सरकारक सहयोगसँ विद्यापति मार्गक घोषणा (वी.आई.पी. रोड) भेलैक। एहिसँ पूर्व कोनो महापुरुषक नाम पर कोनो सड़क वा चौक प्रायः घोषित नहि भेल छल। विद्यपति चौक आ सुमनजी चौकक स्थापना दरभंगा नगरक इतिहासमे पहिल अछि। नीतिश सरकार द्वारा विद्यापति पर्व के राजकीय पर्व घोषित करैबाक दायित्व विद्यापति सेवा संस्थानकें छलैक। मुदा, संस्थान ओ काज एखन धरि सम्यक नहि भऽ सकलैक। जाहिमे आन-आन प्रदेश जकाँ अपनहुँ प्रदेशमे अधिकसँ अधिक साइनबोर्ड मैथिलीमे रहबाक प्रयास कयल गेल छल। संगहि मैथिली अधिकार दिवस पर प्रत्येक घरमे एक टा दीप प्रज्जवलित होबाक कार्यक्रम सेहो भेल।

मिथिला विभूति पर्वक सिलसिलेवार कार्यक्रमक उद्घाटन समारोह, अतिथिक भाषण, नव-नव सूचना, कवि-गोष्ठी, विचार-गोष्ठी, मिथिला विभूतिक समलंकरण एवं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमक अन्तर्गत अनेको एहन-एहन वस्तु, तथ्य आ सत्य प्रस्तुत कयलक अछि जाहिसँ संस्थानक वैशिष्ट्य परम्पराक निर्वहन स्पष्ट होइछ।

1982सँ अद्यतन लगभग सवा सय विभूतिक समलंकृत संस्थान द्वारा भेल अछि। जाहिमे मिथिला आ एकर बाहरक कतेको व्यक्तित्व, विभूति, उपन्यासकार, साहित्यकार, समाजसेवी, कलाकार आदिसँ जनसामान्य रूबरू होइत रहल, अपन धरोहरक जानकारी प्राप्त करैत रहल। आन्दोलनक दर्पणमे विद्यापति सेवा संस्थानक क्रिया-कलाप चर्च करब आवश्यक नहि बुझना जाइछ। एहन कोनो आयाम नहि अछि जाहि पर संस्थान सक्रिय नहि भेल हो। ओकर परिणाम कहाँ धरि भेलैक, कतेक भेलैक ई भिन्न बात अछि, मुदा अपन संघर्षशीलता, आन्दोलित उद्देश्य आ कार्यशीलताक परिचयसँ एहि क्षेत्रक जनसामान्य परिचित अछि। भाषाक चर्च हो, अथवा शिक्षा एवं अध्ययन-अध्यापन, संविधानक अष्ट्म अनुसूची हो वा बाढ़ि आ सुखाड़क स्थिति, वा आन-आन प्राकृतिक विपदा सभ क्षेत्रमे अपन प्रतिनिधित्वक एहसास करौलक अछि। भारतीय दर्शन, सभ्यता एवं साहित्यक संरक्षण जकर एकमात्र उद्देश्य रहलैक ताहि संस्थानक सेवा अहर्निशताक श्रेणीमे आबि सकैछ।

सांस्कृतिक कार्यक्रमक प्रभावी आयोजनक अन्तर्गत संस्थान द्वारा अनेको विसरल प्रतिभा सम्पन्न, उपेक्षित कलाकारकें मंच प्रदान कऽ समाजक मुख्य धारामे जोड़ि अपन सांस्कृतिक धरोहरक संरक्षण कयलक। जहिना काशी नागरी प्रचारिणी सभाक साहित्यिक गोष्ठीसँ भोजपुरी साहित्य, कला, संस्कृतिकें बढ़ावा भेटलैक तहिना विद्यापति सेवा संस्थानसँ मिथिला, मैथिली बलवती भेल। ओना भोजपुरी भाषा अपन पिफल्मक माध्यमसँ सेहो प्रचारित-प्रसारित भेल अछि, मुदा मैथिली भाषाक पिफल्म एखनहुँ निराशाजनक स्थितिसँ उबरि नहि सकल अछि। मुदा, एकर कलाकार संस्थानक प्रयाससँ सम्मानित जरूरत भेल। वर्त्तमान परिदृश्यमे मैथिली पिफल्म निर्माण ततबे आवश्यक अछि जतबा एकर दैनिक पत्र-पत्रादि। कोनो क्षेत्रीय भाषाक पत्रकारिता वा पत्र-पत्रिकादि ओहि भाषाक पिफल्म निर्माणक समानान्तर रूपमे सहयोगी बनि अपन क्षेत्रक विकास, संरक्षण आ सम्वर्धनमे कारगर भेल अछि। जाहि लेल उक्त क्षेत्रक साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन, मंच वा संस्थान अहम भूमिकाक निर्वद्धकयलक। तथापि देशक अन्य क्षेत्रमे अपन विकास आ संरक्षण सम्वर्धनमे जाहि रूपक आन्दोलन होइत ताहि रूपें अपन प्रदेशमे नहि चलब चिन्ताक विषय अछि। खण्ड-खण्ड आ विभक्त रूपसँ चलाओल गेल आन्दोलन ओतेक प्रभावी नहि होइछ। जँ अधिकतर संस्था एकजूट भऽ अपन समस्या, अपन धरोहर, अपन संस्कृतिक रक्षार्थ आन्दोलन करबाक विचार करैछ तऽ चेतना समिति आ विद्यापति सेवा संस्थानक नेतृत्व करब निरर्थक नहि होइत वा आनो-आन संस्थान एकजूट भऽ आन्दोलन चलबय तँ ओकर सेवा भावना सेहो हेतैक आ समस्याक समाधान सेहो। केहनो समृद्धशाली व्यक्ति एहि कार्यमे सपफल नहि भऽ सकैछ जाधरि ओकरा कोनो एहन सशक्त मंच नहि सहयोग करय। विद्यापति सेवा संस्थान ओहि तरहक व्यक्तित्वकें अपना सहयोगक लेल तैयार कऽ सार्मथ्यवान प्रयास कऽ रहल अछि। जाहिसँ क्षेत्रक विकास हो। भाषाई आन्दोलनक अगुआई करबाक परिणाम छल जे एहि क्षेत्रक अनेको सांसद आ विधायक मैथिली भाषामे शपथ ग्रहण कयने छलाह।

देखल गेल अछि जे देशक कोनो सर्वोच्च साहित्यिक संस्था नियमित आ व्यवस्थित प्रकाशनक कारणें चर्चित रहल। साहित्यि अकादमी स्वयं एकर ज्वलन्त उदाहरण अछि। जाहिसँ मैथिली साहित्य जगत स्वयं लाभान्वित भऽ रहल अछि। साहित्यिक सृजनतामे ओकर रचनाकार महत्ता तँ छैक मुदा, प्रकाशकक भूमिका कम नहि आँकल जा सकैछ। मुदा, भाषाक प्रति उदासीनताकें कोन संस्थान समाप्त कऽ सकैछ, ओहि लेल पाठक स्वयं जिम्मेवार अछि। हमर मोनमे की अछि? हम की चाहैत छी? हमरा की करबाक चाही? हमरा कतेक जानकारी अछि आदि चिन्तन-मनन जाधरि दस्तावेजक रूपमे नहि होयत ताधरि कोनो तथ्य वा कथ्यक संरक्षण वा संवर्धन कोना भऽ सकैछ। आजुक युगमे दस्तावेजीकरण प्रमुख माध्यम पिफल्म आ पत्र-पत्रिका अछि।

एहि समारोहक आयोजनसँ मिथिलाक पाबनि-तिहार, लोकाचार, आतिथ्य-सत्कार, लोकगाथा, धरोहर आदिक व्यापक रूप देखबामे सहायता भेलैक अछि। अपन कुटुम्ब, सम्बन्धी दोस वा आप्त व्यक्तिसँ एहि अवसर पर भेंट-घांट कम महत्वक नहि होइछ। देखल गेल अछि जे एहि अवसर पर कन्यादानक बातचीत सेहो जगह पौलक अछि। कहबाक तात्पर्य जे एहिसँ समस्याक समाधानक संग मनोरंजन आ अन्य बातक नवीनीकरण भऽ जाइछ। जहिना संस्थानसँ उत्तर रमेश्वरी श्यामा मन्दिरक नवाह यज्ञ एहि क्षेत्रक धार्मिक मेलाक रूपे लऽ लेलक अछि तहिना विद्यापति सेवा संस्थानक मिथिला विभूति पर्व अन्य पाबनि-तिहार जकाँ प्रतीक्षाक श्रेणीमे रहैछ। उक्त दूनू आयोजन मिथिलाक सामाजिक सद्भावना आ सौहार्द्रक पर्याय बनि गेल अछि। वास्तवमे कोनो आयोजन तखने कारगर सिद्ध होयत जखन ओहिमे समग्रताक आधार होइछ।

स्मरण होइछ सन् 1971क मिथिला मंडल, बम्बईक ओ अभिनन्दन समारोह जाहिमे मैथिली पिफल्म ''कन्यादान''क कलाकारक नागरिक अभिनन्दन भेल छल। तहियासँ अद्यतन सेहन्ता लगल रहि गेल जे आनो विभूति जकाँ मैथिली फिल्मक कलाकारक सम्मान होइत। तथापि विद्यापति सेवा संस्थान आ स्वयं बैद्यनाथ चौधरी ''बैजू'' जे अपन सेवाक तहत प्रकाश झा, बालकृष्ण झा, मुरलीधर आदि फिल्मकारक सम्मान करैत मैथिली फिल्मक दर्शकक चिर-प्रतिक्षित अभिलाषाकें पूरा कयलक।

मिथिलांचलक जीवन-मूल्य, लोकाचार, लोक-साहित्य लोकगीत-संगीत, एकर वैचारिकता, एकर धरोहर, एकर समृद्धता एकर मनोरंजनात्मक आयाम आदिकें संस्थागत संरक्षण आ सम्वध निक आवश्यक आवश्यकता अछि। विद्यापति सेवा संस्थानक संग आनो मंच मिथिलाक उपरोक्त मौलिकताकें सम्हारबाक जिम्मेवारीक निर्वद्ध करय। जकर प्रतीक्षामे मिथिलावासी एखनहुँ अछि। एहिसँ व्यक्ति, समुदाय, समाज आ भाषाक प्रति श्रद्धा, लगाव, समर्पण बढ़ैछ। एहिसँ व्यक्ति, समुदाय आ समाजमे व्याप्त संकीर्णता, भ्रामकता वा आन-आन तरहक कुभावना, उपेक्षा आदि संस्थानक माध्यमसँ दूर होइछ। ■

विद्यापति सेवा संस्था : एकटा क्रान्तिकारी संस्था

✍ डा. कमलकान्त झा

ओना तँ मैथिला-मैथिलीक उत्थानक लेल दूसयसँ अधिक संस्था कार्यरत अछि, किन्तु साहित्यिक सांस्कृतिक कार्यक्रमक अतिरिक्त ओ धरना, प्रदर्शन, नाराबाजी, सरकारी तंत्र पर दवाब आदि कार्यक्रम सेहो करैत हो ओहन संस्था दू-तीन दर्जनसँ अधिक दृष्टिगोचर नहि होइत अछि। ओहने किछु प्रमुख क्रान्तिकारी संस्थासबमे एकटा अछि दरभंगाक 'विद्यापति सेवा संस्थान'। जाहि संस्थाक अध्यक्ष मैथिली साहित्यक शिखर पुरुष पं. श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', उपाध्यक्ष डा. बुचरू पासवान आ महासचिव डा. बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' होथि से संस्था निष्क्रिय रहिये ने सकैत अछि। निरन्तर किछु ने किछु मिथिला-मैथिलीक उत्थानलेल ई संस्था संघर्ष करितहिँ रहैत अछि। दरभंगामे रहलाक कारण एहि संस्थाकेँ समयपर लोकक कमी नहि रहैत छैक। ताहूसे श्री बैजूजीकेँ कार्यकर्त्ताक कोन कमी? आधादर्जनसँ अधिक शिक्षण-संस्थान ओ स्वयं ठाढ़ कयने छथि, जाहि मध्यससँ सैकड़ो लोककेँ उपकृत कयने छथि। ई क्षमता कम लोकमे देखल जाइत अछि जे कोनहु आयोजनक हेतु चुटकी बजबैत लाखो टाकाक संग्रह कऽ लेअय गायक, वादक, विद्वान एवं साहित्यकार सबकेँ सन्तुष्ट कऽ देअय। श्रीबैजूजीमे से क्षमता छनि।

विद्यापति सेवा संस्थानक नामकरण स्व. डा. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' कयने छलाह। हुनक विचार छलनि जे संस्थाक नाम नरम आ काम गरम हेबाक चाही। श्रीबैजूजी ओहि समयमे ल ना मिथिला विश्वविद्यालयक छात्रनेताक रूपमे जानल जाइत रहथि। मैथिलीपुत्र प्रदीपजीक मार्गदर्शनमे मिथिला-मैथिलीक कार्य सेहो प्रारम्भकऽ देलनि। जखन संस्थान ठाढ़ भऽ गेलनि तखन ओकर बैनरमे बड़ी रेल लाईनक आन्दोलन प्रारम्भ भेल। यद्यपि रेलमंत्रालयसँ स्वीकृत छलैक तथापि अधिकारी लोकनि कार्य प्रारम्भ करबामे विलम्ब करैत जारहल छलाह। विद्यापति सेवा संस्थानक आन्दोलन ततेक उग्रभेल जे कार्यशीघ्र पूरा करबाक हेतु रेल अधिकारीकेँ विवश भऽ जाय पड़लनि।

आब संस्थान एकटा नव परम्परा ठाढ़ कयलक। विद्यापति पर्व समारोह वा स्मृतिपर्व नामसँ तँ देशभरिमे पर्याप्त कार्यक्रम होइते रहल छल, संस्थान ओहि लीकसँ हटिकऽ प्रतिवर्ष विद्यापतिक निर्वाणे दिवस दिन 'मिथिला विभूति पर्व' प्रारम्भ कयलक, जाहिसँ वक्तालोकनि विद्यापतिक अतिरिक्तहु सैकड़ो विभूतिक चर्चा कऽ सकथि। एखनधरि संस्थान सैकड़ो विभूतिक चर्चा-अर्चाकऽ चुकल अछि आ हजारो साहित्यकारकेँ अपन मंचसँ सम्मानित कऽ चुकल छनि।

महासचिव श्री बैजूजीक माध्यमसँ ई संस्था मैथिलीक संवैधानिक मान्यतामे महत्वपूर्ण योगदान दऽ चुकल अछि तथा राज्य आन्दोलनमे दऽ रहल अछि।

विद्यापति सेवा संस्थानकेँ आब अपन भूमि पैघ टुकड़ाक रूपसे छैक, जाहिपर विशाल मिथिला भवन बनयबाक योजना छैक। संस्थान समृद्धिकेँ प्राप्त करबादिस अग्रसर अछि। मिथिला राज्य आन्दोलनमे लोककेँ एहि संस्थासँ बड़ आशा छैक। केन्द्रीय संस्था अन्तरराष्ट्रिय मैथिली परिषदकेँ सेहो 'संस्थान'सँ बहुत आशा छैक।

■



समग्र विकासक उद्यान अछि विद्यापति सेवा संस्थान

✍ प्रवीण कुमार झा

स्वतंत्रता प्राप्ति उपरांत मातृभूमि मिथिला, मातृभाषा मैथिली आ मातृलिपि मिथिलाक्षर केर सर्वांगीण विकास लेल आकि मै मैथिलक समस्या समाधान लेल जँ कोनो संस्था आकि संगठन अंतराष्ट्रीय स्तर पर विशेष रूप सँ प्रखर रहल, ताहि मे निर्विवाद रूप सँ विद्यापति सेवा संस्थानक स्थान अग्रणी अछि। मैथिली भाषा-साहित्यक दधीचि लोकनिक अथक प्रयास सँ मिथिलाक हृदयस्थली दरभंगा में स्थापित एहि संस्थान केर उत्तरोत्तर एहन-एहन साहित्यकार ओ कर्णधार लोकनिक सहयोग आ मार्गदर्शन भेटैत गेल जकरा बदौलति ई संस्थान मिथिला-मैथिली आ आम मैथिलक उम्मीद पर खरा उत्तरय लागल आ मिथिलाक छोट सँ छोट ओ पैघ सँ पैघ समस्याक समाधान लेल ई संस्थान अपन स्थापनाक प्रारंभिक कालसँ संघर्षक पर्याय बनि गेल। मैथिली भाषा केँ संविधानक आठम अनुसूची मे स्थान दिएबाक लेल, दरभंगा मे बड़ी रेल लाइन आनक लेल, मिथिला मे बाढ़ि, सुखाड़क समस्याक समाधान लेल आकि मिथिलाक चतुर्मुखी विकासक लेल मिथिलामे औद्योगिक, सामाजिक, आर्थिक ओ सांस्‍तिक अभ्युत्थानक लेल ई संस्थान सतत प्रयत्नशील रहैत अनेक अपेक्षित परिणाम हासिल करबाक मे सेहो सफल भेल, जे एहि संस्थानक स्थापनाक उद्देश्यकेँ जीवंत होयबामे सद्यरू प्रमाण अछि।

ई संस्थान अपन स्थापना कालहि सँ नारा लगबैत आबि रहल अछि- 'जनगणना मे मैथिली, संविधान मे मैथिली, भीख नहि अधिकार चाही, हमरा मिथिला राज चाही'। ईहो जगजाहिर अछि जे विद्यापति सेवा संस्थानक अथक सँ मैथिली केँ संविधानक आठम अनुसूची में गौरवपूर्ण स्थान भेटल। एहि मे पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी ओ पद्मश्री डा. सी. पी. ठाकुर जीक योगदान सर्वथा महत्वपूर्ण रहल। संगहि वाजपेयी सरकारक तत्कालीन मंत्री आ संप्रति बिहारक मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सेहो विशेष रूप सँ धन्यवादका पात्र छथि, जे मैथिली केँ संविधान में अधिकार दियेबाक लेल कैबिनेट मे विशेष सहयोग प्रदान केलनि। आइ विद्यापति सेवा संस्थान मैथिली मे पद आ गोपनीयता केर शपथ लेनिहार जनप्रतिनिधि कें 'मिथिला विभूति' सम्मानोपाधि सँ अलं त कऽ स्वयं केँ गौरवान्वित बुझैत छथि, ई डेग नहि केवल सराहनीय अछि अपितु, मैथिली केर विकास लेल अन्य संस्थान हेतु अनुकरणीय सेहो।

ईहो कम महत्वपूर्ण नहि जे मिथिलावासी गरीबी सँ संघर्ष करैत आबि रहल छथि। बाढ़ि आ सुखाड़ तऽ कपाड़ मे सटले छनि जकर स्थायी निदान लेल विद्यापति सेवा संस्थान अनेक दशक सँ संघर्षशील अछि। मिथिलाक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक-राजनैतिक, शैक्षणिक, साहित्यिक आ भाषा क्षेत्र केर समग्र विकास लेल पृथक मिथिला राज्यक गठन होयबा केँ नितांत जरूरी मानैत निरंतर संघर्षरत अछि। एहि लेल ओ लगातार मिथिलाक गाम-गाम सँ संसदक दलान धरि आन्दोलन चलबैत आबि रहल अछि। समस्त मिथिलावासी आ प्रवासी साहित्यकार, कलाकार, गीतकार, संगीतकार, शिक्षक, विद्यार्थी, खेतिहर मजदूर ओ किसानक संग यथोचित राजनीतिक सहयोग सँ एहि मुद्दा पर आगाँ बढ़ि रहल विद्यापति सेवा संस्थान मिथिलाक सर्वांगीण विकास लेल सभ संस्थाक एक मंच पर सहयोग, समर्थन आ मार्गदर्शन चाहैत अछि। एहि सँ विश्वास अछि जे संस्थानक ठानल ईहो काज निकट भविष्ये मे पूर्ण भऽ सकत।

ओना तऽ विद्यापति सेवा संस्थान सालो भरि अनेक राष्ट्रीय को अंतराष्ट्रीय कार्यक्रम करैत अछि। मुदा, दरभंगा मे महाकवि कोकिल विद्यापतिक अवसान दिवस कार्तिक धवल त्रयोदशी तिथिक अवसर पर तीन दिवसीय मिथिला विभूति पर्वक आयोजन आइ सभ मिथिलावासी आ प्रवासी मैथिल लोकनिक बीच संपूर्ण मिथिलाक सांस्कृतिक महाकुंभक पर्याय बनि गेल अछि। एहि अवसर पर संपूर्ण मिथिलाक समग्र विकासक चिंतन लेल संगोष्ठी, विराट कवि सम्मेलन, भ्रमण, दिग्दर्शन, भाषण, समान ओ गीत-नाटक आदिक अपूर्व आयोजन मिथिलावासी मे अद्‌भुत ऊर्जाक संचार करैछ। मिथिला-मैथिलीक श्रीवृद्धि हेतु कयल जा रहल एहि तरहक रचनात्मक काजक सम्पादन सँ सिर्फ मिथिले नहि अपितु, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मैथिल केर एकीकरण मे

सहयोगी साबित भऽ रहल अछि।

जँ ई कही जे मिथिला विभूति पर्वक रूप मे पछिला पचास साल सँ मनाओल जा रहल ई पावनिए सही मायने में मैथिली आन्दोलन रहल अछि तऽ अतिश्योक्ति नहि होयत। मैथिलीक प्रगति ओ परिस्थितिक लेल कयल जाइत रहल क्रिया-कलाप ओ एहि आयोजनक अवसर केँ फुटा कऽ नहि अनुशीलन कयल जा सकैछ। एहि आयोजनक सरंजाम भने सांस् तिक आवरण सँ अभिहित कयल जाइत रहल हो, मुदा एकर अंतः स्थल मे भाषा ओ साहित्यक सर्वांगीण उन्नतिये सदिखन वास करैत आयल अछि। एहि मे कनिको संदेह नहि जे ईएह अन्तस चिंतन मिथिला-मैथिली आन्दोलन केँ संदति संजीवनी प्रदान करैत आयल अछि। एहि आयोजन केर परिधि मे कालक्रम मिथिलाक मात्र भाषाई आ साहित्यिक पक्षे का नहि रहल अपितु संरचनात्मक समस्या सँ जुड़ल अनेक विषय सम्बद्ध होइत चलि गेल। विद्यापति सेवा संस्थान तत्वावधान मे आयोजनक इएह विस्तारवादी नीति एतुका समस्याक प्रति चिंतन-मनन लेल जन सामान्य कें सोझा-सोझी होयबाक अवसर प्रदान करैत एकटा बौद्धिक एवं विचारशील भावधारा कैं उत्पन्न करबा मे सफल भेल अछि। एतय घरि जे अदौं सँ जाठि बनला दहेज, विधवा वियाह, बाल वियाह, नारी शिक्षा आदिक प्रति सापेक्ष दृष्टिकोण बनयबा मे एहि आयोजनक महत्व केँ सहजहिं उपेक्षा नहि कयल जा सकैछ।

संस्कृति प्रधान एहि परिक्षेत्रक प्रतिभा केँ संगीत, नृत्य, वादन आ अभिनयक क्षेत्र में अपन योगदान सँ आगाँ अयबाक अवसर ई आयोजन सदति दैत आबि रहल अछि। अभिनय आ गायनक दिशा मे स्त्रीगण केँ प्रशिक्षितत करबाक मुख्य कारण ईएह रहल अछि। पुरुष प्रधान नाट्य अभिनयक जड़ता केँ ढाहि कऽ स्त्रीगण केँ प्रवेश करबाक बाट खुजि गेल। आइ ईएह नाट्याभिनयक प्रताप अछि जे मैथिल महिला इलेक्टॉनिक बॉक्स पर अपना केँ सर्वथा स्थापित कऽ रहलीह अछि। एहि तरहें, अपन भूमि, भाषा आ अपन निजताक प्रति आत्मसम्मानक अनुभूति करयबा मे एहि आयोजनक महती भूमिका रहल अछि। पछाति मिथिला सँ अन्तहु जतय कतहु एकर आयोजन अलग अलग रूप में होमय लागल, प्रवासी मैथिल जन अपन बिसरल भाषा-संस् तिक प्रति आत्माभिव्यक्तिक संचार भेल। लोक एहि आयोजन मे अपन निजता केँ ताकब शुरू कऽ देलक। प्रवास मे रहनिहार मैथिल जन जे स्वयं आ हुनक अगिला खाड़ी मैथिली भाषा, मिथिलाक पावनि-तिहार, ''एतुका खान-पान आदि सँ कटि गेल छल तकरा सँ जुड़ब आरंभ क' देलक।

ईहो कम महत्वपूर्ण नहि जे मैथिली भाषाक प्रति पसरल संकीर्ण आ भरमाह दृष्टिकोण केँ सीमा धरि दूर करता मे सेहो ई आयोजन सफल रहल अछि। मैथिली माध्यमक संभवतः ई एकटा एहन समारोह आरंभ भेल जाहि मे समाजक अधिक सँ अधिक जाति, उपजाति आ सम्प्रदाय आदिक सहभागिता रहल अछि। कखनहुँ लगैत अछि जे मिथिला विभूति पर्वक जँ समाज पर सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषिक, शैक्षणिक आदि प्रभावक अध्ययन मनन कयल जाय तऽ ओहि सँ बहरायल निष्कर्ष अनमोल होयत। अनमोल होयबाक तात्पर्य जे साइते कोनो समाज मे एहि कोटिक आयोजन सर्वांगीण प्रभाव छोड़बाक स्थिति मे रहल होय।

ईहो परम सत्य जे कोनो संस्था आकि संगठनक क्रिया-कलापक प्रभावसँ समाज तखने प्रभावित होइछ जखन ओकर कर्ता-धर्ता प्रभावकारी व्यक्तित्वक धनी होथि। एहि संस्थान केर ई सौभाग्य रहल जे प्रारंभहि काल सँ एकर व्यापकता आ स्थापनाक उद्देश्य केँ अक्षुण्ण बनाके रखबा में सर्वतोभावेन समर्थ रहलैक। एखनहुँ जे लोकनि एकर क्रिया-कलाप मे तत्पर छथि ओ वस्तुतः युगपुरुष छथि आ मिथिला-मैथिली जगत में हुनक अवदान अद्वितीय छनि। संस्थानक एहि क्रियाशीलता ओ व्यापकता लेल जँ कोनो एक व्यक्ति धन्यवादक पात्र छथि तऽ निर्विवाद रूप सँ ओ छथि- डा बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू बाबू'। ओ अपन जुआनिये सँ एहि संस्थानक संपूर्ण किया-कलापक केन्द्र-बिन्दु छथि। हिनक विराट व्यक्तित्व आ चमत्कृत कृतित्वसँ ई संस्थान मिथिला आ मैथिली जगत में सूर्य जकाँ दैदीप्यमान प्रतीत होइछ। कारण साफ जे ओ अपन छात्र जीवनहि सँ मिथिला ओ मैथिलीक विकास लेत एहि संस्थानक माध्यम सँ मिथिलावासी ओ समस्त देशक प्रवासी मैथिल केँ एकसंग जोड़िकऽ आन्दोलन करैत रहलाह। मैजू बाबूक वैशिष्ट्य छनि जे ओ अपन-आन, मैथिली-मैथिलेतर ओ छोट-पैघक भेदभाद सँ फराक सभक सहयोग सँ सदैव अपना केँ एकटा आन्दोलनी केर रूप मे प्रस्तुत करैत रहलाह। हिनक

अंतःकरण ओ मानस-पटल पर मिथिला-मैथिल-मैथिलीक प्रति हार्दिक अनुराग उत्पन्न करबा मे तत्कालीन मैथिली सेवी ओ एहि भाषाक लेल तन-मन-धन सँ समर्पित सेनानी लोकनिक योगदान सेहो अत्यंत महत्वपूर्ण रहल। एहि मे स्वनामधन्य देवनारायण बाबा, आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन', पं चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', डा जयकांत मिश्र आदि अनेक वरेण्य व्यक्ति लोकनिक नाम उल्लेखनीय अछि।

मैथिली साहित्यक विकास, बड़ी रेल लाईनक निर्माण, संघ लोक सेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक समावेश, बिहार लोक सेवा आयोग परीक्षा मे मैथिलीक स्थान, कोसी महासेतुक निर्माण ओ संविधानक आठम अनुसूची में मैथिलीक गौरवपूर्ण स्थान आदि सभगोट काल में बैजू बाबूक नेतृत्व मे विद्यापति सेवा संस्थानक योगदान महत्वपूर्ण रहल अछि। संगहि मिथिला भूमि पर विभिन्न विद्यालय ओ महाविद्यालय केर स्थापना मे हुनक अविस्मरणीय योगदान केर जतेक प्रशंसा कयल जाय से कम। तहिना लोकसभा, विधानसभा ओ विधान परिषद मे मैथिली भाषा में शपथ ग्रहण करबाक लेल माननीय सदस्य लोकनि के जेना ओ प्रेरिति करैन छथि से स्तुत्य। हालांकि मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकास लेल एखन बहुतो काज बाँकी अछि। प्रारंभिक शिक्षाक माध्यम मैथिली बनाओल जाय, कोर्ट-कचहरी ओ सरकारी कामकाजक भाषा मे मैथिली केँ यथोचित संवैधानिक अधिकार भेटब, मिथिलाक सभ शिक्षण संस्थान मे मैथिली शिक्षणक अनिवार्यता, पटना हाई कोर्ट के स्वतंत्र बेंचक दरभंगा में स्थापना, सरकारी स्तर पर मैथिलीक पत्र-पत्रिका ओ पुस्तक आदिक प्रकाशन, मैथिली अकादमीक दरभंगा मे स्थापना, एहि ठामक जल संसाधन ओ जन संसाधन केर विविध परियोजनाक माध्यम सँ सदुपयोग आदि महत्वपूर्ण अछि। सत्तरि केर उमिर भेला बादो बैजू बाबूक सक्रियता सँ ई सहज विश्वास कयल जा सकैछ जे हुनक व्यक्तित्व ओ गंभीर अनुशीलन क्षमता सँ ईहो सब समस्या सहजहिं दूर भऽ सकत। वर्तमान मे संस्थानक सर्वाधिक ज्वलंत मुद्दा अछि समस्त मिथिलाक सर्वांगीण विकास लेल पृथक मिथिला राज्यक निर्माण। यद्यपि ई मांग अति पुरान अछि। निर्विवाद रूप सँ एहि दिशा मे सफलता भेटला सँ भाषाई, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक ओ शैक्षणिक आजादी एहि ठामक लोक केँ भेटला सँ मिथिलाक सर्वांगीण विकासक मार्ग प्रशस्त करत, देर सवेर संस्थानक अवदान ईहो मे जुड़बे करतैक, एतबा विश्वास अछि।

■



मिथिला मखानक जी.आई. टैग आ विद्यापति सेवा संस्थान

✍ डा. अनिल कुमार झा

जे वस्तु स्वर्गो मे नहि भेटैछ। जेना पान, मधु आ मखान। वो मिथिला मे उपजैत अछि। मिथिला क वर्णन ''वृहत् विष्णुपुराण'' क मिथिला खण्ड भेई क्षेत्र निरूपित कएल गेल अछि। पुरब मे कौशकी (वर्त्तमान मे कोशी) पश्चिम मे शालाग्रामी वा नारायणी (वर्त्तमान में गंण्डक) दक्षिण मे गंगा नदी आ उत्तर मे हिमालयक तराई एहि तरहे पुरब सँ पश्चिम 180 माईल (96 कोश) लम्बा आ 125 माईल (64 कोश) चौड़ाई उत्तरस दक्षिण जे आधुनिक काल मे मुज्जफरपुर, दरभंगा, चम्पारण आ अंशतः मुंगेर भागलपुर आ पूर्णिया छल ते कविवर चन्दा झा द्वारा सेहो इएह चौहद्दी देल गेल अछि।

''गंगा वहति जनिक दक्षिणदिशि, पूर्व कौशिकी धारा।
पश्चिम वहति गंडकी, उत्तर हिमवत दल विस्तारा।।
कमला त्रियुगा-अमवृता घेमुरा वागमती हबसारा।।
मध्य वहति लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विधागारा।।''

मिथिला क नामकरण वाल्मीकी रामायण मे (जे बपत 500 B.C.) क अछि मे राजा मिथि क नामपर भेल अछि।

मिथिला क वर्णन भागवतपुराण (Cir 500A.D.) जे भारतीय पुरातन अध्ययन अभिलेख रूप मे सर्वत्र चर्चित अछि। एतवहि नहि मिथिला क्षेत्रमे आर्य केँ आगमन आ गौतम रधुगणा क वर्णन ऋग्वेद मे भेटैछ। [C.f. Hymn LXXIV-LXXXII Vol. 1 Hymm of Rig Veda by Griffith 1986.

एतावत ''मिथिला'' शब्द पुरातन काल सँ एहि खण्ड के बताओल गेल अछि। मिथिला मे कृषि क परम्परा गौतम, कपिल, ऋडिंग, उदयनाचार्य, कणाद, याज्ञवल्क्य क अछि। विदुषी मे भारती, मैत्रयी, गार्गी आदि छथि। बाबा विघापति क ओतए स्वयं उगना बनि महादेव रहल छथि। माई सीता के स्वयं रामचन्द्र धनुष यज्ञ मे उपस्थित भए पाणिग्रहण कएने छथि। से ई मिथिला मा जानकीक नैहंर छैन्हि।

एतहि राजा शिवसिंह भेलाह। मिथिलामेसदैव विभूति क अवतरण होइत रहल अछि, एतय लोरिक, सल्हेश, दीनाभद्री, दुरगादयाल, आदि। मिथिला आयाची आ भारती मण्डनक भूमि थीक।

प्राकृतिक सौदर्य स भरल ई मिथिला जकर पहचान-

''पग पग पोखरि, माछ मखान,
सरस बोल मुस्की मुखपान।
विघा वैभव शांति प्रतीक,
सरस क्षेत्र ई मिथिला थीक।।''

पानि मे उपजय वाला मखान क गिनती सुखायल मेवा क रूप मे होइछ। मखान खाद्य आ औषधीय गुण स सम्पन्न मुख्य मिथिलाक कृषि उत्पाद थीक। मखानक उत्पादन मुख्यतः दरभंगा, मधुबनी, सुपौल, मधेपुरा, सहरसा, खगड़िया, अररिया, पूर्णिया, कटिहार, मुजफरपुर, पूर्वी चम्पारण, आ सीतामढ़ी मे होइछ।

मखान के उत्पत्ति वनस्पति विज्ञान क दृष्टिऐं सामान्य भाषा मे जलपरी (Water lily) कुलक कहल जाइछ। एकर अर्न्तरराष्ट्रीय वानस्पतिक नाम यूरेलो फेरोक्स (म्नतलंसम थ्मतवग) आ ई यूरेलेसी कुलक सदस्य अछि। एहि सन्दर्भ मे वनस्पति शास्त्री डा0 विघानाथ झा जी अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य 1990 ई0 मे ।quatic Botany, 39 (1991) - 295 - 314. Elsevier Science Publisher's B.V.Amsterdam, मे प्रायः सर्व प्रथम UtilizationAnd Conservation of Euryale ferox salisbury in Mithila (North Bihar) India मे विस्तृत विवेचना कएने छथि। जे सर्वमान्य स्थापित अछि।

मिथिलाक मर्म स भिज्ञ भारतक यशस्वी प्रधानमन्त्री पं0 अटल बिहारी वाजपेयी जी मखानक तत्व आ महत्व के सम्पोषित करबाक हेतु राष्ट्रीय मखानाक अनुसन्धान केन्द्र दरभंगा मे स्थापित करौने छलाह। ई संस्थान उत्तम स्वरूपे क्रियाशील छल। मखान पर देश विदेश मे अनेक स्वत्वाधिकार (Planent) प्राप्त कएल गेल अछि। शोध केन्द्रक वैज्ञानिक लोकनि एकीकृत मत्स्य सह मखान क उत्पादन क एक नव तकनीक निकालनि अछि। मखान उत्पादन स जुड़ल। कृषक लोकनि सेहो एहि दिशा मे नव-विधि विकसित कए रहलाह अछि। जाहि सँ माछ आ मखान दूनूक उपजा मे वृद्धि होइछ। मखान क खेती बहरिया ओ लाबा बनयबाक श्रम साध्य प्रक्रिया मे मिथिला क्षेत्रक भल्लाह लोकनि के महारत हासिल छैन्हि। उनका लोकनिक ''बनपर'' उपजाति पुश्तैनी रूप सँ मखानक खेती करैत आएल छथि। मिथिला आ मिथिला क्षेत्र स बाहर जतए कतहु मखान उपजाओल जाइछ ओतए दरभंगा, मधुबनी, क्षेत्रक मल्लाह लोकनि लाबा बनयबाक काज करैत छथि। पूर्णियाक प्रसिद्ध मखान लावाक व्यावसायिक उत्पादन केन्द्र 'हरदा'' वा फेर मालदह (पश्चिम

बंगाल) मे वा असम क 'बील'' मे सर्वत्र एहि क्षेत्रक मलाह लोकनिक अस्थायी प्रवजन होइत छनि, जनिक मखान सँ जुटल बौद्धिक सम्पदाक स्वभाविक लाभ भैटबाक चाहिएनि वो लोकनि आदिवासियों सँ वदस्तर जीवन यापन करैत छथि जखन की हुनक हुनर और मेहनत के बले मखान उपजैत अछि आ बाजार मे चमकैत अछि।

मुदा राष्ट्रीय मखान क अनुसन्धान के आव राष्ट्रीय शब्द विलोपित कए मात्र मखानक अनुसन्धान केन्द्र कए देल गेल अछि। ई सब राजनैतिक निर्णय थीक। मखान क अनुसन्धान के ँ राष्ट्रीय पहचान मिटैवाक परिचायक थीक।

परिणाम स्वरूप ई एक रवानापूरी अनुसन्धान केन्द्र क रूपे क्रियाशील अछि।

चलू आव कूनू वस्तु के उत्पादन जाहि क्षेत्र मे होइत छैक-भौगोलिक पहचान वोहि क्षेत्र विशेष क सत्वाधिकार होईछ। विश्वक जहि क्षेत्र क पहचान ओ वोकर भूल उद्गम आ तैयारी क स्थान क पहचान देल जाईछ।

भारत सरकार 1999 मे वस्तु सभक भौगोलिक पहचान निरूपित करवा हेतु अधिनियम 48, 1999 बनौलन्हि। तत् पश्चात भारत तक विभिन्न स्थानक उत्पाद के भौगोलिक पहचान निर्गत भेनाई प्रारंभ भेल। जुलाई 2020 तक 370 भारतीय उत्पादन के अपन भौगोलिक पहचान प्राप्त भेल छल।

बिहार सरकार जखन मुख्यमंत्री माननीय नीतीश कुमार भेलाह त वो एहि विषय पर ध्यान देलनि आ वर्ष 2006 हस्तशिल्प मे ''मधुबनी पेन्टिगक'' नाम स मिथिला पेन्टिग के जी. आई. टैग प्राप्त करौलन्हि। तदन्तरः- कृषि उत्पाद मे भागलपुर सिल्क 2012-13 भागलपुर जर्दालु- 2017-18 कतरनी चावल - 17-18 मगही पान - 17-18 मे जी0 आई0 टैग0 प्राप्त भेल। टैग प्राप्त करैवाक दिशा मे माननीय मुख्यमंत्रीक दृष्टि सराहनीय छैन्हि।

2019 क लोक सभा चुनाव क प्रचार के क्रम मे भारतक माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जखन राज मैदान में आएल छलाह त लोकसभाक प्रत्याशी श्री गोपालजी ठाकुर द्वारा भारी भरकम मखान क माला माननीय प्रधानंत्री जी के पहिराओल गेल छल। माननीय प्रधानमंत्री वो हि स एतवा प्रभावित भेलाह जे वोहि दिन हुनक अपन चुनाव क्षेत्र वनारस मे शाम मे रोड शो छलैन्हि। रोड शो सँ पूर्व बनारस के भाषण मे वो मिथिला क मखान क गुणगाान कैने छलाह। फेर जितलाह आ प्रधानमन्त्री भेलाह।

15 मई 2020 क भारतक वित्त मंत्री श्रीमती सीतारमण भारतीय बजट मे बिहार क मखान क विश्वव्यापी व्यापार लेल, मखान, आन्ध्र केर मिर्चा, जम्मू कश्मीर क ''केसर'' आदिक विकास हेतु 10 हजार करोड़ रूपयाक बजरीय प्रावधान कएलन्हि। संगहि आन कई वस्तु मदे लोकल फोर भोकल मद मे 10 हजार करोड़ रूपयाक आवंटन कए देलन्हि। ई लोकसभा मे घोषित भेल। समाचार पत्र मे छपल हमरा लोकनि के एहि चर्च मे रही जे लोकल फॉर भोकलक की कोना सरकारी परिचर्चा अवैत अछि। मखानक उत्पादन कएनिहार आ व्यवसायी दूनू सरकारक प्रावधानक प्रतीक्षा मे रहथि।

तावत 16 अगस्त 2020 के दैनिक हिन्दुस्तान समाचार पत्र मे प्रसार निदेशक वी0 ए0 यू0 डा0 आर0 के सोहाने क वक्तव्य छपल जे केन्द्र सँ मखान क ब्रन्डिग क संग निर्यात क घोषणा क बाद राज्य सरकार एहि कृषि उत्पाद के जी0 आई0 टैग क प्रक्रिया प्रारंभ कएलक अछि। जी0 आई0 टैग भेटू जाएत त जे केओ एकर व्यवसाय करताह त हुनका बिहारक नाम स मखान के बेचए पड़तैन्हि। दोसर केकरो एहि पर अधिकार नहि भए सकैत अछि। एहिसंग राज्य केँ उत्पादक के नया बाजार भेटि जएतन्हि आ आमदनी बढ़तन्हि। त स्वतः मखानक खेती बढ़त।

ई बिहार क पंचम कृषि उत्पाद हैत जकरा जी0 आई0 टैग भैटत। अखवार मे छपल जे एहि स पहिने कतरनी चावल, जर्दालू आम, शाही लीची और मगही पान के जी0 आई0 टैग भेटल अछि। एहि लेल तीन वरख क प्रयास क बाद कृषि सचिव डा0 एन0 सरवण कुमार क पहल पर किसानक संस्था क निबन्धन भ गेल अछि। बिहार कृषि विश्वविद्यालय एकर प्रक्रिया सभ पूरा क चुकल अछि। माननीय कुलपति डॉ0 ए0 के0 सिंह जी क पहल पर आवेदन क संग जरूरी अभिलेख चैन्नई के इन्टीलेक्चुअल प्रोपर्टी क कार्यालय मे भेजल गेल। उम्मीद अदि जे जल्दीए मखान क टैग ''बिहार मखान'' क नाम सँ निर्गत भ जाएत।

मखाना क प्रति ई आर्कषण आओर कएल गेल प्रयास क जतेक प्रशंसा करी कम हैत। मिथिलाक पहचान मखान क प्रति सरकार आ विश्वविद्यालय क जतवा वैज्ञानिक आ पदाधिकारी एहि मे लागल छथि प्रसंशाक पात्र छथि। ई आवेदन मिथिलांचल मखाना उत्पादक संध, पूर्णिया, बिहार क अध्यक्षा श्रीमती विनीता सिंह जी भोला पासवान शास्त्री कृषि महाविद्यालय पूर्णिया क माध्यमे भेल आओर प्रस्तोता डा0 आर0 आर0 सिंह जी, संकायाध्यक्ष, कृषि, बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर, छथि।

ई समाचार पढ़ि क मन प्रसन्न भेल संगहि विस्मित सेहो भेलहूँ। जे बिहार मखाना किऐक? ताधारि जी0 आई0 टैग क सम्बन्ध मे मूलभूत बात जानल छल। मुदा तकनीकी विषयक गूढ़ कानून क अध्ययन नहि छल।

तथापि एहि विषय मे उधेड़ बुन करय लगलहूँ। सबसँ

पहिले की आवेदन अछि आ की प्रावधान छैक जाननाई आवश्यक छल। चैन्नई निबन्धक क वेबसाइड पर आवेदन के जनसाधारण केँ जनतब हेतु प्रेषित छल। प्राप्त कएल। ततपश्चात् जी. आई. टैग अधिनियम 1999 No. 48 1999 के प्रति प्राप्त कए अध्ययन क तकनीकी पहलू के समझ वाक प्रयत्न कएल। आ अपन भावना ''मिथिला मखान'' क जी0 आई0 टैग 'मिथिला मखाना'' हो न कि 'बिहार मखाना'' से सोशल मिडिया पर अपना फेश बुक (चेहरा क पोथी) पर 16/8/20 के राति मे अर्थात् 17/8/20 क तिथि मे अंकित कएल जे एना अछि :- 'आदरणीय प्रधानमंत्री जी जखन चुनाव प्रचारक क्रम मे दरभंगा आयल छलाह त मखानक माला स प्रभावित भेल छलाह। ताहि दिन सांझ मे मखान क विशेष उल्लेख ओ अपन ऐतिहासिक रोड शो स पहिले वाराणसी मे सेहो कएलन्हि।

एकर सफल ई मेल जे एहि वर्षक बजट मे विशेष पैकेज भेटल। आव जखन जी आई0 टैग क प्रक्रिया चलि रहल अछि त ''मिथिला मखान'' छोड़ि दोसर कोन नाम उचित।

जखन ''मगही पान'' भ चुकल अछि त आब''
मिथिला मखान'' मे कोन समस्या।।
कोजागरा मे मखान त खाइत छी,
मुदा एहि विषय पर जाग पड़त।।

"MITHILA MAKHANA" ई आवेदन जी0 आई0 आवेदन संख्या 696, दिनांक 14 अगस्त 2020 डी वाई 142 चैन्नई कार्यालयसँ प्रसारित अछि। 37 पृष्टक मूल आवेदन क अनुलग्नक मे दरभंगा जिलाक गजट 1964 आ महामहोपाध्याय सन्मिश्र वाचस्पति विरचित श्राद्ध चिन्तामणि प्रकाशक दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय 1983 क अंश प्रेषित कएने छथि। संगहि G. 9 शुल्क 5000/- क ड्राट संलग्न अछि। (Proof of origin) उत्पति के प्रमाण आ ऐतिहासिक अभिलेख संलग्न करबाक होइछै। से आवेदन के पृष्ट 21 पर दरभंगा जिला गजट - 1954 के अभिलेख आ महामहोपाध्याय सन्मिश्र वाचस्पति विरचित श्राद्ध चिन्तामणि 1983 संलग्न केने छलाह। आ (Statement of Case) एहि मामला क बयान के रूप मे आवेदन के पेज 24 सँ 26 तक मात्र मिथिलाक बखान केने छथि सभ उद्धरण एतहुक देने छथि परन्तु अन्त मे एकरा विहार क क्षेत्र घोषित कए ''बिहार मखाना'' क संज्ञा मांग केने छथि।

जी0 आई0 टैग अधिनियम, 1999 धारा 13 (1) के द्वारा आवेदन के द्वारा आवेदन के विज्ञापित कएल ले जाइत छैक। धारा 13 (2) जे निम्नवत अछि-

"Where After Advertisement of An Application:- (a)An error in the Application has been corrected ; or (b) The Application has been permitted to be Amended under section. 15.

The Registrar may in his discretion cause the Application to be Advertised Again or instead of causing the Application to be Advertised Again, notify in the prescribed manner, The correction made in theApplication.

अधिनियम क धारा 15 :- "The Registrar may on such terms, As he thinks just, At Any time, whether before or After Acceptance of An Application for registration under see. 11. Permit The correction of Any error or in connection with the Application or permit An Amendment of t he Application.

Provided than if An Amendment is made to A single Application referred to in sub-section (3) of section 11 involving division of such Application into two or more Application, the date of making of initial Application shall be deemed to be date of making of the divided Application so divided".

17/8/20 क राति धरि कतहु कोनो एहि पर चर्चा नहि देखि मन व्याकुल भेल। हम एहि निष्कर्ष पर अएलहूँ जे कानूनी आ ऐतिहासिक सम्बल मिथिला क पक्ष मे अछि मुदा साकार कोना हैत। एकसर चना त भाड़ नहि फूटत। सबसे पहिने विघापति सेवा संस्थान क महासचिव श्री वैधनाथ चौधी ''वैजू'' बाबू के अधरतिया मे दूरभाष कैलहूँ। वो प्रायः सुतल छलाह। मुदा हमरा बात भेल। हम कहलयैन्हि जे नेताजी मखान चोरा लेलक अछि। कहला से की? हम ''बिहार मखाना'' आ मिथिला मखाना'' क बात बतौलिन्हि। आव वो जागि गेला कहलन्हि की करए पड़तैक। जे आन्दोलन करड़ परतै स कएब। जहाँ निश्चिन्त होऊ। सबेरे आऊ। मिथिला मैथिली क अनुरागी आ बौद्धिक सम्पदा क सम्पन्न प्रो0 डा0 नारायण झा जी के दूरभाष कैएलहूँ वो पटना मे छलाह। वो अपना शिष्य मनीष कुमारक जिज्ञासा कएलन्हि कहाँ छथि जनतव पुछलैन्हि आ मनिष सँ बात कएलन्हि। हम अपन भावना आ व्यथा सभ बतौलिएन्हि मैथिली वास्ते वोहो कानूनी लड़ाई तक लड़ने छथि। उनका आग्रह कएलहूँ जे एखन करौना काल सँ लोक उबरल नहि अछि ई जानभावना आ मिथिलाक सामूहिक नौजवान क आवाज क आवश्यकता हैत कियाक हम मन बना चुकल हूँ जे ई आंदोलन महात्मागांधी आ गोखले जी क नीति पर जन जेतना जागृति कए संभव हैत।

श्री नारायण बाबू स्वस्ति देलनि जे उचिते ''वैजू'' बाबू के कहलियैन्ह आ संस्थागत लड़ाई वो लड़ैत छथि हम सब तरहे संगरहब। जे जेना करवाक हैत से करबै। ई कोना हेतै मखाना मिथिलाक छी त मिथिलेक रहतै तकनीकी पक्षपर नारायण बाबू सँ विमर्श भेल। हम दरभंगा अबैत छी त अपने स भट करब मन

कनै शांत भेल। कियाक त दु आन्दोलनी जगलाह सबेरे वैजू सँ बात भेला वो त 48म मिथिला विभूति पर्व-समारोह क ओरिआन मे लागल छलाह। हमव मखान केँ मिथिला आ बिहार के नामकरण सँ मखान उत्पादक श्रमिक के की कष्ट हतैन्हे तकर आर्थिक पक्ष सेहो बुझैललिएन्हि आ ई प्रपंच्च तोरव अनिवार्य। 20.08.2020 क वो विद्यापति पर्व तैयारीक हेतु तैयार बेरूक पहर 4 बजे पूर्व स निर्धारित छलैन्हि हमरा वोहि में एहि विषय के रखवाक हेतु कहलन्हि जे आऊ आ विषय के राखू। डॉ0 विद्यानाथ झा जी मखान के वनस्पति शास्त्री छथि। वोहो रहताह तहल एहि पर निर्णय हैत।

हम वनस्पतिशास्त्री श्री विद्या बाबू क कार्यालय एक बजे आवि गेलऊ। एहि विषय पर विस्तृत विमर्श हुनका सँ भेल। वो मखाना अनुसंधान केन्द्रक गतिवधि आ राष्ट्रीय दर्जा छिनव सँ व्यथित छलाह। हुनका विचारे मिथिला मखान क हेतु अहाँ आगा बढ़ू हम हर तरहे संग रहब। हम एखन सेवा में छी अहाँ अवकाश प्राप्त केनेछी किछु करू। ई मिथिला आ मखान क संग षड्यंत्र थीक ?

वैसार क समय लगिचाएल आ प्रमुख लोक सब आवए लगलाह। 48म विद्यापति पर्व समारोहक तैयारी का बैसार छल। अजुका वैसार क अध्यक्षता श्री कमलाकान्त झा, पूर्व अध्यक्ष मैथिली अकादमी, पटनाक भेलन्हि। श्री मेन्द्र नारायण राम, श्री जीवू बाबू, श्री मणिकांत जी, श्री श्री प्रवीण जी, श्री विनोद जी आदि उपस्थित छलाह। वैसार प्रारंभ भेल। मिथिला विभूति पर्वक आयोजनक विषय पर बात चलिपड़ल। हमरा त मखान क दर्द छल। वैजू बाबू के मुखातिब होइत बजलहूँ जे आजूक वैसार मे पहिले मिथिलाक मखानक चोरी भेल बिहार नाम स बिहार सरकार कऽ - रहल अछि ताहि पर हम चर्च करए चाहैत छी।

किछुलोक विस्मित होइत बजलाह जे ई कोन बेसुर बात एखन कहैत छियैक। हमरा कहए पड़ल जे संस्थान क उदेश्य मूलतः मिथिलाक संरक्षण आ सम्बर्द्धन हेतु भेल छैक। मिथिलाक मखान अछि। एकर भौगौलिक पहचान (जी आई0 अैग) बिहार सरकार बिहार मखानाक नाम सँ आवेदन के प्रस्तुतोता प्रस्तुत कएके छथि। एहि में सुधार आवश्यक। आ ई संस्थागत प्रतिकार आ मिथिलाक जन चेतना क जागृति सँ संभव अछि। एकर आर्थिक पक्ष के सेहो हम विश्लेषण बतौल हूँ। श्री विद्या बाबू सेहो हमरा बात के समर्थन कैलथि महासचिव श्री वैजू बाबू कहलनि जे एहि हेतु एतए सँ दिखी छी आन्दोलन करब।

सर्व समति स वैसारक संख्या 209 प्रस्ताव संख्या 03 में निर्णय लेल गेल जे तत्काल एकर प्रतिकार हेतु श्री विद्या बाबू, डा. अनिल कुमार झा आ श्री प्रवीण कुमार तीनू गोटे के विधिवत अधिकृत कएलगेल जे आवश्यकतानुसार प्रतिवेदन प्रस्तुत कएओल जाए। संस्थान सबतरहे मिथिला मखान क संरक्षण हेतु क्रियाशील भए स्थापित कराओत। पुनः आन-आन प्रस्ताव क विमर्श भेल।

वोहि शाम के प्रेस में प्रकाशनार्थ भेजिदेल गेल। 19. 08.2020 क श्री राजू सिंह जीक कि रिपोर्ट प्रत्येक न्यूः लाइव, कोम (Pratyek New live Com) में : दरभंगा (बिहार) :- मिथिला के मखान की ब्रांडिग बिहार के नाम से किए जाने पर विद्यापति सेवा संस्थान ने साजिश बताते हुए जताई आपत्ति। विस्तृत समाचार प्रकाशित भेल। 20.08.2020 के दैनिक जागरण मुजफरपुर सँ मिथिला के मखाना की ब्रांन्डिग बिहार के नाम से किए जाने की साजिश पर आपत्ति'' । शीर्षक समाचार छपल 20 अगस्त 2020 के राति में सोशल मिडिया में मिथिला मैथिली क हित में सतत जागरूक पत्रकार मिथिला मिरर के सम्पादक श्री ललित नारायण झा जी, मिथिला क नवोदित जुझारू होशियार नौजवान श्री अनुप मैथिल, संस्थापक एम.एस.यू. आ नवोदित गीतकार श्री विकास झाक वार्त्ता मिथिला मखानक भेल।

मिथिला के जागैएवा लेल आ मखान के ब्रान्डिग मिथिलाक नाम सँ होई ताहि हेतु विस्तृत विचार प्रस्तुत कएलन्हि। हिनका लोकनिक वार्त्ता सुनि मन प्रसन्नचित भेल। जे नवका सेनानी सब एकर गंभीरता क प्रति जागरूक छथि। मिथिला मखाना हेतु भेल। हुनका लोकनिक चिन्ता स्वभाविक छल। एहि वार्त्ता कम में श्री विकास झाजी कहलनि जे हम गीत गवैत छी त हम गीत क विधाक सेहो उपयोग करब। वार्त्ता में चारिम व्यक्ति से हो छलाह हुनक नाम हमरा मोन नहि अछि। वर्त्ता में ई तय भेल जे 22 अगस्त 20 क रात्रि के 8 बजे सँ 10 बजे तक #Steading Mithila Makhana के ट्वीटर ट्रेण्ड चलाओल जाए। एहि हेतु नवतुरिया लोकनि आ एल0एम0यू0 अग्रणी भए एकए कार्यरूप देलथि। एहि आह्वानक उद्यम में वो सभ लागि गेलाह तकर प्रतिफल भेल जे 22 अगस्त के भारतक राजनैतिक ट्रेण्डमे मिथिला मखाना भारत मे दोसर स्थान तक पहुचि गेल। लगभग 50 हजार सँ अधिक ट्वीटर ट्रेण्ड भेल छल। वार्त्ता सँ हमरा ई परिलक्षित भेल जे एकर तकनीकी पक्ष के संस्थान द्वारा प्रसारित करब आवश्यक अछि। जाहि स सामान्य लोक एकर प्रक्रिया के जानथि तदनुकूल प्रतिकार होयत अन्यथा उलझन मे मखानाक G.I. Tag फंसि जाएत।

मखान क भौगोलिक पहचान प्राप्त करवाक हेतु आवेदन मिथिलांचल मखाना उत्पादक संघ, पंजीयन संख्या- S0000-2020-21 (Under societyAct 21.18.1860 date 10.07.20) शहवान हाता चौक, पूर्णियाँ पूर्वी पूर्णिया बिहार 854301 द्वारा भोला पासवान शास्त्री कृषि महाविद्यालय पूर्णिया 854302 बिहार क माध्यामे बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर, भागलपुर बिहार 813210 के (Facilatator) प्रस्तोता बनैवाक

हेतु भेजने छथि। Dr .R.R Singh अधिष्ठाता कृषि बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर भागलपुर अपन पत्रांक 328/ Dean (Ag) BAU, Sabour दिनांक 04.08.2020 के द्वारा निबन्धक भौगोलिक पहचान रजिस्ट्रीय इन्टीलेक्यूएल प्रोप्रटी ऑफिस चैन्नई, 60032 के प्रस्तुत केन छथि। जी0 आई0 आवेदन संख्या 696 दिनांक 14.08.2020 के प्राप्ति भेल अछि।

आवेदिका मिथिलांचल मखाना उत्पादक संघ पूर्णिया क अध्यक्ष श्रीमती विनीता देवी छथि। जी0 आई0 टैग क प्रावधानानुसार प्रस्तोता संस्था बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर भागलपुर बिहार 873210, भोला पासवान शास्त्री कृषि महाविद्यालय पूर्णिया 854307 के माध्यमे तैयार भेल अछि।

ऐहि आवेदन के तैयार करवाये प्रस्तोता वैज्ञानिक :-

(A) डॉ0 अनिल कुमार सहायक प्राध्यापक सह जूनियर वैज्ञानिक-(फूल एवं फल) Horticultue - Fruit)

प्रधान अनुसंधानक मखाना अन्वेषण प्रोजेक्ट वी0 पी0 एस0 कृषि महाविद्यालय पूर्णिया।

(B) डॉ पंकज कुमार यादव, सहायक प्राध्यापक सह जूनियर वैज्ञानिक भूमि विज्ञान वी0 पी0 एस0 कृषि महाविद्यालय पूर्णिया वि0कृ0वि0 सबौर।

(C) डॉ पारस नाथ-एसोसिएट प्राध्यापक सह जूनियर वैज्ञानिक Entomology कीट विज्ञान, वी0पी0 एस0 कृषि महाविद्यालय पूर्णिया वी.ए. वि. विश्वविद्यालय सबौरक भूमिका काफी प्रसंशनीय छैन्हि बिहार मखाना के भौगोलिक पहचान (G.I.Tag) हेतु प्रधानाचार्य भोला पासवान शास्त्री कृषि महाविद्यालय पूर्णिया दिनांक 03.08.2020 के प्रस्तुत केने छथि। पंजीयन के नियमानुसार शुल्क क पांच हजार रूपया डिमान्ड ड्रॉट संख्या 637510 भारतीय स्टेट बैंक दिनांक 03.08.2020 संलग्न कैने छथि। एहि में प्रस्तावित लोगों, बिहार का गौरव, बिहार मखाना केने छथि।

प्रस्तावित बिहार मखानाक जी0आई0 टैंगमे कोनो परविर्तन अधिनियम 15 आ 13. (2) के तहत आवेदन कर्ता द्वारा संशोधन प्रस्ताव पर सम्भव छैक। यदि से संभव नहि हैत तखन अधिनियम के धारा 15 क प्रावधाने जरनल मे प्रकाशक के बाद चेन्नई कार्यालय मे आवेदन के बाद दूनू पक्षक सुनवाई कयलाक बाद संभव अछि। विद्यापति सेवा संस्थान एखन धारा 13 (2) के तहत संसोधन हेतु सर्वप्रथम अध्यक्ष, मिथिलांचल मखाना उत्पादक संघ पूर्णिया के संसोधन हेतु पत्र लिखल गेल जे निम्नवत अछिः-

महोदय, मिथिलांचल मखाना उत्पादक संघक संस्थाक रूप में पंजीकरण होयत पर विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा दिस सँ सहृदय बधाई ओ शुभ कामना। माँ भगवती सँ प्रार्थना अछि जे अपनेक नेतृत्व में संस्था सफलताक नव आयाम रचतओ समस्त पूर्णिया आआरे मिथिलावासी के गौरवान्वित करत।

ज्ञात भेल जे संस्था मखानाक G.I. Tag हेतु आवेदन कएलक तकर साधुवाद। विद्यापति सेवासंस्थान, दरभंगा अपनेक एहि सुन्दर पहल के स्वागत ओ सराहना करैत अछि।

एहि पत्रक विशेष संदर्भ जे G.I.Tag हो आवेदन में ''बिहार मखाना'' केँ नाम सँ आग्रह कएलु गेल अछि।

मुदा एहि नाम सँ मिथिलाक सांस्कृतिक विधिवता निरूपित नहि होएत अछि।

अतः महोदय सँ निवेदन अछि जे मखानक G.I.Tag मिथिला मखाना अथवा मिथिलांचल'' के रूप में होमए। अपपने क सँ आग्रह अछि जे एहि दिशा में उचित कार्य हेतु बिहार कृषि विश्वविद्यालय सवौर भागलपुर के माध्यम सँ ज्ञापन देल जाए।

एम्हर सोशल मिडिया पर स्तम्मकार लेखक श्री आदित्य मिश्रा अपन ट्वीटर पर एहि आन्दोलन के काफी मददि कएलन्हि। नवतुरिया लोकनिमे श्री आदित्य मोहन जी जे एम0 एस0 यू0 सँ सर्म्पकित छथि से 22.08. 20के अपन फेसबुक वाल पर एहि विषयक चिन्ता जनौलन्ह अछि। 22. 08. 20 के अपन वाल पर एहि आशयक चिन्ता जनौलन्हि अछि। ट्वीटर टैन्ड हेतु काफी सम्पर्क कए जन चेतना के जगौलन्हि। तहिना च्तवण् डंपजीपसप ग्रुप से हो सक्रिय भेलाह। बहुतो लोग पुछथि जे बिहार मखाना हेतै त की हानि ? मखानाक त ब्राण्डिंग भए रहल अछि। ई प्रश्न अधिक होइत छल। त विद्यापति सेवा संस्थान 27. 08. 20के विधिवत प्रेस कान्फ्रेंस आयोजित कए मिथिला मखाना क्यों ? आ जन सहयोग आ जन जागरणक की रूप रेखा के प्रसारित कयलक। सभ विषयक फरिछाक प्रेषक माध्यमे कयने अछि।

मिथिला मखान क्यों?

सामान्यतः G.I. Tag के लिए उत्पाद के साथ क्षेत्र विशेष का नाम भौगोलिक पहचान के लिए प्रयोग होता है। इससे उत्पाद की विशिष्टता औरक्षेत्र की विविधता उजागर होती है। वर्तमान में 370 उत्पाद G.I. Tag युक्त है अगर इन सभी की branding 28 राज्यों के आधार पर की जाए तो भारत की विविधता कैसे उजागर : होगी? अगर बिहार नाम से उत्पाद का G.I. Tag होता रहा तो उत्पाद तो होंगे मगर विविधता विशिष्टता छुप जाएगी, ऐसी Branding का क्या लाभ?

क्षेत्र विशेष के नाम और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में हुई Brandng से पर्यटन की सम्भावना और वस्तु विशेष की खरीददारी का रूझान बढ़ता है। यही कारण है ज्यादातर G.I. Tag युक्त उत्पाद अपनी क्षेत्रीय विविधता और सांस्कृतिक विशिष्टता का आभास कराते है। जैसे - Kancheepuram Silk, Darjeeling Tea, Kutch Embroidery, Mysore San-

dalwood oil, Bastar Dhokra, Tirupathi Laddu, Silao Khaja-

जब Silao KhajaAudyogik Swarlambi Sahkari Samiti, के आवेदन पर SILAO KHAJA के रूप में G.I. Tag दिया गया, Magali Pann Utpadak Kalyan Samiti के आवेदन पर "Magahi Paan" के रूप में G.I. Tag दिया गया तो MITHILANCHAL MAKHANA UTPADAK SANGH" के आवेदन पर G.I. Tag का "BIHAR MAKHANA" किया जाना कैसे उचित है ?

'मिथिला' शब्द बिहार शब्द से अधिक प्राचीन है। मिथिला की व्याख्या रामायण में विस्तार से की गयी है जबकि ''बिहार'' शब्द की उत्पत्ति Land of Vihara (Buddhist Monastery) से हुई है। स्वाभाविक है बौद्ध धर्म के आगमन के बाद ही बिहार शब्द अस्तित्व में आया होगा।

मखाना के वैश्विक उत्पादन का 85ः मिथिला में होता है। जल प्रलय से प्रभावित हमारे क्षेत्र की मिट्टी (मृदा) और जलवायु की विशिष्टता इसका प्रमुख कारण है। इस दुर्लभ वनस्पति के उत्पादन से जुड़े किसान तथा मत्स्य पालक को अपने श्रम का उचित मूल्य नहीं मिल पाता है और वे बेहद कठिन परिस्थितियों में हमारी इस धरोहर को संजोये हुए हैं। वर्तमान में नौ जिले में दरभंगा, मधुबनी, पूर्णियाँ, कटिहार, सीतामढ़ी, सहरसा, सुपौल, अररिया और किशनगंज में इसका उत्पादन प्रमुखता से होता है परन्तु बढती माँग, संभावित निवेश तथा नई तकनीक के प्रयोग से मिथिला के कुल 20 जिलों में इसके उत्पादन की संभावना है।

मिथिला की लोक संस्कृति में मखान का विशेष स्थान है। हमारी लोक संस्कृति का सुन्दर शब्द चित्रण कुछ इस प्रकार किया गया है-

''पग पग पोखरि माछ मखन।
सरस बोल मुस्की मुख पान''

ः हिन्दू धर्म में ''शदर पूर्णिमा'' का विशेष महत्व है। मिथिला में इसे 'कोजागरा - चेतना के जागरण' के त्योहार के रूप में मनाने की परम्परा है। मैथिली साहित्य में शरद पूर्णिमा के चन्द्रमा को सुन्दरता, निश्छल पवित्रता और दिव्यता का प्रतीक माना जाता है। इस अवसर पर सौभाग्य और चेतना के प्रतीक स्वरूप मखाना का आदान प्रदान किया जाता है तथा नवविवाहित दंपति के लिए कोजागरा उत्सव का महत्व विवाह के समान है।

''मिथिला मखान'' G.I. Tag के व्यवसायिक लाभ

जलप्रलय और पलायन (Distress Migration) की दुहरी आपदा से ग्रसित मिथिला के किसानों और मत्स्य पालकों को उभरती माँग और अंतराष्ट्रीय बाजारक निश्चित लाभ मिलेगा। मत्स्य पालन, सिंघाड़ा आदि उत्पादों की अतिरिक्त संभावना भी होगी। वर्तमान में परती, चौड़- परती खेत- सूखते तालाब और पलायन (Distress Migration) करते मजदूर हमारी लाचारी को बेनकाव करते हैं, यदि हम मखान उत्पादन के माध्यम से आधुनिक कृषि परंपराओं को बाजार की शक्ति से जोड़े तो पंजाब, हरियाण या पश्चिमी उत्तर प्रदेश की भांति अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकते हैं।

मिथिला के व्यासायी वर्ग को पूँजी निवेश, बढ़ते व्यापार तथा निर्यात बढ़ाने का निश्चित लाभ मिलेगा।

बाजार के सशक्तिकरण से क्षेत्र की आधारभूत संरचना का उत्थान होगा तथा कोसी की विभिषिका से विभाजित हमारे क्षेत्र की समृद्धि और आर्थिक एकीकरण का मार्ग प्रशस्त होगा।

सीतामढ़ी, देवी अहिल्या स्थान, गौतम कुंड आदि हमारे तीर्थ स्थल भारत सरकार की महत्वाकांक्षी 'Ramayan Circuit' योजना से जुड़े हैं। पर्यटन के विकास से ळण्ण् ज्ंह युक्त मधुबनी पेंटिंग और मिथिला मखान हमारी लोकसंस्कृति की रचनात्मकता जीवन संघर्ष और उर्वरा शक्ति के सबल हस्ताक्षर होंगे। उत्पादन की प्रक्रिया भी काफी रोचक अतः मत्स्य पालक और किसानों के कठिन परिरम में भी पर्यटकों की स्वाभाविक रूचि होगी। विविध शिल्प और हस्तकला से सम्पन्न मिथिला अपने सांस्कृतिक गौरव को दुनिया के समक्ष रखने में सक्षम होगी। इसका प्रत्यक्ष लाभ करीगर को होगा। अतः बढ़ते पर्यटन से व्यवसाय तथा रोजगार की अनेक सम्भावनाएं उत्पन्न होगी। जैसा अन्य प्रदेशों में हुआ है।

मखान की पौष्टिकता गुणवत्ता और व्यंजन विन्यास इसे आधुनिक युग के भाग दौड़ की जीवनशैली के अनुरूप एक अद्भूत थ्ेंज थ्ववक बनाती है। भारत सरकार द्वारा घोषित बजट पैकेज और उचित ळण्ण् ज्ंह की सहायता से MITHILA MAKHANA CALIFORNIAALMOND (80%) और Persian Saffron (93%) की भांति एक Globally Competitive Brand के रूप में स्थापित हो सकता है। वैश्वीकरण के युग में प्रस्तुतीकरण विशेष महत्ता है। अपनी Premium Demand के कारण 'मिथिला मखान' विदेशों में बसे लाखों मिथिलावासियों को स्वतः अपने लोकसंस्कृति का गौरव होगा और वे इसकी मिठास से जुड़े रहेंगे।

उपरोक्त सभी बिन्दुओं पर विचार करते हुए विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा ने ''Mithila Makhana'' अथवा ''Mithilanchal Makhana'' नाम G.I. Tag हेतु प्रस्तावित किया है। साथ ही एक आकर्षक स्वहव के लिए भी आग्रह किया गया है।

हमें यह गम्भीर विचार करना चाहिए कि भविष्य में

मिथिला की सांस्कृतिक विविधता उजागर रहेगी या कृत्रिम एकरूपता की चादर में सिमट जाएगी। वस्तुतः अभी तक ppplique Khatwa work of Bihar, Sujni Embridery work of Bihar, Sikki Grass product of Bihar और Shahi Litchi of Bihar हमारी क्षेत्रीय विविधता या सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को उजागर नहीं करता है। जिस लोक संस्कृति को हमारे ग्रामीण समाज में अनेक अभाव होते हुए भी सहेज कर रखा गया। उसका G.I. Tag केवल क्रय विक्रय के उद्देश्य से किया जाना कैसे उचित है। लोक संस्कृति के गौरव का अवसर सभी को समान रूप से मिलना चाहिए। अतः हम ''मिथिला मखान'' के नाम का आग्रह करते हैं। अतः हमारा निवेदन है कि माननीय मख्यमंत्री जी बिहार कृषि विश्वविद्यालय भागलपुर को उचित निर्देश देने की कृपा करें।

जनसहयोग और जनजागरण की रूपरेखा

1. ''सहज सुमति वर दिय हे गोसाउनि'' कवि कोकिल विद्यापति ने अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना में जिस सहाज सुमति की याचना की है विद्यापति सेवा संस्थान ने भी उसी सहज सुमति के स्वर्णिम पथ पर जनमानस को जागृत करने का संकल्प लिया है। हमारे जनसहयोग और जनजागरण का केन्द्र ''ग्रामशक्ति'' है।

2. कोरोना महामारी को ध्यान में रखते हुए शासन प्रशासन के सभी नियमों का अक्षरसः पालन करते हुए हमें अपनी इस मुहीम को आगे बढ़ाना है। हम अपने कोरोना वारियर के योगदान का सम्मान करते हैं तथा निर्धारित मनदंडों के अनुसार ही अपने जनवाणी को हस्ताक्षर सह पत्र प्रेषण अभियान, सोशल मिडिया में सक्रियता के विभिन्न स्वरूपों का प्रयोग करते हुए अपनी मांग को जनमानस में स्थापित करेंगे। हमारे जनजागरण अभियान का प्रतीक चिन्ह ''एक अंजुल मखन'' होगा। अतः दुनियाभर में रह रहे मिथिला वासी से अनुरोध है कि आगामी गांधी जयंती के अवसर पर ''जनजागरण और जनसहयोग'' के प्रति अपनी सहमति के लिए इस प्रतीक चिन्ह को अपने विचार सहित अधिक से अधिक शेयर करें।

3. आज से 2 अक्टूबर (गांधी जयंती) तक हम प्रत्येक गांव मे अपनी बात रखेंगे। लोगों से आग्रह करेंगे की बाढ़ और पलायन (Distress Migration) की समस्या तथा कृषि और रोजगार की सम्भावना पर हर जगह चर्चा करें। मखान उत्पादन तथा मिथिला मखान के विभिन्न पहलुओं पर अपने घर, मंदिर, बाजार आदि में व्यापक चर्चा करें और यदि 'मिथिला मखान' के G.I. Tag के आग्रह से सहमत हो तो अपने पंचायत स्तर के जन प्रतिनिधि के द्वारा (मुखिया, सरपंच, वार्ड सदस्य) विद्यापति सेवा संस्थान को अपना सहमति पत्र भेंजे।

4. आगमी गाँधी जयंती को Stay Home Stay Safe का पालन करते हुए अपने घर के बाहर ''मिथिला मखान'' लिख कर चिपकयें। यह आपके जनसहयोग का द्योतक होगा।

5. विद्यापति सेवा संस्थान सभी सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यवसायिक, छात्र संगठन किसान और मत्स्य संस्था तथा मिथिला/ मैथिली से जुड़े महानगरों में सक्रिय सभी संस्थानों/ मंच से आग्रह करती है कि ''मिथिला मखान'' के विषय पर मुखर होकर अपना पक्ष व्यापक रूप से प्रेषित करें। यह जनजागरण अभियान समस्त मिथिलावासियों के भविष्य के प्रति समर्पित हैं। अतः सभी अपने - अपने स्तर से यथोचित रूप से सक्रिय हों।

6. सभी राजनीतिक दल/जनप्रतिनिधियों से आग्रह है कि अपने स्तर से हमारे जनजागरण अभियान का सहयोग पत्र द्वारा जनसहयोग अभिलेखों के साथ अपने-अपने स्तर से यथोचित कारवाई करें।

7. विद्यापति सेवा संस्थान अध्यक्ष (कृषि) बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर से मिलकर जनभावना को प्रस्तुत करेगा।

8. पुनः समीक्षा के बाद अगली रणनीति निर्धारित की जायेगी। अस्तु

'जागो मन के सजग पथिक ओ !
अलस-थकन के हारे-मारे
कब से तुम्हें पुकार रहे हैं
गीत तुम्हारे इतने सारे' -फणीश्वर नाथ 'रेणु'

शीर्षक सँ विस्तृत आ जन जागरणक रूपरेखाक प्रस्ताव पारित कए प्रसारित कएल गेल ई सभ विद्यापति सेवा संस्थान अपना फेशबुक वाल पर से हो देल गेल। 25.08.20क श्री विकास झा जी एक गीत जकर मुखरा अछि

''राजनीति नई करिओ नेताजी,
जानै छै दुनिया जहान यो।
मिथिला मे उपजै छै यो भैया,
मिथिला के छै मखान यौ''।।

ई गीत हम सुनल बड़ मन प्रसन्न भेल। प्रस्तुति अति उत्तम आ आकर्षक 27. 08. 20 के प्रेस कान्फ्रेंस में श्री कमला बाबू आ हम दूरभाष सँ श्री विकास झाजी सँ सम्पर्क क आहवान गीतक रूप में हुनकासँ अनुमति लेल आ तत्क्षण प्रेस कान्फ्रेंस सँ पहिने एहिगीतक प्रयोग प्रारंभ कैल गेल। जे काफी सराहनीय आ प्रभावी भेल। सभ समाचार पत्र प्रमुखता सँ संस्थानक पक्षके रखलन्हि। प्रतिदिन दैनिक समाचार पत्र मे मिथिला मखानाक सन्दर्भ विविध रूपें चर्चा छपैत रहल। पत्रकार दीर्घाक ट्वीटर मे ब्लूलाईन होल्डर श्री विष्णु कुमार झाजी, हिन्दुस्तान टाइम्स, लगातार मिथिला मखानाक उपेक्षा आ दशाक वर्णन करैत रहथि।

अपन समाचार हिन्दुस्तान टाइम्स मे हुनक समाचार काफी प्रभावोत्पादक छल। बहुतो देश विदेशक संस्था सभ अपना वक्तव्य मिथिला मखानक पक्ष मे प्रकाशित करैत छलाह। महासचिव बैद्यनाथ चौधरी जी दैनिक भ्रमण कार्यक्रम बना कय मिथिलांचल के जागरूक करैत रहैत। संगहि दूरभाष पर विभिन्न संस्था सभ केँ क्रियाशील करैत छलाह। पं0 श्री कमलाकान्त झा, प्रो0 विद्यानाथ झा, आ प्रो0 नारायण झा एहि जनभावना के काफी गति प्रदान कयलनि।

सभ संगठन अपना स्तर सँ बिहार शब्दक विरोध प्रस्तुटित भगेल। जन सामान्य एहि विषय बुझि गेल जे मिथिला संग दुनेति व्यवहार भ रहल अछि। पहिने मिथिला क्षेत्रीय ग्रामीण छैक से मिथिला शब्द हटाओल गेल फेर मिथिला क्षेत्रीय विद्युत बोर्ड सँ मिथिला शब्द विलोपित भेल।

स्व0 ललित मिश्र मिथिला पेंन्टिंग के अपना मंत्रनालय सँ काफी प्रोत्साहित कयने छलाह ओ ओहि समय मे सभसँ पहिले। जयन्ती जनता एक्सप्रेस जे समस्तीपुर सँ दिल्ली जायत छल प्रारम्भ कयलनि ताहि मे अन्दर बाहर पूर्णतः मिथिला पेंटिंग के करा ट्रेन के सुसज्जित करौने छलाह जे आब बैशाली एक्सप्रेस नाम सँ अछि। दिल्ली सँ बरौनी धरि जायत अछि। एहि मिथिला पेंटिंगके बिहार सरकार मधुबनी पेंटिंग के नाम सँ ळण्ण् ज्ंह प्राप्त करौने छथि। ओहु में मिथिला शब्द विलोपित कयल गेल अछि।

जनसामान्य की पढ़ल लिखल आकि सामान्यजन सभ मिथिलाक मखान छी ई समझावा मे आ अपन हक लेल चौक चौराहा पर बाजब शुरू भए गेल। संस्थान सैह चाहैत छल।

विभिन्न सामाजिक संगठन अपन-अपन प्रस्ताव समाचार पत्र सभके माध्ययम सँ मिथिला मखानक पक्ष मे प्रेषित काएल लागलाह। आब ई मिथिला मखानक आगि चहुदिश समाज मे लागि गेल आ ई धुधुआए लागल।

फलस्वरूप जनप्रतिनिधि सभ एहि पक्षमे बाजए लगलाह। 22.08.20 क जखन ट्वीटर ट्रेण्ड चलिरहल छल ओहि बीचमे स्थानीय विधायक श्री संजय सरावगी अपन ट्वीटर सँ मिथिला मखानाक पक्ष लकऽ ट्वीट कैने छथि। विभिन्न जनप्रतिनिधि अधिष्ठाता डॉ0 आर0 आर0 सिंह जी के नाम सँ पत्र 26.08. 20 सँ लिखि कए भेजए वाला मे श्री कृति झा आजाद पूर्व सांसद डा0 फराज फातमी सदस्य बिहार विधान सभा , श्रीमती भवना झा, सदस्य बिहार विधान सभा,

27.08.20 एज्या यादव, सदस्य बिहार विधान सभा, 27.08.20 शशि भूषण हजारी, सदस्य बिहार विधान सभा, 27. 08.20 डा0 आलोक रंजन, पूर्वसदस्य सदस्य बिहार विधान सभा, 31.08.20 श्री संजय सरावगी सदस्य बिहार विधान सभा महामहिम राज्यपाल महोदय, कृषि मंत्री बिहार सरकार आ प्रधान सचिव कषि विभाग के एहि आशयक पत्र भेजने छथि। ई सभ गोटे सांस्कृतिक धरोहर मिथिला के छी ते मिथिला मखाना हेवाक चाही। परिवर्तन केँ हेतु आग्रह पत्र देने छथि। बोना जनतब भेल जे दर्जनों जनप्रतिनिधि अपन मन्तव्य सँ कृषि विश्वविद्यालय के अवगत करौलन्हि।

देश विदेशक मिथिला मैथिली क संस्था सभहक वक्तव्य दिनानुदिन बढैत जा रहल छल। मिथिला स्टुडेनट युनियनक नौजवान सभ गाम गाम घूमि कए जन चेतना के जागृहत करैत छलाह।'' मिथिला शब्द के बिना मिथिला क्षेत्र मे जनप्रतिनिधि के बात कैनाई दुभर भए रहल छलन्हि। सभ जने मिथिला शब्दक प्रयोग पर जोर देमय लगलाह। ई एहि जागृतिक शुभ संकेत भेल।

मिथिला मैथिली सँ जुड़ल देश वा विदेशमे जे जहीं छल से ओतही सँ मिथिला मखन लेल आवाज उठवैत छलाह। विद्यापति सेवा संस्थान सँ जुड़ल जतेक गीतकार, कलाकार, वाद्ययंत्रवादक जाहि ठाम विद्यापति पर्व समारोह मे भाग लेने जायत छलाह सभ ठाम मिथिला मखानक अलख जगावैत छलाह। हर शहरक संस्था सभ मिथिला मखानक ळण्ण् ज्ंह भेटे से वक्तव्य हरसठे समाचार पत्र मे भेटैत छल।

स्थानीय सांसद श्री गोपालजी ठाकुर के 18. 08. 20क ह्वाट्सअप पर हम व्यक्तिगत रूपे आ 20.8.20क विद्यापति सेवा संस्थान क मउंपस सँ जनतब देल गेल छल। ओहिदिन वो बीमार रहथि। मुदा 24.08.20 के रेल एवं वाणिज्य एवं उद्योग मन्त्री भारत सरकार के पत्र लिखलन्हि जे जनतब दूरभाष सँ महासचिव के देलखिन्ह आ 3 सितम्बर केँ दूरभाष सँ महासचिव के श्री पीयूष गोयल जीक वार्त्ता आ प्रत्र क प्रति क्रियान्वयन के जनतब देलन्हि। वो बतौलन्हि जे सकारात्मक टिप्पणी कऽ ‘‘मिथिला मखाना‘‘ करवाक हेतु आवश्यक कारवाई हेतु सम्बन्धित डिभीजन के पठा देलन्हि अछि। हम श्री पीयूष गोयल जीक पत्र अपने आवि कए देव। जे पत्रांक क्ण्वण् छवण् 1/1203/ C&M 2020 दिनांक 2 सितम्बर 2020 स्वयं महासचिव के अवास पर 10.09. 20 के आवि कए दए गेलाह। हुनका मन्त्रीजी वार्त्ता अनुरूप G.I. Tag मिथिला मखानाक नाम सँ निर्गत हैत से आश्वस्त कए देलखिन्ह।

एही बीच जी0 आई0 कार्यालय सँ आवेदन 696 क सन्दर्भ मे 18 सूत्री पत्र- Notice under Rue 31 of the G.I. of Goods (RegistrationAnd Protection) Rule 2002 पत्रांक GIR/App. No.696/ FCR / 20.21/98 दिनांक 18 अगस्त 20 मिथिलांचल मखाना उत्पादक संघ पूर्णियां के नाम निर्गत कए देल गेल आ ई मेल से सेहो भेजल गेल। समयावधि के अन्तर्गत पत्रोतर मांगल गेल अछि।

मखाना उत्पाद आ जी0 आई0 टैग सामान्य जन के

जुबान पर चर्चित भए रहल छल। एम0 एस0 यू0 के नौजवान सभ धमि -2 कए ग्रामीण जनके जगावैके काज कैएलन्हि से समाचार पत्र सँ अवगत होइत छल। मिथिला मिरर के सम्पादक श्री ललित नारायण झाजी, श्री अनुप मैथिल जी आ आदित्य मोहन जी लगातार सोशलमीडिया पर मिथिला के अपन गौरवशाली परम्परा के याद करावैत जनभावना के काफी झक झोरैत रहलाह।

प्रो0 डा0 रामदेव झा जी हमरो आ डा0 विद्या नाथ झा जी के फोन कए कहलनि जे अहाँ सभ ''मखन'' के मखाना कोना कए दे लिए ई मखान थीक नै कि 'मखाना'। श्रीमान के वस्तुस्थितिक जानकारी देलहूँ जे ई पहिनहि सँ आवेदन बिहार मखानाक देल गेल अछि। परिवर्तन लेल मिथिलांचल मखाना उत्पादक संघक अध्यक्ष केमखाना शब्द लेल लिखने छियैन्ह। एखन श्री मान हम सब मात्र ''मिथिला शब्द आ मिथिलाक अस्तित्व बिहार सँ पहिनहि सँ अछि। ई स्थापित करै चाहैत छियैक। ई परिवर्तन समयानुसारे भ सकैत अछि। श्रीमान् कहलथिन जे हमरा ई 'मखाना' शब्द अठकठानि बुझाएल तें ध्यान दिऔलहु अछि। आब बुझलियै। हमर आशीर्वाद अछि। बीच-बीच मे प्रो0 डा0 नारायण झा जी कहथिन जे देखैछियै श्रीमान् धुधुआ रहल अछि। मिथिला मखाना हैवे करतै।

जी0 आई0 कार्याल के पत्रक प्रत्युत्तर अधिष्ठाता (कृषि) वि0 कृषि विश्वविद्यालय सबौर अपन पत्रांक 531 Dean (Ag) BAU Sabour दिनांक 11 सितम्बर 2020 के पठौलन्हि। पत्रानुसार जे 18 बिन्दु कमी छलैन्ह तकर बिन्दुवार व्याख्याक संग संशोधित पुर्न प्रस्ताव नाम परिवर्त्तन ''बिहार मखाना'' क बदले ''मिथिला मखाना''क प्रेषित कएने छथि। पत्र मे वर्णन कएलनि जे मखानाक सामाजिक, सांस्कृतिक आ ऐतिहासिकताक पृष्ठभूमि मे विचार कएला पर बिहार मखानाक बदले ''मिथिला मखाना कएल गेल अछि। पत्र संग आवेदिका विनीता देवीक शपथ पत्र सेहो संलग्न केने छथि जे ''मिथिला मखाना'' हेतु प्रस्तावित अछि।

सोशल मिडीया पर प्रेषित भेल जे एम0 एस0 यू0 के संस्थापक श्री अनुप मैथिल जी शिष्टमंडलक संग अधिष्ठाता कृषि सँ सबौर मे भेटकएलन्हि अछि। आ हुनका सभकेँ अधिष्ठाताक तरफ सँ पत्रांक 598/ अधि0 (कृ0) वि0 कृ0 वि0 सवौर संचिका संख्या 363 दिनांक 22.09. 2020 हस्तगत कराओल गेल जे अधिष्ठाता महोदय 'मिथिला मखाना' क जी0 आई0 टैग पर अपन सहमति प्रदान कएलथि अछि। ई पत्र श्री रजीकांत पाठक, श्री अनुप मैथिल आ आदित्य मोहन जीक नाम सँ प्रेषित अछि।

समाचार देखि मन बड़ प्रसन्न भेल जे अधिष्ठाताक सहमति लोक के जनतब भेटल। हिनका लोकनिक मेहनत सार्थक भेल बुझना जाइछ।

आव समय विधान सभा चुनावक भेल। 25 सितम्बर 2020 केँ बिहार विधान सभाक चुनाव घोषित भए गेल। तीन चरणमे चुनाव 3 नवम्बर स आहुत भेल। जनप्रतिनिधि लोकनि अपन-अपन चुनाव चेत्र मे आवए लगलाह। सभ पार्टीक जनप्रतिनिधि के जनताक भावना केँ सामना करए पड़ैत छलैन्हि जे मिथिलाक मखानक हरण बिहार कियैक करैत अछि। ई मिथिलाक थीक की नहि ? सभ जनप्रतिनिधि एकहि उत्तर दैथि जे ई गलती भेल छइक मखाना मिथिला के छै आ मिथिलाके रहतै। जी0 आई0 टैग मिथिला मखाना ही हैत। जन भावना एतेक बेसी उमड़ि गेल छल जे भारतीय जनता पार्टीक राष्ट्रीय अध्यक्ष जे0 पी0 नड्डा जी के मखाना उत्पादक मल्लाह संघक संग मखाना अनुसंधान केन्द्र दरभंगा में आवि समस्या के सुन पड़लैन्हि।

विद्यापति सेवा संस्थाक हुनका पत्रांक V.S.S. 776/ 020 दिनांक 11.09. 20 केँ माध्यमे 5 सूत्री मांग प्रस्तुत कएलक आ 25 सितम्बर सँ 2 अक्टूबर 20 तक ''जागू मिथिला जागू'' कार्यक्रम तहत जन जागरण जन सहयोगक अभियानक आहवान कएने अछि। जे पत्रांक V.S.S. 777/020 दिनांक 11.09.20 जे निम्नवत अछि।

।। जागू मिथिला जागू।।

विद्यापति सेवा संस्थान समस्त मिथिलावासी सँ आग्रह करैत अछि जे आत्मनिर्भर मिथिला के निर्माण लेल आगामी 25 सितम्बर से 2 अक्टूबर धरि 'जागू मिथिला जागू' जनजागरण-जनसहयोग अभियान में सम्मिलित हो। ई अभियान जनआकांक्षा और सरकार के इच्छा शक्ति के मध्य सम्बाद स्थापित करवाक प्रयास अछि जाहि सँ ग्राम स्वराज्य आ अन्तोदय सुनिश्चित होयत। जागू मिथिला जागू मुख्य मांग -

(1) मखान के G I Tag 'मिथिला मखान' नाम से सुनिश्चित करवाक हेतु आग्रह।

(2) मिथिला मखान के उत्पादन और निर्यात हेत संस्थागत संरक्षण करवाक हेतु।

(क) भारत सरकार के कृषि मंत्रालय अधीन National Horticulture Board द्वारा सूचीबद्ध करए यथोचित प्राथमिकता।

(ख) भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय अधीन Agricultural & Processed Food Exports Development Authority (APEDA) द्वारा सूचीबद्ध करैत यथोचित प्राथमिकता।

(3) मिथिला-मैथिलीक उपलब्ध इतिहास ऋग्वेद काल सँ उपलब्ध अछि। ई भाषा करोड़ों बजनिहार छथि तथा भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूची मे शामिल भेला 17 वर्ष भए गेल। अतः मैथिली के साहित्यकार और लोक संस्कृति के संरक्षण आ मैथिली पत्रकार आ कलाकार के उत्थान हेतु ''दूरदर्शन मैथिली-DD Maithili" की स्थापना कयल जाए।

(4) मिथिला अंतर्गत East-West Corridor क स्थापना करैत विभिन्नAgriculture Corridor Based Development के तहत 'NationalAgri-corridor' की स्थापना करैत विभिन्नAgricultural Cluster,Agro-based / Agro-processing Industry, Dairy / Fisheries Based Industry तथा IT / ITES / Biotech hub और Education Hub के प्रोत्साहन तथा नीतिगत संरक्षण प्राप्त हुए। एहि क्षेत्र के उत्तर में भारत नेपाल सीमा तथा दक्षिण में पवित्र गंगा नदी अछि। एहि क्षेत्र में 7Aspirational District, 2 Smart city, 1 निर्माणाधीन Airport, 2 Rail Division का विशाल नेटवर्क तथा राज्य सरकार सात निश्चय' के फलस्वरूप विकसित सुदृढ़ ग्रामीण आधारभूत संरचना उपलब्ध अछि।

(5) दरभंगा में माननीय उच्च न्यायालय के बेंचक स्थापना कएल जाए।

विद्यापति सेवा संस्थानक महासचिव पत्र जे माननीय मुख्यमंत्री बिहार सरकार के देने छलाह तकर प्रत्युत्तर मे निदेशक, उद्यान बिहार सरकार के पत्र संख्या 13/ उ0 नि0/147/2020-40 दिनांक 11/1/2021 भेजल गेल। ताहि अनुसारे मुख्यमंत्री सचिवालयय क पत्र जे महासचिव विद्यापति संस्थानक E. Complaince ID No. 2020037059 आओर तहिना एहि सम्बन्धमे तत्कालीन विधायक हायाघाट श्री अमरनाथ गामी क I.D. 2020037887 अछि। तदनुसार आवेदन के प्रस्ताव ''मिथिला मखाना'' जी0 आई0 टैग करवाक हेतु कुलपति बिहार कृषि विश्वविद्यालय के भेजल गेल अछि। एहि आशय के पत्र हस्तगत कराओल।

कृषि मंत्री और कृषि सचिव के हवाले से 12 नम्बर 2021 के ई जनतब भेटल जे बिहार मे मखानाक जल्दीये वैश्विक पहचान जी0 आई0 टैग भेटबाक रास्त साफ भ गेल अछि। एहि सम्बन्धमे केन्द्र सरकार के कन्सलटेंटिंग समूहक बैठक पटना कएल गेल वो सभ मखानाक विशेषता और उत्पाद के श्रोत सं अवगत भए सहमति देलथि जे मखाना उत्पादके आव बिहार का मखाना के रूप में जी0 आई0 टैग भेटत।

विद्यापति संस्थान के फेर शंका भेल जे ई0 की भरहल अछि। समाचार पत्र मे ई0 देखि-देखि के जागरूक भेलहूँ। 49वं विद्यापति समारोह प्रारंभ 17, 18, 19 नवम्बर कऽ भ रहल छल। पुनः प्रश्न प्रश्न राखल गेल। एहि सन्दर्भमे 14 नवम्बर क मंत्री संजय कुमार झा, जल संसाधन मंत्री, बिहार सरकार, अपना टवीटर, फेसबुक, आ समाचार पत्र सँ स्पष्टतः अंकित कयलनि जे मखान मिथिलेक छी आ मिथिलेक रहत। जी0 आई0 टैग मिथिला मखाना शीध्रहि भेटत। प्रक्रियाधीन अछि। यह बात कृषि सचिव अपन ट्वीटर सँ सेहो ओहि दिन लिखलनि जे मिथिला मखान हैत।

एहि शंकाक कारणे विधान परिषद् सदस्य श्री प्रेम चन्द्र मिश्रा 2 दिसम्बर 21 केँ सदन मे ध्यानाकर्षन प्रस्ताव अनलनि जाहि पर कृषि मंत्री श्री अमरेन्द्र प्रताप सिंह जी सदनमे घोषणा कयलनि जे मखाना का ळण्ण्ण् ज्ंह मिथिला मखाना ही होगा।

सांसद, श्री गोपालजी ठाकुर संसद मे प्रश्न पूछने छलाह जे मखानाक जी0 आई0 टैग की की भरतल अछि। कृषि मंत्री भारत सरकार उत्तर देने रहथिन जे जी0 आई0 टैग मखाना क ''मैथिला मखाना'' ही निर्मित है तो प्रक्रियाधीन अधिकार शीध्रहि भेटत।

पुनश्च एक पत्र जी0 आई0 कार्यालय चेन्नई सँ मिथिलांचल मखाना उत्पादक संघ पूर्णियां के पत्र देलगेल। जे0 पत्रांक GIR/App.No. 696 / ER/ 2021-22 1858 दिनांक 1.12.2021 थीक। पत्रानुसार सर्व प्रथम GI कार्यालय नाम परिवर्त्तन प्रस्ताव बिहार मखाना स ''मिथिला मखाना'' के स्वीकार कैलन्हि अछि। पत्रानुसार 5 बिन्दुक निर्देशन छैन्हि। ताहि मे मिथिला मखानाक लोगो क परिवर्त्तन के निर्देशन सेहो अछि।

अधिष्ठाता कृषि सबौर द्वारा निबन्धक जी0 आई0 रजिस्ट्री इन्टीलेक्युअल प्रोपर्टी के अपन पत्र भेजलन्हि। पत्रांक 1724Dean (Ag) B.A.U. Sabour दिनांक 17.01.2022 के द्वारा प्रेषित केने छथि।

पत्रानुसार Bihar Horticulture Development Soceityd निदेशक facilitator (प्रस्तोता) बनवाक सहमति पत्र भेजने छथि। ई पत्र जी0 आई0 कार्यालय के 24.01. 22 के प्राप्त भेल अछि।

ळण्ण्ण् ज्ंह के प्रावधानानुसार Geographical Indication Journal No. 153April 13. 2022 में मिथिला मखाना के लोगो सहित अधियाचना प्रसारित कयने छथि एकर विरूद्ध कोनो आवेदन नहि प्राप्त भेला पर G.I. कार्यालय 16 अगस्त 2022 क विधिवत G.I. Tag 696 के सर्टिफिकेट नं0 421 दिनांक 16 अगस्त 2022 क निर्गत कयलन्हि।

जे 20 अगस्त 2022क माननीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री, श्री पीयूस गोयल जी अपना ट्वीटर हेण्डल सँ घोषित कएलन्थिन्ह जे- Bihar Mithila Makhana receives G.I. Tag... Union Governent hasAwarded G.I. Tag to

Bihar's Mithila Makhana foxnuts. The decision by the government comesAs part of its missin to increase And boost farmers incomes. TheAttribution of Geographical Indication (G.I.) Tag to Mithila Makhana will help the farmers who grow the foxnuts get the maximum prices of their permium produce.

As per the G.I. Registration certificate , Bihar's "Mithila Makhana" has been registered in the name of Mithilanchal Makhana Utpadak Sangh. The decision toAward G.I. Tag of Bihar's Mithila Makhana was formallyAnnounced by Union Commerce and I ndustry Minister Piyush Gogel.

एहि सम्वाद के सांसद गोपालजी ठाकुर, जल संसाधन मंत्री, बिहार सरकार श्री संजय कुमार झा जी एवं संजय सरावगी सदस्य बिहार विधान सभा आदि आदि सभ अपन ट्वीटर सँ प्रसारित करए लगलाह।

एहि तरहे 16 अगस्त 20 से प्रारंभ भेल मिथिला मखाना''क राजनैतिक आ सांस्कृतिक संवाद 2 वर्ष 5 दिन क बाद फलीभूत भेल। विद्यापति सेवा संस्थान द्वारा उठायल आपत्ति जे मुख्यमंत्री सचिवालयय अन्तर्गत E. Compliance Dashboard I.D. 2020037059 दिनांक 17.09.2020 के अन्तिम निष्पादन कऽ ''मिथिला मखाना'' क जी0 आई0 टैग संलग्न करैत ज्ञापांक 1010 दिनांक 23.08. 22क पत्र भेजल गेल अछि। ई पत्र निदेशक उधान, बिहार द्वारा प्रेषित अछि।

एहि आशय के पत्र तत्कालीन विधान सभा सदस्य श्रीअमरनाथ गामी जी के से हो पठौने अछि। हुनक कैंइवंतक पर आपत्ति दिनांक 14.10.2020 ID No. 2020037887.

निदेशक उद्यान विभाग अपन पत्र 1010 दिनांक 23. 08.22 में लिखने छथि जे महासचिव विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा के E. Compliance Dashboard कृषि निदेशालयय, बिहार पटना के पत्रांक 3671 दिनांक 17.09.20 के संग संलग्न मुख्यमंत्री सचिवालय पटना से प्राप्त आई0 डी0 संख्या 2020037059 है। इसमें आपके द्वारा मखाना का जी0 आई0 टैग एवं बांडिंग मिथिला मखाना के रूप में करने का आग्रह किया गया है। जिसके क्रम में उल्लेखित करना है कि रजिस्ट्रार भौगोलिक उपदर्शन भारत सरकार के द्वारा मिथिला मखाना के नाम से जी0 आई0 टैग का प्रमाण पत्र निर्गत किया गया है। जिसका जिओग्राफिकल इण्डीकेशन नम्बर 696 है। (प्रमाण पत्र की छायाप्रति संलग्न)

अतः आपका E. Compliance आवेदन निष्पादित की जाती है। एहि आशय के पत्र तत्कालीन विधायक श्री अमरनाथ गामी जी के से हो भेटल छैन्हि।

जी0 आई0 टैग भेटव एक पड़ाव भेल। मिथिला मखाना कियाक? जे G.I. Tag के व्यावसायिक लाभ अंकित अछि। तकरा आब अमली जामा नियोजक आ उत्पादक के देवाक चाही। भारत आ बिहार सरकार नया उन्नत किसम के खेती करवा हेतु जे एक हेक्टेयर के लागत 97हजार लगैत छैक ताहिमे 72 हजार सब्सीडी दैत अछि। मखाना प्रसंस्करण उद्योग स्थापित करवाहेतु व्यक्तिगत 15 प्रतिशत आ कृषक समूह के 25 प्रतिशत तक सबसीडी द रहल अछि। आवश्यकता अछि जे अधिकतम एकर उपयोग उत्पादक लोकनि करथि।

ब्रांडिंग के आ बाजार में प्रस्तुतीकरणक अधिक महत्व छैक। एकटा मैदा सँ कोनो बैकरीदोकान में जाऊ कतबा तरहक भोज्य सामग्री कतवा लेवरक प्रस्तुत करैत अछि। तहिना एकटा मखान सँ रंग विरंगक प्रसंस्करित आइटम बना ब्रांडिंग आ पैकिंग कऽ बाजार मे उपलब्ध्न कराबी सरकार एहि हेतु खजाना खोलने अछि एखन 5 सितम्बर सँ 20 सितम्बर तक आवेदन करवाक अवसर छैक। ई एखन एहिना चलत।

सरकारक सात निश्चय योजनाक अन्तर्गत भू-जल संरक्षण मखाना के खेती लेल आवश्यक। मखाना उत्पादक समूह बना कऽ गरीबीक दुश्चक्र (vicious circle of poverty) क तोड़ि सकैत छथि।ैजंतज नच योजना क तहत नौजवान उद्यम करथि तखन एहि ळण्ण्ण् ज्ंह क फायदा ल सकब। वस्तु के बाजार मे प्रस्तुतीकरण पर आय समृद्धि होइत छैक आ मांग बढ़ैत छैक। पौष्टिकता, दृष्टिए सर्वोत्तम खाद्य पदार्थ थीक। बिहार सरकार द्वारा सरस मेला 2022, 2 सितम्बर सँ 11 सितम्बर तक बापू सभागार, पटना में छल मखानाक प्रस्तुती ओहिना ठेला पर आ बोरा मे छल। एहन प्रस्तुतीकरण पर अछि पर्यटन उद्योगक मिथिलामे संभावना छैक तकरा पर ध्यान देमय पड़त। एक जिला एक उत्पादमे दरभंगाक मखाना पर 2021 दरभंगा जिला के राष्ट्रीय एवार्ड देल गेल अछि। विद्यापति सेवा संस्थान मिथिलाक सर्वांगीण विकास क लेल एहिना सतत् जागल रहत।

जय मिथिला जय मैथिली

अवकशप्राप्त पूर्व प्रधानाचार्य,
एम0 एल0 एस0 एम0 कॉलेज, दरभंगा
सह पूर्व वित्त समिति सदस्य,
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा



विद्यापति सेवा संस्थान : एक सिद्धपीठ आ डा. बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' एक आदर्श पुरुष

✍ डा. बुचरू पासवान

ई मिथिला, राजा मिथि द्वारा मंथनोपरान्थ जे सारतत्व बाँचल तकरासँ मिथिलाक प्रदुर्भाव भेल आ तकर शासक भेलाह मिथि नामक राजा आओर गद्दीक नाम पड़ल जनक। जे केओ मिथिलाक गद्दीपर आसीन भेलाह, से जनक नामसँ अभिभूत भेलाह एवं प्रकारेँ संतावन जनक भेलाह आ अंतिम जनक भेलाह राजा सिद्धार्थ जिनका विदेह सेहो कहल जाइत छनि। ई पावन धरती मिथिला जिनक ''उत्तर सिरमौर हिमालय, दक्षिण चरण पखारथि गंगा, पूरब कौशकी अंग-बंगा, पश्चिम गंडकी धारा'', एहिना जे मिथिला ऋषि-महर्षिक तपःस्थल, साधु-संतक योगास्थान, सीता, सावित्री, सती अनसुइयाक जाँचस्थल आ अहल्याक श्रापित एवं उर्वर भूमि मिथिला अपने आपमे स्वयं सिद्धपीठ अछि। ताहि मिथिलामे दड़िभंगा आ ताहि, दड़िभंगाक हृदयस्थली, 'विद्यापति सेवा संस्थान' आ तकर संस्थापक परम पवित्र, साढ़े पाँच हजार चुल्हामे धुआँ उठैत तकर जोगार केनिहार, साढ़े बारह वर्ष जेलक कठिन यातना भोगनिहार, अनेकानेक संस्थाक सर्वोच्च पदधारक, गौर वर्ण, उच्च ललाट, देदीप्यमान नक्षत्र, मधुरक स्वभाव, मृदुलभाषी, धीर-वीर, गंभीर, महामानव, अटल आडवाणी पद्मश्री सी.पी.ठाकुर आ विरोधी दलक नेताइन सोनियाँ गाधीक असीमकृपासँ मैथिलीक अष्टम् अनुसूचिमे अनननिहार बजरंगबली पवन सुत हनुमान, सदृश्य परम प्रतिष्ठित परम आदरणीय, मिथिला विभूति, भारत रत्न, समाजवादी, समदर्शी जे छथि हुनक नाम थिकनि डा. प्रो. बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू'।

प्रथमतः विद्यापति सेवा संस्थानक अध्यक्ष डा. मणिपꣳ, सुरेन्द्र झा सुमन, पं. अमर, कार्यकारी अध्यक्ष पंडित देव ना. झा आ महामंत्री अंशी पुरुष, महादेवक अंशसँ निर्मित डा. बैद्यनाथ चौधरी बैजू जी छथि, तेँ विद्यापति सेवा संस्थान एक शक्ति पीठ थिक।

द्वितीय - 36 वर्षसँ विद्यपति स्मृति पर्व समारोह, समारोहपूर्वक अवाध गतिसँ आयोजित होइत रहल अछि। तेँ ई सिद्धपीठ थिक।

तृतीय - एके स्थान पर निरन्तर 36 वर्षसँ कवि, नेता, प्रणेता, अभिनेता, गीताकार, संगीतकार, कथाकार, नाटकार, साहित्यकार, नाट्यकार, मिडिया, प्रींटमिडिया, वाद्ययंत्रक आ सहस्त्रो जनसैलावक चरण- कमलक चरण-धूलि स्पर्श होइत रहल अछि। तेँ विद्यापति सेवा संस्थान सिद्धपीठ थिक।

चतुर्थ - विद्यापति सेवा संस्थानक परिक्षेत्रमे जे केओ निरन्तर सिद्धपीठमे साधनारत रहलाह अछि हुनका सर्वोच पद, प्रतिष्ठा, मान-सम्मान प्राप्त भेलनि अछि। तेँ विद्यापति सेवा संस्थान सिद्धपीठ थिक।

पंचम् - विद्यपति सेवा संस्थान आई लगभग चारि दशकसँ निरन्तर विद्वानकेँ ''मिथिला विभूति सम्मान''सँ, सम्मानित करैत रहल आबि रहल अछि जे एक अद्वितीय पावन कार्य थिक। तेँ संस्थान सिद्धपीठ थिक।

षष्ठम् - विद्यपति सेवा संस्थानक चौतरफा-तीर्थस्थानसँ घेरल-बेढ़ल अछि जेना- पश्चिम कर्बला, पूरब विशाल दुर्गा मंदिर, उत्तर, शक्तिस्वरूपा श्यामा माइक मंदिर आ दक्षिण चर्चित, परिचित आ ऐतिहासिक सरोवर ''हराही पोखरि'' आ मलेच्छ मर्दनीक पवित्र मंदिर, विद्यापति सेवा संस्थानकेँ शक्ति प्रदान करैत रहल अछि। तेँ ई सिद्धपीठ थिक।

सप्तम् - विद्यपति सेवा संस्थान मैथिली भाषाकेँ संविधानक अष्टम् अनुसूचीमे स्थान दिऔलक जे कठिन कार्य छल। तेँ संस्थान सिद्धपीठ थिक।

अष्टम् - विद्यापति सेवा संस्थानक महासचिव परम प्रतिष्ठित डा. प्रो. बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' द्वारा सहस्त्रो गरीब-गुरवा निसहाय-निर्वल बाहुलता संग सबलकेँ सेहो चाकरी दऽ एक पुनीत कार्य केलक अछि तेँ विद्यापति सेवा संस्थान सिद्धपीठ थिक।

एहि पावन धरती मिथिलाक माटि-पानिसँ एकसँ एक महापुरुषक आविर्भाव होइत रहल अछि। ओ अपन व्यक्तित्व आ कृतित्वसँ जन मन साहित्य आ सांस्कृतिक विकास, राजनीतिक पहलू, भौगोलिक परिक्षेत्र आ ऐतिहासिक संदर्भकेँ ठीक कऽ महानिद्वा समर्पित कऽ युगपुरुषसँ प्रशंसित होइत रहैत छथि आ इतिहासमे जगह पबैत छथि।

तहिना आधुनिक कालक आदर्श पुरुष, युगनिर्माता, समदर्शी, सफल संचालक, मिथिलाक विभूति, भारतक रत्न आ अर्न्राष्ट्रिय स्तरक महायोद्धा डा. बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' एहि मिथिलाक शिखर पुरुषक रूपमे प्रतिष्ठापित छथि। ''होनहार वीरवान को होत चिकते पात' चरितार्थ केलनि अछि डा. 'बैजू'।

- हिनक आदर्श रहल अछि : बचपनमे जखन हिनक वयस सिपर्फ 8 वर्षक छलनि तखन एक गरीब दूधपिबा बचकेँ खेतक आरि पर जाड़सँ थर-थर कँपैत देखि नव ऊनी शालसँ झाँपि आ कुशियारक पातसँ धधरा कऽ बचौने छलाह डा. 'बैजू', जखन की ओ चमार जातिक बच्चा छल।
- का. भोगेन्द्र झासँ सुनल अछि जे छात्र जीवनक रूपमे राजनीतिक उन्मादमे पुलिस प्रताड़ना : देश हीत खातिर उठाओल आवाजक

विरुद्ध पुलिस द्वारा दड़िभंगा सी.पी.आई. ऑफिसक दू महला पर छात्र बैद्यनाथ चौधरी बैजूकेँ पकड़ि, राईफलक कठोर कुंदासँ प्रहारकऽ भयंकर प्रताड़ना केलनि आ राष्ट्रहित नाम पर एहि कठोर यातनाकेँ झेललनि आ पाछु नहि हटलाह तेँ आदर्श पुरुष छथि।

- डा. बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' एहि द्वारे आदर्श पुरुष छथि जे रेलक छोटीलाइनसँ बड़ी लाइनक विस्तार हेतु धरणा-प्रदर्शन आ रेल चक्का जाम करबौलनि। फलस्वरूप रेलक प्रताड़ना आ एखन तक केसमे जकड़ल छथि।
- डा. बैद्यनाथ चौधरी बैजूकेँ हम ओहि रूपमे चिन्हैत छियनि जखन एक समय छल जे बैजू नाम पर बस आ सिनेमाक टिकटमे कान्सेसन 25प्रतिशत भेटैत छल। हम ताहि बैजूकेँ जनैत छी आ तेँ आदर्श रूप छथि।
- हिनका आदर्श पुरुष एहि द्वारे कहैत छियनि जे मिथिलाक कतिपय मैथिलिस्ट मैथिलीभाषाकेँ संविधानक अष्टम् अनुसूचीमे अनबाक हेतु कठिन साधना केलनि जकर नेतृत्व डा. बैजू करैत छलाह। आ विद्यापति सेवा संस्थानक सभ सदस्यक अहम् भूमिका रहलनि। एहि शुभ कार्यक लेल अटल, आडवाणी आ पद्मश्री सी.पी. ठाकुर पूजनीय छथि।
- जनताक विभिन्न समस्याकेँ लएकेँ सरकारक विरुद्ध सतत क्रियाशील रहलाह। परिणाम स्वरूप केसक विभिन्न रूपमे संलिप्तताक आरोपमे 12वर्ष 3 महिना जहलमे कठिन यातनाक संग कटलनि तेँ डा. 'बैजू' आदर्श पुरुष छथि।
- डा. 'बैजू' एक खेप जहलक सेलमे यातना काटि जहलसँ बाहर भेल छलाह। संगमे चाचाजी छलनि। जखन गंगाक सिमरिया घाट अयलाह तखन संगक सब कपड़ाकेँ गंगाक प्रवाहमे समाहित कऽ देलखिन। तकर कारण छल जे सेलमे सफाईक कुव्यवस्थाक कारणेँ हिनक कपड़ामे चिल्लरक खान बनि गेल छल।
- डा.'बैजू' चारिटा डिग्री कॉलेज, चारिटा इन्टर कॉलेज, चारिटा डिग्री आ इन्टरमे लेक्चर, कर्मचारिकेँ चाकरी दऽ हजारो घरमे दिया लेशि, एक कीर्तिमान स्थापति केलनि अछि तेँ आदर्श पुरुष छथि।
- डा. बैजू कतिपय मिथिला-विभूतिक आदमकद प्रतिमा माननीय प्रवासी मैथिल कामदेव झा एवं माननीय भोगेन्द्रझाक सहयोगसँ शहर आ गाममे प्रतिष्ठापित भेल अछि जे एक ऐतिहासिक आ सराहनीय कार्य केलनि अछि। तेँ डा. 'बैजू' आदर्श पुरुष छथि।
- डा. बैजूक आदर्श पुरुष एहि हेतुएँ छथि जे विद्यापति सेवा संस्थान दड़िभंगाक स्थापना कऽ बाबा विद्यापतिक स्मृति-पर्व-समारोहक अवसर पर प्रतिवर्ष 3 दिनक मिथिला विभूति-पर्व- समारोह आयोजित कऽ भिन्न-भिन्न भाषाक भाषाविद् आ भाषावैज्ञानिक, साहित्यकार, गाथाकार, कलाकार, पत्रकार, चित्रकार, आदिक लोकनिकेँ मिथिला विभूति सम्मानसँ सम्मानित कऽ एक उच्चतम स्थान प्राप्त केलनि बैजूजी तेँ आदर्श पुरुष छथि।
- मैथिली भाषा संविधानक अष्टम् अनुसूचीमे एबाक फलस्वरूप 22, 23 दिसम्बरक मासक प्रति वर्षक अवसर पर भारत वर्षक विभिन्न नगरमे मैथिली दिवसक रूपमे मनाओल जाइछ आ एहि अवसर पर भारत सरकार द्वारा अठारह भाषाकेँ मान्यता प्राप्त भाषाक, भाषाविद् आ साहित्यकारकेँ मिथिला रत्नसँ सम्मानित कए डा. बैजू सिरमौरक रूपमे स्थापित होइत छथि, तेँ आदर्श पुरुष छथि।
- मिथिला विश्वविद्यालयमे सिनेट-सिन्डीकेटक रूपमे स्थापित सदस्यक रूपमे डा.'बैजू' विभिन्न समस्याक निदान कुशलताक संग करैत छथि आ अपन मातृभाषा मैथिलीक समर्पित पुत्र रत्नक रूपमे मैथिली भाषाटामे भाषण और लिखित अभिलेख प्रस्तुत कऽ एक कीर्तिमान स्थापित केने छथि। तेँ आदर्श पुरुष छथि।
- डा. 'बैजू' दलगत भावनासँ ऊपर उठि सब दलक नेता, प्रणेता, अभिनेता, मंत्री सभीकेँ एक सूत्रमे जोड़ि एक मिशाल तैयार करैत छथि। जे बहुत कठिन काम थिक। तेँ आदर्श पुरुष छथि। डा. 'बैजू' कलियुगीकर्ण छथि जिनक दरबारसँ केओ खाली हाथ नहि घूमैत छथि। याचना केला पर याचक फलीभूत होइत छथि आ पफल प्राप्त कऽ प्रसन्न होइत छथि, जे एक देव पुरुषे कऽ सकैत छथि। तेहने कार्य बैजूजी करैत छथि तेँ आदर्श पुरुष छथि।
- डा. बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' हृदयक सापफ, मृदुभाषी, प्रपंचहीन आ शालीनताक प्रतिमूर्ति छथि। गंगासन पवित्र, हिमायल सन सिरमौर, समुद्रसन गंभीर आ चान सन नवल धवल शीतल स्वभावकेँ एक स्थापित देदीप्यमान नक्षत्र छथि। डा. 'बैजू' समतामूलक समाजक संस्थापक, गरीब, शोषित, पीड़ित, प्रताड़ित, आ अवहेलित मानवक मसीहा छथि। हिनकामे असाधारण देवअंश छनि जाहि प्रसादात हिनक कीर्तिसँ समस्त समाज, वर्ग अजाति, जाति, सम्प्रदाय सुजाति एक कड़ीमे जड़ित भए सम्मान पाबि गौरवान्वित होइछ। डा. बैजू अभिनन्दित, सराहनीय आ प्रशंसनीय रूपमे एक महामानवक रूपमे अविर्भाव भऽ संकटमोचनक रूपमे अवतरित भेल छथि। तेँ हीराकेँ पहचान जाहूरीए कऽ सकैत अछि। जाहूरी बनू। चिंतन, मनन आ परेखू। परोपकारी लेल शीश झुकाऊ। मानव मूल्यक पहचान मानवक कर्त्तव्यबोध थिक। 'मिथिलाक बैजू बावरा' पोथी हिनके पर अछि जाहिमे हिनक कयल औरो काज सभ उल्लखित अछि। एहि महासपूतक दीर्घायुक कामनाक संग ओ इतिहासपुरुष बनल रहताह।



अनुज बैद्यनाथ चौधरी बैजू

✍ पं. नारायण मिश्र

सामाजिक जीवन एक कठिन तप छैक जे एहिसँ सम्पर्कित भऽ जाइत अछि ओ अपन दायित्वक जिम्मेवार होइछ। अगर रचनात्मक जीवनमे सफलता भेटल तँ जगतक संग समाज सेवीक रूपमे उल्लखित होइत अछि। सामाजिक परिवेश कठिनतम समयक संग धैर्य रखबाक आवश्यकतासँ निश्चित रूपें सपफलता भेटैत छैक। बैजूक जीवनमे कठिनतम समय कालेजक जीवनमे रहलैन्ह परन्तु धैर्यपूर्वक छात्रक कल्याणक दायित्वकेँ निर्वाह केलैन्ह।

बैजूक एक साधारण परिवारमे सहौरा वस्तीमे जन्म लेलन्हि, अपना संगे गामक भाग्यके अगुआयी बनावय लेल कृत संकल्प भेलाह। सर्वप्रथम ओ कालेजक स्थापना स्थानीय राज धर्मशालासँ प्रारम्भ कयलैन्ह, हम एहि मकानमे सामाजिक कार्य हेतुए प्रयास कैल। ओकर कमिटीमे राज मैनेजर दुर्गानन्द झा, सुरेन्द्र झा सुमन जी, इन्द्रदेव सिन्हा आदि सदस्य छलाह, हमर कार्यक्रम हुनका लोकनिक नजरि नहि आयल, किछ दिनक बाद बैजू भाई मकान पर कब्जा केलैन्ह, आ महराज लक्ष्मेश्वर सिंह कालेजक कार्य शुरू भेल। कॉलेजक उद्घाटन डा. जगन्नाथ मिश्रजी कयलैन्ह आ क्रमशः कॉलेज विकसित होमय लागल। आब अंगीभूत कॉलेज योग्य, एहिमे बैजूजीक द्वारा नियुक्त लगभग 150सँ बेसिए शिक्षकक भाग्य जागि गेलैन्हएहि तरहे जिलामे आधा दर्जन कॉलेजक स्थापना ओकर मान्यताक श्रेय बैजुएकेँ छैन्ह, समाजमे हिनकर प्रतिष्ठा बढ़य लागल।

बैजूक दोसर प्रयास भेल विद्यापति सेवा संस्थानक स्थापनाक, एहिमे साहित्यकार, योगदान भेटलैन्ह। आइ ई संस्थान भारतीय स्तर पर पसरल अछि। एकटा स्मरण दियाबैत छी जे हम विद्यापति ट्रस्टवोर्ड बनाओल जकर प्रथम सभापति डा. आदित्य नाथ झा भेलाह। हूनक दसखत हमरा लग मौजूद अछि, कार्यकारी अध्यक्ष जिला पदाधिकारी दरभंगा तत्कालीन जिलाध्यक्ष भेलाह, हुनका अध्यक्षतामे अनेको बैठक भेल जाहिमे विस्पफीमे इन्स्टीच्यूट, भवानीपुरमे विद्यापति संगीतक उद्वोधन लगातार होयत, दरभंगा सबहक प्रधान कार्यालय आ विद्यापति नगरमे संगीत महाविद्यालयक स्थापनाक निर्णय लेलगेल। कोनो कारणवश कार्यक्रम आगां नहि बढ़ि सकल तँ जखन विद्यापति सेवा संस्थान बनल तँ हमरा भेल जे हमर सपनाकें साकार करबालेल बैजूक संस्थान आगां आबि कार्य करय लागल। विद्यापति सेवा संस्थान मिथिला-मैथिलीक सर्वाङ्गीण विकास लेल चिंतन एवं प्रयास करय लागल। अनेक आन्दोलन कार्यक्रम भेल अछि आ मुख्य उद्देश्य मिथिला राज्यक कल्पना अछि।

देशक अनेक राज्यमे सम्मेलन सेमिनार कऽ जनताकेँ एक विश्वासक वातारण बनाओल अछि। वर्तमानमे मिथिला विश्वविद्यालयमे प्रवेशकऽ अनेक शैक्षिक संस्थानक सहयोग एवं अपन नेतृत्व विस्तारक रहलाह अछि। शहरक कोनो समारोह एहन नहि जाहिमे बैजूजी नहि होथि।

हमर सम्पर्कमे एलाह तँ आन्दोलनमे ओ मन्नुक संग आबि जाइत छलाह कारण आन्दोलनकर्त्ता छलाह। ओ जतय भेटैत छलाह भीड़मे वा एहिना जोरसँ नारायण भाई कहैत प्रणाम करैत छथि आ हम हिनका हृदयसँ आर्शिवाद दैत छियन्हि जे ओ समाजकेँ सेवामे अग्रणी होथि। चेतना समिति जकाँ दरभंगामे विद्यापति जयन्ती समारोह लगातार करैत आबि रहलाह अछि। तीन दिनक कार्यक्रमक लाभ दरभंगाक नागरिक लैत छथि। शहरक दूनू विश्वविद्यालयक आजीवन सदस्यक संग सिनेट आ सिडींकेटक अलावा अनेक कमिटीमे छथि। अस्तु हम हुनका आर्शिवाद दैत दीर्घायु हेबाक मनोकामना करैत छी।



डॉ० बैद्यनाथ चौधरी बैजू मैथिली आंदोलन के संवाहक आ' मिथिला राज्य आन्दोलन के प्रणेता

✍ डा. शिशिर कुमार झा

(मिथिला- मैथिली के देश-विदेश मे प्रचार आओर मैथिल के जागरुकता लेल अखिल भारतीय मिथिला राज्य संघर्ष समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष आश विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा के महासचिव डा. बैद्यनाथ चौधरी बैजू के अथक प्रयास)

ल. ना विश्वविद्यालय दरभंगा के छात्र संघ के अध्यक्ष रहैत छात्र लेल संघर्षपूर्ण जीवनगाथा- डा0 बैद्यनाथ चौधरी बैजू बिहार सरकार, विश्वविद्यालय आ' मिथिला क्षेत्र के शासन-प्रशासन एवं मिथिला राज्य-मैथिली विरोधी सं लडैत अपन संघर्ष के जीवनकालक लगभग 14 वर्ष कारागार मे विभिन्न केस मुकदमा मे बितौलैन। चोरी-डकैती, जानलबूझल हत्या, अनजान हत्या, बलत्कार, दहेज कानून, राष्ट्रद्रोह छोड़ि लगभग भारतक कमे अपराध कानून हेतै जकरा अंतर्गत हिनकर व्यक्तित्व के दमन करबाक प्रयास सरकार आ' शासन- प्रशासन द्वारा नहिं कयल गेल हआ आ' एखनो गिरफ्तारी के तलवार सदिखन लटकल रहैत अछि। तें प्रो. अमरेन्द्र कुमार झा आ' ईजीनीयर शिशिर कुमार झा सन हजारों सेनानी दिल्ली सहित सम्पूर्ण देश- विदेश मे ओहि संघर्ष के मशाल लय मिथिला राज्य आ' मैथिली खातिर माथ मे कफन बांहि संघर्षशील छथि। लगभग 70 बरख भेलाक बादो डा. बैद्यनाथ चौधरी बैजू के संघर्ष आ' मिथिला राज्य-मैथिली लेल जूनून एकोरती कम नहिं। यएह कारण छैक जे आई देश-विदेश मे बसल मैथिल हिनका मिथिलाक सर्वमान्य नेता मानत छथि। सांसद, विधायक कतेक भेला, कतेक छथि, मुदा मिथिला राज्य-मैथिली भाषा लेल अनवरत लङनिहार मिथिला के एकमात्र सपूत डा. बैद्यनाथ चौधरी बैजू जे ''बैजू बाबू'' के नाम सं आम मैथिल मे लोकप्रिय छथि। मैथिली के संविधान के अष्टम अनूसूचि मे 2000 मे घोषणा भेलाक बाद सतत् मैथिली के उत्थान आ' पृथक मिथिला राज्य लेल अनवरत प्रयास मे जटि गेलाह। ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय के सिनेट-सिंडीकेट सदस्य रहैत विद्यार्थी के समस्या आ' विश्वविद्यालय मे व्याप्त भ्रष्टाचार के विरुद्ध एखनो लड़ैत छथि। विश्वविद्यालय के छात्र संघ के प्रथम अध्यक्ष रहैत छात्र जन कल्याण के इतिहास रचलनि। यएह कारण छैक जे विश्वविद्यालय अपन स्वर्ण जयंती सम्मेलन मे जीवनकाल मे मात्र डा. बैजू बाबू के ''लाइफ टाइम अचीवमेंट'' अवार्ड सं सम्मानित केलक।

आंदोलन : दशा आ' दिशा- कोनो आंदोलन वा संगठन जौं पार्टी के पिछलग्गू भ जाइत अछि त ओहि आंदोलन के आ' संस्था के बेसी दिन चलेनाय मुश्किल अछि। सम्पूर्ण देश में एहेन संस्था देखल जा सकैत अछि, चाहे मिथिला मैथिली के संगठन कियैक नहिं हो। पैसाक चमक दमक, स्वार्थलोलुपता सं ओतप्रोत जनतांत्रिक आ' क्रांतिकारी गतिविधि के रस्ता के पोल ओहिना खुजि जाइत छैक जहिना रंगल सियारक।

पार्टी जकर आधार जाति, सम्प्रदाय, सत्ता सुख होइ, ओहेन पार्टी के समर्थन हरेक आंदोलन के तहस नहस करबा मे सक्षम होइत छैक कियैक त ओ आंदोलन पार्टी प्रायोजित रहैत छैक, जे आम जनता नहिं बुझि पबैत छैक। पार्टी अपन फायदा के बाद आंदोलन के दशा-दिशा बदेल दैत छैक, जाहि सं आंदोलन कमजोर होइत छैक। दिल्ली/एनसीआर मे अपन नाम आ' पद लेल सांगठनिक एकता के तार-तार होइत देखि सकैत छी कतेको मिथिला मैथिली संगठन। अपन नाम आ' फायदा लेल मुद्दा बदलैत रहैत अछि कतेको संगठन के, जहिना गिरगिट रंग बदलैत छैक। ई सब बात आंदोलन के दिशाहीन आ कमजोर करैत छैक पलटू राम बिहार मे एकेटा नहिं। मिथिला सेहो ठकहर आ' पलटू राम सं भरल-परल अछि। दोसर आंदोलन कोनो सवारी नै छियै जे सस्ता-सभिस्ता में भेटल ओही पर सवार भए गेलौं। एकर सब सं पैघ उदाहरण मो. जिन्ना के अपन नाम, पद, स्वार्थ के कारण सम्प्रदायिकता पर बनल पाकिस्तान के अझुका हालात अछि। तें कहबी छैक जे काठक हंडी बेर बेर नहिं चढ़त छैक। बारम्बार गाड़ी सवारी बदलला वा कतेको बेर यात्री बदलला संदन के विश्वस्यनीयता पर सवाल उठनाय स्वभाविक छैइ।

चौपाल

अखिल भारतीय मिथिला राज्य संघर्ष समिति के द्वारा दश साल मे कएल कार्य के कोनो उल्लेख नहि अछि अहांक लेख मे- मिथिला राज्य अभियान तकर भूत वर्तमान भविष्य बढ़ियां अछि मुदा एहि 10 बरख मे अखिल भारतीय मिथिला राज्य संघर्ष समिति के मिथिला मे 18 जिला में राज्य लेल रथ यात्रा, दिल्ली/ एनसीआर मे 100 सं उपर जागरूकता अभियान आ' 2004 के मिथिला राज्य आंदोलन जंतर मंतर पर 5 आदमी सं, तकरा 500 आदमी के जोडब जाहि मे तीन पीढ़ी के लोकक सहभागिता, मिथिला राज्य आंदोलन में महिला शक्ति के उपस्थिति एकटा पैघ उपलब्धि अछि. संगहिं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री के एखन तक 50 सं उपर ज्ञापन, पछिला दिल्ली नगर निगम मे 9 टा मैथिल पार्षद के अपन उपस्थिति आ सक्रियता सं मैथिली मे सपथ ग्रहण, पछिला 15 साल मे कांग्रेस से बीजेपी सरकार के सब मंत्री के पृथक मिथिला राज्य के ज्ञापन दय अखिल भारतीय मिथिला राज्य संघर्ष समिति के अंतर्राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रो. अमरेन्द्र कुमार झा आ राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं मीडिया प्रभारी इंजीनीयर शिशिर कुमार झा द्वारा जागरूकता बहुत राज्य अभियान के हिस्सा रहल अछि। एहि बात के नहिं उद्धृत केनाय अपना लेख में वर्तमान मिथिला राज्य संघर्ष के शून्यता आ' कमजोर केलियै अछि। एहि 10 सालक 30 बेरक धरना प्रदर्शन में जंतर मंतर पर डा. बैद्यनाथ चौधरी बैजू मात्र 3-4 बैर एला दिल्ली। हम दूनू आदमी एहि संघर्ष के मिथिला राज्य संघर्ष के रूप में स्थापित केलहुँ. एकर जिक्र जरूर होयबाक चाही छल अहाँ के लेख मे। बांकी अहाँ के लेख, अहाँ के मंतव्य। ■

आन्दोल

मिथिला राज्यक आर्थिक ओ सामाजिक औचित्य

✍ दिलीप कुमार झा

कोनो राज्यक निर्माण दू तीन कारण सं होइत अछि। पहिल कारण होइत अछि ओहि क्षेत्रक एकटा भौगोलिक पहचान जे चिन्हित राज्यक निवासीक भरन पोषण लेल आर्थिक आधार तैयार करैत अछि। दोसर कारण होइत अछि ओहि क्षेत्रक फराक सांस्कृतिक पहिचान से अनेक रुपमे परिभाषित होइत अछि जेना ओहि क्षेत्रक अपन भाषा-उपभाषा, अपन खान-पान आओर पहिराबा ओढ़ाबा, लोक संस्कृति जाहिमे गीत, नृत्य, रीति रेवाज आदि अबैत अछि। मिथिला प्राचीन समयसं एक राज्य के रूप मे विद्यमान रहल से मात्र सांस्कृतिक कारण सं नहि मुख्यरूपसं एकर कारण भौगोलिक ओ आर्थिक रहल। वर्तमान जे भारत देशक भौतिक स्वरुप अछि जकर परिकल्पना भारतक पहिल स्वतंत्रता संग्राम 1857क समयसं भेल। मिथिला ओतहुं विद्यमान छल। वर्तमान जे मिथिला राज्यक मांग अछि ओ लगभग सय वर्ष पुरान अछि। एखनुक मिथिला राज्यक मांगकें मिथिला राज्यक विरोधी तत्व द्वारा एहि आन्दोलनकें एकटा सांस्कृतिक ओ भाषायी आन्दोलन कहि कऽ खारिज करबाक षडयंत्र चलि रहल अछि एतबैक नहि किछु घोर मिथिला विरोधी तत्व सब यदा कदा एहि आन्दोलनकें जातीय आन्दोलन सेहो घोषित करबाक षडयंत्र सेहो करैत रहल अछि। जाहिसं हमरा सबकें साकांक्ष रहब जरूरी अछि।

मिथिला राज्य आन्दोलन विशुद्ध रूपसं आर्थिक ओ सामाजिक आन्दोलन छी मुदा ई निर्विवाद सत्य थिक जे एहि आर्थिक ओ सामाजिक आन्दोलनक रास्ता राजनीतिक गलियारासं होइते मिथिलाक जनपथपर पहुचत। से राजनीति करैवला हमर राजनीतिज्ञ सब बुझथि जे मिथिला हमर छी। आइ ने काल्हि ओ लोकनि मिथिला नेता कहौता। मिथिलाक गौरवशाली अतीत रहलैक अछि मुदा मिथिलाक अर्थ एकटा गौरवशाली सांस्कृतिक परंपरा वा एकटा उज्ज्वल अतीत मात्र नहि अछि। मिथिलाक अर्थ थिक वर्तमान दुरावस्थाकक बीच लल्ल भेल मिथिलाक जन-जनक आर्थिक, सामाजिक उन्नति ओ विकास लेल भारत संघक भीतर एकटा स्वतंत्र ईकाईक स्थापना। ई मात्र संयोग नहि जे देशक दस टा आर्थिक रूपसं विपन्न निर्धरनतम जिला दसो मिथिलेमे अछि। एकर अर्थ अछि मिथिला बहुत दिनसं अवडेरल अछि, विपन्न अछि। ओहिसं त्राण लेल चाही पृथक मिथिला राज्य। मिथिलाक लोकक राजनीतिक विलासिताक लेल नहि चाही मिथिला राज्य। एतुका लोकक नीज अस्तित्व बचेबाक लेल जरूरति अछि मिथिला राज्य। स्वतंत्रतासं पूर्ब मिथिला क्षेत्र जे चीनी, जूट, कागज, सूत, माछ, धान, मखानक उत्पादनमे अग्रगण्य छल से एहि पचहत्तरि बर्षमे कोना अधोगतिकें प्राप्त कऽ लेलक। एहि वस्तुक उत्पादनमे मिथिला आत्मनिर्भर तं रहबे करय दोसरो प्रान्तकें आपूर्ति करय। ओहि विलटल खेती ओ उद्योगक पुनर्स्थापनाक लेल चाही मिथिला राज्य। मिथिलाक अबैवला पीढ़ी अपने हाथे आब अपन आर्थिक ओ सामाजिक समस्याक उलझन सोझरिबय चाहैत अछि जे प्रसन्नताक बात अछि।नबतुरिया आगां आबि रहलए, जागि रहलए।कोनो समाजक नबतूर जखन जगैत अछि तखने कोनो परिवर्तन अबैत अछि से मिथिला राज्य टेमी जे सय बर्ष सं टिमटिमा रहल अछि आब लगैत अछि निर्णायक मोड़ पर पहुंचयवला अछि।

मिथिला लग एखनो जे आर्थिक संपदा बांचल छैक ओकर दोहनसं मिथिला आर्थिक रूपें आत्मनिर्भर भऽ सकैत अछि बस जरूरत छैक एकटा सक्षम नेतृत्वक जे एकटा ईमानदार प्रयाससं मिथिलाक विकास कऽसकय। से विकास किन्नहुं बिना पृथक मिथिलाक संभव नहि भऽ सकैत अछि। मिथिला नदीक प्रदेश अछि एखनो मिथिला लग व्यापक जल संपदा बांचल छैक। मिथिला सामान्यतः गंगा, गंडक नेपालक तराइ आ प्राचीनकालक कोसीक बीचक क्षेत्र मानल जाइत अछि से मात्र मिथिलामे इएह तीनटा नदी नहि अछि। मिथिलामे सातटा पैघ नदी अछि गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमती, अधवारा समूह, कमला, महानंदा, आ कोसी। एकर अतिरिक्त छोट पैघ आर कतेक नदी आओर धार बहैत अछि। मिथिला क्षेत्रमे एखनो दस हजारसं उपर पोखरि अछि।

मिथिलाक माटिक उर्वरता एखनो बांचल अछि। जे अत्यन्त संतोषक बात अछि। मात्र समुचित सिंचाइ प्रबंधनसं मिथिलाक बिरहल खेत आओर उपटल खेतीकें पलटायल जा

सकैत अछि। बिलटैत मिथिलाकें बचायल जा सकैत अछि।

आजुक मिथिला एक युवा मिथिला अछि। मिथिला परिक्षेत्रमे युवा लोकनिक जनसंख्या लगभग पैंतीस प्रतिशत अछि मुदा ओ युवा सब रोजी रोजगारक लेल मिथिलासं पलियन कऽ गेल छथि। ओ लोकनि भारतक विभिन्न प्रान्तमे बहुत अभिशप्त जीवन जीव रहल छथि। मिथिलाक युवा जनसंख्याक शक्तिक उपयोग भारत आओर भारतक बाहर दोसर-दोसर देश ओ प्रदेशक लेल भऽ रहल अछि। मिथिलामे उद्योग धंधाक विकास भेलासं मिथिलाक श्रम शक्ति ओ बौद्धिक संपदाक उपयोग अपना भूमिक समवर्धन ओ विकासक लेल कयल जा सकैत अछि। मिथिलाक युवासब जे विदेशमे विदेशी मुद्रा कमाकऽ लबैत छथि ओहि विदेशी मुद्राकक उपयोग भारतक दोसर प्रान्तमे कयल जाइत अछि जाहिसं मिथिलापुत्रक धनसं दोसर प्रान्तक विकास होइत अछि रोजगार उत्पन्न होइत अछि। जं मिथिला राज्यमे निवेशक उचित वातावरणक निर्माण हुए तं ओ सब विदेशी मुद्रा मिथिला क्षेत्रक विकासमे लगाओल जा सकैत अछि। एकटा अनुमानक मोताबिक मिथिला क्षेत्रक लोकप्रति बर्ष 12000 करोड़ टाका विदेशमे कमा कऽ भारतक दोसर प्रान्तमे प्रतिबर्ष निवेश करैत छथि। ओ सब टाका कें मिथिलाक विकास मे लगाओल जा सकैत अछि। तहिना प्रतिबर्ष प्रवासी मैथिल 3000 करोड़ टाका प्रतिबर्ष भारत पठबैत छथि ओहु मे सं किछु टाका हम मिथिलाक विकासक लेल उपयोग कऽ सकैत छी। मिथिलाक लोक 2000 करोड़ टाका प्रतिबर्ष बिहार सरकारकें कर के रूपमे भुगतान करैत छथि जाहिमे सं मात्र 700 टाका मिथिला क्षेत्रमे खर्च कयल जाइत अछि।

मिथिला राज्य भेलासं मिथिला क्षेत्रमे सरकारी नौकरीक सेहो अनेक संभावनाक द्वारि खूजत। मिथिला राज्य हैत तं विद्यालयमे मैथिली शिक्षा सेहो हैत। मैथिली शिक्षा हैत तं मैथिली भाषाक हजारों शिक्षकक बहाली हैत। एक अनुमान के मोताबिक बयालिस हजार प्राथमिक ओ मध्य विद्यालय तथा छः हजार माध्यमिक विद्यालय मिथिला क्षेत्रमे रहत। ओहिमे कम सं कम एक लाख मैथिली भाषाक शिक्षकक बहाली हैत। राज्यक अपन लोक सेवा ओयोग रहत जरूरत के अनुसार पद कें सृजन ओ नियुक्ति कयल जायत। एखन मिथिलाक लोकक उच्च न्यायालय ओ सचिवालय सेहो पटना अछि। मिथिलाक लोककें ओतय जेबा एबा मे परेसानी छनि ओहिमे व्यय कयल जायवला अत्यधिक राशिक बचत हैत जकर उपयोग मिथिलाक विकासक लेल कयल जा सकत।

पलायन सबसं अहम मुद्दा अछि मिथिलाक लेल। मिथिला आइ लेबर जोन बनिकऽ रहि गेल अछि सेहो केहन मजूर? अकुशल मजूर जकर श्रमक बजारमे उचित मूल्य नहि देल जाइछ। मिथिलाक लोक दू सांझक बुतात लेल रनेबने बौआ रहल अछि, टौआ रहल अछि। भारतक विभिन्न प्रान्तमे वा दोसरो देशमे बहुत खराब परिस्थिति मे मिथिलाक लोक काज करैत। देखिते हैब समाचारमे कतहुं ने कतहुं हर सप्ताह मिथिलाक मजूर मारल जाइये। से विभिन्न दुर्घटना मे तं सहजहि कश्मीरक आतंकवादी द्वारा मिथिलाक मजबूर लोक मारल जाइत अछि। एहि सबहक एकहिटा अछि समाधान मिथिलाक लोक अपना समस्याकें अपनहि गुनय। उपलब्ध संसाधनसं अपन क्षेत्रक विकास करय। कारण बिहारमे पचहत्तरि वर्ष रहिकऽ मिथिला देखलक मिथिलामे नब किछु तं नहिये भेल जे उद्योग धन्धा पहिनेसं छल ओहो सब चौपट भऽ गेल। तें आब बहुत जरूरी अछि मिथिला राज्य। मिथिला राज्य बनलासं शेष बचल बिहारक प्रगति सेहो तेज हेतै। छोट प्रान्त रहतै ओ सब अपना विकासपर नीकसं ध्यान देताह। एखन हुनका सबकें गंगाक उत्तर टपबामे बहुत दिक्कत होइत छनि।

तें ई कहब जे मिथिला राज्य आन्दोलन सांस्कृतिक ओ भाषायी आधारपर मात्र कयल जा रहल अछि से उचित नहि छैक। हमर मिथिलाक अपन विशिष्ट संस्कृति छैक। मैथिली भाषाक समृद्ध साहित्य छैक। मिथिलाक कला संस्कृति संसारक कोनो संस्कृतिसं कमजोर नहि अछि मुदा तहिना ईहो ओतबैक सत्य छैक जे प्राकृतिक रूपसं गंगा ओ हिमालयक बीचक क्षेत्र मिथिला कहबैत अछि जे मिथिलाक पृथक भोगोलिक आधार प्रदान करैत अछि। तहिना एहि भौगोलिक क्षेत्रक लोकक अपन फराक कृषि संस्कृति छैक। कृषि आओर कृषि आधारित अनेक तरहक उद्योगकें आधार बनाकऽ मिथिला आर्थिक विकासक पथपय आगां बढ़ि सकैत अछि। एतुका पलायनकें रोकल जा सकैत अछि। तें ई कहब जे मिथिला राज्य एतुका लोकक एकटा सांस्कृतिक जरूरत छैक से सत्य नहि अछि। मिथिला जरूरत छैक पलायन रोकबाक लेल, विलटल खेतीकें समृद्ध करबाक लेल, विपन्न शिक्षा व्यवस्थाकें सोझरयाबक लेल।



मिथिला राज्यक स्थापना : आन्दोलनक इतिहास आ वर्तमान स्थिति

✍ डॉ. सुरेश्वर झा

प्राचीन भारतक राजनीतिक मानचित्रपर मिथिला एक प्रसिद्ध राज्य छल, जतय युग-युगसँ गणतंत्र एवं राजतंत्रक उत्थान-पतन होइत रहल अछि। 25.28° आ' 26.52° उत्तर अक्षांस तथा 84.56° एवं 86.46° पूब आक्षंस धरि पसरल भू-भागकेँ मिथिला, तीरभुक्ति अथवा आधुनिक तिरहुत कहल जाइछ। एहि भू-खंडक उत्तरमे हिमालय किंवा नेपाल तराई, तथा पूब, दक्षिण एवं पश्चिममे क्रमशः कोशी, गंगा आ' गंडकी नदी बहैत अछि।

आधुनिक मिथिलाक क्षेत्र बिहार राज्यक उत्तरमे अवस्थित अछि, जकर चौहद्दीक सम्बन्धमे पौराणिक ग्रन्थ सबहिमे स्पष्ट उल्लेख कयल गेल छैक। पुराणक अनुसार मिथिला पूबमे कोशी नदीसँ लऽकऽ पश्चिममे गंडकी धरि तथा दक्षिणमे गंगानदीसँ लऽकऽ उत्तरमे हिमालयक जंगलधरि विस्तृत अछि। गंडकीक कातमे स्थित बनकेँ चम्पारण कहल जाइत छलैक। 'शाक्ति संगमतंत्र' मे कहल गेल अछि—

''गंडकी तीख्तम्य चम्पारण्यान्तरं शिवे।
विदेह भू समाख्याता वैरभुक्ताभि धतु सा।।''

गंडकी नदीक किनारसँ चम्पावन तक पसरल प्रदेशकेँ 'विदेह' कहल जाइत अछि एवं ओ तीरभुक्ति नामसँ सेहो प्रसिद्ध अछि। आधुनिक विद्वान लोकनिक अनुसार ई क्षेत्र पूबमे महानंदा नदीसँ पश्चिममे गंडकी तक अढ़ाई सय मील लम्बा तथा उत्तरमे हिमालयसँ दक्षिणमे गंगातक एक सय मील चाकर अछि। आधुनिक मिथिलामे 19 गोट जिला छैक, जकर जनसंख्या 1991 इ.क जनगणनाक आधारपर तीन करोड़ साठि लाखसँ किछु अधिक छल। मिथिलाक रकबा चौबीस हजार वर्गमीलसँ अधिक अछि। एकर सम्पूर्ण क्षेत्र सपाट मयदान अछि आओर सभठाम जमीनक ऊँचाई समुद्री सतहसँ 250 पफीटसँ कमे अछि। मात्र चम्पारण जिलाक पश्चिमोत्तरे सुमेश्वरक पहाड़ी क्षेत्र तीन सय चौंसठि मीलमे पसरल अछि।

ई क्षेत्र नदी एवं उपनदी सभसँ भरल-पूरल अछि। ई क्षेत्र गंडक, बागमती, कोशी, महानन्दा, कमला, त्रियुगा एवं अन्य छोट-छोट उपनदी सभक क्रीड़ास्थल एकटा अनुपम प्राकृतिक दृश्य उपस्थित करैत अछि। ई सभ नदी हिमालयसँ निकलि गंगानदीमे समा जाइत अछि। एहि नदी, उपनदी तथा लगभग छए हजार पोखरिक द्वारा मिथिला समस्त संसारमे कतहु दोसर ठाम प्राप्त नहि अछि। मगर एहि विपुल जलसंसाधनक संरक्षण ओ रख-रखावक अभावमे ओकर कोनो उचित उपयोग नहि होइछ। वर्षाक अनियमितता एवं बाढ़िक प्रकोपसँ कृषि आधरित ई क्षेत्रक आर्थिक दशा दिन-प्रतिदिन बिगड़ैत चल गेलैक, जाहिसँ समस्त भारतमे एकर स्थिति सभ ठामसँ खराब छैक। बिहारक वर्तमान सरकार भलेही दुनियाँमे अपन आर्थिक विकासक ढ़ोल पिटैत हो तथा एहि क्षेत्रक किछु तथाकथित नेता लोकनि वर्तमान मुख्यमंत्रीक पाछू-पाछू घुमैत ओकर गुणगान करैत होथु, एतय ओहिसँ कोनो पफर्क नहि पड़लैक अछि। एतयक लोक गरीबी रेखाक बहत नीचाँ रहि जीबाक लेल मजबूर भऽ गेल अछि।

एहि क्षेत्रक ऐतिहासिक प्राचीनता एहीसँ स्पष्ट अछि जे 'विदेहराज्य' क उल्लेख यजुर्वेद संहितामे पाओल जाइत अछि। विदेहक राजधनीक रूपमे मिथिलाक उल्लेख जातक जैन साहित्य, ब्राह्मण ग्रन्थ, पुराण तथा दुनू महाकाव्यमे प्राप्त अछि।

विदेह राजतंत्रक समाप्तिक बाद मिथिला लिच्छवी गणतंत्रमे बज्जी महासंघ अंतर्गत एक प्रमुख इकाईक रूपमे विद्यमान छल। लिच्छवीकेँ परास्त कऽ जखन अजात शत्रु अपन साम्राज्य बनौलक, ओहि समयमे मिथिला ओकर अंदर आबि गेल। बादमे जखन चन्द्रगुप्त प्रथमक विवाह लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवीसँ भेलैक तखन उत्तर भारमे गुप्तराज वंशक उदय भऽ गेलैक आ चन्द्रगुप्त द्वितीयक समयमे विदेह ओकर अंग बनि गेलैक।

विदेह राजतंत्र आ बज्जी महासंघक बिखड़लाक बाद मिथिलामे लगातार हारि एवं परतंत्रताक पराभव होइत रहलैक। लगभग चौदह सय वर्षक बाद एगारहय शताब्दीमे कर्णाटवंशी नान्य द्वारा एक बेर पुनः मिथिलामे सारभौम सत्ता सम्पन्न राज्यक निर्माण भेलैक। आ' मिथिला अपन प्राचीन स्थिति एवं गौरवकेँ प्राप्त कयलक। कर्णाट वंशक बाद एतय ओइनवार वंशक राज्य स्थापित भेल। एहि समयमे दिल्लीक सुल्तान तुगलक शाह छल आओर वैह मिथिलाक राज्य 1353इ. मे कामेवर ठाकुरक हाथमे सौंप देलकनि, जकरा ओइनवार वंशक राज्य कहल जाइत अछि।

ओकर बाद मिथिलामे छोट-पैघ जमींदार मुगलकालमे भेलाह, जे मुगल शासककेँ कर देब प्रारम्भ कयलनि। ओहीमे मुगल सम्राट अकबर द्वारा म.म. महेश ठाकुर केँ मिथिलाक ओहि सम्पूर्ण भू-भागक जमींदारी दऽ देलखीन, जे ओइनवारक समयके छलैक। एहि वंशकेँ खण्डवला वंश कहल गेलैक आ जे लोकनि राजा, महाराजा एवं महाराजाधिराज कहौलनि। एहि वंशक अंतिम महाराजा डॉ. कामेश्वर सिंह भेलाह, जिनका समयमे

जमींदारी प्रथा कांग्रेस सरकार द्वारा समाप्त कऽ देल गेलैक। अंग्रेजक आ आजाद भारतक सरकारमे मिथिला बिहारक एक गोट पिछड़ल आ तिरस्कृत भू-भाग भऽ कऽ रहि गेल।

स्वतंत्रता आन्दोलनमे मिथिलाक योगदान देशक कोनो दोसर भागसँ बहुत अधिक रहलैक। कांग्रेस एवं गांधीजीक नेतृत्वमे चलयवला 1917क चम्पारण सत्याग्रह, 1920-21क असहयोग आन्दोलन, 1931-1932क सविनय अवज्ञा आन्दोलन, 1940क व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा अंतमे 1942क 'भारत छोड़ो' क्रांतिमे मिथिलाक सहभागिता, सक्रियता, त्याग आ' बलिदान देशभरिमे सर्वोपरि रहल। किसान आन्दोलन हो अथवा क्रांतिकारी आन्दोलन, नेपालमे आजाद-दस्ताक संगठन हो अथवा खादी-ग्रामोद्योग एव अन्य प्रकारक रचनात्मक कार्यक्रम सभमे मिथिलाक इतिहास स्वर्णाक्षरमे लिखल अछि।

मुदा कांग्रेस स्वतंत्रता-प्राप्तिक बाद भाषाधर प्रान्तक निर्माणक अवसरपर मिथिलाकेँ प्रान्त बनेबापर कोनो रुचि नहि देखौलक। एकर प्रमुख दू गोट कारण छल—एकतँ एहि क्षेत्रक लोकक शांतिपूर्ण साधरण जीवन तथा उच्चविचार आ' दोसर जे एहिठाम कोनो राष्ट्रीयस्तरक नेताक अभाव। बिहारमे जे कोनो नेता छलाह ओ सभ मैथिली-भाषा एवं मिथिलाक विरुद्ध रहि एहि भू-भागकेँ उपेक्षित रखलनि। फलस्वरूप ई प्राचीन एवं गौरवशाली क्षेत्र आजुक एकैसम शदीमे सेहो तिरस्कृत आ आर्थिक रूपसँ पिछड़ल भारतमे सभ क्षेत्रमे पाछू भऽ गेल अछि। देशक कोनो राष्ट्रीय राजनीतिक दल अथवा एहिठामक क्षेत्रीय पार्टी मिथिला राज्यक निर्माणक प्रति अपन सहानुभूति नहि देखबैत अछि।

आन्दोलक इतिहास :

मुदा, मिथिला राज्यक निर्माणक लेल मांग आ आन्दोलनक इतिहास नमहर अछि। सर्वप्रथम 1940 इ.मे दरभंगामे मिथिला राज्यक निर्माणक लेल मैथिल महासभा एक गोट प्रस्ताव पास कयने छल। एहि संस्थाक अध्यक्ष स्वयं डॉ. सर कामेश्वर सिंह, दरभंगा महाराज रहथि। एहि मांगकेँ ओहि संस्थाक विभिन्न बैसार तथा सम्मेलनमे दरभंगा महाराज द्वारा उठाओल जाइत रहल एवं प्रस्ताव पास होइत रहल। मैथिल महासभाक पैंतीसम, सैंतीसम तथा अठतीसम सम्मेलनमे, क्रमशः राजनगरमे 1946मे, दरभंगामे 1948 मे आओर मधुबनीमे 1949 मे दरभंगाक महाराज अपन अध्यक्षीय भाषणमे मिथिला राज्यक प्रश्न उठौलनि।

भारतक स्वतंत्रताक प्रारम्भिक समयमे मिथिलाक अलग राज्यक निर्माणक लेल आन्दोलन होइत रहल। आशा कयल जाइत छल जे राज्य पुनर्गठन आयोगक निर्माण भेलापर मिथिलाक प्रश्नकेँ ध्यानमे राखल जयतैक। एहि सम्बन्धमे तत्कालीन 'मिथिला मिहिर' मे लगातार आलेख प्रकाशित होइत छल। एहि लेल 17 जुलाइ, 1947; 9 अक्टूबर, 1947; 28 फरवरी 1948; 20 अप्रैल 1948; 19 फरवरी, 1949; 20 जनवरी, 1951; 3 जनवरी 1953; 1 अगस्त, 1953; 19 सितम्बर, 1953; 12 दिसम्बर, 1953; 23 जनवरी, 1954; 6 पफरवरी, 1954; 27 फरवरी, 1954 तथा 6 मार्च, 1954क मिथला-मिहिरकेँ देखल जा सकैत अछि। ओहि समयमे 'मिथिला मिहिर' दरभंगासँ प्रकाशित होइत छल।

डॉ. लक्ष्मण झा 1952 क प्रथम आम चुनावमे सोशलिस्ट पार्टीक लोकसभा उम्मीदवारक रूपमे हारि गेलाह आ दरभंगाकेँ अपन हेडक्वाटर बनौलनि तथा मिथिला राज्यक निर्माणक लेल कतोक पुस्तक ओ पाम्पलेट लिखलनि। ओ अपन पोथी 'मिथिला : ए यूनियन रिपब्लिक' दरभंगा, 1952; पृ. 153 पर लिखलनि-

"Separation of Mithila from the heterogenousAnd unwildy state of Bihar and its constitution into a state is the only polution to its pressing problems of food, health, hansing, education and communication."

डॉ. लक्ष्मण आ एहि पोथीमे संसारक विभिन्न राज्यक आ भारतक अन्य प्रान्तक तुलना मिथिलाक संग करैत लिखैत छथि.....

"Taken as a linguistic, geographical and cultural unit, or considered on the extent of its territory or the stretch of its population, Mithila has a claim to statehood."

एहि बीचमे संविधन सभाक सचिवकेँ सेहो मिथिला राज्यक निर्माणक लेल एक गोट स्मारपत्र देल गेलैक। एकर सूचना कुमार गंगा नन्द सिंहक 'सेपरेट पेपर्स', 1947 सँ प्राप्त होइत अछि।

अखिल भारतीय मैथिल महासभा राज्य पुनर्गठन आयोगकेँ एक स्मारपत्र 1953इ.मे देलकैक। एहि सभ क्रियाकलापसँ प्रभावित भऽ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद् 1953 इ.मे मिथिलाक अलग राज्यक निर्माणक लेल मांग प्रस्तुत कयलक। दोसर फ्रंट विधन सभामे भावनापूर्ण एवं लड़ाकू भाषण सभ होइत रहल।

एहि सभक ऊपर महाराज दरभंगाक एक सम्बन्धी तथा बिहार कांग्रेसक प्रभावकारी नेता मिथिला केशरी जानकी नन्दनसिंह 1954 इ.मे राज्य पुनर्गठन आयोगक समक्ष मिथिला राज्यक स्थापनाक लेल एक गोट प्रभावकारी आ औचित्यपूर्ण स्मारपत्र प्रस्तुत कयलनि। एहि सम्बन्धमे कांग्रेसक कल्याणी (कलकत्ता) कांग्रेस अधिवेशनमे 1954 इ.मे जानकी नन्दन सिंहक नेतृत्वमे

एक प्रतिनिधि मंडल स्मारपत्रक संग कांग्रेसक आलाकमान तथा खासकऽ ओकर नेता पं. जवाहरलालकेँ देबाक लेल दरभंगासँ 65 अन्य कांग्रेसी नेता लोकनिक संग गेलैक। ओहि समयमे जानकी बाबू बिहार विधन सभाक प्रभावकारी सदस्यक संग-संग दरभंगा डिस्ट्रिक्ट बोर्डक चेयरमैन छलाह। परञ्च हिनका सभ गोटेकेँ बिहार सरकारक इशारापर आसनसोलमे बंगालक सशस्त्र बल द्वारा पकड़ि लेल गेलनि तथा जहलमे राखि देल गेलनि। हिनका लोकनिकेँ 9 बजे रातिमे न्यायालयमे प्रस्तुत कयल गेलनि आ कोनो कारण नहि देखि हिनका सबकेँ जमानत पर छोड़ि देल गेलनि। मुदा, शर्त लगाओल गेलनि जे ई सभ कल्याणी नहि जा सकैत छथि। मुदा एहिमे सँ किछु गोटे जानकी बाबूक संग कारसँ आ बाँकी गोटे ट्रेनसँ कलकत्ताक लेल विदा भऽ गेलाह।

22 जनवरी, 1954 इ.केँ आसनसोलमे हिनका लोकनिक गिरतारीक बाद बंगालक मुख्यमंत्री डॉ. बी. सी. राय तथा प्रधनमंत्री पं. नेहरूकेँ तार द्वारा एक सूचना देल गेलनि। ओ लोकनि तखन कल्याणी (कलकत्ता)मे रहथि। बी. सी. राय एहि सूचनासँ अचंभित भऽ गेलाह आओर तुरंत हिनका लोकनिकेँ मुक्त करबाक आदेश देलथिन।

एकर बाद तुरंत कलकत्तामे 23 जनवरी, 1954 केँ पं. नागेश्वर मिश्रक अध्यक्षतामे एक सभा भेल जाहिमे मिथिला राज्यक स्थापनाक सम्बन्धमे मांग दोहरायल गेलैक। जानकी नन्दन सिंह तथा अन्य कांग्रेस जनक मुक्त भेलाक बाद कलकत्ताक 'गिरीश पार्क' मे 26 जनवरी 1954 केँ एक महती सभा जानकी नन्दन सिंहक अध्यक्षतामे भेलैक, जाहिमे मिथिला राज्यक निर्माणक सम्बन्धमे मांग कयल गेलैक। जखन 28 जनवरी केँ प्रातःकाल जानकी बाबू कलकत्तासँ पटना जंक्सनपर ट्रेनसँ पहुँचलाह, तँ हुनका स्वागतमे पटनामे रहयवला मिथिला क्षेत्रक अपार जनसंख्या, जाहिमे विद्यालयक प्राध्यापक, ओकील, छात्र आ व्यापार कयनिहार शामिल छलाह, उपस्थित रहथि। मिथिला क्षेत्रमे सेहो प्रदर्शन आ जनसभाक आयोजन व्यापक आधर पर कयल गेल। दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर एवं मुजफरपुरक अधिवक्ता लोकनि बिहार सरकारक मिथिला राज्यक विरोधक कार्यकेँ अत्यंत अनुचित एवं जनविरोधी कहि सभा कयलनि तथा वक्तव्य देलनि। सम्पूर्ण मिथिलांचल मिथिला राज्यक लेल मानू एकजुट भऽ जागि गेल छल।

बीसम शताब्दीक पाचम दशकमे मिथिला राज्यक निर्माणक लेल एक दिस जानकी नन्दन सिंहक नेतृत्वमे जन आंदोलन होइत रहल। हुनका विरोधमे श्रीकृष्ण सिंहक नेतृत्वमे कांग्रेस अनुशासनात्मक कारवाई केलक। जानकी बाबू 1956क अंतमे कांग्रेससँ हटि गेलाह आ ओहि वर्ष 31 दिसम्बरकेँ बारह बजे रातिक बाद 1857क क्रांतिक स्मरण करैत गांधी मयदानमे क्रांतिक बिगुल फुकलनि। एहि पंक्तिक लेखक ओहिठाम जानकी बाबूक बगल बैसल रहथि। ओ रामगढ़क राजा कामाख्या नारायण सिंहक नव.निर्मित जनता पार्टीमे सम्मिलित भऽ गेलाह। गांधी मयदानक लगेमे स्टेट बैंकक बगलमे जनता दलक कार्यालय रहैक। जानकी बाबू 1952 इ.क आम चुनावमे दरभंगा लोक सभा क्षेत्रसँ जनता पार्टीक टिकट आ 'घोड़ा' चुनाव चिह्नक संग चुनाव लड़लाह, जाहिमे ओ कांग्रेसक उम्मीदवारसँ हारि गेलाह। बादमे जानकी बाबू डी. संनिबैयाक अध्यक्षतावला कांग्रेसक समयमे पुनः सम्मिलित भेल रहथि, मुदा ओहि दलमे ओ तिरष्कृते रहि गेलाह।

दोसर दिस ओही कालखंडमे डा. लक्ष्मण झा मिथिला. राज्यक निर्माणक लेल एक सिद्धांतवादी (Ideologue) क रूपमे अपन बुद्धि एवं विद्वताक संग कार्य करैत रहलाह। ओ 1951 सँ 1956 इ. धरि अंगरेजीमे कतोक पोथी लिखलनि, जाहिमे प्रकाशित रूपमे हुनक (i) 'मिथिला ए यूनियन रिपब्लिक' (Mithila :A Union Republic) (1951), (ii) 'मिथिला इन इंडिया' (Mithila In India) (1953), (iii) 'मिथिला ए सोभेरेन रिपब्लिक' (Mithila :A Sovereign Republic) (1954) (iv) 'मिथिला विल राइज' (Mithila will Rise) (1955); (v) 'द नारदर्न बोर्डर' (The Northern Border) (1956) तथा (vi) 'द भाटेर्स इन मिथिला' (The Voters In Mithila) (1956) विशेष रुपसँ उल्लेखनीय छनि।

डॉ. लक्ष्मण झा मिथिलाक लेल आन्दोलन चलेबाक हेतु 'मिथिला मण्डल' नामक एक गोट संस्था बनौने छलाह। उपर्युक्त सभ पोथीक प्रकाशन ओही संस्थाक द्वारा भेल अछि। लक्ष्मण झा मिथिलाक उत्तरी सीमाकेँ नहि मानैत छलाह। नेपाल तराईक सातोटा जिला मिथिलाक सीमाक अंतर्गत छल। ई तँ गोरखा शासन आ भारतक अंग्रेजी कम्पनी सरकारक द्वारा सुगौली संधिमे हमरा लोकनिक एतेकटा क्षेत्र नेपालमे चल गेल। डॉ. झा मिथिला (भारत) ओ नेपालक बीचक बोर्डरपर बनाओल गेल पाया सभकेँ तोड़बाक आन्दोलन सेहो कयलनि।

ई मिथिला राज्यक निर्माणक लेल कयल गेल आन्दोलनक प्रथम चरण छल। कोनो संघर्ष आ खासकऽ जन-आन्दोलन अधिक समय धरि नहि चलि सकैत छैक। गांधीजी स्वतंत्रताक लेल कयल गेल दू गोट आंदोलनक बीचमे आन्दोलनकेँ बन्द कऽ रचनात्मक कार्य दिस लोककेँ आकृष्ट कऽ दैत छलथिन।

मिथिला राज्यक लेल आन्दोलन जानकी बाबू तथा लक्ष्मण झा अधिक दिन धरि नहि चला सकलाह।

आंध्रप्रान्तक निर्माण पोट्टी श्री रामुपुलुक अंठावन दिनक अनशनक बाद 1952 इ.मे भेलैक। श्री रामुलुक आत्महुति मानवीय विद्रोहक ज्वलंत प्रतीक छल। मिथिला राज्यक प्राप्तिक लेल हुनका सन बलिदानी नेता सेहो एहिठाम नहि भेलाह।

ओकर बाद बीसम शताब्दीमे छठम दशक बादसँ लऽ

कऽ ओहि शताब्दीक अन्तधरि हमरा लोकनि मैथिली भाषाक उत्थानक आ मिथिलाक छिट-पुट संघर्ष करैत रहलहुँ। ओ सभ छल साहित्य अकादेमीमे मैथिली.भाषाक मान्यता, दरभंगामे रेडियो स्टेशनक स्थापना, मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना, समस्तीपुर-दरभंगाक बीच रेललाइनक अमान परिवर्तनक लेल संघर्ष, मिथिलामे प्राइमरी शिक्षा मातृभाषामे हुए तकर प्रयास, आ सभसँ अन्तमे भारतीय संविधनक अष्टम अनुसूचीमे मैथिली भाषाके सम्मिलित करब। एहिमे बहुतोकेँ हमरा लोकनि प्राप्त कयलहुँ आ किछु महत्वपूर्ण कार्य नहि भऽ सकल अछि। प्राथमिक शिक्षाक लेल मैथिली भाषाक प्रारंभ नहि भेल अछि, यद्यपि पटना उच्च न्यायालयमे हमरा लोकनि केश जीत गेलछी, जे तत्कालीन लालू प्रसाद यादवक बिहार सरकार द्वारा सुप्रीम कोर्टमे अपील भेलैक आ ओतय लम्बित अछि। एकैसम शताब्दीमे गत दस-बारह वर्षसँ मिथिला राज्यक लेल पुनः आन्दोलन तीव्र गति पकड़लक। ओहिमे सभसँ प्रमुख अछि पं. ताराकांत झा द्वारा 5 अगस्त, 2000 केँ 'मिथिला राज्य अभियान'क स्थापना, आओर ओकरा माध्यमसँ मिथिला राज्यक निर्माणक लेल संघर्षक प्रारम्भ। पं. ताराकांत झा ओहि संस्थाक संरक्षक भेलाह आ दरभंगाक प्रसिद्ध चिकितसक डॉ. मोहन मिश्रा ओकर अध्यक्ष चुनल गेलाह। बादमे डॉ. सुरेश्वर झा ओहि संस्थाक कार्यकारी अध्यक्ष निर्वाचित भेलाह तथा प्रो. चन्द्रकांत मिश्र सचिव भेलाह।

ओहि समयमे देशमे किछु नव राज्यक गठनक सम्बन्धमे चर्चा बहुत जोरसँ होइत छल। ओहिमे आंध्र मे तेलंगना, महाराष्ट्रमे विदर्भ, उत्तर प्रदेशमे हरित प्रदेश तथा मध्यप्रदेशमे छत्तीसगढ़क चर्चा अधिक छल। एकरा सभक संग मिथिला राज्यक स्थापनाक मांग होइत रहल। एहिमे 2000इ.मे झारखण्ड, छत्तीसगढ़ एवं उत्तरांचल राज्यक स्थापना भेलैक। झारखंड राज्य निर्माणक लेलतँ बहुत दिनसँ आन्दोलन चलि रहल छल। मुदा, छत्तीसगढ़ एवं उत्तरांचल तँ बिना कोनो संघर्ष आ व्यापक मांगकेँ गठित भऽ गेल। कहल गेलैक जे एहि तीनू राज्यक स्थापनाक आधर क्षेत्रक पिछड़ापन, प्रशासनिक सुविध तथा विकासक संभावनाकेँ ध्यानमे राखि कयल गेल। आब भारत सरकार राज्यक निर्माण भाषा पर आधारित नहि, बल्कि क्षेत्रक आर्थिक विकास तथा प्रशासनिक सुविधक लेल करत। ई तीनू राज्य मिथिला क्षेत्रसँ छोट अछि, मुदा ओकर प्रतिव्यक्ति आमदनी मिथिलासँ अध्कि छलैक। मिथिला आर्थिक रूपमे एहि सभ क्षेत्रसँ पिछड़ल ओ तिरस्कृत रहल अछि। एहिठामक श्रमिक वर्ग बाहर जाय रोजी.रोटी प्राप्त करबाक लेल मजबूर भऽ गेल अछि। भारत सरकार ने मिथिला राज्यक स्थापना भाषा पर आधारित हेबाक लेल कयलक आने एकर विकासक नाम पर।

मिथि राज्य अभियान अपन सम्मेलन मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रमे आयोजित करैत रहल तथा मिथिला भरिमे भ्रमण कऽ प्रचार-प्रसार कऽ मिथिला राज्यक मांग करैत। एहि सम्बन्धमे देवघर, मुजफरपुर, बेगूसराय आदि स्थानमे आयोजित सम्मेलन उल्लेखनीय अछि। अभियानकेँ बाँका बी.जे.पी.क नेता श्री जर्नादन यादवक सदत सक्रिय सहयोग भेटैत रहल। जखन कहियो अभियान दिससँ दरभंगा कमीश्नरकेँ स्मारपत्र देल गेलनि ओहिमे श्री यादव उपस्थित होइत रहलाह अछि। ओ लोकसभा तथा राज्य सभाक सदस्य तथा बिहारक कबीना स्तरक मंत्री रहि चुकल छथि। एमहर श्री वैद्यनाथ चौधरी बैजू अपन संस्था 'विद्यापति सेवा संस्थान'क माध्यमसँ मिथिला एवं मिथिलासँ बाहरो मिथिला राज्यक स्थापनाक लेल पैघ-पैघ सभा आ प्रदर्शन करैत रहलाह अछि। जखन-तखन नई दिल्लीमे धरना आ पार्ल्यामेंटक समक्ष 'डिमोंस्टेशन' आयोजित करैत छथि। देशक विभिन्न भागमे अंतर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक मंचसँ मिथिला राज्यक अलख जगबैत छथि। बैजू जी एहि आन्दोलनक संग अपनाकेँ ततेक आत्मसात् कऽ लेलनि आरो जे बैजू आ मिथिला राज्यक आन्दोलन एक सिक्काक दू गोट रुख जकाँ बनि गेल छथि।

दोसर, प्रो उदय शंकर मिश्र सेहो अपन संस्था 'मिथिला राज्य संघर्ष समिति'क माध्यमसँ मिथिला राज्यक लेल आन्दोलन बहुत सक्रियतासँ चला रहल छथि। प्रो. उदय हमरा सबहक संग 'मिथिला राज्य अभियान' सँ सेहो जुड़ल छथि। तेसर संस्था अछि दिल्लीमे स्थापित 'अखिल भारतीय मिथिला पार्टी' जे राजनीतिक दलक पैटर्न पर एहि संस्था केँ श्री रत्नेश्वर झा चला रहल छथि। रत्नेश्वर बाबू एहि संस्थाक नामपर चुनाव सेहो लड़य चाहैत छथि, बिहारोमे आ लोकसभामे।

एक अन्य संस्था हेमनिमे जागल अछि, जकर नाम छैक मिथिला राज्य निर्माण सेना। एकरो नेता श्री श्यामसुन्दर झा दिल्लीमे संस्था बनौने छथि आ किछु दिनसँ मिथिलामे राज्यक स्थापनाक लेल प्रचार-प्रसार करबाक हेतु 'रथ यात्रा'क आयोजन कऽ रहल छथि। ई सभ संस्था फराक-फराक कार्य कऽ रहल छथि—मुदा उद्देश्य आ कार्यक्रम एके समान छैक। किएक ने ई सभ गोटे एक ठाम बैसि एकटा सशक्त प्लेटफार्म आ संस्थाक निर्माण कऽ कार्य करैत छथि। ओ जे कहावत अपना ओहिठाम छैक जे तीन 'तिरहुतिया तेरहपाक' से चरितार्थ भऽ रहल अछि।

पं. ताराकान्त झा अपन सशक्त नेतृत्वमे 'मिथिला राज्य अभियान' चलौलनि। मिथिला राज्य अभियानक लेल भ्रमण कार्यक्रम सेहो चलल। गत 2007 इ.मे 15 दिसम्बरसँ 23 दिसम्बर धरि एहि भ्रमणक कार्यक्रम बेगूसराय, खगड़िया, कटिहार, पूर्णियाँ, किशनगंज, अररिया, फारबिसगंज, आलमनगर, मधेपुरा, सहरसा आ सुपौलमे ई अभियान प्रभावी ढंगसँ चलल छल। ओहिसँ पूर्वो मिथिला राज्य अभियान सीतामढ़ीसँ आरंभ कऽ

मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रमे भ्रमण, सभा, धरना आ प्रदर्शन आयोजित कयने छल। मुदा पं. ताराकान्त झा कें बिहार विधन परिषद्‌क अध्यक्ष बनलाक बाद आओर ओहि पदसँ मुक्त भेलाक उपरान्त बीमार भऽ गेलाक कारणे ओ एहि कार्यमे सक्रिय नहि रहि सकलाह। फलस्वरूप 'मिथिला राज्य अभियान'क कार्य ठमकि गेल छैक।

मधुबनी जिलान्तर्गत समौल गामक तथा राँचीमे रहैत डॉ. ध्नाकर ठाकुर सेहो 'अंतर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद' नामक संस्था बनौने छथि, मैथिलीक लेल अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन प्रत्येक वर्ष छोट आधारपर करैत रहैत छथि आ ओहि अवसरपर मिथिला राज्यक मांगकें उठबैत रहैत छथि। एहि संस्थाक दोसर पदाधिकारी छथि जयनगर कॉलेजक पूर्व प्राध्यापक प्रो. कमलकान्त आ बीचमे ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालयमे इतिहास विभागक वरिष्ट प्राध्यापक प्रो. धर्मेन्द्र कुमर गत 1984 इ.मे अपन पैत्रिक गाम पुतई (दरभंगा जिला) मे एकटा वृहत् ओ व्यापक स्तरपर अखिल मिथिला जन सम्मेलन त्रिदिवसीय 29-30 आओर 31 मईकें आयोजित कयलनि। सम्मेलनमे मैथिली साहित्यकार आ मिथिला क्षेत्रक राजनेता लोकनि उपस्थित छलाह। स्व. भोगेन्द्र झा, रमाकान्त झा तथा अन्य राजनीतिक नेता लोकनिक संग मैथिली साहित्यकारमे काञ्चीनाथ झा 'किरण', ब्रजकिशोर 'मणिपद्म', आओर प्रो. मायानन्द मिश्रक नाम उल्लेखनीय अछि। अन्य साहित्यकार लोकनिक नाम स्मरण नहि अछि। ओहि सम्मेलनक उद्‌घाटन सभ प्रथम दिनमे एहि पंक्तिक लेखकक अध्यक्षतामे भेलैक। मायानन्दजी स्वयं सभाक संचालन अपन अनुपम शैलीमे करैत रहथि। दोसर दिन काञ्जीनाथ झा किरणक अध्यक्षामे मिथिला राज्यक निर्माणक लेल बाजाप्ता प्रस्ताव डॉ. सुरेश्वर झा प्रस्तुत कयलनि आ ओकरा सर्वसम्मतिसँ पास कयल गेलैक। कम्युनिस्ट पार्टीक नेता भोगेन्द्र झा उपस्थित छलाह। ई मिथिला राज्यक स्थापनाक लेल बीसम शताब्दीक पाँचम दशकक बाद सभसँ महत्वपूर्ण प्रस्ताव छल। एहि सम्मेलनकें सपफल बनेबाक सभटा श्रेय प्रो. ध्र्मेन्द्र कुमर आ स्व. कालीकान्त झाकें छलनि।

इतिहास, बौद्धिक क्षमता, क्षेत्र, आर्थिक पिछड़लपन आदि सभ स्तर पर आइ भारतीय मानचित्र पर मिथिलाक अलग राज्यक निर्माण अत्यन्त आवश्यक छैक। कखनहुँकें एकर आर्थिक व्यवहार्यता आ अव्यवहार्यता (ViabilityAnd non-viability) पर प्रश्न उठाओल जाइत रहलैक। मिथिलाक पास प्रायः विश्वभरिमे सभसँ अधिक कृषिक लेल उपयुक्त भूमि छैक। जल संसाधनक अपार भंडार एतय प्राप्त छैक। एतय हरितक्रांति, स्वेतक्रांति आ भूरा क्रांति (Brown Revolution) अनबाक लेल असीम क्षमता प्राप्त छैक। फलक उत्पादन आ ओहिसँ अनेक वस्तुक उत्पादनमे दुनियाँ भरिमे एहि क्षेत्रक क्षमता सर्वोपरि छैक। आवश्यकता छैक केवल ओकर विकासक कार्य करबाक, से अलग राज्य बनेबासँ हेतैक। मिथिलामे जतेक नदी, उप-नदी आ पोखरिक संख्या अछि जे एहिठामक मत्स्य पालनक विकास मात्रसँ एतयक आर्थिक स्थिति ठोस भऽ जयतैक। यदि न्यूजीलैंडक अर्थव्यवस्था डेयरी, दुग्ध उत्पादन पर सम्पूर्ण रूपसँ आधरित छैक, तँ मिथिलामे पिफसरी; मत्स्य पालनद्धसँ आर्थिक स्थिति सुदृढ़ भऽ जयतैक। मधुमक्खीक पालन, मध्ुक उत्पादन इटालियन मधुमक्खी सँ ततेक हेतैक जे एहिठामक प्रत्येक व्यक्तिक आय देशभरिमे सभ क्षेत्रक लोकसँ अधिक भऽ जयतैक। दुग्ध उत्पादन, मधु उत्पादन, माछ आ मखान तथा पफलक उत्पादनमे विकास मार्गक अवलम्बनसँ मिथिला दुनियाँ भरिमे अग्रगामी भऽ जायत।

मुदा, विकासक एहि सभ संभावनापर राज्य आ केन्द्र सरकारक ध्यान मुगलकालसँ लऽ कऽ कांग्रेस शासनक समय धरि कहियो नहि गेलैक आ ई क्षेत्र पिछड़ल रहि गेल अछि।

मिथिला राज्यक निर्माण सम्बन्धी आन्दोलनमे दू गोट एहेन कारण अछि, जाहिसँ ओ प्रगति नहि कऽ रहल अछि। एकतँ एहिठाम केओ राष्ट्रीय स्तरक राजनेता नहि छथि जे एहि प्रश्नकें प्रभावकारी ढंगसँ उठयताह आ भारत सरकारक समक्ष रखताह। राज्यक निर्माण एक विशुद्ध राजनीतिक प्रश्न छैक। जाबत धरि मिथिला क्षेत्रक समस्त राजनीतिक दल, गुट आओर सदस्य कार्यकर्त्ता एकर समर्थनमे आगू नहि औताह ताबत मिथिला राज्यक निर्माण असंभव अछि। आंदोलन चलेबाक लेल जाहि प्रकारक नेताक आवश्यकता छैक से हमरा लोकनिकें प्राप्त नहि अछि। एखन जे छोट-छोट नेता एहि कार्यमे लागल छथि, तिनकर आवाज सुननिहार कतेक गोटे देशमे अछि। ई सभटा अरण्यरोदन आ हास्यास्पद जकाँ लगैत अछि।

दोसर कारण अछि जे हमरा लोकनि 'स्पेड वर्क' याने खेतकें कोदारिसँ तामबाक कार्य नहि करैत छी। जोतल-कोड़ल आ चौकिआयल खेतमे बीया बाउग कऽ झट-पटमे फसिल काटि लेमय चाहैत छी। बहुत थोड़ वर्गक लोक मैथिली आ मिथिलाकें आइयो अपन बुझैत अछि। ओकरा सभ कें बुझेबाक तथा ओकरा सभक बीचमे प्रचार-प्रसार करबाक कार्य के करत? हमरा लोकनि छिट-फुट ढंगसँ किछु कऽ लैत छी आ अखबार एवं एलेक्ट्रॉनिक मीडियामे समाचार आ अपन-अपन पफोटो छपेबापर ध्यान रखैत छी। पाँच सालतँ किछु कयलनि नहि, आब 2014कें लगमे देखैत एहिठामक सांसदक दबल आवाज मिथिला राज्यक गत करैत छथि। ठीकसँ बजताह तँ हुनक दल हुनका निष्कासित कऽ देतनि। एहि दू गोट कारणसँ मिथिला राज्यक अभियान आगाँ नहि बढ़ि रहल अछि।



पृथक् मिथिला राज्य आन्दोलनमे मैथिल मातृशक्तिक योगदान

☞ डॉ. बी. आर्य

मैथिल मातृशक्तिक आविर्भाव सृष्टिक उद्‌भव एवं विकासक संग भेल। सृष्टिकर्त्ता प्रथमतः अद्‌यास्वरूपा नारीक स्वरूपक रचना केलनि। तदुपरान्त निरंजनक रचना भेलनि। क्रमशः सृष्टिकर्ता निर्माणक क्रममे चौंसठि कोटि विभिन्न प्रकारक जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, कीड़ा-मकोड़ा एवं छोट-छोट किटाणुक रचनाकऽ सृष्टि, बांचल रहैए, आ निरन्तरताक संतुलन बनल रहैए तकर इन्तजाम केलनि। तकर प्रमाण वेद-पुराणमे वर्णित एवं निर्णीत सबूत दृष्टिगोचर होइछ।

तेँ कहबाक अभिप्राय जे सृजनहार सर्वप्रथम मातृशक्ति स्वरूपा नारीए केँ बनौलनि आ तखन निरंजनजीकेँ फरुष रूपमे प्रतिष्ठापित केलनि। तदुपरान्त नारीक रूपमे आद्‌या आ फरुषक रूपमे निरंजनसँ मानवक आविर्भाव भेल।

मातृशक्तिक परिचय आदिकालहिसँ वेद, फराण वर्णित अख्याणसँ प्राप्त होइछ। पूर्व वैदिकालमे नारीक रूपमे तीन मातृ शक्तिक अवतार भेल। जेना—लक्ष्मी, सरस्वती एवं सती। आ फरुषरूपमे अवतार लेलनि विष्णु, ब्रह्मा एवं महेश आ त्रिमूर्तिक त्रेवेणी संगम पर सभ्यता एवं संस्कृतिक उद्‌भव आ विकास प्रारम्भ भेल।

विकासक क्रममे मानवक व्यक्तित्व एवं कृतित्वक माध्यमे नीक, अध्लाहक परिचय भेटल। कुकृत्यक स्वरूप उदय भेल मधुकैटभ, शुभनिशुंभ आ महिषासुरकेँ, जकर हत्या भेल मैथिल नारीक रूपमे अवतीर्ण मातृ शक्तिस्वरूपमे काली, दुर्गा द्वारा युद्धभूमिमे आ अपन परिचय मातृशक्तिकरणक रूपमे प्रतिष्ठापित केलनि।

द्वापरमे सीताक अविर्भाव भेलनि एवं रावण बद्धमे अहम भूमिकाक प्रतिपादन केलनि। बुद्धि-विवेकसँ असुर नृप विरोध्क हाथसँ राम आ लक्ष्मणक हत्याक निवारण केलनि। ई मैथिल मातृशक्तिकरणक उदाहरण अछि।

दोसर उदाहरण सीताक छनि—"लंका प्रवासक अवस्थामे रावण सन कठोर राक्षसक स्वर्णगढ़लंकामे बुद्धिसँ अपन सतीत्वक रक्षा केलीह। ई मैथिलमातृ सशक्तिकरणक परिणाम थिक।" त्रेतामे अज्ञातवासक समय विराट राजाक सेनापति बलशाली, वीर फरुष कीचकसँ द्रोपदी कीचकक महलसँ आसव ग्रहण कऽ, कीचककेँ झटका दैत, निशा भाग रातिमे डरलि हिरणीक भाँति चंचल चम्पति भेलीह एवं अपन सतीत्वक रक्षार्थ परिचय देलनि। ई मातृ सशक्तिकरणक एक अनुपम उदाहरण अछि। तहिना मैथिल मातृ सशक्तिकरणक एक बेजोर उदाहरण अछि। तहिना मैथिल मातृ सशक्तिकरणक अनेकानेक उदाहरण भरल-पड़ल अछि जेना "सती अनसूइया ब्रह्मा, विष्णु आ महेशकेँ अपन सतीत्वक रक्षार्थ जनमौटी बच्चा बनाऽ मातृशक्तिक अद्‌भूत भूमिका प्रदान केलनि। सावित्री यमराजक हाथसँ सत्यवानकेँ सतीत्वक बलेँ छीनि महिला समाजकेँ एक आदर्शक प्रस्तुतिकरण कए मातृशशक्तिकरणक एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत केलनि अछि।

तहिना गार्गी राजा जनकक दरबामे उपस्थित भए मैथिलमातृ शक्तिक विदुषी रूपमे प्रस्तुतीकरण एक अदम्य रूपक परिचय प्रस्तुत केलनि। भारती, मंडन एवं शंकराचार्यक बीच कर्मकाण्ड पर आधरित विषय-वस्तु लएकेँ शास्त्रर्थक अध्यक्षता कए जम्बूद्वीपमे एक कीर्तिमान स्थापित कए महिला शक्तिक परिचय प्रतिष्ठापित केलनि जे भारत वाङ्मयमे एक अनुपम उदाहरण अछि। तहिना मैत्रेयीक भूमिका सेहो महिला शक्तिक एक विलक्षण उदाहरण अछि। तहिना रेशमा, कुसमा, दौना, बहुरागोढ़िन सिद्ध सत्यपीठक साधवीक एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत कक्क भारतभूमिक कीर्तिपताका फहरेलनि। एहि प्रकारेँ वनसप्ती, मन्दोदरी, सती बिहुला आदि नारीक शक्तिक प्रबल उदाहरण अछि।"

तहिना झाँसीक रानी अपन शक्तिक प्रदर्शन राष्ट्रप्रेमक रूपमे फिरंगीसँ मुकाबला कए अद्‌भूत विरांगनाक परिचय विश्व-पटल पर राखि महिला शक्तिक परिचय प्रदान केलनि। श्रीमती इन्दिरा गाँधी भारतक प्रथम महिला प्रधनमंत्री बनि, विश्वस्तरपर यश ख्याति प्राप्त कक्क विश्वचंडीक रूपमे अपनाकेँ प्रतिष्ठापित कए महिला वर्गक ध्वजारोहण केलनि जे महिला सशक्तिकरणक एक चिक्कन उदाहरण अछि।

तहिना फफलनदेवी दस्युसुन्दरी शोषक वर्गकेँ दमित कऽ महिला शक्तिक उदाहरण प्रस्तुत कऽ संसारक महिलाक गौरवकेँ बढ़ौलनि। एहिना राबड़ीदेवी बिहारक प्रथम मुख्यमंत्री बनि महिला समाजकेँ प्रतिष्ठाक प्रतिष्ठापित केलनि अछि जे महिला सशक्तिकरणक फरकस उदाहरण अछि।

तहिना श्रीमती नलिनी चौधरी अन्तर्राष्ट्रीय कत्थक नृत्यांगना एक आदर्श मैथिलानी भऽ केँ देश-विदेशमे अपन नृत्यसँ कीर्तिमान प्रतिष्ठापित केलनि अछि। ई महिला समाजक नारी शक्तिक उदाहरण अछि।

उषा पासवान मैथिली दलितवर्गीय मैथिलानी अपन नृत्य सतञ्जा घैल माथ पर राखि, बिनु कोनो सहाराक निर्भय उन्मुक्ति भऽ प्रदर्शन कऽ एक अदुभूत प्रतिष्ठा देश-विदेशमे प्रस्तुत कऽ महिला वर्गक ध्वजाकेँ फहरेलनि अछि जे महिला सशक्तिकरणक एक आदर्श उदाहरण थिक। तहिना आजुक छात्रा एकसँ दसक क्रममे एकसँ चारिम स्थान पर छात्रसँ अगिला क्रममे आबि नारी वर्गक प्रतिष्ठाकेँ प्रतिष्ठापित कए रहल छथि। एहिना खेल जगतमे आगु, चन्द्रलोकक यात्रीमे महिला यात्री। हिमालयक उच्च शिखर पर राष्ट्रध्वज फहरायब, स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालयमे शीर्षस्थ स्थान पर रहब महिला समाजक शक्ति स्वरूप परिलक्षित होइछ। पुष्पमनारायणम, लावन्यकीर्ति, ममता ठाकुर, रंजना झा, वीणा टाइटलर आदि संगीत-शास्त्रक दक्ष गायिकाक रूपमे पहिचान छनि। एकरा महिला सशक्तिकरण एहि हेतुएँ कहब जे मैथिलसमाजक रूढ़िवादिता पर कुठाराघात थिक एवं पर्दाप्रथाक भर्त्सना थिक।

एखन जतए कतहु समिनार आयोजन होइछ तँ कतहु-कतहु देखबा जाइछ जे सब कथूक संगोपांग क्रिया-कलाप महिला वर्गक दक्षता पूर्णरूपेण प्रतिपादित करैछ।

एखन साहित्य अकादमी दिल्ली मैथिली परामर्शदायी समितिक संयोजक पद पर आसीन भेलीह अछि वरेण्य साहित्यकारक रूपमे प्रतिष्ठित मैथिलीक सुप्रतिष्ठित श्रीमती डॉ. प्रो. वीणा ठाकुर जनिक नाम प्रतिपादित भए मिथिला, मैथिली आ मैथिलकेँ एक मार्यादाक प्राप्ति क गौरवबोध्क अनुभव प्राप्त होइत अछि। ई एक ऐतिहासिक कार्यक निरूपण प्रतिपादित भेल अछि। हिनका द्वारा नौ सदस्यीय, सदस्यक चयन मिथिला, मैथिलीक विकासमे अहम भूमिकाक निर्वहन करत। तकर कारण एकसँ एक विद्वानक चयन। परञ्च-मिथिला-मैथिलीक विकासमे सभ वर्गक समन्वय आवश्यक छल से नहि भऽ पौलक। तथापि विकासक बाट पर आशान्वित छी।

बिहार (मिथिला)मे सरकार द्वारा पंचयतीराज व्यवस्थामे 50प्रतिशत आरक्षण सिर्फ महिलाकेँ, तदुपरान्त 50 प्रतिशत मे सेहो विभिन्न जातिक आरक्षण एवं महिला कुशल एवं दक्षता रूपमे अपन कर्त्तव्यक निर्वहन कऽ रहल छथि जे महिला सशक्तिकरणक सुन्दर उदाहरण अछि। जहाँ धरि महिलाक भूमिका पृथक् मिथिला राज्य आन्दोलनमे सहभागिताक प्रश्न अछि, से नगण्य देखना जाइछ ताहिमे हम पुरुष मैथिल दोषी छी जे महिलाकेँ पृथक् मिथिला राज्य आन्दोलनमे प्रोत्साहित नहि कऽ पबैत छी। ओ आन्दोलन पंचायत, प्रखण्ड, जिला, राज्य, एवं देश स्तर पर किएक नञि होअय महिलाक भूमिका नगण्य रहैछ। तखन मिथिला राज्यक मांग किछु बिलम्बसँ मानल जायत। मिथिला राज्यक समरभूमिमे सभ केओ घेंटमे घेंट जोड़ि चाहे ओ हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख एवं ईसाई धर्मालम्बी किएक नहि होथि। मिथिलावासी सब मैथिल छी।

दोसर महिलाक भूमिका पृथक् मिथिला राज्यक लेल सर्वोपरिक अपेक्षा करैत छी। महिला आदिकालहिसँ सामर्थ्यवान छथि। तेँ महिलाक शक्ति जखन पृथक् मिथिला राज्य आन्दोलनमे बराबरिक सहभागिता प्रदान होयत तखने पृथक् मिथिला राज्य बनबाक अभिलाषाक पूर्ति सम्भव।

''अतः महिलाकेँ फरुष समाज, स्वच्छन्द रूपेँ पृथक् मिथिला राज्य आन्दोलनमे सहभागिता हेतु प्रोत्साहित करथि, सामानताक अध्किार स्वीकार तखने जखन महिला अपन शक्तिक प्रदर्शनक कऽ पओती एवं तकर प्रासादात पृथक् मिथिला राज्यक स्थापना सम्भव।''

आइ अन्तराष्ट्रीय मिथिला महोत्सवक अवसर पर आयोजित जमशेदपुर गोपाल मैदानमे ''महिला सशक्तिकरण'' विषय पर समिनार भऽ रहल अछि जाहिमे महिले, सभ पद पर पदासीन रहतीह एवं अपन गुणक भाव प्रतिपादित करतीह। ई एक ऐतिहासिक कार्य भेल अछि। तेँ हम गद् गद् छी।



मिथिला राज्य आन्दोलन

अलग मिथिला राज्यक पहिल उद्घोषक डॉ. लक्ष्मण झा (1916-2002)

✍ राजनन्दन लाल दास

भारतमे छोट-छोट राज्य जेना मिथिला, मगध, भोजपुर, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, बुन्देलखण्ड, कुरूक्षेत्र आदिक निर्माणक परिकल्पना ओ अपन पेथी मिथिला ए यूनियन रिपब्लिक (1952)मे केने छलाह जे संलग्न मानचित्र सँ स्पष्ट भ' जाइछ। उक्त राज्यक निर्माणमे झारखण्ड, छत्तीसगढ़क परिकल्पना साकार भऽ चुकल अछि। लोकनायक जयप्रकाश नारायण सेहो बिहार आ उत्तर प्रदेशक भोजपुरी भाषी क्षेत्रकेँ मिलाके अलग भोजपुर राज्यक प्रस्ताव देने छलाह। मुदा, हुनक ओहि प्रस्ताव पर सत्ताधारी राजनेता लोकनि कान बात नहि देलनि। फलस्वरूप हुनक ओ प्रस्ताव कार्यान्वित नहि भेल।

ई. सन् 1952क आस-पास कलकत्ताक प्रवासी मैथिल लोकनिमे अपन भाषाक प्रति जागरूकता आबि गेल छलनि तथा ओ लोकनि मैथिल संघक मंचसँ अपन भाषाक अधिकार हेतु मुखर भ' गेल छलाह। डॉ. लक्ष्मण झा तथा हुनक सहयोगी-मित्र डॉ. लक्ष्मीनारायण सिंहक कलकत्ता आगमनसँ मैथिल संघक सजग कार्यकर्त्ता लोकनिमे एकटा भिन्ने स्फूर्ति आबि गेलनि। संघक कार्यकारिणीक मतभेद। सर्वश्री बाबूसाहेब चौधरी, देवनारायण झा तथा प्रो. प्रबोध नारायण सिंह प्रस्तावक पक्षमे छलाह। बाँकी कतिपय सदस्य विपक्षमे। संघक अध्यक्ष श्री हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु' अस्पष्ट रहलाह। एहि परिप्रेक्ष्यमे दोसर उल्लेखनीय घटना थिक 1953क कलकत्ताक गिरीश पार्कमे आयोजित सभा जकर अध्यक्ष छलाह बाबू महेश्वर प्रसाद नारायण सिंह (सुरसण्ड राज) डॉ. लक्ष्मण झा, पं. राघवाचार्य, कवि चूड़ामणि मधुप, आबि उपस्थित छलाह। अवसर छल विद्यापति स्मृति पर्वक।

पुनः ई. सन् 1954मे काँग्रेसक कल्याणी अधिवेशनक अवसर पर बाबू जानकी नन्दन सिंह अलग मिथिला राज्यक प्रस्तावक घोषणा केने छलाह। बिहारक तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिंहकेँ ई बात असह्य लगलनि। फलस्वरूप आसनसोलमे जानकी बाबू गिरतार क' लेल गेलाह। गिरतारीसँ छुटलाक बाद कलकत्ताक मैथिल संघ द्वारा हुनक भव्य स्वागत भेल तथा गिरीश पार्कमे एक जनसभा भेल। जाहि सभामे किछु संख्याक मैथिले लोकनि एकर घोर विरोध केलनि। एतेक शंका जे धमगज्जर मारि भेल आ कतोक गोटयक कान-कपार फूटल। मुदा, सभा चलैत रहल, जानकी बाबूक भाषण बन्द नहि भेल।

गिरीश पार्कमे बेलिंगटन स्क्वायर धरि लगभग एक मिल लम्बा मैथिल लोकनिक जुलूश। जाहिमे ढ़ोल-ढाल गाजा बाजाक संग मिथिला ग्रन्थ एवं मैथिली भाषाक माँगक हेतु नारा कलकत्ताक राज मार्ग पर गुंजायमान भ' उठल।

ई. सन् 1956मे भारत सरकार भाषाधार प्रान्तक गठन हेतु पं. हृदयनाथ कुंजरूक अध्यक्षतामे तीन सदस्यक आयोगक गठन केलक। आयोग जखन कलकत्ता आयल तँ बाबूसाहेब चौधरीक नेतृत्वमे एक प्रतिनिधिमंडल अलग मिथिला राज्यक हेतु कुंजरू आयोगक समक्ष स्मार-पत्र प्रस्तुत केलक। प्रतिनिधिमंडलमे छलाह सर्वश्री देवनारायण झा, प्रबोध नारायण सिंह, डॉ. अणिमा सिंह तथा प्रो. विद्यापति सिंह। आयोग एहि माँग केँ स्वीकार तँ नहिए केलक, अपन रिपोर्टमे एकर उल्लेख तक नहि केलक। उपरक घटना सभक उल्लेखसँ ई स्पष्ट भ' जाइछ जे भाषाक आधार पर अलग मिथिला राज्यक माँग कोनो नव नहि अछि। एकर चर्चा भ' चुकल अछि आ देशक रणनीतिसँ संपर्कित राजनेता लोकनि एहि माँग सँ परिचित छथि।

पूर्वमे एहि तरहक माँग तथाकथित देशप्रेमी लोकनिकेँ नहि अरधैत छलनि। ओ लोकनि एकरा अलगववादी माँग मानैत छलाह। हुनका लोकनिक दृष्टिमे एहि तरहक छोट-छोट राज्यक गठन भेलासँ देश पखंड भ' जायत। देशक जनसंख्या जाहि द्रुतगतिसँ बढ़ि रहल अछि आ देशमे विकासक गति शिथिल अछि, तेहना स्थानमे छोट-छोट प्रशासनिक इकाई हैब आवश्यक अछि। ई बात विरोधी लोकनिक मस्तिष्कमे नहि ठुकैते छलनि। आइ देखल जाइछ जे पूर्वक थानाकेँ तोडिय़ केके टा थाना भ' गेल अछि। जे सब डिभि ऊन छल से जिला भ' गेल, जे जिला छल से कमिश्नरी भ' गेला। प्रशासनकेँ जनताक लग अयबाक हेतु पंचायती राजक निर्माण भेल अछि। पंचायतकेँ कतिपय दायित्व एवं प्रशासनिक अधिकार देल गेल अछि। ई सभ व्यवस्था एहि हेतुसँ जे आम जनताक अभाव, अभियोग, आशा-आकांक्षाक पूर्ति प्रशासन द्वारा यथाशीघ्र भ' सकय। एतेक होइतहुँ देशमे, समाजमे शान्ति नहि अछि। तकर कारण जे प्रशासन सही ढ़ंगसँ आमजनताक सुख-सुविधाक पूर्ति नहि क' रहल अछि। एतय दिनकरक एकटा पाँती उद्धृत करय चाहब-

> जब तक मनुज मनुज का सुख भाग नहीं सम होगा,
> शमित न होगा कोलाहल संघर्ष नहीं कम होगा।

अर्थात् संघर्षतँ शास्वत थिक। एकर अर्थ तँ ई नहि जे

प्रशासन निश्चित भ' बैसल रहय, क्रियाशील नहि होअए। आ जनता सेहो हाथ पर हाथ ध' बैसल रहय।

आब प्रश्न अछि बिहार सँ अलग भ' मिथिला राज्य किएक?

एक उत्तरमे कैकटा स्थितिक उल्लेख करए चाहब-

1. आर्थिक विकासः- पूर्वमे मिथिलांचलके बिहारक अन्नक बखाड़ी (ळतंदंतल) कहल जाइत छल। अगहन मासमे पछिम सँ बैलगाड़ी ल' व्यापारी सभ आबैत छलाह धान कीनबाक हेतु। ओ लोकनि धानक प्राधुर्य सँ प्रभावित होइत छलाह। ओतुका लोकक खाद्यकाल दुनू सांझ भात, बाइस, येरहट सभमे भात। गहुमक प्रयोग मात्र जाड़-बोखारमे रोगीक पथ्य हेतु अथवा पावनि-तिहारमे। जन-बोनिहारकेँ सेहो योनिमे मड़ुआक अतिरिक्त धान भेटैत छलैक। आगत व्यापारी लोकनिक उक्ति होइत छलनि- अरे, इहमा रोज पवनिए बा, कतुओ साला भाते पाबैला। मुदा, शनैः शनैः स्थिति एहेन होइत गेल अछि सम्पूर्ण मिथिलामे की वर्ष रौदी, प्रतिवर्ष बाढ़िसँ आक्रान्त अछि। सरकार दिशि सँ ने रौदीक समयमे पटौनीक व्यवस्था आने बाढ़ि नियंत्रणक दिशामे कोनो निरसन डेग। जे स्थिति परूकाँ छल से अहू साल अछि। सभ साल एकेरंग। लोक दाना-दाना हेतु तरसि रहल अछि। आब कहाँ रहल बखाड़ी। आब तँ मड़ुआक कोन कथा जे माल-जालक हेतु घास, भूसा, पुआर तक नदारद। ई तँ स्थिति अछि खेती-पथारीक।

कृषि पर आधारित जे छोट-पैघ उद्योग छल जेना, धनकुट्टी मिल, चटकल, चीनी मिल आदि सभ बंद। माछ मखानक नितांत अभाव। माछ तँ आब लोक आन्ध्र प्रदेशसँ आयात कैल खाइत अछि। रोजी-रोटीक लेल लोक मिथिलांचल सँ भागि आन प्रदेश बढ़ा अछि। मिथिलाक जन-बोनिहार केँ दरभंगासँ दिल्ली जाय रेलगाड़ीक छत पर बैसल लोककेँ देखि अनुमान कैल जाय सकैछ। बाकी बेरोजगार युवक लोकनि कलकत्ता, मुम्बई, मद्रास, गुजरात, सूरत, हैदराबाद आदि इलाकामे बहुतायतसँ भेटताह। जे लोकनि नीक नोकरी पाबि गेल छथि, ओ परिवार धीया-पुता ले ओतहि डीहो भ' गेल छथि। जे प्रतिभा सम्पन्न छथि, हुनको सेहे हाल। ओ लोकनि अपन भाषा, साहित्य, संस्कृतिसँ पूर्ण रूपेँ कहि गेल छथि।

बाट-घाटक हाल बदहाल अछि। पीबाक हेतु पानिक व्यवस्था नहि। प्रतिवर्ष रौदी आ बाढ़िक कारणे पोखड़ि-झांखड़ि, इनार आब नहि रहल जे पूर्वमे जतऽ आपूर्ति करैत छल।

शिक्षाक दिशामे अनिवार्य प्राथमिक शिक्षाक तहत व्यवस्था मात्र कागत पर अछि। स्कूल छैक, तँ स्कूलक घनहनहिं, शिक्षक नहि, जे शिक्षक बाहरसँ बदलि क' आबैत छथि तँ हुनका लेल आवासक व्यवस्था नहि। मातृभाषाक माध्यमसँ शिक्षाक व्यवस्था नहि अछि। ई तँ ओकर घर-द्वार बाढ़िक कारणे भासि गेलैक अछि, ओकरा धीया-पुताके की तथा कोना शिक्षित कएल जाय सकेछै।

ग्रामीण क्षेत्रक हाल तँ अलगे अछि। रोगीक चिकित्साक हेतु ने डॉक्टर, ने अस्पताल, ने कोनो दवाइ-दारूक व्यवस्था। जखन दरभंगा मेडिकल कॉलेज अस्पतालमे समुचित चिकित्साक अभाव छैक तखन आन इलाकामे तँ लोक जीवि रहल अछि सैह बहुत। भूखलकेँ शिक्षा, भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक गप्प कहबैक तँ ओ सुनिके की करत। अपन खोपड़ीमे रहत सेहो व्यवस्था नहि छैक। छैक किरासन तेल आ कपड़ा? बिजली सँ कहियो काल कतहु भुकभुकाएल नहि तँ ओहो साफ।

आब उक्त परिप्रेक्ष्यमे कहि सकैत छी जे स्वतंत्रताक 62 (बासठि) वर्षक अवधिमे मिथिलांचक पूर्वक अपेक्षा गर्तमे चलि गेल अछि। एहि सँ इहो स्पष्ट अछि बिहार सरकार जाहिमे मगह आ भोजपुरक वर्चस्व छैक ओ मिथिलांचलकेँ सतौले जकाँ व्यवहार करैत आबि रहल अछि।

तखन भिन्न-भिनाउज छोड़ि जीवाक दोसर विकल्प की? मुदा भिन्न-भिनाउज की ओहिना हैत? ओहि हेतु तीव्र आन्दोलन करय पड़त। दुःखक बात तँ ई अछि जे अपन लोकनिक पूर्व पुरूष कवि विद्यापति एहेन जे संग लोक कानमे द' गेलथिन्ह-?

कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ?

अहे प्रवेश लोक सभक पेट भरल छनि जेँ कुशेसर, विन्देसर, सिंधेश्वर, कपिलेश्वर किंवा देवघर काभौरमे बल ल' महादेव केँ जल ढारय जाइत छथि। ओहो जल जलढ़ारी द' केँ यहि जाइत छनि। ई सभ की आन्दोलन क' सकलाह? अपन भाग्य पर कानैत रहथु जीवन भर। आब जकर घर नहि गेल छैक जाहिमे लोकभेद, आ बच्चा भरि रहल छैक अथवा भरि गेल छैक, ओ ककरा पर भरोस करत? भोलानाथ पर? नहि ओकरा सँ एहेन कमर धुआ चाही जकरा लेल-

युगक देवता अग्नि शिखर पर
ठाढ़ भेल करइछ आह्वान।
ओकरा चाही
भेने क्रान्ति कामरू कमरथुआ
बढ़ करैत जय मानव गान।।

मिथिला राज्य आन्दोलनक प्रक्रिया :-

एम्हर कैक अर्थसँ मिथिला राज्यक हेतु आन्दोलनक समाचार सुनि रहल छी। एकरा हेतु दू गोट संस्था अलग-अलग ढ़ंगसँ आन्दोलनक गप्प करैत छथि। अर्थात् गप्पे करैत छथि, आन्दोलन नहि करैत छथि। आ से दुनू अन्तर्राष्ट्रीय, एकहु गोट अखिल भारतीय अथवा अखिल मिथिला नहि।

1. अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद, भारतक विभिन्न शहरमे आयोजनक' मिथिला राज्यक माँग केलनि अछि जेना बैंगलूर, दिल्ली, गोआ आदि शहरमे हेबनिमे काठमाण्डूमे सेहो तखनमे ई अन्तर्राष्ट्रीय भेल। एकर प्रवक्ता छथि श्री धनाकर ठाकुर। हिनका संगे कतिपय बुद्धिजीवी एवं अर्ध सम्पन्न लोक छथिन।

2. दोसर संस्था अछि अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन जे अधिकार दिवसक नाम पर विभिन्न शहरमे जेना, मुम्बई, दिल्ली, कोलकाता, चेन्नै आदिमे आयोजन करैत छथि तथा अलग मिथिला राज्यक नारा बुलन्द करैत छथि। एहि संस्थाक नेता छथि डॉ. बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू'। बैजूजी छथि दबंग लोक। हुनकामे एकटा थीक, तपनशील नेताक गुण छनि। मुदा, इहो शहरी बुद्धिजीवी तथा सम्पन्न लोकक मध्य मिथिला राज्यक गप्प करैत छथि, नारा बुलंद करैत छथि, आन्दोलनरत छथि।

जेना कि आइ धरि होइत आएल, अछि, ई दुनू एक नहि भ' सकैत छथि। कहबी छैक -एक म्यानमे दो खड़ग, देखा सुना न कान। ई तँ हमरा लोकनिक संस्कारो थिक। एकरा कोना छोड़ब? भेश। आब की शहर सभमे जे बिगुल बजैत अछि मिथिला राज्यक तकर आवाज की मिथिलांचलक लोक सुनैत अछि? ओकरा कानमे ई आवाज जाइत छैक? हँ, एहि सँ एकटा लाभ अवश्य होइत छनि जे देश-विदेश (काठमाण्डू) घुमैत छथि, भेंटघाँट करैत जाइत छथि। बस आब की चाही। अपन सफलता पर मुग्ध छथि सभ केओ। कहबी छैक-

बाहर शोभय जोड़ धोती,
आ घरमे पाकए भुसाके रोटी।

आब हमर प्रश्न अछि की उक्त अव्यवहारिक (आर्म चेयर) आन्दोलनसँ मिथिला राज्य संभव अछि? आ से मिथिला राज्य ककरा लेल? जे क्षेत्र आइ पछुआएल अछि, जाहि लाभक लोक पीडिॠत अछि, प्रताड़ित अछि, भूखल अछि, तकरा एकर पता छैक? ई. सन् 1971क जनगणनाक आधार पर मिथिलांचलक जनसंख्या तीन करोड़ चालिस लाख सँ ऊपर बुझल जाइछ। मैथिलीमे एकटा कहबी छैक-

सुपत कहब त' छक द' लागत बाबू। दुनू दल अथवा खेमाक नेता लोकनि प्रौढ़ छथि, वयस्क छथि, शिक्षित छथि, अथवा आँखि सँ देखते हेताह अथवा अनुभव केने हेताह जे एहि तरहक आन्दोलन कोना होइत छैक। कोना सफल भेलैक अछि? तखन निरर्थक देश-विदेश घुमबाक की प्रयोजन। ई तँ ओहिना भेल-घाव कतहु आ धऽ दैत छी कतहु।

आइ प्रयोजन अछि एकटा जन नेताक, जे समस्त मिथिलाक जनताकेँ मिथिला राज्यक औचित्य केँ बुझाए सकथ, लोककेँ संगठित क' सकय। जनताक बीच एहि आन्दोलनकेँ ल' गेलासँ कान ठाढ़ हेतेक तथा पीड़ित जनताक प्राणक हेतु किछु त' करबाक हेतु उद्गत हेबे करत। तात्कालिक सफलतासँ लोकमे नेताक प्रति आस्था आ विश्वास बढ़तैक जकरा भलेँ अग्रिम लड़ाइ जितबामे समर्थ हेताह। से नहि केलासँ लोकमे आस्थाक अभाव रहतैक।

हँ जेना मैथिलीमे मोरो, डोगरी आ संथालीक संगे धमिया क' संविधानक आठम अनुसूचीमे ढूकि गेल तहिना सँ केओ सोचैत होथि जे मिथिला राज्य प्राप्त भ' जायत- तँ हमरा बुझने ई हुनका सपना थिकनि। मैथिलीक मान्यताक हेतु दू-तीन गोटयकेँ पटनामे चारि डंटा लगलनि तँ ओकर ढ़ोल पीटल जाय रहल अछि। धर्मक आधार पर बंगलादेश अगल देश बनि गेल। मुदा, बंगला भाषाक लेल ढ़ाका विश्वविद्यालयक चारि टा छात्र शहीद भ' गेल रहथि। की मिथिला-मैथिलीक हेतु एकहु गोटय शहीद हेबाक लेल आबि सकैत छथि?

मिथिला राज्य आन्दोलनकेँ आगू बढ़ेबाक हेतु तथा सफल बनेबाक हेतु हमरा बुझने करबाक चाही-

1. जन आन्दोलन

2. मिथिलांचलक समस्त विधायक तथा सांसदक एकटा बैसर जाहिमे आन्दोलनक प्रयोजन तथा उद्देश्य पर बहस। विधायक एवं सांसद लोकनिक विचार

3. राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री, गृहमंत्रीकेँ मिथिलांचलक स्थितिक पूर्ण विवरण आदि ल' स्मार-पत्र।

4. संसदमे एहि हेतु बहस एवं प्रस्ताव हेतु सांसदकेँ तैयार करब। आदि।

दुख बात ई अछि जे हमरा लोकनि आब धरि मिथिलाक माटिसँ बाहरक लोककेँ चोट देने छलहुँ अछि। जे सब एहि माटिक छथि हो अथवा हताइ, तिनका अपन पार्टी बेसी प्रिय छनि/ छलनि जनता नहि। जेना बंगालक प्रश्न पर बंगालक सभ पार्टी एक भ' जाइत अछि। की मिथिलाक प्रश्न पर सभ पार्टी एक ई भ' सकत? नेता लोकनि सोचथि। अगुआ एक गोटकेँ बनय पड़तनि।

अलग मिथिला राज्य भेलासँ सभ समस्याक समाधान संभव। एकहि साधे सभ सधे, सब साधे सब जाय। जो तूँ सींचय मूल को, फुलय, फलय अघाय।

■

मिथिला राज्यक पुनर्गठन

✍ डा. खुशीलाल झा

मिथिला राज्यक माङ झारखंड, छतीसगढ़ ओ उतराखंड जकाँ नव राज्यक माङ नहि अछि। हमरा तँ अपन पुरनके बटमारिमे छीनल राज्य आपस भेटबाक चाही। खेखनियां कऽ सत्ता ओ सरकारसँ भीख नहि माङिरहल छी। हमर तँ एहि पर जन्मसिद्ध अधिकार अछि। जग्गजननी माता जानकीक एहि निर्मल, निष्कलुष जन्मभूमि मिथिलाकेँ झगड़लगाओन अंगरेज बीसम शतकक प्रथमे दशकमे योजनाबद्ध चलाकीसँ मिथिलांचल केँ बिहारक अंतर्गत समाहित कऽ देलक। मिथिला राज्यक इतिहास कतेक प्राचीन अछि जे त्रेतायुगक राजा जनकसँ लऽ द्वापरयुगक पौराणिक कालक वृहद्विष्णु पुराणक मिथिलाखंडक अंतर्गत एकर विशद वर्णन उल्लिखित अछि।

पुनः कर्णाटवंशक राजा नान्यदेवसँ लऽ हरिसिंह देव, ओइनवार वंशसँ लऽ खड़ोरे वंश धरिक मिथिला राज्यक इतिहास उपलब्ध अछि। ओइनवंशक सबसँ प्रतापी राजा शिवसिंहक विषयमे तँ ई कहनी अद्यपर्यन्त प्रचलित अछि-

राजा रजोखरि आओर सब पोखरा,
राजा शिवसिंह आओर सब छोकरा।।

ओही प्रकारेँ अकबर द्वारा महाराजा महेश ठाकुरकेँ देल गेल दरभंगा राजक विषयमे सेहो प्रचलित अछि -

अति पवित्र मंगलकरण, राम जनम के दिन।
अकबर तुषित महेश को, तिरहुत राजा कीन।।

एहि बीच मुगल ओ अंग्रेजक शासनकालमे जे राजनैतिक परिवर्तन भेल ताहिसँ मिथिलो अप्रभावित नहि रहि सकल। 1815-18मे जे सुगौली एग्रीमेन्ट भेल, ओही समयमे नेपाल पर अंग्रेजक आक्रमण भऽ गेल। पड़ोसी राज्य भेलाक कारण मिथिलो पर एकर प्रतिकूले प्रभाव पड़ल। पुनः 1883मे एहि एग्रीमेन्टकेँ अंग्रेज द्वारा लागू कयल गेल। परंच एहू समझौतामे अंग्रेज द्वारा तेना छेड़छाड़ कयल गेलै जे ने मिथिलाकेँ नकसे पर फुटाओल गेलै आ ने सीमांकने भऽ सकलै।

भारतक स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात पुनः 1953-54मे भारत सरकार द्वारा भाषाक आधार पर राज्य पुनर्गठन आयोगक स्थापना भेल। मिथिलो राज्यक पुनर्गठन लेल मिथिला केशरी बाबू जानकीनन्दन सिंह ‘कल्याणी कांग्रेस’क प्रतिनिधि मंडलक संग कतोक कार्यकर्त्ता लऽ विदा भेलाह। परंच तत्कालीन सरकारक निर्देश पर बाटेमे निरफ्रतार कऽ जेल पठा देल गेलाह। मिथिला राज्यक पुनर्गठन पर एहि घटनासँ भयंकर डाङक प्रहार पड़ि गेलै। एतबे नहि, मैथिली भाषाक विरोधस्वरूप अंगिका, बज्जिका आदि भाषाकेँ सरकार दिशसँ प्रोत्साहन भेटऽ लगलै। एहि उनटा बसातकेँ अतत्तह नहि तँ और की कहल जा सकै! यद्यपि बाबू साहेब मिथिला राज्यक पुनर्गठनक संकल्पकेँ साकार करबाक विचार मनमे ठानि लेने छलाह। परंच 1968मे हुनक असामयिक निधनसँ ई अभियान जेना तऽर पड़ि गेल।

जँ स्वतंत्रताक पश्चात भाषाधारिते राज्य बनल तँ मैथिली भाषा ओहू समयमे अति समृद्ध ओ पूर्ण विकसित छल। अदौकालसँ मिथिला भाषा-साहित्य, संगीत, संस्कृति ओ कलाक क्षेत्रमे अपन विशिष्ट पहिचान लेल सम्पूर्ण भारतमे सुविख्यात छल। दर्शन, शास्त्र-चिन्तन ओ साहित्य-सर्जन एतुक्का वैदुष्यक सुदीर्घ परम्परा रहल अछि। मिथिलाभाषाक प्राचीनताक विषयमे विशेष की कहल जाय। आदिकवि बाल्मीकि पर्यन्त रामायणमे सीता-वाटिकासँ लंकादहन कऽ जखन हनुमानजी प्रस्थान करबाकाल सीताजीसँ आर्शीवाद लेबाक क्रममे भेट करऽ गलथिन तँ सीताजीक मुहसँ अनायासे निःसृत भेलनि -

ज्ञात्वा संप्रथितं देवी बानरं पवनात्मजम्।
वाष्पगद् गदया वाचा मैथिली वाक्यमब्रबीत।।

भाषाक प्राचीनताक विषयमे एहिसँ प्रबल प्रमाण आओर की भऽ सकैछ। चौदहम शतकक ज्योतिरीश्वर ठाकुरक गद्यग्रन्थसँ प्राचीन गद्यरचना कोन भाषा-साहित्यमे उपलब्ध होइछ? महाकवि विद्यापतिसँ पूर्व हुनका सन विशिष्ट पदावलीक रचना के कयने छलाह? तेँ ने हरिवंशराय वच्चन विद्यापतिक प्रसंग अपन उद्गार व्यक्त करैत कहने छथि -

थे न सूर न कवीर न तुलसी, और न थी जब बाबरी मीरा।
तब तूम्हीने मुखरित की थी, मानवके मानस की पीड़ा।।

एतबे नहि, विश्वकवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर तँ महाकवि विद्यपतिक पदावलीसँ ततेक प्रभावित भेलाह जे ओ भावभिभूत भऽ लिखने छथि- ‘‘His poems and songs were one of the earliest delights that stirred my youthful imagination and I, even, had the privilege of setting on of them into music.’’

मिथिला राज्यक पुनर्गठनमे बीच-बीचमे राजनीतिक उथल-पुथल सेहो बाधक बनैत रहल। मुगलकालीन शासनमे राज-काजमे उर्दू-फरसीक प्रयोग ओ प्रचार एवं अंग्रेजी शासनमे अंग्रेजीक प्रचार-प्रसार सेहो मैथिली भाषा ओ मिथिला राज्यक पुनर्गठनमे पैघ पहाड़ बनि गेल। कोनो बाहरी शासकक प्रथम प्रयास भाषाओ संस्कृतिए पर प्रहार कऽ अपन भाषा ओ संस्कृतिकेँ लादब रहैत छैक। परंच स्वतंत्रता प्राप्तिक बादो समस्त उत्तरभारतक संगहि मिथिलो पर हिन्दीक माध्यमसँ प्रंरभिक शिक्षा प्रदान करब थोपि देल गेल। फलस्वरूप प्रारंभिक शिक्षासँ मैथिली वहिष्कृत कऽ देल गेल। ई बसात स्कूलसँ नेना लोकनिक परिवारधरि बहय लागल। अभिभावक लोकनि सेहो घरहुमे मैथिली छोड़ि हिन्दीएमे अपन बेटा-बेटीसँ गप्प करय लगलाहा आब तँ निजी स्कूल सबमे शिक्षाक माध्यम अंग्रेजी बनल जा रहल अछि। तथाकथित पढ़ल-लिखल अभिभावकहुँकेँ आब बच्चासँ मातृभाषामे गप्प करब अनसोहांत लगैत छनि। केहन विडम्बना अछि।

वस्तुतः कोनो समाजकेँ अनिवार्य रूपसँ अपनहि भाषाओ संस्कृतिमे जीवित रहऽ पड़तैक। जँ से नहि करत तँ अस्मिता कुंठित

ओ अस्तित्व पराभवमे पड़तैक आ ओकर आत्म-बहिष्कार वा अनचिन्हारक विचार प्रकट होयबे करतै। महात्मा गाँधीक कहब अछि जे ''मातृभाषा मानवक मानसिक विकासक लेल ओतबे आवश्यक अछि जतेक शिशुक शरीरिक विकासक लेल माइक दूध''। गुरुदेव रवीन्द्रनाथक कथन छनि-मातृभाषा मनसावरक ओ गृहिणी छथि जे मैल-कुचैल साड़ी। पहीरि परिवार सब लोकक भरण-पोषण करैत छथि। आन वा विदेशी भाषा (अंग्रेजी आदि) ओहने भाषा थिक जेना कोनो सजलि-धजलि प्रेमिकाकेँ ड्राइंग रूममे बैसाकऽ आन भाषामे टीम-टाम कऽ गप करैत होइ आ कोनो आगन्तुकक समक्ष ओहि प्रेमिकाकेँ अपन पत्नीक रूपमे परिचय दियनि। मिथिला राज्यक पुनर्गठनक प्रसंग एतेक गंभीरतासँ विचार करबाक पृष्ठभूमिमे हमर इएह अभीष्ट अछि जे भाषाक पूर्व जे 'मातृ' शब्द अर्थात 'माए' शब्द जुड़ल अछि तकर उद्देश्य इएह अछि जे मातृभाषा माए जकाँ छाहरि, आश्रय, रक्षिका, पवित्र ओ प्रिय छथि।

हमरा संविधानमे लोकतंत्रात्मक गणतंत्रक व्यवस्था कयल गेल अछि। लोकतंत्रक परिभाषा तँ सर्वविदित अछि। लोकतंत्रमे राष्ट्ररूपी प्रासादक चारि प्रमुख स्तंभ मानल गेल अछि। जैमिनी मीमांसा दर्शनमे लोकतंत्रक विवेचनक क्रममे एहि चारूकेँ निम्न रूपेँ कहने छथि-शिक्षाक-छात्र वर्ग, वैज्ञानिक-उद्योगपति वर्ग, कृषक-श्रमिक वर्ग एवं सैनिक-शासक वर्ग। एहि चारू स्तंभ पर जँ मिथिलांचलक परिप्रेक्ष्यमे गंभीरतासँ विचार कयल जाय तँ एतुक्का खुट्टा सब मजगूत नहि भेटत। जे खुट्टा अछि ओ सब हिल-डोल कऽ रहल अछि। शिक्षक-छात्रक संबंध शिक्षासँ अछि। मिथिलांचलमे शिक्षाक प्रतिशत देशक आन-आन राज्यक तुलनामे बहुत कम अछि। वैज्ञानिक ओ उद्योगपति वर्ग तँ जेना मिथिलासँ निपत्ता भऽ गेल छथि। रौदी-दाहीक चपेटमे कृषक ओ श्रमिक वर्गक दशा ओ दिशा अतयन्त दयनीय भऽ गेल छनि। सैनिक ओ शासक वर्गक विषयमे की कहल जाय! वक्रवृत्तिसँ सब अपन स्वार्थ-सिद्ध करबाक चालि चलबामे सतत अपस्याँत रहैत छथि। मिथिलांचलक अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, स्वास्थ्य, सिंचाई, सड़क, प्राकृतिक आपदा, पर्यावरण-प्रदूषणक कारण दिनानुदिन मिथिला शिथिल भेल जा रहल छथि। फलतः मेधा-प्रतिभाक संग-संग कृषक-रमिक वर्गक पलायन नित्य-प्रति भऽ रहल अदि।

एकटा क्षेत्र मिथिलाक बड़ उपजाउ अछि-आथिक जनसंख्यामे द्रुतगतिसँ वृद्धि। एकरे कहैत छैक- 'तेज घटल जाय आ नाच बढ़ल जाय'। सरकार परिवार नियोजनक भनहि कतबो ढ़ोल पीटथु, जननी बाल सुरक्षा योजनामे कतबो पैसा पानि जकाँ बहाबथु परंच मिथिलांचलक लोक एहि मामिलामे देशक कोनो राज्यकेँ परि-पाँखि नहि लागऽ देथिन। एहि वर्ष किछु मास पूर्व दैनिक जागरण समाचार-पत्रमे छपल छल- 'वारिसनगरमे महिला ने जना सत्रहवाँ बच्चा'। समस्तीपुर वरिसनगर प्रखंडक 39 वर्षीय प्रसूता हजपुरवा गामक जूही खातून नामक महिला थिकीह। पतिक नाम मो. अली मुलकार खाँ छनि। जननी बाल सुरक्षा योजनाक अन्तर्गत स्वास्थ्य केन्द्रसँ राशि लऽ गाम गेलीह।

सबसँ विकट समस्या मिथिलांचलक युवा-वर्गक समक्ष मुहबौने ठाढ़ अछि। ओ भनहि उच्च-डिग्रीधारी, सामान्य शिक्षित वा अशिक्षित किएक ने होथु, हुनका लेल जीविकोपार्जनक समस्या सबसँ कठिन छनि। ओ सब दशाओ दिशाहीन भऽ शहरसँ देहात धरि चौक-चौबट्टी पर बेकार बैसल गप्प हँकैत भेटताह वा निरूद्देश्य चाह-पान वा आओर किछुक जोगारमे दहनाएल पिफरैत भेटताह।

मिथिलांचलक उपरोक्त ज्वलंत समस्या पर विचार करबाक क्रममे आब मिथिला राज्य पुनर्गठनक मार्गमे किछु बाधक तत्व ओ ओकर समाधान पर विचार करब आवश्यक अछि। मिथिलावासीकेँ एखन धरि ई बोध नहि भेलनि अछि जे एहि ठामक सब जाति धर्म, सम्प्रदायक लोक मैथिल छी। मिथिला राज्यक पुनर्गठनसँ सम्पूर्ण मिथिलांचलक विकास द्रुतगतिसँ होयत आ एहिसँ सब लाभान्वित होयताह। राज्य पुनर्गठन सामाजिक ओ राजनीतिक पुनर्जागरणसँ लोकमे सामूहिक चेतनाक उद्भव ओ आपसी वैमनस्यक समाप्ति एवं टधिच्चा प्रवृत्तिक प्रति सजग रहले पर संभव भऽ सकैछ। एहि लेल मिथिलांचलक सब दलक राजनेताकेँ एकजुट भऽ अग्रसर होबऽ पड़लनि। मिथिला राज्य पुनर्गठनक जड़िमे मिथिलांचलक विकास नुकायल अछि। परंच ई जड़ि रोगाह भऽ गेल अछि। एकर उपचार समस्त मिथिलावासीक हाथमे छनि। एहि लेल सामाजिक ओ राजनीतिक दुहू क्षेत्रमे संघर्ष, अभियान ओ आन्दोलनकेँ क्रान्तिक रूप देबऽ पड़त। आर्थिक रूपसँ सम्पन्न लोककेँ आगू आबि गाम-घरसँ लऽ पटना-दिल्ली धरि सत्ताओ सरकारकेँ बाध्य करय पड़त। मिथिलांचलक सब विधायक ओ सांसद संकल्प लऽ जँ एहि पुनीत कार्यमे मनसा-वाचा-कर्मणा हृदयसँ तत्पर भऽ जाथि तँ राज्य पुनर्गठन अभियान केँ बल भेटतैक। हुनका लोकनिक पद स्वतः उत्क्रमित भऽ जयतनि।

मिथिला राज्य पुनर्गठन लेल आम चुनावसँ पूवहिँ चुनावी अश्वमेध यज्ञक घोड़ाकेँ छोड़य पड़त आ ओकरा पकड़बाक लेल नवतुरिया युवावर्गकेँ लव-कुश बनय पड़तनि। यद्यपि यज्ञक घोड़ा छोड़ल जा चुकल अछि। अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद्क जुझारू नेता डा 'बैजू' बाबू संविधानक आठम अनुसूची जकाँ समस्त मिथिलांचल ओ आनो राज्य सबमे घूमि-घूमि शंखनाद कऽ प्रवासी मैथिलकेँ जगा रहल छथि। संगहि संघर्षक जतेक पफराक-पफराक मोर्चा सब काज कऽ रहल अछि सबकेँ एक मंच पर आबि संगठनकेँ मजगूत बनेबाक प्रयोजन अछि। चौधरी-ठाकुरकेँ एक मंच पर आबि रामभक्त हनुमान जकाँ ''राम काज कीन्हें बिना मोहि कहाँ विश्राम'' सन दृढ़संकल्पित भऽ संगठनकेँ एकाकार करय पड़त। मिथिला ओ मिथिलाक धरती हमर जननी ओ जन्मभूमि थिकीह। मायसन आँचर तऽरक छाहरि, आश्रय-स्थल, रक्षिका ओ प्रिया छथि। तेँ कहल गेल अछि -

नास्ति मातृ समा छाया, नास्ति मातृसमा गति।
नास्ति मातृसमात्राणं, नास्ति मातृ समा प्रिया।।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम लंका-विजयक बाद जखन अयोध्या प्रस्थान करबाक लेल लक्ष्मणसँ कहलथिन तँ लक्ष्मण काने ने पटपटबथिन। लंकाक सुन्दरता देखि हुनका किछु दिन आओर लंकेमे रहबाक इच्छा भेलनि। ताहि पर भगवान राम कहलथिन -

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गदपि गरीयसी।।

मैथिली आन्दोलनक स्थिति

✍ पं. देवनारायण झा

मैथिली आन्दोलनक इतिहासक स्थिति पर विचार कयलासँ सर्वप्रथम बाबू भोला लाल दास एवं डॉ कांचोनाथ झा 'किरण' क नाम लेल जा सकैत अछि। ओहि समय आन्दोलनक रूप एहन नहि छल जे प्रदर्शन हो आकी अनशन हो। आन्दोलनक स्वरूप मात्र शिक्षित परिवार में आपसी वातलापमे पल्लवित ओ पुष्पित होइत रहल। बाबू भोला लाल दास द्वारा कोर्ट कहचरी, ओकालतखाना एवं पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्थापना लेल तत्कालीन कुलपति डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हासँ मैथिलीक मान्यता लेल तर्क वितर्कसँ संघर्षक समय मानल जायत। डॉ. सुभद्र झाक सहयोगसँ महाराज दरभंगा द्वारा पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्थान हेतु प्रस्ताव करएबाक कार्य एवं दरभंगासँ सांहित्यक प्रचारार्थ 'मिथिला मोद', पत्रिकाक प्रकाशन उदाहरण स्वरूप द्रष्टव्य अछि।

एमहर डॉ कांचीनाथ झा 'किरण' द्वारा मिथिलांचलक प्रमुख गाम सभमे साइकिल द्वारा मिथिलांचलक प्रमुख गाम सभमे साइकिल द्वारा विद्यापति पर्वक माध्यमसँ मैथिलीक प्रचार करैत काशी विश्वविद्यालयमे संग लेल मालवीयजीक संग विद्वत्तापूर्ण आन्दोलनात्मक गप्प केनाइ। ओहूसँ पूर्व कलकत्ता विश्वविद्यालयमे श्रीववूआजी मिश्र, कुमार गंगानन्दसिंह' महाराज दरभंगा एवं डॉ. सुनीति कुमार चटर्जीक संयुक्त प्रयाससँ मैथिलीक स्थापना भेल।

मिथिलांचलमे मैथिली साहित्य परिषद् साहित्यिक प्रचार-प्रसार खूब जोरसँ कय रहल छल, मैथिल महासभी द्वारा सेहो कार्य होइत रहल। तकरा दू-तीन दशक बाद कलकत्तामे मैथिल संघक प्रादुर्भाव भेल। वैह संस्था विभिन्न रूप धरैत विभिन्न नामसँ काज करैत भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक स्थान हो तदर्थ संघर्षरत भऽ कार्य करैत रहल। भारत सरकार द्वारा भाषाधार प्रांतक अयोग नियुक्त भेल। मिथिलांचलसँ डॉ. लक्ष्मण झा, बाबू जानकी नन्दन सिंह, महाराजाधिराज, मैथिली महासभा ओ कलकत्तासँ मिथिला लोक संघ, मिथिला छात्र संघ आदि द्वारा कमीशनक समक्ष मिथिला राज्यक लेल स्मारपत्र देल गेल। मैथिली आन्दोलनक नेता श्री बाबू साहेब चौधरी द्वारा विद्यापति पर्वक माध्यमे मैथिली भाषाक प्रचार प्रसार पर खूब जोर देल गेल। विद्यापति पर्वक प्रभाव कलकत्ता, पटना, जमशेदपुर, दिल्ली, बम्बई आदि शहरमे खूब जोर पकड़लक।

पटना एसेम्बलीमे बाबू जानकी नन्दन सिंह द्वारा मैथिलीक हेतु प्रस्ताव आनल गेल, ओमहर लोकसभामे 'महेश्वर प्रसाद नारायण सिह' द्वारा एक नमहर वक्तव्य देल गेल। पटनासँ चेतना समिति द्वारा बुद्धिमत्ता पूर्ण ढंगसँ सरकारी। पदाधिकारीक समक्ष मैथिलीक न्यायोचित मांगक चर्चा करैत रहल जाइत अछि। तकरा बाद मिथिलांचलक गाम-गाममे विद्यापति जयन्तीक होर मचि गेल। एहि बीच साहित्यिक पत्र-पत्रिकाक किछु नव ढंगक साहित्यिक ग्रंथ सब लिखाय लगलैक। चुनावक समय अनेको संस्था द्वारा प्रचार कयल जाइत रहल जे एम. पी. ओ एम. एल. ए. लोकनि चुनाव प्रचार मैथिलीक माध्यमसँ करथि। किन्तुआम जनता दिससँ एकर स्वीकारोक्ति नकारात्मकेँ रहल।

साप्ताहिक, मासिक पत्र-पत्रिका सब प्रकाशित भेल आबन्द भऽगेल, किताब छपल आ बिका नहि सकल, ग्रंथालय प्रकाशन द्वारा अनेको बहुमूल्य पोथी प्रकाशित भेल किन्तु बिक्री नहि हेबाक कारणे संस्था बन्द भऽगेल।

एतेक प्रयासक बादो मैथिली भाषी साधारण जनता कतेक सजगा भऽ सकल तकर प्रमाण वर्तमान चुनावमे भागेन्द्र झा एवं धनिक लाल मंडलकेँ। अपनहि क्षेत्रमे हारि गेनाइ अछि।

हमरा विचारें मैथिली भाषाक लेल अखन तक आन्दोलने नहि भेल अछि। विद्यापति पर्व आदिमे एतेक लोकक एकट्ठा भेनाइ मात्र डान्स गीत ओ नाचक प्रभाव अछि। एहि पचास वर्षक अन्तरालमे मैथिली लेल जे काज कयल गेल छल तकर समवेत फल मैथिली साहित्यकेँ भेटि गेलैक। ओ साहित्य एकेडमी द्वारा मान्यता प्राप्त कऽ चुकल अछि, किन्तु मैथिलीकेँ आन्दोलनात्मक पूँजी शून्य रहल। आन्दोलन पंजाब ओ आसाममे होइत छैक। सफल आन्दोलन वैह थीक जाहिसँ सरकार सशंकित भऽ सकैए। पंजाब ओ आसाममे आन्दोनल छैक, एहि ढंगक आन्दोलन मिथिला, मैथिली लेल कहियो नहि भेल अछि। सरकार द्वारा मिथिलावासीकेँ उत्तेजक बनबाक मौका देल जाइत छैक जेना सम्प्रति पाठ्यक्रमसँ मैथिलीकेँ हटा देनाइ। तेँ सम्पूर्ण मैथिली भाषी जनतासँ हमर आग्रह जे 'उतिष्ठोतिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते' एक बद्ध भऽ सरकारक एहि कुकीर्तिकेँ वापस लेवय लेल बाध्यकऽ दी।

जय मिथिला जय मैथिली

■

मिथिला राज्य : किछु तथ्यात्मक विश्लेषण

✍ एन.आर. महेन्द्र

भारत में स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात् कतेको राज्य बनाओल गेल अछि। कतेको बनाओल जयबाक आन्दोलन चलि रहल अछि। पान, मखान आ माँछ लेल प्रसिद्ध मिथिला राज्यक पुनस्थापना लेल लगभग एक सय वर्ष सँ आन्दोलन चलि रहल अछि।

1905 आ 1912 ई. मे बंगाल से फराक भेलाक बाद 1936, 1956 आ फेर 2000 ई. मे बिहारक विभाजन भऽ चुकल अछि, मुदा आइ धरि मिथिलांचल कें अलग नहि कयल गेल अछि। मिथिलांचल लेल जानकीनन्दन सिंह, डॉ. लक्ष्मण झा, डॉ. लक्ष्मी नारायण सिंह सँ लऽ कऽ बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू', पंडित ताराकान्त झा, डॉ. बुचरू पासवानक संगहि कतेको महारथी लोकनि आइ धरि आन्दोलनरत छथि, आन्दोलनकारी लोकनि स्मार-पत्र समर्पण, पोस्टकार्ड आन्दोलन, सभा-सम्मेलन आयोजन, धरना-प्रदर्शन, मिथिला सँ दिल्ली धरि करैत रहलाह अछि। विद्यापतिक कालजयी रचना 'जय-जय भैरवी' कें सस्वर प्रस्तुति ठाढ़ भऽ राष्ट्रगानक रूपें करऽ लगलाह अछि। कटिबद्ध लेखक, प्रतिबद्ध राजनीतिज्ञ आ सक्रियतावादी लोक 'भीख नहि अधिकार चाही, हमरा मिथिला राज चाही'क नारा प्रस्तुत कऽ रहलाह अछि। देवार-लेखन, पत्र-पत्रिका, पुस्तकादि प्रकाशन, पर्चा-लेखन आदि कयल जा रहल अछि। मुदा से किएक? मिथिला राज्य किएक, से गम्भीर प्रश्न अछि। एहि लेल सभटा परिवेश आ परिनियम सभ किछु सक्षम अछि? एकर औचित्यपरक प्रश्नक समाधान ताकऽ पड़त आ हमरा ई बताबऽ पड़त जे पृथक राज्यक स्थापनाक सभ शर्त हमरा लग विद्यमान अछि। संक्षिप्तः मिथिला राज्य किएक से निम्नांकित बिन्दु उद्धत करब हमर अभीष्ठ अछि।

व मिथिला राज्यक अलग स्थापना लेल जे विशिष्टता होयबाक चाही से मिथिला मे वर्तमान अछि। प्राचीन काल सँ विभिन्न युग मे मिथिलाक स्वतंत्र छवि ओ ओकर भिन्न व्यक्तित्व छलैक। बाल्मीकि कृत 'रामायण' आ गोस्वामी। तुलसी कृत 'रामचरितमानस' मे एकर विस्तृत ओ अनुपम वर्णन छैक।

व मिथिलाक इतिहास अति प्राचीन अछि। एकरा विदेह, तिरहुत, तीरभुक्तिक नाम सँ सेहो जानल जाइत अछि। एहि भूमिक निर्माण पचास हजार वर्ष पूर्वक मानल जाइत छैक। ऐतरेय ब्राह्मण, उपनिषद, कौटिल्यक अर्थशास्त्र, पतंजलिक महाभाष्य, जातक कथा आ जैन साहित्य (धर्मसूत्र, कालसूत्र) मे मिथिलाक इतिहास वर्णित अछि। धर्मग्रंथ- रामायण, महाभारत, पुराण, विदेशी यात्रीक यात्रावृतान्त, मुस्लिम यात्री आ इतिहासकारक वृतान्त, कतिपय हस्तलिपि आदि सँ एकर विशिष्टता परिलक्षित होइत अछि। नीमि, सीरध्वज, जनक काल सँ एकर निरन्तरता प्राप्त अछि। जनक कुल में 53 (तिरपन) राजा राज कयने छथि। जैन आ बौद्ध साहित्य विदेह राजक त्याग-गाथा बता रहल अछि। 326 ई. पू. सँ 1097 ई. बा. मिथिला मगध शासनक छत्रछाया में छल। एगारहम सदी सँ चौदहम सदी धरि कर्नाट राजा नान्यदव सँ शक्तिदेव धरि (1197 ई. सँ 1924 ई.) एतय राज कयलनि अछि। पश्चात् ओइनवार वंश (1955-1526 ई.) कामेश्वर सँ कंश नारायण, लक्ष्मीनाथ धरि कतेको राजा राज कयलनि। एकर बाद खण्डवला राजवंशक शासन महेश ठाकुर सँ प्रारम्भ भऽ सर कामेश्वर सिंह बहादुर धरि रहल।

व सभ्यता आ संस्कृतिक क्षेत्र मे मिथिलाक महानता रहल अछि। एकरा यज्ञ देश सेहो कहल जाइत रहल अछि। सीता एहि भूमि मे जन्म लेने छलीह। जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम (न्याय-शास्त्र), कणाद् (वैशेषिक) जैमिनी (मीमांसा), कपिल (सांख्य), सल्हेस, लोरिक, दीनाभद्री, सती बिहुलाक भूमि मिथिला थिक। भारतीय चिन्तन, वैदिक, जैन, बौद्ध-दर्शन आदि सहित मिथिला अपन यशस्वी अतीत मे भारतीय वाङमय कें समृद्ध कयल अछि। सर्वधर्म समन्वयात्मक संस्.तिक समागम मिथिला मे सदा सँ साकार होइत आयल अछि। वैदिक-तांत्रिक संस्कृतिक सुन्दर समन्वय एहि ठाम विद्यमान अछि। वैष्णव आ शैव मतक सामंजस्यक संग एहि ठामक मुसलमान छठि चौरचन ओ हिन्दू दाहा मे जंगी बन्हैत अछि, झरनी-मरसीया गबैत अछि। एहि ठामक लोक संस्.ति सेहो विश्व मे अद्वितीय अछि।

व मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा संगीतक क्षेत्र मे सेहो देखल जा सकैत अछि। प्राचीन मिथिलाक शासक लोकनि संगीत आ संगीतज्ञ कें संरक्षण दैत छलाह। नान्यदेव स्वयं 160 सगक प्रतिपादन कयने छलाह। हरिसिंहदेव, सिंहभूपाल, जगधर, जगज्योतिर्मल्ल वंशमणि झा, शुभंकर ठाकुर, घनश्याम मल्लिक, लोचन, साहेबराम, चन्दा झा एहि क्षेत्र मे उल्लेखनीय भूमिका निमाहलनि अछि। माँगनि खवास ओ दरबारी दास सम्पूर्ण देश मे अपन नाम प्रतिष्ठिापित करौलनि। अमता, पंचीम ओ पंचगठिया दराना मिफिल मध्य जन-जन मे संगीतक सरिता प्रवाहित क रहल अछि। अब्दुल गनी खाँ, रामचन्द्र झा, नचारी झा, विष्णुदेव मल्लिक, रामेश्वर पाटक, ब्रह्मदेव नारायण सिंह, सोहनी सिंह, हरिनन्दन जी सनक व्यक्तित्व संगीत कर दुनियाँ मे अपन नाम चमकाने छथि। पराती, सोहर, बटगमनी, तिरहुत, योग, उचिती, लोकगीतक अतिरिक्त भाओ-भगत-गहबर गीतक संगहि जाति आधारित संगीत यथा- दुसाध लोकनिक सलहेस, मुसहर लोकनिक दीनाभद्री, यादव लोकनिक लोरिक, मल्लाह लोकनिक दुलरा-दयाल, कमला-कोयला आदि लोकगाथा प्रसिद्ध अछि। पमरिया नट-नटी, बक्खो-बक्खिन, खोद-पारनी, पचनियाँ, बसानी भाटक समृद्ध परम्परा मिथिला मे आइयो पसरल अछि। मिथिला (मधवनी) पेंटिंग गाम-घरक देवार पर माटि-गोबर से बनल लोकचित्र, अरिपन, कोहबर भारतक अन्य क्षेत्र मे नहि देखल जाइत अछि। कसीदा, सन्जाप, सुजनी, लाहक लहटी माटिक मूर्ति, खेलौना, कुम्भकारी,

नूआँक छपाइ-रंगाइ, पित्तरि आ काँसक बर्तन, मोथिक पटिया, सनक बनल विभिन्न वस्तु, बाँसक वस्तु आदि मे मिथिलाक अपन विशेषता छनि।

व मिथिलाक साहित्यक विशेषता सेहो अद्वितीय छनि। ज्ञानक कोनी शाखा एहि सँ अछूत नहि रहल अछि। संस्कृत, मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, तिरहुता आदि मे कतेको पोथीक रचना मेल अछि। काव्य-शास्त्र, भाषा-शास्त्र, व्याकरण, आचार-शास्त्र, ज्योतिष-शास्त्र, तंत्र-शास्त्र, दर्शन, राजनीति, इतिहास, धर्म-शास्त्र, खगोल-शास्त्र, आ आन कतिपय शास्त्र मे रचना मेल अछि।

व जँ भाषिक विशिष्टता राज्य निर्माणक आधार होइत अछि तें मिथिला एहि मे पाछाँ नहि अछि। मैथिली भाषा ओकर विशिष्ट लिपि मिथिलाक्षर वा तिरहुता राज्य स्थापनाक दोसर महत्त्वपूर्ण स्तम्भ अछि। मिथिलाक्षर ब्राह्मी लिपि सँ मिलैत अछि जे अति प्राचीन लिपि अछि। ई देवनागरी सँ भिन्न होइत अछि। देशी-विदेशी विद्वान लेखक लोकनि मे कोलक (1801), बीम्स (1878 ई.), हार्नेल (1880 ई.), ग्रियर्सन (1880-84 ई.) आ केलाग (1893 ई.) सँ लऽ कऽ नगेन्द्रनाथ गुप्त, महामहोउपाध्याय हर प्रसाद शास्त्री, डॉ. प्रबोध। चन्द्र बागची, बाबू मणिगोपाल, डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, डॉ. सुकुमार सेन आदि लोकनि मैथिली कें आधुनिक सम्भ्रान्त आ सम्मानित भाषाक श्रेणी मे आनि प्रतिष्ठित कयलनि। मैथिली एक मात्र भाषा अछि जे साहित्यिक परम्पराक्त अछि। दसम आ एगारहम शताब्दी मे ई भाषा निश्चित स्वरूप ग्रहण कयलक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'वर्णरत्नाकार' एकर सशक्त प्रमाण अछि। अवहट्ठ अपभ्रंश स्थान मैथिली छी। द्वितीय चरण (1350-1830) मे विद्यापति, गोविन्ददास, विष्णुपुरी कंश नारायण, महेश ठाकुर, जगदानन्द, नन्दीपति, लाला देवी, बुधि लाल रत्नमणि संग कतिपय गोटे जँ एहि कालक मूर्धन्य साहित्यकार भेलाह तँ हर्षनाथ, चन्दा झा, लालदास, रघुनंदन दास द्वितीय चरणक आधनिक मैथिलीक वर्त्तमान स्वरूप लेलनि। बिहार, बिहारक बाहर कलकत्ता, बनारस विश्वविद्यालय अदि मे मैथिली के स्वीकार कयल गेलै तँ सर आशुतोष मुखर्जी, प्रथम प्राध्यापक पडित खुद्दी झा, बबुआजी मिश्र सनक व्यक्तित्व मैथिली भाषिक विशिष्टता में अग्रणी भूमिका प्रदर्शित कयने छथि।

1981 ई. क जनगणनाक अनुसार मैथिली भाषा-भाषी मिथिलांचल मे 1,99,28000 (एक करोड़ उनचालिस लाख तैस हजार) संख्या अछि तें वर्तमान मे लगभग चारि करोड़क लगपास चलि गेल अछि। ई संख्या कन्नड़, उड़िया, मलयालम, कश्मीरी, असमी सँ बेसी अछि।

व शब्दकोष आ व्याकरणक दृष्टि सँ एकर स्थान स्वतंत्र अस्तित्व अछि।

व मैथिली सर्वजनीय भाषा थिक। मिथिलाक अधिकांश भू-भाग में बहसंख्यक पिछड़ा आ पछुआयल वृहत्तर समाज निवास करैत छथि। एकरा दलित, उपेक्षित, शोषित अल्पसंख्यक, महादलित सभ शब्दक उपयोग सेहो कयल जा रहल अछि। मुदा से ई वृहत्तर समाजक लोक मैथिलीक अतिरिक्त कोनो आन भाषा नहि बजैत छथि आ नहि लिखैत छथि । एहि वर्गक पद्म श्री बिलट पासवान श्विहंगमश विद्यावारिधी राम लषण राम 'रमण', बिन्देश्वर मण्डल, सुभाषचन्द्र यादव, किशोरी यादव, डॉ. बुचरू पासवान, डॉ. जय नारायण यादव, तारानन्द वियोगी सहित मोती लाल मुखिया, डॉ. मेघन प्रसाद, कमलाकान्त भंडारी, डॉ. अशोक कुमार मेहता, डॉ. फूलो पासवान, डॉ. लालती कुमारी, डॉ. लालपरी देवी, डॉ. राजाराम प्रसाद, डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी ओ फजलूर रहमान हासमी, आचार्य नाजिम रिजवी, हसन इमाम दर्द, एजाज, कामल, सैफ रहमानी, शेख शब्बीर अहमद 'जख्मी', मोहम्मद युसूफ, सुश्री टी. फातिमा, स्व. रहमान मियाँ, डॉ. मंजर सुलेमान लोकनि मैथिलीक अभ्यर्थना मे लागल छथि।

व भौगोलिक .ष्टियें मिथिलाक एकटा संपृक्त ओ सुमेलित क्षेत्र उपलब्ध अछि। यद्यपि एकरा उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे गंगा, पश्चिम मे गंडक आ पूर्व मे कोशी नदीक धार सँ सीमांकन, पूर्व मे कतेको लोकनि कयने छथि। ग्रियर्सन सेहो एकर पृथक नक्शा प्रस्तुत कयने छथि। तथापि वर्तमान सीमा निर्धारण लेल विचार-विमर्श आ तर्क सँ पुनर्विचार कयल जा सकैत अछि।

व पूर्व मे मैथिली भाषी लोकनि पर विमर्श आ जनगणना सँ निकलल सबूत सभक समक्ष उपस्थापित भेल अछि। 1961 ई. कें जनगणना मे भागलपुर कें हिन्दी भाषी मानल गेल छल जखनकि ओतऽ 85.24 प्रतिशत व्यक्ति मैथिली भाषी छलाह। मुंगेर कें हिन्दी भाषी मानल गेल छल किन्तु ओतऽ 79.77 प्रतिशत लोकनिक मातृभाष मगही ओ मैथिली छल। हिन्दी भाषी मुजफरपुर क्षेत्रक 77. 48 प्रतिशत लोकनिक मातृभाषा मैथिली छल। दरभंगा कें मैथिली क्षेत्र मानल गेल छल जतऽ 69.8.5 प्रतिशत, लोक मैथिली बजैत छल। इएह हाल पुर्णियाँक छल। ओकर 47.45 प्रतिशत लोकक मातृभाषा मैथिली छलैक। सहरसा मे मैथिली मातृभाषा मानल गेल छल आ एहि भाषाक बाजएबलाक प्रतिशत छल 65.99 प्रतिशत।

व मिथिलाक संस्कृति, रहन-सहन अपन छनि आ अपन विशिष्ट भाषाक लेल विश्व-प्रसिद्ध अछि।

व बिहारक बँटवारा कोनो नव बात नहि अछि। जँ पुरनका बिहार सँ बंगाल, उड़ीसा अलग भऽ सकैत अछि, झारखंड अलग भऽ सकैत अछि, मिथिलांचल किएक नहि। एहि सँ स्वायत्तता पर कोनो असरि नहि भऽ सकैत अछि।

व मिथिला क्षेत्रक आर्थिक दशा सोचनीय अछि। औद्योगिक विकास, मजदूरक पलायनता, कृषि-परक धंधा मे ह्रास, सिंचाइक साधन नगण्य, जूट, चीनी, कागज उद्योग बन्न भऽ गेल अछि। मखान, माँछ, तम्बाकूक खेती, पान सहित कतेको आर्थिक उपार्जन से सम्बन्धित धंधा मरणासन्न अछि। फलतः एहि ठामक वृहत्तर समाज पलायन कऽ देश-विदेशक अन्य भाग मे प्रवास कऽ रोजी-रोजगार लेल चलि जाइत रहल अछि। जखनकि मिथिलाक विकेन्द्रीकरण मिथिलाक विकासक पैघ उपलब्धि भऽ सकैत अछि।

व इतिहास मे विलीन भऽ गेल एहि क्षेत्रक, 44 गोट नदी, 700 पोखरि। उत्तर भारतक अन्न-भंडार कें विकसित कऽ लाभ लेल जा सकैत अछि।

उपयुक्त अवधारणाक विपरीत राज्य विरोधी तर्क सेहो किछु लोकनिक द्वारा प्रस्तुत कयल जा रहल अछि जाहि मे 'मैथिल' शब्दक अर्थ संकोच कयल। गेल बताओल जा रहल अछि। मिथिलाक जातीय-गौरव ज्ञान आ सजगताक विकास में बाधा बनल रहल अछि। एहि ठामक लोककें आत्मपहिचानक कमी छनि। ऊपर सँ एहि क्षेत्रक निवासी बिहारक अन्य क्षेत्रक लोकनि सँ भाषा-संस्कृति, भूगोल आ आनो दृष्टि सँ भिन्न जानि पडैत छथि, मुदा बाहरी भिन्नता कें मिथिला वासी दृढ़ एकताक रूप में नहि बदलि सकलाह अछि। एहि तरहक जागृति कें हुनका मे सर्वथा अभाव देखल जाइत छनि। मातृभाषाक प्रति जागरूकता एहि लोकनि मे कम छनि। अधिकांश लोक अपन बालक-बालिकाक अध्यापनक काज हिन्दी आ अंग्रजी माध्यम सँ कराबऽ में प्रतिष्ठा बुझैत छथि। तथाकथित सम्भ्रान्त वर्ग अपना घरहुँ मे बाल-बच्चाक संग मैथिली मे गप्प नहि करैत छथि। माय-बाबूक बदला 'पापा-मम्मी-डैडी' क प्रयोग धारा-प्रवाह भऽ रहत अछि। फलस्वरूप एहि भाषाक अलोकप्रियता आ एकांगीपन बढ़ि गेल अछि। एहि विषय के पढ़ऽवला छात्र-छात्रा लोकनिक संख्या दिनानुदिन घटि रहल अछि। अष्टम अनुसूची मे अयलाक बादो एहि भाषा कें रोजगारपरक नहि बनाओल गेल अछि। एहि भाषा कें देहातक गामक भाषा निरुपित कयल जा रहल अछि। मैथिली भाषा संगठनक दुर्दशा सभक समक्षे अछि। एहि भाषा से किछु वर्ग-विशेष कें लाभ छनि आ ईहो लोकनि तथाकथित दोसर जाति, नस्लक लोक सभ कें आगाँ बढ़ाकऽ मे पेंच लगबैत रहैत छथि। मैथिल महासभाक कट्टरपन रहल अछि। राज्य लेल चलाओल सामाजिक, राजनीतिक संगठनक पुरान पंथी आ एकांगी सोच रहलनि अछि। क्षेत्रीय जागरुकताक अभाव रहल अछि। एहि राज्यक प्रतीकक अभाव एवं प्रस्तावित राज्यक चौहद्दी भ्रमात्पादक अछि। जनसंख्याक आँकड़ा दोषपूर्ण अछि। राजनीतिक दलक जे उचित आ सम्यक समर्थन भेटबाक चाही से नहि भेटल अछि, एहि ठामक लोक कें मात्र भोटक लेल उपयोग कयल गेल अछि।

सफल ओ समर्पित नेतृत्वक अभाव रहल छनि। आन्दोलन चलाओल गेल अछि मुदा धारविहीन रहल अछि। कोनहुँ आन्दोलन तखनहि सफल होइत अछि, जखन ओहि में निरंतरता रहै, मदा से तकरहु अभाव अछि। राज्य स्थापनाक सही औचित्य नहि बताओल गेल अछि। राज्य विरोधी लोकनि। 'मिथिला' क माँग के विघटनकारी साबित करबाक कुत्सित प्रयास करत रहलाह अछि। राष्ट्रीय एकताक एकटा आओर क्षति पहुँचाओत से चिचिआआल जाइत रहल अछि। एकर अतिरिक्त आओरो कतिपय वितर्क सेहो देल जा रहल अछि।

मुदा से उपर्युक्त वितर्कक पश्चातो मिथिला राज्य अलग भेला सँ एहि सभ मे सुधार सम्भव थिक। ई अवश्य कहल जा सकैत अछि जे मिथिला राज्य स्थापना सँ वर्षों-वर्ष सँ पिछड़ल-पछुआयल वृहत्तर समाज, समाजक मुख्य धारा सँ जुड़ि सकत आ मनुक्ख होयबाक सभ अहमियत पाबि सकत। राज्य बँटला सँ हानि नहि लाभे-लाभ छनि। गाँधीजीक विकेन्द्रीकरणक नारा सफल भऽ सकैत अछि। छोट राज्य भेला सँ सभ तरहक विचार-निर्णय सकारात्मक सफलता भेटि सकत।

एहि तरहें वर्गीय, जातीय, भाषिक, लैंगिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आ भेदभावक अन्त हेतुएँ मिथिला राज्यक स्थापना आवश्यक अछि। मिथिला लेल एक निश्चित भाषा-संस्कृति, एक रंग जीवन-पद्धति आ भौगोलिक वातावरणें एकर साहित्यिक समृद्धि, शैक्षिक पूर्वाधार रहने मिथिला केर एकटा स्वतंत्र प्रदेश घोषित करबा मे कोनो दोष नहि अछि। मुदा से कुछ बिन्दु पर पुनर्विचार करऽ पड़तनि, खास कऽ सरकार, आन्दोलनी ओ आम जन कें।

मिथिला राज्यक परिसीमा की हो। पुरनका मिथिला कें इतिहास मे छिन्न-भिन्न कयल गेल अछि। मोरंग, सुनसरी, सप्तरी, सिरहा, धनुषा, महोत्तरी, सरलाही, रौतहट मिलाकऽ एकटा मिथिला राज्यक निर्माण हो, ताहि लेल नेपाल मे अलगे आन्दोलन चलि रहल अछि। जहाँधरि बिहारक प्रश्न अछि तऽ परिसीमन मादे एहूठामक आन्दोलनी लेखक-विद्वान, राजनीतिज्ञ, आमजन एक मत नहि छथि। तें एहि प्रसंगे कतिपय बिन्दु पर गहन-गम्भीर, चिन्तन-मनन-विवेचन-विमर्श अत्यावश्यक। से जल्दी आ तीव्रतर होअए तखने मिथिला, मैथिली ओ सुच्चा मैथिलक कल्याण सम्भव। कतबो धकिआओल जाय, कतबो पछुआओल जाय मुदा से बहि रहल परिवर्तन बिरड़ो-बिहाड़ि में हमर सुन्दर सकारात्मक सपना जे देखि रहल छी, निश्चित रूपें साकार हएत से स्वतंत्र पृथक राज्य स्थापना भेनहि।

■

मिथिला विभूति पर्वक स्वर्ण-जयन्ती संग मैथिली आन्दोलनी

✍ साहित्यश्री प्रीतम निषाद

आर्यावर्त वा भारतवर्षक भूमण्डल अन्तर्गत मिथिलांगन के ँ दैव-दुआइरक प्रतीक बनल दड़िभंगा नगर के ''विद्यापति सेवा संस्थान''... सम्प्रति 50म् वार्षिकोत्सव आयोजन ''मिथिला-विभूति पर्व समारोह'' के ँ स्वर्ण जयन्ती मनावि रहल अछि। एहि बहन्ने मिथिला औ मैथिलीक अनुचिंतन हेतु समर्पित मैथिली पूत सभक विचार के संग्रहित कयलनि अछि। अस्तु...

''नमस्तुते मिथिलेपुण्ये,सीताराम पदाङ्किते।
सुरादि पूज्यते नित्ये,भू मिथिलेति नमस्तुते...।।''

सन्दर्भतः, हजारहुँ वर्षक तथ्य केआलोक मे मिथिलाऔ मैथिलीक अस्तित्व रामायण, महाभारत औ शतपथ ब्राह्मण ग्रंथसँ लऽ कऽ इतिहास, पुराण, उपनिषद आदि कतेको ग्रंथीय आधार के ँ परिपुष्ट कयलनिअछि।नैमिकारण्यछ, विदेह,मिथि-भू...वा तीरभुक्ति (तिरहुत) रूपैँ हिमालय तराइ क्षेत्रक नारायणी (गंडकी) गंगा औ कौशिकी (कोशी) महानन्दा पनारक सीमा के ँ ''मिथिला'' कहल जाइछ। जेना कि-

''गंगा बहथि जनिक दछिन दिशि, पूर्व कौशिकी धारा।
पच्छिम बहथि गण्डकी उत्तर, हिमवत बल विस्तारा।।
कमला, त्रियुगा, अमृताधेमुरा, बागमती कृत सारा।
मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति, से मिथिला विद्यागारा ।।''

उपर्युक्त तथ्याधार संग, हजारक हजार कविर्मनीषी मैथिली सेवी लोकैन एतहुक लोक-वेद, सभ्यता-संस्कृति औ परम्परा- परिवेशक वृत्ति-व्यवहार के ँ यशोगान सेहो करैत आवि रहला अछि। जाहि मे, जनक, याज्ञ वल्क्य, गौतम, गंगेश, गार्गी, उदयन, कपिल, कणाद, अत्रि-मैत्रेयी, भारती-मंडन, वाचस्पति-भामती, शंकर-अयाची सँ लऽ कऽ ज्योतिरीश्वर ठाकुरऔ कोकिल कवि विद्यापति धरि केर प्रतिभाक आभा जगजियार अछि। ओना तँ महाकवि कालिदास-विद्योतमाक उद्भवस्थली सेहो एहि माटिकैँ सिद्ध कएल जा रहल अछि। एहि भूमिके ँ सीतामढ़ी (पुनौराधाम) सँ जनकपुर धरिक स्नेह सम्बन्धक कथा-सूत्र सेहो अद्भुत अछि। रामानन्दकरी धरती केँ जुराव अयोध या सँ जनकपुर होइत एतहुक परिक्रमा- यात्रा, पूजन-अर्चन हेतुएँ धनुषा, गिरजा स्थान फुलहर केअलावे विद्यापतिक विस्फीडीह औ कपिलेश्वर स्थान सँ लऽ कऽ उगना (महादेव) भवानीपुर-पण्डौल, राजनगर केँ काली-दुर्गा व कामाख्या मठ, मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, सुपौल, सहरसा, पूर्णिया, किशनगंज, भागलपुर, बांका, मुंगेर औ बेगुसराय जिलाक सैकड़ो देव स्थलीके ँ महिमा मंडन, नुकायल नहि अछि। वैदिक, प्राचीन, अर्वाचीन व नवीन युग बोधक आदर्श अनुरूपैँ एतहुक सभ्यता-संस्कृति, बोली-बानी, भाषा-साहित्य, धर्म-दर्शन, लोक-व्यवहार सँ संयुक्त मिथिला (बज्जी विदेहांग) अर्थात् लिच्छवी राजवंश, विदेह राजवंश औ अंग राजवंशक शासन-सूत्र...''गणतंत्रात्मक'' प्रणालिएँ सेहो संचालित भेल। मगध सम्राट अजातशत्रुक विजय प्रभावे संयुक्त मिथिलाक जन-मानस मे, अर्द्धमागधी अपभ्रंशक ध्वनिएँ लोक वाणी के ँ स्वरूपो बनैत रहल। जैन औ बौद्ध धर्मावलंबीक आगमन पछाति सातम शताब्दी सँ विदेह अन्तर्गत संस्कृत संगे पालि- साहित्यक प्रभाव सेहो पड़ैत गेल। तुर्क, अरब, अफगान, यूनानी, फारस एवं मुगल साम्राज्यक शासन बीचकर्णाट, ओइन-वार, खड़ौरे, आओर खणडवला वंशक राज्य स्थापित भेल।

मूलतः ज्योतिरीश्वर ठाकुर एवं कवि विद्यापति, पं.लालदास, कवीश्वर चन्दाझाक रचनाधर्मिता सँ ''देसिल-बयना'' के ँ उद्भव भेल। जाहि मादे गीत, नाट्य, कथा, लोकोक्ति, फकरा, बुझौव्वैल आदि के ँ विकासभेल। तीन-चारि सय बरखक बीच दरबारी भाषा अरबी-फारसी व ऊर्दूक प्रभाव सेहो कायम रहल। सोलहम-सतरहम शताब्दी सँ पुर्तगाली औ आँगल भाषा प्रभावे एतहुक लोक वाणी मे व्यापक बदलाव होइत रहल। संगहि, अपभ्रंशऔ खड़ीबोली वअँगरेजी कैँ प्रभावे मैथिली विशेष रूप सँ दबाइत गेल।

उन्नैसम शताब्दी (1857ई.) सिपाही-विद्रोह संग शुरुभेल ''राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन'' मादे मिथिला-मैथिलीक अस्तित्व हेहरू होइतरहल। छोट-पैघ राजा सभ, अपने राज्य बचावए लेल बेचारगी देखावैत रहल। राष्ट्रपिता महात्मागांधी के ँ मिथिलाक चम्पारण-यात्रा औ आन्दोलनक प्रक्रिया चलय लागल। बहुतो संघर्ष, बलिदानी एवं क्रान्ति, आन्दोलन परिणामे आखिर बीसम शताब्दी सन् 1905ई. मे ब्रितानी सरकार के ँ ''राज्यपुनर्गठन आयोग'' अन्तर्गत केओ मैथिली सिनेही लोकैन ''मिथिला राज्यष्क प्रस्ताव के ँ पारित नहि करावि सकलाह। सन् 1911ई. मे, ब्रिटिश-शासक, राज्यधानी कैँ कलकत्ता सँ दिल्ली हस्तान्तरित कऽ लेलक। परिणामतः 22 मार्च 1912 ई.केँ ''बिहार राज्य'' बनि गेल। एहि तरहेँ कतेको क्रान्तिकारी संघर्ष, रक्तपात औ हजारो-हजारक बलिदानीक पछाति सन् 1947ई. मे देशक आजादी भेटल। मुदा, एतहुक शिक्षा, स्वास्थ्य, श्रम, सेवा, कृषि, व्यवसाय, कल- कारखाना मादे विदशी प्रभाव सनकैत गेल।

पुन ःआजादी भेटला बाद गाँधी जीक हत्यासँ मर्माहत देशमे 26 जनवरी 1950ई.केँ, भरतीय संविधान बनल औ 1952 ई. मे पहिल आम चुनाव भेल। तेकर चारिए बरखक पछाति सन् 1953ई. मे फेर ''राज्य पुनर्गठन आयोग'' क प्रक्रिया शुरु भेल। ओहू मे एकोटा निर्वाचित मैथिल सदस्य गण ''मिथिलाराज्य'' क प्रस्ताव के ँ नहि बढवा सकलक। फलस्वरूप देशमे चौदह गोट राज्य आओर छःगोट केन्द्र शासित राज्य बनि गेल। मुदा ''मिथिला राज्य'' केर संकल्पना फेरसँ हुकरितेँ बड़बड़ाइत रहल। वस्तुतः शिक्षा, व्यवसाय, कृषि एवं औद्योगिक विकास निमित्तेँ त्रासदीक पहाड़ आगू मिथिला एखनो बेबस आओर अवाक अछि। ओना, तँ अनगिनित अभियानी गणकअव-दान सँ पत्र-पत्रिका, कथा-कविता, स्मारिका मादे केन्द्र औ राज्य सरकार के ँ ध्यान आकृष्ट करावैत रहल। जाहि मे बाबू भोला लाल दास, बाबू साहेब चौधरी, जानकी नन्दन सिंह, प्रो. हरिमोहन

झा, पं. सीताराम झा, डा. सर गंगानाथ झा, बाबा बैद्यनाथमिश्र 'यात्री', डा. लक्ष्मणझा, प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन', काँचीनाथ झा 'किरण', पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', डा. सुरेश्वर झा, डा. रामदेव झा, ब्रजकिशोर शर्मा 'मणिपद्म', काशीनाथ मिश्र 'मधुप', पं. गोविन्द झा, पं.भवनाथ मिश्र, डां. भीम नाथ झा, बिलट पासवान 'विहंगम' आदि कवि-साहित्यकारक भागीरथी प्रयास सेहो होइत रहल। सांगठनिक सभा-सेमिनार औ धरना-प्रदर्शन संग मैथिली भाषाकेँ माँग जारी रखलक। सन् 1977ई.मे तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर केन्द्र केँ अनुशंसो प्रेषित कएल। कॉ. भोगेन्द्र झाक आदर्शे आन्दोलन-पदयात्रा क्रमे, स्व. चुनचुन मिश्र, पं. ताराकान्त झा, डा. बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू', डा. बुचरू पासवान, डा. कमला कान्त झा, प्रो. उदय शंकर मिश्र, श्री कमलेश झा, प्रवीण कु. झा, श्री चन्द्रेश जीक अलावे दर्जनो अभियानी केर वोटक्लव मैदान दिल्लीक धरना-प्रदर्शनो चर्चित रहल। डा. जय कान्त मिश्र जीक उच्च न्यायलय- पटनाक परिवादक संज्ञान मादे पू. मुख्यमंत्री स्व. कर्पूरी ठाकुरक शासन काल मे तँऽ किछु साल प्राथमिक वि. मे मैथिलीक पढ़ाई होइत बन्नोभऽगेल। अन्ततः 22-23 दिसम्बर 2003 ई. मे पू. प्रधान मंत्री भारतरत्न स्व. अटलबिहारी वाजपेयी जीक अनुकम्पा सँ देशक संविधान केँ आठम अनुसूची मे दर्ज भऽ मैथिली राष्ट्रीय भाषा भऽ गेल। मुदा, विदेशी दुर्मंशाक चरित्र अगोरने राज्य सरकार साजिश पर साजिश करैत रहल। जौँ कि, राष्ट्रीय शिक्षानीति केँ मादे प्राथमिक पाठ-शाला मे क्षेत्रीय भाषा मे शिक्षण दियौनाई केँ विरुद्ध अनवरत राजनीतिक औ प्रशासनिक शिथलता जारी अछि। एहि निमित्तेँ मैथिलीक पत्र-पत्रिका मादे जन-संचारक गतिविधि सेहो कालक्रमे ठमकैत-रमकैत आवि रहल अछि।

जाहिमे, मिथिला मोद, मिथिला मिहिर, भारती, मिथिला दर्शन, मैथिली दर्पण, लहरि, पकठोस, मिथिला टाइम्स, वैदेही, घर बाहर, प्रवासी, तीर भुक्ति, मिथिला समाद, मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश, मिथिला आवाज, पूर्वोत्तर मैथिलीक अलावे आओर कतेको पाक्षिक-मासिक एवं दैनिक औ कतेको समिति-संगठनक मुख-पत्र वा स्मारिका सभ मैथिली भाषाक संवेदना केँ उजागर करैत आएल अछि। विशेष रूपेँ "मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश" केँ सम्पादक पं. अजय नाथ झा 'शास्त्री'क भागीरथी प्रयास वन्दनीय अछि। संगहि, भारती मंडन (सहरसा), देसिल- बयना (हैदराबाद), अरुणिमा (मधुबनी), उद्यान-किरण (धरमपुर-उजान-दरभंगा) एवं अर्पण (विद्यापति सेवा संस्थान-दरभंगा) के योगदान कम नहि आँकल जा सकैए।

भारत औ नेपालक दर्जनो संगठन सभक जुलुस-प्रदर्शन "पाठशाला मे मैथिली" संगे आब "जनगणना मे मैथिली" केँ खगता बढ़ल जाइए।एहिलेल अखिल भारतीय मिथिला संघ-दिल्ली, चेतना समिति-पटना, मैथिली-साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समिति-मधुबनी, साहित्यांगन- झंझारपुर, मैथिली साहित्य मंच- दरभंगा, मैथिली साहित्यिक महसभा-दिल्ली के अलावे कतेको छोट-पैघ संगठन सभ पाछु तीन बरिख सँ धरना-प्रदर्शन करैत रहलअछि। जाहिमे, सखी-बहिनपाक आरती झा औ छाया- मिश्राक मादे सैकड़ो मैथिलानीक सहभागिता सेहो उत्साहित कएल। संगहि "मिथिला राज्य-निर्माण सेना" औ "एम.एस.यू."क अभियानी मैथिलीसेवी संगे मातृशक्ति-मैथिलानियो आब गाम-घर सँ निकलैत सड़क पर क्रान्तिकारी... डेग बढौलैन अछि। जे, एहि पर्वोत्सव के बहन्ने मिथिलाक विभूतिक स्मृतिएँ, हुनकर कीर्ति-यशक आदर्शे आजुक नवतुरिया हेतु ई लोका- नुरागअछि। मैथिली सेवी कवि-साहित्यकार सँ लऽ कश्अभियानी सभक सक्रियता दरसाबैत, श्री विजय चन्द्र झा, चेतना समितिक श्री विवेका नन्दझा व श्री उमेश मिश्र, कला साधिका प्रेम लता मिश्र 'प्रेम', डा. रानी झा, नाटककार महेन्द्र मलंगिया, डाद्र कमल मोहन चुन्नू, श्री दिलिप कुमार झा, संजीव कु. सिन्हा, शिक्षाविद् डाद्र चन्द्रमोहन झा, अजित आजाद, मिथिला मिररकेँ कन्या-पत्रकार स्नेहा झा एवं ललित कु. झा, किसलय कृष्ण समेत कतेको मैथिल सेवी नव तुरिया मे अनूप कश्यप एवं राकेश कुमार मिश्र व रोहित यादवक कर्तव्यो अनुकरणीय अछि।

बितल ढ़ाई बरिखक बीच विविध व्याधि, व कोरोना त्रासदीक बहन्ने दर्जनोसँ बेसी मैथिली मनीषी लोकनिक अवसान सँ अपूरणीय क्षति भेल अछि। जाहि मे, स्वद्र राम लोचन ठाकुर, डा. उमा कान्त झा, पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', डा. राम देव झा, कवि-पत्रकार सुकान्त सोम, डा. मानस बिहारी 'वर्मा', पंचानन मिश्र, श्याम दरिहरे, डा. हेम चन्द्र झा, प्रो. योगानन्द सिंह झा 'सुधीर', प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', डा. नमो नाथ झा, सुधीर कु. झा, रंगकर्मी मनोज मनुज, कुमारगगन, रमेशरंजन, प्रो. सर्वनारायण मिश्र, आचार्य नाजिम रिजवी, ई. नवोनाथ झा, जीव नाथ मिश्र, डा. विशेश्वर मिश्र, कवि रामचन्द्र मिश्र 'मधुकर', प्रखर चिन्तक जितेन्द्र मिश्र, पत्रकार राजनंदन लाल दास, प्रो. डा. डी. एन. झा, कवि सत् नारायण झा, कवयित्री प्रभा झा, पद्मश्री डा. मोहन मिश्र, शत्रुघन पासवान 'सहयात्री', संजीव प्र. अग्रवाल 'संजू', गीतक राजकुमार रवीनद्र नाथ ठाकुर, शिव कान्त ठाकुर, छात्रा नन्द सिंह "बटुक भाई" एवं प्रणव नार्मदेय आदि सनक सैकड़ो मैथिली साधक लोकैन गो लोकी भऽ गेलाह।

प्रस्तुत आलेख मे हमर ढीठपनी औ अनुराग मादे, 'पाठ शाला मे मैथिली', औ 'जन गणना मे, मैथिली' संगे 'मिथिला राज्य' के अवधारणा के चौतरफा माँग बढाओल जाए। एहि लेल समारोहिए मैथिल नहि, सुच्चा मैथिल बनवाक चाही। ताहि लेल एकमत्थू भऽकऽ सर्वमान्यक डेग बढ़एबाक चाही। मिथिला क्षेत्रक सभ जन-प्रतिनिधि केँ खोलिकऽ खबरदार कए, ई कहि देवाक चाही, जे वोट लेबाक अछि, तँऽ खुलि केँ संग मिलि आन्दोलन केँ मजगूत करू। नहि तँऽ वोट नहिएँ भेटत। तखने मिथिलाक कल्याण होयत। संगे हमर ई अभिशंसा अछि अर्पित अछि, जे...

"मोन मे सुख मनोरथ दबाएब किए,
आश-हिम्मत के डेग बढ़ा कऽ तँ देखू।
दैव आशिष आकाशो सँ बरसए लागत,
लक्ष्य के फूल आँजुर चढ़ा कऽ तँ देखू।।"

अस्तु...स्मारिका मे आलेख आमंत्रण लेल सम्पादक डा. महेन्द्र नारायण राम 'नीलकमल' जीकेँ साधुवाद... जय मिथिला जय मैथिली...!

अमवारी किसान आन्दोलनमे 'यात्री'

✍ सुशान्त कुमार

विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगाक तत्वावधानमे आगामी 6-7-8 नवंबर के मिथिला विभूति पर्वक स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित होमय जा रहल अछि। एहि अवसर पर एहि साल प्रकाशित होमय बला स्मारिका 'अर्पण' केर अंक मिथिला-मैथिली आन्दोलनक स्वर्णिम इतिहास, मिथिला-मैथिली आन्दोलन मे विद्यापति सेवा संस्थानक योगदान ओ मिथिला केर सर्वांगीण विकास लेल पृथक मिथिला राज्यक गठन केर औचित्य सहित गीतकार रवीन्द्र नाथ ठाकुर ओ साहित्यकार उमाकांत सहित विगत साल भरिक अंतराल मे दिवंगत भेल साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, सांस्थानिक आदि क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देनिहार विशिष्ट लोकनि यथा, पं हरिद्वार प्रसाद खण्डेलवाल, डा. गौड़ी शंकर राजहंस, शंभु नाथ झा, सूर्य नारायण चौधरी, दिनेश मिश्र, कामरेड विमल कांत चौधरी, प्रो धीरेन्द्र नारायण झा श्धीरश्, दुर्गानंद झा, हरिश्चंद्र झा, प्रो. मंजु चतुर्वेदी, डा. राजकिशोर झा, छत्रानंद सिंह झा आदिक . तित्व ओ व्यक्तित्व पर केन्द्रित विशेषांक प्रकाशित भय रहल अछि। एहि अवसर पर हम अपन आलेख 'अमवारी किसान आन्दोलनमे 'यात्री'' द रहल छी। एकर कारण अछि जे एहि वर्ष देश स्तर पर हमरा लोकनि एक दिस स्वाधीनताक अमृत महोत्सव मना रहल छी, तय दोसर दिस मिथिला विभूति पर्वक स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित भय रहल अछि। यात्रीजी मैथिली रचना संसार महत्वपूर्ण छनि। आधुनिक मैथिली साहित्यकार यात्रीक रचनाकर्म पर तरह तरह स विचार-विमर्श भेल अछि, मुदा यात्री भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय जनताक एकटा वर्ग, किसान सबहक वर्गक नेतृत्व कयलनि आ ओहि लेल जहल तक गेलाह। अपन साहित्यिक कृतिमे अपन अनुभवके स्थान देलनि। मिथिला-मैथिली आन्दोलनक स्वर्णिम इतिहासमे यात्रीक महत्वपूर्ण भूमिका रहल छैन्ह, मुदा हुनक जीवनक किसान आंदोलन स संबंधित प्रसंग पर विशेष काज नै भेल अछि ताहि लेल ई जगह प्रासंगिक बुझायल आ ई लेख प्रकाशित होमय लेल पठा रहल छी। वर्तमान बिहारक उत्तर पश्चिम भागमे स्थित सीवान जिलाक रघुनाथपुर प्रखंडमे अमवारी नाम सऽअ एकटा गाम अछि, एहि गाममे 1930क दशकमे एकटा आंदोलन भेल छल। ई किसान आंदोलन तत्कालीन दस्तावेजमे अमवारी किसान सत्याग्रह आंदोलन कहबैत अछि। एहि किसान आंदोलनक खास विशेषता अछि जे ई आंदोलनक नेतृत्व स्थानीय किसान नेताक द्वारा नै कयलनि आ राहुल सां.त्यायन जेहन साहित्यकारक द्वारा कयल गेल। एहि किसान आंदोलनमे यात्री हुनक सङ्ग छलखिन। राहुल सांकृत्यायन आ यात्री सीवान, छपरा आदि इलाकामे किसानक बीच भाषण, सभा आ जमींदारक खिलाफ लड़ाई लड़बाक लेल आह्वान कयलनि। दुनू गोटेके किसान आंदोलन लेल जहल जाय पड़लनि। एहि किसान आंदोलनक ई महत्वपूर्ण विशेषता भेल जे एहि आंदोलनमे साहित्यकार नेतृत्व कयलनि आ जहल गेलाह।

अपना देशमे किसानक समस्या बड पुरान अछि। कतेको नेता किसान आंदोलन स निकलल छैथि। किसानके केना सहायता भेटनि, हुनक समस्या क कोना समाप्त कयल जाय, ताहि लेल स्वतंत्रता स पूव आ स्वतंत्रता बाद कतेको आंदोलन भेल, मुदा एखनि धरि किसानक समस्याक समाधान नै भेल अछि। पिछला साल सेहो बड पैघ स्तर पर किसान आंदोलन भेल। देश स्तर पर कृषक अथवा किसान आंदोलन स संबंधित कतेको आंदोलन होयबाक जानकारी भेटैत अछि। जाहि मे नील विद्रोह (1859-62), पबना आंदोलन या पाबना विद्रोह (1870-80), दक्कन विद्रोह (1875), चम्पारण सत्याग्रह (1917), खेड़ा सत्याग्रह (1918), मोपला विद्रोह (1921), बारदोली सत्याग्रह (1928) आदि महत्वपूर्ण मानल जा सकैत अछि। बीसम शताब्दीक शुरूआती तीन-चारि दशकके दौरमे बिहारमे सेहो कतेको किसान आंदोलन भेल, जाहिमे मोकामा, साठी, अमवारी, देकुली, पंडौल, नावकोठी आदि किसान आंदोलन किसानक समस्या सङ्गे मुख्य भूमिकामे रहल अछि। किसान आंदोलन मुख्य रूपस स्वामी सहजानन्द सरस्वती, कार्यानंद शर्मा, यदुनंदन शर्मा, राहुल सांकृत्यायन, बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', रामनन्दन मिश्र आदि नेताके नेतृत्व मे भेल। बीसम शताब्दीक प्रारंभिक दशकमे किसान संस्थागत स्वरूपमे ठाड़ होबय लागल, 1920क दशकमे तरह-तरहक सभा संगठनके निर्माण भेल आ 1930क दशकमे जतय ततय आन्दोलन भेल आ छोट बा पैघ किसान आंदोलन भेल। यात्रीक का मूल नाम बैद्यनाथ मिश्र छल। हिन्दी साहित्यमे नागार्जुन नामस कविता, उपन्यास आदि विविध विधाक लेखन स प्रसिद्ध छैथि। किसान, मछुआरा आदि वर्ण स संबंधित समस्या पर रचना कयने छैथि। कतेको राष्ट्रीय स्तरके पुरस्कार आ सम्मान भेटल छैन्ह मुदा 1968 मे मैथिली काव्य संग्रह ''पत्रहीन नग्न गाछ'' लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त भेलनि। अमवारी किसान सत्याग्रह आंदोलनमे राहुल सांकृत्यायन असगरे साहित्यकार नै छैथि बल्कि यात्री जेहन साहित्यकार सेहो रहथिन।

बीसम शताब्दीक लेखकमे यात्री (बाबा नागार्जुन) राहुल साकृत्यायनके समकालीन छलाह, साहित्यकार रहैथि, दुनू गोटे शैव, शाक्त, वैष्णव, बौद्ध आ अन्ततः कम्युनिस्ट सेहो छलाह। यात्रीजी राहुल स प्रभावित छलाह, हुनक अनुसरण करबाक कोशिश कयलनि। दुनू गोटे अलग अलग समयमे श्रीलंका जाश्कय अपन सनातन संस्कृति से अलग भय बौद्ध धर्म में दीक्षित भेलाह, श्रीलंकाक अलावा तिब्बत गेलाह आ सदिखन समय भेटला पर लेखन कार्य करैत रहलाह। कथा, उपन्यास, कविता आदि विभिन्न विधामे यात्रीक लेखन छैन्ह, मुदा आन दोसर विधा संस्मरण, आत्मकथा, डायरी वा जीवनी स संबंधित सामग्रीक लेखन नै छैन्ह। किसान आंदोलनमे यात्रीक भूमिका बुझवा लेल यात्रीक साक्षात्कार, जे नागार्जुन रूपमे हिन्दी भाखामे देल गेल छल आ ''मेरे साक्षात्कार, नागार्जुनय शोभाकांत, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली'' स प्रकाशित अछि, ओहि पर निर्भर छी। यात्री जी के चर्चा सां.त्यायन सेहो

नागार्जुनक सन्दर्भमे करैत छथिन्ह। सां.त्यायन लिखित हिन्दी पोथी ''मेरी जीवन यात्रा'' मे यात्रीजीक चर्चा नागार्जुनके रूप मे अछि। एहि पोथीस अमवारी किसान आंदोलनक संबंधमे विस्तारस वर्णन छै। 'मेरे साक्षात्कार : नागार्जुन' नामक पोथीक संकलनमे किसान आंदोलन संबंधी एकटा पंक्ति छै, ''स्वामी सहजानंद सरस्वती से मुलाकात तो किसान आंदोलन से जुड़ गए'' अर्थात ई कहल जा सकय या कि स्वामीजीक प्रेरणा स यात्रीजी किसान आंदोलनमे अयलाह। 'नींबू की चाय क्यों' शीर्षक साक्षात्कार, अमिताभ स भेल गप पर आधारित अछि। एहि साक्षात्कारमे साहित्यिक विषयक बीच सां.त्यायन अबैत छथिन आ एहि तरहक जानकारी भेट जाइत छै जे नागार्जुनक झुकाव साहित्यस इतर आन दोसर काज लेल भअ गेलनि। एहि गपमे ई स्पष्ट होइत छै जे नागार्जुनक झुकाव किसान आंदोलन दिस फारवर्ड ब्लॉक, सुभाष चन्द्र बोस आ स्वामी सहजानंद सरस्वती क कारण भेल कियाकि नागार्जुन तअ श्रीलंका स तिब्बत जयबाक लेल भारत आयल छलाह।

'कहाँ-कहाँ से गुजर गया और चमरौधे पर धूल नहीं जमी' नामक शीषर्क से प्रकाशित मनोहर श्याम जोशीक गपमे विशेष रूप से जानकारी भेटैत अछि। एहिमे ओ सब गप आसानीस भेटि जाइत छै जाहि स ई पता चलैत अछि जे नागार्जुन कोन प्रकार स पहिने बौद्ध भेलाह, फेर कोना आ कोन परिस्थितियमे सनातनी आ केहेन समकालीन परिस्थितिमे लेखन कार्य करैत स्वाधीनता आंदोलनमे किसानक पक्ष लेल किसानक नेतृत्व प्रदान कयलनि। एहि संस्मरण बला पोथीमे नागार्जुनस पूछल एकटा प्रश्न अछि- 'यायावरी कब और कैसे शुरू हुई'? नागार्जुन एहि सवालक जबाबमे स्वामी सहजानन्द सरस्वती आ राहुल सां.त्यायनक चर्चा करैत कहै छथिन- ''लौटा तो स्वामी सहजानंद ने कहा- श्राहुल तुमको बर्बाद कर देगा। वह पुरानी ईंटों-पत्थरों की खोज कर रहा हैय तुम जिंदा मुर्दा को खोजो। इस तरह राजनीति में प्रवेश हुआ। काम किया फिर हजारीबाग और भागलपुर जेल में एक-एक साल रहा। अखबार में छपता था श्रीलंका का एक संन्यासी जेल में है लोग उसे परेशान कर रहे हैं (बाबा हँसते हैं)।'' एहि तरह बुझबामे अबैत अछि जे यात्रीजी किसान आंदोलनमे शामिल भय जहल गेल छलाह। यात्रीक किसान आंदोलन संबंधी गपक पुष्टि स्वामी सहजानन्द सरस्वतीक पोथी 'मेरे जीवन संघर्ष' स सेहो भेटैत अछि, मुदा ओहि पोथीमे यात्री वा नागार्जुनक चर्चा नै छनि।

27-30 दिसम्बर, 1938 को राँचीमे आयोजित प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनमे राहुल सां.त्यायन आ यात्री, दुनू गोटे छलाह। राँची स यात्रीजीक यात्रा राहुल सङ्गे किछु मास नै अपितु किछु बरख धरि होइत रहलन। एहि अवधिमे यात्रीजी राहुल सङ्गे किसान आंदोलन आ जहलमे रहलखिन, यात्रीजीक एहि संबंधमे राहुल वांग्मयमे जानकारी भेटैत अछि। राहुलजी यात्रा विवरणमे यात्रीजीक संबंधमे आर बेसि संदर्भ देखल जा सकय अछि।

अमवारी किसान आंदोलन मे जेखनि यात्रीजी जहलमे छलाह, तय सीवान जहल आ ओकर व्यवस्थाक संबंधमे सांकृत्यायन लिखैत छथिन- ''रात को सीवान के जेल में हमें बंद कर दिया गया। जाड़े का दिन था, हमें गन्दे कम्बल ओढ़ने को मिले। पिस्सुओं ने रात को सोने नहीं दिया। लेकिन स्वेच्छापूर्वक इनसे भी गन्दे कम्बलों और इनसे सख्त पिस्सुओं को मैं कितनी ही बार भुगत चुका था। अगले दिन (25 फर्वरी) सबेरे दरवाजा खुला। हमने हाथ-मुँह धोया। नमक के साथ पकाया पतला चावल खाने को मिला। फिर साढ़े तीन छटाँक आटे की रोटी खाने को मिली। किसानों को भला साढ़े तीन छटाँक से क्या बनता, लेकिन मंत्रियों को तो अब जेल भूल गया था, इसलिए इसकी और ख्याल करने की क्या जरूरत थी? नागार्जुन, जलील, मजहर, वासुदेव नारायण महाराज पांडे और कितने ही अमवारी के किसान अब जेल में थे।''

कहियो काल जहलमे छोट पैघ समस्या होइत छलनि, सङ्गमे रेडियो नै रहबाक कारण बाहरी दुनियाक खबर स अनभिज्ञ रहैत छलाह। एहि लेल जहलमे रेडियो रखबाक माँग जहल प्रशासनस कयल गेल आ रेडियो नै देबाक मुद्दा पर आमरण अनशन करबाक घोषणा कयल गेल छल, एहि आमरण अनशनक घोषणा करय बलामे राहुल के सङ्ग यात्री सेहो छलाह। एहि संबंधमे राहुल लिखैत छथिन- ''9 मार्च को जेलखाने के इन्सपेक्टर जनरल के पास निजी रेडियो मँगवाने की आज्ञा माँगी। 11 मार्च को किसान कैदियों की तकलीफ बताते हुए कुछ मांगें रखीं, जो खाने, कपड़े, बिस्तर, पढ़ने-लिखने के सामान और अखवार आदि सुविधा के लिए थी। उसमें लिख दिया गया था, कि हम लोग एक हता इन्तिजार करेंगे, यदि 18 मार्च 12 बजे तक हमारी माँगों के बारे में तै नहीं किया गया, तो हम 5 आदमी (मैं, वासुदेवनारायण, मजहर, जलील और नागार्जुन) आमरण अनशन करेंगे। दूसरे दिन सुपरिटेन्डेन्ट ने कहा- आपकी माँगों में से जिन बातों का संकेत हैं, उन्हें करने के लिए हम तैयार हैं।'' एहि तरहे राहुल सां.त्यायन द्वारा देल गेल किछु जानकारी स बुझयमे ई गप अबैत अछि जे यात्रीजी सहजता स अमवारी किसान आंदोलनमे किसानक समस्याके बुझलखिन आ समय अयलाक बाद किसानक संघर्ष पर पोथी लिखलनि। एहि तरहे हम ई कहि सकैत छी जे अमवारी के किसान सत्याग्रह में यात्रीजीक भूमिका सेहो महत्वपूर्ण रहलनि, यात्रीक बहाने आन कोनो दोसर साहित्यकारके तकबाक कोशिश होबय के चाही जे किसान अथवा कोनो दोसर आंदोलनमे कोन कोन साहित्यकारक की भूमिका कोन कोन तरहे छलनि।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. मेरे साक्षात्कार, नागार्जुनय शोभाकांत, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संशोधित व परिवर्धित संस्करण, 2000, PISBN 81-7016-228-9
2. मेरा जीवन संघर्ष, स्वामी सहजानन्द ग्रन्थावली द्वितीय खण्ड, श्री सीता राम आश्रम ट्रस्ट प्रकाशन, बिहटा, पटना (बिहार) तृतीय संस्करण, 2000
3. मेरी जीवन यात्रा - 2 राहुल सां.त्यायन, राधा.ष्ण, नई दिल्ली, पहला पेपरबैक संस्करण, 2002

मिथिला-मैथिली आन्दोलन : इतिहास आओर दशा-दिशा

✍ डॉ. रंगनाथ दिवाकर

अपन भृंगदूत काव्यमे भगवान् श्रीकृष्णक मुखारविन्दसँ सत्यभामाकेँ मिथिलाक विषयमे कवि गंगानन्द कहओने छथि- यत्र विज्ञ वदनेषु दर्पिता नृत्यति प्रतिगृहं सरस्वती अर्थात् मिथिलाक प्रत्येक घरमे सरस्वती सोल्लास नृत्य करैत छथि। जाहि ठाम घर-घरमे सरस्वतीक वास हो, जतऽ केर आम लोक व्यवहार धर्मक मानदंड मानल जाइत हो- धर्मस्य निर्णयो ज्ञेयः मिथिला व्यवहारतः जतए याज्ञवल्क्य, गार्गी, मैत्रेयी, कालिदास, मंडन, वाचस्पति, विद्यापति, अयाची, शंकर, बच्चा झा प्रभृति मनीषी उद्‌भूत भेल होथि ओहि ठाम मिथिला-मैथिलीक लेल आन्दोलनपर बात करब मोनकेँ उद्विग्न करैत अछि। आखिर ई की परिवर्तन भेल जे कहियो राष्ट्रीय मेधाक प्रतिनिधित्व करएवला क्षेत्रकेँ अपन अस्मिताक रक्षार्थ आन्दोलन करबाक लेल विवश होमऽ पड़ल! एकर बहुत रास कारण अछि जाहिमे एक महत्त्वपूर्ण कारण अंग्रेज सभक कृष्ण भारतीय नीति सेहो अछि। अंग्रेज सभक विशेष रूपसँ मैकालेक नीति आम भारतीयमे अपन भाषा, धर्म-संस्कृति, वेद-पुराण, साहित्य-दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, इतिहास-परम्परा आदिक प्रति हीन भावना आ पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-दर्शन, भाषा आदिकेँ श्रेष्ठ मानबाक प्रवृत्ति विकसित करबामे सफल भेल। मैकालेक मिथ्या दम्भ विषयक अवधारणा छल जे सम्पूर्ण भारतीय ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-दर्शन आ प्रज्ञा यूरोपक कोनो पुस्तकालयक एक अलमीराक एक रैकमे राखल पोथीक परतर नहि कऽ सकैछ, भारतीयमे ने इतिहास बोध अछि ने ज्ञान-विज्ञान केर समझ, कोनो भारतीय भाषा ने शिक्षाक माध्यम भऽ सकैछ आ ने सम्पर्क भाषा, एहि लेल मात्र अंग्रेजीए सक्षम अछि। शिक्षा संबंधी ओ निस्पंदन सिद्धान्त (Theory of Filteration) केँ मानलनि जे हमर निधि हमरा एकर अनुमति नहि दैत अछि जे सभकेँ पढ़ा सकी तेँ मात्र संभ्रान्त वर्गक नेना केँ पढ़ाओल जाएत आ निस्पंदन केर सिद्धान्तानुसार निम्नवर्गीय बच्चा ओकरा सभक संसर्गमे स्वयं पढ़ि लेत। वाह रे अंग्रेजी सोच! यथार्थमे ओ अंग्रेजी शासनकेँ सुचारु रूपसँ चलएबाक लेल एहन भारतीय सभकेँ तैयार करबाक उद्योगमे छल जे रूप-रंगमे तऽ भारतीय हो मुद्रा सोच-विचार आ भावना-कल्पनासँ अंग्रेज हो। अपन प्रयासमे ओ सफल भेल आ एहन असंख्य कृष्ण अंग्रेज तैयार भेल जे भारतीय रहितो अपन नीको चीजकेँ हेय आ अंग्रेज सभक निकृष्टो वस्तुकेँ श्रेष्ठ मानैत रहल। मैकाले केर यैह विषबीज कालान्तरमे छतनार गाछ बनि गेल। भारतवर्षमे अखनो ओकर बहुत रास सन्तति ओकरा अपन पुरखा मानि प्रेतशिलापर बैसा पिण्डदान दैत छथि। भारत आ इंडियाक सोचमे एवं मातृभाषा आ अंग्रेजीक स्थितिमे ई द्वन्द्व अखनो देखल जा सकैछ। मिथिलाक सन्दर्भमे तऽ ई आर प्रासंगिक अछि। आइ कतेक उच्च मध्यवर्गीय लोक अपन परिवारमे धिया-पुता, पौत्र-पौत्री, नाति-नतिनी संग मैथिली बजैत छथि? जँ छातीपर हाथ राखि एकर गणना कएल जाय वा कोनो गाममे कोनो विभवशाली लोक ओतए उपनयन, बियाह, श्राद्ध आदिमे विभिन्न ठामसँ जुटल लोक सभक नेनाक समूहमे जा ओकरा सभक बातचीत सुनल जाय, जे बेसी हिन्दी-अंग्रेजीमे होइत अछि, तखन ओहि मैकाले केर अवधारणाक अपरिमित शक्ति आ युगान्तकारी प्रभाव केर एहसास होयत! सभ घरक एकहि लेखा! अपन भाषा-संस्कृति आ देश-धर्मकेँ हीन मानबाक आत्महीनता केँ तिलांजलि देबए पड़त। ई साँच जे जहिना आत्महीनता अनिष्टकारी अछि तहिना आत्ममुग्धता सेहो अमंगलकारी अछि तथापि एहि प्रवृत्तिसँ मुक्त होएब उचित जे अपन भाषा आ संस्कृतिमे नीको चीजकेँ तखने स्वीकार करब जखन कोनो विलियम जोन्स, कोनो गेटे, कोनो मैक्समूलर, कोनो राबर्ट वा विलियम सन आंग्ल नामधारी ओकरा श्रेष्ठ कहत! ई सत्य जे भारतीय वाङ्मयमे सभटा सर्वस्वीकार्य आ उचिते बात नहि अछि। मुदा इहो सत्य जे एहन मात्र भारतीय वाङ्मय संग नहि अछि। सभटा प्राचीन सभ्यता संग एहन बात छैक। अनर्गल कथादि केर प्राचुर्य सभ सभ्यताक प्राचीन ग्रंथमे छैक। प्रत्येक युगक यथार्थ भिन्न होइत छैक। ओहि समय जे उचित रहए से अखनो प्रासंगिक हो, ई आवश्यक नहि। अपन समुचित दृष्टिसँ, नीर-क्षीर विवेकसँ एकर निर्धारण करी जे श्रेय की आ त्याज्य की। एहि समुचित दृष्टि आ विवेक लेल अपन भाषा-संस्कृतिक प्रति आदरभाव आवश्यक। एहि आदरभावसँ विमुख भेल जन-जनमे चेतना व जागृति आनबाक हेतु जड़िसँ जुड़ल आन्दोलन केर आवश्यकता सभ दिन रहैत अछि। मिथिलामे सेहो एहि विन्दुपर आन्दोलन वा जागृतिक प्रयास केर इतिहास रहल अछि।

शिमलामे छुट्टी मना रहल भारतवर्षक भाइसराय कर्जन 19 जुलाई 1905केँ ओतहिसँ बंगाल विभाजन केर घोषणा कयलनि। घोषणा होइते जेना बिढ़नीक खोँतामे ढेला पड़ि गेल हो। भारी विरोध शुरू भेल। भाषा आ धर्मक नामपर पूर्व बंग आ असम बनल छल। सभ ठाम बंग-भंग केर प्रबल विरोध भेल मुदा बंगालमे ई अत्यन्त उग्र छल। अग्निपुत्र सभक उदय भेल। उग्र राष्ट्रीय भावनाक संचार भेल। प्रबल प्रतिरोधक प्रभाव रहल जे 12 दिसम्बर 1911केँ दिल्लीमे आयोजित दरबारमे घोषणा भेल जे बंग-भंग समाप्त कएल जा रहल अछि। 1912मे भारतवर्षक

राजधानी कलकत्तासँ दिल्ली आबि गेल। एहि वर्ष सेहो पृथक् राज्यक माँग भेल आ 22 मार्च 1912कें बिहारक गठन भेल।

मिथिलेश रमेश्वर सिंह मिथिलाक्षर लिपि केर स्थानपर देवनागरीक गागरीमे डुबकी लगा लेने छलाह। राज-काजक भाषा रूपमे फारसी-अंग्रेजीक स्थानपर हिन्दीकें स्थान देलनि। 1910मे ओ मैथिल महासभाक स्थापना कयलनि आ 1921मे मिथिला राज्यक माँग कयलनि (मिथिलेश कुमार झा : Language Politics and Public Sphere in North India : Making of the Maithili Movement, पृ. 156)। हुनकर एहि काजकें मिथिलाक्षर लिपिकें त्याग करबाक भूल केर प्रायश्चित कहि सकैत छी। बादमे मैथिल महासभाक 35म राजनगर सम्मेलन (1946), 37म दरभंगा सम्मेलन (1948) आ 38म मधुबनी सम्मेलन (1949)मे मिथिलेश सर कामेश्वर सिंह अपन अध्यक्षीय उद्बोधनमे मिथिला राज्यक प्रश्न उठबैत रहलाह, प्रस्ताव पारित होइत रहल मुदा सरकार कानमे तूर-तेल देने सुतले रहल।

1936मे जखन उड़ीसाकें अलग राज्यक दर्जा देल गेल तखन फेर मिथिला राज्यक कर्ता-धर्ता सक्रिय भेलाह मुदा कोनो सार्थक सुरि-सारि संभव नहि भेल। 1948मे जस्टिस एस के धर केर चारि सदस्यीय समिति भाषाक आधारपर राज्यक गठन केर विरोध कयलक। एकर बाद एहि समिति केर सिफारिश सभक समीक्षा हेतु गठित जेवीपी (जवाहर लाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल आ पट्टभि सीतारमैय्या) समिति सेहो भाषाक नामपर राज्य निर्माणक विरोध कयलक। एहि निर्णय केर भारी विरोध भेल। तेलुगु मनीषी पोट्टी श्रीरामुलु (16 मार्च 1901-15 दिसम्बर 1952) तेलुगुभाषी राज्यक लेल 19 अक्टूबर 1952सँ आमरण अनशन शुरू कयलनि। 56 दिनक अनशन बाद ओ देहत्याग कयलनि। हुनका अमरजीवी कहल गेल। भारतवर्षक आजादीक लेल लाहौर सेन्ट्रल जेलमे यतीन्द्रनाथ दास 63 दिनक अनशन करैत 13 सितम्बर 1929कें अपन सुन्दर काया भारतमाताकें अर्पित कयने छलाह। श्रीरामुलुक देहत्यागसँ यतीन्द्रनाथ केर आत्मोत्सर्ग लोककें मोन पड़ल। यज्ञाग्निमे जेना घी-चन्दन-गुग्गुलादि केर आहूति पड़ि गेल हो! सम्पूर्ण क्षेत्र दलमलित भेल। कहि सकैत छी जे उग्र आन्दोलनकें शान्त करबा लेल तेलुगु भाषाक नामपर श्रीरामुलुक लहासपर 1अक्टूबर 1953कें तेलुगुभाषी राज्य आन्ध्रप्रदेशक उदय भेल। बादमे एहिसँ 2 जून 2014कें तेलांगना राज्य अलग भेल। भाषाक नामपर राज्य गठन केर माँग जोर पकड़ि रहल छल। 19 दिसम्बर 1953कें राज्य पुनर्गठन आयोग बनल। जस्टिस सैय्यद फजल अली, हृदयनाथ कुंजरू आ सरदार के एम पणिक्कर एकर सदस्य भेलाह। 1955मे समर्पित अपन प्रतिवेदनमे समिति कहलक जे 1951 केर जनगणनाक आधारपर भारतमे 844 भाषा अछि मुदा 91 प्रतिशत लोक मात्र 14 भाषाक उपयोग करैत छथि। 1956मे एहि समितिक अनुशंसा स्वीकृत भेल जाहि आधारपर 14 राज्य आ 6 केन्द्र शासित प्रदेश बनल। मैथिलीकें हिन्दी संग गानल गेल आ मिथिला पृथक् राज्य नहि बनि बिहारमे रहबाक लेल विवश भेल। यद्यपि 1952मे डॉ. लक्ष्मण झा पृथक् मिथिला राज्यक लेल आन्दोलन शुरू कऽ देने छलाह। बाबू जानकी नन्दन सिंह सेहो एहि लेल आवाज बुलन्द कयलनि। अखिल भारतीय मैथिल महासभा राज्य पुनर्गठन आयोगकें मिथिला राज्यक लेल 1953मे स्मारपत्र देलक। एहि वर्ष अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद् सेहो पृथक् मिथिला राज्य निर्माण हेतु माँगपत्र देलक। जानकी बाबू 1954मे राज्य पुनर्गठन आयोगकें स्मारपत्र देलनि। 1954मे कांग्रेस केर कल्याणी (कलकत्ता) अधिवेशनमे एहि माँगकें तीक्ष्णतासँ उठएबाक लेल 65 आन्दोलनकारी संग कलकत्ता विदा भेलाह। आसनसोलमे सभकें 22 जनवरी 1954कें गिरतार कऽ लेल गेल। अधिवेशनमे नहि जयबाक शर्त्तपर न्यायालय द्वारा छोड़ल गेल। जानकी बाबू किछु गोटे संग तखनो कलकत्ता पहुँचि गेलाह। कलकत्तामे 23 जनवरी 1954कें नागेश्वर मिश्रजीक अध्यक्षतामे मिथिला राज्यक लेल बैसार भेल। फेर 26 जनवरी 1954कें गिरीश पार्क, कलकत्तामे जानकी बाबूक अध्यक्षतामे पैघ सभा भेल जाहिमे मिथिला राज्यक माँग दृढ़तापूर्वक उठाओल गेल। एहि कारणें जानकी बाबूपर कांग्रेसमे अनुशासनात्मक कार्रवाई भेल आ 1956मे बाबू जानकीनन्दन सिंह कांग्रेससँ हटि गेलाह।

डॉ. लक्ष्मण झा अपन अतुलित मेधाक सारस्वत उपयोग करैत मिथिलाक समग्र स्वरूप स्थिर करबा लेल Mithila and Magadh (शोध-प्रबंध, 1948), Mithila :A Union Republic (1951), Mithila in India (1953), Mithila :A Sovereign Republic (1954), Mithila will Rise (1955), The Voters in Mithila (1956) आदि पोथी सभक रचना कयलनि। हुनक मिथिला मण्डल संस्था सक्रिय रहल मुदा सरकार सीरक तानने सुतले रहल। सरकारक दृष्टिकोणसँ व्यथित डॉ. लक्ष्मण झा मिथिला-मैथिलीक स्वतंत्र स्वरूप आ मिथिला राज्यक औचित्यपूर्ण आवश्यकता दर्शाबैत प्रधानमंत्रीकें 1956मे अपन मिथिला संबंधी किछु रचना आओर आन दस्तावेज सहित मिथिला राज्य लेल माँगपत्र देलनि।

मिथिलाक सन्दर्भमे सरकार सरिपहुँ सुतले रहल जखन कि गुजराती आ मराठी विवादक बाद 1 मई 1960कें बम्बईकें महाराष्ट्र आ गुजरातमे बाँटल गेल, 1 दिसम्बर 1963 कें नागा आन्दोलन केर बाद असमसँ नागालैंड बनल, 1 नवम्बर 1966कें पंजाबी आ हिन्दीक नामपर पंजाबसँ हरियाणा पृथक् कएल गेल। 25 जनवरी 1971कें हिमाचल पूर्ण राज्य बनल। 21 जनवरी 1972कें केन्द्र शासित मणिपुर आ त्रिपुराकें पूर्ण

राज्यक दर्जा देल गेल। सिक्किम 26 अप्रैल 1975कें बनल, 20 फरवरी 1987कें अरुणाचल/मिजोरम आ 30 मई 1987कें गोवा बनल। 1 नवम्बर 2000कें मध्यप्रदेशसँ छत्तीसगढ (26म राज्य), एहि वर्ष 9 नवम्बरकें उत्तरप्रदेशसँ उत्तराखंड (27म राज्य) आ 15 नवम्बरकें बिहारसँ झारखंड (28म राज्य) बनल। 2014मे आन्ध्रप्रदेशसँ तेलांगना (29म राज्य) बनल। 5 अगस्त 2019कें जम्मू-कश्मीरसँ धारा 370/35ए हटएलाक बाद आब भारतवर्षमे 28 राज्य बाँचल अछि। सत्य अछि जे दवाबपर किछु राज्यक नाम सेहो परिवर्तित भेल जेना मैसूर कर्णाटक, मद्रास तमिलनाडु, उत्तरांचल उत्तराखंड, उड़ीसा ओडिशा आ पांडिचेरी पुडुचेरी भेल मुदा मिथिलाक अस्तित्व ओहिना रहल। एहि वर्णनसँ एक बात धरि स्पष्ट अछि जे सरकार राज्य निर्माणमे आन्दोलनेक भाषा बूझैत अछि। मिथिला राज्यक लेल आन्दोलन तऽ चलिए रहल छल मुदा सरकार एहिपर कोनो गंभीर विचार नहि कयलक।

मिथिला-मैथिल-मैथिलीक विकास हेतु प्रतिबद्ध अनेक संस्था बनल। पुरान संस्था सभमे मैथिल शिक्षित समाज, कलकत्ता; मिथिला विकास परिषद्, कलकत्ता; मैथिल सम्मेलन, पटना; सुबोधिनी सभा, पटना; मैथिल युवक संघ (अड़ाइडंगा आ पूर्णिया), विभिन्न मैथिल सभा (आगरा, अजमेर, अलवर, जबलपुर, हाथरस, इटावा, झाँसी, जैत मथुरा), मैथिल ब्राह्मण सेवा समिति, हरियाणाय अखिल भारतीय मैथिल महासभा (1949-50), प्रवासी मैथिल ब्राह्मण सभक संघ, वैदेही समिति, चेतना समिति, संकल्प लोक, विद्यापति सेवा संस्थान प्रभृति संस्था सभ प्रमुख अछि। मिथिला-मैथिलीक लेल जागृतिक प्रचार-प्रसारमे संस्था सभक अवदान महत्त्वपूर्ण अछि।

मैथिली पत्र-पत्रिका सभक अभ्युदय मिथिलासँ बाहरे शुरू भेल। मैथिल हित साधन 1905मे मासिक रूपमे मधुसूदन झाजी (जयपुर) आ रामभद्र ओझाजी (अलवर स्टेटक मुख्य न्यायाधीश) केर सत्प्रयाससँ जयपुरसँ प्रकाशित होएब शुरू भेल। म.म. मुरलीधर झा, पं. दीनानाथ मिश्र, पं. कुशेश्वर कुमर आदि महानुभाव 1906मे काशीसँ मिथिला मोद शुरू कयलनि। 1908मे दरभंगासँ मिथिला मिहिर शुरू भेल। 1935-36मे आ. सुमनजीक सम्पादनमे प्रकाशित एकर मिथिलांक अखनो मिथिलाक धरोहर मानल जाइत अछि। 17 जुलाई 1947सँ मार्च 1954 केर मिथिला मिहिरक अनेक अंकमे मिथिला राज्यक माँगसँ संबंधित बहुत रास स्तरीय आलेख प्रकाशित भेल छल। ब्रजस्थ प्रवासी मैथिल पं. रामचन्द्र मिश्र 1920मे मथुरासँ मिथिला प्रभा शुरू कयलनि। 1925मे उदित नारायण दासजी आ नन्दकिशोर दासजीक संयुक्त सम्पादनमे लहेरियासरायसँ श्री मैथिली नामक पत्र केर प्रकाशन शुरू भेल जे उदितजीक खराब स्वास्थ्यक कारणे अल्पजीवी भेल। 1929मे विद्यापति प्रेस, लहेरियासरायसँ कुशेश्वर कुमरजी आ भोलालाल दासजीक सम्पादनमे मिथिला मासिक पत्र शुरू भेल। एहि समस्त पत्र-पत्रिकादिक मिथिला-मैथिलीक विकासमे महत्त्वपूर्ण अवदान अछि। मैथिलीमे अनेक पत्र-पत्रिकादि शुरू भेल मुदा दुर्भाग्य जे ई सभ अल्पजीवी होइत रहल। दैनिक पत्र स्वदेश आ मिथिला आवाजकें अकाल काल-कवलित होयब हम मैथिल सभक भाषाप्रेमपर प्रश्नचिह्न तऽ अवश्य लगबैत अछि। सुखद जे मिथिला आवाज पाक्षिक रूपमे फेर शुरू भेल तथा मैथिली दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश लगातार अपन 262म अंक (17 सितम्बर 2022) प्रकाशित कऽ चुकल अछि। एकर निरन्तरता बरकरार रहए एहि लेल तन-मन-धनसँ सहयोग करब आ एकरा डेबिकें, जोगाकें राखब प्रत्येक मैथिलक पुनीत कर्त्तव्य थिक। आमजन केर ई भाव मिथिला-मैथिलीक यज्ञमे समिधा होयत।

एहिना पठन-पाठनमे मैथिली सेहो मिथिलासँ बाहरे शुरू भेल। राजा कृत्यानंद सिंह, राजा कालिकानंद सिंह, कुमार गंगानंद सिंह, बाबू गंगापति सिंह, ब्रजमोहन ठाकुरजी, विद्यानंद ठाकुरजी, राजा टंकनाथ चौधरी प्रभृति दानी-अभियानी सभक सत्प्रयाससँ 1914मे कलकत्ता विश्वविद्यालय केर भविष्यद्रष्टा उप कुलपति सर आशुतोष मुखोपाध्यायक समय मैथिली चेयर स्थापित भेल। फेर 1919मे मैथिलीमे स्नातकोत्तर केर पढ़ाइ शुरू भेल। पं. बाबूजी मिश्र, पं. खुद्दी झा, डॉ. सुधाकर झा शास्त्री, बाबू गंगापति सिंह आदिकें मैथिलीक आरम्भिक प्रोफेसर होएबाक गौरव भेटल। 1972 केर बाद ई पढ़ौनी बन्द भऽ गेल। पुनः पढ़ौनी शुरू करबाक प्रयास चलि रहल अछि। पटना विश्वविद्यालयमे 1948सँ मातृभाषा रूपमे मैथिलीक पढ़ाइ शुरू भेल। मैथिली पढ़निहार छात्र सभक अभाव रहैत छल तखन अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगाक प्रचार विभागक मंत्री अभिभावकगणसँ एक निवेदन कयलनि। पत्र रूपमे प्रचारित एहि निवेदनमे अनुरोध कएल गेल छल जे मातृभाषाक निरादर माताक निरादर थिक। एहन लोक देशभक्तिक दावी नहि कऽ सकैत छथि तें छात्र मातृभाषा अवश्य पढ़थि ताहि लेल अपने सब सेहो यत्न करी। मातृभाषा पत्रमे मैथिली पढ़बाक लेल प्रोत्साहन देल जाय। एकर कचोट अखनो अछि जे एहि निवेदनकें निर्गत भेना सात दशकसँ बेसी भेल मुदा स्थिति आइयो लगभग ओहिना अछि। मेधावी छात्र तऽ ओम्हर ताकबो नहि करैत छथि। एकर कारण मानसिकता आ मैथिलीकें अर्थकरी विद्या नहि बनि सकब थिक। बिहारमे जे वित्तरहित व्याख्याताक अवधारणा बनि गेल छल से मेधाक सत्यानाश कयलक। आब एम्हर नियमित नियुक्ति शुरू भेल जे सुखद संकेत अछि। मैथिली शिक्षक केर बहालीसँ स्थितिमे गुणात्मक सुधार आबि सकत। एहि लेल प्रयास चलि रहल अछि। मिथिला-मैथिली आन्दोलन केर एक प्रमुख स्वर पाठशालामे

मैथिली अछि। श्री दिलीप कुमार झा आदि शिक्षकगण एहि दिशामे बेस सक्रिय छथि।

जन सेवा आयोगक परीक्षामे ऐच्छिक विषय रूपमे मैथिलीक स्वीकृतिक घोषणा 1957 केर आम निर्वाचनसँ पूर्व भेल छल। एकर प्रस्तावक पं. राधानन्दन झाक अभिनन्दन केर ओरिआन अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद् केर प्रधान मंत्री रूपमे सुप्रसिद्ध कवि पं. सुरेन्द्र झा सुमनजी सीएम महाविद्यालय, दरभंगामे कयलनि। मैथिली छात्र परिषद् एमएल एकेडमी, लहेरियासरायमे पं. नागेश्वर मिश्र केर अध्यक्षता आ पं. लक्ष्मण झा द्वारा उद्घाटित समारोहमे सेहो राधानन्दनजीक अभिनन्दन कयलक। बिहार लोक सेवा आयोगक अध्यक्ष रूपमे डॉ. अमरनाथ झाक मैथिलीकेँ ऐच्छिक विषय रूपमे मान्यता दिएबाक दिशामे अप्रतिम अवदान अछि। बादमे मैथिली केँ ऐच्छिक विषय सूचीसँ निष्कासित सेहो कयल गेल मुदा ई मिथिला-मैथिली आन्दोलन केर सफलते थिक जे आइ मैथिली बिहार लोक सेवा आयोग एवं संघ लोक सेवा आयोगमे ऐच्छिक विषय रूपमे सम्मिलित अछि आ प्रत्येक वर्ष मैथिली ऐच्छिक विषय राखि बहुत रास विद्यार्थी सरकारी पदाधिकारी बनैत छथि। एहन सफल प्रतिभागी जँ अपन-अपन कार्यालयमे मैथिलीक बेसीसँ बेसी उपयोग करथि आ कोनो मैथिलसँ निधोख मैथिलीएमे गप्प करथि तखन मैथिलीक स्वाभाविक विकास आसान भऽ जाएत। मैथिलीक प्रति यैह हुनकर सरियत! एहिसँ मिथिला-मैथिली आन्दोलनकेँ अनायासे तीव्र गति भेटि जेतैक।

प्रो. धर्मेन्द्र कुमर अपन गाम पुतइमे दि. 29, 30 आ 31 मई 1984केँ वृहत् रूपमे अखिल भारतीय मिथिला जन सम्मेलनक सफल आयोजन कयने छलाह। एहिमे जननेता भोगेन्द्र झाजी, रमाकान्त झाजी, किरणजी, मणिपद्मजी, प्रो. मायानंद मिश्र, डॉ. सुरेश्वर झा प्रभृति नरश्रेष्ठ सभक उपस्थिति छल। एहि अभूतपूर्व समारोहक प्रथम दिनक सम्मेलन केर अध्यक्षता डॉ. सुरेश्वर झा कयने छलाह आ मंच संचालन प्रो. मायानंद मिश्र कयने रहथि। दोसर दिन डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'जीक अध्यक्षतामे चलि रहल सम्मेलनमे डॉ. सुरेश्वर झा पृथक् मिथिला राज्यक प्रस्ताव रखलनि जे सर्वसम्मतिसँ पारित भेल। एहि त्रिदिवसीय मिथिला जन सम्मेलनक सफलता अपूर्व रहल। प्रो. धर्मेन्द्र कुमर आ कालीकान्त झाजी सहित पुतइ ग्रामवासी सरिपहुँ बधाई केर पात्र छथि।

1992सँ अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद् मिथिला राज्य आन्दोलनमे सक्रिय रूपसँ लागल अछि। डॉ. धनाकर ठाकुर, कमलाकान्त झाजी, डॉ. भुवनेश्वर प्रसाद गुरमैता आ के एन झाजीक कमानमे ई संस्था अपन सक्रियता देखओने छल। मिथिला राज्य संघर्ष समितिक गठन 1994मे भेल। मधुबनीमे आयोजित अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद् केर दोसर सम्मेलन 1996मे डॉ. जयकान्त मिश्रकेँ अध्यक्ष बनाओल गेल। चुनचुन मिश्रजी, प्रो. उदयशंकर मिश्र, नगीना प्रसाद महतोजी, प्रमोद कुमार झाजी, सत्य नारायण महतोजी, डॉ. धनाकर ठाकुर प्रभृति उत्साही अभियानी सभक नेतृत्वमे रहल ई संस्था अखनो मिथिला-मैथिली एवं मिथिला राज्यक लेल सक्रिय रूपसँ लागल अछि। जनसम्पर्क आ प्रचार-प्रसारसँ आन्दोलनकेँ धारदार कएल जा रहल अछि। कतेको वर्षसँ अखिल भारतीय मिथिला राज्य संघर्ष समिति संसद केर सत्रारम्भक प्रथम दिन मिथिला राज्यक माँग दोहराबैत अछि। सम्प्रति एकर अध्यक्ष वैजूजी छथि। 1996मे मिथिला राज्यक लेल जनसम्पर्क आ पदयात्राक मध्य मिथिलांचल विकास कांग्रेस मिथिलाक लेल स्वायत्त विकास परिषद केर गठनक माँग कयलक। 2013मे मिथिला राज्य निर्माण समितिक गठन भेल। योगी जनक कुशवाहाजी (मधेपुरा) अध्यक्ष आ महेन्द्र मिश्रजी महासचिव भेलाह। अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषदसँ अनुप्राणित आदर्श मिथिला पार्टीक अध्यक्ष श्री सुधीरनाथ मिश्र (अररिया) आओर महासचिव श्री मनोज कुमार यादव (वैशाली) छथि। सभक एकमात्र लक्ष्य मिथिलाक कल्याण आ मिथिला राज्यक निर्माण अछि। 14 जनवरी 2013केँ दिल्लीमे गठित मिथिला राज्य निर्माण सेना विभिन्न कार्यक्रम आ पुनर्जागरण यात्रासँ अपन सक्रिय उपस्थिति दर्शा रहल अछि। भले एकर मूल वाक्य 'ले जान की दे जान'सँ सभक सहमति नहि रहल हो मुदा एकर कार्यक्रमसँ सभक सहमति निश्चित रहैत अछि। श्री रंगनाथ ठाकुर, दीपकजी, राजेश कुमार झाजी, नुनूजी प्रभृति उत्साही अभियानी सभक नेतृत्वमे संस्था अपन नाम सार्थक करैत अछि। 24 अप्रैल 2022केँ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह मेमो. कॉलेजमे मिथिला राज्य विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी केर सफल आयोजन भेल। अखिल भारतीय मिथिला संघ, नयी दिल्ली 24 दिसम्बर 2017केँ भव्य रूपसँ अपन स्वर्ण जयन्ती समारोह मनओलक अछि। संस्थाक राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा बेस सक्रिय छथि। 'तीरभुक्ति'क प्रकाशन सेहो होइत अछि।

5 अगस्त 2000केँ पं. ताराकान्त झा मिथिला राज्य अभियान शुरू कयलनि। स्वयं संरक्षक छलाह आओर सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. मोहन मिश्र अध्यक्ष। बादमे डॉ. सुरेश्वर झा कार्यकारी अध्यक्ष आ प्रो. चन्द्रकान्त मिश्र सचिव केर दायित्व वहन कयलनि।

4 अगस्त 2004केँ पं. ताराकान्त झा एक प्रेसवार्तामे पृथक् मिथिला राज्यक लेल आन्दोलनक घोषणा कयलनि। एहि कारणेँ भाजपासँ निष्कासित भेलाह। 15सँ 23 दिसम्बर 2007 धरि ताराकान्त बाबू मिथिला राज्यक अलख जगएबाक लेल बेगूसराय, खगड़िया, कटिहार, पूर्णियाँ, किशनगंज, अररिया, फारविशगंज, मधेपुरा, सहरसा, सुपौल आदि क्षेत्रक भ्रमण कयलनि।

2015मे कीर्त्तिवर्द्धन भागवत झा आजाद संसदमे एहि

मुद्दाकेँ उठओलनि आ मिथिला राज्यक माँग कयलनि। अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्ली अध्यक्ष मान. पूर्व सांसद राजेन्द्र प्रसाद यादव एवं महासचिव विजय चन्द्र झाक नेतृत्वमे एहि आन्दोलनकेँ जगओने छथि। Youth of Mithila (अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद् केर दिल्ली इकाई) आ Voice of Mithilak भवेश नंदन आ आनन्द कुमार झा जमीनी कार्यकर्ता सभमे जोश दिया रहल छथि। दिल्लीक जंतर-मंतरपर राजीव कुमार झा (कवि एकान्त) क चारि दिनक अनशन मिथिला राज्य आन्दोलन केर एक महत्त्वपूर्ण पड़ाओ रहल। हिनकर Rise for Mithila एहि आन्दोलनमे अपन जोर लगा रहल अछि। मिथिलांचल विकास सेना, दीनाभद्री संस्थान, मिथिला फाउंडेशन एवं अन्य समानधर्मी संस्था सभक कार्यकर्तागण अनवरत एहि आन्दोलन केर सफलताक लेल सक्रिय छथि।

2019मे विद्यापति सेवा संस्थानक 47म विद्यापति स्मृतिपर्वमे सांसद श्री गोपालजी ठाकुर, सांसद श्री अशोक कुमार यादव एवं विधायक श्री संजय सरावगी मंचसँ अलग मिथिला राज्यक माँग उठओलनि। कहियो मानकृ सांसद हुकुमदेव नारायण यादवजी लोकसभामे मैथिलीमे शपथ नेने रहथि एहि बेर तऽ मिथिलांचल केर समस्त मानकृ विधायकगण विधानसभामे मैथिलीमे शपथ लेलनि। एहि अपूर्व घटनाकेँ जनाकांक्षाक प्रति/वनिए मानल जा सकैछ जेकर मूलमे मिथिला-मैथिली आन्दोलने थिक। रेलवे केर उद्घोषणा, दूरदर्शन-आकाशवाणीपर कार्यक्रम, दूरसंचार विभाग द्वारा मोबाइलपर मैथिलीमे पूर्व ध्वन्यंकित आवाज आदि एहि आन्दोलन केर सफलते थिक। अखन तऽ बहुत दूर जयबाक अछि।

ई गर्वक विषय रहल जे 22 दिसम्बर 2003केँ लोकसभा आ 23 दिसम्बर 2003केँ राज्यसभासँ मैथिलीकेँ भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटल। डॉ. सी पी ठाकुर, डॉ. वैद्यनाथ चौधरी वैजू एवं अन्य प्रतिनिधि प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयीकेँ आभार प्रकट करबाक लेल गेल छलाह। वार्ताक क्रममे अटलजी कहलनि जे एकरा मात्र अपने संग सीमित नहि राखब, आर विस्तार देब। एहिसँ अनुप्राणित वैजूजी अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन शुरू कयलनि। प्रतिवर्ष 22-23 दिसम्बरकेँ मैथिली अधिकार दिवस रूपमे देशक विभिन्न क्षेत्रमे एकर गरिमामय आयोजन होइत अछि। 2021 केर आयोजन अयोध्याधाममे 22-23 दिसम्बरकेँ भेल छल। मैथिल परिधान धोती-कुरता आ मिथिला पेंटिंगयुक्त पाग-डोपटामे सजल-धजल पुरुषवर्ग आ मिथिला पेंटिंगसँ सुशोभित साड़ीमे सजल मैथिलानी सभक जुलूस जखन जानकीजी केर जयनाद करैत अयोध्याक बड़ा भक्तमाल आश्रमसँ श्रीराम जन्मभूमि धरि चलल तखन जेना अवध केर सड़क सियाराममय भऽ गेल हो। अपूर्व दृश्य छल ओ! बाट चलैत बटोही सभकेँ चकबिदोर लागि रहल छल। जानकीक नैहरसँ आएल मैथिल हुनक सासुर अवधमे हुनकर जयघोष कऽ रहल छल। अयोध्याक किछु भावुक महन्थ सभक आँखि ई अनुपम दृश्य देखि नोरा गेल रहए। समारोहमे बजैत काल सेहो किछु गोटे भावुक भेल छलाह। एहि सम्मेलनमे बहुत गोटेकेँ विभिन्न क्षेत्रमे उत्कृष्ट अवदानक लेल मिथिला रत्न केर सम्मानोपाधिसँ अलंकृत कएल गेल छल।

विद्यापति सेवा संस्थानक एहि बेर 2022क आयोजन तऽ सरिपहुँ समस्त कीर्तिमान ध्वस्त करैत फीनिक्स (एरिजोना, अमरीका)मे भऽ रहल अछि। सम्प्रति डॉ. महेन्द्र नारायण राम एकर अध्यक्ष आ डॉ. वैद्यनाथ चौधरी वैजू महासचिव छथि। निश्चित रूपसँ मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटब एहि आन्दोलन केर सफलता थिक मुदा ई एकटा पड़ाओ मात्र अछि। अखन यात्रा समाप्त कहाँ भेल अछि अखन तऽ कोसक कोस धाँगबाक अछि। असली सफलता मिथिला राज्यक स्थापनासँ होयत। एहि लेल संघर्ष जारी अछि।

21 अगस्त 2022केँ मिथिला स्टुडेंट यूनियन आ समानधर्मी लोक सभक सहयोगसँ मिथिला राज्यक लेल दिल्लीक जंतर-मंतरपर अभूतपूर्व, दर्शनीय आ प्रभावकारी धरना-प्रदर्शन आयोजित भेल। दिल्लीमे जेना पीयर रंगक जनसमुद्र आबि गेल हो। हम बिहारी नहि हम मैथिल छी, हमरा चाही मिथिला राज्य आदि नारा सभक जयघोषसँ दिल्ली गुँजायमान भेल रहए।

मिथिला-मैथिलीक लेल पुनर्जागरणक निमित्त अनेक संस्था सभक निर्माण भेल जे मिथिलावाद केर अग्रदूत बनल। 1910 ई.मे मिथिलेश रमेश्वर सिंह द्वारा स्थापित मैथिल महासभाक बैसारमे 1919मे मैथिली साहित्य परिषद्ध मिथिला भाषा परिषद् केर स्थापना भेल छल।

1927 ई.मे बाबा विद्यापतिक नामपर आम मैथिलमे जागृतिक प्रचार-प्रसार लेल विद्यापति स्मृतिपर्व केर विचार आएल आ आयोजन शुरू भेल। 1935 ई.मे विद्यापति संबंधी लेख प्रतियोगिताक सूचना आ ओहिमे उमेश मिश्रजीकेँ प्रथम पुरस्कार रूपमे 100 टाका देल जयबाक सूचना पं. चन्द्रनाथ मिश्र अमरजी भारती (पृष्ठ 34)क आधारपर दैत छथि (मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण, 1962, पृष्ठ 434)। कतहु विद्यापति जयन्ती कतहु विद्यापति स्मृतिपर्व रूपमे शुरू भेल ई समारोह मैथिलकेँ एक सूत्रमे जोड़बाक लेल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आयोजन बनल। दरभंगामे स्थापित विद्यापति गोष्ठीक सत्प्रयाससँ ई जोर पकड़ि लेलक। आब मिथिलाक ई महोत्सव विशाल वटवृक्ष बनि मिथिला-मैथिलीकेँ प्राणवायु दऽ रहल अछि। मिथिलामे तऽ ई गामेगामक उत्सव बनि गेल अछि। मिथिलांचलक बाहर सेहो भारतवर्षक प्रायः प्रत्येक पैघ शहरमे ई हर्षोल्लास आ समारोहपूर्वक मनाओल

जाइत अछि। एहि आयोजनकेँ शुरू करबामे आ. पं. बलदेव मिश्र आओर नरेन्द्र नाथ दासक प्रयास महत्त्वपूर्ण छल। पं. को्चीनाथ झा किरणक सत्प्रयाससँ सोतिपुरामे गामेगाम विद्यापति गोष्ठी संगठित भेल जे प्रतिमास धवल त्रयोदशीकेँ विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करैत छल।

मिथिला-मैथिलीक लेल रचनाकार सभमे अनुपम मात्सर्य छल। ओ सभ लोककेँ जागरूक करबा लेल साइकिलपर दरी लादि यात्रा करैत छलाह आ विभिन्न ठाम दरी-जाजिम बिछा बैसार करैत जनमानसमे मिथिला-मैथिलीक लेल जागृतिक भाव जगबैत छलाह। एहन अभियानीमे किरणजी, मधुपजी, मणिपद्मजी, अमरजी, सीताराम झाजी, आरसी बाबू आदि प्रमुख छथि। मिथिला-मैथिलीपर कतेक गीत रचल गेल। एहि आन्दोलनमे मैथिल दधीचि भोला लाल दास, बाबू भुवनेश्वर सिंह भुवन, प्रो. रमानाथ झा, प्रो. कृष्णकान्त मिश्र, बाबू लक्ष्मीपति सिंह, प्रो. प्रबोध नारायण सिंह, डॉ. लक्ष्मण झा, राघवाचार्यजी, पं. भोलानाथ मिश्र, पं. देवनारायण झा, कमलेश झाजी, पीताम्बर पाठकजी, मिथिलेन्दुजी, अमरनाथ चौधरी 'दीपक'जी, रमाकान्त मिश्रजी, सुधाकान्त मिश्रजी, धीरजी, राजनन्दन लाल दासजी, विजय चन्द्र झाजी, राकेश कुमार झाजी, रंगनाथ ठाकुरजी, अशोक झाजी आदि अभियानी सभक अवदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहल अछि। डॉ. वैद्यनाथ चौधरी वैजू आ डॉ. धनाकर ठाकुर केर अभियानी स्वरूप हुनका सभकेँ जीवित किंवदन्ती पुरुष रूपमे परिचिति दैत अछि।

1956मे वैदेही समितिक तत्त्वावधानमे प्रथम अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन आयोजित भेल छल। म.म. उमेश मिश्रक सत्प्रयाससँ मैथिलीकेँ PEN विद्या महासम्मेलनमे महत्त्वपूर्ण स्थान भेटल।

सहस्राधिक छोट-पैघ मिथिला जागरण यात्रा सभक अवदान मिथिला-मैथिली आन्दोलनमे सेहो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। डॉ. धनाकर ठाकुर केर शताधिक मिथिला जागरण यात्रा प्रसिद्ध अछि। ग्रेटर मिथिला एशोसियेशन केर किसलय कृष्णजी आ पं. धर्मेन्द्र नाथ मिश्र 16 जुलाई 2021केँ मिथिला जागरण यात्रा शुरू कयलनि। सर्वश्री एन मंडल, दक्षिणेश्वर राय, अर्जुन प्रसाद, विमलजी मिश्रा, रामकुमार सिंह आदि उत्साही सभ ग्रेटर मिथिला एशोसियेशनक बैनर तऽर विभिन्न सार्थक यात्रा कयलनि। एहिना श्री अरविंद कुमार झा, सचिव, अखिल भारतीय मिथिला पार्टी जनतब दैत छथि जे 31 अक्टूबरसँ 6 नवम्बर 2021 धरि मिथिला मंथन यात्रा तीन रथसँ संपन्न भेल। प्रथम रथ बलिराजगढ़सँ, दोसर सीतामढ़ीसँ आ तेसर वनगाँवसँ चलल आ विभिन्न क्षेत्रमे जन जागरण करैत सिमरिया धाम पहुँचल। एहि पार्टीक रत्नेश्वर झाजी सेहो मिथिला राज्यक लेल विभिन्न यात्रा कयलनि। चेतना आ जागृति लेल सचेष्ट रहैत छथि। मिथिला राज्य निर्माण सेनाक श्याम सुन्दर झाजी सेहो विभिन्न रथयात्रा कयलनि।

नेपालमे सेहो मिथिला-मैथिलीक लेल कम मात्सर्य नहि अछि। एहि दिशामे नेपालक अभियानी सभक जोश कनियो कम नहि अछि। जखन नेपालमे 'सौंसे मिथिला एके टोल मैथिली जकर माएक बोल' नारा बुलंद होइत अछि तखन मोन प्रमुदित होइत अछि। 2 दिसम्बर 1815केँ नेपाल आ इस्ट इंडिया कम्पनीक मध्य सुगौली सन्धिपर हस्ताक्षर भेल छल। ई आश्चर्यजनक अछि जे तत्कालीन नेपाल नरेश युद्ध विक्रम शाह केर एहिपर हस्ताक्षर नहि अछि। सन्धिपर राजगुरु गजराज मिश्रजी (सहायक चन्द्र शेखर उपाध्यायजी) हस्ताक्षर कयलनि। इस्ट इंडिया कम्पनी दिशिसँ लेटिनेंट कर्नल पैरिस ब्रेडशॉक हस्ताक्षर भेल छल। नेपाल नरेश द्वारा एकर अनुमोदन नहि भेल तथापि 4 मार्च 1816केँ एहि सन्धिकेँ राजा द्वारा अनुमोदित मानि लेल गेल। एहिमे मिथिलाक उत्तरी क्षेत्र जनकपुर, धनुषा, वीरगंज आ विराटनगर क्षेत्र नेपालकेँ देल गेल आ नेपालक गढ़वाल, कुमाउँ, सिक्किम आ दार्जिलिंग ब्रिटिश भारतवर्षकेँ देल गेल। ई सन्धि मिथिलाकेँ दू भागमे खंडित कयलक। डॉ. लक्ष्मण झा एहि सुगौली सन्धि केर भारी विरोध करैत छलाह। भारत-नेपाल सीमापर ठाढ़ विभाजनकारी स्तम्भ सभकेँ ध्वस्त कयने छलाह। मिथिला-मैथिलीक एहि किंवदन्तीपुरुषकेँ कमसँ कम मिथिला राज्य बनाकेँ तर्पण करब वर्तमान पीढ़ीक दायित्व अछि। सीमापरक स्तम्भ एक दिन स्थायी रूपसँ हटि जाय आ दुनू कातक मिथिला एक हुअए ई मैथिल मनीषी सभक स्वप्न अछि। आइ भले नेपालक एक पूर्व प्रधानमंत्री राजनीतिक कारणेँ चितवन लऽग दोसर मादी अयोध्या होयबाक प्रलाप कयने होथि दुनू देशक आमजन सिया सुकुमारीक पति रूपमे भारतवर्षक सरयू नदीक कात अवस्थित अयोध्याधामक दशरथनंदन श्रीरामेकेँ जनैत अछि। दुनू देशमे बेटी-रोटीक ई शाश्वत संबंध सम्पूर्ण मिथिलाकेँ उद्वेलित करैत अछि। आब अखंड मिथिलाक स्वप्न सेहो देखल जा रहल अछि। मैथिली एशोसियेशन, नेपालय मैथिली विकास कोष, जनकपुरधामय मातृभाषा संघर्ष समिति, विराटनगरय मैथिली साहित्यकार सभा, जनकपुर धामय मैथिली सेवा समिति, विराटनगरय मैथिली जिन्दाबाद, विराटनगरय विराटगढ़ परोपकार समाज, मैथिल ब्राह्मण महासभा युवा समिति, मैथिली चलचित्र कर्मी संघ, थारू आ राजवंशी समाज सभक जोश दर्शनीय रहैत अछि। नेपालक प्रांत संख्या 2 केर नाम मधेश प्रांत करब सेहो सर्व स्वीकार्य नहि भेल आ एकर नामकरण मिथिला प्रांत करबाक अभियान सेहो चलि रहल अछि।

यथार्थमे मिथिला-मैथिलीक उन्नति लेल एतेक संस्था आ लोक सक्रिय छथि जे सभक अवदानक उल्लेख करब कठिन

अछि। नेटपर सक्रिय संस्था सभक संख्या गानब धरि संभव नहि। संभव जे एहि आलेखमे अचर्चित संस्था/व्यक्तिक अवदान बहुत पैघ आ महत्त्वपूर्ण हो। एहन संस्था/व्यक्तिसँ क्षमायाचना करैत आन्दोलनमे लागल समस्त सक्रिय सदस्य सभकेँ शुभकामना दैत छी जे सभक स्वप्न शीघ्रे साकार हो।

एहि ठाम इहो कहब उचित जे जाबत ई आन्दोलन जनान्दोलन केर रूप नहि धरत ताबत परिणाम आकाश कुसुमे रहत। इहो महत्त्वपूर्ण अछि जे एहिमे अंगिका-बज्जिका-सुरजापुरी-पचपनिया-उर्दू आदि भाषाक साहित्यकार सभकेँ वृहत्तर मैथिल क्षेत्रमे आनल जयबाक चाही। एहन किछु गोटेक भ्रम केर स्थायी निवारण करब परमावश्यक अछि जे मैथिलीकेँ ओ सब रकीब नहि तथ्यात्मक रूपसँ मातृसंस्था मानथि। एहि लेल शुद्ध अन्तर्मनसँ प्रयास होयबाक चाही। सभ भाषा विकासक पात्रता रखैत अछि मुदा एक भाषाक बलि चढ़ा दोसर केर उत्थान कोनो विवेकशील मानव नहि चाहत। मातृहन्ता भगवान् परशुरामक गर्व मातृसेवी श्रीरामक समक्षे खंडित होइत अछि। अखिल भारतीय अंग-अंगिका विकास मंचक राष्ट्रीय महासचिव श्री कुन्दन अमिताभ केर प्रधानमंत्रीसँ माँग जे नेपालक भाषा मैथिली आ नेपालीकेँ संविधानक अष्टम अनुसूचीसँ निष्कासित कऽ अंगिकाकेँ अष्टम अनुसूचीमे शामिल कएल जाय, आश्चर्यजनक आ दुखद अछि। अपन माएक मानमे मतामहीक मानमर्दन करब सर्वथा अनुचित! एहि दिशामे तत्काल सार्थक प्रयास केर आवश्यकता छैक।

आब किछु कटु सत्यसँ साक्षात्कार करायब। मैथिलीक मंचपर जोरजोरसँ चिचिया आ पाग-डोपटासँ सम्मानित भेलाक बाद जखन किछु मातवर लोक उतरैत छथि तखन अपन मैथिल अंगरक्षक, वाहनचालक वा लगुआ-भगुआ केँ हिन्दीमे आदेश दैत छथि- गाड़ी लाओ। ओ जखन घर अबैत छथि तखन नाति-पौत्रकेँ हिन्दीमे मैथिलीक कथा सुनबैत छथि। बहुत गोटे आ संस्था मात्र मैथिलीक समर्थनमे फोटो घिचा फेसबुक वा अन्य सामाजिक माध्यमपर दैत अपन कर्त्तव्यक इतिश्री मानि लैत छथि। जमीनपर परिश्रम करएसँ कनछी काटैत छथि। एहि आभासी दुनियाँ सँ बाहर आबए पड़त। अपन घाम चुआबए पड़त। ई प्रवृत्ति जे खुदीराम-भगतसिंह-आजाद-अशफाक आदि अग्निपुत्र दोसर घरमे जन्म लेथि आ देशपर कुर्बान होथि, अत्यन्त खतरनाक अछि। हमर ई अभिप्राय नहि अछि जे सभ केओ आन्दोलनमे कुदि हिंसक अभियान करी, ई ने उचित अछि आ ने संभव। मुदा हमर ई अभिप्राय तऽ अवश्य अछि जे सार्वजनिक जीवन वा कार्यालयमे आवश्यकतानुसार भले दोसरो भाषामे बात करी मुदा अपन घरमे, समाजमे वा कोनो मैथिल संग कोनो परिस्थितिमे कतहु मैथिली छोड़ि हिन्दी-अंग्रेजीमे गप्प नहि करी। एहि छोट निश्चय केर ताकतसँ बड़का साम्राज्य झुकाओल जा सकैत अछि। मात्र यैह निश्चय एहन पीढ़ी अवश्य तैयार करत जे अपन अधिकार लऽकेँ रहत। देखाउँस करबाक कोनो प्रयोजन नहि। जे काज करैत छी ओहिमे मैथिलीक सर्वाधिक उपयोग करी। पंचायत अन्तर्गत पत्राचार, सूचनादि काज मुखियाजी/पंचायत सचिव मैथिलीमे करथि तऽ एहिमे कोन व्यवधान? विद्यालय वा आन संस्था से अपन पत्र व्यवहार मैथिलीमे कऽ सकैत अछि। श्री दीप नारायण बिनु कोनो आत्मप्रचार वा तामझामकेँ दिसम्बर 2016सँ प्रभारी प्रधानाध्यापक रूपमे अपन विद्यालयक सभटा पत्राचार, प्रत्येक सूचना, समस्त पंजी सभक पृष्ठांकन प्रमाणपत्र सहित समस्त काज अनिवार्य रूपसँ मैथिलीमे करैत छथि। प्रत्येक दिन विद्यालयक चेतना सत्रमे बाबा विद्यापति रचित जय जय भैरवि असुर भयावनि केर प्रार्थना होइत अछि आ भारतीय संविधानक प्रस्तावना केर मैथिलीमे वाचन कएल जाइत अछि। वास्तविक मैथिली अभियानी एहने लोक छथि जे चुपचाप अपन काजमे लागल रहैत छथि। पाठशालामे मैथिली अभियान केर बैनर संग धरना-प्रदर्शन कयनिहार शिक्षक सभकेँ श्री दीप नारायणक एहि मौन मैथिली सेवासँ प्रेरणा लेबाक चाही। जँ मिथिला क्षेत्रक सब शिक्षकगण एकरा अपन-अपन विद्यालयमे लागू करैत छथि तखन कार्यसिद्धि कतेक सुगम भऽ जाओत। एहि लेल कोनो अनुमतिक आवश्यकता नहि छैक मात्र दीप नारायण सन अपन मातृभाषाक लेल नेह, निष्ठा आ निष्काम सेवाभाव चाही। इहो आह्लादकारी बात अछि जे दीप नारायणजी ने ब्राह्मण छथि ने कायस्थ छथि। मैथिलीक लेल हुनकर ई स्वतःस्फूर्त मौन अभियान एवं अन्य ब्राह्मण-कायस्थेतर मनीषी सभक मैथिलीक लेल कएल गेल अवदानसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली मात्र ब्राह्मण आ कायस्थक भाषा नहि थिक। स्वार्थवश लगाओल गेल एहन आरोप निराधार अछि। मैथिली लेल श्री हुकुमदेव नारायण यादव जीक मात्सर्य किनकासँ कम अछि? गीदड़गंज जमैलाक पूर्व मुखियाजी बदरूद्दीन साहेब सन सुन्दर मैथिली के बाजि सकैत छल? हरिणाक पूर्व मुखियाजी आ वरीय अधिवक्ता श्री अतिकुर रहमानजीक सुन्दर मैथिली संवादक परतर के कऽ सकैत छथि? जाति-धर्मसँ परे मिथिलामे रहनिहार समस्त जन मैथिल छथि। आब जखन सबजना मैथिल उनटि गेल अछि तखन बिनु अपन अधिकार नेने मानत नहि। मिथिला राज्यक सपना साकार भऽकेँ रहत! अखंड मिथिला सेहो बहुत दूर नहि अछि।



मिथिलामे साँप पूजन परम्परा

✍ डॉ. गौरी चौधरी

सावन मासक पंचमी केँ नागपंचमी मनाओल जाइत अछि। विभिन्न नदी, पोखरि सँ भगत सभ साँप के निकालैत छथि आ ओकर प्रदर्शन करैत छथि। ओकर पूजा-अर्चना करैत छथि। एहि दिन अतीत सँ चलि आबि रहल एहि परम्पराके निबहेबा लेल श्रद्धालु लोकनिक भारी भीड़ जुटैत अछि। कतोक ठाम तऽ भेलाक आयोजन सेहो होइत अछि। एहि तरहक आयोजन खासक समस्तीपुर जिलाक विभिन्न प्रखण्डमे विशेष रूप सँ देखल जाइत अछि।

उदाहरणक रूपमे ई स्पष्ट करब आवश्यक अछि जे पछिला साल विभूतिपुर प्रखण्ण्ड सँ जाइवाली बूढ़ी गंडक नदीक सिंघियाघाट आ नरहनमे बारिशक मध्य नागपंचमी मनाओल गेल। सिंघियाघाटमे बूढ़ी गंड़कमे भगत रामसिंह साँप निकाललनि तऽ शिवाजीनगरमे भगत विभिन्न तरहक साँपक करतब देखौलनि। खानपुर प्रखण्ड क्षेत्रमे भगत पोखरि सँ साँप निकालि कऽ देखौलनि। एहिना दलसिंहसराय अनुमण्डल क्षेत्रक बसढ़ियाक छबकाही पोखरि सँ भगत साँप निकालनि। पूजारी लक्ष्मी सिंह, भिखारी सिंह गद्दोव जिदपुर स्थित विषहर स्थानमे पूजा कयलनि। नाग भेलाक आयोजन भेल। दोसर दिस एहि दिन अनगुपिते लोक कुश उखाडि कऽ लौलनि। स्त्रीगण गोबर सँ घरक चारू देवार पर डरीर खिचलनि। संगहि प्रवेश द्वार ओ घरक घुरखा पर गोबर सँ चौकोर बनाकऽ सिनुर लेपन कयलनि। दूध, लावा चढ़ौलनि। प्रसाद निरूप नीमक पात आ दही ग्रहण कयलनि।

एहि तरहेँ मिथिला संस्कृतिमे साँप-पूजन परम्परा विषद विमर्श करब एहि ठाम हमर अभीष्ठ अछि-

भारतीय वाङमयमे लोक जीवनक गरिमा केँ प्राचीन कालहि सँ स्वीकृति प्रदान कयल जा चुकल अछि। लोक-संस्कृति मानव समाजक एहन लोकक संस्कृति थिक, जे आदिम प्रवृति सभ सँ आबद्ध सहजावस्थामे जीवन व्यतीत करैत छथि। परम्परा एकर आधार आ लोकानुरंजन एकर माध्यम।

भारतक सांस्कृतिक इतिहासमे मिथिलाक संस्कृतिक योगदान अप्रतिम अछि। मिथिलाक सांस्कृतिक ओ पारम्परिक अवधारणाक अवगतिक सर्वोत्तम साधन एहिठामक मूल निवासी लोकनिक अविशिष्ट लोक परम्परा थिक। आइयो एहिठामक लोकोत्सवक आनुष्ठानिक ओ सौन्दर्यात्मक पारम्परिक अवशेष गामक सांस्कृतिक केन्द्र 'गहबर'मे प्रतिबिम्बित अछि, जतऽ सद्यः देखल जा सकैत अछि।

मिथिलामे नदी पूजा आर्मेत्तर मूलवासी लोकनिक संस्कृति थिक, कारण मनुक्ख प्रकृति पूजक छल। मिथिलामे नाग, कमला आदि नदी सभक सांस्कृतिक पूजा आइयो लोकमे व्याप्त अछि। स्पष्ट अछि जे मिथिलाक मूल निवासी प्रकृति आ प्राकृतिक जीव जंतुक पूजा क्रममे ''साँप-पूजन' होमय लागल। मिथिलामे विषहरा, मनसा आ बिहुला आदिक नाग देवी सभक सांस्कृतिक पूजन-परम्परा एहि प्रकृति पूजनक एकटा कड़ी थिक जे एहि ठामक मूल निवासी लोकनिक संस्कृतिक अवशिष्ट परम्परा रूपमे आइयो विद्यमान अछि।

नाग-पूजा प्राकृतिक जीवक उपयोगिता ओ महत्ताक स्वीकृति अछि। साँप मूलतः जंगली जीव अछि आ जंगलमे रहऽवला लोकक लगाव एहि साँप सँ बहुत पुरान आ धनिष्ठ रहल अछि। मिथिलाक एहि आर्मेत्तर मूल निवासी लोकनिक तथा आर्य लोकनिक संघर्ष गाथा आ नाग ओ आर्यक संघर्षक कथा-गाथा-नाग गीत, नाग-गाथा, एहि सँ जुड़ल मंत्र ओ नाट्य-नृत्य सभमे आदिम तत्व अवशिष्ट अछि। भारत सहित विश्वमे सेहो एकर पूजन कोनो-ने-कोनो रूपमे होइत आबि रहल अछि। चीन, स्वीडेन, आस्ट्रेलिया जेहन देशमे तऽ राष्ट्रीय स्तर पर नाग-पूजा मनाओल जाइत अछि। साँपक पूजा अफ्रिका ओ साउथ ऐसिकिक, चीन एवं दक्षिण अमेरिकामे सेहो होइत अछि। भारतीय मान्यताक अनुसार साँप उर्वरकता ओ पानिक प्रतीक थिक। भारतीय सभ्यता ओ संस्कृतिमे तऽ साँपक विशेष स्थान अछि। देशक विभिन्न भागमे नाग-पूजा मनोबाक विधि फराक-फराक अछि, मुदा जड़िमे नागदेवताक आराधनामे थिक। केरलमे आइयो कतोक घरमे जमीनक एक भाग साँपक पूजा लेल राखल जाइत अछि, जतऽ साँप अबैतअछि आ उपहार ग्रहण करैत अछि। ओहिठामक शेषशायी विष्णुक प्रतिमा स्थापित ''पद्नाभन'' मंदिर सर्वाधिक प्रसिद्ध दर्शनीय धार्मिक स्थल अछि। मनोकामनाक पूर्ति लेल नाग-पूजन परम्परा नहि मात्र उत्तर भारतमे अपितु सम्पूर्ण भारतमे कोनो-ने-कोनो रूपमे मनाओल जाइत अछि। राजस्थान, गुजरात, कश्मीर, तमिलनाडू, बंगाल, बिहार आदिमे नागक आकृति देवार पर बनाकऽ ओकर-पूजन कयल जाइत अछि। हिमाचल प्रदेशमे नागक कतोक मंदिर आइयो विद्यमान अछि। नामपूजा के विभिन्न नामसँ जानल जाइत अछि- मनसा पूजन, बिहुला पूजन, विषहरा पूजा, नागपंचमी पूजा, लगपाँचे आदि।

भारतीय ग्रंथ सभमे नाग-पूजन प्रथाक उल्लेख आरंभहि

सँ भेटैत अछि। स्कन्ध पुराण, भागवत पुराण सहि आन वैदिक ग्रंथ, एतऽ धरि जे बौद्ध आ जैन ग्रंथ सभमे सेहो नाग-पूजन परम्पराक वर्णन अछि। यजुर्वेद आ अथर्ववेदमे नहि मात्र नाग-पूजन परम्पराक वर्णन अछि अपितु एहिमे पूजन-पद्धतिक मंत्र सभीक उल्लेख सेहो अछि। वेदोंमे सर्प स्तुतिक सार ई अछि जे ओहि साँ के नमस्कार अछि, जे सदैव पृथ्वीक परिक्रमा करैत छथि, जे स्वर्ण केँ स्पर्श करैत छथि, आ जे जलक तरंग सभमे अछि। हमर वैदिक आ पौराणिक परम्पराके अनुरूप नागक उत्पत्ति महर्षि कामयक पत्नी कद्रू सँ भेल अछि। ई देवी अदितिक सौतिनक पुत्र आ आदिलोक भ्राता छथि, तैँ नागदेवता एकर संज्ञा अछि। पाताल एकर निवास स्थान तैं मानल गेल अछि। भविष्य पुराणक 'ब्रह्मपर्व'मे विस्तृत कथाक ंग बासुकी, तक्षक, कालिया, मणिभद्र आदि साँप केँ दूध सँ नहेबाक ओ अभयदान प्राप्त करबाक उल्लेख अछि। व्रती के सोना, चाँनी, तामा आ माटिक साँप बना कऽ करवीर आदि पुष्प, धूप आ गंध सँ पूजन करबाक विधान अछि। तेतरेय ब्राह्मणमे साँपक गणना पंचजन सँ भेल अछि। तैतरीय संहितामे साँप के नमस्कार करबाक उल्लेख अछि। महाभारत, बौद्ध ओ जैन ग्रंथमे सेहो नाग पूजनक प्रथाक वर्णन तथा नाग सँ संदर्भित अलौकिक गाथा सभक वर्णन भेटैत अछि। महाभारतमे तऽ अर्जूनक संग नागकन्या उलूपीक परिणयक सेहो उल्लेख अछि। बौद्ध ओ जैन धर्ममे सेहो एकर मान्यता छनि। कथाक अनुरूप 'मुलिचन्द' नामक नाग अपन फन पसारि कऽ भगवान बुद्धक रक्षा कयने छल। बौद्ध सभ के नाग नंद आ उपनंद कहल जाइत अछि। जैन तीर्थकर पार्श्वनाथक तपस्या कालक अवधिमे स्वयं नाग अपन फन पसारि कऽ रौद, हवा, वर्षा सँ हुनकर रक्षा कयने छल। पार्श्वनाक्षक प्रतिमा पर आइयो सर्पक अंकित प्रतिमा देखाइ दैत अछि।

भारतीय साहित्य, कला, धर्म आ सांस्कृतिक क्षेत्रमे तऽ नाग-पूजा वैदिक काल सँ पहिनहि सँ अबैत देखाओल जाइत अछि। भगवान विष्णुक शय्या तऽ नागराजक मानल गेल अछि। कुर्वावतार के क्रममे समुद्रमंथन-काल बासुकी नाग के मंथनवाली डोरीक रूपमे प्रयोग करबाक उल्लेख सर्वविदित अछि। साँप भगवान शिवक गर्दनिक प्रसिद्ध कुल अछि आ ई नाग लोकमे रहैत अछि। भोगवतीपुरी एकर राजधानी अछि। नाग कन्याक सौन्दर्य देवी आ अप्सराक बरोबरि बताओल गेल अछि।'' जातक कथा'' सभमे नागके जलवासी हेबाक विवरण प्राप्त होइत अछि जे अपन जीवन रक्षक ब्राह्मण केँ पाताल लोक लऽ जा कऽ ओकर पर्याप्त आव-भागत करैत अछि।'' ललित विस्तार''मे मुलिचन्द नामक नागक कथा अबैत अछि।

मान्यताक अनुरूप प्राचीन भारतमे निवास करऽवाली मूल जातिमे नाग जाति सेहो एक छल तथा एकर सभ्यता आ संस्कृति विकसित छल। सिन्धुघाटी सभ्यतामे प्राप्त अवशेष ओहि कालमे नाक पूजन-परम्पराक पुष्टि करैत अछि। भारतीय साहित्यमे विषकन्याक वर्णन अछि। विशाखदत्त रचित ''मुद्राराक्षस''मे सेहो विषकलाक वर्णन अछि। विषकलाके ओहन कलाक शिक्षा देल जाइत छल ओ नाच, गातत आ वार्त्ता करबामे निपुण होइत छलीह। विषकन्याक निर्माणमे साँपक विषक प्रयोग कयल जाइत छल। कौटिल्य अपना 'अर्थशास्त्र'मे फनयुक्त नाममूर्ति सभक वर्णन कयलनि अछि। पौराणिक कथा सभमे साँप के शत्रु बुझबाक कारण सर्वप्रथम ओकर विनाशक प्रयत्न कयल गेल। वेद-पुराणमे उल्लिखित जन्मजयक नाग विध्वंशक यज्ञ, खाण्डवन दार, कालिय दमन ओ इन्द्र द्वारा उनहि (सर्प) वृत्रासुर वधक कथा साँपक प्रति आर्यक शत्रुभाव के रेखांकित करैत अछि। उक्त यज्ञादि सँ प्रताड़ित नाग सभ अपन रक्षाक लेल देवता सभ सँ प्रार्थना केने छल। उक्त ग्रंथ सभमे नाग संदर्भित कथा सभ आ आर्येत्तर मूल वासीक लोकनिक लोक जीवनमे प्रचलित नाग विषयक गीत, मंत्र, गाथा आ कथाक विश्लेषण ई स्पष्ट करैत अछि जे नाग आ आर्येत्तरक मध्य नम्हर संघर्ष भेल आ पैघ संघर्षोपरान्त आर्येत्तर लोकनि नाग केँ वशीभूत केने छल। साँप आ मनुक्ख एक-दोसरक सत्ता के स्वीकार कयलनि। नहुँ-नहुँ साँप सेहो अपन महत्व मनबेबामे सफल भेल। अस्तुः नाग-पूजा साँप आ मनुष्यक मध्य एक समझौताक प्रतिफल स्वरूप उद्‌भूत भेल। कालान्तरमे नागपूजा दैवी ओ मानवीय रूपमे विकसित भेल। मिथिला एहि सँ अछूत नहि अछि।

प्राकृतिक जीव साँप आ एकर पूजा सँ संबंधित कतोक मान्यता मिथिला जनपरमे लोक प्रचलित है। मान्यता अछि जे तक्षक नाग राजा परीक्षित केँ डँसि लेने छल। ओ इच्छाधारी छल आ अपन इच्छाक अनुरूप कोनोहु रूप धारण कऽ सकैत छल। श्रृंगी ऋषिक श्रापक शक्ति सँ वशीभूत भऽ कऽ ओ राजा परीक्षित केँ डँसने छल। नाग प्रजाति केँ दिव्य कोटिक मानल जाइत अछि। कोनो श्राप अथवा पापक कारणेँ ओकरा एजि जीवक योनिमे आबऽ पड़लनि। श्राप अथवा पापक अवधि समाप्त भेला पर फेर ओ अपना दिव्यता केँ प्राप्त कऽ लैत अछि। किछु नागक फनमे 'ऊँ' अंकित होइत अछि। कतोक रंजक कारण नाग केँ साक्षात शिव स्वरूप मानल जाइत अछि।

मान्यता अछि जे कश्यम ऋषि एक तेजस्वी ब्राह्मण छलाह। ओ सर्प विषयक विशेषज्ञ छलाह। हुनका लग एक एहन तंत्र औषधि छल जे विषधर के कटलक बाद मृत्यु व्यक्ति के जीवित कऽ दैत छलाह। एकटा मान्यता इहो अछि जे नागराजे पृथ्वी के अपन फनपर उठौने छथि। ओ हिन्दूक श्रद्धेय छथि। मिथिलाक अधिकांश लोक अपन पुरान रीति-रेवाज आ मान्यताक अनुरूप खासकऽ कोबरा साँप के नहि मारैत छथि। मिथिलामे

'हरहरा' के लोक कोनोहु परिस्थितिमे नहि मारैत छथि। किछु लोक तऽ साँप के अपन पूर्वजक प्रतिनिधि मानैत छथि। लोकक इहो मान्यता अछि जे जोड़ खेलैत नाग-नागिन के देख लेला पर कोनो नूआँ फेकि देबाक चाही अथवा तत्क्षण पहिरने धोती अथवा साड़ी फाड़िक ओकरा झाँपि देबाक चाही। एकरा शुभ मानल जाइत अछि। इहो मिथिलामे मान्यता अछि जे नाग गुप्त धन रक्षक होइत अछि। एहि सँ अनाज रक्षा होइत अछि आ कृषि उपजमे वृद्धि होइत अछि। साँप बटखा हेबाक एक कारण सेहो अछि। इहो कहल जाइत अछि जे नाग पूजा से नहि मात्र नीक वर आ योग्य पुत्र भेटैत अछि, अपितु मोसीद्वत पड़ला सँ नाग-देवता हिनकर रक्षा सेहो करैत अछि। वंशवृद्धिक प्रतीक सेहो साँप के मानल जाइत अछि। कोबर घरमे तँ साँपक चित्र बनाओल जाइत अछि। यात्राक समय सर्पदर्शन सेहो शुभ होइत अछि। मिथिलामे लोक आसिन मासमे देश-विदेश अथवा आन प्रदेश जेबाक लेल यात्रारम्भ करैत छथि, तेँ एहि सँ पूर्व श्रावण मासमे नागपंचमी मनेबाक प्रावधान अछि। सर्पदंश मुक्ति हेतु ईश्वरीय स्तुति कालान्तरमे नागपंचमी पूजनोत्सवक रूप लऽ लेलनि। मिथिलाक ई अनुपम परम्पराक रूपमे प्रत्यक्ष सर्प-पूजा लोकमे प्रचलित होइत चलि आयल अछि।

मिथिलामे मनाबऽ जाय वाली सांस्कृतिक लोकोत्सवमे दैवी शक्ति केन्द्रित होइत अछि। नाग संबंधित सांस्कृतिक अनुष्ठानक लोकोत्सवमे नागदेवी विषहारा केन्द्रित होइत अछि। किछु जनपदमे ई मनसा अथवा बिहुल नाम सँ अभिहित अछि।

मिथिलामे नागपंचमी लोकोत्सवमे कीर्त्तन-भजन आ देवहरि गीतक संग नागदेवीक गोहारि कयल जाइत अछि। एहि क्रममे भगता नागदेवी विषहारक आवेश ग्रहण कऽ भाव नृत्यमे तल्लीन भऽ जाइत छथि। हुनका पाछाँ फूल-अक्षत सँ भरल डाली आ बेंत लैय 'डलवाह' चलैत अछि आ ओकरा पाछाँ मानर, मृदंग, ढ़ोल, मजिरा, झाँक आदि लोकवाद्य बजबैत बजनियाँ समाज गहबर आ ओकर आगाँ स्थित पिपरक गाछक परिक्रमा करैत रहैत अछि। मनौती गीत गाबि गहबरमे नागदेवीकेँ रिझबैत अछि। भगताक हाथेँ आशीर्वाद पाबि लोक साल भरि साँपक सुरक्षाक आतंक सँ मोन के शान्त करैत अछि।

मिथिलाक आर्येत्तर मूलवासी अशिक्षित नारीक लोक कंठसँ प्राप्त एक मनमोहक मैथिली गीतमे साँपक वंश-वृद्धि केर एहि कामनाक अभिव्यक्ति भेल अछि-

''नाग बढ़थु नागिन बढ़थु,
पाँचो बहिन विषहरा बढ़थु।
बाल वसंत भैया बठथु
डाढ़ि-खोढ़ि मौसी बढ़थु।।''

मिथिलाक लोक जाहि तरहेँ नाग केँ आश्वस्त करैत छथि, ओकर गुणगान करैत छथि, ओकर संरक्षणक स्वरूप संदेश प्रचारित-प्रसारित करैत छथि ओ विभिन्न प्रदर्शनकारी कला सभक माध्यमेँ ग्राम्य जीवनमे लोकानुरंजक सुविधा उपलब्ध करबैत छथि, तकर संरक्षण आवश्यक। मिथिलांचल केर विभिन्न गाममे नागपंचमीक अवसर पर नागदेवी आ नागक मूर्ति सभ सेहो बनैत अछि। ई बहुत चिताकर्षक आ प्रभावोत्पादक होइत अछि। देवीक सिर पर नागक मुकुट होइत अछि। देवीक ठाठ मूर्तिक बामा हाथमे फनकाठल साँप आ दहिना हाथमे अभय मुद्रामे ठाढ़ होइछ। ओकर वेशभूषा प्रायः ग्रामीण परिवेशक होइत अछि आ सोनहौता रंग सँ रंगल जाइत अछि। तैँ विषहराक मूर्तिक ई सौम्य नारी रूप मिथिलावासीक लेल पारिवारिक बनि जाइत अछि। कतौ-कतौ भित्ती चित्र तऽ कतौ-कतौ अरिपन, मिथिला पेंटिंगक लोक शैलीमे नागक चित्र पाओल जाइत अछि। पूजामे प्रयोग कयल जायववा कलश पर सेहो नाग बनाओल जाइत अछि। बिषहारा पूजामे चढ़ऽवाला झाँप पर सेहो नाग बनाओल जाइत अछि। नाग सँ संदर्भित मूर्ति, चित्र, आदि समस्तीपुर, मुजफरपुर, वैशाली, सहरसा, भागलपुर, दरभंगा, मधुबनी सहित मिथिलाक विभिन्न ग्रामांचल आ राजगीर, पाटलिपुत्रादिमे सेहो भेटैत अछि। सहरसामे सोना-चॉनीक नाग-मूर्ति देखल जाइत अछि। एतऽ दमगढ़ी गाममे विषहराक एक प्रसिद्ध मंदिर सेहो स्थापित अछि जतऽ सर्पदंश पीड़ित विषमुक्त होमऽ लेल पहुँचैत छथि। 'मैना'मे मनसा देवीक मंदिर अछि। भागलपुरक भागलपुरमे भल्य विषहरी मंदिर अछि। गोपालगंज स्थित थावेमे काली भक्त रहसु भगत द्वारा बाधक गरदनि केँ साँप सँ बान्हि कऽ दौनी करबाक मूर्ति स्थापित अछि। स्पष्ट अछि सम्पूर्ण मिथिलामे संदर्भित मूर्ति चित्रित। निमित्त देखल जाइत अछि।

नाग सँ संबंधित कतोक जनश्रुति एहि ठाम प्रचलित अछि। कर्णाटवंशक राजा नान्यदेव नागक फन पर अंकित आवश्यक संकेत के पढ़ि कऽ ओ धन कोड़ि कऽ निकाललनि, सैन्य संगठित कयलनि आ कर्णाट वंशक जड़ि रोपलनि। राजा सलहेसक समकालीन अबाचारी राजा महंथ चक्रनाथ अपन पोसल कतोक नागक क्रीड़ा आनरबलीसँ अपन प्रजा केँ आतंक राखल करैत छलाह। सालमे एक बेन नागोत्सवमे सुन्दर युवती लोकनि के मणि रत्न, वसन-वासन, फल-फूल आ अन्न-घी चढ़ौना चढ़ाअल जाइत छल। सांदर्भवती युवती केँ 'नागबलि' देल जाइत छल। राजा सलहेस आ तांत्रिक कुसमाक उपस्थितिमे नाग महंथ राजा चक्रनाथक निर्देश पर जखन बिल सँ विषधर बाहर निकलि नृत्य कऽ रहलीह युवती लोकनि के डँसऽ लगैत छल तऽ विष औषधि लेपि अपना हाथ सँ तंत्र साधिका प्रवीण कुसमा मालिन विषधर नागक फन के पोंछि अचेत कऽ दैत छलीह आ युवतीक जान बचबैत छलीह। ढोंगी चक्रनाथ सलेसक शरणागत भऽ

गेलाह। एहि तरहेँ 'लवहरि कुशहरि' महागाथामे प्रसंग अछि जे उत्तराखंडमे खेलऽ गेल पक्के कयलक फूल तोड़ब मात्र अपराधमे आततायी राजा स्वपोषित नाग-पाशमे बंदी बना लेलनि, जकरा कुश वेश संघर्षक बाद मुक्त करौलनि। कारू खिरहरि प्रसंगाधीन तांत्रिक मालिनक प्रसग अछि तऽ महाराज केवल आ 'कारिख पजियार लोकगाथामे नाग-गरूड़ युद्ध वर्णन अछि। ई मैथिल संस्कृतिक यथार्थ चित्र प्रदर्शित करैत अछि।

मिथिलांचलमे नागदेवी सँ संबंधित कतोक कथा-गीत आ गीतक परम्परा विद्यमान अछि। कालीय नाग, शेषशली विष्णु, नाग-धर्म, नाग-नागिन प्रणय, समुद्र-मंथन, मंदार पर्वत, नागपंचमी, मधुश्रावणी, बटसावित्री, कोइबर आदि कथा सभमे कतोक प्रसंग जगजाहिर अछि। गाथा गीतमे सर्वाधिक प्रसिद्ध सती बिहुला गाथामे चन्दू सौदागर अन पूजा करबौलनि। विद्रोह राति सुरक्षाक बादो चन्दू सौदागरक पुत्र बाला लखिन्दर के नागदेवी डँसि लैत छथि मुदा ओकर पत्नी सती साध्वी बिहुला अपन सतीत्वक भाव आ साहसिक संघर्षके बल पर हुनका जीवित कऽ लैत छथि। एहि सँ संदर्भित नाच, गायन एखनो मिथिलामे व्याप्त अछि।

साँप एक खतरनाक जीव होइतो, एक महत्वपूर्ण आ उपयोगी अछि। ई प्रकृतिक अद्‌भूत देव अछि जकरा नहि रहला सँ पृथ्वी पर प्रलय मचि सकैत अछि। प्रकृति संतुलन केर श्रृंखलामे साँपक महत्वपूर्ण कड़ी मानल जाइत अछि। प्रत्यक्ष आ परोक्ष दुनू रूपेँ ई उपयोगी अछि। साँपक निवास स्थानक प्रकार, जलवायु, एकर ऊँचाई, भोजनक उपलब्धता आ भौतिक अवरोध केर संबंधमे साँपक भौगोलिक विवरण केँ 'साँप प्राणी भूगोल' कहल जाइत अछि। साँप आर्द्र भूमिवला क्षेत्रक परिस्थितिक प्रणाली के सुचारू रूपसँ कार्य करबाक संकेत दैत अछि। वास्तवमे साँप सरीपक जगतक शीतरक्तीय श्रेणीक जीव अछि। एकर शरीरक तलमान बाहर के तापमान के संग घटैत-बढ़ैत रहैत अछि। भयंकर सर्दीक क्रममे ओ अपन बिल सँ बाहर नहि निकलैछ। ओकर प्रकृतियेक कारणेँ नागपंचमी केर उत्सव वर्षा ऋतुमे मनाओल जाइत अछि। वैज्ञानिक केँ कहनाइ अछि जे साँप हमर पर्यावरण मित्र अछि। ओकर मत छनि जे साँप ग्रासलैंड इकोसिस्टम केर एक प्रमुख जीव अछि। साँप खेत-खरिहानमे लागल फसिल केन्स करऽवला आ पर्यावरण-प्रदूषण पसारऽवला मूस सभक सफाया खूबी करैत अछि। भारतीय जीवनक प्रत्येक पक्षमे एकर घनिष्ठ लगाव अछि। फूलदार खुबसूरत पौधा अधिकांशतः परागण साँपक बच्चाक माध्यमसँ बढ़ैत अछि। अड़हुल, गुलाब, कमल, सूर्यमुखी आदि फूलत संरचना एहि तरहक होइत अछि जे एक जीवन कखनो साँपक बच्चा ओकरा कलीमे छिपबाक अथवा निवास करब अबैत अछि तऽ किछु पराण गण ओकरा शरीरमे सटि जाइत अछि आ जखन ओ दोसर फूलमे जाइत अछि तऽ परागकण ओकरा धरि चलि जाइत अछि। धामन, ढ़ोढ़वा आदि कतोक साँप तऽ धान, मकई, गहुम, मिर्चाइ कुसियार, आलू आदि महत्त्वपूर्ण फसिल केँ नोकसान पहुँचाबऽवला कीड़ा-मकोड़ा, पक्षी तथा मूस पर पलैत अछि आ कीटनाशक दवाइ केर भूमिका निभाबैत अछि। साँपक मल-मूत्र खादके रूपमे पोषक होइत अछि। देशक बोन, आर्द्रक्षेत्र आ चारागाह के नास होबा सँ पूजननाद स्थित कुरी (लेंटेना), पार्थी नियम, भूपेटोरियम आ जलकुंभी जेहन खर पतवार लेने जा रहल अछि।

औद्योगिक करणक तीव्र गति आ प्राकृतिक संसाधनक अन्ध व्यवहारमे पर्यावरण, भूमि, जल वनस्पति, वायु आ जीव पर मनुष्यक हस्तक्षेप बढ़ैत जा रहल अछि, जाहि सँ साँपक किछु प्रजाति समाप्त केर कछेर पर अछि। किछु तऽ लुप्त भऽ गेल अछि।

मिथिलाक महिला लोकनिक कंठमे विषहराक मैथिली ई गीत द्रष्टव्य थिक जे साँपक संस्कृति के दृष्टिगत करैत अछि-

''हरहरा के बत्ती, करैतो के कोरो
से धामन के ना
विषहरि पहिरइ गहनमा
से धामन के ना।
अधसर के छाड़ा, ढोढ़बा के कारा,
से गेहुँमन केना,
विषहरि हँसुली गढ़यलनि,
से गेहुँमन के ना।''

विषहरिक निम्न अंकित गीत मिथिलाक पूजन परम्पराक एकटा उदाहरण थिक-

साओन मास नागपंचमी भेल।
विषहर गहबर सोहावन भेल।।
केओ नीपै गहबर केयो नीपै चौपारि
हमही अभागिन निजी दुआरि।।
केओ लोढ़ै अड़हुल केयो बेलपात
हमही अभागिन हरियर दुबि।
केयो माँगै अनधन केयो माँगे पुत।
हमही अभागिन सिरक सिन्दुर।।

संक्षिप्तः ई स्पष्ट अछि जे मिथिलामे साँपक पूजन परम्पराक अनुपम संस्कृति अतीत सँ अछि आ एकर सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक महत्त्व आइयो ओहिना विद्यमान अछि।



मैथिली लोकगीत मे कौआ सम्बाहक : लोक सम्पदाक ज्ञान

✍ डॉ० कैलाश कुमार मिश्र

मैथिली लोकगीतक संसार अपूर्व संसार आ गीतक महासागर अछि। एहि महासागरक हरेक गीत बेसकिमती सीपी जकाँ अछि जकर मूँह स्वातिक बूंद पएबाक लेल खुजल छैक जाहि सँ ओ मोती बनि सकए। फेर ओ मोती समुद्रक कछेर मे बालु आ अन्य वस्तुक ढेर मे ओंघराएल अछि कुनो जौहरीक ताक मे जे ओकरा गढि सकए तरासि सकए। मैथिली लोकगीत गंगाक अनेक आयाम छैक। सब आयामक अपन महत्त्व।

जखन लोकगीतक विस्तृत आ विशाल संख्या देखैत छी त' अनेक बिंदु दिस ध्यान जाइत अछि। एहिना ध्यान एक गीतक अनुवाद करैत लोकगीत मे कौआक प्रयोग आ ओकर उपयोगिता दिस चलि गेल। लोकगीत मे कौआक मानवीकरण क' नायिकाक द्वारा कौआक विभिन्न तरह सँ प्रयोग कएल गेल अछि। प्रचलित व्यवहार मे कौआक प्रति लोकक विश्वास पर गेल। अदौं सँ लोकधारा मे कौआ मनुखक खाश'क' महिला एवं बच्चा सबहक पल-पल केर मित्र बनल अछि।

विभिन्न प्रकारक जानवर आ चिडई-चुनमुनक अति प्राचीन समय सँ मनुखक जीवन सँ नाता रहल छैक। मैथिली लोकगीत मे चिड़ई-चुनमुनक प्रति प्रेमक अद्भुत वर्णन आ प्रेमाधिक्य देखल जा सकैत छैक। चिरई-चुनमुन कोन क्षण मनुखक जीवनक अभिन्न अंग बनि जाइत अछि पते नहि चलैत छैक। भोजन बनबैत काल चिड़ई-चुनमुन आ जानवर लेल पहिल कौर माय राखि दैत छलीह। एखनो माए एहि परंपराक निर्वाह करैत छथि। सामूहिक अवसरक निमित्त भोज-भात मे भोजन बनबए सँ पूर्व चिड़ई-चुनमुन लेल पहिल कौर एखनो निकालि देल जाइत अछि।

काक भुशुंडी त' कौआ छला जे पक्षीराज गरुड़कें रामकथा पहिने सुना देने छलथिन। अहि बातक वर्णन बाल्मीकीक रामायण आ तुलसीदासक रामचरितमानस मे भेटैत अछि। भगवान शिव पार्वती सँ कहैत छथिनरू ष्हम जे सुंदर कथा अहाँ कें सुनेलौ अछि ओहि कथाकें काक भुशुंडी गरुड़कें सुना चुकल छथि। नारदक ज्ञान सँ भगवान रामकें नागपाश सँ मुक्त कए गरुड़ जखन अपन धाम घुरैत रहथि त' एकाएक हुनकर मोन मे एक शंका उत्पन्न होईत छनि कि केहन भगवान छथि राम जे एक तुच्छ राक्षस द्वारा फेकल नागपाश मे बन्हा गेलाह? गरुड़ एहि शंकाक समाधान ऋषि नारद सँ पुछलनि। नारद अहि शंकाक समाधान बतेबा मे असमर्थ होइत गरुड़ कें ब्रह्मा लग भेज दैत छथिन। ब्रह्मा सेहो हुनका महादेव लग पठा देलथिन।

महादेव गंभीर होइत बजलारू ''भगवानक माया बतेनाइ असम्भव अछि। एक चिड़ई दोसर चिडईकें ठीक सँ बुझा सकैत छैक ताहि अहाँ काक भुशुंडी लग जाऊ। वएह अहाँकें सब बात नीक सँ बुझा देताह। अंतत जखन गरुड़ काक भुशुंडी लग गेलाह त' काक भुशुंडी अपन वैदुश्यक परिचय दैत गरुड़कें पूरा रामायणक कथा समझा देलथिन। ई कथा कौआकें बुद्धिमान प्रमाणित करैत अछि संगहि मानव मन मे चिड़ई-चुनमुनक संगे गूढ़ बातक मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक आधार सेहो प्रमाणित करैत अछि।

चिरई-चुनमुन आ कौआक मनुखक जीवन मे महत्त्वक सब सँ उत्तम उदाहरण विष्णु शर्मा द्वारा रचित कालजयी रचना पंचतन्त्र अछि।

प्राचीन भारत मे गुरुकुल जंगल मे होइत छल। गुरु अपन शिष्य के प्राकृतिक वातावरण मे राखि ओकरा प्रकृति आ प्रकृतिक अवयव जेना की गाछ-बृक्ष, चिड़ई-चुनमुन, जड़ी-बूटी, नदी-नाला, झरना, पोखरि, पहार, वन्यजीव आदिक जानकारी दैत छलथिन आ ओकरा संग कोना तारतम्य स्थापित हो से गुण सिखायल जाइत छलैक। विष्णु शर्मा त' चिड़ई-चुनमुन आ वन्यजीवक मानवीकरण कए पूरा पंचतन्त्र केर निर्माण बच्चाक ज्ञान विकसित करबा लेल केलाह।

पंचतन्त्रक गूढ़ अध्ययन आ विवेचन स स्पष्ट होइत अछि जे चिड़ई-चुनमुन मनुखक जीवनक अभिन्न अंग जकां थिक। एकरा सब सँ सीख लेल जा सकैत अछि आ तारतम्य स्थापित क' जीनाई नीक।

अर्थ भेल जे अपन लोक समाज आ व्यवहार ई कहैत अछि जे एकरा सब सँ प्रकृति मे सामंजस्य स्थापित करू। एक दोसरक बिना जीवन अपूर्ण अछि। पशु आ चिड़ै सँ तारतम्य स्थापित कएने लाभ। हलांकि एखन ईहो सुनबा मे आबि रहल अछि जे हेंजक-हेंज कौआ मरि रहल अछि। मोन एहि तरहक बात सुनि आहत होइत अछि। कौआ पर्यावरणक प्राकृतिक सफाईकर्मी थिक आ सएह मरि रहल अछि तखन पर्यावरण कें की हएत?

आब लोकगीत पर अपन ध्यान केन्द्रित करी। माय अपन बच्चाक मुँह मे कौर दैत काल भांति-भांतिक चिड़ई सब सँ सम्बन्ध जोड़ैत कहैत रहैत छथिरू ले बौआ ई कौर कौआक छौय ई कौर मैनाक छौ। कदाचित एहि तरहे सामाजिक रुपे हमरालोकनि चिड़ै-चुनमुन सँ एक मानवीय सम्बन्ध बना लैत छी। चिड़ै केवल चिड़ै नहि अपितु, भाई, बहिन, सखा-सम्बन्धी बनि जाइत अछि। एकटा नेनाक गीतक किछु पंक्ति देखु-

मेना केर बच्चा चिड़ैया गे
दू टा जामुन खसा
लाली खसैबए त मारबौ गे
दू टा कारी खसा
तू छै बहिन तोहर हम भैया
जौ ने खसेलें त बुझि ले दैया
मारब खुआ तोरा जहर गे
दू टा जामुन खसा
मेना के बच्चा चिड़ैया गे
दू टा जामुन खसा।।

लोक दू तरहक परम्पराक पालन करैत अछिः पहिल एहेन परंपरा जे अगर सर्वदेशिक नहियो होइक त बहुदेशिक आ सर्वकालिक होइत छैक। उदाहरण कें लेल कबीर, तुलसी, मीरा, सूर आदिक किछु गीत, किछु दोहा, किछु पद अपन मूल स्वरुप मे अनेक भाषा आ भूगोल मे घुमैत रहैत अछि। आल्हा-उदल, राजा भरथरी आ गुरु गोरखनाथक कथा मालवा सँ चलैत गोरखपुर अबैत पूरा भोजपुरी मगही भाषा क्षेत्रक भ्रमण करैत मिथिला धरि आबि जाइत अछि। बात कौआक क' रहल छी त अहि सम्बन्ध मे मीराक ओ प्रसंग स्मरण भ' रहल अछि जखन मीरा अन्तिम समय मे रेगिस्तान मे लगभग प्राणहीन भेल मृत्युक वरन करबा लेल तैयार छलीह। ओहि क्षण एक कौआ मीरा केँ मरल मुरदा बुझि हुनकर आँखि पर चोंच मारैत अछि। मीराक प्राण सजग भ' जाइत छनि आ गाबि उठैत छथि-

''कागा नैन निकारि के ले जा पी के द्वार
पहले दरस दिखाय के पीछे लीजो खाय
कागा सब तन खाइयो
चुनि-चुनि खाइयो मांस
दो नैना मत खाइयो कागा
मोहे पिय देखन की आस''।।

काली कान्त झा ''बूच'' अपन कविता ''दीनक नेना'' मे कौआ केँ सम्बाहक जकाँ प्रयुक्त करैत छथि। एहि गीत मे एक गरीब माय छैक जकर पति बाहर कमेबा लेल गेल छैक। घर मे ने अन्न ने ढउआ। छोट दुधपीबा बच्चा कखनो चाकलेट, कखनो बिस्कुट त' कखनो कोनो आरो वस्तु लेल माय सँ जिद्द करैत छैक आ कनैत छै। लाचार माय कौआ केँ कुचरैत देखैत ओकरे सहारा लए अपन कनैत होरिला केँ गीत सुना बौंसबाक प्रयत्न क' रहलि छैक। बौआ देखु-देखु, ई कौआ गाबि रहल अछि। ई तोरे कुचरि क' सुना रहल छौ। तों बीच ओसारा मे सुतल छै आ ई कौआ पूब दिस तोरा देखि खुशी सँ नाचि रहल अछि। अते सुन्नर पुरबा बसात जेना कौआ केँ नाचबा लेल आ तोरा मस्त करक लेल बसातक छनन-छनन लहरि सँ बाँसुरी बजा रहल छौक। रे बौआ तोहर जन्म निर्धन घर मे भेल छौक ताहि तोरा लेल बिस्कुट आ चाकलेट बनले नहि छौक। बिसरि जो एहि वस्तु सबकेँ। तोहर गोलगर पेट नोन रोटी सँ भरि जाऊ त' भाग्य! लेकिन, चिंताक कोन बात? बसातक धुन आ कौआक मस्त भ' नाचब मधुर बातक स्वरलहरी तोरा लेल तैयार केने छौ। अनका थोरे ने ई भाग्य छैक? तोहर पिता परदेसिया छौ रे बाऊ। कतेक दिन भ' गेल मुदा निरमोहिया कोनो चिट्ठियों नहि भेजलक अछि! ई कोनो बात भेलै? कह ने? केना एहि अवस्था मे ई कौआ अपन कुचरब सँ आ बसातक झोंका अपन मधुर धुन सँ तोहर नींद सँ झकमैत माय केँ टीस जगा रहल छौक! रे नेना! तों की बुझबें जे गरीबी ककरा कहैत छैक? श्रमजीवी केँ सपनों मे सुख नहि लिखल छैक। बेचारा श्रमजीवी अपने त' अन्हार घर मे डिबिया जरा क' राति बीतबैत अछि आ अपन परिश्रम सँ समस्त नगर केँ जगमग करैत अछि। देख ने कोना ई हुलसगर बिएनि अपन नहुँ-नहुँ मिठगर बसात सँ तोरा सुता रहल छौक! निनियारानी, झटकि क' बौआ लग आउ ने! बौआ केँ सुताउ ने! रे सोन, तों बिना वस्तु सब खेने उपासल छैं। हम ग्लानि सँ मरल जा रहल छी। मुदा हम छी लाचार। करू त' की करू रे बौआ?''

मूल कविता देखू-
देखहीं रौ बौआ, ई कौआ गवै छौ।
सुनही रौ तोरे, कुचरि सुनवै छौ।।

एम्हर तों सूतल छे माँझे ओसार पर
ओम्हर ओ नाँचौ पुवरिया मोहार पर
पुरबा वसात बाँसुरी बजवै छौ.........।
सुनही रौ तोरे, कुचरि सुनवै छौ।।

तोरा लय बनलौ ने बिस्कुट आ चाकलेट
नोनो रोटी सं भरतौ ई गोल पेट
बातक मधुर स्वरलहरी अबै छौ .....।
सुनही रौ तोरे, कुचरि सुनवै छौ।।

बापे तोहर बनलौ परदेशी
चिट्ठी ने एलौ भेलौ दिन वेशी
माँ केर निनायल व्यथा जगबै छौ।
सुनही रौ तोरे, कुचरि सुनवै छौ।।

की बुझबें ककरा कहै छै गरीबी
सपनो में सुख नहि जतऽ श्रमजीवी
लुत्ती लगाकऽ नगर बसबै छौ.......।
सुनही रौ तोरे, कुचरि सुनवै छौ।।

कोरा में तोरा सुताबै छौ बिनियाँ
झटकल औ अविहें रौ नूनूक निनिया
तोहर उपास हमरा लजबै छौ
सुनही रौ तोरे, कुचरि सुनवै छौ।।

कौआ मिथिला मे दू प्रकारक भेटैत अछि सामान्य कौआ आ कार कौआ। दूनू के अपन-अपन स्थान लोक परम्परा मे छैक। कार कौआ अशुभक सूचना दैत अछि आ सामान्य कौआ शुभक संकेत। दूनू जे बजैत अछि तकरा लेल अलग-अलग शब्द छैक। कार कौआ ''डकै'' छै आ सामान्य कौआ ''कुचरै'' छै। ड़कनाई अशुभक सूचक आ कुचरनाई शुभक सूचक। किछु लक्षण छैक जाहि सँ ई पता चलैत छैक जे कौआक कोन परिस्थिति मे बेसब, उठब, कुचरब शुभ आ कोन परिस्थिति मे अशुभ केर सूचना दैत अछि।

कौआ जखन घरक चार अथवा आंगन मे कोनो ऊँच चीज पर चढिक कुचरै त' कहल जाइत छैक जे ई शुभक संकेत अछिय संगहि घर मे कियोक पाहुन एता कतेको बेर एहि तरहक बात सत्य भ' जाइत अछि।

कौआक घरक चार अथवा आंगन मे हरियर गाछ पर बैसब हेरायल वस्तु भेट जाएत तकर परिचाएक भेल। एहन स्थिति मे कोर्ट कचहरी मे दबदबा बनैत छैक आ मुकदमा मे जीत हासिल होइत छैक। धन-धान्य मे बृद्धि सेहो होइत छैक।

कौआ अगर बखारी, अन्नक ढेर आदि पर बैसय त' धनक लाभ होइत छैक। गाय केर माथ पर कौआ बैस गेल त' प्रियजन सँ भेट हेबेटा करत।

अगर कौआ सुखैल मांटि किंवा गर्दा मे ओंघराए लागल त प्रचुर मात्र मे वर्षा हएत।

एहि सबहक बिपरीत कौआ जँ कोनो सुखाएल गाछ पर बैस क' कुचरि रहल हो त' ई कोनो महामारी फैलबाक पूर्व सूचना थिक।

ककरो माथ पर कौआ अपन चोंच सँ हड्डीक टुकड़ी खसा दैक त' ओहि व्यक्ति केँ मृत्यु निश्चित बुझु।

मैथिली लोकगीत महाकवि विद्यापतिक बिना अपूर्ण अछि। एक विरही नायिका जकर पति परदेस गेल छैक केर वेदना आ केना ओ कौआ केँ अपन समदिया बनबैत अछि, केना ओकरा लोभबैत अछि इत्यादिक बहुत सुन्नर वर्णन महाकवि निम्न लोकगीत मे करैत छथि-

मोरा रे अंगनमा चनन केर गछिया ताहि तर कुरुरै काग रे।
सोने चोंच तोहें बांधि देबौ बायस जौं पिया अओता आजु रे।
गाबह गाबह सखि लोरी झूमरि मदन अराधन जानु रे।
चहुं दिसि चंपा मेहुलि फूललि चंद्र इजोरिया राति रे।
कोना कए हम मयन अराधब होयत बड़ी रतिसाति रे।
पांक समय कागा केओ ने अपन हित देखल आंखि पसारि रे।
विद्यापति कविवर इहो गाबए तोकें अछि गुनक निधान रे।
राव भोगीसर सब गुन आगर पदमा देवी रमान रे।।

एहि गीतक संक्षेप मे अर्थ ई भेल जे हमरा आंगन मे चाननक गाछ अछि आ ओई गाछक ठाढि पर एगो कौआ बैसल कुचरि रहल अछि। ई निश्चित रुपेँ शुभ समाचार केर लक्षण थिक। हे कौआ, अगर आई हमर प्रियतम आबि गेला त' हम तोहर चोंच सोन सँ मढ़वा देबौ। आउ हे सखी बहिनपा सब, सब मिलि झूमर गाउ। आई हम प्रेमक आराधना कर' जा रहल छी। चारु दिस चंपा आर भालसरीक फूल फुलाएल अछि। मुदा ई पूर्णिमाक राति? कोना हम कामदेवक आराधना क' पैब। कारण जे एहि मिलनक सबसँ पैघ उपहार त' कामदेवक आराधने हेतनि। सुन कौआ, खराप समय मे कियोक अपन नहि होइत छैक। ई बात आँखि खोलि क' देखि चुकल छी। कवि विद्यापति कहैत छथि हे सुन्नरी, अहाँक प्रियतम गुणक खान छथि। जेना राजा भोगेश्वर छथि आर जे पद्मा देवीक साथ रमण करैत छथि।

जाहि समय मे आवागमनक सुविधा अतेक उन्नत नहि रहैक ताहि क्षण मे कौआ केँ लोक खाश तौर पर स्त्रिगन आ नेना सब कहौतिया बूझैत छल। नायिका निवेदन करैत छथि जे आउ आ हमर अंगना मे कनि कुचरू। अहाँकेँ हमर आंगन मे स्वागत अछि। हम हम अहाँ केँ पानि सँ स्वागत करब, बैसबाक लेल पीढ़ी देब आ अगर अहाँक कुचरला सँ हमर प्रियतम कहीं आबि गेला त' ओ जे कोनो सनेश अनता ताहि मे पहिल हिस्सा अहींके देब। एतबे नहि, अगर हमर प्रियतम परदेसी आबि गेला त' हम अहाँ लेल कंगना सनेश बनाएब। अहाँ चिंता नहि करू। हमर बात पर विश्वास करू। हमर हितग्राहक बनु आ आउ आ हमर अंगना मे कुचरू-

हे रे कौआ कुचरि बैस अंगना मे।
पानि देबौ पीढ़ी देबौ।
पहिलुक सनेश हम तोरे देबौ।
जौं प्रियतम परदेसी औता।
तोरा सजैब हम कंगना मे।
हे रे कौआ कुचरि बैस अंगना मे।

अगर कोनो महिला आ नवकनियाँ कनि ताम-झाम वाली छैथ आ हुनकर दिमाग सातम असमान पर चढ़ल छनि। हरेक चीज भोजन सँ पहिरन धरि मे नखरा छनि तकर अलगे बात! मूँह-कान कोनो खाके सन मुदा घमंड ऐना जेना विश्वसुन्दरी होथि। यथार्थ मे हुनकर मूह कौआ सनहक छनि। कमेंट हुनका पर छोटगर अछि ओहो गीतक रूप मे। कनि देखी-

कौआ सनहक कारी आ बकुला सनहक ठोर।

बैसल-बैसल चाही हिनका दाली भात तिलकोर।
हमही सबस सुन्नरि छी आ हमरे सुन्नर दुल्हा।
सासु कियैक नहि भानस करती नहि फूकब हम चुलहा।।

ग्राम्यांचल मे कौआक कुचरब भोर होमाक सूचक अछि। नायिका कैँ नायक कहैत छथिन जे कौआ बजलक आ भोर भ' गेलय भोर भेल त' नगर भरि मे शोर भ' गेल। आब कतेक काल सुतब? यै फलां बौआक माय? उठू ने! ऐना कोना चलत दिन? चलू आब नित्यकर्म मे लागि जाई।

कौआ जगलै भेलै भोर
भेलै भरि नगरी मे शोर
आबो जागू यै बौआ के माय।

माय अपन कनैत बच्चा केँ कौआके नाम लै सूतक हेतु तैयार करैत छथि। लोरी जकाँ कौआ केँ गीत मे पात्र बना कनैत नेना केँ सुतबैत छथि। बौआ सुति रहू। देखू-देखू आकाश मे केना कौआ उड़ि रहल अछि। चिंता नहि करू अहाँक पिताजी जखन आबए लगता त' पटना सँ अहाँ लेल ढ़ौआ लेने अएताह।

चुप रहु चुप रहु बौआ
आकाश में उड़ई अछि कौआ
एयता बाबू पटना स लेने औता ढ़ौआ।

चौताबर मे नायिकाक टीस आ कौआ दूनूक मेल देखल जा सकैत अछि। नायिकाक आंगुर मे साँप डसि लेने छैक। शायद विरहक डंक? अपन ननदि सँ नायिका कहैत अछि जे केँ ओकरा लेल वैद बजा आनत? केँ ओकर पीड़ा केँ समाप्त करत? केँ ओकरा लेल पलंगक ओछायन तैयार करतैय नायिका केँ प्रियतमके केँ बजा अनतै हो राम? नायिका केँ पिता वैद बजेथिन, माय पीड़ा मिटेथिनय ननदि पलंग पर ओछायन तैयार करथिनय देबर पिया केँ बजा अनथिन। नायिका कौआ सँ निवेदन करैत कहैत छथिन जे रे कौआ तोरा हम दही आ चूडाक भोज खुआ देबौक अगर हमर समाद केँ हमर प्रियतम तक लेने जयबैं। आब कनि कौआक मानवीकरण देखु, कौआ नायिका केँ कहैत अछि 'ठीक छै हम तोहर समाद तोरा प्रियतम लग ल' जेबौक मुदा एकटा समस्या अछि। हम तोहर प्रियतम कैँ नहि जनैत छी फेर कोना तोहर समाद देबैक?''

आब नायिका कौआ केँ अपन प्रियतमक हुलिया बतबैत कहैत अछिरू ''हमर प्रियतम केँ पातर-पातर डाँर छनि आ घरक दरबज्जा पर चानन केर गाछ छनि।'' आब कौआ सहर्ष नायिकाक समाद ल' क' प्रियतम लग जएबाक लेल तैयार भ' जाइत अछि।

अंगुरी मे डसलक नगिनियाँ हो रामा
के मोरा जायत बैद बजाएत
के मोरा हरत दरदिया हो रामा।
के मोरा जाएत पलंगा ओछाएत
के मोरा पिया के बजाएत हो रामा।
बाबा मोरा जाएत बैद बजाएत
अम्मा मोरा हरत दरदिया हो रामा।
ननदि मोरा जाएत पलंगा ओछाएत
दिओर मोरा पिया के बजाएत हो रामा
देबऊ रे कागा दही-चूड़ा भोजन
हमरो समाद नेने जाह हो रामा।
तोहरो बलमुजी चीन्हियो ने जानियौ
कोना समाद नेने जाएब हो रामा।
हमरो बलमुजी के मुठी एक डाँर छनि
दुअरे चनन केर गछिया हो रामा।।

आब कनि सोहर दिस चली। बिना सोहरक मैथिली लोकगीत कहेन? एक सोहर मे नायिका जे गर्भ सँ अछि कोना अपन भावना केँ व्यक्त क' रहल अछि। संतानक कामना मे व्याकुल नायिका हरेक आगंतुकक सूचना देमए बला कौआ केँ चोंच केँ सोन सँ मढेबाक अश्वासन दैत अछि आ अपन जानि बड्ड सिनेह सँ कौआ केँ कहैत अछि कि हे कागा अगर हमर अंगना मे तोहर कुचरब शुभ सिद्ध भ' गेल आ यदि हमर परदेसी प्रियतम घर आबि जाथि त' हमर बांझपन खतम भ' जाएत। आ से भ' गेल त' हम तोहर चोंच केँ सोन सँ मढ़ा देबह।

जों मोरा कगबा रे पिया अयताह
होरिला जनम लेत रे।
कगबा सोन में मढएबो दुनू लोल
त बोलिया बर सोहाबन रे।
चुपे रहू चुपे तिरिया जनिअ करू रोदन हे।
तिरिया आजुए आओत घरबइआ बझिनिया पाप छुट्त हे।।

दोसर सोहर मे नायिका केँ संतान प्राप्ति मे आब देर नहि छैक। कखनो ई शुभ सूचना आबि सकैत छै। आब छठिहार मे ककरा-ककरा सूचित कैल जाय आ निमंत्रित कैल जाय ताहि पर पति आ पत्नी मे बात भ' रहल छैक। होरिलाक जनम भेल छैक से सूचना त' कौआ ने देतैक? सगुन केर नौत त' काग ने भाखत। हाँ जी हाँ। नायिका अपन पति केँ चिढ़बैत कहैत छथि जे दियाद आ लोक आ समाज केँ नौत त' जैत मुदा हे पिया हम अहाँ बहिन केँ नहि नोतब कारण जे अहाँक भागिन नहि आबि पेता। कौआ केँ सगुनिया बनेबाक विधान सरिपहु बड्ड सोहनगर लगैत छैक।

आरे-आरे कागा सगुनिया सगुन नौत भाखब रे
कागा रे मोर घर उचित कल्याण कहाँ-कहाँ नौतब रे ।
दर जे नोतब दिआद लोक आओर समाज लोक रे।
पिया हे आहाँक बहिन नहि नोतब कि भागिन कहाँ आओत रे।।

एक विरह गीत मे नायिका केर बेहाल हालक दारुण व्यथा व्यक्त कएल गेल अछि। तमाम चिड़ई जाहि मे कागा सेहो सम्मिलित अछि गाछक डारि बैस गेल अछि। प्रात भ' चुकल अछि आ प्रात होइतहि नभ मंडल मे सूर्य केर लालिमा छटकि रहल छैक। नायिका अपन सखी कें संबोधित करैत कहैत छथि "हे सखी, हमर प्रेमक पियास कोना मेटत? हम त' विरह वेदना मे तड़पि-तड़पि क' दिन आ राति काटि रहल छी। राति बीत गेलय हम बेर-बेर चारू कात चकुयाएलि देखैत छी मुदा हे सखी, एखन धरि हमर पिया कहाँ अएलाह?

खग उड़ि बैसल तरुवर डाली
भेल गगन में प्रात सुलाली
हमर पियास मेटत कोना सजनी
तडपि-तडपि बितए दिन-रजनी
रैन बितल मोरा पिया नहि आएल
रहि-रहि चहुँ दिश ताकल सजनी।।

मैथिली लोकगीतक सब सँ सुन्दर रूप तखन द्रष्टिगोचर होइत अछि जखन कौआ संग-संग दोसर जंतु कें सेहो मानवीकरण कए ओकर श्रृंगार आ प्रेम भाव कें गीतक माध्यम सँ व्यक्त कैल जाइत अछि। एहि तरहक उदाहरण मे सब सँ सुन्नर उदाहरण विषहरि आ कौआक थिक। एक विषहरिक गीत मे एहेन स्थिति अबैत छैक जे विषहरि कें अंगूठी कौआ आ सोनक ग्रीमहार चिलहोरि ल' क' भागि गेलनि। आब विषहरि कानए लगली। लोक सब विषहरि कें मनेबाक प्रयास क' रहल अछि। सोनरा कें बजा सोन देल जात अछि आ पटबा कें रूपा। दूनू कें तुरत आदेश देल जाइत अछि जे यथाशीघ्र विषहरि लेल मुद्रिका आ ग्रीमहार गढ़ल जाय।

कागा लऽ गेल मुद्रिका चिलहोरि ग्रीमहार
राम ताहि लेल विषहरि रोदना पसार।
सोन ले रे सोनरा रूपा ले रे पटबा
राम गढि दए सोनरा भैया सोने ग्रीमहार
पहिर लीअ विषहरि मैय्या गले ग्रीमहार।।

विषहरिक दोसर गीत मे एक गहीर पोखरि में घुसि क जकर उचगर भिड छैक विषहरि स्नान क रहल छली। नहेला-सोनेलाक बाद अपन नमहर-नमहर केश कें थकरेत छली। एकाएक कौआ सोनाक ककबा ल' क' भागि गेल। आब कनैत-खीजैत विषहरि अपन माय लग आबि कहलथिन जे कोना कागा हुनकर ककबा चोंच मे ल' क' पर उड़ि गेलनि। माय बौंसति कहलथिन- "हे विषहरि दाई, अहाँ कानू-खिजू नहि हम अहाँ लेल फेर सँ सोना कें ककबा बनबा देब"। आब विषहरि चुप भ' गेली।

नीची रे पोखरिया के ऊँची रे मोहार
राम ताहि पइसि विषहरि करु स्नान।
नहाय सोनाय विषहरि थकरथि केश
राम सोना के ककहिया आजु काग लए गेल।
कनैत खीजैते विषहरि आमा आगु ठाढि
राम सोना के ककहिया आजु काग लए गेल।
जुनि कानु जुनि खोजू विषहरि माय
राम सोना के ककहिया हम देब बनबाय ।।

तेसर बिषहरि गीत मे एहेन कल्पना कएल गेल छैक जे एक छोटछिन जमुना कें कछेर मे बान्ह पर छोट कदम्बक गाछ छैक। ओहि गाछक छाहरि मे बिषहरि जुआ खेल लगली। जुआ खेल काल ततेक बेसुध भ' गेली की कखन कौआ उडिक एलई आ झपट्टा मारि बिषहरिक हार ल' गेलनि से पते नहि चललनि। जखन होश मे एली त' कनैत खिजैत कौआक पाछा-पाछा दौडली। रे कौआ तों जते बैसबैं हम तोरा छोरबौ ने ओतहि तोहर ठोर दागि देबौक।

छोटी-मोटी जमुना-दह में छोटी नील गाछ
राम ताहि तर विषहरि खेलू जुआसारि।
जुअबा खेलइते विषहरि भेली बेसूधि
राम ताहि खन काग उड़ि हार लए गेल
कनइते-खीजइते विषहरि धयल पछोर
राम जहाँ धय बैसबह दागब तोर ठोर।।

अहि तरहें मैथिली लोकगीत आ व्यवहार मे कौआ आ मनुखक बीच प्रेम अनंत अछि। जतेक भीतर जाएब आ जतेक मंथन करब ततेक अमृत भेटत। ओना चर्चा मैथिली लोकगीत आ कौआ पर क' रहल छी मुदा कहि नहि कथीलेल यात्रीजीक (नागार्जुनक) "अकाल और उसके बाद" कविता स्मरण आबि रहल अछि। भुखक ज्वाला में एहि कविता में केवल नायिका नहि तड़पि रहल छैक अपितु ओकरा संगे गिरगिट, कुकुर, कौआ, मुस सब ओहि भुखक वेदना के सहयात्री छैक।

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।
दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।

बाबा ई कविता हिंदी में लिखला। चूँकि ई लेख हम मैथिली में लिख रहल छी त सोचलौ एक बेर एहि कविता के मैथिली में अनुवाद करबाक प्रयत्न करी। कहेन भेल से नहि बुझल अछि मुदा प्रयत्न त केलहु। कनि देखू-

कतेक दिन धरि कानल चुलहा जांतो रहल उदास
कतेक दिन धरि कनही कुकुर सुतलै ओकरा पास
कतेक दिन धरि घरक भीत में गिरगिट केलक गश्त
कतेक दिन धरि मुसो के रहलै हालत शिकस्त।
दाना आएल घरक भीतर कतेक दिन के बाद
देखल धुआं अंगना स ऊपर कतेक दिन के बाद
मोन भेलै घर भरि के हरियर कतेक दिन के बाद
सुगबुगेलक पाँखि के कौआ कते दिन के बाद।।

एकटा बसन्त के गीत मे नायिका कागा केँ सम्बाहक बना कतेक बात बता दैत छैक। बेचारी नायिका, फगुआ नजदीक आबि गेलैक। लोक केँ देखि ओकरो रंग रभस करक इच्छा भ' रहल छैक मुदा रंग खेलत त' ककरा संग? पाहून त' परदेसिया छथिन। दूर देस मे बैसल छथि। हे कागा अहाँ हमर समदिया बनु आ उडि क' हमर कंत केँ हमर समाद द' अबियौन। ओ हमरा हीरा मोती आ नग सँ सुसज्जित एक चोली पठा देने छला से तार-तार भ' गेल। हुनकर बिरह वेदना अलग रहि-रहि हमरा सता रहल अछि। आब रहल नहि जैत अछि।

ककरा संग खेलब ऋतु वसन्त।
निरायल फागुन दूर बसु कन्त।।
उड़ि-उड़ि कागा जाहु बिदेश।
हमरो ललाजी के कहब उदेश।।
चोलिया एक पहु देल पठाय।
चारु दिश हीरा-मोती लाल जड़ाय।।
चोलिया फाटल तारम्तार।
विरह सताओल बारम्बार।।
सूरदास जे गाओल वसन्त।
एहि जग बहुरी ने आयल कन्त।।

एक पूर्वी गीत मे अहि बातक वर्णन छैक जाहि मे नायिकाक पति दक्षिण दिशा दिस वाणिज्यक मादे गेल छथि। हुनका तो बजा दैह फेर गीत मे सासु-पुतोहू केर वार्ता सेहो होइत छैक। गीत नीचा देल जा रहल अछि-

जाहु-जाहु आहे कागा दक्षिण बनिजबा हे
आनि दह पिया के बजाय, हे सजन मेरो
बारहे बरख पर पीया मोरा लौटल
बैस गेला चन्दन के छाँह, हे सजन मेरो
देहु-देहु आहे सासु छुरिया कतरनी हे
हति लेब अपन प्राण, हे सजन मेरो
कियाए तोहें आहे पुतहू छुरिया कतरनी हे
धयलाह नैहरक आस, हे सजन मेरो
जाहू-जाहु आहे कागा हमरो नैहर जाहे
आनि दह भईया के बजाए, हे सजन मेरो।।

कौआक मानवीकरण एहि मे कएल गेल अछि। कौआके नायिका अपन पतिक छोट भाई मानैत अछि कौआ संवाहक रूप मे मनुखक रूप मे देखब लोक गीत परंपराक पुष्ट प्रमाण अछि।

कौआ के मनुख मनैत ओकरा लेल चुरा-दही-चीनी खुएबाक ब्योंत सेहो भ' रहल छैक-

''देबौ रे कौआ चुडा दही भोजना
अयता जअ सजना लगेबो मे सोजना
सौतिन सुरति मे बिसरि गेल सजना
करै कोनो शगुन पिया आबए अंगना ।।

अर्थ ई भेल जे मैथिली लोकगीत आ लोक व्यवहार प्रकृति आ संस्कृति संग परिस्थितिकी संग संयोजननक कला मे बेजोड़ अछि। मनुख अपन परिवेश मे प्रकृतिक सब अवयव पानि, हवा, माटि, जीव जंतु संग तारतम्य बनबैत जीबैत अछि। ताहिं ओकर जीवन सहज, सुंदर आ नीक जीवन छैक। कौआक बात बुझला स ई पुर्णतः स्पष्ट भ जाइत अछि।

अंत मे एक गीतक किछु पाँति देखू जाहि मे कागा संबाहक मात्र नहि मानवीय संवेदना सँ भरल प्राणी अछि। कारी-कुरुप-मरल मुर्दा तक केँ भक्षण करयबला कौआ केँ लोक पाग, गहना सँ गीत मे सजबैत अछि, चुरा दही आ नीक निकुत भोजन खुएबाक प्रलोभन दैत अछि। ई सब किछु लोक व्यवहार मे संभव अछि। गीतक पाँति सँग आलेख केँ पूर्ण विराम दैत छी-

काग रे तोरा पाग बान्हब सोने मढ़ायेब दुनु ठोड़ रे
पाँखि ऊपर पत्र लिखब भेजब कन्त के पास रे ..

■



बच्चा आ ओकर अध्ययन

✍ डॉ. संजय कुमार झा
बाल रोग विशेषज्ञ, लौकहा

हमरा मोन पड़ि रहलाह अछि- स्टेनली हॉल आ फ्रायड। स्टेनली हॉलक कथावस्तुक अनुसार- ''नीक व्यक्तित्व केर कामना ओकर बचपन के देखभाल पर निर्भर करैत अछि।'' बाल अध्ययन आन्दोलनक एक नव रूपमे उल्लिखित भेल अछि। व्यक्तित्व आ मानसिक रोग संबंधी ''फ्रायड'' केर कार्य आ प्रकाशन सँ लोकक आँखि फुजल अछि आ ओ मानव केर विकासमे बचपन केँ अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान देमऽ लागल अछि। पश्चिमी देश पर सेहो एकर असरि पड़लनि अछि।

बच्चाक बचपनक अध्ययन कयला सँ ई जनतब भेटैत अछि जे ओकर स्थिति केहन छल आ एखने की स्थिति छैक? प्रत्येक उन्नतशील देश बच्चा साकि हित लेल विभिन्न तरहक योजना क क्रियान्वित करैत अछि आ ओकर नीक स्वास्थ्य लेल विकासक साधनक अन्वेषण करैत अछि। वैज्ञानिक लोकनि के अन्वेषण केर आधार पर ई कहल जा सकैत अछि जे विकासक प्रक्रिया तेजी सँ चलि रहल अछि। एक तऽ माय-बाप, अभिभावक, अध्यापक, छात्र सभ एहि सँ लाभान्वित भऽ रहल छथि आ आगाँक विकासमे हाथ बटेबाक प्रयत्न कऽ रहलाह अछि।

आइ अध्यापक समाजमे सेहो बाल विकासपर विशेष रूपसँ ध्यान देबाक लेल अपन प्रचार-प्रसार करैत छथि। मनोवैज्ञानिक ओ बाल रोग विशेषज्ञ बाल स्वभावकेँ बुझबामे बेसी रूचि लैत छथि। कारण सफलता बाल स्वभावक ज्ञान पर निर्भर करैत अछि, तेँ बाल मनोविज्ञान आब विशेष अध्ययन केर विषय मानल जाइत अछि।

माय-बाप सेहो आब बुझि रहल छथि जे बच्चाक मनोभाव केँ कऽ ओकर देखभाल करबाक चाही। बहुतेक माय-बाप तऽ अपना बच्चा केँ अपन अनुभव सँ भेल कठिनाई के बचावऽ चाहैत छथि आ सुखमे बचपन पाबय एहन ओ अपना दिस सँ भरिसक प्रयत्न करैत छथि। आइ ई कहल जा सकैत अछि जे आजुक सम्पूर्ण समाज बालक केर प्रति बेसी जागरूक भऽ गेलाह अछि, कारण ओ आब बुझऽ लागल छथि जे ओकर आर्थिक उन्नति बालक केर विकास पर निर्भर करैत अछि।

गति आ भाषा संबंधी कौशलादिक अतिरिक्त विविध संवेगात्मक प्रवृति सभ सेहो घर ओ समाजक वातावरण द्वारा प्रचलित होइत अछि। एहि सँ ई स्पष्ट होइछ जे छोट बच्चा सभ पर वातावरण केर प्रभाव पड़ैत अछि। व्यक्तिमे उत्साह आ डर आदिक होयब ओकर बचपन शिक्षा पर निर्भर करैत अछि। बच्चाक लालन-पालन नीक हो, एहि लेल विशेष ध्यान देबाक आवश्यकता अछि। नीक व्यक्तित्वक जीवनमे विशेष महत्व थिक। प्रत्येक बच्चाक अपन अलग व्यक्तित्व से ओ अबैत छथि। सर जार्ज न्यूमैनक अनुसार- ''प्रथा 5 वर्षक बच्चामे शरीर आ मन दुनू सहनशील होइत अछि।'' एडलरक अनुसा - ''सम्पूर्ण जीवनक ढ़ाँचा शैशव अवस्थाये मे पड़ि जाइत अछि।''

अस्तु बच्चाक भावी जीवन केर बनेबाक लेल ओकर बचपनक अध्ययन आवश्यक। एहि लेल बाल-मनोविज्ञानक भूमिका अहम होइछ। ई विज्ञान सबसँ नम्हर विज्ञान अछि। बच्चा सभक शारीरिक मानसिक बहुत उपलब्धि सभ एहि सँ प्राप्त होइत अछि।

बच्चा सदकि बारेमे जनतब हमरा निम्न रूपेँ अलग-अलग अवस्थामे अलग-अलक ढ़ंग सँ भेटैत अछि। से अवस्था मुख्यतः 4 चारि गोट अवस्था होइत अछि-

1. शैशवावस्था
2. बाल्यावस्था
3. किशोरावस्था आ
4. प्रौढ़ावस्था

शैशवावस्था- ई अवस्था जन्म सँ लऽ कऽ 2 वर्ष धरिक आयुक होइत अछि। जन्मक समय बच्चाक ओजन मुख्य रूपसँ 6-7 पौंड होइत अछि 15 दिनक बाद सँ वजनमे वृद्धि होमऽ लगैत अछि। विकासक प्रक्रिया तीव्रगति सँ होमऽ लगैत अछि। पहिल दू सँ तीन वर्षमे बच्चाक ओजन ओ लम्बाई डेढ़ गुणा बढ़ि जाइत अछि। तीन वर्षक बाद लम्बाईमे अर्थात शारीरिक विकासमे गति आ पड़ि जाइत अछि आ मानसिक विकास तीव्र सँ होइत अछि।

शारीरिक विकास संग-संग बच्चाक अंग संचालनमे सेहो क्रमिक विकास होइत अछि-

- जन्मक लगभग तीन महीनाक बाद सँ बच्चा अपन हाथ पैर चलाबऽ आरंभ कऽ दैत अछि।
- पाँच महीना पर ओ अपन माथ घुमा लैत अछि।
- 6 महीनामे चलबाक प्रयास करऽ लगैत अछि
- भाषा संबंधी सेहो विषय दैत अछि। जेना-बाबा, दादा, मामा, काका आदि।
- दसमा मास सँ लऽ कऽ 12म मास धरिमे किछु-किछु पकड़ि कऽ चलब सीख लैत अछि।
- 12सँ 14 मासमे स्व्यं बिना कोनो सहाराकेँ चलऽ लगैत अछि।
- एकर बाद दौड़ लगैत अछि।
- भाषा-विकासक प्रक्रिया सेहो तेजी सँ होमऽ लगैत अछि।

• अनुकरणक क्षमताक विकास होमऽ लगैत अछि।

मानसिक विकास- शारीरिक विकासक संग-संग मानसिक विकास सेहो होइत अछि। आरंभमे सोचबाक-विचारबाक क्षमता नहि होइत अछि। ओ जन्मजात प्रवृत्ति द्वारा उत्प्रेरित होइत अछि। ओकर मानसिक क्रिया सभक मुख्य आधार ओकर इन्द्रिय सभ होइत अछि।

भाषा विकास- लगभग छह मासक उमेर सँ बच्चामे भाषा-विकासक प्रक्रिया भऽ जाइत अछि। नहुँ-नहुँ ओ बजबाक प्रयत्न करऽ लगैत अछि, मुदा किछुए दिन के बादे सँ ओ उच्चारण करऽ लगैत अछि। ओकर मानसिक संबंधी शक्ति तीव्रता सँ बढ़ऽ लगैत अछि। मोन पड़ैत अछि स्मिथ। हुनका अनुसार ''एक वर्षक आयुमे 250 शब्द बाजब सीख लैत अछि आ बाजबो लगैत अछि।'' बच्चा पर शिक्षित आ अशिक्षित परिवारक प्रभाव बेसी पड़ैत अछि। भाषा संबंधी योग्यता केर विकास सेहो ओहि रूप सँ होइत अछि।

शारीरिक विकास- शैशवावस्थामे बच्चाक शारीरिक विकासक अन्तर्गत शिशुक माथ शरीर केँ अनुपातमे बेसी पैघ होइत अछि, जखन कि लम्बाई अठारह वर्षक उमेर धरि बढ़ैत रहैत अछि। बच्चा आ बुच्चीमे संवृद्धि प्रतिरूप एक समान होइत अछि। यद्यपि प्रत्येक अवस्था पर बच्चाक माथबुच्ची तुलनामे किछु पैघ होइत अछि।

जन्म सँ लऽ कऽ 2 वर्ष धरिक उमेरमे हाथ आ बाजुक सँ 60 प्रतिशत सँ 75 प्रतिशत धरि बढ़ि जाइत अछि। बच्चा सभक प्रारंभिक जीवनमे नाक छोट आ किछु-किछु चिपटल होइत अछि। ई क्रमशः पैघ होइत जाइत अछि आ 14 वर्षक आयु धरि प्रौढ़ आकार प्राप्त कऽ लैत अछि। जन्मक समयमे लगभग 270 हड्डी सभ होइत अछि।

जखन भ्रूण 6 सप्ताहक होइत अछि आ जखन बच्चा जन्म लैत अछि, ओहि समय ओकर दाँत बनबाक प्रक्रिया प्रारंभ भऽ चुकल होइत अछि। पहिल दाँत आम रूपसँ 4 सँ 12 मासक आयुक मध्य प्रकट होइत अछि। पहिल दाँत निकलबाक औत आयु सात मास होइत अछि। अढ़ाई वर्षक आयु धरि बच्चाक बीस दाँत निकलि जाइत अछि। ई दाँत अस्थायी होइत अछि प्रायः एकरा दूधक दाँत कहल जाइत अछि। दाँत निकलबाक आयु विभिन्न बच्चामे अलग-अलग होइत अछि। आम रूपसँ लड़काक तुलनामे लड़कीक दाँत पहिने निकलि जाइत अछि। लड़का आ लड़की अपन-अपन टोली अलग-अलग बनबऽ लगैत अछि।

शारीरिक विकास उचित ढ़ंग सँ होइ, लेल संतुलित आहार केर आवश्यकता होइत अछि कारण शारीरिक विकास एहि आयुमे तेज गति सँ होइत अछि, तैं बच्चा केँ पूरक आहार देबाक चाही। एहि अवस्थामे संक्रमक रोग सभक भय बनल रहैत अछि, तेँ समय-समय पर टीकाकरण सेहो ध्यान दऽ कऽ लगेबाग चाही।

बच्चाक विकास मुख्य रूप सँ दू गोट कारक पर निर्धारित रहैछ-1. आनुवंशिकता आ, 2. पर्यावरण। आनुवंशिकता सँ अभिप्राय होइत अछि- जन्मजात विशेषता आ क्षमता तऽ पर्यावरण सँ अभिप्राय होइत अछि वातावरण सँ संबंधित।

बाल्यावस्था- शैशवावस्थाक उपरान्त बालक बाल्यावस्था केँ बाल्यकाल मानल जाइत अछि। बच्चाक प्रमुख संवेगक विकास बाल्यावस्था सँ पूर्व भऽ जाइत अछि। बालक एहि अवस्थामे अपना संवेग पर क्रमशः अधिकाधिक नियंत्रणण स्थापित करऽ लगैत अछि। ईर्ष्या, भय, क्रोध जाग्रत करऽवाली परिस्थिति सभ आब बेसी बदलि जाइत अछि आ ई संवेग पहिने सँ बेसी कमजोर पड़ि जाइत अछि, शैशवकालक तुलनामे एहि कालक क्रममे वृद्धि दर धीमा मुदा स्थिर होइत अछि।

मस्तिष्क तेजी सँ बढ़ैत अछि आ 5 वर्षक आयु धरि एकर ओजन कुल ओजनक 90 प्रतिशत केँ बरोबरि भऽ जाइत अछि। 4 वर्षक आयु धरि इहो निश्चित भऽ जाइत अछि जे शेष आयुमे बच्चा अपना कार्य बामा हाथ सँ करत अथवा दाहिन हाथ सँ। एहि चरण में भाषिक विकास सेहो तेजी होइत अछि। बच्चा के शब्द-भंडारमे तेजी सँ वृद्धि होइत अछि आ वस्तु। व्यक्ति सभक बारेमे प्रश्न पूछब लेल एहि शब्द सभक प्रयोग करैत अछि। ओ संख्या, रंग, आकृति आ दैनिक घटनाक कारण केर बारेमे सीखैत अछि।

शारीरिक विकासक संग ओहि परिवेशक अपन आवश्यकतानुसार प्रयोग करबाक क्षमता केर सेहो तेजी सँ विकास होइत अछि। संज्ञानात्मक भाषिक विकास एवं गह्यात्मक विकास सेहो होइत अछि। बच्चाक शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास लेल जैविक आ पर्यावरणीय कारक पर निर्भर करैत अछि। कोनो शारीरिक अथवा पेशीय कार्य करबाक लेल बच्चा केँ परिपक्वता केर दृष्टि सँ तत्पर होयबाक चाही।

मानसिक वा बौद्धिक विकास- बाल्यावस्थामे बच्चाक मानसिक विकास दृढ़ताक संग होइत अछि। एहि अवस्थामे स्मरण-शक्तिक क्षेत्र बढ़ि जाइत अछि, मुदा ओकर अनुभूति सीमित होइत अछि। मोन पड़ि रहलाह अछि-मनोवैज्ञानिक दृश्वर्त। हुनका अनुसारे 8 वर्षक आयुक बालकक मानसिक शक्ति सभ सीमित होइत अछि, संगहि भाषा ओतेक विकसित नहि होइत अछि। इएह कारण सँ ओकर मानसिक कार्य मूर्त-वस्तु सभक बारेमे विचार बेसी सोच-विचारि कऽ करैत अछि।

संवेगात्मक विकास- शक्तिक प्रमुख संवेगक विकास पूर्व बाल्यावस्थाये भऽ गेल रहैत अछि। ओहि बाल्यावस्थामे बच्चा अपना संवेग पर क्रमशः अधिकाधिक निमंत्रण स्थापित करऽ लगैत अछि। ईर्ष्या, द्वेष, भय, क्रोध केँ जाग्रत करऽवाली परिस्थिति सभमे सेहो बदलाव आबऽ लगैत अछि, मुदा संवेग पहिने सँ बहुत सँ अवसर पर प्रकट होइत अछि। ओकर माय-बापक सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर बहुत बेसी आश्रित रहैत अछि।

संवेगात्मक विकासक शैक्षिक महत्व- विद्यालयक वातावरण बच्चा के सांवेगिक विकासक गति पर प्रभाव डालैत अछि। जाहि

विद्यालयमे बच्चा कें स्नेह बेसी प्राप्त होइत अछि आ सहानुभूति बेसी भेटैत अछि ओतऽ विद्यार्थी अपन संवेग पर निमंत्रण स्थापित करबामे बेसी सक्षम होइत अछि। शिक्षक बालक कें अपन संवेगक निमंत्रण करबाक तथा एकरा नष्ट करबाक लेल खेलकूल, विचार-विमर्श आदिक द्वारा कार्य करबाकमे बच्चा कें सहायता करैत अछि।

सामाजिक विकास- बालक कें खेलक रूप शिशु खेल सँ भिन्न होइत अछि। बालक मात्र अनुकरणेटा नहि करैत अछि, अपितु एहन खेलमे खेलब पसिन्न कहैत अछि जाहिमे किछु सोचऽ पड़य। असगरे खेलबाक अपेक्षा ओ दोसरा संग खेलब बेसी पसिन्न करैत अछि। ओ समूहमे रहब बेसी पसिन्न करैत अछि, तँ प्रायः सभ ठाम ओ समूहमे खेलैत-कूदैत नजरि अबैत अछि। कतोक बच्चामे अपन दलक नेताक रूपमे सेहो अपना के प्रस्तुत करैत देखल जाइत अछि। लड़का आ लड़की अपन-अपन टोली अलग-अलग बनवऽ लगैत अछि।

नैतिकताक विकास- सामाजिकताक भावनामे विकासक प्रक्रिया निरंतर चलैत रहैत अछि, संगहि एकरामे नैतिक गुण सभक सेहो विकास होइत अछि। नैतिक गुण सामाजिक गुण सँ भिन्न होइछ। एहि अवस्थामे बच्चा नहि चाहैत अछि जे हमरा सँ ककरो दुःख पहुँचय। दोसर ओ सभक प्रिय होइ सेहो प्रयत्न करैत रहैत अछि। बाल्यावस्थामे एकर चित्तवृत्ति अर्न्तमुखीमे भऽ कऽ बर्हिमुखी होइत अछि। अपनामे मगन रहबाक ओ अपना सँ बाहरक बातमे अधिक रूचि लैत अछि। कामक प्रवृत्ति सेहो बहिर्मुखी होइत अछि। एकर परिणाम भविष्यमे नीक हो से पहल करब आरंभ कऽ दैत अछि।

एहि ठाम विकासक किछु तत्व के बारेमे सेहो जनतब देव समीचीन बुझाइत अछि। ई तत्व परिवार, स्कूल, समुदाय, जाति, पड़ोस, समूह आदिक रूपमे सभहक समक्ष अछि। Climble youn के कहब छनि- ''समाजक अन्दर समाजीकरणक विभिन्न समूहमे परिवार बेसी महत्वपूर्ण अछि।'' बच्चाक पहिल पाठशाला ओकर अपन घर होइत अछि। एकर पहिल सामाजिक समूह परिवार होइत अछि। एहि समूहमे ओ पहिल पाठ ग्रहण करैत अछि। सामाजिक दृष्टिकोण, अभियोजना-व्यवहार, सामाजिक संबंध निर्वाह आदिक पहिल शिक्षा परिवारमे ग्रहण करैत अछि। पारिवारिक समूहमे भिन्न-भिन्न लोकक संग संबंधी कुटुम्ब, आ नजदीक पड़ोसी लोकनि सँ बच्चाक सम्पर्क स्थापित होइत अछि। एहि आधार पर विस्तृत सामाजिक संबंध के चिन्ह्व आ निर्वाहिमे सहुलियत होइत अछि। परिवार बच्चाक सामाजिक जीवनक आर्थिक पद्धति सँ सीखैत अछि।

परिवारक बाद विद्यालयमे सामाजिकताक विकास होइत अछि। स्कूले ओकरा मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक विकास के लेल उत्प्रेरित करैत अछि। बच्चा स्वयं के शिक्षक आ अपना संगी सभकें छात्र रूपमे देखैत अछि। एहि तरहें अनुकरणक भावना प्रबल होइत अछि। "The Socialization of the child is reals the best children group and the child in the best teacher of other children." विद्यालयकेर नियम व अनुशासन बच्चाक सामाजिकरण पर बेसी प्रभाव पड़ैत अछि, एकर अतिरिक्त परीक्षाफल, खेलमे प्रसिद्धि, आर्थिक सामाजिक स्तरक छात्रक संख्या, शिक्षक आ ओकर योग्यता सेहो निर्धारित करैत अछि। समुदाय सामाजिकताक विभिन्न क्षेत्रमे कार्य करैत अछि। किछु साधन केर द्वारा विकास होइत अछि। जेना-

- सांस्कृतिक, कला आ साहित्य,
- धार्मिक कट्टरता अथवा उदारता,
- जातीय आ राष्ट्रीय प्रथा आ परम्परा,
- समाजक आर्थिक आ राजनीतिक संगठन,
- जातिय पूर्वधारणा,
- वर्ग आ वजन,
- सामाजिक प्रथा आ परम्परा,
- शिक्षाक साधन तथा सुविधा,
- मनोरंजक साधन तथा सुविधा,
- सामाजिक सुविधा आदि।

एहि तरहें प्रत्येक जातिक अपन परम्परा आ सांस्कृतिक मनोभाव होइत अछि जकरा प्रत्येक बच्चा अपन जातिक अनुसार ग्रहण करैत अछि। पड़ोसक लोकनीक होइत अछि तऽ बच्चा पत्नीक प्रभाव पड़ैत अछि आ जँ पड़ोसक लोक अशिक्षित अथवा अधलाह विचार राखऽवला छथि तऽ बच्चा पर सेहो तेहने होमऽ लगैत अछि। एहने प्रभाव समूहक सेहो पड़ैत अछि। 6 वर्षक बालक आक्रामक देखाइ पड़ैत अछि। ओ क्रोधक बेसी प्रदर्शन करैत अछि। माय-बाप कें सम्हारऽ मे बेसी कठिनाई होइत अछि। एहि आयुमे परिवार सँ बेसी विद्यालय वातावरणमे रहब स्वीकार करैत अछि। एहि अवस्थामे अपन आलोचना वा कोनो प्रकारक सजा पसिन्न नहि करैत अछि। 7 वर्षक बच्चा किछु आदर्शपूर्वक देखल जाइत अछि। ओ अपन सफलता लेल माय-बाप, शिक्षक के दोषी ठहरबैत अछि। 8 वर्षक बच्चा माय-बापक आधिपत्य स्वीकार करऽ नहि चाहैत अछि। 10 वर्षक बच्चा विनम्र होइत अछि। रीति-रिवाजक प्रति अनुरूपता देखाइत अछि। सांस्कृतिक कार्यक्रममे रूचि रखैत अछि। 11 वर्ष धरिक पहुँचैत-पहुँचैत समुदायमे रहब पसिन्न करैत अछि। ओकर अभिवृत्ति वस्तुनिष्ठ भऽ जाइत अछि आ कोनो परिणामक कारण कें बुझऽ लगैत अछि।

निष्कर्षतः हम एहि पाँति सँ कलम केर विराम दैत छी- हमर परवरिश आवोहवा अपना ठाम अछि। हमर उम्र कतेक हो आशीषे तय करत।



शिक्षा आ अतीत

✍ सरिता सनम

शिक्षा मनुक्खक सर्वांगीण विकास थिक। जीवनमे एकर अत्यधिक महत्व अछि। भौतिक ओ आध्यात्मिक उत्थान ओ विभिन्न उत्तरदायित्व सभकेँ विधिवत निर्वाह लेल शिक्षाक महती जरूरति केर सदति स्वीकार कयल गेल अछि। शिक्षा मनुक्ख केर सांसारिक जीवनक कठिनाई ओ समस्याक समाधान लेल सर्वथा उपयुक्त बनबैत अछि, सुध ारक सर्वोत्तम साधन थिक।

शिक्षाक अतीत केर दिसि झाँकव, एकर स्वच्छताक मार्ग प्रशस्त करैत अछि-

अलबरूनीक समय अर्थात ग्यारहम सदीक प्रारंभ भागमे ब्राह्माधिवास जकाँ शिक्षणालय विद्यमान छल। वस्तुतः ग्यारहम सदी धरि भारतमे इएह शिक्षा पद्धति प्रचलित छल, जे हिन्दू आ बौद्ध दुनू एहि पद्धतिक अनुसरण करैत छल। इत्सिंग, शिष्य द्वारा गुरू लोकनिक सेवाक विशद रूप सँ वर्णन कयलनि अछि। हुनका अनुसारे- प्रातः होइतहिं शिष्य गुरूक सेवामे उपस्थित होइत छल, ओकर मालिश करैत छल, नूआँ के तह लगबैत छल आ ओकर घर-आंगनक सफाई करैत छल। गुरू शिष्य केँ अपना संतान जकाँ बुझैत छलाह। पिता-पुत्र संबंधसँ युक्त छल।

ह्यून्त्सांगक यात्रा विवरण ई उल्लिखित करैत अछि जे सात वर्षक आयु सँ प्रथमे बच्चा द्वादशाध्याय नामक एकटा पोथी पढ़ि लैत छल, जे प्रवेशिका मानल जाइत छल। एहि सँ अक्षर आ लिपिक ज्ञान भऽ जाइत छलैक। पश्चात आठमा वर्ख सँ व्याकरण, शिल्प विद्या, चिकित्सा शास्त्र, तर्कविद्या, आध्यात्मक विद्या आ धर्म। बौद्ध ग्रंथमे सेहो एहने रूप। उमर केर हिसाब सँ ई ऊँचाइ बढ़ैत चलि जाइत छल।

प्राचीन कालमे भारत वर्ष संसारक सभ देशमे सबसँ बेसी शिक्षित छल। चीन, जापान आ सुदूर पूर्वी देश सभ सँ पढ़बाक लेल छात्र लोकनि भारत आय करैत छलाह। ह्यून्त्सांग केर अनुसार कन्नौजमे हजार छात्र संधाराममे पढ़ैत छलाह। मथुरामे 2000। चीन यात्री सभ विवरण सँ जनतब होइत अछि जे भारतमे 5000 मठ अथवा विद्यालय छल, जाहि मे 2,212,130 छात्र लेलनि पढ़ैत छलाह।

मौर्ययुगक पश्चात कालमे बहुसंख्यक शिक्षणालय प्राचीन आचार्यकुल सभक सदृशे होइत छल। इएह कारण अछि जे स्मृति-ग्रंथ सभमे गुरूकुलक आचार्य आ ब्रह्मचारी लोकनिक कर्त्तव्य प्रायः ओहिना निरूपित अछि जेना कि प्राचीन उपनिषद ओ ब्राह्मण ग्रंथ सभमे पाओल जाइत अछि। मुदा तइयो एकरा संग कतोक एहन शिक्षा केन्द्र ओ विद्यापीठ सेहो गुप्तवंशक शासन काल आ ओकरा बादो स्थापित भऽ गेल छल। एहिमे सँ किछु बौद्ध महाविहारक रूपमे जे विश्वविद्यालय स्वरूप लऽ लेने छल।

नालंदा-महाविहार- गुप्तवंशी सम्राट कुमार गुप्त (415-55) द्वारा स्थापित मगधमे नालंदा महाविहार शिक्षाक महत्वपूर्ण केन्द्र छल। एहु सँ पहिनहु नालंदा शिक्षा केन्द्र छल, जत बौद्ध विहारमे विद्याध्ययन भेल करैत छल मुदा ख्याति पश्चातमे भेल। कुमार गुप्तक बाद आन गुप्तवंशी सम्राट द्वारा कतोक इमारत बनाओल गेल आ शिक्षक एवं छात्र लोकनि लेल धन लगौलनि। विश्व ख्याति प्राप्त-पश्चात देश-विदेशक विद्यार्थीक आगमन भेल। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्यूनसांग सहित इत्सिंग नामक अन्य चीनी यात्री सेहो सातम शताब्दीमे भारत एलाह। हुनकर अधिकांश समय नालदामे बीतलनि। ओ अपना संग लगभग पाँच लाख श्लोक सँ युक्त चारि सौ ग्रन्थ-संग्रह कऽ चीन लऽ गेलाह। तहिया नालंदा में शब्द विद्या, चिकित्सा विद्या, सांख्यिशास्त्र, तंत्र, वेद आदिक अध्ययनक व्यवस्था छल।

श्रमण हिएनचिन भारतीय नाम प्रकाशमणि, कालिका भिक्षु आर्यवर्मन, चीनी भीक्षु चेहांग आदि सेहो नालंदा एलाह। आठम शताब्दीक आरंभमे तिब्बतक राजा नालंदाक एक गोट प्रसिद्ध आचार्य शांतरक्षित के अपना देश बजौने छलथिन। हुनका ओहिठाम आचार्य बोधितत्वक उपाधि सँ विभूषित कयल गेलनि। एहि तरहेँ कमलशील के सेहो बजाओल गेल। ई दुनू आचार्य तिब्बतमे धर्मक स्थापना कयलनि। बादमे मगधमे विद्यमान विक्रमशिला महाविहारक आचार्य अतीश के सेहो तिब्बत बजाओल गेलनि। नालंदा महाविहारक स्थापना पाँचम सदी ई.वी.मे भेल छल। एगारहम सदी धरि ओ भारतक प्रधान शिक्षा केन्द्र रहल। जखन

मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी बिहार पर आक्रमण कयलनि तऽ ओकर विनाश भऽ गेल।

तक्षशिला विश्वविद्यालय- भारतमे तक्षशिलाक विश्वविद्यालय सभसँ प्राचीन ओ बहुत पैघ छल। पतंजलि, चाणक्य आ जीवक एहिठामक छात्र ओ अध्यापक छलाह। 16 वर्ष आयु सँ लऽ कऽ प्रायः राजा ओ सम्पन्न पुरूषक पुत्र लोकनिक ई शिक्षा केन्द्र छल। गरीब विद्यार्थी दिनमे काज आ रातिमे अध्ययन करैत छलाह। किछु विद्यार्थी कें तऽ विश्वविद्यालय काजो दैत छल। एहि ठाम वेद, अठारह विद्याएँ, व्याकरण, शिल्प, धनुर्विद्या, हस्तविद्या, मंत्र विद्या आ चिकित्सा शास्त्रक पढ़ाई होइत छलनि। इहो विश्वविद्यालयक विनष्टक कारण मुसलमाने भेल।

विक्रमशिला- विक्रमशिला महाविहारक स्थापना पालवंशी राजा धर्मपाल द्वारा नवम सदीमे कयल गेल। धर्मपाल बौद्ध धर्मक अनुयायी छलाह आ ओ विक्रमशिलामे एक महाविहार बनाकऽ ओहिठाम अध्यापन लेल 108 आचार्य सभ कें नियुक्ति कयने छलाह। एकरा पालवंशक संरक्षा प्राप्त छल। चारि सदी धरि ई कायम रहल आ एहि अवधि मे पैघ-पैघ विद्वान उत्पन्न भेल। एहि ठाम सँ पंडित केर उपाधि देल जाइत छल। ई बज्रयान सम्प्रदायक अध्ययनक सभसँ पैघ प्रमाणिक केन्द्र छल। एहि ठाम सँ रत्न वज्र, आचार्य रत्नकीर्ति, ज्ञानश्री मित्रा, रत्नाकर शांति आ श्रीज्ञान अतीश विद्वताक क्षेत्रमे पैघ ख्याति प्राप्त कयलनि।

उड़यन्तपुर- प्राचीन मगधमे उड़यन्तपुर नामक महाविहार छल। एकर स्थापना पालवंशक प्रवर्त्तक व प्रथम राजा गोपाल द्वारा कयल गेल छल। आई ओहिठाम बिहार नामक नगरी विद्यमान अछि। ई बारहम सदीमे शिक्षाक बड़ पैघ केन्द्र भऽ गेल। 1199ई.मे जखन मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी बिहार पर आक्रमण कयलनि तऽ तहिया ओहि ठामक राजा पालवंशी गोविन्दपाल छलाह। मुहम्मद उड़यन्तपुर के घेर लेलनि। महाविहारक आचार्य आ विद्यार्थी लोकनि सेहो शस्त्र उठौलनि आ जाबे धरि जीवित रहलाह अफगान कें अधिकार नहि होमऽ देलनि। विशाल पुस्तकालय कें मुहम्मद अग्निमे झोंकि देलक आ भारतक प्राचीन ज्ञान तथा विज्ञानक ई विशाल भण्डार बातहि बातमे ध्वंश भऽ गेल।

बल्लभी-सौराष्ट्रक बल्लभी सेहो शिक्षाक महत्वपूर्ण केन्द्र छल। 'इत्सिंग' केर अनुसार इहो नालंदा महाविहार जकाँ समान छल। एहि ठाम 100 विहार छल जाहिमे 6000 भिक्षु निवास करैत छलाह। बौद्धक संग-संग पौराणिक हिन्दू साम्प्रदायिक छात्र सेहो विद्याध्ययन करैत छलाह। 'कथा सरित्सार'क अनुसार अन्तर्वेदीक द्विज वसुदत्तक पुत्र विष्णुदत्त जखन सोलह वर्षक भऽ गेलाह तऽ विद्या प्राप्तिक लेल ओ बल्लमीपुर गेलाह। बौद्ध ग्रंथक अतिरिक्त तर्क, व्याकरण आदिक सेहो शिक्षा बल्लमीमे देल जाइत छल।

हिन्दू शिक्षा केन्द्र- पूर्व मध्य कालमे जखन बौद्ध धर्मक ह्रास होमऽ लागल तखन प्राचीन सनातन वैदिक पौराणिक हिन्दू धर्मक उत्कर्ष होमऽ लागल। कतोक एहन शिक्षा केन्द्र सेहो विकसित भेल जतऽ वेद, वेदांग, इतिहास, पुराण, ज्योतिष, शिल्प आदिक शिक्षा देल जाइत छल। एहि केन्द्रमे एकटा वाराणसी अत्यन्त प्राचीन आ महत्वपूर्ण छल। दसम सदीक अंतिम चरणमे अलबरूनि भारत एलाह तऽ ओ हिन्दू शास्त्र सभ सँ परिचय प्राप्त करबाक लेल वाराणसी गेल छलाह।

काशी आ धारा नगरीक समान अनहिलपाटन, कन्नौज आ काँची सेहो पूर्व मध्यकालमे अपन आचार्य आ पंडित लेल प्रसिद्ध छल जाहिठाम विद्याध्ययन लेल दूर-दूर सँ विद्यार्थी अबैत छलाह।

■

आलेख

मैथिली भाषा, एकर बोली आ कथित विवादक निराकरण

अंगिका आ बज्जिका मैथिलीक बोली -दुनूकेँ भाषा कहब एकटा षडयंत्र

✍ अखिलेश कुमार झा

अंगिका आ बज्जिका दू मनगढंत आ काल्पनिक शब्द थिक। एहि दुनूक नामकरण 1943 ई.मे राहुल सांकृत्यायन केलनि। ओहि समयमे ई नाम प्रसिद्ध नहिं भेलै। एकर स्थानपर दछिनाहा आ पछिमाहा मैथिली शब्द प्रचलित छल। एक दशकसँ अधिक समय बीतलाक बाद पुनः अंगिका आ बज्जिका शब्दक उल्लेख एवं प्रचार-प्रसार कएल गेलै। राहुल सांकृत्यायन एकटा कौम्यूनिस्ट नेता छला। हुनक जन्म उत्तर प्रदेशक आजमगढ़मे भेलनि। हुनक मान्यता छलनि जे सम्पूर्ण भारतमे एकेटा भाषा हिन्दी टा रहबाक चाही, तैँ ओ अनेक क्षेत्रीय भारतीय भाषाकेँ तोड़बाक षडयंत्र केलनि। सन् 1943 सँ पूर्व अंगिका आ बज्जिका शब्दक कोनो अस्तित्व नहिं छल। 1902 ई. मे दुनूक नामकरणसँ पूर्व भाषा सर्वेक्षणमे ई बोलीक क्षेत्रक लोक सभ अपन मातृभाषा मैथिली स्वीकारलनि। ओकर 52 वर्ष बाद मैथिलीकेँ तोड़बाक कुचक्रमे ई दुनू नाम राखल गेल।

ग्रियर्सन महोदय बिहार आ बंगालक भाषा सभ पर शोध केलनि। पछिमाहा मैथिली(बज्जिका) आ दछिनाहा मैथिली(अंगिका) केँ मैथिलीक बोली कहलनि। भारतक एकटा प्रसिद्ध इतिहासकार बेगूसराय निवासी राधाकृष्ण चौधरी अपन एकटा शोधमे भागलपुरक भाषा मैथिली कहलनि आ अंगिका, बज्जिकाकेँ बोली मानलनि। नेपालसँ प्रकाशित एक इतिहासमे बज्जिकाक जन्म 1948 मे कहल गेल आ एकर जनक राहुल सांकृत्यायनकेँ कहल गेलनि जे भोजपुरी भाषी छला। ओ अंगिका, बज्जिकाकेँ नाम रखलनि आ बादमे स्वयं अपन किताब साहित्य निबंधावलीमे पुष्टि केलनि जे अंगिका आ बज्जिका मैथिलीक बोली थिक। एकरा भाषा कहब मैथिलीकेँ तोड़बाक लेल एक व्यूह रचना थिक। सिमरौनगढ़ आ वैशालीक किछु पुरान मंदिरक शिलालेखमे मैथिली भाषा तिरहुतामे लिखल अछि। विष्णु पुराण आ महाभारत सहित अनेक ग्रंथमे मिथिला क्षेत्र आ मैथिली भाषी क्षेत्रक सीमा केर प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि। दछिनाहा मैथिली क्षेत्रमे देवघरक मंदार पर्वतपर सेहो एहन शिलालेख भेटैत अछि। विद्यापति मैथिलीक सभ उपभाषा आ बोलीमे रचना केने छथि ओहिमे मैथिलीक वास्तविकता साबित भेल अछि। एहि संबंधमे लोक सभमे संदेह एहि लेल होइत छनि, किएक तश सामान्यतः दरभंगा आ मधुबनी टाक बोलीकेँ मात्र मैथिली बुझि लै छथि, जखन कि एहि क्षेत्रमे सोतीपुरा डायलेक्ट बाजल जाइछ। मैथिलीक मुख्यतः पाँचटा बोली अछि। अन्यान्य भाषाक सेहो कतोक बोली होइछ आ सभ बोलीक बीच पर्याप्त अन्तर सेहो रहैत छैक। कखनो काल ई अन्तर ततेक बढि जाइछ जे एकटा बोली बजनिहार लेल दोसर बोली बजनिहारक गप बुझब धरि कठिन भऽ जाइछ।

मैथिलीक प्राचीनतम ग्रंथ 1324 मे तिरहुतामे लिखायल वर्णरत्नाकर, 1901 मे हेजरीथौमस केलब्रुक द्वारा लिखायल पोथी 'एसियाटिक रिसर्च मे एहि विषयपर विस्तृत आ फरिछायल जनतब अछि। सन् 1965 मे मैथिलीकेँ साहित्यिक भाषाक मोजर भेटलै। 1972 मे यूपीएससीमे आ बीपीएससीमे एकटा वैकल्पिक विषयक रूपमे जोड़ल गेल। 1992 मे लालूप्रसाद यादव द्वारा वैकल्पिक विषयसँ हटा देल गेल आ ई आरोप लगाओल गेल जे ई ब्राह्मण आ कायस्थ टाक भाषा थिक। 2003 मे भारतीय संविधानक आठम अनुसूचीमे वाजपेयी सरकार द्वारा जोड़ि देल गेल आ 2007 मे पुनः यूपीएससी एवं बीपीएससीमे जोड़ल गेल। मैथिलीक पाँचटा प्रमुख बोली एहि प्रकारे अछि- 1. सोतीपुरा, 2. दक्षिणी सोतीपुरा (ठेठी), 3. पछिमाहा मैथिली, 4. दछिनाहा मैथिली (अंगिका या छिका छीकी या छिकारी), 5. पूर्वी मैथिली। बंगालक मालदह आ दिनाजपुर आ नेपालक मिथिला क्षेत्रमे सेहो मैथिली बाजल जाइछ। झारखंडक देवघर, बाँका, गोड्डा, पाकुड़, सहिबगंज आदिमे मैथिली बाजल जाइछ। (कृष्ट यूट्यूब चौनल सँ सहयोग लऽ ई आलेख तैयार कएल गेल अछि) तथ्यक अनुसार दछिनाहा मैथिलीक क्षेत्र क्यूल नदीक पूर्व लखीसराय, सूर्यगढ़सँ राजमहल पहाड़ीक पश्चिम साहिबगंज सदर तक, गंगाक दक्षिण जमुई जिलाक पूर्वी भाग, मूंगेर भागलपुर, दक्षिण भाग, बाँका,गोड्डा, देवघर।

गंगाक उत्तर छिका छिकी- भागलपुरक उत्तर, कटिहार आ पूर्णियांक किछु भाग।

पूर्वी मैथिली- पूर्णियां प्रमंडलक किशनगंज, कटिहार, पूर्णियां,अरड़िया आ पश्चिम बंगालक मालदह आ दिनाजपुरमे।

ठेठी- बेगूसराय आ खगड़िया। सोतीपुराक प्रभाव पूर्णियांक किछु भागमे छिका छीकी सेहो भेटैत अछि।

सोतीपुरा- मधुबनी, दरभंगा, सहरसा, मधेपुरा आ समस्तीपुरक किछु भाग।

अन्ततः मिथिलाक पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण कोनो कोनमे बाजल जाइ वला भाषा निर्विवाद ओ मैथिली थिक। चाहे ओ मैथिलीक कोनो बोली होइ। अंगिका आ बज्जिका सेहो पूर्ण रूपेण मैथिली भाषा थिक। अंगिका, बज्जिका मैथिलीक दछिनाहा आ पछिमाहा बोली थिक। तैँ एहि तथ्यसँ एहि विवादक तर्कपूर्णअन्त भेल मानल जेबाक चाही।

■

श्रीमद्भगवद्गीता केर प्रासंगिकता : अध्यात्म सँ आधुनिक युग धरि

✍ वन्दना झा

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्ण शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णु भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम।।

जिनकर आकृति अतिशय शांत छन्हि, शेषनाग केर शैया पर जे शयन करैत थिकाह, जिनकर नाभि मे कमल स्थित छन्हि, जे स्वयं देवता सभ केर सेहो ईश्वर आओर संपूर्ण जगत केर आधार थिकाह, आकाश केर सदृश जे सर्वा व्याप्त थिकाह, नीलमेघ केर सदृश जिनकर वर्ण छन्हि, जिनकर संपूर्ण अंग अतिशय सुंदर एवं दिव्य छन्हि, योगी सभ केर द्वारा जिनका ध्यान कऽ कऽ प्राप्त कयल जाइत छन्हि, जे स्वयं संपूर्ण लोक केर स्वामी थिकाह, साक्षात जे जन्म-मरण रूप भय केर नाश कयनिहार थिकाह, एहन लक्ष्मीपति, कमलनो भगवान श्रीविष्णु के हम प्रणाम करैत थिकहूँ।

श्री वाराह पुराण मे श्रीभगवद्गीता केर माहात्म्य के वर्णन करैत भगवान श्री विष्णु स्वयं कहैत छथिन्ह : प्रारब्ध केर भोग करैत जे मनुष्य सदैव श्रीभगवद्गीता केर अभ्यास मे आसक्त रहैत छथि, ओएह मनुष्य एहि लोक मे सभ सँ सुखी थिकाह। जाहि प्रकार जल मे रहितहुँ कमल केर पात के जल स्पर्श नहि करैत अछि, ओहि प्रकार सँ जे कोनहुँ मनुष्य श्रीगीता केर ध्यान करैत छथि हुनका कोनहुँ पाप कखनहुँ स्पर्श नहि करैत छन्हि। जतय श्रीभगवद्गीता केर पोथी रहैत अछि एवं ओहि के नियमित पाठ होइत अछि, ओतय सर्व तीर्थ केर निवास रहैत अछि। जतय एहि पोथीक विचार, पठन, पाठन एवं श्रवण होइत अछि, ओतय हम अर्थात् साक्षात भगवान विष्णु अवश्य वास करैत थिकहूँ। हम स्वयं (श्री विष्णु भगवान) श्रीगीता केर आश्रय मे रहैत थिकहूँ, श्रीगीता हमर (श्री विष्णु भगवान) 'उत्तम घर' थिक आओर श्रीगीता केर ज्ञान के आश्रय कऽ कऽ हम स्वयं (श्री विष्णु भगवान) तीनु लोक केर पालन करैत थिकहूँ। श्रीभगवद्गीता चिदानन्द श्रीकृष्ण स्वयं अपन मुख सँ अर्जुन के कहल गेल एवं तीन वेदस्वरूप, परमानन्दस्वरूप आओर तत्त्वरूप पदार्थ केर ज्ञान सँ युक्त थिक। जे मनुष्य स्थिर चित्त सँ नित्य श्री गीता के 18 अध्याय केर जाप-पाठ करैत छथि ओ ज्ञानस्थ सिद्धि के प्राप्त होइत छथि आओर पुनः परम पद के प्राप्त करैत छथिद्य संपूर्ण पाठ करय मे जे असमर्थ छथि ओ आधा पाठ करथि, तखनहुँ गौदान केर सदृश होबय वला पुण्य के प्राप्त करैत छथि, एहि मी कोनहुँ सन्देह नहि थिक। तेसर भाग केर पाठ कयनिहार के गंगास्नान केर फल प्राप्त होइत छन्हि, एवं छठम भाग केर पाठ कयनिहार के सोमयाग केर फल प्राप्त होइत छन्हि। जे मनुष्य भक्तियुक्त भऽ कऽ नित्य एकह अध्याय केर पाठ करैत छथि, ओ साक्षात रुद्रलोक के प्राप्त होइत छथि आओर ओहि ठाम ओ साक्षात महादेव केर गण बनि कऽ चिरकाल तक ओतय निवास करैत छथि। जे मनुष्य नित्य एक अध्याय, एक श्लोक अथवा श्लोक केर एकह चरण केर पाठ करैत छथि ओ मन्वंतर तक मनुष्यता के प्राप्त करैत छथिद्य जे मनुष्य भगवद्गीता केर दस,सात, पाँच, चारि, तीन, दू, एक या आधा श्लोक केर पाठ करैत छथि, ओ निश्चित रूप सँ दस हजार वर्ष तक चन्द्रलोक के प्राप्त होइत छथि। भगवद्गीता केर पाठ में लागल मनुष्य के यदि मृत्यु होइत छन्हि ते ओ पुनः मनुष्य जन्म के प्राप्त करैत छथि आओर भगवद्गीता केर पुनः अभ्यास कऽ कऽ उत्तम मुक्ति के प्राप्त होइत छथि। भगवद्गीता केर अर्थ के श्रवण करय मे तत्पर भेल मनुष्य यदि महापापी अछि तखनहुँ ओ साक्षात वैकुण्ठ के प्राप्त होइत छथि एवं ओहिठाम ओ साक्षात भगवान विष्णु केर संग आनन्द करैत छथि। अनेक कर्म कऽ कऽ नित्य श्रीगीता केर अर्थ सभ के जे विचारैत छथि ओहन मनुष्य मृत्यु केर बाद साक्षात परम पद के प्राप्त होइत छथि। भगवद्गीता केर आश्रय कऽ कऽ महाराजा जनक एहन कतेको राजा सभ पाप सभ सँ मुक्त भऽ कऽ एहि लोक मे यशस्वी बनलन्हि आओर परम पद के प्राप्त केलन्हि।

स्वयं भगवान श्रीविष्णु द्वारा कहल एहि माहात्म्य सहित जे मनुष्य श्रीभगवद्गीता केर नित्य-प्रतिदिन पाठ वा अभ्यास करैत छथि ओहन मनुष्य के एहि केर दिव्य फल प्राप्त होइत छन्हि एवं ओ साक्षात श्रीविष्णु कृपा सँ दुर्लभ गति के प्राप्त होइत छथि।

श्रीमद्भगवद्गीता केर महत्व जतबे हजारो वर्ष सँ अधिक काल सँ अध्यात्म मे प्रासंगिक अछि ओतबे प्रासंगिक आधुनिक युग मे सेहो अछि। श्रीमद्भगवद्गीता केर प्रासंगिकता पर ते देश-विदेश केर अनेक विश्वविद्यालय मे शोध कार्य सभ चलि रहल अछि, जाहि मे मनुष्य जीवन केर मूल तत्व पर अन्वेषण कयल जा रहल अछि।

आधुनिक युग मे श्रीमद्भगवद्गीता केर प्रासंगिकता धर्म सँ बेसी जीवन मे दार्शनिक दृष्टिकोण के लऽ कऽ सम्पूर्ण

विश्व मे मनुष्य के प्रभावित कऽ रहल अछि। देश - विदेश केर विभिन्न प्रबंधन गुरु सभ केर लेल ते ई पोथी जेना कोनहुँ अमोघ अस होइन्ह। एहि पोथी केर विभिन्न श्लोक सभ के द्वारा प्रबंधन गुरु सभ अपन छाा सभ के सकारात्मकता केर संग प्रोत्साहित करैत छथि।

विश्व केर अनेकों महत्वपूर्ण व्यक्ति सभ केर द्वारा समय-समय पर श्रीमद्भगवद्गीता केर प्रासंगिकताक ऊपर महत्वपूर्ण वक्तव्य सभ आयल अछि। कहल जाइत छैक अल्बर्ट आइंस्टीन गीता केर महत्व पर कहने छलखिन्ह- ‘‘भगवद्गीता पढ़ि कऽ जखन हम एहि ब्रह्मांड केर रचना कोन प्रकार सँ केने छथि, ओहि केर बाद तड बाकी सभटा हमरा निरर्थक लागय लागल।’’ प्रसिद्ध दर्शनशासी आओर नोबेल शांति पुरस्कार विजेता अल्बर्ट स्विट्जर केर कथनानुसार- ‘‘श्रीमद्भगवद्गीता मनुष्य जीवन पर बहुत गूढ रूप सँ प्रभावित करैत अछि, जाहि मे कर्म केर माध्यम सँ ईश्वर प्राप्ति केर संदेश दैत अछि।’’ विश्व प्रसिद्ध साहित्यकार इमर्सन केर कहब छलन्हि- ‘‘श्रीमद्भगवद्गीता केर संग हमर अनुभव अद्भुत रहल। सम्पूर्ण विश्व मे एहि पोथी एहन कोनहुँ दोसर पोथी नहि अछि। एहि पोथी के कोनहुँ आओर समय एवं परिस्थिति मे लिखल गेल छल मदा वर्तमान समय मे कोनहुँ प्रश्न वा समस्या केर उत्तर पूर्ण यथार्थ आओर स्पष्टता सँ दैत अछि।’’ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी केर कहब छलन्हि- ‘‘नैराश्य केर घनघोर अन्हार मे जखन हम असगर आओर असहाय भऽ जाइत छी एवं जखन इजोत केर एकहु टा किरण कतहु सँ नहि देखाइत अछि तखन हम श्रीमद्भगवद्गीता केर शरण मे जाइत छी, ओहि के उनटापुनटा कऽ कोनहुँ पृष्ठ सँ कोनहुँ श्लोक सभ पढ़य लागैत छी, तऽ हम स्वयं मे सकारात्मक विचार केर उदय पाबैत छी। हमर जीवन बाहरी दुख सँ भरल अछि, तखनहुँ ओहि दुख केर कोनहुँ गोचर वा अमिट प्रभाव हमरा प्रभावित नहि करैत अछि। एहि केर एकमाा कारण हम श्रीमद्भगवद्गीता केर मानैत छी।’’ भारतीय स्वतांता आंदोलन मे प्रमुखता सँ सक्रिय व्यक्तित्व एनी बेसेंट केर कथनानुसार- ‘‘आध्यात्मिक व्यक्ति के वैरागी होयबाक आवश्यकता नहि थिक। परमात्मा केर संग मेल, सांसारिक गतिविधि केर मध्य रहैत प्राप्त कयल जा सकैत अछि आओर श्रीमद्भगवद्गीता केर अनुसार एहि बाट केर मुख्य बाधा बाहर केर दुनिया मे नहि अपितु अपन आंतरिक थिक।’’ विश्व प्रसिद्ध अंग्रेजी साहित्यकार आल्डस हक्सले केर कहब छलन्हि- ‘‘मनुष्य मे मानव मूल्य केर प्रति ज्ञान उत्पन्न करबाक लेल। श्रीमद्भगवद्गीता सर्वाधिक व्यवस्थित ग्रंथ थिक।’’ आस्ट्रियाई दार्शनिक आओर साहित्यकार रुडोल्फ स्टीनर केर कथनानुसार- ‘‘श्रीमद्भगवद्गीता एहन अप्रतिम रचना के पूर्णतया बुझबाक लेल स्वयं के एहि पोथी केर अनुसार लय जोड़बाक आवश्यकता छैक।’’ प्रसिद्ध जर्मन उपन्यासकार, कवि आओर चिाकार हरमन हेस केर कहब छलन्हि- ‘‘श्रीमद्भगवद्गीता केर सभ सँ महत्वपूर्ण बात ई थिक जे जीवन केर पूर्ण वास्तविकता के यथार्थ रूप सँ मनुष्य केर समक्ष राखैत अछि।’’ श्रीमद्भगवद्गीता केर पूर्ण अध्ययन केर पश्चात अमेरिकी निबंधकार हेनरी डेविड थोरुआ केर कथनानुसार- ‘‘श्रीमद्भगवद्गीता केर एकएकटा अक्षर आजुक समाज मे अति प्रासंगिक अछि।’’ एहि केर अतिरिक्त बहुतों विचारक सभ श्रीमद्भगवद्गीता केर महत्व पर अपन महत्वपूर्ण विचार सभ देने छथिन्ह।

श्रीमद्भगवद्गीता माा उपदेश भरल पोथी नहि थिक, अपितु एहि संसार केर सभ सँ महान दार्शनिक, धार्मिक, सामाजिक आओर राजनीतिक संदेश दैत महान गौरव ग्रंथ थिक जाहि केर रचना वा आधार विश्व संरचना केर संग सम्पूर्ण मानव जगत केर कल्याण केर लेल कयल गेल अछि। वास्तव मे श्रीमद्भगवद्गीता मे ओ शक्ति थिक जे नैराश्य मे डूबल मनुष्य के पुनः सकारात्मकता केर संग, नव विचार आओर पूर्ण साहस सँ आगा बढ़बाक लेल प्रेरित करैत अछि। यदि अपन देश भारत, श्रीमद्भगवद्गीता के पूर्णतया आत्मसात करैत आगा बढ़त ते भारत पुनः विश्वगुरु केर सिंहासन पर विराजमान रहत। समस्त वेद केर मूल तत्व पुराण मे थिक आओर पुराण केर मूल तत्व श्रीमद्भगवद्गीता में समाहित अछि। एहि कारण सँ श्रीमद्भगवद्गीता सम्पूर्ण विश्व केर सर्वश्रेष्ठ गौरव ग्रंथ थिक जाहि ग्रंथ मे एहि संसार केर समस्त समस्या वा जिज्ञासाक समाधान निहित अछि आओर एहि सम्पूर्ण संसार केर समस्त शुभता श्रीमद्भगवद्गीता मे निहित अछि, माा आवश्यकता एहि बात केर थिक जे सम्पूर्ण मानव जगत श्रीमद्भगवद्गीता केर गूढ तत्व युक्त संदेश के अपन जीवन मे आत्मसात करबाक अछि।



स एव ज्येष्ठः, स एव कनिष्ठः

✍ रमाकान्त राय 'रमा'

अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलनक प्रथम आयोजन 1956 ई0 में दरभंगामें भेल छल जकर आयोजक छलाह प्रो. कृष्णकान्त मिश्र। एहि आयोजनक प्रधान संरक्षकक रूपमें दूटा अत्यन्त सम्माननीय व्यक्तिकेँ चुनल गेल छलनि-पहिल छलाह बिहार प्रदेशक तत्कालीन राज्यपाल महामहिम रंगनाथ रामचंद्र दिवाकर आ दोसर महाराजाधिराज डॉ.सर कामेश्वर सिंह। एहि आयोजनक प्रधान सभापति छलाह संसद सदस्य श्री श्यामनंदन सहाय।

एहि अवसरपर कृष्णकान्त मिश्र एकटा पुस्तक छपबौने छलाह-परिचय पात जाहिमें प्रायः 150 मैथिली लेखकक परिचय पात छपल अछि। ई मात्र 38 पृष्ठक अजिल्द पुस्तक अछि, मुदा एकर विशेष महत्व अछि।

साहित्य अकादेमी नई दिल्लीक स्थापना 1954 ई.मे भेल जे भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्वीकृत भाषा सभक साहित्यिक विकासादिक निमित्त प्रकाशन, कार्यशाला, सेमिनार एवं वर्षमे एकबेर सभ भाषाक सर्वोत्तम कृत्तिकेँ पुरस्कृत कयल जाय लागल। प्रायः आठम दशकमें साहित्य अकादेमी अंग्रेजी भाषामे who's who of indian litereature नामक पुस्तक प्रकाशित कयलक जाहिमे मैथिलीक बहुत थोड़, प्रायः पचासक लग्ग-पास लेखक लोकनिक परिचय-पात छपल छलैक।

साहित्य अकादेमीक एहि आयोजनसँ बहुत पूर्वे कृष्णकान्त मिश्र मैथिलीक लेखकक अखिल भारतीय सम्मेलन सन महत्वपूर्ण अवसरपर जे ई परिचय-पात (who's who) छपबौलनि, जे अनेक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण अछि।

प्रथमतः सम्मेलनक अवसरपर अधिक-सँ-अधिक साहित्य-कार ओहिमे सम्मिलित भऽ सकैत छथि। कियेक तँ एहि अवसर पर सामान्य परिचय-पात जानबाक-करबाक सबकेँ उत्सुकता रहैत छनि। वरिष्ठ साहित्यकारकेँ अधिक लोक चिन्हैत-जनैत रहैत छनि मुदा नव आ सामान्य साहित्यकारकेँ अपन वरिष्ठ लग चिन्हाराय करबाक, हुनका चिन्हि अपन परिचय देबाक ई एकटा नीक माध्यम हेइत अछि।

एहि लेखक सम्मेलनक अवसरपर लेखक सबसँ परिचय-पात (बायोडाटा) प्राप्तक/प्रकाशित करबाक मैथिलीमे ई पहिल प्रयास छल जे कृष्णकान्त मिश्र सन साहित्य मनीषीएसँ संभव छल। एहि परिचय पातक संग जाहि लेखक बंधुक चित्र उपलब्ध भद्य सकल छलनि तकरो प्रकाशित कयल गेल अछि।

1956 ई.मे चित्र छपबा लेल 'ब्लॉक' बनेबाक दरभंगा आ मुजफरपुरमे कोनो जोगार नहि छलैक। पटना वा कोनो आन स्थान जेना इलाहाबादसँ ब्लॉक बनबाकद्य तखन लेखकक चित्र छपबाओल गेल होयतैक। जेना हुनक स्वाभाव छलनि, सम्मेलनमे 'डेलिगेशन फी'क जे संभवतः 5 टाका मात्र छलैक, ओकर अतिरिक्त लेखक सभसँ आन कोनो शुल्क नहि लेल गेल छलैक, मुदा सम्मेलनक अवसरपर परिचय पातक अतिरिक्त आठ-आठटा विभागीय अध्यक्षक अभिभाषण, रचना संग्रहक प्रायः तीन खंड आ आनो-आन छपल सामग्री सभ, सब गोटेकेँ भेंट स्वरूप प्रदान कयल गेल छलनि।

सामान्य परिचय पातक अपेक्षा सचित्र परिचय पातक सेहो विशेष महत्व होइछ। जाहि लेखकक नाम आ साहित्यसँ लोक चिरपरिचित रहैत छथि, हुनक चित्र परिचय-पात पुस्तकमे छपल देखिकद्य लोककेँ विशेष प्रसन्नता होइत छैक। एहिसँ अपन प्रिय आ अपेक्षित लेखक सबसँ चिन्हारय, परिचय पात बढेबाक संभावनामे पाँखि लागि जाइत छैक। दोसर दिस कनिष्ठ, नव लेखक चित्र आ परिचय-पात एकेठाम पढिकऽ वरिष्ठ लेखक सेहो हुनक व्यक्तित्व आ रचना कौशलकेँ स्मरणकऽ देखि-चिन्हि अत्यन्त प्रसन्न होइत छथि। अतएव एकर महत्व असंदिग्ध अछि।

आइ जखन संचारक क्षेत्रमे क्रांति आबि गेलैक अछि तखनो पैघ-पैघ प्रकाशक, जेना साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली -110001, बुक थ्रो पब्लिकेशन प्रा0लि0 दिल्ली-9, रिफेशमेन्टो पब्लिकेशन, नई दिल्ली आदिकेँ एहि प्रकारक काजमे दू तीन वर्ष समय लागि जाइत छैक आ से कार्यक व्यापकता, छोट-पैघ घुरची आ सम्पर्कजन्य अनेक प्रकारक असुविधाक कारणे समुचितो बुझाइछ। जखन 1956 ई.मे आजुक जकाँ संचारक क्षेत्रक एतेक अधिक विस्तार नहि भेल छलैक। ओहिकाल एकमात्र डाक आ सामान्य भेंट-घांटक आधारपर एतेक अधिकाधिक लेखकक सचित्र परिचय एकत्रित कऽकय छापि कृष्णकान्त मिश्र मैथिली भाषामे जे एकटा नव डेग उठौलनि से एखनो धरि एकमेव अछि।

यद्यपि एहि पुस्तकक परिचय पातमे छपल अधिकांश लोक आब दिवंगत भद्य गेल छथि, मुदा एहि पुस्तकसँ मैथिली

साहित्यमे हुनक योगदान, हुनक विरल-विमल व्यक्तित्व आ चित्र आगामी अनेक शताब्दी धरि हमरा लोकनिकेँ उत्प्रेरित करैत रहत।

तखनुक अपेक्षा सम्प्रति मैथिली भाषामे लिखनिहार लेखक केर संख्यामे अत्यधिक वृद्धि भेल अछि। देशक सरकारी आ गैर सरकारी अनेक नामी-गामी प्रकाशन संस्थान मैथिलीमे पुस्तक छापैत अछि, एतऽ धरि जे आब 'इन्टरनेट'पर सेहो मैथिली पत्र- पत्रिका, पुस्तक उपलब्ध अछि मुदा मथिली लेखकक स्वतंत्र रूपसँ कोनो दोसर परिचय-पात (who's who)क प्रकाशन कहाँ भेल अछि एखन धरि? सूचना अछि जे जमशेदपुर प्रवासी डा0 रवीन्द्र कुमार चौधरी हेवनिए मैथिली लेखकक एकटा अद्यतन डाइरेक्टरी तैयार कयलनि अछि जे प्रकाशनाधीन अछि।

एहि परिचय-पातक संग्रहमे कृष्णकन्त मिश्र अथक प्रयास कय्कय सामग्री जुटौने छल होयताह। हुनक परिश्रमक सही-सही अनुमान हम सब नहि लगा सकैत छी! हँ, जतेक जे अनुमान लगा सकैत छी ओहिमे परिचय-पातक भूमिका पढलासँ किछु मदति भेंटि जाइत अछि। भूमिका यद्यपि बड़ छोट अछि, तैं एकर शीर्षक ओ 'विज्ञप्ति' देने छथि-

'एहन परिचय-पात (who's who)क प्रकाशन मैथिलीमे सर्वप्रथमे थिक। एकर प्रकाशनमे ततेक ने बाधा ओ कठिन परिस्थिति सभ उपस्थित भेलैक जकर वर्णन करब एतै उचित नहि हैत। एहिमे सम्भवतः बहुतो विशिष्ट ओ आदरणीय विद्वानक नामक उल्लेख ओ पूर्ण परिचय छुटि गेल हैत ताहि लेल हम क्षमाप्रार्थी छी। जतेक महानुभावक परिचय छपल अछि ताहिमे जतबे हमरा सामग्री प्राप्त भै सकल, तकरे उपयोग कैल अछि; जे सूचनादि हमरा सामर्थ्यसँ बाहरक छल तकर समावेश नहि भै सकल ताहि हेतु हमरा पूर्ण खेद अछि। एकर मार्जन अग्रिम संस्करणमे भै जैत, से आशा। एहि संकलन कार्यमे हमर परमप्रिय मित्र श्री गोविन्दजी (अनुवाद विभाग, सचिवालय, पटना)सँ पूर्ण सहायता भेंटल अछि, जे हम बिसरि नहि सकैत छी। त्रुटि सबहिक हेतु पुनः सभसँ क्षमा याचना।'

15.11.55 केँ लिखल एहि छोट सन भूमिकामे उचिती-मिनतीक संग-संग सन्मुख आयल ज्वलंत समस्यो सबपर पाठकक ध्यान आकृष्ट कराओल गेल अछि। जेना बहुत गोटेक परिचय छूटि जयबाक अनेक कारण भऽ सकैछ, जाहिमे ओहि व्यक्तिक अपनो अनयमनस्कताक सेहो अधिक संभावना अछि। मुदा कृष्ण- कान्त मिश्र अत्यन्त विनम्रता पूर्वक हुनक अपन व्यक्तिगत कारणों लेल 'क्षमा-प्रर्थना' कऽ हुनका दोष मुक्तकऽ दैत छथि। जेना विद्यापति कहने छथि- 'हमर अभाग, हुनक नहि दोष।'

उदाहरणार्थ लालबाग, दरभंगा, जतऽ कृष्णकांत मिश्रक आवास छलनि, ओहिठामक एकटा विद्वानूक परिचय मात्र एक पांतीमे एहि प्रकार छपल अछि-शंकर मिश्र, स्था. प. लालबाग, दरभंगा। (पृष्ठ-34)

दोसर बात, जनिक परिचय क्रममे भ्रम वा विश्वस्त सूचना प्राप्त नहि भेने योग्यता, विशिष्ट गुण, किवा विशेष रचनात्मक कार्यक क्रममे किछु छुटि गेल होयतनि, से सम्पुष्टि सूचनाक अभावमे। एहि हेतु सेहो ओ अग्रिम अंकमे सुधार करबाक आश्वासन देब आवश्यक बुझलनि।

परिचय-पात आ एहि प्रकारक पुस्तकमे लेखक सभक देल जायवाला सभटा विवरण एकटा विशिष्ट क्रमसँ, किछु निश्चित संकेताक्षर द्वारा देल जाइत अछि जाहिसँ किछु संक्षपेमे अधिका- धिक लोकक विवरण अंकित भऽ सकय आ अनावश्यक किछु शब्द विशेषक पुनर्रावृतियो नहि होअय, संगहि पुस्तकक कलेबरमे अनावश्यक पृष्ठ विस्तार आ तज्जन्य अनर्गल आर्थिक व्ययसँ बाँचल जाय सकय। 'विज्ञति'क दोसर पृष्ठपर 'विवरण क्रम' एवं 'संकेतक' शीर्षक अन्तर्गत संकेताक्षर लिखल गेल अछि। दूनू मिलाकऽ मात्र 18टा संकेताक्षर बनाओल गेल अछि मुदा एहि पृष्ठमे 'विवरण क्रम'मे 14टा एवं 'संकेतक'मे 16टा संकेत अछि। एहि प्रकार भ्रमवश एहिमे 12टा 'संकेतक' वा 'विवरण क्रम'क पुनरावृत्ति भऽ गेल अछि। दूनूक मिलल-जुलल जे 18टा 'सकेतक' वा विवरण क्रम अछि से निम्नलिखित अछि-

नाम-(बिना कोनो संकेतक पूर्ण नाम); उपनाम-उ; जन्म (स्थान ओ तिथि)-ज; प्रारम्भिक जीवन-प्रा.जी.; शिक्षा-शि.; व्यवसाय-व्य.; परिवार-प.; विशेष-वि., शास्त्रीय प्रवृत्ति-शा.प्र., प्रथम रचना-प्रथ.; प्रकाशन (काल सहित)-प्र.; लौकिक प्रवृत्ति-लौ.प्र.; अप्रकाशित रचना-अ.र.; सदस्य-सद.; सम्पादक-सम्पा.; वर्तमान पता-व.प.; स्थायी पता-स्था.प.; देखू-दे.।

एहि पुस्तकक आरम्भेमे एहन दू गोटेक परिचय देल गेल अछि जे अमैथिल छथि, मुदा दूनू लेखक अवश्य छथि आ मिथिला-मैथिल-मैथिलीकसँ सम्बद्ध-आबद्ध तँ छथिहे। ओ छथि-प्रधान संरक्षक श्री रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर आ प्रधान सभापति डा. श्यामनन्दन सहाय। दूनू सम्माननीय विद्वानूक चित्र छापब सेहो पूर्णतः स्वाभाविक अछि।

प्रकाशनक क्रममे सबसँ पहिने प्रधान संरक्षकगण,

प्रधान सभापति, स्वागताध्यक्ष, विभागीय सभापतिगण, वैदेही समितिक पदाधिकारीगण आ तकरा बाद वर्णानुक्रमे 'अ'सँ आरम्भकऽ 'ह' धरि नामक आद्याक्षर क्रमे। जाहि-जाहि लेखकक चित्र छनि से प्रयत्न कयल गेल अछि जे हुनक परिचयक लगे-पास रहनि। चित्र सामान्य कागतपर नहि छापि कऽ, आर्ट पेपरपर छापल गेल अछि, जाहिसँ ओ कागत जकाँ कनिको माटि-पानिक संसर्ग भेने शीघ्रे गलि-पचि नहि जाय। इहो एहि छोट सन मुदा महत्वपूर्ण पोथीक एकटा विशिष्टते अछि।

वर्णक क्रमसँ निम्नलिखित लेखकगणक परिचय-पात एहि पुस्तकमे संकलित कयल गेल अछिः- सर्वश्री, अनन्तबिहारीलाल दास 'इन्दु', अमरनाथ 'दीपक', अमरनाथ झा, अमरनाथ ठाकुर, अमरो पाठक, अमूल्यधन चटर्जी, अमृतधारी सिंह, आद्याचरण झा, आनन्द झा, आरसीप्रसाद सिंह, इन्द्रपति सिंह 'श्यामानन्द', इन्द्रानन्द सिंह 'इन्दु', ईशनाथ झा, उपेन्द्र ठाकुर, उमाकान्त ठाकुर, उमानाथ झा, उमानाथ मिश्र (सतलखा), उमेश मिश्र (महामहोपाध्याय), उमेश मिश्र, उपेन्द्रझा 'व्यास' उमानाथ मिश्र, उग्रानन्दसिंह झा 'गंगेश', ऋद्धिनाथ झा, कल्पना शरण (लीली रे), काँचीनाथ झा 'किरण', काशीकान्त मिश्र 'मधुप', काशीकान्त ठाकुर 'कलेश', कीर्त्यानन्द कुमर, कुलानन्द 'नन्दन', कुलानन्द झा, कुलानन्द मिश्र, कृष्णकान्त मिश्र, कृष्णकुमार ठाकुर, क्षेमधारी सिंह 'श्रीकर', गंगाधर मिश्र 'जीबू', गंगानन्द सिंह 'कुमार', गंगापति सिंह, गिरिधर झा 'विकल', गोविन्द चौधरी, गोविन्द झा, गौरीशंकर प्रसाद 'सोमदेव', चन्द्रकुमार झा, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', चन्द्रमोहन झा, चिरंजीलाल झा, चौधरी जितेन्द्रनारायण झा, छेदीझा 'द्विजवर', जयकान्तझा 'बक्शी', जयकान्त मिश्र, जयदेव मिश्र, जयधारी सिंह 'प्रभाकर', जयमंत मिश्र, जगदीपनारायण चौधरी 'दीपक', जगदीशनन्दन सिंह, जितेन्द्रनारायण झा, जीवानन्द झा, जीवानन्द ठाकुर, त्रिलोक नाथ मिश्र, तंत्रनाथ झा, तिलकेश्वर चौधरी, तेजनाथ झा, दामोदर झा (ठाढी), दामोदर झा, दामोदर ठाकुर, दिनेश्वर झा, दुर्गानाथ झा 'श्रीश', धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र', नगेन्द्र कुमार, नरेन्द्रनाथ झा, पद्मानन्द ठाकर 'राजा', परमाकान्त चौधरी, परमानन्द झा 'आनन्द', परमानन्द शास्त्री, परमेश्वर मिश्र, बच्चा ठाकुर, बदरीनाथ झा, बलदेव मिश्र-राजपंडित, बलदेव मिश्र ज्यौतिषाचार्य, बालगोविन्द लाल, बुद्दिधारी सिंह 'रमाकर', बेचन झा, भक्तिनाथ सिंह 'ठाकुर', भवनाथ झा 'दीपक', भोलालाल दास, मणिपद्म (ब्रजकिशोर वर्मा), मनीन्द्र चौधरी (राजकमल चौधरी), मनमोहन झा, महेश प्रो., मायानन्द मिश्र, यदुनन्दन शर्मा 'प्रलयंकर', यात्रीजी (बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'), युगेश्वर झा, योगानन्द झा, रघुनाथ प्रसाद मिश्र 'पुरोहित', रत्नेश्वर झा, रमाकांत झा, रमाकांत मिश्र, रमानाथ झा, राघवाचार्य शास्त्री राधाकृष्ण चौधरी, राधकृष्ण झा 'बहेड़', राजमोहन झा, राम किशोर झा 'विभाकर', रामचरित्र पांडे 'अणु', रामचंद्र मिश्र, रामचंद्र मिश्र, (फरूखाबाद), लक्ष्मण झा, लक्ष्मीपति सिंह, लक्ष्मीपति देवी (लीला, दयावती), ललितेश मिश्र उर्फ ललित जी, विजयकांत मिश्र, विजय नारायण मिश्र 'प्रवासी साहित्या- लंकार', विद्यानंद किसलय, विद्यापति सिंह, वेदानंद झा, वैद्यनाथ सरस्वती, विष्णुकांत झा ज्योतिषी, शंकर मिश्र, शशिनाथ झा, शशिनाथ चौधरी, शशिनाथ मिश्र, शारदानंद झा, शिवानंद चौधरी, शिवशंकर झा, शैलेन्द्रमोहन झा, श्यामबिहारी दास, श्यामा मिश्र, श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार, श्री कृष्ण मिश्र, श्रीमंतलाल दास, सीताराम झा (कविवर), सीताराम मिश्र, सुधाकर झा (डा0), सुधांशु 'शेखर' चौधरी, सुंदर झा शास्त्री, सुभद्र झा, सूर्यकान्त (डा0), सुरेन्द्र झा 'सुमन', हरिमोहन झा, हितनारायण झा।

आरंभमे प्रधान संरक्षकमे महामहीम राज्यपाल श्री रंगनाथ रामचंद्र दिवाकर एवं महाराजाधिराज डा. कामेश्वर सिंह, प्रधान सभापति सांसद श्री श्यामनंदन सहाय, स्वागताध्यक्ष महामहो-पाध्याय डॉ. उमेश मिश्र इत्यादिक परिचय आ चित्र छपल अछि।

परिचय पातमे निम्नलिखित व्यक्तिक चित्र प्रकाशित अछि-प्रधान संरक्षक द्वय, प्रधान सभापति स्वागताध्यक्ष केर अतिरिक्त संरक्षक बाबू श्री चंद्रधारी सिंह, विशिष्ट पोषक श्री हरिनाथ मिश्र, संरक्षक रामलोचन शरण, वैदेही समितिक आजीवन सदस्य श्री चंद्रमोहन झा, श्री उमानाथ मिश्र, श्री उप्रेन्द्र झा व्यास, रायबहादुर सुशील कुमार राय, चौधरी जितेन्द्रनारायण झा, विभागीय सभापतिगण सर्वश्री, हरिमोहन झा, वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', डॉ. जयकान्त मिश्र, रमानाथ झा, कुमार गंगानंद सिंह, राधकृष्ण चौधरी, कविवर सीताराम झा, कविशेखर बदरीनाथ झा, राजपंडित बलदेव मिश्र, ज्योतिषाचार्य बलदेव मिश्र, शिवानंद चौधरी, इंद्रपति सिंह, बच्चा ठाकुर, उमानाथ झा (मुज.), आनंद झा, जीवनाथ झा, राधानन्दन झा, अनंतबिहारीलाल दास 'इन्दु', मणीन्द्र राजकमल, रत्नेश्वर झा, ललतेश मिश्र 'ललित' परमेश्वर मिश्र, प्रो. धनेश्वर झा, सीताराम मिश्र, गोविन्द चौधरी, श्यामबिहारी दास, उमाकान्त ठाकुर, चंद्रकुमार झा, काशीकान्त मिश्र 'मधुप', रमाकान्त, शैलेन्द्र मोहन झा, परमानंद झा, गिरधर झा 'विकल',

लक्ष्मीपति सिंह, चंद्रनाथ मिश्र 'अमर', राघवाचार्य शास्त्री, मनमोहन झा, लक्ष्मी देवी 'लीला', योगानंद झा, नगेन्द्र कुमार, कुलानंद मिश्र, ऋद्धिनाथ झा, शशिनाथ झा, बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर', वेदानंद झा, आद्याचरण झा, रामकृष्ण झा 'किसुन', गोविन्द झा, इन्द्रानंद सिंह, नवीनचंद्र मिश्र, उपेन्द्र ठाकुर, सोमदेव, सुन्दर झा शास्त्री, उग्रानंद सिंह झा विजयनारायण मिश्र 'प्रवासी', वैद्यनाथ सरस्वती, अमरनाथ झा, पूर्व राज्यपाल श्री माधव श्री हरि अणे तथा वैदेहीक प्रथम वर्षान्त पर प्रकाशित विशेशांकक हेतु डॉ. अमरनाथ झाक हस्तलिखित शुभकामना संदेशकेँ हुनकहिं हस्तलिपिमे प्रकाशित पत्र। दू पृष्ठपर समितिक प्रकाशन यात्री जीक नवतुरिया आ म.म. डॉ. उमेश मिश्रक मैथिली संस्कृति ओ सभ्यताक मुख पृश्ठक तीन- तीनटा फोटो। एक पृश्ठपर वैदेही वृहत कथा विशेषांक (1956)क मुख्य पृष्ठक फोटो।

एहि परिचय-पात पुस्तकक चर्च मैथिलीक इतिहासक पुस्तकमे नगण्य रूपमे भेल अछि। एहि अधिवेशनक बाद लिखल गेल इतिहासहुमे एकर महत्वपूर्ण अवदानक उल्लेख दिस इतिहासकार ध्यान नहि रहलनि अछि। डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' अपन मैथिली साहित्यक इतिहासमे मात्र एक पांतीमे एकर उल्लेखटा कयने छथि- 'मैथिली लेखक सभहिक परिचय-पात सर्वप्रथम एहि समिति द्वारा प्रकाशित भेल।' (पृष्ठ-430)

कृष्णकान्त मिश्र द्वारा संकलित आ सम्पादित परिचय-पात मैथिली साहित्य जगतमे पहिले-पहिल कयल गेल एकटा विशिष्ट आ नव कार्य छल जे ओहि समय एकाधे भारतीय भाषामे संक्षिप्तो रूपमे भेल प्रकाशित भेल होयत।

एहि पुस्तकमे छपल परिचय-पातक एकटा बानगी प्रस्तुत करब अप्रासंगिक नहि होयत। तेँ हम कृतिकारेक परिचयक बानगी प्रस्तुत कऽ रहल छी-'मंत्री, प्रोफेसर कृष्णकांत मिश्र, उ-भ्रमर, इन्द्र, ज.-प्रयाग,25.10.1928ई., शि.-एम.ए. (प्रयाग विश्वविद्यालय), व्य-अध्यापक, मिथिला कॉलेज, दरभंगा, प.-दू पुत्र, शा.प.-कथा, इतिहास, आलोचना, नाटक तथा अन्य अनेको अनुसंधानात्मक लेख, लो.प्र. पुरातत्त्व अन्वेषण, प्रथ. मिथिला मिहिरमे' 'अन्तिम अभिलाषा', प्र. हमर दोसर विवाह, गल्पांजलि, मिथिला का इतिहास, चयनिका, मैथिली साहित्यक इतिहास, इत्यादि, व.प.-वैदेही समिति, दरभंगा, स्था. प.-तीरभुक्ति, 1,एलन गंज रोड, प्रयाग-2, (परिचय-पात, पृष्ठ -5,)

ई पुस्तक परिचय-पात मैथिली भाषामे अपना ढंगक एकमेव अछि। एकर दोसर, तेसर संस्करणमे नव-नव लेखक-कवि लोकनिक समावेश भेलासँ एकर पृष्ठ संख्या बढैत, ई क्रमशः गतगर होइत जाइत आ एकर उपयोगिता सेहो बढैत। मुदा से भेल नहि। 'स एव ज्येष्ठः, स एव कनिष्ठः' (वैह सभसँ पैघ आ वैह सभसँ छोट) रहि गेल। जेना कहियो महाकवि कालिदासक प्रसंग कहल गेल छल-

पुरा कवीनां गणना प्रसंगे, कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावात्, कनिष्ठिका सामार्थवती बभूब।।

पहिल-पहिल जखन कविगणक गणना होमऽ लागल तँ कालिदासकेँ कनगुरिया आंगुरक अर्थात् सबसँ छोट स्थान प्राप्त भेलनि, मुदा अखनहुँ धरि नीक आ बोधगर कविगणक अभावमे वैह कनिष्ठ स्थान प्राप्त कवि सर्वश्रेष्ठ छथि। कियेक तँ कनगुरियोसँ उपरक केओ आन कवि छथिहे नहि, सब केओ आर ओहिसँ छोटे छथि।

आ तेँ कृष्णकान्त मिश्र द्वारा संकलित-सम्पादित मात्र 38, चित्र लगाकऽ 62 पृष्ठक पहिल परिचय-पात एखन धरिक अपन ढंगक पहिल आ अन्तिम पोथी अछि।

यद्यपि ई एकटा सम्पादित पुस्तक अछि, एहिमे जाहि कवि, लेखकसँ सम्बन्धित जतेक जे विवरण आ चित्र प्रकाशित भेल अछि, ओ सभटा सम्बन्धित लेखक द्वारा उपलब्ध करबाओल गेल अछि, सम्पादक ओकरा मात्र क्रमबद्ध आ व्यवस्थितकऽ प्रकाशित करबौलनि अछि। मुदा हमरा जनैत एहि प्रकारक कार्य कोनो मूल पुस्तक लिखबासँ विशेष श्रम-साध्य कार्य तँ अछिए, एकर महत्त्व सेहो अधिक होइत अछि। कोनो नव अनुसंधानात्मक कार्य जकाँ इहो एकटा विशिष्ट अनुसंधानात्मके कार्य कहल जा सकैछ। अतएव 1956 ई.मे 28-29 वर्षक एकटा नवयुवक द्वारा कथा, एकांकी आ इतिहासक दू-दूटा पुस्तक प्रणयनक बाद एहि प्रकारक कार्य करबाक सत्प्रेरणा आ प्रयत्न अपन विशिष्ट महत्व प्रतिपादित करैत अछि।

■

गर्वक सँग आत्मचिंतन सेहो जरूरी

✍ डॉ. बिभा कुमारी

मिथिलामे गर्व करबा जोग सरिपहुँ बहुत रास उपलब्धि अछि। मिथिलाक अतीत तँ सौंसे विश्वमे प्रतिष्ठित अछि। मुदा प्रश्न उठैत अछि जे कि अतीतक तागति सँ भविष्य केँ स्वर्णिम बनाओल जा सकैत अछि। अतीत आ भविष्यक बीचमे जे वर्तमान अछि तेकर सम्पूर्ण मूल्यांकन हम सभ क' लेलहुं अछि आ अपन वर्तमान सँ हमरा लोकनि संतुष्ट छी। आई सम्पूर्ण विश्व में हमरा सभक साक्षरता, रोजगार, स्त्री-शिक्षा, लैंगिक समानता इत्यादि बिन्दु पर संतोषप्रद उपलब्धि अछि, आ ज नहि अछि त अतीतक माला जपैत हमसभ कतेक आगु धरि मुड़ी उठा क' जा सकब। स्वप्न देखब नीक होइत अछि आ स्वप्न देखलाक पश्चातहि कोनो उपलब्धि प्राप्त होइत अछि धरि स्वप्न देखबाक सँग-सँग इहो देखनाई अतीव आवश्यक अछि जे हमरा लोकनि एखानि कतय ठाढ़ छी आ एखनि जतय छी ततय सँ आगु केना बढि सकब। एखनो धरि मिथिलामे शिक्षाक स्थिति संतोषजनक नहि भ' सकल अछि। अपन भाषामे शिक्षा हेबाक चाही, ताहि लेल प्रयास भ' रहल अछि, आशा अछि जे अपन भाषामे शिक्षा आरंभ भेने शिक्षामे सुधार होयत। ई अकाट्य सत्य अछि जे आन कोनो भाषा जहन शिक्षाक माध्यम बनैत छै त' शिक्षा दूभर भ' जाइत छै, किएक त' विषय केँ बुझब सँग भाषा केँ बुझब सेहो छात्र लेल एकटा पैघ चुनौती भ' जाइत अछि।

वर्तमान समय में बहुत रास स्थिति परिवर्तित भ' रहल अछि। चारुभर जय मिथिला! जय मैथिलीक जयघोष भ' रहल अछि। मिथिला कैँ स्वर्ग सँ बेशी नीक कहल जा रहल अछि। विकासक चर्चा खुम जोर-शोर सँ भ' रहल अछि धरि सोचबाक बात ई अछि जे विकासक जतेक हल्ला भ' रहल अछि कि सरिपहुँ ओतेक विकासो भ' रहल अछि की? की हमरा लोकनि कोनो सर्वे सँ ई देख रहल छी जे मिथिलामे रहनिहार लोक सभ विश्व स्तर पर उपलबधिक कीर्तिमान स्थापित क' रहल छथि आ कि हम सभ माय आ मातृभूमिक प्रेमक वशीभूत भेल मिथिलाक जयगान क' रहल छी। हम ई नहि कहै छी जे हमरा सभके ँ जयगान नहि करबाक चाही धरि हाँ अगबे जयगान नहि करबाक चाही। आत्म-चिंतन, आत्म-मंथन क' क' जतय जे आवश्यक छै ताहि दिशामे काज कएल जेबाक चाही। कनी-मनी दु-चारि रंगक भौतिक सुखक साधन भ' गेनाई केँ विकास नहि कहल जा सकैत अछि। हाँ विकासक दिस ओ एकटा सकारात्मक डेग भेल धरि ओतबे सँ प्रसन्न भ' मगन भ' जायब त' आगु विकासक मार्ग अवरुद्ध भ' जायत। ध्यान देबाक बात ई अछि जे भौतिक साधन भेट गेल मुदा शांति जेना हेरा गेल। एना किएक भेल ताहि पर विचार केनाई आवश्यक अछि। समाजमे लोक ब्लड प्रेशर, हाइपरटेंशन, अवसाद सँ ग्रस्त भ' रहल छथि। युवा आ किशोरमे अवसाद सँ आत्महत्याक प्रवृत्ति सेहो बढ़ल जा रहल अछि। नव-नव गैजेट्स सभ आबि रहल अछि। सभलोक ग्लोबल आ डिजिटल त भेल जा रहल अछि आ ई नीक बात अछि लोक दुनिया-संसार सँ जुड़ि रहल अछि मुदा लोक अप्पन घर, टोल आ लगपासक लोक सँ दूर भेल जा रहल अछि। डिजिटल दुनियामे ओकरा लग सूचनाक त' थैहर लागि गेल छै मुदा कोनो विषय पर विशेषज्ञता लेल जे अध्ययन-मनन आ शोधक बेगरता अछि ताहिमे कमी भेल चल जा रहल अछि। गाम त अछि मुदा ओहिमे ओ प्रेम हेरायल जा रहल अछि जे ओकरा शहर सँ फराक बनबैत छै। गाममे नगरीय ओ महानगरीय संस्कृति तेहन क' पैसि गेल अछि जे ओतहु आब चारि गोटे एकसँग कोनो दुआर पर बैसल नहि देखाइत अछि। सभगोटे अपन-अपन घरमे गेट बन्न क' क' रहय लागल अछि। भीतर सँ लोक जेना फोंक भेल जा रहल अछि, संवेदनाक जल जेना सुखायल जा रहल अछि। ई संतुलित विकास त' नहि भेल। ने लोक कैँ लोक सँ सिनेह नहि प्रकृति सँ सिनेह ई की भेल जा रहल अछि?

बजारक प्रभाव लोक आ समाज पर बहुत बेशी भेल जा रहल अछि। गाम सेहो बजार बनल जा रहल अछि। मुदा एहि बजारमे देशी चीज-वस्तुक बजार तैयार नहि भ' पाबि रहल अछि। मिथिलाक दही-चूड़ा, माछ, मखान, पान, तरुआ, तीमन-तरकारी, बगिया, ठकुआ, खजुरिया, पिरुकिया, निमकी केँ बजार नहि बनि पाबि रहल अछि मुदा बर्गर, पिज़्ज़ा आ मोमोसक बजार गलिए-गलिए बनि गेल अछि।

एकटा एहि तरहक वातावरण बनल जा रहल अछि जाहिमे हम सभ प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुपें परतंत्र भेल जा रहल छी। बाह्य गुलामीक सँग-सँग मानसिक गुलामी ततेक बढ़ल जा रहल अछि जे अपन भाषा अपन संस्कृति सेहो लोक बिसरल जा रहल अछि। ई मानसिक गुलामी अगिला कतेको बरख धरि हमरा सभक विकास केँ रोकि लेत। हमसभ अपन जड़ि सँ उपटि जायब, आ जड़ि सँ उपटि गेनाई अंत भ' गेनाई थिक। मानसिक गुलामी लोकक आत्मबल केँ सेहो कमजोर क' दैत अछि। आत्मबल कमजोर भेला सँ जे रिक्त भाव उत्पन्न होइत अछि तेकर पूर्ति लेल लोक भौतिक साधन दिस बढय लगैत अछि। जाहि सँ सुखक भौतिक साधनक लेल आकर्षण बढ़ैत अछि आ बजारमे ओकर माँग बहुत बेशी बढि जाइत अछि। माँगक वृद्धि बजार केँ गाम धरि पसरबाक अवसर दैत अछि। बजारक विकास केँ देश, समाज आ गामक विकास बूझि लेब उचित नहि हैत। ई विकासक भ्रम भ' सकैत अछि मुदा विकास नहि। अपन गाम सँ गामक अस्तित्व बिलायल चलि जायब चिंताक विषय थिक। ताहि पर सँ युवा पीढ़ीक अपन देस-कोस, गाम-घर सँ शिक्षा आ रोजगार लेल बाहर परा गेनाई निराशाक स्थिति बनबैत अछि। गाम अपन आर्थिक उन्नति सँ फराक भेल जा रहल अछि, कृषि आ पशु-पालन त' छुटले जा रहल अछि, शिक्षा आ रोजगरक अवसर सेहो समटायल जा रहल अछि। कुटीर उद्योग, मौनी-सिक्कीक कलाकार सेहो जनसंख्याक अनुपातमे कम छथि आ जे छथि तिनकर कलाक वाहवाही त' लोक क' दैत अछि मुदा हुनक सामग्री कीन क' हुनका आर्थिक सहयोग नहि करैत छथि। कृत्रिम ओ विदेशी ब्रांडेड चीज-वस्तुक बेशी आकर्षण रखै जाइ छथि आ ओएह किनब अपन शान बूझए जाइ छथि। एकर दुष्परिणाम ई भेल जा रहल अछि जे आमदनीक अनुपातमे खर्च बढल चलि जा रहल अछि। आर्थिक स्थिति दिनदिन पतरायल जा रहल अछि।

कृषि आ पशुपालन छूटल जा रहल अछि, प्रकृति सँ दूर भेल जा रहल छी। पारंपरिक अर्थक साधन सभ बन्न भेल जा रहल अछि मुदा अर्थक नव साधन नहि भेटि पाबि रहल अछि। लोकमे बढ़ैत निराशा ओकरा अवसाद आ अपराध दिस घिचने जा रहल अछि। लोकमे हिंसाक भावना प्रबल हुअ लागल अछि। ऊपरी आ बाहरी चमक-दमक लोककेँ मानसिक संतोष आ आत्मिक आनन्द नहि द' पाबि रहल छै। लोक एकदोसर सँ फराक भेल जा रहल अछि। परिवार ओ समाजक संबंध जेना सूरा लागल अन्न सन फोंक भेल जा रहल अछि। आनंदक खगता छै मुदा ओकर प्राप्तिक मार्ग सँ लोक भुतला गेल अछि। एतय धरि परिवर्तन आबि गेल अछि जे ब्रम्ह मुहूर्तमे उठय वाला आ रातिक पहिल पहरमे सुतय वाला गाम आब आधा राति ध ारि जगैत अछि आ भिनसर नहि उठिक आठ-न बजे धरि सूतल रहैत अछि। एकटा एहि तरहक वातावरण बनल चलि जा रहल अछि जाहिमे हमरा लोकनि स्व-चेतन आ साकांक्ष नहि भ' पाबि रहल छी। हमरा सभक विवेक मौलायल जा रहल अछि आ स्वार्थ झमटगर भेल जा रहल अछि।

मिथिला समाजमे एखनि धरि स्त्री-शिक्षा आ आत्मनिर्भरता नीक जेकाँ स्थापित नहि भ' सकल अछि। दू-चारि गोट अतीतसँ आ चारि-पाँच टा नाम वर्तमान सँ गिना क' हमसभ अपन कर्तव्यक इतिश्री क' लैत छी, आ बाबाक हाथीक जीजिर ल' क' प्रफुल्लित भ' जाइत छी। हमरा सभकेँ आब आत्मचिंतन क' क' अपन देस-कोसक उत्थान लेल जागय पड़त। तखनहि किछु ठोस काज बनि सकत आ विकासक मार्ग प्रशस्त भ' सकत।



तर्क-वितर्क आ सतर्क

✍ विमलजी मिश्र

तर्क के अपन महत्व छैक। तर्क तार्किक हेबाक चाही तर्क संगत हेबाक चाही तथ्यपरक वा तथ्यपूर्ण हेबाक चाही। अदौं काल सँ प्रकृति परिस्थिति प्रवृति आ परिणीती पर तर्क वितर्क चलैत रहल अछि आ चलैत रहत। बच्चा के जन्म होइ सँ पहिनहिं तर्क वितर्क होमै लागै छैक जे बेटा हेतै की बेटी हेतै। जन्म लेला पर तर्क देल जाइ छै बौआ के मुँह माइ पर गेलै, केओ तर्क दै छै एन मेन बाप पर गेलै। केओ तर्क दै छैक जे कपार तँ बाप जेकां छै आ मुंह कान नाक माइ जेकां छैक। जखन केओ बेमार पड़ै छैक तँ तर्क देल जाइ छै जे फलां डाक्टर लग ल जाउ केओ तर्क दै छै जे ने, हॉस्पिटल ल जाउ। जखन विद्यार्थी कोनो स्कूल मे जाइ छैक तँ तर्क देल जाइ छै जे फलां स्कूल मे नाम लिखाउ। जखन केओ बंसी खेलै धार पोखरि वा तालाब पर जाइ छैक तँ तर्क वितर्क शुरू भ जाइ छै जे, फलां पोखरि मे माछ ने छै, ओहि ठाम बंसी पाथब बेकार। केओ वितर्क करै छै जे काल्हि फलां फलां गेल छलै तँ आध आध सेर के सौरा बंसी मे फंसल रहै।

केओ बंसी खेलै घड़ी मे जखन देखै छै जे तड़ेला उब डुब क रहल छैक तँ बंसी छिपै छै, मुदा जहां ने देखै छैक जे बंसी खाली अछि तँ ओह! ओह क कें चुचकारी मारै छै जे, छुटि गेलै! एक सेर सँ कम के माछ नहिं छलै। छिपै काल मे ततेक ने भारी लागै छलै जे सेर भरि सँ कम ने रहल हेतै। एहि गप्प पर संगी सभ जे बंसी खेलै छै, ओ सभ चुटकी लेने शुरू क दै छै, ने ने! सेरे सवा सेर के ने हेतै, ओ तँ पसेरी सँ बेसिए हेतै। इ सभ तर्क वितर्क जीनगी के अनेको मोड़ पर चलैत रहै छैक।

तर्क देल जाइ छै जे अगर पंडित जवाहरलाल नेहरू जी के जगह पर सरदार बल्लभभाई पटेल पहिल प्रधानमंत्री रहितै तँ आइ इ देश दुइ भाग मे नहिं बँटितै। देश तरक्की मे अमेरिका सँ आगू रहितै। केओ इहो तर्क दै छैक जे जँ सरदार बल्लभभाई पटेल प्रधानमंत्री रहितै तँ भ सकै छै जे देश फेरो सँ गुलाम भ जाइतै नहिं तँ देश मे भुखमरी रहितै, देश पुनः प्रजातंत्र सँ राजतंत्र मे परिवर्तित भ जाइतै।

तर्क देल जाइ छैक जे देश बंटवारा गलत भेल नहिं तँ देश हिन्दू राष्ट्र बनि गेल रहितै, देश विश्व गुरु बनि गेल रहितै। तर्क इहो छैक जँ वर्तमान मे देश अविभाजित रहितै तँ, पाकिस्तान बंगलादेश आ हिन्दुस्तानक मुस्लिम के जनसंख्या हिन्दू सँ बेसि रहितै आ हिन्दुस्तान पर मुस्लिम के पकड़ रहितै, मुस्लमान मजबूत रहितै जाहि सँ हिन्दू सभ जे वर्तमान मे उछल कूद मचा रहल छै से सभ डर के मारै थर्र थर्र कांपैत रहितै। तर्क देल जाइ छै जे अगर प्रणव मुखर्जी कांग्रेस मे प्रधानमंत्री रहितै तँ कांग्रेस पार्टी नहिं बिखैड़तै।

तर्क देल जाइ छै जे भगवान श्री राम माता सीता जी कें परित्याग क कें गलती केलक। सीता जी कें लक्ष्मण रेखा नहिं पार करै कें छलै, आदि आदि। तर्क देल जाइ छै जे महाराज दरभंगा कें एना करै कें छलै ओना करै कें छलै, इ करितै ओ करितै। भांति-भांति कें तर्क देल जाइ छै। तर्क देल गेलै जे मोदी जी भाषण देलक अच्छे दिन आएंगे तँ जरुर एतै।

मोदी जी बेमानी ने करतै किएक तँ ओकरा कोनो धीया पुता छै। विदेश मे जतेक बेमानी के रुपया जमा छै, से सभटा आनतै तँ देश भरि के लोक धनीक भऽ जेतै सभ गोटे कें पन्द्रह लाख भेटतै, राम मंदिर बनतै तँ राम राज्य एतै, मुस्लिम कें मुंह बंद रहतै, एहि प्रकारे भांति भांति के तर्क चलैत रहै। तर्क देल गेलै जे यौ बाबू! बिना धिया पुता आ बेघर लोक सँ जखन देश नीक सँ चलतै तँ, सभटा बबाजी आ भीखारी कें देश कें बागडोर किएक नहिं सौंप दै छी। एहि प्रकार सँ तर्क वितर्क के परिणाम जे किछु दिन मे घटित भेल अछि से सभक सोझां मे अछि। भाषण सुनि सुनि जे पुरा देश मे तर्क के माहौल बनल ताहि के परिणामस्वरूप देश के बागडोर थाम्हे मे सफल भ गेलाह। मुदा जाहि तर्क सँ जनता मुग्ध भेलाह जे, पेट्रोल गैस डीजल के दाम आधा भ जाएत, सस्ता भ जाएत, भुखमरी बेरोजगारी दूर भऽ जाएत देश मे राम राज्य आबि जाएत। की ओहि समय के देल गेल तर्क सँ वर्तमान मे तार्किक परिणाम भेटल।

गाम घर मे पहिनहुँ आ ऊखनहुँ, मुदा एखन किछु कम तर्क देल जाइ छै जे फलां तँ बड़का मंतरिया छैक, हिमालय मे कतेको बरख तपस्या केने छैक ओ चुटकी भरि

भभूते मे सभटा बीमारी ठीक क दै छै। लोक ओहि अंध विश्वास मे पड़ि कें बिनु इलाज के मरि जाइत रहै।

वर्तमान मे कांग्रेस के भारत जोड़ो यात्रा पर तर्क वितर्क के घमासान मचल छैक। कांग्रेस के पूर्व नेता गुलाम नबी आजाद के तर्क जे भारत जोड़ो नहिं कांग्रेस जोड़ो यात्रा करै कें चाही। रंक सँ जिनका राजा बना कें पार्टी राखलकै ओकर तर्क छै पार्टी किछु नहिं देलक। विपक्षी दल के लोक भारत जोड़ो यात्रा पर तर्क दै छै जे भारत तँ जुड़ले छैक, आब इ कोन भारत जोड़ो यात्रा शुरू केने अछि। तर्क देल जाइ छै जे गरीब आदमी के बीच मे जदि यात्रा करै छैक तँ हजारो के टी-शर्ट किएक पहिरै छैक।

कंटेनर मे किएक रहै छैक। एहि सभ के बीच इहो तर्क देखल गेल जे फलां कें साहित्य अकादमी पुरस्कार किएक देल गेल। तर्क देल गेल जे एना नहिं हेबाक चाही। तर्क देल जाइ अछि जे विद्यापति जीक नाम सँ समारोह होइ अछि तँ मात्र विद्यापति जीक चर्चा हुए हुनक पदावलीक गायन हुए। तर्क वितर्क होइ अछि जे संस्था सभ चंदा के धंधा बना लेने अछि।

देश मे जतेक संस्था वा पार्टी अछि, से सभ अपन पक्ष मे तर्क दै अछि। मिथिला राज्य लेल तर्क वितर्क चलैत रहल आ चलि रहल अछि जे मिथिला राज्य किएक बनै! आ मिथिला राज्य किएक नहिं बनै। फलां सरकार रहितै तँ बनि गेल रहिते एहि तरहक तर्क होएत रहल। मुदा जखन सरकार बनि गेल तँ तर्क होमै लागल जे एखन तँ विश्व गुरु बनै कें तैयारी क रहल अछि, जखन समस्त ब्रह्माण्ड पर कब्जा क लेतै तखन मिथिला राज्य बनतै। एखन अहाँ सभ कमजोर नहिं करियौ। तर्क देल जाइ छैक जे स्त्री नौ महिना तक गर्भ धारण करै छैक ओ जरुर संतान कें जन्म दै छैक। मुदा आठ साल तक जँ उम्मीद पर नहिं उतरै छैक तँ लोक तर्क दै छैक जे एहि बेटा सँ पोता के उम्मीद केनै बेकार।

तर्क मे तथ्यपरक त्रूटि के अभाव सँ तर्क कुतर्कसंगत भ जाइ छैक। तर्क के विरुद्ध देल गेल तर्क वितर्क होइ छै। दुइ तरह के तर्क होइ छैक। एक तँ स्वयं के बुद्धि विवेक विचार आ अनुसंधान के द्वारा आ दोसर कोनो आओर लोक सँ सुनल गेल आ पहिने के जे कोनो काज भेल अछि ताहि के अनुमान पर पर तर्क। कोन काज नीक आ की बेजाइ हेतै ओहि पर तर्क के द्वारा सामंजस्य स्थापित होइ छैक। ज्ञान के द्वारा उदाहरण के द्वारा अभिव्यक्त करब तर्क होइ छैक।

मनुष के जीवन मे तर्क देब स्वाभाविक प्रक्रिया छैक। तर्कसंगत तर्क सँ वितर्क करै वाला कें आत्ममुग्ध क दै छैक। तर्क सँ लोक सिखै छैक जे विरोधी के गप्प कें कोन तरहें मुल्यांकन हेबाक चाही। तर्कसंगत तर्क सँ लोक विरोधी कें अपना पक्ष मे मोड़ि लै छैक। तर्क के द्वारा लोक सम्माननीय तरिका सँ आलोचना सेहो करै छैक जाहि सँ सामने वाला कें कचोट नहिं पहुंचे। तर्क जखन कुटिलतापूर्ण तरिका सँ देल जाइ छैक तँ समस्या के समाधान मे जटिलता आबि जाइ छैक। एहि लेल लेल तर्क मे तथ्यपरक गप्प कें मुल्यांकन करैत सतर्क रहला सँ भविष्य के बाट सुलभ आ सुंदर रहै छैक। तर्क वितर्क मे सतर्क रहला सँ परिस्थितिक समाधान कें संभावना बनल रहै छैक। तर्क के प्रबलता सँ सबलता दृष्टिगोचर होइ छैक। होइहि सोइ जो राम रची राखा। को करि तर्क बढ़ावै साखा।। तथापि सभ गप्प जानितो लोक। तर्क वितर्क करैत रहल अछि आ करैत रहत।



सून गामक घर....

✍ अशोक झा

कोनो दिन भोरे उठि कऽ एक बेर अहि गप्प के भाँज लगेबै जे गामक कतेक घर मे हमरा लोकनिक अगिला पीढिक बौआ सब रहि रहल छथि? कतेक बाहर निकलि कऽ नोएडा, गुड़गांव, पूना, बेंगलुरु, चंडीगढ़, बॉम्बे, कलकत्ता, मद्रास, हैदराबाद, बड़ौदा जेहन पैघ शहर मे जाऽ कऽ बसि गेल छथि? एक बेर ओहि गली मुहल्ला सऽ पैदल निकलि कऽ जाऊ जाहि दने हमसब बचपन मे स्कूल जाईत काल दोस्त यारक संग मस्ती करैत निकलैत छलौ।

कनी गौर सऽ ओहि घर के निहारु हर घर मे एक चुपचाप सुनसानियत भेटत, न कोनो आवाज, नहि कोनो बउआ के हो हल्ला या कननाई आ खिलखिलेनाइ के आवाज, बस कोनो कोनो घरक बाहर या खिड़की मे आबैत जाईत लोग के निहारैत बूढ़ आवस्ये भेँट जायत।

आखिर सून होईत घर आंगन खाली होईत टोलक टोल के कारण की अछि?

भौतिकवादी युग मे हर व्यक्ति चाहैत अछि जे हुनका एक बच्चा आर बेसी सऽ बेसी दु गो संतान हो आर हुनकर संतान निक सऽ शिक्छा प्राप्त करैथ।

अभिवाक के लागैत छैन या फेर हुनकर ईस्ट मित्र हुनका महसूस कराबय लागैत छथिन जे गाँव या छोट शहर मे बच्चा के पढेला सऽ हुनकर संतानक कैरियर खराब भऽ जेतैन या फेर बच्चा बिगरि जेतैन। बस अहि ठाम सऽ पैघ शहर या होस्टल दिस संतान के डेग बढ़ा देल जाईत अछि।

दिल्ली आर छोट गाँव या छोट शहर मे ओहि क्लास के सिलेबस आर पोथी एक्के कियक नहि हो मुदा अभिवावाक मानसिक दबाव आवि जाईत छथि जे हुनका संतान के पढेवाक लेल शहर मे भेजवाक छैन।

हालांकि अतेक बाहर भेजला के वावजूदो मुश्किल सऽ 1 बच्चा IIT, PMT या CLAT वगैरह निकालि पाबैत अछि..। फेर ओ माय बाप बाकी बच्चा के पेमेंट सीट पर इंजीनियरिंग, मेडिकल या फेर बिजनेस मैनेजमेंट मे दाखिला कराबैत छथि। 4 वर्ष बाहर पढ़ैत पढ़ैत हुनकर संतान पैघ शहरक माहौल मे रसि बसि जाईत छथि आ ओतै अंतरजातीय विवाह के संग चाकरी ढूंढि लैत छैन। संतान के बाबू के तऽ विवाह के लेल हां तऽ करहे परतैंन, अभिवाक के अपन इज्जत बचेवाक रहैत छैन कारण विवाह तऽ हुनकर संतान अपन इच्छित प्रेमिके संगे करता।

आब तऽ एहन बाबू भैया पावनिये त्यौहार मे माय बाबू सऽ भेंट करवाक लेल घर आबि सिर्फ औपचारिकताक निर्वाहण करैत अछि। विडंवना तऽ ई अछि जे संतानक अहि व्यवहार के बारे मे माय बाप सब के गुमान सऽ बताबैत छथि। दु तीन वर्ष धरि संतानक पैकेज के बारे मे बजैत छथि अहि तरहे एक दु वर्ष आ किछु वर्ष बीत जाईत अछि। माय बाबु बूढ़ भऽ रहल छथि। हुनकर संतान लोन लऽ कऽ पैघ शहर मे लैट लऽ लेने छैन।

आब अपन लैट छैन तऽ फगुआ, दसमी, दियावाती, छठि, कोजगरा या आन पावनि मे एनाइ गेनाई सेहो बंद। आब तऽ कोनो जरूरी विवाह दाने मे बाउ आबैत छथि बउआ के वापसी टिकट संगे रहैत छनि। आब तऽ विवाह बेंकटहाल मे होईत अछि टोल परोस मे आर घर जेवाक कोनो जरूरिये नहिं पडैत छैन। होटले मे रहि लैत छथि।

हाँ विवाह दान के समय अगर दियाद सर संवन्धी या ईस्ट मित्र अगर ई पूछि लैत छथिन जे की हौ आब तऽ बहुत कम आवैत जाईत छऽ घड़ गाँव मे? बस रटल जबाब हाजिर रहैत छैन गामक माहौल आर बच्चा लोकनिक पढ़ाई मे व्यवधान गाँव के महौलक उलहन देता जे गाँव घड़ मे आब रखले की अछि? खैर, बेटा अपना परिवारक संग शहरक लैट में रहैत छैन। लैट में तऽ अतेक जगह रहैत नहि छैन जे बूढ़ ओकासी करैत बीमार माश बाबु के संग मे राखल जा सकैक। बेचारा पड़ल रहैत छथि अपन बनायल या साविक पैतृक मकान मे।

कोनो कोनो संतान तऽ अभिताभ आ हेमा मालिनी अभिनित बागवान सिनेमा जंका अपन मां बाप के आधा-आधा रखवाक लेल सेहो तैयार नहि होईत छथि। आब साहब सब, घर खाली खाली, मकान खाली खाली आर धीरे धीरे टोल खाली भऽ रहल अछि। आब कुकुर मुत्ता "प्रॉपर्टी डीलर लोकनिक गिद्ध नजरि ओहि खाली परल गाँव के जमीन पर पडैत छनि आ वो बाबू भैया के घुमा

फिरा कऽ गाँव परका जमीन के रेट बुझेनाई शुरू करैत हुनका लोकनि के गणित बुझावैत छैन जे गाँव परका जमीन बेच कऽ शहर मे लेल गेल लैटक लोन खत्म कयल जा सकैत अछि आ दोसरो एक टा लैट लेल जा सकैत अछि। अहि तरहे बेटा आ पुतहु पापा आ मम्मी जी के पैघ शहर मे रहिश्क आराम आ मजा सऽ रहवाक सपना देखा कऽ मकान बेचवाक लेल हुनका लोकनि के तैयार कऽ लैत छनि। अखनो UPSC, CIVIL SERVICES के रिजल्ट उठा कऽ देखु, सब सऽ बेसी लोग गाँव के छोट स्कूल सऽ उतीर्ण भेल भेटत। बस मोन के वहम अछि। हमरा जेहन लोगक मोन में ई रहैत अछि जे बेटा भले हकतौ लैट खरीद लेथि, मगर हम रहब तऽ अपन ओहि गांव मे अपना लोगक बीच मे मुदा बुद्धिजीवी अभिजात्य हितकारी लोकनि उपदेश दैत बुझाबय आवि जेता आर कहता ''अरे पागल भऽ गेल छी अतय परल छी, अहि ठाम की राखल अछि?''

गिद्ध जंका हुनको लोकनि के नजरि गाँव परका खेत खरिहान के बिकेवाक इंतजार मे रहैत छैन, बस सोझा सोझी ओ कहि नहि सकैत छथि। ई मॉल, ई पैघ स्कूल, ई पैघ टॉवर वाला मकाने सऽ तऽ जिन्दगी नहि चलैत अछि। एक वक्त बुढ़ापा ऐना आवैत अछि जखन आँहा के अपन लोक जरूरत होइत अछि जे अपन गांवें मे भेंट सकैत अछि, लैटक रेजीडेंट वेलफेयर एसोसिएशन मे नहि।

कोलकाता, दिल्ली, मुंबई, पुणे, चंडीगढ़, नोएडा, गुड़गांव, बेंगलुरु मे देखल अछि जे ओहि ठाम मृतक के शव चारि कन्हा पर नहि बल्कि एक खुजल गाड़ी के बीच कांच के केबिन मे, सीधा श्मशान जाइत अछि, जाहि ठाम हुनकर बेटा के अपन संसारक दोस्त यार आ प्रवासी एक दु टा रिश्तेदार बस...आर सब किछु खत्म....

भाईसाहब ई खाली होईत गाँव आ गाँव के मकान, ई लोकविहिन टोल के सिर्फ प्रोपर्टीक नजरि सऽ नहि देखिए, बल्कि जीवन की खोती जीवंतता की नजर से देखु। हम सब दियाद विहीन भै रहल छी। हम सब अन्हार दिस डेग बढ़ेने जा रहल छी। कियो हाटन डांटन देबय वाला नहि अछि। सून परल टोल घर आई बाबू भैया कमौआ पुतक बाट निहारि रहल अछि.. बंद केवाड़ बजा रहल अछि .... मुदा कियो आवि नहि रहल अछि।

रुभूपेन हजारिकाक ई गीत याद आवि रहल अछि-
गली के मोड़ पे.. सूना सा कोई दरवाजा
तरसती आंखों से रस्ता किसी का देखेगा
निगाह दूर तलक.. जा के लौट आयेगी
करोगे याद तो... हर बात याद आयेगी।

अध्यक्ष मिथिला विकास परिषद, कोलकाता

■



मिथिलाक उपासनामे एक मात्र सर्वमंगला श्रीसीता

✍ उमेश नारायण कर्ण (कल्पकवि)

सर्वमंगलये मांगल्ये शिवेसवार्थ साधिके!
शरण्ये त्रयम्बिके गौरी नारायणी नमस्तुते!!

मिथिलाक रत्नगर्भा धरती पर कतेको ऋषि-मुनि, संत-महात्मा, चिन्तक, साधक, विचारक सभक अन्वेषण होइत रहल अछि। एहि ठाम देवी-देवता सभक आस-पास रहल अछि। ई शक्ति उपासनाक केन्द्र रहल अछि। कोना? किए, के? कतय? कखन? एहि घुरिआइत प्रश्नक उत्तर पाबि साधक बनी, तपस्वी ऋषि ब्रह्मर्षि बनी।

मिथिलामे शक्तिपूजा अर्थात् दुर्गा, काली, भवानी, तारा, लक्ष्मी, सरस्वती सभक पूजा अदौं सँ अद्यतन होइत रलह अछि ओ गयापत्यादि पंचदेवताक आह्वाहनक संगहि। ई धूरी श्रीसीता थिकीन। एहि विषय पर विचार करबाक लेल मिथिलाक अंत कथाक अवलोक करी।

श्रीसीता केँ सिरध्वज जनक हर जोतैत काल मॉटिक घैल कोटामे पौलनि ओ भूमिजा भेलीह। सिराउरसँ प्रस्फुटित होयबाक कारणे नाम सीतसँ सीता पड़ल, लोक श्रीसीता बुझलनि। यैह विदेहराज जनक नन्दिनी जानकी महामाया स्वरूपा वैदेही छथि। अखमुक परमहंस स्वामी चिदात्मनजी महाराजक अनुसारें श्रीसीता विजय लक्ष्मी, साम्राज्य लक्ष्मी ऐश्वर्य लक्ष्मी, माधुर्य लक्ष्मी अर्थात् ऋद्धि-सिद्धी नवनिधि देनिहारि छथि जे अनुपम प्रेम, अनुपम सौन्दर्य, अनुपम त्याग, सभक त्रिवेणी संगम पर ठाढ़ि छथि- ''सो जाने जेहि देहू जनाई, जानत तुमहि तुमहि होइ जाइ।'' सीता आ राम दुनू अभिन्न छथि, एक चान दोसर चमक जे अभेद अछि जेना शरीर आ आत्मा केर सम्बन्ध होइछ। फलतः बुझाइए- ''सियाराम मय सब जग जानी, करतहु प्रणाम जोहि युग वाणी।''

कनिञ् पुण्य प्रतापी राजा मिथि दिशि देखी। भविष्य पुराण सँ ज्ञात भेल अछि जे अयोध्याक महारा मनुक पुत्र निमि एहि यज्ञ भूमि पर आबि अनुगृहित भेलाह आ एहिठामक ऋषि लोकनिक तप आ यज्ञ सँ लाभान्वित भेलाह। निभिक पुत्र मिथि अपन पराक्रम सँ एहिठाम नगरक निर्माण केलनि जे मिथिला नाम सँ प्रसिद्ध भेल। ई कव्य जाइस जे पुरी निर्माता होयबाक कारणे मिथिलाक दोसर नाम जनक राखल गेल। द्रष्टव्य अछि भविष्य पुराणाक पाँति-

भिने! पुत्रस्तु तत्रैव मिथिर्नाम महान स्मृतः।
प्रथमं भुजबलैंयेन तैरहतस्य पाश्वतः।
निर्मित स्वीयनाम्ना मिथिला पुरमनभम्।
पुरीजनम सामर्थ्याजनकः सद्यः कीर्तितः।

अन्तमे बाल्मीकि रामायण देखल जाय राजाऽभूतिषु लोकेषु विश्रुतः स्वेनकर्मणा निमिः परमधर्माया सर्वतत्व बतौवरः। तरयपुत्रौ मिथिलीय जनको मिथिपुत्रक छथि। जखन वशिष्ठ यज्ञाभिलाषी निमिक निमंत्रण अस्वीकार कय इन्द्रक पुरोहिताइ करबाक हेतु स्वर्ग गेलाह तखन वशिष्ठ अनुपस्थितिमे भिशु अनि अन्यान्य ऋषि मुनि लोकनिक सहायतामे निमि अपन यज्ञाक संपादन केलनि। स्वर्ग सँ घुरलाक बाद वशिष्ठ यज्ञ कार्य संपादित भेल देखलनि ओ क्रोधाग्निमे धधकैत राजा निमिकेँ ''विदेह'' होयबाक श्राप देलनि। वशिष्ठ श्राप सँ सगरो हाहाकार पसरि गेल। प्रजा सभक घबराहटि देखि उपस्थित ऋषिगण निमिक मृत शक्ति केँ मथनाह। अयला उत्तर प्राप्त शरीरक नाम मिथि भेल। मिथि राजाक नामे मिथिला काल। तखन एहन सुन्दर नगर मिथिला सँ प्रसिद्ध भेल जकर नाम पूर्वहि विदेह राज छल।

श्रीमद्भागवत देखी- अन्यथा ''जनकः सोऽभूर्द्धे दैवस्तुः विदेष्यः मिथिलोमधनाम्नातो मिथिला येन निर्मिता।।''

देवी भागवतर्या ज्ञात होइछ जे निमिक उन्नैसम पीढ़ीमे राजर्षि सिरध्वज जनक भेंट पश्चात जनक वंश अपन भय विदेह भेलाह न्यासारी अपन पुत्र सुकदेव केँ तपश्चर्या लेल बाहर अयबाक आदेश नञि देलनि। ओ जनक के ब्योंता दैत घरमे एहि तप करबाक उपदेश देलनि सुकदेवक बुद्धिमता देखि न्यासहि हुनका जनबाक ओतय पठा देलहि। एहन कतेको ब्योंत अछि मुदा यैह अपेक्षित बुझना छैक।

एहि अभ्यान्तर में विषयान्तर बुझना आइए परसु के संदर्भित कथा बुझव आवश्यक जे देखल गेल। पुनः हम सर्वमंगला श्रीसीता दिश घुरैत छी।

सर्वरूपनयी देवी सर्व देविमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपा तो नमामि परमेश्वरीय।।

शक्तिक ज्ञान वेद सँ होइत अछि। सृष्टि आदि ग्रंथ वेद थिक जे अन्हारसम् मन्मतर बेर द्वापरमे महषि वादुरायण द्वारा चारि भागमे विभक्त क्षेत्र वो यैह प्रयास भेलाह। ऋग्वेद सँ ज्ञान

योद्धा यजुर्वेद सँ धर्मयोग ज्ञान सँ सामवेद सँ भक्तियोग एवं अथर्ववेद सँ तीनू वेदक समन्वय कार्यसिद्धि हेतु कर्मकाण्ड भेल। एक मात्र शक्ति निर्विकार निराकार रूप सर्वव्यापी अछि जे वस्तुमे जब शक्ति आ चैतन्ये चैतन्य रूपमे विद्यमान रहि सम्पूर्ण ब्रह्माण्डक सतहि प्राण महाशक्ति अछि।

आध बाल्मीकि रामायण देखल जाए-

सत्यमेक पदं ब्रह्म सत्ये धर्म प्रतिक्षितः।
सत्यमेवाक्षमा वेदाः सत्येनावाप्यते परम्।।

यैह अद्भुत सत्य ओ धर्म केर वो संज्ञामय भारतीय चिंतनक घर अछैए। भारतक प्राणाधार धर्म जकर मुख्य उद्देश्य थिक- आत्मकल्याण, लोक कल्याण भावना। श्रीसीता जगतक उत्पत्ति, पालन तथा संहार करयवाणी आध शक्ति थिकीह। यथा-

उत्पत्तिस्थिति संहारकारणी सर्व देहिताम्।
सा सीता भगवती रोधा मूल प्रकृतिसंजिता।।

(श्रीरामपठनीय-चतुराई)

क्षितिज कैर पार यात्री नागार्जुन -

एक विज्ञापनक माध्यम सँ जनतब भेलन्हि जे सहारनपुरमे एकटा बंगाली अध्यापक केँ प्राकृत भाषाक लेल शिक्षक केँ प्रयोजन रहन्हि। ई प्राकृत आ बंगला भाषा सेहो जनैत रहलाह। हिनक आवेदन स्वीकृत भेलन्हि पचास टाका मासिक आवासीय सुविधा संग पाबि रहलाह। घर घुरबाक यात्रा व्याति पटियाला, लाहौर, फिरोजपुर, अबोहरक यात्रा करैत यात्री बनल आजीवन यात्रिए बनल रहलाह।

जखन माइक ममत्व जगलन्हि तँ किछु रचना 'विदेह' नामसँ प्रकाशित भेलनि। ओ काशी प्रवास काल हस्तलिखित पत्रिका 'सुधाकर'मे पहिल बेर विदेह नामसँ प्रकट भेलाह 1924ई. केर अगहनमे 'मिथिला' पत्रिका बैद्यनाथ मिश्र 'विद्यार्थी' नाम सँ कविताक संग दृष्टिगोचर भेलाह-

हे मातृभूमि अन्तिम प्रणाम
अहिबातक पालित फोड़ि-फाड़ि
पहिलुक परिचय सब तोड़ि-ताड़ि
पुरजन-परिजन केँ छोड़ि-छाड़ि
हम जाय रहल छी आन ठाम।
माँ मिथिले ई अंतिम प्रणाम।

(काशी नवम्बर, 1936)

मिथिलाक धुनाएल परम्परा भंजक बाबा बैद्यनाथ 'यात्री' छलाह। ओ बहुभाषाविद् बाबा संस्कृत, मैथिली बंगला आ हिन्दी भाषा पर पूर्ण अधिकार संयोगने विविध विधामे साहित्य सर्जना ओ कयलन्हि। संगहि पाली, प्राकृत, सिब्ली, पंजाबी, सिन्धी, तेलगू, उर्दू सभ भाषाक प्रकाण्ड विद्वान छलाह। मैथिलीक व्यंग्य कथा सम्राट प्रो. हरिमोहन झाक एहि पाँतिमे घटक लेखें बताह जिनक रचना मरखाह से देखि आनन्द विभोर होयब-

लाख देश-विदेश घूमह पाबि नित सत्कार
लाख क्रान्तिक गीत गाबह दूत बनि साकार
लाख जागृति कर फूँकहे शंख बारम्बार
लाख कविता मध्ये तोँ वर्षा करह अंगार
किन्तु अपना घरक लेखेँ तोँ प्रचण्ड बताह
पंडितक लेखेँ तोहर रचना परम मरखाह।

आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रवर्तक सुविख्या पोथी 'चित्रा'' आ 'पत्रहीन नग्न गाछ'' केँ निरपेक्ष रूपमे देखल जाए तँ संस्कृतक श्लोक अभरैत अछि-

पुरा कवीनां गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालीदास।
अद्यापि तत् तुल्य कवेरभावात् अनामिका सार्थवादी बभूव।।

क्षितिज केर पार यात्री-नागार्जुन-

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली सँ श्रीमान् विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी दिनांक 12 अक्टूबर 1911ई.मे पंडित चन्द्रनाथ मिश्र अमर केँ महत्तर सदस्यता-अर्पण समारोहमे अपन वक्तव्यमे कहलथिन्ह- ''साहित्य का इतिहास न केवल अमर होता है, बल्कि प्रामाणिक भी होता है। इतिहास मिथ्या हो सकता है पर साहित्य नहीं। साहित्य का इतिहास कभी झूठा नहीं हो सकता। साहित्यकार भाषा को चार्ज करते हुए अपने समय को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ट्रान्सफर करता है।''

त्रिपाठीजी उपरोक्त कथानक यात्री-नागार्जुन केर मीमांसा कयल उत्तर प्रमाणित होइए। ओ युगधर्मक अनुरूप साहित्यिक अभिव्यक्ति देलन्हि। संवेदनशीलता कोना व्यक्तिक रचना संसारक मूल स्रोत होइछ। संवेदना रचना संसारक पृष्ठभूमि देखल जाए-

मा निषाद प्रति कान्त्यमगमः शाश्वतीसमा।
यत् क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोटितम्।।

यात्रीजी सत्यासत्य अकृत्रिम शैलीक अनुपम शिल्पी छथि। जिनगीक हिलकोर साहित्य सर्जनाक बिम्ब विधान प्रबुद्ध पाठक आ श्रोता सभक दृष्टिपथ पर रहिते छै, सामान्य श्रोता आ पाठकक सेहो ध्यानमे रहैत छै। ग्राम्य भाषा, शैली, छन्द, शब्द,

सूझ-बूझ संग्रहण क्षमता पर सेहो ध्यान रहैत छै। यात्रीक हृदयमे वंचित वर्गक प्रति संवेदनाक स्वर समाजक मुख्य धाराक अंग नहि बनल। जहिना जहिना समय गुजरैत गेल तहिना-तहिना यात्री प्रासांगिक होइत रहलाह। यात्रीजीक व्यापक रचना संसार 1942ई. सँ 1967ई. धरि धर्मोत्कर्ष पर रहलन्हि, हिनक रचनाक मध्याक काल खण्डमे पारो (1942) चित्रा (1949) नवतुरिया (1954) बलचनमा (1966) आ पत्रहीन नग्न गाछ (1967)क सृजन छन्हि जकरा विद्वान लोकनि ''त्रिकालजयी कृति'' कहलथिन्ह।

बाल विधवाक वेदना सन्निहित आक्रोश यात्रीजीक एहि पाँतिमे देखल जाए-

अगड़ाही लागउ बरू बज्र खसउ
एहन जाति पर धसना धसउ
भूकम्प होउक बरू फाटउ धरती
माँ मिथिले रहिऐ के की करती।

अबोध कन्याक विवाह बूढ़ वरक प्रति चित्कार ''बूढ़वर'' कवितामे देखल जाए-

जो रे राक्षस जो रे पुरूष जाति
तोरे मारलि हमरा सभ मरि रहल छी
किकिया रहल छी, कुहरि रहल छी
मोल लै छेँ हमरा तोँ टाका दऽ कऽ
जाइ अछि पानि जकाँ दिन हमर
जीवन भेल केहन कठिन हमर
ककरा की कहबै सुनत के आइ
फाटह हे धरती! समा हम जाइ!!

यद्यपि यात्रीजी मैथिली, संस्कृत, बंगला आ हिन्दी भाषामे रचना कयलन्हि मुदा 'विक्षोभ' रसक प्रवर्तक यैह भेलाह। डॉ. जयकान्त मिश्र कहै छथि- ''ओ (यात्री) भीतर सँ अन्तस सँ।

सर्वमंगला श्रीसीता-

मिथिला रामायण केर पुष्कर कांडक किछु पाँति देखल जाय- दशमुख रावणवध कय जखन राम गर्वान्वित भेलाह, तकर बाद सहस्रमुख रावणसँ पूर्णतः निस्तेज भेलाह।

अद्‌भुत श्वासा चलल सकाश, प्रलयकाल केर जेहन बसात।
सानुज रामहि सहित सहाय, एकहि बेर देल अडिआय।।
क्षणमे सबहिं अयोध्याधाम, पहुँचलाह सीता जेहिठाम।
ततय रामकेँ भए गेल लाज, मन-मन भेल कहबकी आज।।
राम पुनः युद्ध लेल तैयार होइत छथि सीताक संग।

सहस्रमुख रावणक तीक्ष्ण बाणसँ आहत पुष्पक विमान सँ मूर्छित भऽ खसि पड़ैत छथि। तखन वशिष्ठ मुनि सीता सँ आग्रह करैत छथिन जे ओ रामकेँ कष्ट सँ उबारबाक लेल प्रयत्न करी। तखनहि सीता अपन सामान्य रूप केँ त्यागि काली रूप धारण करैत छथि आ सम्पूर्ण असुरक संहार करैत छथि। सीताक एहि रूपकेँ शान्त करबाक हेतु स्वयं महादेव अबैत छथि। ओ उग्ररूप संहारिणी सीताक मार्गमे शषरकमे पड़ि जाइत छथि। जखन कालीक चरण शब पर पड़ैत छन्हि उग्रतारा रूप धयनिहारि काली जीह छचि लज्जित भेलि शिवसँ क्षमा याचना करैत छथि। राम सेहो सीताक ई रूप देखि चकित छथि। राम सीता सँ प्रार्थना करैत छथि-

कहलनि राम दुहूकर जोड़ि, भगवती ऐश्वर बपु दिअ छोड़ि
अपनेक ई अद्‌भुत तन घोर, देखि होइछ मन भयसँ घोड।।

हुनक स्तुति करैत जगदीश्वर कहैत छथि-

कायल सहस्रनामसँ राम स्तुति कालीक ललित गुणधाम।
तनिका सँ पुनि बारम्बार, विनय प्रणाम कयल सुविधाहि।।

किछु पाँति लालदासक 'जानकी रामायण' द्रष्टव्य अछि-

''करथि पालन नृपति वसुधा उदय अस्त प्रमाण से।
परम तेज प्रताप निर्भर रहथि हस्त कृपाया से।।
सतत् रक्षति रहथि से हरि दत्त चक्र सुदर्शनने
नहि शत्रु आदिक कतहु बाधा सुखित रह हरि दर्शने।।
पूर्ण अंश लक्ष्मी अहाँ राधा नाम प्रसिद्ध।
ऋद्धि-सिद्धि संग लय रहब ब्रजमे सहित समृद्ध।।
सुनि रानिक निःस्पृह कथा जानि तनिक अति दम्भ।
कयलनि कृष्ण प्रभासमे शुभ यज्ञक आरंभ।।

इत्यलम्

क्षितिज केर पार यात्री-नागार्जुन-

मिथिलाक साहित्यकार छलाह। ''मिथिलाक माटि-पानि केर ओ मूलतः जीवन्त कवि छलाह।'' यात्री नागार्जुन बनलाक बादो मिथिला आ मैथिली नहि छोड़लन्हि। मैथिली शब्दक घुरझाड़ प्रयोग-पीसी-पीसा, सिनुरिया, बौअनि, दनौड़ी, हॉव-पीछा, टंट-घंट, कनपट्टी, गोहुल्ला, गपसप, फुलडाली, कसाँझी, रेघा-रेघा, भगिनमान, घटकैंती, झिझिर कोना,, मूड़ी-मषोड़, झमटगर, नवगछुकी, कलमूँही, खा-पका, छुच्छी, टुकुर-टुकुर सन खाँटी शब्दक टाल लगौने छथि हिन्दी रचनामे। 'मातृभूमि' कविताक पाँति देखल जाए-

छी शरीरे दूर किन्तु अहींक
स्मरण सँ अछि भरल अन्तर्धाम
चिर प्रवासी एहि आत्मज केर
करब स्वीकृत अश्रु-सिक्त प्रणाम
होइ कोनो ठाम किछु भऽ जाइ
रही बहुतो दूर या नजदीक
बन्धुगण दुरदुराबथि किन्तु
जननी राखब भाव अहाँ जननीक।

यात्रीजीक कविताक बानगी बिम्ब विधान देखल जाय-

भुस्साक आगि जकाँ नहूँ नहूँ
जरै छी मने मन हमहूँ
फटै छी कुसियारक पोर जकाँ
चैतक पछुआमे ठोर जकाँ
कात रहै छी जनु धैल छुहतर।

आगाँ नवतुरक लोक केँ ललकारैत यात्रीजी कहै छथि-

पिछलओ नीक जकाँ सनातन आस्था
पाकओ नीक जकाँ
चेतन कुम्हारक नवका बासन
युग सत्यक आबामे
जुनि करी परवाहि बूढ़ बहीर कानक
टटका मंत्र छी
नवतुरिये आबओ आगाँ।

ईहो पाँति द्रष्टव्य अछि-

धन्य हे
श्रमशील मानव
विश्वभरिमे व्याप्त
धन्य तोहर जाति।
नरकके ँ सुरपुर बनएबाक लेल
सदच्छन तो ँ रहइ छह अपस्याँत।

नागार्जुनक रूपमे संकल्पसँ सिद्धि धरिक यात्रावृतान्त एहि पाँति सँ देखल जा सकैए- प्रतिबद्ध हूँ। सम्बद्ध हूँ। आबद्ध हूँ। प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ प्रतिबद्ध हूँ। बहुजन समाज की अनुपल। प्रगति के निमित्त।

क्षितिज केर पार यात्री नागार्जुन-

उमंग भरकर सिर के बाल
नोचने लग जाता है यह व्यक्ति
अपने ही सिर बाल
अकेले में बजाने लग जाता है सीटियाँ आए दिन।

बाबा बूढ़बाक वर्चस्व केर खिलाफ छथि। ओ नव पीढ़ी लेल आर नहि देबस चाहै छथि आ ने हुनक बाटक पाथर। एहि लेल ''दादाजी आप रिटायर हो।'' शीर्षक लेल देखल जा सकैछ।

आइने के सामने मंगल श्लोक पढ़छन्हि-

नमस्ते तु पियाचाय,
बैतालाय नमो नमः।
नमोबुद्धाय मार्क्साय
आयठाम च ते नमः।

नागार्जुन व्यंग्य बाण आगे देखल जाए-

''पूँछ उठाकर नाच रहे हैं लोक समाई मोर''

अंग्रेज आ काँग्रेस पर सधलनि निशाना-

''आओ रानी हम ढ़ोयेंगे पालकी''

मजदूर अर्थात् जन पर सशक्त कविता देखी नागार्जुनक-

''घाट, धर्मशालें, अदालतें, विद्यालय, बैछालय सारे
होटल, दतर कचड़खाने, मंदिर, मस्जिद, हाट, सिनेमा
श्रमजीवी की उस हड्डी से टिके हुए है, जिस हड्डी को
सभ्य आदमी के समाज ने टेढ़ी करके मोड़ दिया है।
कैसे जिएँ कठिन है चक्कर
निर्बल हम बलीन हैं मक्कर
तिलझन ताबड़तोड़ कटाकट
हड्डी की लोहे से टक्कर''

(फूल नहीं रंग बोलते हैं)

बढ़ गया है जीने से ज्यादा न जीना और आदमी है कि हँसना नहीं भूलता (आग का आईना)

हिन्दी कथा साहित्यमे नागार्जुनक भरल पेटारा अछि- (क) रतिनाथ की चाची (ख) बलचनमा (ग) नई पौध (घ) बाबा बटेसनाथ (ङ) वरूण के बेटे (च) दुखमोचन (छ) कुम्भी पाक (ज) उग्रतारा (झ) इमरितिया (ञ) पारो (ट) अभिनन्दन (ठ) गरीबदास (ड) आसामानमे चन्दा तेरे (कथा संग्रह) (ढ़) विद्यापति की कहानियाँ (अप्रकाशित)।

यात्री नागार्जुन विस्तार अनन्त धरि जकर पार पायब अत्यन्त कठिन। ओ अनन्त ब्रह्माण्डमे जो नहीं हो सके पूर्णकाम। मैं उनको करता हूँ प्रणाम। जो छोटी सी नैया लेकर। उतरे करने को उदधि पार। मन की मन में ही रही, स्वयं। हो ताए उसी में निराकार। उनको प्रणाम। ■

मिथिलाक सब सँ पुरान पारंपरिक वाद्य यंत्र अछि रसनचौकी

भारती झा

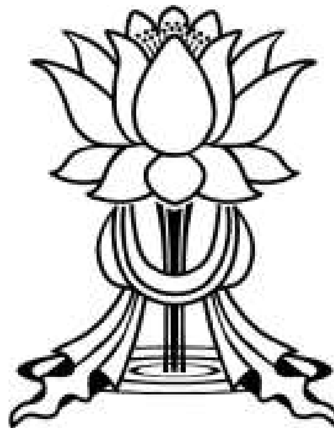
मिथिला पुरातन काल सँ कला, साहित्य आ संस्कृति के केंद्र पोषक रहल अछि। रामायण में उल्लेखित अछि जे जखन सीता धरती सँ अवतरित भेलीह त' वातावरण मे विशेष प्रकारक वाद्य यंत्र गुंजायमान भेल। ई लोकवाद्यक समूह ''रसनचौकी'' छल। सीताक जन्म सँ शुरू भेल अहि परंपरा के एखनहुँ मैथिली समाज मे आवाहन वाद्य यंत्र ओ आवाहन संगीतक रूप मे मान्यता प्राप्त छैक आ सामाजिक प्रयोग मे एकरा सहजहिं देखल जा सकैछ। एखनहुँ मिथिलाक समाजक विभिन्न जाति मे मान्यता अछि जे अनुष्ठानिक कार्य रसनचौकी वादन के बिना सम्पूर्ण नहि मानल जा सकैछ।

मिथिलाक एहि अमूर्त सांस्कृतिक विरासत 'रसनचौकी' कें 'फोक आर्केस्ट्रा' सेहो कहल जा सकैछ। एहि वाद्य के अपन अलग वैज्ञानिक प्रभाव सेहो निहित छैक जे वैज्ञानिक शोध मे सेहो प्रमाणित भेल अछि। मान्यता अनुसार रसनचौकी केर वादन सँ उत्पन्न ध्वनि सँ वातावरण में उपस्थित अनेको जीवाणु व विषाणु नष्ट भ जाइत छैक। संभवतः प्राचीन समाजक कर्मगत जाति व्यवस्था के अंतर्गत रसनचौकी लोकवाद्य के संरक्षण व संवर्द्धनक दायित्व जाति विशेष के आवंटित भेल छल। जाहि कारण सँ रसनचौकी एकटा जाति विशेषक उपक्रम बनि कश रहि गेल। समाज मे एहि जातिक स्थिति सदैव सँ उपेक्षित रहल, परिणामस्वरूप वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे एहि वाद्यक आ अहि वाद्य के बजेनिहारक स्थिति चिंताजनक बनल अछि।

सीताक जन्म सँ शुरु भेल ई परम्परा एखनहुँ समाजक व्यवहार मे देखल जा सकैछ। मिथिलाक लोकवाद्य रसनचौकी वादन कें प्राचीनतम लोक कलाक श्रेणी मे राखल जा सकैछ। रसनचौकी एकटा फुंकि क' बजबै बला वाद्य के नाम छैक। मुदा, एकर वादन लेल पाँच टा वाद्यक समूह अनिवार्य छैक। अहि मे फूंकि क' बजबै वला- कारा, सुर आ कतौ-कतौ पीपही आ पीटि क' बजबै वला मे तबली, डिग्गी, खुरदक आदि मुख्य अछि। बजेनिहार के आभाव वा वाद्य के आभाव मे रसनचौकी समय-समय पर रूप परिवर्तित करैत रहल अछि। ढोल-पीपही सेहो एकर एकटा रूप थीक। एकर वाद्य यंत्र पर कालांतर मे अनेकों प्रयोग भेल अछि। जाहि मे खुरदक, पीपही आदि देखल जा सकैछ। ढोल-पिपही बजबै मे मुख्यतया चारि टा कलाकारक आवश्यकता होइत छैक। ओतहि रसनचौकी लेल कम सँ कम पाँच गोटा। ओना आभाव मे ढ़ोल-पिपही तीनो गोटा मे भ' जाइत छैक। एकटा मत इहो अछि जे रसनचौकी के परिमार्जित रूप वर्तमान शहनाई थिक। ओना ई एकटा अलग आ गंभीर शोध के विषय थिक।

रसनचौकीक स्वर मे मुख्यरूप सँ मिथिलाक पारंपरिक आ अनुष्ठाणिक गीत सुनबा मे अबैत अछि। मुदा, कतहु-कतहु कलाकार सब मैथिलीक लोकगीत सेहो बजबैत छथि।





अत्यंत समृद्ध अछि मिथिलाक सांस्कृतिक विरासत

✍ दुर्गानन्द झा

मिथिलाक सांस्कृतिक विरासत अदौ काल सँ अन्य प्रांतक लोक लेल कौतूहल केर विषय रहल अछि। से किएक नहि हो! एतय अद्भुत सामाजिक ओ सांस्कृतिक परंपरा आइयो कायम जे अछि। एहिठामक लोक आइयो शादी-वियाह मे सैकड़ों वर्ष पुरान वैज्ञानिक पद्धति कें अपनेने छथि। एक दिस जतय संपूर्ण दुनिया मे वैवाहिक जीवन असफल भऽ रहल अछि, ओतहि अपन मिथिला मे अजुका भौतिकवादी युग मे सेहो वैवाहिक जीवन सोलह आना सफल अछि। एकर सफल होयबाक मुख्य कारण निर्विवाद रूप सँ मिथिलाक समाज द्वारा वैवाहिक संस्कार मे वैज्ञानिक पद्धति कें अपनायब अछि।

देखल जाय तऽ आइ लगभग सब शहर आ महानगर मे मैरिज ब्यूरो अथवा मैचिंग सेंटर के रूप मे अनेक व्यावसायिक संस्था खुलि गेल अछि जे वियाह योग्य वर-कनिया कें एक दोसरा सँ जोड़बाक काज धड़ल्ले सँ कऽ रहल अछि। मुदा, ओ एहि लेल अपना स्तर सँ कोनो जांच-पड़ताल नहि करैत अछि। ओतहि मिथिला मे अनेक सदी पहिनहुँ एहन संस्था कायम छल जे निरूशुल्क एहि तरहक काज करैत पूर्ण रूप सँ वैज्ञानिक पद्धतिअपनोबैत छल।

अपन मिथिला मे आइयो वर-कनिया केर मातृ व पितृ पक्ष केर सात पीढ़ीक बीच रक्त संबंधक ध्यान राखल जाइत अछि। समगोत्री यानी समान रक्त पाओल गेला पर वियाह नहि होइत अछि। जकरा आजुक चिकित्सा विज्ञान सेहो स्वीकार केलक अछि। ई परंपरा मिथिला मे आइयो निरंतर कायम अछि। एहि संस्था कें चलोनिहार मिथिला मे पंजीकार कहल जाइत छथि। यानी अजुका हिसाब सँ मैरिज 'रजिस्ट्रार' केर रूप मे मिथिलाक पंजीकार लग सैकड़ों वर्षक वंशावली दस्तावेज उपलब्ध अछि।

एही दस्तावेज केर मदति सँ वर-कनियाक बीच केर रक्त संबंधक पड़ताल कयला उपरांत वियाहक संस्तुति कयल जाइछ, जकरा सिद्धांत कहल जाइछ। वियाह सँ पूर्व वर केर स्वास्थ्य परीक्षण कयल जाइछ, जकरा परीक्षण यानी परिछन कहल जाइछ। एहि मे विभिन्न विधि केर माध्यम सँ वर कें रोगमुक्त होयबाक जांच कयल जाइछ।

परिछन काल विधकरी द्वारा वर केर नाक दबाके पकड़ल जाइत अछि, जकर उद्देश्य ई जांचब होइत अछि जे कहीं वर साँस आकि मिर्गी रोग सँ ग्रसित तऽ नहि अछि। संगहि एहि विध के दौरान वरक शरीर सँ सभ वस्त्र सेहो खोलवा देल जाइत अछि, जकर उद्देश्य चर्म रोग आदि केर जाँच करब होइत अछि। संगहि एहि विध मे वर केर मनोवैज्ञानिक जांच सेहो कयल जाइछ। एहि जांच में वर द्वारा असफल होयबा पर वियाह रोकि देल जाइछ। एहि जांच प्रक्रिया मे महिला लोकनिक संग हजामक भूमिका महत्वपूर्ण होइछ।

परीक्षण मे वर कें सफल भेला उपरांत वर आ कन्या पक्षक उपस्थिति मे वियाह कार्यक्रम संपन्न कराओल जाइछ। वियाह मे शामिल कन्या पक्ष यानी 'सरियाती' आ वर पक्ष 'बरियाती' कें शामिल होयब एक तरह सँ गवाह मानल जाइत अछि।

एतय सामाजिक ताना-बाना एतेक मजगूत होइछ जे बियाह भेला बाद संबंध विच्छेद केर कोनो कल्पनो नहि कयल जा सकैछ। कोनो ऊंच-नीच भेला पर एहि वियाह कार्यक्रम मे शामिल लोक आ घरक बुजुर्ग आपस मे बैसि समस्याक निदान कऽ ताकि लैत छथि। वैवाहिक कार्य संपन्न भेला बाद अमूमन एक वर्ष धरि नाना प्रकार के अनुष्ठान कार्यक्रम चलैत रहैत अछि, जाहि मे प्रकृति आ अग्नि कें साक्षी मानल जाइत अछि। संगहि एतुका गीतनाद परंपरा सेहो अद्भुत अछि। ई वर-कनिया कें एक दोसरा सँ जोड़ि के रखबा मे अहम भूमिका निभाबैत अछि। एकरा वर्तमान पश्चिमी सभ्यता के हिसाब सँ हनीमून कहल जा सकैछ। एहि दरमियान वर-कन्या एक दोसरा सँ एतेक भावुक रूप सँ जुड़ि जाइत छथि जे लगैत अछि जेना ओ दूनू बनले एक दोसरा लेल होथि।

मिथिलावासी प्रारंभहि सँ बहुत उदार रहलाह अछि। कहल जाइत अछि जे राजा जनक अपन बेटी सीता लेल स्वयं अपना योग्य वर चुनबा लेल स्वयंवर बजोने रहथि। यानी कन्या कें स्वयं वर चुनबाक अधिकार ओहू समय मे मिथिला मे छल। ई प्रमाण अछि जे मिथिला बहुत पहिले सँ महिला सशक्तीकरणक पक्षधर रहल अछि। एतय कहियो लिंग भेद नहि रहल। एहिठामक समाज सहिष्णुता केर सदति सँ परिचायक रहल। जखन कि दोसर दिस, आइयो देशक आन हिस्सा मे 'ऑनर किलिंग' केर घटना मे बढ़ोतरी भऽ रहल।

■

वैज्ञानिक रूप सँ प्रमाणित अछि मिथिलाक परम्परागत सामाजिक मान्यता

✍ कल्पना प्रवीण

मिथिला अदौ काल सँ ज्ञान, दर्शन, विद्या आ शांतिक जननी रहल अछि। वेदक धार्मिक भावना जा ब्राह्मण आरण्यक ऊँच विचार एकर देह रहल अछि, तें वेदान्त दर्शन एकर 'प्राण' आओर सादगीपूर्ण जीवन शैली ओ आडम्बरहीन ऊँच विचार एकर 'शील' रहल अछि। देखल जाय त' मिथिलाक सामाजिक चेतनामे एहि तरहक विचारक परम्परागत निर्वाह अनायासे नहि होइत आबि रहल अछि, अपितु ई वैज्ञानिक रूप सँ सेहो प्रमाणित अछि।

ईहो कम महत्वपूर्ण नहि जे मिथिलाक जनजीवनमे व्यक्तिक चरित्र- निर्माण, जीवनक परिशुद्धि आ आत्माक उन्नति लेल जाहि परंपरागत विभिन्न संस्कारक विधान अछि, ओहि सँ मनुष्यक शुद्धि आ ओकर शारीरिक, मानसिक ओ बौद्धिक परिष्कार सहजहिं सम्भव भऽ जाइत अछि। एहि विभिन्न संस्कारक माध्यमसँ मानव-जीवन मे भौतिक आ आध्यात्मिक आकांक्षाक गति द' एहि विघ्न बाधा सँ भरल संसार मे शान्तिपूर्वक सहज मुक्तिक बाट प्रशस्त करबाक प्रयास कएल जाइत अछि।

देखल जाय त' मिथिलामे सम्पूर्ण सामाजिक मान्यता सोलह संस्कारमे बन्हाएल अछि, जाहिमे गर्भाधान, मुण्डन, उपनयन, पाणिग्रहण आ मृत्यु अखनहुँ पर्याप्त मान्यता पौने अछि। मिथिलामे मानव जीवन कें पूर्णता प्रदान करबा लेल संस्कार कें आवश्यक मानल गेल अछि। एहि संस्कार सभक सम्पादन मे दू टा पक्ष विशेष रूप सँ देखबामे अबैत अछि-लौकिक आ याज्ञिक। लौकिक विधक अभ्यन्तर लौकिक सामाजिक व्यवहार सभ अबैत अछि आ शास्त्रीय याज्ञिक कर्ममे पुरोहितक हाथ यज्ञक सम्पादन कराओल जाइत अछि। मिथिलामे लौकिक-व्यवहारिक आ शास्त्रीय याज्ञिक कर्म दूहू मिलि एकाकार भ' गेल अछि, जकरा फुटकाएब असम्भव अछि। एहि विभिन्न संस्कारमे उपस्कर स्वरूप अग्नि, जल एवं मंत्र आदिके व्यवहारमे आनल जाइत अछि, जाहिसँ कि व्यक्तिक जीवन सँ अशुभक नाश भ' शुभक शुभागमन सहजहिं भ' सकय। मंत्रक उच्चारण, दण्ड धारण, पुरोहित द्वारा देवरूपमे आशीर्वाद प्रदान करब इत्यादिक उद्देश्य अशुभक नाश करब अछि। दोसर दिस पुरोहित द्वारा पाठ आदिक माध्यमसँ शुभ-शक्ति सभकें आमंत्रित कयल जाइत अछि। जाहि सँ कि मानव जीवन नहि केवल परिशुद्ध भ' सकय वरन, ओकरा सभ विघ्न बाधा सभ सं मुक्त के अधिक उन्नतिशील बनाओल जा सकय।

मिथिलामे गर्भाधान क्रिया कें अग्निहोत्र सदा पवित्र आ कल्याणकारी मानल गेल अछि। एहि गर्भाधान संस्कारक बाद संयमित यौन क्रिया, सात्विक जीवन-विधि आ विभिन्न तरहक आहार-विहारक नियमक अनुपालन द्वारा गर्भस्थ शिशुक समुचित विकास ओ तेजस्वी आ धार्मिक पुत्रक प्राप्तिक लेल समुचित वातावरण बनेबाक प्रयास कयल जाइत अछि। सन्तानोत्पत्ति के बाद छठियार होइत अछि। जकरा विषय मे मान्यता अछि जे सन्तानक जन्मक पश्चात् छठम् पीढ़ीक पितर, पितस्योनि सँ मुक्त भे देव-योनि कें प्राप्त कऽ लैत छथि। तत्पश्चात मुण्डन संस्कारक अन्तर्गत पितर सभक स्तुतिगान आ पूजाक द्वारा बच्चा केर भावी जीवनक विभिन्न बाधा सभकें दूर करबाक प्रयास कयल जाइत अछि। एहि अवसर पर आ प्रायः सभ मांगलिक अवसर पर गोसाउनि पूजाक अन्तर्गत पंचभागिनी, त्रिपुर सुन्दरी, दक्षिण कालिका आदि देवी सभक उपासना आ पूजाक माध्यमसँ मिथिलामे, भावी जीवनक अमंगल दूर हटएबाक प्रयास कयल जाइत अछि।

उपनयन संस्कारक सेहो मिथिलामे विशेष महत्व अछि। जकर अर्थ अछि- ''उपनयितं यस्य''। अर्थात् जकरा लगमे राखि के शिक्षा देल जा सकए। एहि संस्कारक अन्तर्गत गुरु बालक (बटुक) कें संस्कारगत रूप मे या प्रतिकात्मक रूप मे तीन दिन धरि अपन गर्भमे रखैत छथि आ तत्पश्चात चारिम दिन (रातिम दिन) बटुकक दोसर जन्मक कल्पना कयल जाइत अछि। ओहि दिन बटुक सर्वप्रथम अपन माय सँ मातृभिक्षा प्राप्त के विनीत भाव गुरु- सँ ब्रह्मज्ञान प्राप्त करवा लेल अग्रसर होइत छथि। उपनयन संस्कारक क्रममे बालकके केश मुड़ाए, होम तथा यज्ञक साक्षीमे गायत्री मन्त्रक संस्कार देल जाइत अछि।

मिथिलामे-वैवाहिक मान्यताक अन्तर्गत विवाह के मात्र शिश्नोदर संबंधक प्रतीक नहि, अपितु एहि संस्कारक द्वारा, पुरुष एवं नारीक बीच आध्यात्मिक मिलनक कल्पना कयल गेल अछि। प्रत्येक पतिकें सन्तानोत्पादनक काल ब्रह्मा, पालनक बेर विष्णु आ मार्गदर्शनक काल क्रोधावस्थामे शंकरक कल्पना कयल गेल अछि। ओहिना कान्याक लेल सरस्वती, लक्ष्मी आ कालीक कल्पना कयल गेल अछि। विवाहक क्रममे कान्या, मातृकाक पूजाक अन्तर्गत संतानक उचित पालन-पोषणक लेल प्रतिज्ञा लैत छथि। मिथिलामे ब्राह्मणक विवाहमे नैना जोगिनक पूजा कयल जाइत अछि जे कि शाबर तंत्रक पूजा अछि। एहि क्रममे ''शिरी'' शब्दक प्रयोग सेहो देखवामे अबैत अछि जे सम्भवतः ययुर्वेदक ''श्रीसूक्त'' सँ सम्बन्धित अछि। जकर कि ऐश्वर्यादिक तत्व लक्ष्मीक अर्थ ज्ञापन होइत अछि। कान्या निरीक्षणक बेर आमक पल्लवक प्रयोग एक दिस आमक सरसताक प्रतिफलन अछि तऽ दोसर दिस कामक भाव सेहो प्रदर्शित होइत अछि। कान्याक

लऽगमे बैसयवाली विधिकरीक द्वारा दहीक लेप लगएबाक परम्परा सेहो विहित अछि। जकर अर्थ होइत अछि ''सत्योद्र के भावनाक उत्मेष''। एतऽ विवाह के प्रजापतिक यज्ञक रूप देल गेल अछि। जहिना याज्ञिकक लेल नोन या उत्तेजनात्मक भोजन मना कयल गेल अछि। तहिना चारि दिन धरि घरमे रहि क अनोन भोजनक परम्परा यज्ञक पवित्रता कें कायम रखैत अछि। वर-वधूक पवित्रताक कल्पना ओहि चारि दिन धरि लक्ष्मी आ विष्णुक रूपमे कयल जाइत अछि। ओहि चारि दिनक महुअकक खीरकें सेहो अत्यधिक महत्व देल गेल अछि। इएह कारण अछि जे मिथिला मे एक लोकोक्ति प्रचलित अछि जे ''स्वसुर कुल निवासी स्वर्गतुल्यो नाराणाम।'' अंतमे चतुर्थीक बाद पति-पत्नीक दाम्पत्य-मूलक जीवन हवन एवं मंगल गीतसँ प्रारम्भ होइत अछि। एहि अवसर पर साँझ गाओल जाइत अछि, दीपवाती जड़ाओल जाइत अछि, पूजा कयल जाइत अछि। बादमे नागपञ्चमी, मधुश्रावणी इत्यादिक आध्यात्मिक भावनासँ नवपरिणीता ललनाकें पति भक्तिक दीक्षा देल जाइत अछि। पूरा सालो भरि गौड़ी-पूजन, वट सावित्री पूजा, नागक पूजा, तीज, फाग आदिक पारम्परिक उत्सव सभ पर आनन्द एवं उल्लासक गीत-नादसँ आनन्दातिरेकक निर्वाह कयल जाइत अछि। एतबहि नहि, सालोभरि एकादशीव्रत, रामनवमी, जन्माष्टमी, सोमवारी इत्यादिक व्रत धारण कऽ कऽ मैथिल ललना सभ सम्पूर्ण मिथिलावासीक जीवनकें आध्यात्मिक जीवनक प्रतीक बना कऽ राखि दैत छथि। मिथिलाक परम्पराक संदर्भमे पबैत छी जे लगभग सभ परम्परात्मक काज-त्योहारमे विभिन्न जातिक सहयोग लऽ अपन वैदिक सांस्कृतिक एकता एवं उदारताक परिचय दैत अछि। इएह कारणें विवाह में धोबिन, हजामिन, डोमिन आदिसँ सोहाग लेल जयबाक प्रावधान अछि। हजामिन कान्याक कानमे तीन बेर 'गो'-'गो'-'गो' कहैत अछि जाहिसँ तात्पर्य लेल जाइत अछि जे दाम्पत्य-जीवनक सफलता मन आ कर्मके पृथ्वीक अनुरूप उदार एवं सहनशील बनयवामे अछि। एहिमे 'गो' के क्रमशः तीन अर्थ मन, कर्म आ पृथ्वीक रूपमें कयल गेल अछि। बेटी सीता तथा गौड़ीक बाटक अनुसरण करबाक आओर पतिक उपासना राम आ शंकरक रुपये करबाक शिक्षा विभिन्न परम्परात्मक गीत सभक माध्यमसँ देल जाइत अछि। विवाहक विभिन्न रीति-रिवाजमे सेहो लोक मंगलक अखण्ड कामना तथा आध्यात्मिक चेतनाक भाव भरल पड़ल अछि। ध्यान देवक बात अछि जे मिथिलाक वैवाहिक परम्परा मे सरसताक प्रतीक आ कामक मादकताक प्रतीक आम-मौहक विवाह सेहो कराओल जाइत अछि।

मिथिलामे वेशभूषाक अन्तर्गत गृहस्थक लेल साँचीवाला धोती पहिरबाक विधान अछि जे कि एक निश्छल संस्कृतिक प्रतीक अछि। एहिमे डाँरमे लेपटायल धोती योनि तथा साँचीक उपरी भाग जे डाँरमे खोसल रहैत अछि जे शिश्नक प्रतीक अछि। मैथिल ललनाक साड़ी पहिरबाक ढंग सेहो ओही रूपक होइत अछि। एहि तरहें हम पबैत छी जे मैथिलक पहिरावा सेहो 'शैवागम' में प्रचलित भग-लिंगाकार उपासनाक प्रतीक अछि। एहिठाम ःकाम' के कोनो जड़ाबऽ वला वस्तु नहि वरन् उज्ज्वल भावक समागम कें ब्रह्मानन्द सहोदर सुख देबऽ वाला कहल गेल अछि। एही तरहें 'पाग'क सेहो अपन अलगहि महत्व अछि। 'पाग' मुख्यतया लाल तथा उज्जर होइत अछि। लाल पाग वैवाहिक अवसर पर 'वर' पहिरैत छथि। एहि प्रसंगमे दूटा भाव देखबामे अबैत अछि-पहिल प्रेम या अनुरागक अर्थमे ई कामना कयल जाइत अछि जे ब्रह्मज्ञानी 'वर' अपन गृहस्थ जीवनमे अपन सम्पूर्ण उज्ज्वल अनुरागक संग निष्काम भावसँ अपन पत्नीसँ प्रीति करताह। आ दोसर मान्यता ई अछि जे 'अमृत', आ 'सोम'क रंग लाल होइत अछि जे क्रमशः प्रजापतिक आत्मा आ भाव अछि। अतः प्रजापतिक आत्मा आ भावक समन्वयके पागमे देखएबाक प्रयास कयल गेल अछि। तहिना उज्जर पागक विधान सेहो अछि। जकरा कि मुख्यतः ब्रह्मचारी आ विद्वान धारण करैत छथि। एहि उज्जर पागक द्वारा हुनकर सत्व गुण परिलक्षित होइत अछि। वेशभूषाक दोसर रूप दोपटा, मिरजइ मा फराठी अछि। दुपटाक व्यवहार याज्ञिक चीवर ओ द्वितीय वस्त्रक रूप मे होइत अछि। तें मिरजइ एक प्रकारें महाश्वेत परब्रह्मक रहस्यवादक प्रतीक अछि जे जीवगत चेतनाक मायात्मक मोहपाशमे आबद्ध होइतो निस्संग रहैत अछि। दण्ड अथवा फराठीक अन्तर्गत जीवनक वैधानिक कर्मकाण्डक नियामकक रक्षाक भाव अछि।

मिथिलामे लोक आ वेद संगहि संग चलैत अछि। जखन कि बंगाल या दक्षिणमे 'तेना' अलग अछि आ 'वेद' अलग, मिथिलामे दुनू तरहक व्यवहार मिलिकऽ एकाकार भऽ गेल अछि। विभिन्न प्रकारक चतुष्कोण, षड्कोण, अष्टकोण, कमलदल आदि कोटिक अरिपने जे कि विभिन्न मांगलिक अवसर पर बनाओल जाइत अछि तकर संबंध तांत्रिक साधनासँ अछि। कहल गेल अछि जे स्त्री-पुरुषक शिश्नोदर संबंध भैरव-भैरवी आ शंकर-शाम्भवीक प्रतीक अछि। एहि तरहें हम पबैत छी जे मिथिलाक प्रत्येक क्रिया आध्यात्मिक आ सामाजिक मान्यताक परिपाटीमे बन्हाएल अछि।

■

गमलामे रोपल अछि मैथिली

✍ -हीरेन्द्र कुमार झा

मैथिली भाषाक इतिहासक गप्प हो तऽ हम सभ आठम शताब्दीक बौद्ध साहित्यक चर्यापद तक अपन जड़ि ताकि गौरन्वावित हुअ लगैत छी। से हेबाको चाही। परन्तु उनैसम शताब्दी तक कोनो स्थापित ग्रन्थ नहि भेटैत अछि। तखन हमरा लोकनि बोनमे जेना बाघ नहि भेटलापर ओकर पदचिन्ह ताकि अन्दाजऽ लगबैत छी जे आस पास कतहु बाघ हेबाक चाही। तहिना कहऽ लेल तेरहम शताब्दीक एकटा आधा-छिधा पाण्डुलिपि ''वर्ण रत्नाकर'' भेटलापर ओकरा आदि ग्रन्थ मानि लेल। नीक बात! मुदा तकर बाद? हँ की ओहि समय कतहु कियो किछु आओर नहि लिखलनि? आ तकर बाद फेर जाहि विद्यापतिक नामे हमरा लोकनि शान देखबैत छी गान करैत छी तिनकरो कोनो ग्रन्थ मैथिलीमे नहि अछि। हुनकर तेरहटा ग्रन्थक सूची छात्रके ँ रटबैत छी परन्तु छात्रके नहि कहि पबैत छिऐ जे विद्यापति ओतेक गीत कविता मैथिलीमे लिखलनि तऽ कोनो पोथी कियाक नहि लिखलनि? के उत्तर देत। स्वयं विद्यापति छथि नहि आ हुनकर लिखल आन आन भाषामे तेरहो ग्रन्थक उपलब्धता स्वयं उत्तर दैत अछि जे मैथिलीमे नहि लिखलनि कारण तहिया मैथिलीमे लिखब नीक नहि मानल जाइत रहै। ओना ओएह लोकके ँ प्रवचन देने छथि जे ''निज मातृभाषा सभके मिठगर लगैत छै।'' अर्थात तहियो मैथिलीक प्रति सैद्धान्तिक समर्थनेटा रहै। गीत लीखू, लोकक बीच सुनाउ, थौपड़ी लिय आ आगाँ बढ़ि जाउ। पुरूष परीक्षाक नीतिगत कथा पर्यन्तके ँ मैथिलीमे अनुवाद चन्दा झा कयलनि तऽ जन सामान्यके ँ हुनकर नीति शास्त्रक ज्ञान भेलनि।

से एखनो सैह हाल छै। मैथिली मैथिली अनघोल करू। मैथिली पाठशालामे पढ़ेबाक माध्यम हो, नौकरीक होमबला प्रतियोगिता परीक्षामे मैथिली माध्यम हो, मैथिली विषय हो परन्तु हम अपना नेनाके ँ अङरेजी माध्यममे पढ़ायब। हम मैथिली पत्रिका वा अखबार नहि कीनब अपितु ओकर बदला हिन्दी वा अङरेजीक अखबार कीनब। घरोमे नेनासभ सङ्ग हिन्दीमे गप्प करब परञ्च मैथिलीके ँ सरकार मान्यता दौक ताहि लेल चद्दरि बिछा अनसन आ धरना करब। मुदा मैथिली आनर्समे नाम लिखेबासँ छीह काटब। जे करओ से सरकार करओ हम किछु नहि करब। बिहारक सभ विश्वविद्यालय आ अन्तर स्नातक बोर्डमे मैथिलीक पढ़ाइक स्वीकृति छै, कमोबेश व्यवस्थो छै परन्तु छात्र पड़ायल फिरैत छै, से किया तऽ पोथीए नहि उपलब्ध होइत छै। पाठ्यक्रम बनौनिहार स्वयं सेहो छात्रावस्थामे टापा टोइया दऽ कऽ अपन नाह पार लगौने रहैत छथि परञ्च पाठ्यक्रम निर्धारणक समय फेर तेहने तेहने पोथीक सूची तैयार करैत छथि जे सभ प्रकाशनक कालेसँ अनुपलब्ध रहैत छै। तखन छात्र की करत? ओ ककरोसँ नोट उपरा परीक्षाक वैतरणी पार करैत अछि। सैह हाल संघ लोक सेवा आयोग आ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षामे शामिल होबऽ बला प्रतिभागीक होइत छनि। एकटा प्रतिभागीक टिप्पणी छल ''मैथिली पाठ्य सामग्री सङ्ग्रह आ सञ्चय मे जतेक फेदरति होइत अछि ततबामे तऽ आन कोनो विषय दू बेर तैयार कऽ लेब।'' से सत्ते एखन धरि कोनो प्रकाशन नहि अछि जे समुचित आ विधिवत पाठ्यसामग्रीक प्रकाशन कऽ दिऐ। आब एहनामे सुलभ रहितो लोक मैथिलीक उपयोग करबासँ हुसि जाइत अछि।

के करत ई काज? की सरकारे छापि देत पाठ्य सामग्री? सैकड़ाक सैकड़ा कथा आ कविता सङ्ग्रह छपैत अछि किया तऽ कदाचित साहित्य अकादमीसँ पुरस्कार भेट जायत वा नहि तऽ रहिका, पटना, राँची, दिल्ली वा हैदराबादसँ पाँच हजारसँ लाख टका धरिक पुरस्कार भेट जायत। मुदा छात्र कोना पढ़त, प्रतियोगी के ँ कोना तैयारी कयल हेतै ताहि लेल कोनो संस्थाके ँ कोनो सरोकार नहि। आ जखन जीवनमे मैथिलीक कोनो लाभ हेबे नहि करतै तखन रचनाकारगण जीवनमे एक दिनक लेल पाग दोपटा आ सम्मान पत्र लऽ मञ्चपर मुस्किएबाक चित्र देखि कतेक दिन खेपता?

कने आओर पाछाँ चलू। मिथिलामे कयक सय वर्षसँ पाठशाला रहल अछि। पहिने टोल पाठशाला होइ, फेर विधिवत संस्कृत पाठशाला सभ स्थापित भेल। आइयो हमरा लोकनि पैट घाट, लगमा आ नवानी सदृश संस्कृत पाठशाला आ कोइलखक चन्द्रानन्द मध्य अङरेजी विद्यालयक

गुणगाण करैत छी। सभठाम खाहे तऽ संस्कृत नहि तऽ अङरेजीक पढ़ाइ होइत छल। कतहु मैथिली माध्यमक पाठशालाक चर्च नहि सुनैत छी। सन 1960 तक तऽ पन्द्रह आना विद्यालय निजी नियन्त्रणमे छल। तखन कियाक नहि मैथिली माध्यमसँ पढ़ाइ कराओल गेल?

जखन कि दरभङ्गा सन मध्य मिथिलामे पिताम्बरी बङ्गला स्कूल बङ्गला माध्यमक पाठशाला ताही कालखण्डमे स्थापित भेल आ चलैत अछि।

से ततबे नहि मिथिला मैथिलीक गोष्ठी करब। आन्दोलनक लेल सभा करब आ मैथिलीक अखबारकेँ पर्यन्त हिन्दीमे लिखल समाचार पठायब। तर्क ई जे आन सभ अखबार तऽ हिन्दीमे छपैत छै। एकटा मैथिलीक अखबार लेल मैथिलीमे समाचार के बनाओत। जखन कि उनटा हेबाक चाहैत छल, समाचार मैथिलीमे निर्गत हुअ आ हिन्दीक अखबार अपना स्तरसँ हिन्दी अनुवाद कराकऽ छापय तखन ने बहादुरी।

उपर ऐतिहासिक कालसँ अद्यतनक विपरित व्यवहारक उदाहरण देबाक पाछाँ हमरा ककरो निन्दा वा उलहन देब नहि अपितु ई भान करेबाक अछि जे हमरा समाजमे मैथिली आरम्भेसँ लोकक आत्मासँ नहि जुटल अछि। लोकक मानसिकताक खेतमे मैथिली नहि उपजि रहल अछि। मैथिली किछु सौखीन लोकक मनक गमलामे रोपाकऽ महज सजावटी गाछक दर्जा पौने अछि।ध यान रहय हम मैथिली बोली नहि मैथिली भाषा साहित्यक गप्प कऽ रहल छी। मैथिलीक दर्जनो रूप सम्पूर्ण मिथिला जाहिमे आजुक प्रस्तावित मिथिला राज्यक क्षेत्र समाहित अछि, मे आदिकालसँ बाजल जाइत रहल अछि। ग्रामीण आ जनसामान्य निधोख मैथिलीक प्रयोग सहज आ स्वभाविक रूपसँ करैत आबि रहल अछि। मुदा तथाकथित विद्वत वर्ग विद्यापतिए कालसँ एकरा सार्वजनिक नहि विशिष्ट बनाकऽ रखलनि। उनैसम शताब्दीतक विद्वान मतलब संस्कृतक विद्वान होयब छल। फेर आरम्भ भेल अछि अङरेजीक प्रतिष्ठाक। एखनो लोक नेनाकेँ अङरेजी माध्यममे पढ़ायब अपन लक्ष्य रखैत अछि। आइ मैथिली ओएहटा पढ़ैत छथि जे स्वयं लिखैत छथि। हालक किछु वर्षमे किसिम किसिमक पुरस्कार आ सम्मानक प्रभावें लेखकक एक वृहद वर्ग पसरि अवश्य रहल अछि परन्तु पाठकक सङ्ख्यामे कोनो परिवर्तनक कोनो लक्षण नहि दृष्टिगोचर भेल अछि। एकटा विचित्र किन्तु सत्य तथ्य मैथिली प्राध्यापकक वर्गमे लक्ष्यित भऽ रहल अछि। सम्प्रति एहन मैथिली प्राध्यापकक बहुलता अछि जे पहिने विज्ञान, अङरेजी वा अन्य विषयक पढ़ाइ कयलनि परन्तु ओतऽ लक्ष्य सन्धानक सम्भावना क्षीण देखि सोझे स्नातकोत्तर स्तरमे मैथिलीक हाथ पकड़ि अपन जीवनक आधार अवश्य बना लेलनि परन्तु सर्वविदित अछि जे हारिकऽ मैथिलीक हाथ थम्हनहारक हाल ओएह अछि जे सौखे कियो अपना दलानपर गमलामे कोनो नीक फूलक गाछ रोपैत अछि। मैथिली बोली तऽ मध्यकालेसँ खेतक दूबि जेकाँ अजर अमर अछि तखन ने विद्यापति मैथिलीमे गीत रचलनि। परन्तु साहित्य नहि रचला।

से जँ मैथिलीकेँ बोलीक दर्जासँ बाहर करबाक अछि तऽ आब अपन अपन गमलासँ उखाड़ि पूरा खेतमे उपजेबाक उपक्रम करऽ पड़त। अन्यथा कालक्रमे जेना नव नव प्रकारक फूल भेटलापर लोक पुरना फूलक गाछकेँ गमलासँ उखाड़ि फेकैत अछि तहिना कालक्रमे लोक मैथिलीक बदला आन आन भाषाक प्रति आकर्षित होइत जायत आ फेर हमसभ कहबै मैथली एकटा भाषा रहै।

गायत्री निवास, न्यु काँलोनी,
शुभंकरपुर ड्योढ़ी, वार्ड संख्या 8
दरभंगा 846006
मो-8169003125

■

स्पेस मे मिथिला राज्य पर विहंगम चर्चा : विगत दुइ मास सँ निरन्तरता मे

✍ प्रवीण नारायण चौधरी

ट्विटर स्पेस पर झमटगर विमर्शः सन्दर्भ मिथिला राज्य विदित हो जे एडवान्स टेक्नोलोजी के युग मे 'सोशल मीडिया' के भूमिका मानव जीवन मे बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध भऽ रहल अछि। एहि क्रम मे ट्विटर स्पेस पर विगत दुइ मास सँ बेसी सँ दर्जनों वक्ता-श्रोता 'मिथिला राज्य' पर विमर्श केँ बढावा दय रहल छथि। हालहि एहि फीचर सँ परिचय पाबि मैथिली जिन्दाबाद के सम्पादक प्रवीण नारायण चौधरी द्वारा एहि महत्वपूर्ण चर्चा केर दस्तावेज आम पाठक लेल अनलनि अछि। आशा एवं विश्वास अछि जे ई दस्तावेज जन-जन मे विमर्शक महत्व केँ सोझाँ आनत आ संगहि स्पेस फीचर पर आर बेसी लोक जुड़ता आ अभियान सफल बनत।

काल्हि 19 सितम्बर 2022 के दिन #MithilaRajya पर कयल गेल चर्चाक महत्वपूर्ण अंश निम्न अछिः

1. मिथिला राज्य लेल जनभावना मे कमीक एकटा बड पैघ कारण छैक लोक मे राजनीतिक जनचेतनाक अभाव। अनुभव पंचायती चुनाव सँ लैत अन्य जनप्रतिनिधिक चुनाव के भेटैत छैक आ एहि मे बहुत पैघ भ्रष्टाचार, नोट आ पाउच (दारू) सँ लैत अन्य प्रलोभन पर वोट पाबि कोहुना पद पाउ आ 5 वर्ष धरि लूट मचाउ, चमचा पोसू..। -Pravin Narayan Choudhary प्रवीण नारायण चौधरी/PravinNChy

2. @guptahitendra हितेन्द्र गुप्ताजी वरिष्ठ संचारकर्मी छथि। मिथिलाक जनजीवन वर्तमान राजनीतिक अवस्था विषयपर ओ अपन विचार रखलथि जे पंचायती स्तर पर जाहि तरहें लोक चुनाव लड़ैत-जितैत अछि आ बाद मे ओ खुलेआम भ्रष्टाचार करैत अछि त लोक टोकियो नहि पबैत छैक३ कियैक त आपस मे विवाद कियो नहि चाहैछ।

संसद लोकनिक चुनाव भेलाक बाद हुनका सब द्वारा कोनो खास उपलब्धिमूलक काज नहि कय पबैत छथि। हुनका सभक विरूद्ध कतहु आवाजो उठायब त हुनका सब लेल धैन सन, उल्टा अपने मामा-फुफा आदि दिश सँ हमरा सब केँ चुप होयबाक उपदेश दय देल जाइत अछि। जाहि तरहक अपेक्षा लोक रखैत छैक से पूरा नहि होइत छैक।

3. @niteshjhaa नितेश झा कहलथि- लोक मे राजनीतिक जनचेतना लगभग शून्य छैक। सत्ताक राजनीति मे जनप्रतिनिधि लागल रहैत छथि, अपन क्षेत्र्क बड बेसी चिन्ता नहि कय पबैत छथि। कोनो पार्टी छैक, ओकर ध्वजाक नीचाँ ई जनप्रतिनिधि सब मथरल रहैत छथि। टिकट पार्टी देलक से बड पैघ कृपा कय देलक, ओकर विरूद्ध नहि जा सकैत छी।

जनताक हित आ ओकर सरोकार सिर्फ अलंकारिक रूप मे उठबैत छथि, लेकिन ताहि प्रति लागिकय काज कोना हेतनि ताहि लेल कोनो प्रयास नहि रहैत छन्हि। जनता सँ चुनल नेता कम आ पार्टी के कृपा पर बेसी टिकल हेबाक अन्तर्भान छन्हि हिनका सब लग। लोक वोट दय सँ पहिने कियो मेनिफेस्टो तक नहि देखैत छैक।

एखन धरि सामन्ती व्यवस्था कायम अछि। जा तक हम वैकल्पिक व्यवस्था नहि ठाढ़ करब, ई यथास्थिति आ हमरा सभक दमन-शोषण एहिना जारी रहत। जनता जे चुनलक तेकर महत्व नहि दय सिर्फ अपन पार्टीक झंडा आ नारा मे लागल रहनिहार सँ मुक्त होयब जरूरत थिकैक। समय के मांग यैह थिकैक। मिथिलावाद स्थापित हो।

4. @MaithiliChhaya 3 छाया ठाकुर जी अपन विचार अत्यन्त प्रखर स्वर मे यथार्थ मे भोगल अनुभवक आधार पर एना रखलीह दृ

नेता सँ सवाल कयलापर हुनकर आसपास के लोक आ समर्थके सँ जवाब भेटय लगैत छैक। नेता केँ जवाब देबाक भार पड़िते नहि छैक। कोनो नेता केँ नीको विजन देलापर-प्रोग्रेसिव आइडिया देला स पर्यन्त कोनो प्रभावकारी निर्णय आ काज नहि भ' पबैत छैक। हम एहि तरहक प्रत्यक्ष अनुभव कयलहुँ।

हम सब वोट देलियनि पलायन रोकय लेल, कुटीर उद्योग व अन्य उद्योग व्यवसाय तथा रोजगार के अवसर उपलब्ध कराबय लेल.... लेकिन हमरा सब केँ फुसलायल-ललचायल जाइत अछि नेताक वैह आसपासक लोक सब द्वारा सोलर लाइट अपना घरक आगू लगाबय लेल। एहि तरहक गलत बचाव नहि हेबाक चाही। संगहि जातिगत राजनीति बेसी छैक।

हमरा सभक नेता अपन पावर नहि बढ़ा केवल अपन शीर्ष नेता आ हल्ला-गुल्ला मुद्दा पर अपन सत्ता आ पद-प्रतिष्ठाक चिन्ता करैत रहैत छथि। बेसी जनता मूकदर्शक अछि। ई दुर्दशा आ दुःखक बात थिकैक। एहि सबलेल जोर-शोरसँ आवाज

उठेबाक अछि जे नेता जनसभा मे मैथिली बाजथि, नहि त जनसभा बन्द हुए, बहिष्कार हुए।

5. @ashutoshjhaji - आशुतोष झा जी छाया जी एवं अन्य वक्ता लोकनिक विचार सुनि स्वयं पहिल दिन जुड़बाक बात कहलनि, ताहि लेल माला झा जी केँ धन्यवाद सेहो ओ ज्ञापित कयलनि। पुनः @MaithiliChhaya 3 छायाजी के सुन्दर व्याख्या आ व्यवहारिक कठिनाई के समर्थन कयलथि। बाकी उपलब्ध वरिष्ठ सदस्य लोकनि प्रति अभिवादन करैत ओ कहलनि जे आजुक चर्चा काफी व्यापक विषय पर अछि, लेकिन हम अपन मन्तव्य कोनो अन्य विशेष प्रश्न पर राखि सकैत छी।

हुनक विचार सुनि @malajha99 माला झा जी हुनका सँ मिथिला राज्य पर बजबाक अनुरोध कयलीह- जेकर जवाब दैत श्री झा बजलाह जे मिथिला राज्य भारत मे काफी प्राचीन मुद्दा रहल अछि। सुगौली सन्धि के सेहो किछु भूमिका छैक। एहि मे काफी रास धारा जुड़िकय कार्य कय रहल छैक। हम राष्ट्रवादी विचारधारा सँ जुड़ल लोक छी आ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ छोट राज्य केर समर्थक रहलैक अछि। सैद्धान्तिक रूप सँ किछु होयबाक छैक से सक्रियता सँ हेतैक।

माला दीदी आशुतोष जी सँ सदिखन जुड़िकय युवा सब केँ मार्गदर्शन करैत रहबाक अनुरोध कयलीह।

6. @mishraraghavste- राघव मिश्र जी मिथिलाक्षर साक्षरता अभियानसँ जुड़ल व्यक्तित्व कहलनि जे कोनो काज जमीनी स्तरपर करबाक चाही। लिपिकेँ जागृत करयलेल छोट स्तरपर काज शुरू कयलहुँ जे आइ काफी विस्तृत स्तर पर चलि रहल अछि। जमीनी स्तर सँ संगठित होउ। एक-दोसर केँ प्रेरित करू। मिथिला राज्य के मुद्दा सँ सेहो जमीनी लोक केँ केना जोड़ब ताहि पर ध्यानकेन्द्रित करू। जड़ि के सिंचाई बहुत जरूरी छैक। अपना लोक संग अपने भाषा मे बजबाक जरूरत छैक। अपन लिपि आ निजता सँ सब के ँ जुड़य पड़तैक। हम संग छी। संग रहब।

7. @Yadav___Saab - एक गैर मैथिल लेकिन मिथिला राज्य के प्रबल समर्थक व्यक्तित्व आशीष यादव अपन विचार दैत कहलनि कि ओ नित्यानन्द जी व मैथिलजन द्वारा चलायल जा रहल मिथिला राज्य लेल स्पेस के समर्थन करैत छथि संगहि एहि मे जतय कतहु सहयोग करबाक जरूरत हेतैक ताहि लेल सेहो ओ प्रतिबद्ध छथि।

8. @Prakashjha709 प्रकाश झा जी कहलखिन जे कोनो भी बात के निगेटिव आ पोजिटिव दुनू पक्ष देखल जाइत छैक। वर्तमान समाज आ व्यवस्था मे जनप्रतिनिधि आ सत्ता संचालक के सम्बन्ध मे बात करब त ओहो सब अपने बीच के छथि। बिहार सरकार मगध के ज्यादा विकास करैत अछि, मिथिला के कम। पंचायत स्तर पर सेहो विभेद छैक। मुखिया-सरपंच द्वारा बहुत किछु दमन कयल जाइत छैक। समाज सुसंगठित रहिकय हिनका सब सँ काज नहि करबा पबैत अछि। तुच्छ लोभ आ गुटबाजी के कारण बहुत किछु रुकल-ठमकल छैक। सेक्टर मे लोक बंटि गेल अछि ताहि कारण एकरा सब केँ मौका भेटैत छैक।

9. @ShivanandChaud1 - सीए शिवानन्द चौधरी स्पेस चर्चा मे अपन विचार मूल विषय सँ कनेक हंटिकय रखलनि। ओ कहलखिन- सबसँ पैघ समस्या रोजगारके छैक। मिथिला मे उद्योग के कमी छैक। सालाना उत्सव मे सकारात्मक गतिविधि कम आ नकारात्मक बेसी होइत छैक। दुर्गा पूजा मे आर्केस्ट्रा आ बायजीक नाच, आदि हेतैक लेकिन उद्यमशीलता केना बढावा पाओत ताहि पर कियो ध्यान नहि दैत छैक। समाज जागरुक होयब आवश्यक।

10. @mabhgrank- कमलेश जी अपन क्रान्तिकारी आ प्रखर विचार रखैत कहलथि- पुरान बात केँ छोड़ि नव बात करबाक जरूरत छैक। पुरना बात कैँ बिसरि, दोसर पर आरोप-प्रत्यारोप बन्द कय, आगू लेल रोड मैप विकसित करबाक जरूरत छैक। पूर्व मे जे गलती भेलैक तेकरे टा चर्चा करय सँ नीक आगू कि हेबाक चाही ताहि पर बेसी विचार आबय आ सुधार के उपाय पर ध्यान जाय हमरा सभक।

11. @MaithilAnup- मिथिला स्टूडेन्ट यूनियन के संस्थापक अध्यक्ष एवं सक्रिय मिथिला राज्य अभियानी अनूप मैथिल सेहो विषय सँ हंटिकय आगामी योजना पर प्रकाश दैत बजलाह- गाम-गाम धरि जागरूकता अनबाक लेल 'मिथिला राज्य निर्माण यात्र' केर प्रारूप पर विस्तार सँ चर्चा कयलनि। निरन्तर 6 मास धरि कैरावान लयकय मिथिला राज्य वास्ते काज कयल जायत। एहि मे सब कियो जुड़ि सकैत छथि। लीड एमएसयू करत लेकिन सब संस्था आ व्यक्ति केर उदार हृदय सँ स्वागत रहत।

एकर अलावे सेहो देर राति 11:15 बजे धरि दर्जनों वक्ता लोकनि अपन विचार रखलनि आ सभक हृदय मे मिथिला राज्य निर्माण प्रति तीव्र युयुक्षा भरल छल से स्पष्ट होइत रहल।

एहि स्पेस के संचालक नित्यानन्द जी, नितेश झा निक्की जी, शेखर कुमार झा जी, रूपेश जी, सुधीर यादव जी सहित काफी लोक निरन्तर जुड़िकय सहभागिता दैत छथि। आइयो भारतीय समय 8:30 बजे सँ 10:30 लेल निर्धारित ई स्पेस चलत आ कहियो कोनो खास विषय पर त कहियो बिना कोनो निर्धारित विषय बल्कि सभक अपन विचार आ दृष्टिकोण लेल स्पेस संचालन कयल जाइत अछि आ एहि मे सब कियो जुड़थि ताहि लेल बेर-बेर अपील कयल जाइत अछि।

मैथिली जिन्दाबाद!!

संस्मरण

संबंध

✍ मणि आमारुपी

अन्हार गुजगुज रातिमे जोरसँ थारी पीटबाक आवाज भेलै। निस्सन अन्हरिया हाथकेँ हाथ नहि देखा रहल छलैक। अँगनोक' लोक सभ अपन अपन घरमे सीरकक शरणमे अपनाकें पूर्ण रुपेण समर्पित केने छलाह। ओहिनो गाम-घरमे लोक कनिक सकाले सुतैत छथि।

करीब नौ बाजल हेतैक, गामक हिसाबे कोनो कम समय नहि कहल जाय, ओहोमे पूसक राति, पुरुख-पात खेतीबाड़ीमे व्यस्त, एम्हर धान खरिहानमे, ओम्हर गहुमक तरद्दुत खेतमे, पूर्ण रुपेण बाझल, दिन भरिक जी तोड़ परिश्रमक बाद देह टूटल, थाकल-ठेहिआएलकेँ आरो की चाही, किछ पेटमे आ' कतौ गर लागि जाय देह सोझ करबाक। स्त्रीगण धानक उसिनियामे लागल, जन-मजदूरक पनपिआइमे लागल, फेर उसनल धानक लाड़ब-चाड़ब, मोनो असकताएल। ओहि बीचमे कखनो कालक' भैरवक भुकबाक आबाज सेहो सुनाइ दैत छल।

भैरव ओना त' कुकुरक नाओं छल, जहिने नाओं ओहिने संस्कार। कारी झमटगर कुकुर, नेपालसँ ककरो संग अपने चलि आयल छल, खूब लम्बगर झबरा। हमरे एहिठाम रही गेल छल अपन बनि। सभ नेना भुटकाक ओ संगे संग कलम गाछी जतय खरुहान ओतयै भैरव। सभक संगे खूब हिलल मिलल, बच्चो सभ ओकरे संगे मस्त।

दिनमे एकदम शान्त मुदा राति होयते मातरि ओ खूँखार, चिन्हलक त' पाएर चाटत, नहि चिन्हलक तऽबस नरेटी सीधे पकड़ि लेत आ' वैकुण्ठक रस्ता। ओकरासँ बचब बड़ मोसकिल, बुझू जे रामे रखबार। अनठिआ लोक ओकरा सँ बड़ डरैत छलैक, ककर मजाल जे बभनटोली रातिमे चलि जायत। दिनोमे बाहरी लोक ओकरासँ दूरे पड़ाइत रहैत छल। रातिकें असगरे पहरेदारी करैत छल पूरा टोलक, चोरो सभ ओकरा नाओंसँ सात कोस फराक,नाना नहि मरौ जे कियो ओकर सोंझा आओत। ओकर स्वभाबो बड़ विलक्षण, रवि दिनक त' गपे अलग, जेना महा पंडित, दीनानाथ दिनकरक सेवी, कोना खाएत एम्हर-ओम्हरक चीज वस्तु, काँट-कूस त' एकदमे ओहि दिन बारि दैत छल, जखन कि मैथिलक लेल कि रवि कि सोम, कि साओन आकि कार्तिक, कहिया एकादशी, जहिया भेटओ ग्रास क' लेब टटका कि बासि, ओहो अपना लेल थोड़बे, माछक' मोक्ष दियाबैक' खातिर खाइत छथि। मुदा भैरव अपन नियम कानूनपर डटल रहैत छल, किछु बितय, कतबो कियो दुलार करय, ओ टससँ मस नहि, नहि खाएब त' नहिए खाएब, दुनिया किछु करौ ओकरा लेल धनिसन, ओ अपन मोनक अपनहि मानिजन। गजबक लीला रचने छलाह भगवानो एकरा बनाबैमे, जे आन कुकुरसँ एकदमे फराक करैत छल, सात्विक गुणक संगेहि चाकपर विशेष माटिसँ बनौने छलाह बिधना, सौंस सोहारी ओकरा ज' खएबाक लेल देल जाइत छलैक त' ओ नहि खाइत छल, चुपचाप ठाढ़, जेना कहि रहल हो सायत हमर नहि थीक, दोसरक भोजन हम कोनाक' ग्रहण करब। घरबारी गलतीसँ राखि देने छथि, बस हमर काज त' ओगरबाही करबाक मात्र अछि, तेँ हम ठाढ रखबारी क' रहल छी। कोनो खएबाक वस्तु यदि फेकि क' कियो द' दैत छलाह ओकरा सोंझामे, खायब त' दूरक गप, ओहि दिस देखबो नहि करैत छल, जेना कहि रहल हो हम कोनो एहेन ओहेन छी, जकरा बिन पुचकारने खुआ रहल छी, हमरा सभगोटे त' दुलारक संगहि खुआबैत छथि, हम प्रेमक भूखल छी, पेट हमर हरदम भरले रहैत अछि सभक सिनेहसँ। हमर फेकल वस्तु दिस देखतो नहि छी, ओकर हमरा लेखे ढेला मोल। जे लोक ई गप बुझैत छलथिन, ओ तेँ ओकरा सोहारी तोड़िक' दैत छलथिन। किछु बीत जाए ओ केहेनो परिस्थितिमे ओसारापर नहि चढ़ैत छल, अँगनामे कोनटापर बैसल, बड़ भेलै त' ओलती धरि ओकर सीमान, जेना चहुँदिसक रक्षाक भार ओकरे माथे।

सरिपहुँ बुझू त' साक्षात देवांश छलैक ओकरामे, एतेक गुण सायते कोनो कुकुरमे होएत हेतैक, हमरा जनैत। हमर अँगनाक कोनटापर भैरव आबि गेल, ओ भुकि रहल छल, मुदा ओकर भुकबक बिचमे एकबेर फेर कियो थारी पीटलक। लगैत छल जेना भैरवक भुकब आ' ओकरा संगेहि ताल देबाक लेल थारी पीटब, नीक संगीतक बोध करा रहल छल। पहिल आवाजक बाद निशब्द फेर कनेक कालक पश्चात फेर वैह आवाज सुनाइ पड़ल। अखियास केलहुँ एतेक रातिमे के' थारी बजा रहल अछि। ओहो एक बेर बजाक' किछु काल लेल फेरो शान्त, किछु कालक बाद फेर बजा रहलए, फेरो चुप्पी, जे बजा रहल छल ओ जेना मुँहसँ नहि किछु बजबाक सप्पत खेएने होथि, सैह लगैत छल मौनव्रत हुनकर आइ रहल हेतनि, जे किछु कहताह ओ थारी बजाबैत, सांकेतिक भाषामे, ओहिना लगैत छल जे किछु बीत जाए मुदा हुनकर बकार नहिए टा सुनब।

तेसर बेर फेरो बाजल, आवाज सुनितै हमरा अन्दाजा लागि गेल छल, अरे तोरी के, ई त' पूबरिया कोनटा दिससँ थारीक

आवाज आबि रहल छैक। मुदा घूप अनहरिया राति होयबाक कारणे कियो नजरि नहि आबि रहल छलै, मुदा सय प्रतिशत कियो अवस्से ठाढ छलैक,जकरा देखि भैरव भुकि रहल छल, मुदा ओकरापर प्रहार नहि क' रहल छल, ई त' हमरा भान भ' गेल छल, कियो चिन्हार ठाढ अछि, भैरव ओकरा चिन्हि रहल छैक, अँगनाक लोक सभक धियान आकृष्ट करेबाक चेष्टा क' रहल अछि, जे ओ कहि रहल हो यौ घरबारी, कियो आयल छथि अँगनामे, कने हुनको सुधि लियौ।

हमरा रहल नहि गेल, हम हाक देलहुँ- ''के? के छहऽ हौ' अ?''

कियो हमर उत्तर नहि देलक, आवाज आँगनसँ त' छैके, आब एहिमे हमरा कोनो तरहक शंकाक गुंजाइश नहि रहल। पक्का कियो थारी पीट रहल अछि। एतेक जोरसँ हाक देला उपरान्तो ओ गबदी लदने अछि आश्चर्य जे बाजि किछु नहि रहल अछि, ई कोना भ' सकैत छैक। जे कियो कोनटापर अछि त' बिच अँगनामे किएक नहि आबि रहल अछि। हमर माँ, काकी, भौजीसँ अँगनेमे बैसल घूर तापि रहल छथि, त' फेर किएक नहि सुनि रहल छथि, एहेनो कतौ गपोध्याय भेलैए। कियो कनिको तजबीज नहि क' रहलैए, के' छै आ के नहि छै, मोनमे खूब तामस उठि रहल छल। तान चदरिया पड़ल रहू, घर जरैए जरए दियौ। आब हमरा नहि रहल गेल, लागल किछु त' गप अवस्से छैक, सभ उसनिया चुल्ह लग आगि तापि रहलैए, ई कोना हेतै जे थारी पीटैक' आवाज कान धरि ककरो नहि जाइत हेतै।

हमरा नहि रहल गेल, हम माँक' कहलियै- गै, के छियै, तू सभ नहि सुनै छहीन।

ओ अनठाक' बजलीह- ''कथी रौ'' तोरा की की नहि सुनाइ दैत छौ, बापेपर गेल छँह। कतौ कियो बाजौ ने फुसफुसाक' ककरो कानोमे, सेहो एकरा सुनाइ द' दैत छैक, एतबो ककरो कान पातर भेलैए एहि दुनियामे, जेना महाभारतक संजय ईहा छियै, बस एतबे अन्तर जे ओ कतौ बैसल बैसल पूरा कुरुक्षेत्र देखैत छलै, आ ई कतौ बैसल बैसल ककरो गप सुनि लैत छैक, नहि जानि एकर की उपाय करी।

ह' गै-कियो थारी पीटै छलै हन, तोहर सभक धियान नहि जानि कतए छौ। कतेक गप पाथने रहैत छंह। बाप रौ एहेनो कतौ भेलैए दुनिया उलटि किएक नहि जाए, मुदा तोरा सभ लेल धनिसन। गपेमे लागल रहै जाइ जो,देखहि ने,के छै' कोनटापर,हम अपन सीरक लपेटने घरेसँ पुरखाहट छोडि रहल छलहुँ।

माँ बजलीह, किएक तोरा पाएरमे मेंहदी लागल छौ', जे घरमे कोचपर पड़ले पड़ल कवाइत क' रहलें हन.....।

हमरा माय बेटामे तर्क वितर्क चलए लागल, आब शास्त्रार्थ अपन चरमपर।

तखने पोखरिभीड़ा वाली भौजीक खूब जोरक ठहक्का सुनलहुँ। ओ बजलीह ''यै माँ आइयो कदमा घुरि गेलनि, देखथुन ने, की करब गै माय। अपन खेनायौ नहि लेलकनि आ' चलि गेल थारी बजाबिते, एहनो भेलैए। की उपाय करब, ओकरा देखिक' त' छगुनता लगैए, केना हेतै एकर गुजारा, से दैवे टा जाने।

हमरा ई नहि बुझल छल जे ई सभ जानिक' अनठियौने छलीह। कारण हम कोनो तारतममे गाम जाइत छलहुँ, तेँ कदमक एहेन लीलासँ अनभिज्ञ रही, जे नहि बजैए जखन खाएक लेबाक लेल अँगनामे अबैत अछि, दिनमे त' कोनो गपे नहि,सभक नजरि रहै छैक ओकरेपर, महीसकेँ नमेलाक बाद ओकरा लेल कुट्टी काटि नादिमे सानी लगाक' आबि जाइत अछि थारी ल' क' बेरहट लेबाक लेल। सभक' समय लगभग बुझले रहैत छैक, बिन बजने ठाढ़, बड़की काकी गेलीह ओकर थारीमे सभकिछु देलीह, ओ चुपेचाप लेलक, निकलि गेल अँगनासँ, कम कि बेसी, ओ किछु नहि बाजत, मुदा सभक' ओकर खोराकी बुझले रहैत छलै, तेँ कोनो चीज नहि घटै, ताहिपर धियान सभ रखने रहैत छल।

हम कहलियै- अएँ यै भौजी, जखन सभ ई बुझते छलियै, तखन ई किएक खेला, आब नहि आओत बौआ भैयाक चेला।

बड़ टपटप केने छंह रौ छौड़ा, बेसी नहि टीभ, तूही उठिकेँ किएक नहि बहरेलें, सीकर जे सेवने छें, बड़ मासचर्य जे लगै छौ, बस मुँहेसँ ममत।

''ओ लजकोटर छै, से अहाँ सभकेँ ई त' बुझले अछि, त' फेर किएक घुरए देलियै, हमर धियान नहि गेल त' भ' गेलै ने सभटा चौपट'' -भनसाघरसँ बड़की काकी

तमतमाएत भनभना रहल छलीह, सुनि त' सभ रहल छल, मुदा हुनका धाखे बाजत के? आब ओ भुखले सूति रहतै मुदा फेर घुरिके खाएक लेबाक लेल अँगना औतै नहि, देखियौ एकर सभक हँसी-ठठ्ठासँ महप्रलय भ' गेल हमरा लेल। चलि गेल मुदा बकार नहि निकाललक, कहेन अवगरह क' देलक, बिना ओकरा खुएने हमरा कोनो अरघत। काकीक' के टोक देत, हुनका सोंझामे सभ सटक सीता राम। जखन देआदिनी चुप त' पुतहुक कोन लेखा, बेटी-धीक' त' कोनो गपे नहि।

ओहो त' मनुखे छैक ने, भरि दिन लागल रहै छैक राज-काज मे, एकर सभक मसखरी कतेक भारी पड़ल हमरापर, आब हम ओकरा ताकै लेल रणे बोने बौआउ एहि अनहरिया रातिमे। साँझु पहरमे कने मने जे मुरही फाकलकै, ओहिसँ की राति कटि जेतै। थारी मालकघरमे राखि चलि गेल हेतै कतौ भजन-कीर्तनमे आकि फेर पूबरिया मुसहरी अपन टोल, भ' सकैए कतौ एम्हर ओम्हर गहबरमे भगताक घूप बत्ती डाली देखैमे लागि जेतै,मंगला, निरसा, भोला, सोरपा सभक संगे। ओकरा सभक

कोन गप, ओ सभ त' अपन अपन खाइक ल' लेने हेतै, खाइयो लेने हएत हिस्ट पुष्टसँ, एकरे लेल बिपति भ' गेलै। ई कंसा भुखले छिछियाईत हेतै, हम वहि त' के करत सुरता, काकी अपन धुनमे बड़बड़ा रहल छलीह।

ओना त' कदम सभक चहेता छल, मुदा नवकी कनिया सभक कोनो तरहक टहल टिकोरा करैमे सबसँ आगू रहै वाला प्राणी। सोँझा त' ओ ककरो नहि अबैत छल, पाछू मुँह घूमा क' जनी-जाइतक कहल सुनैत छल। बस सुनिते ढोलिया टीक भेल ठाढ, ओ रुकै वाला मनुख कहाँ, यैह ले वैह ले लागि गेल आज्ञाक पालन करैमे, गजबक' फुर्ती, कनेको नहि आसकति, ओहिके आगा भले दोसर कोनो काजक किएक नहि हरमाज हौ। चटसँ सभ काज छोड़ि ओहि काजक निमेरा लेल हनुमान सदिखन तैयार। ओकरासँ सभ सदिखन प्रसन्ने, ईनाममे बीड़ी-तमाकूल लेल अलगसँ किछु ने किछु पाइ चाहे जे बेच गिरथाइनि सभ थमा दैते टा छलथिन।

एम्हर काकी अग्निश्च वायुश्च,आब ओ अपन पुतहुपर बरसि रहल छलीह, काजमे काज एकटा ईहो काज पार नहि लगैए, यै गिरजा महारानी, खाली खेँ खेँ करैत अँगनेमे त' छलहुँ सभगोटे, कोन कानमे तूर तेल देने निचौन भेल छी, कनेको चाँकि नहि, नहि जानि सभ राज काज कोना सम्हारतै। कतेक जुलुमक गप देखू त' ओ हिनके सभक टहल टिकोरामे लागल रहैत अछि, ओकरा ई मौगी सभ भुखले भगा देलकै, एहनो सपरतिभ। बिने रुकले जानकी एक्सप्रेस पटरीपर दौगि रहल छल, कोनो माइन नहि सिग्नल लाल छैक कि हरियर, पीअरक त' कोनो गपे नहि हुए। बसँ टीसन मास्टर लाइन क्लियर केने जा रहल छल, आब गाड़ी रुकतै त' निर्मलीएटामे, ओहिसँ आगा त' कोसी। ताबति अपन चलल जा रहल छल, जखन ई सभ सुनै गेलै,तखने हमरा किएक नहि कहलक, हम त' काजमे बाझल रही, ई सभ त'अँगने मे घूर तपैए। ई सभ त' अँगनोमे रहितौ नहि सुनलक, हम ने भनसाघरमे रही, दहोदिसक काज मोनमे घुरिआएत रहैत अछि, नंगोचंगो भेल कतेक गपक धियान राखू, हमहुँ त' मनुखे ने छी, अहीँ सभ कहै जाइ जाउ ने। एकर सभक ताल देखियौ अनठौने रहि गेल। अएँ यै, अहाँ सभ ओकर बोली कखनो सुनलियैए आइ धरि, जे एखन सुनितियै।

काकी बड़बड़ाईत भनसाघरसँ बाहर निकलि ओसारापर आबि गेल छलीह।

यै माय' कोनाक' बकार निकालतै'' - भौजी बजलिह।

से किएक यै गिरजा महारानी- बड़की काकी अपन पुतहुसँ पूछलथिन।

एक त' लजकोटर आ' ओहिपर सँ तोतराहा, सभ गुण सम्पन्न, नहि यै माँ, हमर माँ दिस तकैत बजलीह-भौजी, ओ हमर माँक' माँ कहैत छथिन।

देखौथ माँ, आइ हम फेरो बाजी जीत गेलियनि।

हऽऽ हऽऽ हद भ' गेल, तूँ सभ गपेटा देबहक, की' ओकरा बजेबो करबहक। काकी बजितै बजितै ओसारासँ अँगनामे आबि गेल छलीह।

रौ कदमा-, रौ कदमा- काकी जोर-जोरसँ हाक द' रहल छलीह।

कदम, कदम छह हौ'अ - हमर माँ सेहो घूरे त'र सँ हाक देबए लगलीह। मुदा कियो सुनत तखने ने' ओकर जबाबो देत।

आब काकीक' तामस उठि रौद्र रुप ल' लेने छल, ओ बजलीह-ई दुनूक' कारणे हमरा ओकरा बजाबै लेल जा पड़त, मालकघरमे। ज' ओतय नहि भेटल त' नहि जानि कतए कतए जा पड़त, इहए दुनू भगेलकै, त' दुनू उठौ आ' तकने आबौ। मुदा हुनकर बाजबसँ ककरोपर कोनो प्रभावे नहि। बड़बड़ाईत-बड़बड़ाईत काकी अँगनासँ निकलि दलान लग मालकघर दिस गेलीह। संयोग नीक जे ओ कतौ गेल नहि छल एम्हर ओम्हर, बिछाओनपर सुतल भेट गेलनि, कोनो औना पथारी नहि करए पड़लनि, किछु कालक बाद काकी कदमकेँ संगे लेने अँगना घुरलीह, आगू आगू काकी, पाछू पाछू कदमलाल थारी डोलाबैत। काकी ओकर थारीमे रातुक भोजन ओकर खोराकीक हिसाबे परसलीह।

माँ बजलीह-कदम, बड़ राति भ' गेल, एतयै खा ने लिय। ताधरि हमहुँ ओतय आबि गेल रही, हौ'अ, आरो किछुछो चाही, ओ किछ नहि बाजल,ठाढ़ चुपेचाप। इशारे इशारामे गरदनि बस हिला देलक, जेना कहलक नहि, आब नहि चाही किछुछो, परिपूर्ण। ओ अपन थारी उठा मालकघर दिस चलि गेल।

ओ आर कियो नहि हमर सभक चरवाहा कदम लाल छल। हम सभ सिनेहसँ कदम लाल कहैत छलियैक। सरस्वती पूजामे कदम लाल संगे संग मधेपुर जाइत छल। ओतय सँ मूर्ति माथपर उठौने गाम धरि आबैत छल। आखरक ज्ञान त' नहि छलैक मिसियो, मुदा बेबहारिक सभ ज्ञान ओकरामे भरल पूरल, कखनो कोनो काज अढ़बियौ, मिसियो नहि कोनो बहन्ना। सरस्वती पूजाक कार्यकारिणी मे ओकरो स्थान देल जाइत छलै, बड़ मेहनती, ओहिने पित्तमरु, काजक आगू भूखो पिआस निपता।

सभक संगे क्षणेमे घुलि मिलि जेनाय ओकर स्वभाव, कद काठी लोकक' प्रभावित करै वाला। जातिसँ मुसहर, मुदा हमर सभक अभिन्न अंग,सभक जीहपर ओकरे नाओं-कदम ई, त' कदम ओ, ओहो, जी गिरहथ आ' गिरहथनी कहि, मोन जीत लैत छल, सरिपहुँ कहि एक शब्दमे हमर सभक संकटमोचन हनुमान। आओर त' आओर हमर खुट्टापर जे महीस छल, ओ एक दोसरक पूरक,बिन कहने एक दोसरक आँखिक भाषा खूब नीक जकाँ बुझैत हो। जाहि महीस लग आन कियो जएबाक

साहस नहि करैत छल, कतेको क' उठा पटकने हएत, तकर जमाखर्च करब बड़ मोसकिल, तेँ किछु बीत जाइत छलै कियो अनचिन्हार ओकरा लग फटकैतो नहि छल, दूरेसँ जे बाजए, ओतबैमे हुरपेटै छलैक से कहल नहि जाए। मरखाह रहितौ तीन गोटे क' लेल त' साक्षात कामधेनु गाय। दू साँझ दुहलाहक उपरान्तो कोनो दूधक खगता पड़लाहपर, ओकरे तेसरो बेर बेरु पहरमे सेहो दुहि लिय, एक-आध सेर भइएटा जाइत छलैक, ककरो पइत रखबाक लेल बहुत भेलै कि ने। मुदा दुहै वालामे एगो हमर करिआ काका (हमर बाबूजीक भैयारीमे माँझिल, दोसर बौआ भैया (बड़का काकाक छोट पुत्र) आओर तेसर मात्र कदम लाल। एहिमे सँ ज' कियो दू गोटे नहि छथि त' कोनो गप नहि, मुदा ज' तीनू नहि त' बूझू जे बड़ मोसकिल ओकरा दुहब। ककर मजाल जे ओकरा लग जेबाक साहस करत। ठीक महीसे जेना जहिया कदम लालकेँ तामस सातम असमानमे ठेकने रहैत छलै, बुझू जे बिर्रो उठि गेल हो,बड़का तूफान-बवंडर, एहेन परिस्थितिमे ककर मजाल जे ओकरा बुझा सकैत छल। सद्यह ओकरापर देवता सवार, ओहि कालमे कोनो गहबरक आ' कोनो भगताक ओकरा पर प्रभाव नहि।

''बहिरा नाचौ अपने ताले।'', मुदा कनेके कालमे तूफान शांत, जेना ई लगैत छलै जे किछु नहि भेल होइ, ह्रदय ओकर एकदम साफ, कोनो गप मोनमे नहि रखैत छल, पानि जकाँ ओकर निर्मल, स्वच्छ व्यवहार।

समय अपन चक्र चलाबैत रहैत अछि, काल अपन धूरीपर नचौत रहैत अछि, कियो नहि बदलि सकैत अछि बिधनाक लेख। पता नहि कोनाक तीस-चालीस साल बीत गेलैक, जे नव छलैक ओ पुरान भ' गेलैक, जे नेना छलैक ओ अधबेसु भ' गेलैक, बुढ़ पुरान लोकनि त' आब अपन आशीर्वाद स्वर्गसँ द' रहल छथि।

ककरो लेल कदमा, ककरो लेल कदम आ'हमर कदम लाल आब संगमे त' नहि अछि, मुदा ओकर परिवार हमर सभक एखनो अभिन्न। हमर सभक घर द्वारि ओकर सभक जिम्मा, बिन ओकर परिवारक सहयोगे कोनो काज उदेम गाममे सम्पन्न नहि होइत अछि।

काल कदमलालक' सेहो कोनाक छोड़ि सकैत छल, ओकरा अपन ग्रास बना लेलक। कमे उमेरिमे वैकुण्ठ वासी भ' गेल हमर सभक कदम, मुदा ओकर छाप हमरा सभपर एखनो ओहिना जहिना नेनामे देखने रहियै,जखन कखनो अपन जीवनक नेनपनमे जाइत छी, त' ओहिना लगैत अछि, जहिना ई काल्हिक गप हो,नियतिक नीयतपर के आंगुर उठा सकैए, जे आइ अछि ओ काल्हि नहि रहत, ई त' जीवन चक्र छैक चलैत रहतै, जेना अदौकालसँ चलि रहल छैक, लोक एहिलोकक मंचपर अपन पात्रक अभिनय मात्र करैत अछि दैवाक लिखल नाटक, ओकरे देल गेल रोल, वैह त' निर्देशक छैक एहि रंगमंचक, नाटक समाप्त, एहि लोकसँ परलोक यात्रा आरम्भ। मोन त' करैत अछि केहुना कालक चकरी उलटा घूमि जाए, मुदा ई त' भ' नहि सकैत अछि, से सभके ँ बुझले छैक। सिनेमा जकाँ एखनो पुरान दृश्य पूरा नजरि आबए लगैत अछि आँखिक परदापर, चलैत चित्र, कखनो काल चित्त अशान्त क' दैत अछि, फेर मोन कहैत अछि बहुत भेलौ नाटक तमाशा, आब घुरि जो बाउ।

अशांत मोन एहि द्वारे नहि होइत अछि जे अपन अभिन्न आब एहि दुनियाक नहि छथि, ई त' बुझले अछि जे ऐलाह, ओ जेबेटा करताह निश्चिते, एहिमे कोनो शंका नहि। मुदा टीस एहि बातक उठैत अछि जे समय केहेन अपन रुप देखा रहल अछि, संबंधक मोल आबि नहि रहलैए, लोक आन्हर भ' गेल छथि, अपने समांगक' शोणित बहाबै लेल आतुर, सभक आँखिपर नहि जानि केहेन टीनही खोलसा लागि गेलैए, तेँ किछु भान नहि भ' रहलैए। विनाशे काले विपरीत बुद्धि, उड़ि रहलहुँ बिन पाँखिक फुद्दी। पता नहि किएक कुबुद्धि, नहि जानि कहिया आओत सुबुद्धि।

हम अपनेहिमे मगरूर घमंडसँ चूर, नहि जानि कतेक अपनेमे भ' गेल अछि भूर। बहुत रास सम्बन्ध एहेन होइत छैक, जकर मूल्याँकन नहि क' सकैत छी। नहिए ओकरा जाति-धर्मक सीमामे बान्हि सकैत छी। बिना कोनो निआरक बनि जाइत छैक प्रगाढ़ संबंध। सरिपहुँ ई बनाओल गेलैए बिधने द्वारा, सभसँ अलग होइत छैक ई संबंध जाहि लेल लोक सभ सीमान नाँघि दैत अछि, मुदा केहेन मरछाउर छिट देलक जे सभकिछु बुझितौ विवेक सून्न भ' गेल अछि हमर अहाँक।ओहि सम्बन्धके ँ कागत पर नहि लिखि सकैत छी, त' चटे मेटा कोना सकैत छी, ई यक्ष प्रश्नक उत्तर देबाक सामर्थ्य ककरामे अछि, से नहि जानि। केहेन उनटा बसात बहि रहल छैक, मनुखेक' मनुखगंध लागि रहल छैक।

“नहि बुझि रहल छी, हमसभ कतए जा रहल छी'', ई हमर विकास थीक आकि विनाश, ई आब अहीं सभपर एकर मूल्यांकन करबाक भार द' रहल छी, ई सोचबै अवस्से जखन कखनो अपना लेल पलखति भेटा' त'।

एकर दूरगामी परिणाम की' की' देखब सेहो बेकछाएब,मुदा चिरौड़ी नहि यथार्थ---???

हमरा जानैत सम्बंध त' सम्बंधे होइत छैक ने, ओकरा कोनाक' बिसरब?

आत्मीय, प्रगाढ़ आरो बहुत किछु----अनमोल--जकरा लेल शब्दक घेरा बड़ छोट....नेता, नेत आकि वोट...

F1B-703, समृद्धि अपार्टमेंट,
सेक्टर-18, प०केट-B, द्वारका, दिल्ली-110078
मोबाइल-9871131105

पं. श्री गोविन्द झाक कविता : समय आ शिल्प

✍ डॉ. अजित मिश्र

''नमस्कारमे हमरा होइछ तिरस्कार के भान रे
कुशल-प्रश्न केर बात चला कए कथि ले बेधव कान रे''

पं. श्री गोविन्द झाक उपरोक्त पाँति हमर आलेख केर विषय-वस्तुक उपस्थापन करबामे सक्षम अछि। एहि पाँतिक माध्यमे एक दिस जतए मिथिलाक मनोदशा, मैथिलक प्रवृत्ति आ मैथिली भाषाक यथार्थवाद प्रगतिवाद-प्रयोगवाद सर्व समक्ष भए उठैछ तँ दोसर दिस उत्पन्न सरल भाषामे स्पष्ट रूपें बातकेँ राखि पाठककेँ मानव करबाक हेतु बाध्य करब जन्य शिल्प अपन विशिष्टताक प्रदर्शन सेहो करैछ। कहबाक तात्पर्य जे पं. जी अपन कविताक माध्यमे समयानुकूल विषय-वस्तुक उपस्थापन उत्पन्न सोझ भाषामे कए पाठक केँ आकृष्ट करैत रहलाह अछि, साहित्यकेँ समृद्ध करैत रहलाह अछि आ करैत रहलाह अछि काव्य-पथक पथिक केर मार्ग-दर्शन।

निश्चित रूपेँ कवित अन्तर्मनक अभिव्यक्ति थिक भावनाक प्रदर्शन थिक, शब्दक ललित गुम्फन थिक। सृक्षिक विभिन्न पक्षपर ध्यान केन्द्रित करैत जाहि कविक दृष्टि जतेक परिच्छा तनित कविता ओतबे गरिष्ठ। प्रकृतिक क्रिया-कलापकेँ, मानवीय प्रवृतिकेँ, भविष्य केर सम्भावनामे जे जतेक दूर धरि प्रवेश करैछ, हुनच रचना ओतबे आकृष्ठ करैछ। महाकवि विद्यापति होथु वा गोविन्ददास महाकवि मनबोध होथु वा चन्दाझा- सभक रचनाआइयो हमरा सभ केँ ओहिना आकृष्ट करैछ जेना युग-युगसँ आकृष्ट करैत रहल अछि। एहिसँ स्पष्ट होइथ जे मानवीय संवेदना, भावनाक रम्यता एवं युगीन सन्दर्भक उद्भावना एक कविकेर सबसँ प्रबल माध्यम होइछा, जकर बलेँ ओ पाठकक अन्तस्थलमे प्रवेश कए युग-युगान्तर तक अपन धाइ, अपन प्रभाव प्रदर्शित करैत रहैत छथि।

हमर विवेच्य कवि पं. श्री गोविन्द झा समय-सापेक्ष रचना करैत रहलाह अछि, राजनीतिक-सामाजिक गति-विधिकेर सूक्ष्म सँ सूक्ष्म बलपर ध्यान रखैत रहलाह अछि, वर्तमान युगकेर आवश्यकता- समस्या आ ओकर समाधानक दिशामे युगानुकूल मार्गकेर अनुसरण करैत रहलाह अछि, मार्क्सवादी विचारधाराक गहन अध्ययन करैत सर्वहारा श्रमिकक दुःख-सुख गमैन रहलाह अछि आओर तेँ राष्ट्रीय-सामाजिक चेतना एक चिरस्थायी स्रोत सहम प्रवाहित होइत काव्यधाराक रूप ग्रहण करैत रहलनि अछि।

आइसँ 56 वर्ष पूर्व आचार्य रमानाथ झा अपन 'नवीन गीत' संग्रहमे लिखने छलाह- ''मैथिली काव्य साहित्यमे श्रीगोविन्द झाक नाम प्रांजल भाषा-शैली, सुस्पष्ट वस्तु-विन्यास एवं नवयुग प्रवृत्तिग्राहिणी स्पन्दनशील सूक्ष्म कल्पनाक दृष्टिसँ अग्रगण्य अछि। ई जे किछु लिखल अछि से अनुभव कएलक पश्चात् अपन अनुभूतिक प्रेरणासँ, जाहिमे नहि तँ पाण्डित्य-प्रदर्शनक प्रवृत्ति अछि आओर ने चमत्कार-प्रदर्शनक। विषयक उपस्थापनामे भावानुकूल माधुर्य एवं ओजक सामंजस्य एतेक सहजतासँ ई करैत अछि जाहिमे भाषाक प्रसाद कतहु विघटित नहि होइत अछि आओर ने शब्दक मर्यादित स्वरूपहिमे कोनो बाधा उपस्थित होइत अछि। ई प्रगतिशील छथि युगीन समस्याक ग्रहणक हेतु, प्रयोगशील छथि भावाभिव्यक्तिक नव-नूतन उक्ति महिमाक हेतु।''

1936 ई.मे सर्वप्रथम 'समस्यापूर्ति'क माध्यमे शब्द जोड़ि कविता बनौनिहार अपन बीस वर्षक साहित्यिक यात्रामे पं.जी प्रगतिशील भए चुकल छलाह, प्रयोगशील भए गेल छलाह, युगीन समस्याकेँ ग्रहण कए अपन भावाभिव्यक्ति करबामे सिद्धहस्त भए चुकल छलाह। आइ तँ ठीकहि-उचिते, हुनक कलमसँ निःसृत भए शब्द-संयोजन एक आदर्शतम उदाहरण बनि रहल अछि। हुनक निर्झरिणी कलमसँ मैथिलीक बहुविध श्रृंगार कएल जाए रहल अछि। पं.जी सए वर्षक अवस्थोमे एक दिस जतए 'सोशल मीडिया'क माध्यमे आधुनिक भाव-भूमि पर अपन दर्शन कए रहल छथि तँ दोसर दिस 'भाषाक गाद तर' ठाढ़ भए 'डाली झाड़ि' माँ-मैथिलीक सेवामे अनवरत लागल छथि-'' गत वर्ष धरि जेना-तेना किछु-ने-किछु मैथिली आ राष्ट्रभारतीक सेवा कलमक बलें करैत रहलहुँ। 96म वर्षमे प्रवेश करितहिँ कलब धरबामे अक्षम भए गेलहुँ तँ तकर बदला दसो आङुर की-बोर्ड पर चलबैत किछु-ने-किछु फूल-पात लोढ़ि-लोढ़ि यान्त्रिक डालीमे भरैत गेलहुँ। जखान ताहूमे अक्षम भए

गेलहुँ तँ ओ डाली झाड़ि ब्रह्माक नहि, मातृ -भारतीक आ राष्ट्रभारतीक पूजा करए लगलहुँ।'' (प्रस्तावना-डाली-झाड़ि)

पं.जीक काव्य विधा पर ध्यान केन्द्रित कएला पर ज्ञान होइछ जे अद्यावधि हिनक एक मात्र कविता संग्रह 'प्रलाप' प्रकाशित छनि, जे अपन, नाम मात्रहिसँ पाठकक ध्यान आकृष्ट कए लैछ। एहि संग्रहक अतिरिक्त ठाम-ठीम प्रकाशित हिनक कविता समय पर ध्यान देलासँ ज्ञान होइछ जे अद्याविध हिनक गोहेक सए कविता प्रकाशमे आबि चुकल छनि। 85 सालक साहित्यिक यात्रामे ई कम नहि, कारण हिनक कलमसँ साहित्यिक सभ विधा परिपुष्ट भेल अछि, प्रशस्त भेल अछि।

सए कविता कोनो कविकेर मूल्यांकनक हेतु पर्याप्त अछि। पूर्वमे जहिना कहल गेल अछि, ठीक, तहिना पं. जी अपन कविताक विषय-वस्तुकेँ ग्रहण कएलनि। हँ, ओकरा उपस्थित करबामे एक दिस जतए कौलिक संस्कार प्रेरित-उत्प्रेरित ओ संयमित कएलकनि ओतहि दोसर दिस नवयुग केर सुस्पष्टता आ सूक्ष्म कल्पनाक दृष्टि उर्ज्वसित कएल कनि। उपरोक्त संस्कारकेर कारणे पं. जी बहुमुखी प्रवृत्तिक कवि धर्मकेँ निवाहैत सत्यम्, शिवम्, सुन्दरमूक स्वरकेँ मुखरित कएलनि हँ, एहिमे समय सापेक्ष प्रतिबिम्ब स्पष्ट रूपेँ दृष्टिगोचर होइते रहल।

''देखल हँसि-हँसिकेँ रजनीकर,
लए लए कर-पीयूषक सीकर
कहि रहल पथिक, स्वागत-स्वागत,
विश्राम करू, विश्राम करू।''

अपूर्व रूपेँ संसारकेँ सजबैत प्रकृतिक एहि उपस्थापनमे सौन्दर्य प्रेम आ यौवनक धार बहबैत कवि दृष्टिगोचर होइत छथि। जाहिमे कौलिक संस्कार प्रतिध्वनित होइछ। एतए एक विशेष वस्तु ध्यान केन्द्रित करवैछ सँ थिक सरस कवि ईशनाथ झाक पदकेर स्मरव। पं. जी स्वयं कहने छथि जे कविता करबाक लूरि सरस कविसँ सिखने छी तेँ एहन पद सभमे ईशनाथ झाक बाबूक गति-लय-ताल ओ शब्द संयोजनक भान होइछ। एहि क्रममे 'नूतन स्वर' सुषुप्त चेतनाकेँ जगएबाक नूतन विधान बनल। 'रसिक पथिक' केर रतिभाव, 'कादम्बिनी'क प्राकृतिक उल्लास, 'आलोक' मध्य विज्ञासु-भाव आदि माध्यमे 'प्रभावी' होइत सुप्त चेतना जानि उठलनि-

''सुनि पड़ल सहसा समुज्ज्वल राग
जाग रे चिर सुप्त चेतन जाग।''

चेतना जगलनि, नव भाव-भूमि प्राप्त भेलनि, समयक गति-स्थितिकेँ चिन्हलनि आ तखने 'अन्न देवता'क माध्यमे पूँजीवादसँ त्रस्त सर्वहाराक स्थिति-परिस्थिति आकृष्ट कएलकनि आ तखने स्वर गुंजित भेल-

''अरे मुट्ठी भरि मनुक्खक दास,
एकसरे हम खाक तेसर मांस
सन्निहित छहु जकर कत-कत मध्य,
लाख भूखल मानवक अंशांश।''

एहन समयमे यात्रीजीक 'परम सत्य' आकृष्ट कएल कनि आ समाजक 'सत्य-असत्य' सर्वसमक्ष भए उठलनि-

''सत्य एक विकराल मूर्ति थिक,
सत्य स्वयं थिक काल
जीभ एकर धधरा थिक लह-लह,
दृश अङेर दुइ लाल।।''

एवं प्रकारेँ, 'एक उज्ज्वल हास हो', 'विषम एखन', 'वंशी' 'विप्रलब्धा', 'याचना', 'हिलकारे', आदि रचनाक माध्यमे मानवोचित क्रियाकलापकेँ जगजाहिर कएल अछि। हिनक कलमसँ निःसृत भए विभिन्न कविता बाल मनोकिताबकेँ सेहो प्रभावित करबाक कार्य करैत रहल अछिं एहि समाजकेर अस्तित्वक मूलमंत्र थिक मेलजोल। ने एक सँ दोसर मिलि संयुक्त रूपेँ कार्य संपादन करबाक प्रयास नहि होतै समाज अपन रूप बना नहि सकत। तेँ बच्चा सभकेँ कहि उठैत छथि-

''नहि खेलक लेल भऽ गेल करह,
हओ मेल करह, अहो मेल करह
पाठक घंटीमे पढ़इ-लिखइ,
खेलक घंटीमे खेल करह।''

एहि क्रममे हिनक 'पानि एलै बुन्नी एलै', हैकों-हैकों', 'पाकल आम', 'हम बालक छी' अछि नेना-मुटकाकेँ शिक्षित करबाक कार्य करिते रहल अछि अपितु पैथकें सेहो सजग-सतर्क करैत रहल अछि।

एतावय, पं. जी समयाानुकूल अपनाकेँ बनबैत रहलाह, समयक संग चलैत रहलाह, समयक गति ओ मनिकेँ चीन्हि अपन कलम चलबैत रहलाह आ तेँ आइ हुनक रचना मैथिलीक पाठककेँ आकृष्ट करैत नवशीश होएबाक हेतु बाध्य करैत रहल अछि। आब किछु विचार 'शिल्प' पर कएल जाए।' 'शिल्प' शब्दक अर्थ अंगरेजीमे होइछ-CRAFT TRADE, दुनू संज्ञा थिक- a job or activity for which you need skill with your hards.

एतावता शिल्प एक हस्तकला थिक। इएह साहित्यमे 'साहित्यक कला'क रूप धारण करैछ जे कला आन दोसर साहित्यिक सँ अहाँ केँ पृथक् करैछ, जे कला अहाँक उपस्थितिक भान करा दैछ, जे कला अहाँकेँ पाठकक समक्ष ठाढ़ कए दैछ। कोनो कविकेर काव्य कला हुनक जीवन-जगतक स्पष्ट चित्र प्रस्तुत कए दैछ, आचार-विचार केँ मूर्त रूपमे ठाढ़ कए दैछ, चिन्तन-मननकेँ सत्तान् बिम्ब रूपमे प्रस्तुत कए दैछ।

पं. जीक काव्य शिल्पपर ध्यान केन्द्रित करबासँ पूर्व द्रष्टव्य थिक प्रो. नामवर सिंहजींक पोथी 'कहानी, नई कहानी'मे उद्धृत शिल्प प्रसंग उदित्-'' रूप आ शिल्पक नवीनता सामान्यतः लोकक ध्यान सबसँ पहिने आकृष्ट करैत अछि........... शिल्पकेँ लए नव प्रयोग करबाक प्रवृत्ति आजुक कविए जकाँ कथाकारोमे अछि आ कविता जकाँ किछु कथो भाव प्रयोगक लेल लिखल गेला..........'' यद्यपि सिंहजीक कथ्य हिन्दीक हेतु अछि मुदा ई स्थिति प्रायः सभ भारतीय भाषामे कम-बेसी देखल जाए सकैत अछि। मैथिली आ विशेषतः पं. जीक कवितामे शिल्पक नवीनतम समयक संग अबैत रहल आ तेँ पब्जी 'ब्रह्म आ ब्रह्मा'मे विद्रोही स्वर लए मुखर भए उठल रहथि-

''आब चलत नहि काज,
ब्रह्मा बनने अओ बाबू।
रहए देत नहि ललोक आब निर्लिप्त,
लेपिए देत केओ बलजोरी
चानन नहि, लिढ़ियाही पोखरिक थाक।''

एतबे नहि, पं.जी विज्ञानक चमत्कार, विज्ञानक विस्तृत ज्ञानक प्रति निरीह जनताकेँ पूँजीवादी शक्तिक प्रति साकांक्ष करैत कहि उठल छथि-

''कतए उघने जाइ छह हे युग पुरूष ई
विकट बुद्धिक हऽर
पकड़नेविज्ञान वरदक नाथ
गर्वसँ कएने समुन्नत पर्वताकृति माथ?
जा रहल छह आइ जोतए लेल नवका चास
जोति चुकलह मगन केर चौमास
जोति चुकलइ देश भरि सब चास
जोति चुकलइ चीन ओ जापान
रूस, अमरीका, अरब, ईरान
कते उपजओलुह एखन धरि धान?''

एतावता, पं. जी अपन कविताकेँ रजनी-सजनीसँ प्रारंभ कए करनी-धरनी धरि आनि एक पृथक् शिल्प-कौशल प्रदर्शित कएलनि अछि जे हिनक प्रगतिवादी सोच, प्रयोगवादी कर्म ओ रहस्यवादी धर्मकेँ सर्वसमक्ष करैछ।

अरस्तु, पं. श्री गोविन्द झा शतयु होइतो कहिओ-कखनो एहन कविता, एहन साहित्य, एहन विचार हमरा सभके समक्ष उपस्थित कए सकैत छथि जे हिनक साहित्यिक धाराकेँ पृथके मोड़ि दिअए, कोनो अनहोनी आनि दिअए आ सएह रहल अछि हिनक कर्म-धर्म। मुदा, भविष्यकेँ छोड़ि भूत-वर्तमान केर मूल्याङ्कन कएल जाए तँ एकहि संग कविता-कथा-उपन्यास नाटक-अनुवाद-निबन्ध-आलोचना-जीवनी-भाषाशास्त्र- शब्दकोश-धर्मशास्त्रादि केर अमूल्य रचना उपस्थित कएनिहार एक मात्र साहित्यकारक नाम थिक- पं. श्री गोविन्द झा। माँ मैथिलीसँ प्रार्थना-अभ्यर्थना जे हम मैथिलकेँ, हम साहित्यिक समाजकेँ एहन अनमोल-अद्वितीय अक्षरपथी शब्दरथी पं. श्री गोविन्द झाक साक्षात् आशीर्वाद चिर काल धरि भेटैत रहए।

मैथिली विभागाध्यक्ष
महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालय,
सरिसवपाही, मधुबनी
मो0-8873623851, 9630639550

■



प्रोफेसर उमानाथ झा

☙ सती रमण झा

अंग्रेजीक मूर्धन्य विद्वान्, संस्कृतक ज्ञाता, मैथिलीक वरेण्य कथाकार, मर्मज्ञ समालोचक, श्रेष्ठ निबन्धकार, यशस्वी सम्पादक, प्रौढ़ अनुवादक, सुयोग्य प्राध्यापक, कुशल प्रशासक, चेतना समिति, पटनाक अध्यक्ष, मिथिला विश्वविद्यालयक प्रति-कुलपति, साहित्य अकादेमीसँ सम्मानित, बहुआयामी प्रखर व्यक्तित्व, प्रगतिवादी विद्वान् प्रोफेसर उमानाथ झा चिरस्मरणीय रहताह।

झंझारपुर महरैल गामक नरोनयपूरे मूलक पण्डित रघुनन्दन झाक पौत्र आ श्रेष्ठ वैयाकरण, महारानी महेश्वर लता संस्कृत विद्यापीठ लोहनाक यशस्वी प्रधानाचार्य, महामहिमोपाध्याय पण्डित कलानाथ झा प्रसिद्ध ठक्कूबाबूक पुत्र रहथि प्रोफेसर उमानाथ झा। हिनक जन्म 01-01-1923मे भेल छल। हिनक माय खररखक स्व0 तीर्थमणि झाक कनिष्ठा कन्या रहथिन्ह। जाहिमे ई दू भाइ आ एक बहिन। भाइमे ज्येष्ठ पण्डित काशीनाथ झा आ छोट स्वयं प्रोफेसर उमानाथ झा। एकमात्र बहिन सुमतिदेवी, जनिक विवाह इसहपुर पण्डित जगदीश झा सँ, बिहार विश्वविद्यालयक संस्कृत विभागाध्यक्ष डाक्टर गोविन्द झाक माय।

हिनक प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा पाण्डित्यपूर्ण परिवारमे, विद्यागुरु ओ आचार्यगुरु पण्डित मथुरानाथ झा सँ उपनयनमे 1929मे दीक्षित भऽ लक्ष्मीश्वर एकेडेमी सरिसबसँ 1933मे मिडिल बोर्ड परीक्षा उत्तीर्ण भेल रहथि। 1934मे राज हाइ स्कूल दरभंगामे नामांकित भए मैट्रिकमे डिस्ट्रिक्ट स्कालरशीप संग ओ पटना विश्वविद्यालय सँ आइ.एससी. प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण भेलाह। पटना विश्वविद्यालय सँ अंग्रेजी विषयमे प्रतिष्ठा संग स्नातक (B.A. Hons.) ओ स्नातकोत्तर (M.A.) कएलनि।

प्रोफेसर झा साहब परीक्षाफल प्रकाशनोपरान्त एच. डी.जैन कालेज आरामे अंग्रेजी विषयमे व्याख्याता पद पर योगदान कएल आ 1945-58 धरि जी.वी.बी. कालेज (एल. एस.कालेज), मुजफरपुरमे, 1958-सँ 63धरि त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू, 1963सँ68 धरि मगध विश्वविद्यालय, गयामे उपाचार्य ओ विभागाध्यक्ष, जुलाइ 1968 सँ फरवरी 1975धरि पटना विश्वविद्यालय तथा मार्च 1975 मे मिथिला विश्वविद्यालयमे प्राचार्य तथा अंग्रेजी विभागाध्यक्ष आओर 1980मे ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक प्रति-कुलपति पद के अलङ्.त कएऽ 03 जनवरी 1983के सेवा निवृत्त भए गेल रहथि।

एहि शैक्षणिक सेवा अवधि मध्य प्रोफेसर साहब अनेक संस्थाक विभिन्न पदकें सेहो सुशोभित कएने रहथि। जाहिमे चेतना समिति पटनाक 1969सँ 1972 धरि उपाध्यक्ष, 1973सँ 1975धरि अध्यक्ष, 1976सँ 80 धरि मैथिली अकादमीक कार्यकारिणी सदस्य, साहित्य अकादेमीक परामर्श दात्री समितिक सदस्य, 'Indian Association for English Studie' केर लाइफ मेम्बर तथा 1964-66 तक कार्यकारिणी सदस्य आदि सेहो रहलाह।

प्रोफेसर झा साहब अपन शैक्षणिक आ प्रशासनिक व्यस्तता मध्य अंग्रेजी साहित्यक संग-संग मैथिली साहित्यक सेहो सेवा कएल। जाहिमे किछु मौलिक, किछु सम्पादित आ किछु अनूदित कार्य सेहो अछि। हिनक प्रकाशित मौलिक कृति अछि-1- रेखाचित्र- मैथिली कथा संग्रह- तीरभुक्ति पब्लिकेशन, प्रयाग सँ 1951मे प्रकाशित अछि। कथा- शिल्पमे मैथिली गल्प- संग्रह 'रेखाचित्र' अपन विशेष स्थान छेकने अछि। मैथिली कथामे पाश्चात्य गल्प-शैलीके अनबाक श्रेय सर्वप्रथम हिनकहि छन्हि। 2- 'अतीत'-मैथिली कथा- संग्रह, मैथिली अकादमी, पटनासँ 1984मे प्रकाशित अछि। 'अतीत' मे तेरह गोट कथा संग्रहित अछि। एहिमे वस्तुतः कथाकार पाश्चात्य शिल्पसँ प्रभावित भए चिन्तन प्रधान कथाक रचना कए मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक विलक्षण उदाहरण प्रस्तुत कएने छथि। 'अतीत' क प्रकाशनसँ मैथिली कथा-साहित्य तँ समृद्ध भेवे कएल, संगहि एहि पोथीपर साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित भेलासँ पूर्वापेक्षा हिनक यशःकीर्त्ति-ध्वज आओर अधिक प्रसृत भेल। 3- 'किमधिकम्'- कथा संग्रह 2006मे प्रकाशित आ 4- बितल दिन आ बिसरल लोक- संस्मरण-2007 मे प्रकाशित। सम्पादित ग्रन्थ अछि- 1 मैथिली नवीन साहित्य-1945, 2- 'इन्प्रधनुष'- 1967, 3-

‘विद्यापति गीतशती’-साहित्य अकादेमी, दिल्लीसँ 1972मे प्रकाशित, 4- ‘पूर्वा्चलीय भाषा साहित्य एवं सांस्कृतिक पारस्परिक प्रभाव’ - चेतना समिति पटना द्वारा 1972मे प्रकाशित। एकर अतिरिक्त एक अछि अनुवाद- ‘श्री अरविन्द’ (अनुवाद)- साहित्य अकादेमी, दिल्ली सँ 1982मे प्रकाशित। अंग्रेजीमे- ‘Literary And Linguistic Studies’- 1974 मे प्रकाशित अछि।

हिनक अनेक निबन्धादि प्रकाशित अछि। मार्च 1955 वैदेहीमे प्रकाशित ‘वर्तमान मैथिली कविता : किछु विचार’, 1956- दरभंगा प्रथम अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलनक अवसर पर प्रकाशित संकलनमे ‘आलोचनात्मक समकालीन प्रवृत्ति’, मैथिली अकादमी पटनाक प्रकाशित रचना संकलनमे ‘लोकतन्त्रमे बौद्धिक जनक भूमिका’ आदि आदि हिनक श्रेष्ठ निबन्धकार एवं मर्मज्ञ समालोचक मे प्रतिष्ठापित करैत अछि।

प्रोफेसर झा साहब स्वयं सम्मानित व्यक्तिव रहथि। हिनका अनेक अवसर पर सम्मान भेल। जाहिमे मुख्य मुख्य सम्मान 1984मे मैथिली अकादमी पटना सँ ताम्रपत्र सँ, 1987मे ‘अतीत’ कथा-संग्रह पर साहित्य अकादमी, दिल्ली सँ, 1988मे चेतना समिति पटना द्वारा ताम्रपत्र सँ सम्मानित कएल गेल छल।

2003मे हिनक सम्मानमे ‘उमानाथ झा अभिनन्दन ग्रन्थ’ समर्पण कएल गेल रहनि। साहित्य अकादेमी दिल्ली सँ डा. विजय मिश्र लिखित ‘उमानाथ झा’ विनिबन्ध प्रकाशित अछि।

प्रोफेसर झा साहब एक उच्च कोटिक फोटो ग्राफर रहथि आ अपन निजी- लैब रखने रहथि। फूल-पत्तीक अर्थात बागवानीक सेहो शौकीन रहथि आ फूल प्रदर्शनीमे मनोयोगसँ भाग लैत रहथि।

श्रद्धेय उमानाथ झाक विवाह लोहनाक दलिहरए रतौलीमूलक गोपीनन्दझाक कन्या मातृकक सुभप्रादाइ आ माय-बापक बुच्चीदाइ (प्रख्यात पत्रकार श्री कृष्णानन्दझाक बहिन)सँ भेल, जाहिमे पाँच बालक आ चारि कन्या। पहिल बालक प्राचार्य डा0अरविन्द सुन्दर झा- पीजी रसायनशास्त्र, लनामिविवि, 2- स्व0 मोदनाथझा- भूगर्भशास्त्रवेत्ता, 3- स्व. राकेश कुमार झा- स्टेट बैंकक श्रेष्ठ पदाधिकारी, 4-चिकित्सक (कार्डियोलोजिस्ट) डाक्टर अनिल कुमार झा-एम.डी. तथा 5- श्री राजेश कुमार झा- वरीय पदाधिकारी भारतीय स्टेट बैंक। ज्येष्ठा कन्या श्रीमती माधुरीदाइ-क विवाह इन्द्रपुरक स्व. उमाशंकर सिंह (मैनेजर एनपीसीसी), 2- श्रीमती बालादाइक विवाह रुपौलीक स्व. विनोद झा -आईएएस, 3- श्रीमती मालतीदाइक विवाह लालगंजक चिकित्सक डाक्टर यन्त्रेश्वर झा -एम.डी. तथा 4- श्रीमती डा. नीला झा-क विवाह लालगंजक प्राचार्य डा. स्वतन्त्रेश्वर झा (पीजी रसायनशास्त्र विभाग, लनामिविवि)सँ। पौत्र पौत्री दौहित्र दौहित्री आदिक सन्तानसँ भरल पुरल परिवार वर्तमान वर्धमान छन्हि।

मिथिला मैथिलक कीर्ति-पुरुष, विद्या-विनयक प्रतिमूर्ति, बहुआयामी प्रखर व्यक्तिव प्रोफेसर उमानाथ झा दिनांक 07दिसम्बर 2009 के नश्वर शरीर त्यागि यशोकीर्तिसँ चिरस्मरणीय छथि- कीर्त्तिर्यस्य स जीवति। ओहि पुण्यात्मा दिव्यात्माकें सतीरमणक सादर नमन विनम्र श्रद्धोजलि भावकुसुमोजलि।

■



विद्वद्वर डॉ. खुशीलाल झा जीक सारस्वत-साधना

✍ रेणु झा

मनुष्य मात्र केँ ई स्वाभाविक प्रवृत्ति होइत अछि जे ओ अपन भाव तथा विचार केँ दोसरा पर प्रकट करय आ स्वयं बड़ उत्सुकता सँ दोसरक भाव आ विचार केँ सुनय और समझय-बुझय। ओ अपन कल्पनाक मदति सँ ईश्वर, जीव तथा जगत केँ विविध विषयक संबंधमे कतेको बात सोचैत अछि आ वाणी द्वारा ओकरा व्यक्त करबाक चेष्टा करैत अछि। वाणीक वरदान हुनका चिरकाल सँ प्राप्त अछि आ ओकर उपयोग ओ चिरकाल सँ करैत आबि रहल अछि। प्रेम, दया, करूणा, द्वेष, घृणा तथा क्रोध आदि मानसिक वृत्तियेक अभिव्यंजन तऽ मानव समाज अत्यन्त प्राचीन कालसँ करितहिं आबि रहल अछि, संगहि प्रकृतिक मात्र-रूपसँ उद्‌भूत सभ केँ व्यक्त करऽमे सेहो एक प्रकारक संतोष, तृप्ति अथवा आनंदक अनुभव प्राप्त करैत अछि। ई सत्य अछि जे हम व्यक्तिमे नहि तऽ अभिव्यंजक शक्ति होइत अछि आ नहि सभ व्यक्तिमे अनुभव मात्र तथा विचारोक गंभीरता सेहो एक जकाँ होइत अछि, परंच साधारणतः ई प्रवृत्ति प्रत्येक मनुक्खमे पाओल जाइत अछि। मनुस्यक नहि प्रवृत्तिक प्रेरणासँ ज्ञान आ शक्तिक ओहि भंडार केर संचय आ संबर्द्धन होइत अछि जकरा हम साहित्य कहैत छी।''1

गद्य, पद्य, निबंध, कथा, कविता आदि एकर उपादान होइत अछि आ एकर शिल्पकार होइत अछि कोनो व्यक्ति जकरा हम कवि, कथाकार, गद्यकार, नाटककार, उपन्यासकार आदिक संज्ञा दैत छी। संक्षिप्त एकरा हम साहित्यकार कहैत छी।''2 साहित्य कोन्हुँ प्रतिभाके कोनो व्यक्ति-विशेषक माध्यमे अवलोकित करबैत अछि। वर्त्तमान पीढ़ी के साहित्यकार सभमे किछु एहन पुरोधा भेलाह अछि, जनिक अन्तर्भाव आ शक्ति-स्फूर्ति के आँकब कठिन अछि। हुनका-हुनक रचना सभ के माध्यम सँ जानब-आँकब अभिष्ट अछि। अश्रुक के एहि वातावरणमे समाज के माध्यम सँ एहन रचनाकार के माने राखब केर आवश्यकता अछि। एहन रचनाकार सभमे संपूर्ण साहित्य जगतमे अपन अमिट छापऽ छोड़ऽवला अप्रतिक व्यक्तित्व छकि- डा. खुशीलाल झा। हुनक लेख, कथा, व्याख्यान, रेडियो-वार्ता, अनुवाद आदि साहित्यमे अपन प्रशस्त स्थान रखैत अछि।

डा. झा जाहि साहित्य सभक रचना कयलनि, ओकर महत्व के उजागर करऽवला समीक्षक आ प्रशंसक लोकनिक ध्यान गेल अछि। जतेक प्रतिष्ठा एवं सम्मानक अधिकारी ओ छथि, से हुनका प्राप्त भेल छनि। साहित्य रचना एक सारस्वत साधना से अपन सम्पूर्ण ऊर्जा देमऽवला श्री झाजी साहित्यमे जतेक महत्वपूर्ण रेखा सभ खींचलनि अछि, ओकर परिचिति सेहो भेल अछि। हुनका मैथिली केर अनुवाद साहित्य लेल वर्ष 2011मे देशक सर्वोच्च साहित्यिक संस्था साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार सँ अलंकृत कयलनि अछि। ई सत्य अछि। जे डा. झा अपन निष्ठा आ रचनाधर्मिता सँ साहित्य के अवदान देलनि अछि, ओ अप्रतिम आ अतिविशिष्ट अछि। साहित्यक कला-वीथी सभमे हुनक स्वर्णिम हस्ताक्षर अमिट रहत।

डा. झा अति व्यस्त क्षणमे सेहो कठिन परिस्थिति सँ जुझैत आ समाजक संक्रमणक सभ-सय, संझाबातक मध्य सारस्वत-साधनामे सदिखन तत्पर रहलाह अछि। ओ एतेक क्रियाशील व्यक्ति छथि जे छोट-पैघ प्रत्येक कार्य के ओ स्वयं करब पसिवन करैत छथि। छात्रावस्था सँ लऽ कऽ एखन धरि हुनक लेखनी अनवरत चलैत रहल अछि, मुदा अपन रचना सभके प्रकाशन केर लौल अथवा लिप्सा हुनका स्पर्श धरि नहि कयल गेल अछि। स्वातः सुखाय हुनक लेखन पाण्डुलिपि स्वरूप व निर्धारित कऽ हुनक बोझमे विश्राप पबैत अछि। तथापि सद्यः प्रकाशित बहुत रास विभिन्न विधाक रचना प्रकाशित भेल छनि। हुनका रेडियो वार्त्ता, कथा-वाचन आदि सँ साहित्यिक मंचक विज्ञजन आनंदित होइत रहलाह अछि। साहित्य समाजक दर्पण थिक आ समाज सेहो साहित्यिक दीपक थिक। साहित्यक उक्त विधा सभमे डा. झा साहित्यक जाहि विधा के अपनौलनि, ओकरा अपन तीक्ष्णता सँ धरगर बनौलनि, समाजक पीड़ित भावक पीड़ा, हुनक समस्या सभ के वर्णन-विवरण आ ओकर सपना के जे विरासत सौंपलनि से श्लाधनीय अछि। साहित्यक विकासमे हुनकर सराहनीय योगदान रहल अछि। गरीबी सँ संघर्ष करैत निरंतर साधनारत रहलाह अछि। हुनक समसामयिक रचना सभ समाज के ओकरे दर्पण देखबैत रहल अछि, समाजक दशा आ दिशा के प्रकट प्रेरित करैत रहल अछि। कखनो वादसँ हटि कऽ तऽ कखनो प्रगतिवाद, प्रयोगवादसँ, जुड़ि कऽ ओकरा प्रति प्रदान करैत रहैत छथि। विलक्षण प्रतिभाक छनि खुशी बाबू साहित्यक विविध विधा सभमे विचरण करऽवला साहित्यकार छथि।

पारिवारिक अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ करबाक लेल ओ शिक्षण-वृत्ति के चुनलनि। ओ एक यशस्वी शिक्षक भेलाह आ अवराहते परान्तो ओ शिक्षा, छात्र, समाज साहित्य सेवामे हुनक हृदय सदिखन, लागल रहैत अछि एखनो हुनक लेखनी अवाध गति सँ चलैत रहैत अछि।

मिथिलाक उत्तरी भागमे अवस्थित कमला नदीकेर पछिमी कछेर पर एक पैघ सन बस्ती पोखरभिंडामे डा. खुशीलाल

झाक जन्म 2 दिसम्बर, 1940मे भेलनि। पैघ सन परिवार आ साधनक नितांत अभावक कारण हिनका कठिन संघर्षक समाज करेऽ पड़लनि। शिक्षा-दिक्षा सँ लऽ कऽ धीया-पूता के भरण-पोषण आ संयुक्त परिवारक सम्यक विकासक लेल पैघ होबाक कारणे संषर्घक सीमाके स्पर्श कयलनि। हिनक उत्कर्षमे सभसँ सबल पक्ष रहलनि अछि हुनक-आत्मविश्वास, लगन आ कर्मठता। एकेर बल पर ओ गरीबी सँ, सामाजिक कुरीतिसँ, अशिक्षा सँ, शोषणसँ संघर्ष कऽ सकलाह। एकरे बल पर हुनकर व्यक्तित्वमे निखार आयल आ ओ मानवीय भावना केर शिखरक सीढ़ी चढ़ैत गेलाह।

डा. झाक आरंभिक शिक्षा गामहिक लोअर प्राइमरी स्कूलमे भेलनि। अपन प्राइमरीमे नाम लिखेबाक लेल हिनका गाम सँ दक्षिण 5-6 कि0मी0 पर अवस्थित मिड्ल स्कूल नारायणपुर, दरभंगामे नाम लिखब पड़लनि। जीवन सातम कक्षा उत्तीर्ण भेलाह तखन ओहि। स्कूलक कालमे पटेल उच्च विद्यालय स्थापना भऽ गेलनि। डॉ. झा ओहि विद्यालयमे नामांकन करौलनि। ओतहि 1958 ई0मे प्रथम श्रेणीमे माध्यमिक परीक्षा पास कयलनि। जाहि दिन परीक्षाफल पेपरमे प्रकाशित भेल, ओहि दिन 'इंडियन नेशन' पेपरमे मारवाड़ी कॉलेज, दरभंगामे स्थापित होयबाक विज्ञापन प्रकाशित भेल, जाहिमे प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण छात्र-छात्रा हेतु निःशुल्क शिक्षा प्रदान करबाक छात्रावासमे आवासीय व्यवस्थाक प्रबंधनक उल्लेख कयल गेल। आर्थिक निपन्नताक कारण डा. झा ओहि मारवाड़ी कॉलेजक प्रथम वर्षक आइ0ए0 छात्र भेलाह। 1960ई0मे इन्टर पास केलाकबाद ओहि कॉलेजमे मैथिली ऑनर्समे नामांकन करेलनि। आ वर्ष 1962मे अपन प्रतिष्ठा सहित बी0ए0 पास कयलनि।

एकर पश्चात डा. नौकरीक तलाशमे यत्र-तत्र भ्रमण करय लगलाह। जीवन तीन-चारि मास धरि कतहु गोटी नहि बैसलनि तखन दिसम्बरमे सी0एम0कॉलेज, दरभंगामे बिहार विश्वविद्यालय, मुजफरपुरसँ चारि विषयमे एम0ए0 पढ़ौनिक स्वीकृति प्रदान कयल गेल। जाहिमे मैथिली सेहो छल। हारि-थाकि कऽ डा. झा एम0ए0मे सी0एम0कॉलेज, दरभंगामे नामांकन करौलनि, जतऽ 1964ई0मे प्रथम वर्गमे उत्तीर्ण भेलाह।

तत्कालीन जनता कॉलेज झंझारपुरक प्राचार्य प्रो. परीक्षित मिश्र सँ डा. झा केँ योग्यता विषय पर गंभीर जनतक सँ परिचित भेलुक कारण ओहि कॉलेजमे ऑनर्सक छात्र के पढ़ेबाक लेल सहयोग देबाक आग्रह कैलथिन। डा. झा सहर्ष स्वीकार कऽ लेलथिन आ ओ पढ़ौनीक कार्य आरंभ कऽ देलथिन। संयोगवश 13.12.1965केँ कॉलेजक शासीनिकाय द्वारा व्याख्याता के रूपमे विधिवत योगदान देलनि। जतऽ सँ ओ रीडर प्राचार्य एवं विभागाध्यक्षक रूपमे वर्ष 2000 ई.मे अवकाश प्राप्त कयलनि। मिथिलाक संत साहित्यिक विशिष्ट संदर्भमे लक्ष्मीनाथ गोसाँइ गीतावलीक अध्ययन विषय पर शोध कार्य वर्ष 1983मे पूरा कयलनि आ ल0ना0 विश्वविद्यालय से डाक्टरक उपाधि प्राप्त कयलनि।

साहित्यकार समाजमे रहैत अछि तथा समाजक क्रिया-कलाप, रीति-रेवाज, रहन-सहन, समस्या आदि केँ देखैत रहबाक कारणे ओकरा मोनमे प्रतिक्रिय होइत छैक, जकरा ओ अपन लेखनी सँ अभिव्यक्ति दैत छैक। समाजक पूर्णरूपेण चित्रण करबाक ओ सतत प्रयास करैत रहैत अछि। समाजमे ढ़ेर समस्या छैक तैं समस्याकेँ ध्यानमे रखैत समाजक चित्रण कएल जाइछ। प्रायः सभ साहित्यमे ई बात देखल जाइछ। साहित्यक तथ्य केँ कल्पनाक पुट दय ओकरा मनोरंजन बनएबाक प्रयास सेहो कयल जाइछ। एहि सँ रोचकताक दृष्टिसँ ओ कृति बेशी पढ़लो जाइत अछि।''3

युगानुसार समाजमे क्रमिक परिवर्तन होइत रहैत अछि। आ जेना-जेना समाज परिवर्तित होइत अछि साहित्यमे साहित्यकार अपन अभिव्यक्तिक द्वारा परिवर्तन करैत रहैत छकि आ ओएह परवर्ती समाजक लेल प्रेरक अनुसरणीक आ सोचनीक बनबैत अछि। कारण साहित्यकारे समाजक प्रतिबिम्ब छथि। ई सभ साहित्यमे देखल जाइत अछि। अपन सारस्वत साधनाक बलेँ साहित्यकार परवर्ती समाज के किछु दैत अछि आ अपनो लेल किछु संग लऽ कऽ जाइत अछि। साहितय साधना अर्थात् सारस्वत साधनाक दूर धरि प्रतिफल सोझाँ अबैत अछि। एहने सारस्वत-साधक छथि- डा. खुशीलाल झा, जे अपन साहित्य साधनाक बलेँ साहित्य जगतमे नाम कयलनि अछि आ समाज केँ अपन साहित्यक माध्यमे बहुत किछु देलनि अछि। डॉ. झा एकांग कथा, अनुवाद, विनिबंध, आलेख, शोध, संपादन, व्याख्यान, रेडियोवार्ता पर अपन लेखनि चलौलनि अछि। ओहि विधाक हुनकर रचना पर संक्षिप्तः विमर्श सोझाँ राखब एहिठाम हमर अभिष्ठ अछि-

1. कथाः- कथा गद्यक एक सशक्त विधा थिक। एकर सर्वप्रथम वर्णन भामहकृत 'काव्यांलकार'मे प्राप्त होइत अछि।''4 हुनका अनुसारे, एकर संस्कृत, प्राकृत अथवा अप्रभंश कोनोमे भऽ सकैत अछि। कथा कहबाक परम्परा तँ प्रायः सभ समाजमे अति प्राचीन रहल अछि, किन्तु ओकर अभिव्यक्ति समय-समय पर स्वरूप परिवर्तित करैत रहल अछि। कथा मैथिली साहित्यक सर्वाधिक सशक्त ओ लोकप्रिय विधा थिक। कथाक माध्यमसँ मानव-जीवनक आह-छोह, नेह-दोह, आशा-आकांक्षा आदि विभिन्न पक्ष सरल ओ सहज रूपेँ उतरि अबैत अछि। मौलिक मैथिल कथा लेखन-विगत शताब्दीक पहिल दशकमे प्रारंभ भेल जे अद्यावधि एकटा विशिष्ट विधाक रूपमे स्थापित अछि।''5

उपर्युक्त संदर्भमे डा. खुशीलाल झा सेहो एहन मैथिलीक कथाकार छथि जे अपन कथा सँ उपयुक्त संबंधित प्रवृत्तिक कथा

लिखबामे सिद्धस्त छथि। हुनक कतेको कथा प्रकाशित छनि वेऽ कतेको अप्रकाशित।

2. अनचिन्हारः- 'अनचिन्हार' नामक कथा संग्रह, डॉ. खुशीलाल झाजीक मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा सँ 2005ई.मे प्रकाशित अछि, जाहिमे 21 गोट कथा अछि। एहि सँ पहिने प्ररोक्य अछि। एहि कथा संग्रहमे सभ कथा हास्य रस सँ ओत-प्रोत अछि, जे पाठककेँ पढ़वामे रोचक लगैत छनि। जेना 'बुढ़ारी कथा के लेल जाय तँ एहिमे वृद्ध-विमर्श पर विस्तारसँ चर्चा कयल गेल अछि। संयुक्त परिवारक विघटन भेला सँ आब एकल परिवार बनल जा रहल अछि जकरा डॉ. झा M.B.B.S. (मियाँ बीबी, बच्चा सहित) कहने छथि। 'परहस्त गता-गता'मे अनका पोथी देलासँ पोथी के की दुर्गति होइत छैक ताहि पर कथाक माध्यम सँ विस्तार सँ दृष्टांत उपस्थित कयल गेल अछि। एहि विषयमे कहल गेल अछि- लेखनी पुस्तकी द्वारा परहस्त गतायदि आगता देव योगेनः नव्य, भ्रष्ट च मर्हर्दिता। एहि रूपक 'कुटमैती' कथामे वर एवं कन्या के विषयमे चयन करबाक लेल कन्यागत केँ कतेक बेलना बेलऽ पड़ैत छनि, ताहि पर विस्तार सँ कथाक माध्यमसँ विवेक कयल गेल। वरक चयनमे सातटा वस्तुक ध्यान देब आवश्यक अछि, से निम्न स्पष्ट कयल गेल अछि। एहि तरहेँ डॉ. झाक एकैसों कथा अपन-अपन विशिष्टता लऽ कऽ उपस्थित कयल गेल। सभ कथा अपना-अपना क्षेत्र अपूर्व छनि। एहि ठाम पोथीसँ किछु पाँती जे पोथीक प्लेटे पर उद्धत कयल गेल, सर्व सुलभ हेतु ताहिमे से किछु पाँती निम्न रूपेण द्रष्टव्य अछि-

विद्वानक शोभ विद्वता सँ बेसी हुनक नम्रतामे छनि, उदण्डतामे नहि। आचरण केर श्रेष्ठताक सत्यापन आचार-व्यवहार ओ श्रेष्ठताक प्रमाण थिक। तोहर विचारक डिबिया मिझा गेल छहु तैं आचार-आन्हर भऽ गेल छहु।

पोथीसँ बढ़ि दोसर मित्र के भऽ सकैत अछि। आइ काल्हुक मित्र तँ किछु लेबाक उमेरमे बेहाल भेटथुन मुदा नीक पोथी तँ किछु देबे करतहु, लेतहु किछु नहि।

रोदना पसरि कहऽ लगलथिन- हम तँ आँगनमे तुलसीक स्थान पर नागफनी रोपि लेलहुँ अछि। ई बिखक अमरबेल भऽ गेल। विधाताक केहन विडम्बना छनि जे अपनत्वक कारण एकर पूजा आँखिक नोर ओ प्रेम सँ करऽ पड़ि रहल अछि।''6

शोधः- डा. खुशीलाल झाक शोध समीक्षा आ आलोचनात्मक कार्य सेहो महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। डा. झाक एहि विधाक संदर्भित दूटा पोथी छनि-

1. साहित्य अकादमी, दिल्ली सँ 2000ई.मे भारतीय साहित्यक निर्माताक श्रृंखलामे 'लक्ष्मीनाथ गोसाईं नामक पोथी जे महत्ता के दर्शबैत अछि। ई. 115 पृष्ठक पोथी अछि। जाहिमे कवर पेजक बैक पृष्ठमे डा. झा गोसाईंनीक संबंधमे कहैत छथि-

'मिथिलाक महान विभूति लक्ष्मीनाथ गोसाईं मैथिली साहित्यक एकटा विशिष्ट संत कवि छलाह। हिनक स्थितिकाल अठारहम शतकक अन्तिम दशक ओ उन्नैसम शतकक आठम दशकक मध्य (1788-1872) छलै जे भारतीय इतिहासक महासंक्रांति काल मानल जाइछ। लक्ष्मीनाथ गोसाईं सिद्ध योगी, निष्णात तांत्रिक, अैत वेदान्ती ओ समाजसेवी रहितहुँ अपन वृहत काव्य सर्जनक माध्यम सँ ज्ञान, भक्ति ओ उपासनामे समन्वय स्थापित कयलनि। दीक्षा-गुरू लम्बनाथ गोस्वामी (गुरू गोरखनाथक शिष्य प्रशिष्ट परम्पराक) आदेशानुसार भक्ति-भावसँ अभिभूत भऽ भगवत भजन ओ कीर्त्तनक उद्रेकमे सहस्त्रादिक गीतावलीक रचना कयलनि जे मिथिलाक जनमानसमे हिनक ख्यातिक प्रमुख स्रोत बनि गेल। गोसाँईजीक गीतावली महाकालक बंधनसँ मुक्त परंच प्रबंध कालक गरिमा सँ युक्त अछि।

लक्ष्मीनाथ गोसाँइक प्राक्तन संस्कार, काव्य-प्रतिभा, सारस्वत-साधना, जीवन्त कल्पनाशक्ति, विलक्षण वस्तु-विधान, सशक्त-भाव-भूमि, अनुपम अभिव्यक्ति, समृद्ध भाषाशैली, सामाजिक लोकाचार, नैतिक दार्शनिक विचार, विविध राग-गाल समाश्रित गीतावली छंद ओ भास एवं प्रमुख रसालंकारिदक प्रयोग हिनक काव्य-कौशल, बहुआयामी व्यक्तित्व ओ वृहत् कृतित्वक निकष थिक। एहि रूपेँ लक्ष्मीनाथ गोसाँईक काव्यकृति भारतीय-साहित्यक लेल महत्वपूर्ण अवदान ओ अनागत साहित्य-स्तष्टाक हेतु चिरस्थायी प्रेरणा स्रोत बनल रहत।

2. ई जनतब पूर्वहि देलहुँ अछि जे डॉ0 झा पी-एच.डी. हिनके पर शोध प्रबंध प्रस्तुत कयने छलाह जे शोध प्रबंधक पुस्तकाकार वर्ष 2021मे प्रकाशक विन्द कुमार झा, झंझारपुरक इ माध्यम पोथी सेहो आयल। ई कथनिका, प्ररोवचन, विषय सूची सहित छह अध्याय, उपसंहार आ परिशिष्टमे राखल गेल अछि, जे 558 पृष्ठक अछि। ई. एकर महत्व स्वतः स्पष्ट अछि।

3. विनिबन्धः- हिनक दू गोट विनिबंधक पोथी साहित्य अकादमी, दिल्ली प्रकाशित अछि जाहिमे पहिल लक्ष्मीनाथ गोसाँई नामक विनिबंध पूर्वमे देल गेल अछि। दोसर विनिबंध अछि- ''बाबू गंगापति सिंह'' पर। इहो साहित्य अकादमी, दिल्ली सँ 2020ई.मे प्रकाशित भेल अछि।

बाबू गंगापति सिद्धिक प्रसंग डा. खुशीलाल झाक कहब छनि जे- जाहि कोटिक ई विद्वान छलाह एवं जतेक रचना कयलनि ताहि रूपमे हिनक ख्याति मिथिलामे नहि भेलनि। हिनक सभसँ पैघ विशेषता ई अछि जे बी.एक. मात्र धारण कऽ ई कलकत्ता विश्वविद्यालयमे जखन 1917ई.मे एम.ए. कक्षा धरि अध्यापनक स्वीकृति भेटल तखन मैथिलीक आद्य व्याख्याताक रूपमे बाबू गंगापति सिंहक नियुक्ति कयल गेलनि। बाबू गंगापति

सिंहक विषयमे यद्यपि मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनि हिनक नाम उल्लेख तँ सभ कयलनि अछि हिनक रचना विषयमे विशेष उल्लेख अल्प मात्रामे भेटैत अछि। बाबू साहेब राज दरभंगाक खण्डवलाक रूपमे जन्म लऽ मधुबनी जिलाक मधेपुर प्रखण्डान्तर्गत पचही ड्योढ़ी भेल छलनि। ई सहज, सरल ओ सामान्य प्रकृतिक विद्वान छलाह। ई घुमंत साहित्यकार सेहो छलाह। नातम जाथि ताहि ठाम कागत मांगि किछु लिखि लैत छलाह। सुमनजीक कहब छनि जे- बाबू साहेब किछुए समयमे कागजतक ओर सँ छोर भरि दैकि। बाबू साहेब जतेक लिखलनि तकर संग्रह ने तँ ओ स्वयं कऽ गेलाह आ ने हुनक वंश जे लोकनि धरोहर रूपमे संयोगि कऽ रखलथिन। तथापि बाबू साहेबक दू गोट रचना प्रकाशित भेल छनि जाहिमे पहिल-मैथिली बाल-व्याकरण दोसर सुशीला उपन्यास।?'' ई व्याकरण विशुद्ध मैथिलीक भाषमे लिखल गेल मैथिली साहित्यक पहिल व्याकरण थिक। सुशीला उपन्यास तत्कालिक समाजमे प्रचलित बाल विवाह सँ उत्पन्न पीड़ा-बोधक दृष्टांत देखाओल गेल अछि। छह ओ सात वर्षक वयसमे सुशीलाक विवाह पचास वर्ष सँ बेसी वयस्क वृद्ध वनमाली झा सँ कयल जाइत अछि जे सासुर आ नैहर दुनू ठाम सँ उपेक्षित रहि स्वयं बाध्य भऽ आत्महत्या कऽ लैत छथि एवं सासुर नैहर दुनू परिवार सुड्डाह भऽ जाइत अछि।

4. संपादनः- ग्रंथ लेखन सँ बेसी मेहनति आनक कृतिरूप ग्रंथक सम्पादनमे होइत छैक। आनक मनोभावक संग अपन मनोभावक तादात्मयक प्रयास कयला पर ई संभव छैक जे कृतिक अभिप्राय केँ आत्मसात कऽ प्रकरण-विभाग, पाराग्राफक विभाजन, अनुरूप ओ अनुकूल शब्दक समावेश, अक्षर शुद्धिक निराकरण, त्रुटिक पूर्ति एवं संदिग्ध स्थलक निर्णय आदिमे संपादक समर्थ होइत अछि। तैं सावधानी आ दायित्वबोधक हेतु सतत् जागरूकताक सम्पादक समर्थ होइत अछि। तैं सावधानी आ दायित्वबोधक हेतु सतत् जागरूकता सम्पादन केँ राखए पड़ैत छैक। प्राचीन हस्तलेखमे एकहि शिट्रेरेखामे पूरा पंक्ति लिखल रहने पूर्ण विराम तथा अर्द्धविराम आदि चिन्हक नहि रहलासँ अर्थानुसंधानक हेतु कएहटा साधन रहि जाइत छैक। फलितार्थ जे सम्पादन ग्रंथ लेखन सँ कठिन होइत अछि।''7

डॉ. खुशीलाल झा एक कुशल सम्पादक सेहो छलि। हिनका द्वारा बहुत रोस पोथी-पनिक-स्मारिका आदि सम्पादित अछि। एहि ठाम मात्र एकटा पोथीक संक्षिप्त मूल्यांकन करब समीचीन प्रतीत होइत अछि- डा. खुशीलाल झा द्वारा सम्पादित 'सुदामा चरित' खण्डकाल अछि। जकर रचयिता कनि हरि नंदन दास बैगनी, नवादा (दरभंगा) निवासी छलाह। एहि खण्ड कालमे कृष्ण-सुदामा मैदिक पराकाष्ठा देखाओल गेल अछि। कृष्ण-सुदामा मैत्री भारत-विख्यात अछि। कृष्ण द्वारा सुदामाक आतिथ्य सत्कारमे हुनक चरण पखारबाक दृश्य पोथीक मुख पृष्ठ पर देल गेल अछि से श्री कृष्णक सहज स्वाभावक प्रतीक मानल जाइत अछि। कृष्ण-सुदामाक मैत्रीक संगहि कवि अपन गामक वर्णन सेहो कयने छथि। जकर उल्लेख पूर्व कथनमे विस्तार सँ कऽ देल गेल अछि। ई पोथी नवोदय प्रकाशन, दरभंगा सँ 1969ई.मे भेल छनि, जे एकर दोसर समीकरण थिक। जहिन समीकरण जे 1967ई.मे भेल दल से आब उपलब्ध नहि अछि। एहि पोथीक सम्पादनमे डॉ. झा सम्पादन कार्यक सभ पक्ष पर विचार कयलनि अछि।

एकर अतिरिक्त 'नवचेतना मंच', स्मारिका जे झंझारपुर सँ विद्यापति पर्व समारोहक अवसर पर प्रकाशित भेल छल तकर प्रधान सम्पादनक दायित्व निर्वाह स्वयं डा. झा कयने छलाह। दोसर झंझारपुर अनुमण्डलक रचत जयंतीक अवसर पर अनुचिन्तन नामक स्मारिका 1998मे प्रकाशित भेल जकर सम्पादक मंडलमे डॉ. खुशीलाल झा सभसँ प्रमुख भूमिकाक निर्वाह कयलनि अछि।

एहि तरहेँ निष्कर्षत ई कहल जा सकैत अछि जे सम्पादन साहित्य प्रभा आ शास्त्र निपुणताक समन्वय थिक। सम्पादन-चिन्तन मनन आ कार्यान्वयन निष्पादनक संगम थिक। सम्पादन विषय वैदुस्य आ विधा वैविध्यक गठबंधन थिक। सम्पादक सिद्धान्त आ व्यवहारक मिलन बिनु थिक। सम्पादन एकटा दृष्टि बिन। ई दृष्टि कम अनुभव गम्य बेसी होइत अछि। सम्पादन खेल रचनाक प्रस्तुति नहि ओकर टीका, भाष्य आ समीक्षा सेहो होइत अछि। एहि संदर्भमे डॉ. खुशीलाल झा एक कुशल सम्पादकक निर्वाह कयलनि अछि।

5. व्याख्यानः- भाषण आ व्याख्यान आदि मुनष्यक पूर्ण व्यक्तित्वक आदर्श गुण होइत अछि। ई एकटा आवश्यक शर्त सेहो। भाषण ओ व्याख्यानमे प्रवीणता ओहि व्यक्तित्वक क्षमता केँ दर्शबैत अछि। आर्थिक व्याख्यान हो अथवा साहित्यकार कोनो विधाक, सभमे अनिवार्य रूपेँ ज्ञान-भंडारक सेहो आवश्यकता पड़ैत छनि। डॉ. खुशीलाल झा एक साहित्यकार तऽ थिकाहे एक व्याख्याता ओ टिप्पणीकार सेहो छथि। एहि क्रमे हुनक अनेको व्याख्यान ओ टिप्पणी रेडियो वार्त्ता के रूपमे भेल अछि। एहि ठाम ओहि व्याख्यान ओ भाषणक किछु अंश प्रतीकात्मक रूपमे द्रष्टव्य भऽ सकैत अछि-

सर्वप्रथम 1972ई.मे जखन दरभंगामे रेडियो स्टेशनक स्थापना नहि भेल छल, मात्र रेकार्डिंग स्टूडियोक स्वीकृति भेटि गेल छल ताहि समयमे डॉ. खुशीलाल झाक दस मिनटी रेडियो वार्त्ता' लक्ष्मीनाथ गोसाँई पर भेल छल। जकर प्रसारण पटना रेडियो स्टेशन से भेल छल। हुनका एहि लेल 25 टका पारिश्रमिक भेटल छलनि। तत्पश्चात दरभंगामे रेडियो स्टेशनक स्थापना भेल तऽ हास्य वार्ताकारक रूपमे डा. झा केँ बरोबरि बजाओल जाइत रहलनि। एकटा प्रमुख वार्ता छल जय बारिक भोज। जाहिमे 108

गामक ब्राह्मणकेँ निमंत्रण देल गेल छल। गामक चौहद्दी निम्न रूपेण देल गेल छल उत्तरमे नरूमार, दक्षिणमे सझुआर, पूरबमे बरूआर ओ पछिममे टटूबार। एतेक गामक ब्राह्मण एहि जयबरिक भोजमे सम्मिलित भेल छलाह। एहि भोजमे पहिल भोग हाथीके लगाओल गेल छल। ई हास्य वार्त्ताक रूपमे खूब प्रचलित ओ प्रशंसित भेल छल। एहि तरहेँ पन्द्रह-सोलह गोट रेडियो वार्ता डॉ. झाक खूब विशिष्ट हास्य रसयुक्त दरभंगा रेडियो सँ प्रसारित भऽ चुकल छनि, जे डॉ. झाक विशिष्टता के परिचायक अछि।

6. अनुवादः- अनुवाद एक गोट कला थिक। एहि केर माध्यमे एक भाषाक शब्दार्थ के दोसर भाषाक शब्दक द्वारा अभिव्यक्त कयल जाइत अछि। मुदा प्रत्येक भाषाक शब्द केँ ओकर निहितार्थ सहित दोसर भाषामे अभिव्यक्त करब सर्वथा कठिन होइत अछि आ तैं एक भाषाक शब्द द्वारा अभिव्यक्त कोनो मूल भाव केँ दोसर भाषाक शब्दमे अन्तरित करबामे ई कोनो भाषामे अभिव्यक्त भैइये जाय तथापि अनुवादक मूलक भाव केँ अत्यन्त निकट धरि दोसर भाषामे प्रकट करब धरि अनुवादक सीमा बुझैत छथि। अनुवादक सफलता एहि तथ्य पर आधारित रहैत अछि जे एक भाषाक शब्दार्थ कोन हद धरि मूल भाषाक निहितार्थ केँ दोसर भाषामे अभिव्यक्त कऽ पबैत अछि।''8

अनुवादक प्रक्रिया अत्यन्त जटिल होइत छैक। अनुवादक पहिने मूल भाषाक भावके सम्पूर्णतामे ग्रहण करैत छथि आ ओकरा आत्मस्थ कऽ लैत छथि। ततः पर ओ जाहि भाषामे अनुवाद करऽ चाहैत छथि, भाषाक एहन शब्दक चयन करैत छथि जे सम्पूर्णतामे वा मूलभावकेँ अत्यन्त निकट धरि प्रकट करबामे सफल हो। स्वभावतः अनुवादक प्रक्रिया कायान्तरणक सादृश्य रखैत अछि। जाहिमे भाषा पृथक-पृाकि रहैत अछि मुदा अभिव्यक्त अर्थ ओ वाक्य-भंगिमा सदृको भऽ जाइत अछि, देह दू रहितो आतमा एके भऽ जाइत अछि।''9

डा. खुशीलाल झा जीक अनुवादक तीन गोट मोटगर पोथी साहितय अकादेमी, दिल्ली सँ प्रकाशित छनि। जे क्रमशः गुजराती, बांगला ओ मराठी भाषा सँ अनुदित छनि। ई जनतब देब आवश्क अछि जे बंगला, असमिया, नेपाली, उड़िया आदि भाषासँ अनुवाद जतेक सहज ओ सरल होइत अछि ततेक पश्चिमांचलक भाषा गुजराती, मराठी ओ दक्षिणक भाषा तमिल, तेलगु, कन्नर, मलयालम आदि सँ अनुवाद करब ओतेक सरल नहि होइत अछि। कारण बंगला असमी सभ तँ मैथिलीक सहोदरा बहिन छथहिन तैं एहि सभ भाषा थोड़-बहुत ज्ञान सभ अनुवादक केँ रहैल छनि, परंच तमिल, तेलगु ओ पश्चिमक भाषा गुजराती, मराठीक ज्ञान अनुवादकेँ अल्प रहैत छनि।

मैथिली भाषामे अनुवाद कार्य बंगलासँ आरंभ भेला एवं बंगला भाषी लोकनि यथा बंकीमचन्द्र, शरतचन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर अंग्रेजी सँ अनुवाद आरंभ कयलनि।

डॉ. खुशीलाल झाक गुजराती भाषा सँ अनुवाद 'उपवास कथा त्रयी' छनि, जे मूलरूपमे तीन खंडमे क्रमशः ऊपरवास, सहवास एवं अन्तरवासमे विभाजित अछि। एकर मूल लेखक डा. रघुवीर चौधरी गुजरात विश्वविद्यालयक तत्कालीन हिन्दी विभागाध्यक्ष छलाह। प्रस्तुत ऊपरवास कथात्रयी साहित्य अकादमी से 1977मे संस्कृत भेल। आ पुनः डॉ. चौधरी द्वारा एकर हिन्दी अनुवाद सेहो साहित्य अकादमीसँ प्रकाशित भेल। वर्ष 2007मे मैथिलीभाषामे एकर अनुवाद डा. खुशीलाल झा द्वारा कयल गेल जे 723 पृष्ठमे सँ मेहगर आकर्षक रूपमे अछि। डा. झा के एक एहि अनुवादक लेल वर्ष 2011ई.मे साहित्य अकादमी द्वारा अनुवाद पुरस्कार सँ सम्मानित कयल गेल छनि।

डा. झा उक्त पोथी के अनुवाद मैथिलीमे हिन्दीमे जकाँ एके खण्डमे तीनू खण्डमे समाहित कऽ देने छथिा। ओ एहि पोथीमे मैथिलीमे अनुवाद करैत पोथी के संबंधमे पोथीक नामकरणक व्याख्या करैत कहैत छथि जे ऊपरवासक अर्थ गुजरातीमे होइत अछि-पहाड़ी आदि ऊपर सँ बरिसल पानि नीचाँ आबि ओहासी बनि जे नदी पोखरि आदिमे प्रवाहित होइत अछि तकरे पर्यायवाची शब्द थिक, ओ आगाँ लिखैत छथि- ''ऊपरवास कथात्रयी एक एहन उपन्यास अछि जाहिमे स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात् उत्तर गुजरातक पाँच-सात गामक वाह्याभ्यंतर संघर्ष चरित्रक माध्यम सँ आलेखित भेल अछि। जाहि चरित्रक द्वारा लेखक अपना प्रति निमर्म बनलाह अछि ओहि लवजीक अपन गामक सामाजिक आर्थिक स्थितिक बड़ निधोख परिचय ओ देशक राजनीतिक गतिरोधक प्रति गंभीर असंतोष छैक। ओ देखि रहल अछि जे ओहि आन्हर-संघर्षमे स्नेह ओ सौहार्दक वातावरण लुप्त भेल जा रहल छैक जेना सोमपुराक इनार सभक पानि सुखायता जा रहल छैक।''10

डा. झाक दोसर अनुवादक पोथी थिक- 'तिस्ता पारक वृतांत्त', जे जकर मूल लेखक छथि बंगला साहित्यकार प्रख्यात विद्वान लेखक श्री देवेश राय। ई साहित्य अकादमी सँ पुरस्कृत ओ प्रकाशित अछि। डा. झाक ई पोथी उपरोक्त पोथीमे जकाँ मेहगर 647 पृष्ठक अछि। पोथीक प्रसंग डा. झा रहैत छथि- ''तिस्तापारक वृतांन्त (तिस्ता पारेर वृतान्त) तिस्ता नदीक कतबहिमे बसल एकटा गामक किसान विद्रोह पर आधारित एक वृहदाकार औपबन्धिक कृति किश ई कृति समकालीन बंगलामे लिखित भारतीय साहित्य लेल महत्वपूर्ण योगदान मानल गेल अछि। एहि उपन्यासमे ने कोनो नायक अछि, ने नायिका। एहिमे जीवनक ओ रूप प्रस्तुत अछि जे गामवासी जीबैत अछि। एहि कृतिमे वन्य प्रकृति, नदी, जंगल, वनांचल ओ हाट-बाजार एवं उत्सव सभक

अंकन बड़ सहज रूपें कयल गेल अछि। अपन सूक्ष्म निरीक्षक एवं सामाजिक ऐतिहासिक प्रक्रिया सभक संवेदनशील बोध लेल जे मानव अपना लेल सृजित करैत अछि वा जहि बन्हनमे ओ स्वयं बन्हा जाय चाहैत अछि, ओकर विवाद चित्रण अछि।''11

एहि पोथीक अनुवाद मैथिलीमे ततेक सहज एवं सरल लगैत अछि से मूल पोथीक भाव बुझबमे कोनो कठिनाई नहि होइत अछि। इएह विशेषता डा. झाके अनुवादमे अछि।

डा. झाक तेसर अनुवाद मैथिलीमे पोथी अछि-के ध्यान दैत अछि। जकर मूल लेखक मराठी भाषाक प्रख्यात विद्वान हरिनारायण आप्टे महोदय छथि। ई. पोथी वर्ष-2021मे साहित्य अकादेमी सुदितनी सँ प्रकाशित अछि। इहो उपरोक्त दूनू उपन्यासे जकाँ महेगर रूपमे पृष्ठ-400मे अछि एकर मूल पोथीक नाम अछि- ''पण लक्षांत कोण घेटो।''

पोथी माँदे डा. झाक कहब छनि जे- ''प्रस्तुत उपन्यासमे नायक-नायिकाक स्थान पर एक मध्यमवर्गीय अल्प शिक्षित किशोरी (यमुना देवी) द्वारा अपन संघर्षमय जीवन गाथा लिपि, जकरा ओ अपन 'जीवनी' कहलनि अछि, भारतीय सार्वजनिक जीवनमे नारीक दशा ओ दिशाके ध्यानमे राखि आदर्श नारीक जीवनकें प्रतिबिम्बित कयलनि अछि। यद्यपि उपन्यासकार आंतरिक ओ वाह्य स्वरूप आंचलिक अछि तथापि जँ एक दिश लोक-चेतनाकें सम्बद्ध नहि होयबाक कारण पीड़ाबोधक अनुभूति होइत अछि तँ दोसर दिश नारी-चेतनाकें माध्यम सँ ओहि चेतनाक क्रियात्मक स्वरूपक उद्‌घाटन सेहो होइत अछि।' के ध्यान दैत अछि? उपन्यासक यथार्थ बहुस्तरीय रहलहु पर पोथीक मूल केन्द्र बिन्दुमे यमुना देवीक सतत ओ सर्वत्र उपस्थिति सँ हुनक चारूकात उपन्यासक कथावस्तु चकमाउर लैत अछि। एहि आधार पर एहि उपन्यासकें आत्मकथात्मक उपन्यास सेहो कहल जा सकैछ।''12

उपरोक्त तीनू उपन्यासमे डॉ0 खुशीलाल झा विलुप्त भेल जपूत मैथिलीक भाषाक गोटेक हजार ठेठ शब्दक प्रयोग केलनि, जे उपन्यासक लालित्यमे रोचकता प्रदान करैत अछि।

अस्तु निष्कर्षतः संक्षेपमे उपरोक्त विषय पर विमर्शोपरान्त ई स्पष्ट होइत अछि जे डॉ. खुशीलाल झा जीक सारस्वत साधना बहुमुखी प्रतिभा सँ संयुक्त अछि। हिनका साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कारक अतिरिक्त अनेक दर्जन सम्मान विभिन्न साहित्यिक संस्थान सँ सम्मानित कयल गेल छनि। डा. झा बहुत रास पद के सेहो सुशोभित कयने छथि। संगहि साहित्य अकादेमी मैथिली परामर्श समितिक सदस्य रहि चुकल छकि। अद्यावधि 83-84 वर्षक उमेरमे हिनक वर्ष 2020 एवं 2021 ई.मे तीन गोट पोथी लगातार प्रकाशित भेल अछि, जे हिनक सारस्वत साधनाक प्रबल प्रमाण सुस्पष्ट अछि।। एखनो जँ हिनका आवास जा कऽ देखल जाय तँ ओ मोटगर चश्मा आ हाथमे कलमकेर संग किछु लिखैत आ किछु पढ़ैत भेटताह।

संदर्भः-

1. मैथिली लोक महागाथाः कारिख पंजियार, डॉ. महेन्द्र नारायण राय हीरा प्रकाशन, खुटौना, पृ0-193
2. मैथिली लोकसाहित्य आ डॉ. महेन्द्र नारायण राय : पंकज कुमार प्रभाकर, नवारंभ प्रकाशन, 2019ई., पृ0-173
3. श्री राम लषण राय 'रमण' : व्यक्तित्व ओ कृतित्व : डा. बुचरू पासवान, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना-2014ई. पृ0-70-71
4. हिन्दी भाषा अैर साहित्य की भूमिका, पृ0-301
5. तात्पर्य : डॉ. अशोक कुमार मेहता : जखन-तखन, पृ0-21
6. अनचिन्हारः डा. खुशीलाल झा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी कवितापुर, वर्ष 2005, पृ0-लैक पर
7. अर्चाः ओ चर्चा : पं. श्री गोविन्द झाः प्रथम सम्पादक-प्रो0 श्री आनंद मिश्र, आलेख-डा. किशोरनाथ झा, पृ0-17-18
8. लोकरंजन : डॉ. महेन्द्र नारायण राय : नवारंभ, पटना वर्ष-2019ई., पृ0-29
9. वएह
10. उपरवास कथात्रयी : डा. खुशीलाल झा, मैथिली अनुवाद, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2007ई.
11. तिस्ता पारक वृतांत : डा. खुशीलाल झा, मैथिली अनुवाद, साहित्य अकादेमी, दिल्ली वर्ष-2011ई.
12. के ध्यान दैत अछि? : डा. खुशीलाल झा साहित्य अकादेमी, वर्ष-2021ई.

■

डॉ. किशोर नाथ झा

✍ अमल कुमार झा

2009 ई० मे वसुन्धरा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेशसँ शारीरिक असमर्थताक कारणें नौकरीसँ त्याग पत्र दए जखन हम अपन गाम पाहीटोल वापस अएलहु तखन किछु दिन गृह कार्यमे व्यस्त रहलहु। जखन घर व्यवस्थित भेल आ हम किछु पढबाक हेतु जिज्ञासा प्रस्तुत कएलहु तऽ हमर एकटा शुभचिंतक हमरा न्याय शास्त्र पढबाक परामर्श देलैन्हि। हम मिथिलाक ज्ञान परम्पराक मूल न्याय शास्त्रक उचित ज्ञान प्राप्त करबाक प्रयास करबाक उद्देश्यसँ प्राचीन न्यायक नीक पण्डितक खोज करए लगलहु। हमर आचार्य गुरु परमादरणीय श्री तारा नाथ झा हमरा प्राचीन न्यायक नीक पण्डितक रुपमे बिट्ठो ग्राम निवासी परमादरणीय डा0 किशोरनाथ झाक परिचय हमरा देलैन्हि जे अवकाश प्राप्त कए अपन गाम बिट्ठो आबि रहि रहल छलाह। गुरुजी हमरा कहलैन्हि डा0 किशोरनाथ झा अहाँक मातामह आ पितामह दूनू छियथि ते ँ अहाँ सहर्ष न्याय शास्त्रक उचित ज्ञान प्राप्त करबाक हेतु हुनकासँ सम्पर्क कऽ सकैत छी। हम ओही दिन पएरे बिट्ठो परमादरणीय डा0 किशोरनाथ झाक आवास पर जा भेंट कए आशीर्वाद प्राप्त कएलहु आ अपन न्याय शास्त्रक उचित ज्ञान करबाक जिज्ञासा प्रस्तुत कएल। परमादरणीय डा0 किशोरनाथ झा हमर उद्देश्य बुझि बड आह्लादित भेलाह। कहलैन्हि न्याय शास्त्रक विकास हेतु नव विचारक जिज्ञासुक बड बेसी आवश्यकता छै। हम अहाँक जिज्ञासाक हर सम्भव उचित उत्तर देबाक प्रयास करब। अशेष शुभकामना ओ आशीर्वाद दैत छी न्याय शास्त्र पढबाक इच्छा हेतु।

हम पुछलियैन्हि अपनेक गामक नाम बिट्ठो कोन कारणे राखल गेल?

परमादरणीय डा0 किशोरनाथ झा कहलैन्हि बिट्ठू मिश्रक नाम पर हमर गामक नाम बिट्ठो राखल गेल। बिट्ठ मिश्र एहि गामक निवासी छलाह जे एक समयमे तीन टा देह धारण कए तीन ठाम देखल जाइत छलाह। बिट्ठ मिश्र एक समयमे दिल्ली दरबारमे, नेपाल दरबारमे आ अपन गाममे देखल जाइत छलाह। नीक विद्वान छलाह आ सिद्ध छलाह। आब बिट्ठो मिश्रक संतति बिट्ठो गाममे नहि छथि।

हम पुछलियैन्हि - अहाँ सब एहि गाम कहिया आबि बसलहु? ओ उत्तर देलैन्हि - हमरासँ सात पुस्त पूर्वक हमर पूर्वज सुप्रतिष्ठित नैयायिक जगन्नाथ झा बेहटक निवासी कर्महे बेहट मूलक वत्स गोत्रीय अवदात श्रोत्रिय ब्राह्मण अपन मातृक बिट्ठो आबि बसलाह। हिनक मातामह शाण्डिल्य गोत्रक सोदरपुरिए हाटी मूलक हरिराम मिश्र बिट्ठोमे बसैत छलाह। सुनल अछि हुनका अपना पुत्र नहि ते ँ दौहित्रके ँ बसौलैन्हि।

हिनक तीन गोट बालक- भवानी दत्त झा, रमा दत्त झा आ वेणी दत्त झाक सन्तति बिट्ठो आ गामक सटले पश्चिम हाटी तथा कालक्रमे हाटीसँ कल्याणपुर जाए बसलाह, जे सब सम्प्रति वर्तमान वर्धमान छथि।

भवानी दत्त झाक सन्तति बिट्ठोक दक्षिणवारि टोलमे तथा सरिसबमे दू घर आ एक घर गंगौलीमे बसैत छथि।

महोदार रमा दत्त झाक सन्तति लोकनि एहि गामक उतरबारि तथा पुबारि टोलमे बसैत छथि। एक घर चारिठाम विभक्त भए दक्षिणबारियो टोलमे बसल छथि। रमा दत्त झा अतिथि-सत्कारक हेतु एहन विख्यात भेलाह जे पंजीमे हुनक नामक संग "महोदार" पदवी लगाओल गेल अछि।

हिनक तेसर भाइ गामक सटले पश्चिम हाटी जाए बसलाह। ई संस्कृत साहित्यक नीक विद्वान भेलाह। हिनक कृति अलङ्कारमंजरी तथा रसकौस्तुभ प्रकाशित एवं उपलब्ध अछि। वेणीदत्त झाक प्रपौत्र मार्कण्डेय झाक बालक भोलानाथ झा भट्टपुरा जाए बसलाह। हुनक बालक पांशिवशंकर झा आ जटाशंकर झाक बालक ओतहि बसल रहि वर्धमान विद्यमान छथि। वेणीदत्त झाक वंशधर कल्याण झा हाटीसँ एक डेढ कीलोमीटर पश्चिम जाए बसलाह ओ गाम हुनकहि नामपर आई कल्याणपुर कहबैत अछि।

हम परमादरणीय डा0 किशोरनाथ झाके ँ रोकैत कहलियन्हि- "आब अपने अपन पिताजीक परमादरणीय पण्डित कृष्णमाधव झाक प्रसंग जानकारी देबाक कृपा करी।"

हमर पिता भवानी दत्त झाक वृद्ध प्रपौत्र गोवर्धन

झाक बालक पण्डित कृष्णमाधव झा छलाह। ओ प्रारम्भमे सखवारवासी धनुर्धर झासँ पाहीक जनार्दन मिश्रक दलान पर पण्डित सत्यदेव झा आ पूर्णानन्द झाक संग पढलैन्हि, पुनः महावैयाकरण दीनबन्धु झासँ आ पछाति पण्डित मार्कण्डेय मिश्रक अनुग्रहे ँ काशी जाए हुनकासँ आओर महामहोपाध्याय फणिभूषण तर्कवागीश तथा महामहोपाध्याय वामाचरण भट्टाचार्यसँ न्याय तथा व्याकरणक विशेष अध्ययन कए दूनू शास्त्रमे निपुणता प्राप्त कएलनि। 1928ई०सँ 1972ई० धरि बम्बईमे रहि वल्लभ सम्प्रदायक आचार्य गोस्वामी कृष्णजीवन जी आ हुनक परिवारके ँ पढाए कए कृतविद्य कएल। पछाति जे.बी.एम. संस्कृत महाविद्यालय तथा सन्नयासाश्रम बिले पारले बम्बईमे सेहो अध्ययपन कएल। एहिठाम हिनक अनेक जिज्ञासु शिष्य उत्तर प्रदेश, आन्ध्रप्रदेश, गुजरात तथा महाराष्ट्रक हिनकासँ अध्ययन कए कृतविद्य भेलाह। यथा गोस्वामी कृष्णजीवनजी, गोस्वामी श्याममनोहर लालजी, माधवाचार्यजी, रामसुख पाण्डेय, नन्दकिशोर तिवारी, सूर्यवल्ली द्विवेदी, आत्माराम द्विवेदी, मैथिलमे शत्रुघन झा (मुरलियाचक वासी) तथा गुजराती माँछाराम शास्त्री आदि।

हिनक कृति- सिद्धान्तलक्षणगूढार्थतत्त्वालोकक सुबोधिनी व्याख्या उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानक सर्वोच्च शाङ्कर पुरस्कारसँ सम्मानित भेल अछि। दोसर कृति अलङ्कार विद्योतन नामक हिनक मौलिक रचनामे अलङ्कार लक्षणक परिष्कार नव्यन्याय शैलीमे कएल गेल अछि। एकर अतिरिक्त परमलघुमेंजूषा व्याख्याक दोसर संस्करण हिनक पौत्र डा0 उदयनाथ झाक सम्पादनमे प्रकाशित भऽ चुकल अछि।

अपनेक प्रारम्भिक शिक्षा कतए प्राप्त भेल?

हमरा हमर पिता कृष्णमाधव झा प्रारम्भिक शिक्षा देलैन्हि। हम अपन घर पर अपन पिताक अतिरिक्त अपन पित्ती पण्डित चन्द्रमाधव झासँ प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कएलहु।

अपने साहित्य ओ व्याकरण किनकासँ पढलहु?

हम पण्डित मधुसूदन मिश्र, भट्टपुरा आ पण्डित शोभाकान्त झा जयदेवसँ साहित्य ओ व्याकरणक ज्ञान प्राप्त कएलहु।

अपने प्राचीन न्याय शास्त्र किनकासँ पढलहु?

हमर प्राचीन न्याय शास्त्रक गुरु पहिने हमर पिताजी परमादरणीय कृष्णमाधव झा तदुपरांत परमादरणीय अनन्तलाल ठाकुर छथि। परमादरणीय अनन्तलाल ठाकुर हमरा अपन संतान सदृश्य पढौलैन्हि आ सब तरहे सहयोग करैत रहलाह हमर अभ्युदय हेतु।

विद्या अर्जित कए अपने कोन संस्थानमे योगदान देलहु, कतेक पोथी लिखलहु आ कतेक छात्रके ँ अर्जित ज्ञानक दान कएलहु?

हम गंगानाथ झा संस्कृत विद्यापीठ इलाहाबादमे उपाचार्य भए बीससँ अधिक छात्रके ँ अपन मार्गदर्शनमे राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानसँ विद्यावारिधि पदवी दिआओल, दू दर्जनसँ अधिक प्राच्यविद्याक दुर्लभ आ अप्रकाशित ग्रन्थक संपादन, दर्जनसँ अधिक मौलिक ग्रन्थक लेखन आ आठ दश गोट उपादेय ग्रन्थक विभिन्न भाषामे अनुवाद कएल अछि। विभिन्न विश्वविद्यालयमे व्याख्यान देल, अनेकों संगोष्ठीमे भाग लेल, पी एच डी आ डी लिटक दू सएसँ अधिक शोध प्रबन्धक परीक्षण कएल तथा शताधिक शोध निबन्ध विभिन्न शोध पत्रिकामे प्रकाशित कराओल। हमर उदयनाचार्यक कृतिपर आधारित पी एच डी तथा डी लिटक शोधप्रबन्ध प्रकाशित एवं समाकृत अछि। 1993ई. मे श्रृंगेरीक शंकराचार्य जगद्गुरु भारती तीर्थ द्वारा गणेश महोत्सवक अवसर पर साल एवं सहस्राधिक नगद संग सम्मानित भेलहु। 2003ई. मे सारस्वत सेवा हेतु राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित भेलहु। आठ टा ग्रन्थ उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊसँ पुरस्कृत भेल अछि। लगातार मौलिक ओ सम्पादित ग्रन्थ प्रकाशित भऽ रहल अछि आ अनेक संस्था द्वारा सम्मानित कएल जा रहल अछि। ई सबटा हमर गुरुजी लोकनिक आशीर्वादक फल थिक।

ग्राम-पाही, पोस्ट - सरिसब-पाही,
जिला - मधुबनी, पिन कोड 847424



आधुनिक राजनीतिक एकलव्य : कर्पूरी ठाकुर

✍ डॉ. नरेश कुमार विकल

मिथिलाक पावन धरती सभदिन सँ अनमोल रत्न-गर्मा रहलीह अछि। एहि ठाम सहस्राब्दि सँ कतेको विभूति सभक आविर्भाव भेल अछि, मुदा जननायक कर्पूरी ठाकुरक प्रार्दुभाव एक गोट विशिष्ट घटना थिक- तत्कालीन करौट फेरैत देशक इतिहासक लेल, समाजक लेल। बिहारक राजनीतिक आसमानमे देदीव्यमान नक्षत्र जकाँ सर्वाधिक चमकनिहार तरेगनक नाम छल कर्पूरी ठाकुर।

भारतीय उपमहाद्वीपमे बड़ कम सहन राजनीतिक पुरूष-पुंगाव भेलाह जे अपन मातृ भाषा आ राष्ट्रभाषाक क्षुत्क्षाकंठ केँ सुधा-रससँ परितृप्त करबाक सार्थक चेष्टा कयलनि। मैथिली भाषाक सम्बर्द्धनमे हिनक अवदान अविस्मरणीय अछि। ई पहिल आ अंतिम मुख्यमंत्री भेलाह जे मैथिली केँ संविधानक अष्टम् अनुसूचीमे पृष्ठांकित करयबाक लेल राज्य सरकार दिस सँ केन्द्र सरकार केँ अधिकृत पत्र लिखलनि। ओहो अकाट्य आ युक्तिपूर्ण तर्कक संग। एतय ई ध्यातव्य अछि जे कोनो भाषाकेँ संविधानक अष्टम् अनुसूचीमे सम्मिलित होयबाक लेल संबंधित भाषाक राज्य सरकार सँ प्रस्ताव केन्द्र सरकार सँ पठयबा अति आवश्यक सर्त्त (शर्त) होइछ। हिनका द्वारा लिखल पत्रमे मैथिलीकेँ सुसम्पन्न आ राष्ट्रभाषाक सभटा अर्हता पूर्त्ति करनिहार बताओल गेल। पत्र केँ एतय उधृत करब आवश्यक बुझना जाइछ। महत्त्वपूर्ण! पठनीय ओ स्वागत योग्य पत्र अविकल द्रष्टव्य अछि-

केन्द्रीय सरकार पत्र सं0-3/आर-1-1014/78 का0-8 कैंप दिनांक-22.12.1977ई. विषयः भारतीय संविधान की अष्टम् अनुसूचीमे मैथिली भाषा को सम्मिलित किया जाना।

मैथिली बिहार राज्य की बहुत बड़ी जनसंख्या की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है, और इसका अध्ययन-अध्यापन कलकत्ता विश्वविद्यालय, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल एवं बिहार के सभी विश्वविद्यालयों में होता है। बिहार सरकार ने इसे बिहार लोक सेवा आयोग में समुचित स्थान प्रदान किया है। साथ ही लेखन-पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था के उद्देश्य से बिहार सरकार की ओर से मैथिली अकादमी में इसे सम्मानपूर्ण स्थान प्रदान किया है और कई बार इसके लेखकों को पुरस्कृत भी किया है।

2. फिर भी उन सारी सुविधाओं से यह वंचित है जो अन्य मान्यता प्राप्त भाषाओं को उपलब्ध है। यथा प्रारंभिक शिक्षा का माध्यम, केन्द्र से प्राप्त होने वाले अनुदान, भाषाओं से अनुवाद की सुविधाएँ, विभिन्न क्षेत्रों में इसका प्रयोग तथा राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार एवं संवैधानिक मान्यता की गरिमा।

3. मैथिली भाषा की व्यापकता और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए संविधान की अष्टम् अनुसूची में इसे सम्मिलित करने का पर्याप्त औचित्य है। इस संबंध में निम्नलिखित बातें ज्ञातव्य है-

(क) मैथिली एक जीवन्त जनभाषा है। इसका प्रयोग मौखिक और लिखित दोनों में होता है। वर्तमान और भविष्य में इसके विकास की और भी संभावनाएँ हैं।

(ख) अपने विलक्षण प्रयोग, स्वतंत्र व्याकरण और लिपि एवं अन्य भाषा वैज्ञानिक दृष्टियों से मैथिली एक पृथक स्वरूप रखनेवाली भाषा है। भाषा विभान के सभी अंगों, ध्वनि, पद वाक्य अर्थ आदि की दृष्टि से मैथिली एक पूर्ण विकसित भाषा है। साहित्य सम्पादन में यह देश के समकक्ष भाषाओं में एक है।

(ग) मैथिली भाषा का प्रयोग बिहार के अतिरिक्त उत्तरप्रदेश, बंगाल, मध्य प्रदेश एवं गुजरात के कुछ क्षेत्रों में तथा नेपाल के करीब तीस लाख नागरिक मैथिली भाषी हैं। यहाँ द्वितीय राजभाषा के रूप में मैथिली सुप्रतिष्ठित है, मैथिली भाषा-भाषियों की संख्या अपने देश में ही दो करोड़ से अधिक और नेपाल में तीस लाख हैं।

अतः जनसंख्या की दृष्टि से मैथिली का विशिष्ट महत्त्व है।

ज्ञातव्य है कि सिंधी भाषा-भाषियों की संख्या 14 लाख मात्र है और संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित है।

(घ) मैथिली में सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति की पूर्ण क्षमता विद्यमान है। बिहार के आकाशवाणी के सभी केन्द्रों से किसी न किसी रूप में मैथिली का कार्यक्रम प्रसारित होता है।

इस भाषा के पत्र-पत्रिकाओं को संख्या पूर्व से और भी बढ़ती रही है। विश्वविद्यालय स्तर पर तो एम.ए., पी-एच.डी, डी.लिट् आदि उपाधियाँ 50 वर्षों से प्राप्त होती रही है।

अस्तु भारत सरकार से मेरा साग्रह निवेदन होगा कि

मैथिली को संविधान की आठवीं अनुसूची में अविलम्ब सम्मिलित किया जाना चाहिए। जिससे बिहार के इस प्रमुख एवं समर्थ भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर पूर्ण मान्यता मिले और इसके सर्वांगीण विकास के लिए सभी राजकीय सुविधा प्राप्त हो सके।

सेवा में — भवदीय
श्री शांति भूषण — ह. कर्पूरी ठाकुर
विधि मंत्री — मुख्यमंत्री, बिहार
भारत सरकार, नई दिल्ली

अपन व्यक्तिगत जीवनमे सेहो ई सदति अपन मातृभाषाक उपयोग करथि। ककरो सँ गप्प करबामे अथवा मंचीय भाषण, जँ मिथिला क्षेत्रक अन्तर्गत होइ एकर प्रयोग करबामे अशौकर्यक अनुभूति नहि करथि।

मिथिलाक शिक्षाक क्षेत्रमे विकासक लेल सेहो प्रयत्नशील रहैत छलाह। नागदह निवासी महाकवि बुद्धिनाथ झा एक गोट भेटवार्तामे कहलनि जे 1963-64क अक्टूबर मास रहल होइतैक। दरभंगामे एक गोट विश्वविद्यालयक स्थापना निमित्त सी.एम. साईंस कॉलेजमे एक गोट विशाल आमसभाक सझेर, कयल गेल धलैक। सौंसे, परिसर पण्डालसँ आध्यादित धलैक। मुख्यमंत्री विनोदानंद झाक सोझाँ जतेक गोटे प्रस्तावर समर्थनमे अपन मांग रखलनि, हम स्वयं प्रत्यक्षदर्शी छी, एतेक प्रभावशाली आ चमत्कृत कयनिहार ककरो सम्बोधन नहि भेल छलैक। दरभंगा मिथिलाक हृदयस्थली, ज्ञानक केन्द्र आ, एहन ठाम विश्वविद्यालयक नहि होयब दुर्भाग्यपूर्ण अछि। यद्यपि मुख्यमंत्री ई कहि नहि मानलथिन जे एखन हम बाढ़िक समस्याक निदानक लेल आयल छी। अइ प्रस्ताव आ मांग पर कोनो विचार नहि करब। मुदा, तत्क्षणे बिहार विश्वविद्यालय उप-कुलपति प्यारे लाल श्रीवास्तव घोषणा कयलनि जे हम अही सत्र सँ अइ ठाम पाँच विषयमे एम.ए.क पढ़ौनीक व्यवस्थाक घोषणा करैत छी।

कर्पूरी ठाकुर केँ जहिना मातृभाषाक प्रति अतिशय अनुराग आ स्नेह छलनि, तहिना राष्ट्रभाषा हिन्दीक प्रतियेँ सेहो। हिनक अन्तसमे सदति औनाइत-घुरिआइत हिन्दीक प्रभाव बिहारक जनमानस केँ देखबाक सुअवसर भेटैत रहलैक। स्वतंत्रता प्राप्तिक पछाति बहुतो रास मंत्री, उपमुख्यमंत्री आ मुख्यमंत्री शासनारूढ़ भेलाह, मुदा हिन्दी केँ उचित स्थान, प्रतिष्ठापन आ अपेक्षित पदासन जे हिनका द्वारा देल गेलैक, आन ककरो सँ नहि। ई हिन्दीक प्रचार-प्रसार, सम्बर्द्धनक लेल कृत संकल्पित भऽ गेलाह। सर्वप्रथम सचिवालयक क्रिया-कलापमे राजभाषा अधिनियम केँ कार्यान्वित कय, हिन्दीक प्रयोग अनिवार्य कऽ देलनि। शिक्षामंत्री बनला सन्ताँ अंग्रेजीक अनिवार्यता केँ समाप्त कऽ, ओकरा वैकल्पिक भाषा बना देलनि। युवा लोकनि द्वारा उच्च शिक्षा ग्रहण करबामे अप्रत्याशित वृद्धि भऽ गेलैक। बुद्धिजीवीओ इतिहासकार लोकनि एहि क्रान्तिकारी डेगक लेल हिनका युगद्रष्टाक रूपमे हिनक छवि देखऽ लगलनि। रामदयालु सिंह कॉलेज, मुजफरपुरक हिन्दीक प्रख्यात कवि, प्राध्यापक डॉ. उमाकान्त राय 'प्रलयंकार' हि मंगलकारी निर्णय पर एक गोट महाकाव्यात्मक कवितामे हिनक तुलना पृथ्वी पर गंगा केँ अननिहार भगीरथ सँ कयलनि। हिन्दीक प्रयोग बेसीसँ बेसी भऽ सकय, ताहि लेल ई हिन्दी प्रगति समितिक गठन धरि कऽ देलनि, जे राजभाषा अधिनियमक अवहेलना कय बिहारक वा वेतनवृद्धि। प्रोन्नति धरि रोकि देबाक अधिकार रखैत छल। परिणामतः कोनो जिलाधिकारी धरि एकर उपेक्षा करबाक दुस्साहस नहि कऽ पाबि रहल छल। कर्पूरी जी राष्ट्रभाषा केँ अपन राष्ट्रीयताक आत्मा मानैत छलाह, तेँ राष्ट्रीय विकास परिषदक बैसारमे ओकर परम्पराकेँ भंग करैत, हिन्दीयेमे भाषण करथि आ अपन राज्यक योजना सभक स्वीकृतिक लेल बरमहल मांग कयल करथि। ई जनबाक योग्य मध्य अछि जे राष्ट्रीय विकास परिषदक सभटा काज अंग्रेजियेमे होइत छलैक। हिनका सँ पूर्व राष्ट्रीय विकास परिषदमे हिन्दीक प्रयोग ने होइत छलौक आ ने कियो करैत छलैक। ई पटना सँ दिल्ली धरिक गप्प अछि। तेँ प्रलंयकर हिन्दी कए भागीरथी केँ भगीरथ कहलनि।

मात्र सरकारियेे काम-काज आ संचिके धरि नहि, अपितु अपन व्यक्तिगत दिनचर्या आ जीवनमे एकर महत्व देथि। हिन्दीक ई चर्चित अध्ययेता, सुधी पाठक मानल जाइत छलाह। हिनक आवास पर हिन्दीक प्रसिद्ध साहित्यकार लोकनिक पोथी नीक जकाँ सजाओल रहैत छलैक, जाहिमे हिनक बेस प्रिय साहित्यकार दिनकर, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, जैनेन्द्र नासिरा शर्मा, लोहिया, श्रीकान्त वर्मा, अज्ञेय, इकबाल, गालिब, शिवपूजन सहाय, पोद्दार रामावतार अरूण, बेनीपुरी, जानकी बल्लभ शास्त्रीक संग-संग मराठीक भालचन्द्र फड़के, शंकर राव सरात, दया पवार, कमलाकर जंगानि आदिक दलित साहित्य सेहो छलनि। ई अम्बेदकरक जीवन ओ विचारधारा सँ अवगत होयबाक लेल धनंजय कीर, डॉ. आर. निभ, डी. सी. बर्वे, सी. भारिल्ल, डॉ. एम. के. डोंगरे, टी. के. टोपे, जे. रॉबिन, डब्ल्यू, एन. कुबेर, जी.एस. लोखण्डे आदिक पोथी सेहो मनोयोग सँ पढ़थि।

अंग्रेजीक अनिवार्यता समाप्त कयला सन्ताँ एक गोट उकबा उठा देल गेलैक जे कर्पूरी ठाकुर केँ अपने अंग्रेजी नहि अबैत छनि, तेँ अंग्रेजीक अनिवार्यता समाप्त कऽ देलनि। एतबे नहि 'कर्पूरी डिविजन' नामो राखि देल गेलैक। जखन कि पश्चिम बंगालमे बिहार सँ पहिने ई काज भेलैक, कियो नहि चर्च कयलकै। आशुतोष मुखर्जीक नाम कियो नहि लेलकै। सभ सँ बेसी आश्चर्यक गप्प तँ ई जे मुख्यमंत्री महामाया प्रसादक समयमे ई निर्णय लेल गेलैक, हुनक एहिमे कनियो, चर्च नहि, मात्र शिक्षामंत्री छलाह ई, तेँ कर्पूरी ठाकुरक माथे सभ किछु मुदा, हमरा लग हिनक छात्र जीवनक अंग्रेजीक पुस्तिका (कॉपी) अछि, देखला सन्ताँ बूझल जा सकैछ, हिनक अंग्रेजीक ज्ञान, अंक-पत्रमे देखल जा सकैछ हिनक अंग्रेजीमे प्राप्तांक।

एहि सन्दर्भमे एक गोट आओर उदाहरण देब समीचीन बुझना जाइछ जे हिनक अंग्रेजी कतेक मजगूत छल। जखन ई तिरहुत एकेडमी, समस्तीपुरमे पढ़ैत छलथि, तखन विद्यालयक निरीक्षण करबाक लेल विद्यालय निरीक्षक जे.एस. आर्मोरर, जे पछाति एल. एस. कॉलेज, मुजफरपुरक प्रिंसिपल सेहो भेल रहथि-आयल छलथिन। हुनक सम्मानमे कर्पूरीजी केँ भाषण देबाक लेल कहल गेल छलनि। कर्पूरीजी अंग्रेजीमे भाषण देलथिन। कर्पूरी जीक नीक, उत्कृष्ट आ प्रभावशाली भाषण सुनि उपस्थित शिक्षक आश्चर्यचकित रहि गेलाह। सभ गोटे हिनक स्वागत-भाषणक प्रशंसा करय लगलथिन। स्वयं इंस्पेक्टर साहेब एतेक अचंभित आ भाव-विभोर भऽ गेलथिन जे दौड़ि कऽ कर्पूरीजी केँ अपना कोरामे उठा गरा लगा लेलथिन, अपन स्नेह सँ सराबोर करैत कहलथिन जे ई छात्र आगाँ बड़ पैघ आदमी बनत, ई हमर अन्तरआत्मा सँ बहरयल भविष्यवाणी अछि। मातृभाषा, जनभाषा, राष्ट्रभाषाक सम्मान करब, कर्पूरीजीक वैशिष्ट्य छल।

कारणे जे रहल होइक, मैथिली केँ प्राथमिक शिक्षा सँ हटा देला सन्ताँ सम्पूर्ण मिथिला आन्दोलित भऽ उठल छल। ठाम-ठाम धरना-प्रदर्शन, सभा-गोष्ठी होमय लागल। सरकार विरोधी पम्फलेट-पोस्टर साटल जाय लागल। एहि पाँतिक लेखक सेहो 24 अक्टूबर, 1978ई. केँ बिहारक सरकार मैथिली विरोधी नीतिक विरोधमे समस्तीपुर समाहरणालयक ओसार पर श्री नारायण सिंह ओ राम बाबू सिंहक संग 36 घंटाक अनशन कयने छलाह, जाहिमे सहस्राधिक राजनेता, बुद्धिजीवी, पत्रकार आ आन-आन लोक सभ सेहो संग देने छलथिन। एहि अवसर पर मिथिला मिहिर मिथिलाक सभ वर्गक लोक सँ प्रतिक्रिया जानबाक आ सङोर करबाक भार हमरा आ लक्ष्मीकान्त सजल केँ देने छल। तीन मास धरि ओ धारावाही रूपेँ प्रकाशित होइत रहलु भेटवार्त्ताक रूपमे।

ओहि नवम्बरमे तत्कालीन शिक्षामंत्री दिगम्बर ठाकुरक घेराओ 'पराग तरूण सभाक'क कार्यकर्त्ता लोकनि पटनामे एहि पाँतिक लेखकक अध्यक्षता ओ नेतृत्वमे कयने छलनि। कवियेे दिनक बाद निर्णय आपस लऽ लेल गेलैक। पत्रकार द्वारा पुछला सन्ताँ उतारा देने छलथिन, अहू लाथे सूतल मैथिली सभ अपन मातृभाषाक प्रतियेँ पुनः सक्रिय तँ भेलाह। अस्तु।

कर्पूरी ठाकुरक लोकावतरण जाहि समयमे भेल छलनि, भारतीय राजनीति करौट फेरि रहल छल। भारतीय उपमहाद्वीपमे समाजवादक एहन विलक्षा ओ विराट व्यक्तित्वक आकर्षक आकृति एक गोट कर्पूरी ठाकुर के सेहो छलनि।

तत्कालीन राजनीतिक तीन गोट आवश्यक आवश्यकता वा सर्त्त-कैश, कास्ट, क्रिमिनल छलैक, जे कर्पूरी ठाकुरक लग नहि छलनि। बिनु एकरो राज्यमे रहि राष्ट्रक राजनीति केँ सफलतापूर्वक संचालित करैत रहलाह, समरस समाजक प्रबल प्रवक्ता बनल रहलाह कम आश्चर्यक गप्प नहि कहल जा सकैछ।

हिनक आविर्भाव जनश्रुतिक आधार पर मई, 1921ई. मे भेलनि। यद्यपि हिनक अत्यन्त निकटतम सहकर्मी कलकत्ताक नूर अहमद 1920ई. कहैत छथि, मुदा हिनक प्रमाण-पत्रमे 24 जनवरी, 1924ई. अंकित अछि। समस्तीपुरक पितौंझियाक गोकुल ठाकुर आ रामदुलारी देवीक पुत्र छलाह।

प्रारंभमे अपन पिताक वृति हजामक कार्यमे सहयोग करैत छलाह। मुदा, गाय चरायब, कुरती लड़ब आ गीत गायब हिनक दिनचर्या छलनि। नदीमे जाकऽ घंटाक घंटा हेलबाक सख हिनका खूब छलनि, तेँ हिनका लोक सभ 'बोचा' (बोच, ग्राह, मगरमच्छ) कहि कऽ सम्बोधन करैत छलनि। बहुतो जिच कयला सन्ताँ गामक राम बुझावन सिंह हिनका गामक विद्यालयमे पढ़बाक लेल लऽ गेलथिन। गाय आनक खेतमे जा जजाति चरि गेलैक। परिवारकेँ फज्झति भेलनि। पढ़ब छोड़ि देलनि, मुदा विद्यालयक प्रधानाध्यापक पंचभिण्डा निवासी हियावल सिंह हिनका गाम पर सँ हिनका परिवार केँ समझा-बुझा लऽ गेलथिन। तहिया सँ ई नियमित भऽ गेलाह। अही बीच 1932ई. केँ हिनक विवाह मुजफरपुर जिलान्तर्गत कन्या फुलेश्वरीक संग कऽ देल गेलनि। यद्यपि अपन सिद्धान्त जे परतंत्र भारतमे संतान उत्पत्ति

नहि करब। गौना (द्विरागमन) स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद करौलनि। 9 जनवरी, 1934ई. केँ हिनक नाओं लिखाओल गेलनि ताजपुरक बी.एम.ई. स्कूलक छटामे। वेशभूषा, परिस्थितिसँ दीन-हीन, मुदा विलक्षण मेधा शक्ति, मधुर-सरल स्वभाव, विनम्रता अनुशासन आदि विशेष गुणक कारणेँ अपन विद्यालयमे सबहक प्रिय-पात्र बनि गेलाह।

16 जनवरी, 1935ई. केँ तिरहुत एकेडमी, समस्तीपुरक सतमामे हिनक नामांकन कराओल गेलनि। प्रधानाध्यापक हरिनन्दन प्रसाद आ हिन्दीक लोकप्रिय महाकवि शिक्षक सच्चिदानन्द बाबूक विशेष सहानुभूति हिनका पर छलनि। छात्रवृति सेहो भेटऽ लगलनि।

अही बीच एक दिन समस्तीपुरक कृष्णा टाकिजमे छात्र सभाक, आयोजन कयल गेल छलैक, ईहो अपन शिक्षक सभक नेतृत्वमे गेलनि। ओहि सभामे प्रसिद्ध समाजवादी चिन्तक पं. रामनन्दन मिश्र सेहो आयल छलथिन। छात्रक प्रतिनिधित्व करबाक लेल हिनके नामक प्रस्ताव भेलनि। भाषण करब प्रारंभ कयलनि सिंह गर्जनाक संग-'हमर देशक आबादी एतेक बेसी छैक जे मात्र थूकिये देला सँ अंग्रेजी साम्राज्य ओहिमे दहा-भसिया जेतैक....।'

हिनक एहि अगिनबाण गर्जना सँ ब्रिटिश साम्राज्यक सिंहासन दलमलित भऽ उठलै। सरकारक कान ठाढ़ भऽ गेलैक। प्रतिभा-पारखी भागलपुर जहल पठाओल गेलाह। ओहो काम लोकहितमे अनशन पर बैसि गेलाह।

जहल सँ छुटली सन्ताँ गतिविधिमे संलग्न रहैत छलाह।

स्वतंत्रता प्राप्तिक पछाति पहिले चुनाओमे विधायक चुनल गेलाह आ विजयी होते रहलाह।

इमरजेन्सीमे अज्ञातवासे रहि सरकारक विरोध करैत रहलाह। गिरतारो भेलाह यातना सेहो भेटलनि। मुदा, 'जननायक' सेहो भऽ गेलाह, कियैक तँ सियासतमे समता मूलक समाजक पूरवर पुरोधाक रूपमे विख्यात होमय लगलाह। गोंग-बहीर जनताक मुखर स्वर बनि गेलाह। बिहारक राजनीतिक आकाशमे सभ सँ बेसी चमकनिहार तरेगनक छल- कर्पूरी ठाकुर। भारतीय राजनीतिमे सभ सँ बेसी सामाजिक परिवर्तन आ संघर्षक लेल समर्पित रहनिहार हिनका सनक कोनो आन नेता आइ धरि नहि भेलैक।

मुदा, राजनीतिमे, सत्तामे रहितो पंक-पंकज-न्यायसँ धवल स्वच्छ कमल सदृश रहब, मुख्यमंत्रीक पद धरिकेँ सुशोभित करब, तथापि अपना लेल एक गोट नव घर नहि बनायब, जीताजी अपन संतानकेँ कोनो लाभक पद नहि देबऽ देब-कोनो शुचिताक पर्यायक, कोनो महापुरूषक लक्षण होइछ। यद्यपि बिहारे नहि देशक बहुतो नेता राजनीति, सियासत करबा सँ पूर्व, गद्दी पर आसीन होयबा सँ पूर्व हिनक शपथ लैत अछि, खाइत अछि, मुदा अनुपालन, हुनक सिद्धान्तक अनुसरण मिसियो भरि नहि करैत अछि।

पूर्व मंत्री रामलषण राम 'रमण' सेहो लिखैत छथि- मिथिला सदैव विश्व केँ अपन सभ्यता आ सांस्कृतिक पाठ-पढ़बैत आयल अछि। नित नूतन सृजनात्मक कमी नहि अछि, 'एहि मिथिलाक धरती पर। कारण मिथिला व्यक्तित्वक धनिक सेहो मानल जाइत अछि। अनेकानेक व्यक्ति अपन व्यक्तित्व एवं कृतित्वक बलेँ महापुरूष वा महानायकक रूपमे जानल जाइत छथि।

स्व0 कर्पूरी ठाकुर एहि कड़ीक महापुरूष भेलाह जे अपन कर्मठता, लगनशीलता, मेहनति, त्याग, ईमानदारी एवं मधुरवाणीक बल पर मात्र मिथिले टा नहि, सम्पूर्ण देशक जननायक भऽ गेलाह।'

सदति अंतसमे लोक मंगलक सुदृढ़ भावना एक गोट स्थायी भावक रूप संयोग निहार एहि महाप्राणक लोकान्तरण 17 फरवरी, 1988ई. केँ एक षडयंत्रक कारणेँ भऽ गेलनि।

'विशाखा'
जलविहार, 12 पत्थर,
समस्तीपुर-848101 ''मिथिला''

■

"सरलताक प्रतिमूर्ति : आचार्य सुमन"

✍ डॉ. मंजर सुलेमान

हजारों साल नरगिस अपनी बेनुरी पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा
इकबाल

"एते सत्पुरूषाः परार्थघटकाः स्वार्थान परित्यज्य ये"

अर्थ- "एहन मनुष्य जे अपन स्वार्थ के परित्याग कऽ दोसराह हित साधन करैत अछि सैह असली सत्य पुरूष छथि।"

आधुनिक मैथिली साहित्यक शीर्षस्थ कवि। जनक साहित्य साधना बहुमुखी छल, संस्कृत, हिन्दी आ मैथिली केर विद्वान छलाह। तीनू भाषामे काव्य सृजन कयलनि। आधुनिकताक संग प्राचीनता समायोजन अपन साहित्य सृजनमे कऽ एकरा नव आयाम प्रदान कयलनि। मैथिलीक संग संस्कृतक प्रकांड विद्वान छलाह। एहन व्यक्तित्वक धनी संत महात्मा व्यक्ति के नाम छल आचार्य प्रो. डा. सुरेन्द्र झा सुमन।

आचार्य डा. सुरेन्द्र झा सुमन एहने सत्पुरूष छलाह जे मात्र साहित्यिक क्षेत्रमे नहि अपितु राजनीतिक चमचमाइत दुनियामे रहितो अपनक कर्म सँ एहन अमिट छाप छोड़लन्हि जे आइयो सभक सोझामे मोनक पाथर रूपमे ठार अछि। जा धरि एहि धरती पर मनुख रहत ता धरि ओ पारस पाथर जकाँ सबकेँ देखबामे अबैत रहत।

सुमन जीक जन्म तत्कालीन दरभंगा जिलाक (दरभंगामे समस्तीपुर जिला) अन्तर्गत बल्लीपुर गाममे 10 अक्टूबर 1910ई. के भेल। हिनक पिताक नाम पंडित भुवनेश्वर झा 'भुवनेश' आ माताक नाम गोसाउनि देवी छल। हिनक पिता शास्त्र पुराणक विद्वानक संग उच्च कोटिक साहित्यकार सेहो छलाह आरंभिक शिक्षा पिताक सानिध्यमे घर पर पौलनि, मुदा उपनयन संस्कार भेलाक बाद मधुबनी जिला अन्तर्गत प्रसिद्ध गाम कोइलखमे भद्रकाली पाठशालामे आरंभ भेल।

सुमन जीक जन्मजात प्रतिभा आ कोइलख गामक शैक्षणिक वातवरणक अतिरिक्त सुयोग्य गुरू आ परिश्रमी छात्र प्रथमा परीक्षा से प्रथम स्थान प्राप्त कऽ छात्रवृत्ति प्राप्त कयलन्हि प्रथमा कयलाक बाद हिनका आगा पढ़ाई करबाक लेल पटना पठा देल गेलनि मुदा ओहि ठामक वातावरण हुनका अनुकूलमे रामेश्वरी विद्यालयमे पंडित सहदेव झाक सानिध्यमे राखि देल गेल। राजनगर प्रवासक क्रममे गुरूक सानिध्यमे रहि हुनक स्त्राध्यापक प्रवृति आ ज्ञानार्जक पिपासा जगलनि परिश्रम आ एकाग्रता मनुष्यक सफलताक प्रतीक थीक। मध्यमामे सेहो प्रथमाक अनुरूप छात्रवृति भेटलनि। सफलताक क्रम सुमनजीक पाछाँ-पाछाँ चलैत रहल आ मध्यमाक उपरांत आगू पढ़ौनीक लेल मुजफ्फरपुरक धर्म समाज संस्कृत महाविद्यालयमे 1928मे नामांकन करौलन्हि ओतऽ कविशेखर पंडित बद्रीनाथ झा सन गुरू सँ बहुत रास किछु ज्ञान भेंटल जे हुनक प्रतिभा केँ आओर नवगति प्रदान कयलक। 1930मे साहित्यशास्त्री आ 1932मे साहित्याचार्य परीक्षामे प्रथम स्थान प्राप्त कऽ सम्मानित भेलाह। एहि सँ पहिने 1929मे कलकत्ता सँ काव्य तीर्थक परीक्षामे प्रथम स्थान प्राप्त कयलन्हि।

जखन सुमनजी शास्त्रीमे पढ़ैत छलाह तखनहि हिनक विवाह बेगूसराय जिलाक एकटा काम 'एहु'मे 1930मे भेल। धर्मपत्नी गंगा देवी धार्मिक प्रवृतिक महिला छलीह। हिनका सँ एक पुत्र आ दू टा पुत्री भेलथिन। हिनक पुत्र मिथिला विश्वविद्यालय, अंग्रेजी विभागाध्यक्ष सँ अवकाश ग्रहण कयलन्हि।

अध्ययन कालहिसँ हिनक रूचि पत्रकारिता दिस छल जखन कि ई राजनगरमे पढ़ैला छलाह आ गाम (बल्लीपुर) अबैत छलाह त' हस्तलिखित। 'त्रिवेणी'क अंक बहरबैत छलाह। मुजफरपुर अयलाक बाद अहू ठाम पंडित रामचन्द्र मिश्र आ पंडित ब्रजकिशोर नारायणक सहयोग सँ संस्कृत पत्रिका 'जागृति' मासिक आरंभ कयलन्हि।

सुमनजी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति छलाह मुदा हिनक प्रतिभा के नव आयाम भेटल 1934मे रोसड़ामे भेल मैथिल सुअवसर सुमनजी केँ भेटलनि। हिनक अभिनंदन सँ प्रभावित भऽ ओहि सम्मलेनमे सम्मिलित महामहोपाध्याय डा. सर गंगानाथ झा, कुमार गंगानन्द सिंह आ राज पंडित बलदेव मिश्र हिनका राज दरभंगाक सेवामे अयबाक लेल प्रोत्साहित कयलन्हि आ 1935मे ई मिथिलेशक (दरभंगा महाराज अर्थात् मिथिला नरेश केँ मिथिलेश कहल जाइत छल) सेवामे आबि गेलाह। हिनक प्रतिभा देखि महाराज हिनका मिथिला मिहिरक सम्पादकक भार देलनि जकरा ई रूपमे स्वीकार कऽ तन-मन सँ एहि पत्रिका केँ प्रतिष्ठित

आ स्थापित करबामे लागि गेलाह। 1935-1954 धरि एहि पत्रिकाक सम्पादक रहि पत्रिका के नव आयाम प्रदान कयलनि आ 'मिथिला मिहिर' केँ ऐतिहासिक पत्रिकाक रूपमे स्थापित कयलनि। 1936मे मिथिलाक विशेषांक ऐतिहासिक आ संग्रहणीय अंक निकालन्हि।

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद 1948मे 'स्वदेश' नाम सँ हिनक सम्पादन आ प्रकाशनमे मैथिलीक पत्रिका बहरायल मुदा ई काल जीवि नहि भऽ सकल, छः अंकक बाद बन्द भऽ गेल मुदा ई छौ गोट अंक हुनक सम्पादन कौशलक एहन पुष्ट प्रमाणक लेल पर्याप्त अछि।

1954मे दरभंगा सँ मिथिला-मिहिर बन्द भऽ गेलाक बाद चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज, दरभंगामे मैथिलीक प्राध्यापक नियुक्त कयल गेलाह। पत्रिकारिताक प्रति अनुराग आ मैथिली सेवाक प्रति अपन अगाध श्रद्धाक कारणे 1955मे पुनः स्वदेशक प्रकाशन प्रारंभ कयलनि। एहि बेर ई मासिक नहि अपितु दैनिक रूपमे बहरायल मुदा असगर बल पर चलऽवला ई पत्र अधिक दिन नहि चलि सकल आ बीचेमे बन्द भऽ गेल। बादमे फेर 1981-83 कऽ बीच पुर्नमुद्रण कयल गेल मुदा सामाजिक पूर्ण सहयोगक बिना कोनो पत्र-पत्रिकाके चलायब बड़ कठिन होइत छैक से स्वदेशक संग भेल आ फेर बन्द भऽ गेल जे जीवन पर्यन्त बन्द रहल।

पत्रकारिताक संग अध्ययन-अध्यापन हिनक जीवनपर्यन्त चलैत रहल। अध्ययन कालमे अवकाशमे गाम आबथि तऽ गामक पाठशालामे अपन सेवा दैति रहथि बादमे पिताक द्वारा स्थापित विद्यालय आ मुजफ्फरपुर जिलाक अन्तर्गत मनियारीमे सेहो छः मास अध्यापक रहलाह एकर बाद 1953-54 सँ चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज, दरभंगामे व्याख्याता नियुक्त भेलाह आ पछाति विभागाध्यक्ष आ 1972मे विश्वविद्यालय स्नात्कोत्तर विभागाध्यक्ष भेलाह आ 1975मे अध्यापन कार्य सँ सेवानिवृत भेलाह।

पत्रकारिता, अध्यापनक संगहि संग सुमनजी समाज सेवा आ राजनीतिमे सेहो सक्रिय छलाह। स्वतंत्रताक बाद ई जनसंघक सक्रिय सदस्य भेलाह आ छः वर्ष धरि उपाध्यक्ष रहला। 1940 सँ 1950 धरि दरभंगा नगरपालिकाक मनोनीत सदस्य छलाह। 1962, 1967 आ 1972मे दरभंगा सँ विधानसभाक चुनाव लड़लाह मुदा दू बेर हारि गेलाह, 1972मे जितलाक बाद जखन आपातकालक घोषणा कयल गेल तऽ सबसँ पहिने विधानसभाक सदस्यतासँ त्यागपत्र दऽ देलनि, ओकर बाद किछु दिन जहलमे बन्द रहला। लोकसभाक लेल 1977क चुनावमे दरभंगा संसदीय क्षेत्रसँ विजयी भेलाह। सांसद बनलाक बाद अनेक संसदीय समितिक सदस्यक रूपमे अपन कौशल आ सक्रिय सदस्यक रूपमे बहुमूल्य सुझाव देने छलाह। हिनक सम्पूर्ण राजनीतिक जीवन 'सादा जीवन उच्च विचार'क रूपमे हमरा सभक लेल अनुकरणीय अछि। 1980मे संसद भंग भेलाक बाद ई दिल्ली सँ दरभंगा आबि मैथिलीक सेवामे लीन भऽ गेलाह आ जीवन पर्यन्त लीन रहलाह। हिनक मैथिली सेवाक एहि सँ बढ़ि कऽ की प्रमाण हैत जे अपन आवास के मैथिली मंदिर घोषित कयने छलाह। तहिया या आइयो मैथिली मंदिरक सोझ अर्थ होइत अछि- आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'।

मैथिली भाषा साहित्यक सेवक आ योद्धाक रूपमे डा. सुरेन्द्र झा 'सुमन' जीक लोक सदा मोन रखतनि। हिनक 28 गोट मौलिक, 28 गोट अनुदित आ एगारह टा सम्पादित पोथी प्रकाशित अछि जाहिमे सबसँ पहिने अर्चना काव्यसंग्रह अछि। 1971मे हिनक कविता संग्रह 'पायस्विनी' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार आ 1995मे साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार रवीन्द्र रचनावलीक मैथिली अनुवाद पर भेंटल छयनि।

एकर अतिरिक्त क्षेत्रीय आ राज्य स्तरीय अनेक पुरस्कार आ सम्मान भेटलनि। सुमन जीक अंतिम पोथी अपन आत्मकथाक रूपमे ''मोन पड़ैत अछि'' प्रकाशित भेल। सुमन जीक मृत्यु 5 मार्च 2002 केर दरभंगामे भऽ गेल अंतिम संस्कार पैतृक गाम बल्लीपुरमे भेलनि। हिनका संबंधमे एकरा शायरक दू पाँती एना मोन पड़ैत अछि-

''बड़े शौक से सुन रहा था जमाना
तुम्हीं सो गए दास्ताँ कहते कहते''

एसिस्टेंट प्रोफसर
डा. जाकिर हुसैन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, दरभंगा
पूर्व सदस्य, साहित्य अकादमी
मैथिली परामर्शदात्री समिति, नई दिल्ली।



मैथिली ओ आचार्य प्रवर अमरेश पाठक

✍ डा. शैलेन्द्र मोहन मिश्र

अपन प्रतिभा आओर पाण्डित्यक द्वारा मैथिली आलोचना के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचयवा में जे अग्रगण्य छथि, मैथिली भाषाक सर्वांगीण विकास मे अपनाकें तन, मन, धन सं लागल रहलाक कारणे जे प्रतिष्ठा प्राप्त कैने छथि। अपन कटु सत्य भाषणक कारणे साहित्यिक जीवन में अनेकानेक विरोधी बना लेने छथि, ओ थिकाह आचार्य प्रवर अमरेश पाठक।

विकी आचार्य प्रवरक सानिध्य मे रहि हमरा हनकर विभिन्न रूपके देखबाक जे सुयोग भेटल ताहि मे एक व्यक्तिक रूप में हनकर सहृदयता, निष्कपटता, कर्त्तव्यनिष्ठा, शालीनता, उदारता, सदाशयता एवं कर्मठता सं अधिक एक विद्वान समीक्षकक रूपमे हुनकर ज्ञानगूढता, गहन अध्ययनप्रियता, शोधपरक प्रवृत्ति सं हम सदा प्रभावित होइत रहलहुँ।

दुब्बर काठीक शरीर, गौर वर्ण, चमकैत ललाट, तेजस्वी नेत्र, दृढ़ निश्चयी, निर्भीक वक्ता, व्यवहार कुशल, स्नेहक भंडार, पथ प्रदर्शक, स्वाभिमानी, कोमल हृदय संयुक्त एहि व्यक्तिक विषय में जे कहल जाए से थोड़। हम अपन व्यक्तिगत संपर्कक आधार पर जाहि निष्कर्ष पर पहुंचलहुं अछि तकरे एक रूप रेखा प्रस्तुत क रहल छी।

आचार्य प्रवरक जन्म सीतामढ़ी जिलाक सामरि ग्राममे1936 ई मे भेल। पिता चंद्र भूषण पाठक जमींदारीक तगमा मात्र धारण कैने छलथिन्ह। कतेको मोकदमा लड़बाक कारणे परिवारक आर्थिक स्थिति जर्जर भ गेल छलैन्हि। एहना स्थिति मे हनका पढबा मे जे कष्ट भेल होएत से अनुमान योग्य अछि। बाल्यकालहि सं मेधावी रहलाक कारणे ओ सरस्वतीक आराधना मे लागि गेलाह। नीक अंक प्राप्त कै ओ माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा मे सफलता प्राप्त कैलन्हि।

आई. ए. परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण भेलाह। वी. ए. मे हनकर प्रबल इच्छा छलैन्हि जे बिहारक सुप्रतिष्ठित महाविद्यालय पटना कालेज में पढ़ी। ओहि समय मे कमो अंक रहला पर मैथिली पढबाक शर्त पर छात्रक नामांकन पटना कालेज में भ जाइत छल। मैथिली पढबाक कोन कथा मैथिली सं कोनो प्रकारक संपर्क-संबंध हिनका नहि छलैन्हि तकर कारण जे ई सीतामढ़ी जिलाक रहलाक कारणे मैथिलीक प्रति उपेक्षा भाव यदि कहीं त से अनुचित नहि होएत। ओहि समय मे तीनटा ऐच्छिक विषय मैथिली, संस्कृत, ओ गणित। जे नीक विद्यार्थी बुझल जाति छलाह से गणित, ओहि स कमजोर संस्कृत आ ताह स जे कमजोर से मैथिली पढ़ैत छलाह। जकरा कतहं ने पुछारी से सौराठक नोथारी। एहना स्थिति मे हिनक मैथिलीक प्रति उपेक्षा भाव स्वयं सिद्ध अछि। तें मैथिली मे हिनक प्रवेश संयोग मानल जा सकैत अछि। मैथिलीक प्रतिए अनिच्छा भाव रखनिहार के मैथिली पढबाक हेतु विवश होमय पडलैन्हि। एहि प्रकारे मैथिलीक क्षेत्र मे 1953ई. मे हिनक प्रवेश भेल।

वस्तुतः मैथिलीक विशेष अध्ययनक परंपरा लगभग एही समय मे अथवा एक दू वर्ष पूर्व प्रो. आनंद मिश्रक नियुक्ति सं आरंभ भेल। एहि सं पूर्व डा. सुधाकर जा शास्त्री जे मूलतः संस्कृतक विद्वान छलाह तथा भाषाविज्ञान पर लंदन विश्वविद्यालय सं विश्व विख्यात भाषाविज्ञानी डा० टर्नरक मार्ग निर्देशन मे पीएच डी. प्राप्त कय संस्कृतक प्राध्यापक नियुक्त भेलाह। प्रो. जयदेव मिश्रक संग मिलि मैथिली भाषाक उच्च स्तरीय पठन पाठन एवं प्रचार प्रसारक प्रक्रिया प्रारंभ भेल। आ मैथिलीक उच्च अध्ययनक प्रति लोकक अभिरुचि जागल।

बी.ए. मे मैथिली के ई प्रतिष्ठा विषयक रूपमे राखल तकरा आन छात्र सं हटि एक विषयक रूपमे गहन अध्ययन कैलन्हि। एकर परिणाम स्वरूप 1955ई.क ऑनर्सक परीक्षा में प्रथम श्रेणी मे प्रथम स्थान प्राप्त कैलन्हि एवं ब्रजनंदन सिंह स्वर्णपदक सं सम्मानित भेलाह। 1957ई. मे पटना विश्वविद्यालय सं एम.ए.क परीक्षा मे सेहो प्रथम श्रेणी मे प्रथम स्थान प्राप्त कैलन्हि आ विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक सं सम्मानित भेलाह।

एम.ए. पास कैलाक बाद शीघ्रहि 1957ई. मे रामकृष्ण महाविद्यालय मधुबनी मे मैथिली प्राध्यापकक रूप मे अपन कार्य जीवन आरंभ कैल। दू वर्षक पश्चात् 1959ई मे बिहारक लब्धप्रतिष्ठित कालेज पटना कालेज मे मैथिली

प्राध्यापकक पद पर हिनक नियुक्ति भेल।

पटना कालेज मे अएलाक बाद हिनका पर पारिवारिक दायित्व बढि गेलनि अग्रजक आकस्मिक निधन होएबाक कारणें परिवारोक सभ भार हिनकहि पर आबि गेल। भाई लोकनिक पढौनी एवं बहिनक विवाह। दोसर दिस पिताक पट्टीदार लोकनिक संग मर मुकदमा। एहना स्थिति मे हिनकहि सन व्यक्ति जे गीताक अनाशक्त योगी जकां कर्म करैत गेलाह। एहि सभ कार्य के सम्पादित करबा में हिनक पत्नी गुरूआइन रत्ना पाठकक सहयोग हिनका पूर्ण रूपेण भेटैत रहल। आ तैंओ एहि गुरुतर भारक निर्वहन क सकलाह।

एतेक संघर्ष आ कष्ट में रहितहं ओ मैथिली साहित्यक अभ्युत्थानक हेतु अपन लेखनी के शिथिल नहि होमय देलनि। ओ कहैत छलाह जे हमरा एहि लेल ई कहैत कनियो संकोच नहि होइत अछि जे हम पारिवारिक दायित्वक सफलतापूर्वक निर्वहन करैत मैथिलियोक सेवा कैल अछि जाहि सं हमरा संतोष अछि।

पटना कालेज सन परिवेश में आबि प्रतिभाक धनी आचार्य प्रवर अपन संपूर्ण ध्यान साहित्य सर्जना दिश केंद्रित क देल। विभिन्न विषय पर समालोचनात्मक निबंध लिखै लगला ! एही क्रम में 1967ई. मे अपन गुरु आचार्य रमानाथ झा के कुशल मार्गदर्शन मे मैथिली उपन्यास क आलोचनात्मक अध्ययन पर डी. लिट. उपाधि सं विभूषित भेलाह। मैथिलीक पहिल डी. लिट. इएह छथि। एवं प्रकारे ओ अपन गुरूक द्वारा समालोचनाक जे मानदंड स्थापित कैल गेल छल तकरा आंगा बढावै लगलाह।

मुदा 1975 ई. मे एक एहन घटना हिनका जीवन मे घटल जाहि संई क्षुब्ध भ गेलाह। बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा हिनक नामक अनुशंसा प्रोफेसरक पदक हेतु कैल गेल त ओहि समयक तथाकथित विद्वत मंडली द्वारा हिनकर अवस्था कम बुझि अनदेखी कैल गेल। कारण मिथिलांचलक लोकक ई मानसिकता एखनहं धरि अछि जे अल्पवयसक विद्वान के महत्व नहि दैत छथि।

एहि ममे ओ 1972 ई. मे रीडर पद के प्राप्त कैलन्हि तथा 1984 ई. मे ओ प्रोफेसर भेलाह द्य 1986 ई. मे पटना विश्वविद्यालयक मैथिली विभागाध्यक्ष नियुक्त भेलाह। दू वर्ष धरि मानवीकि संकायक डीन सेहो रहलाह। 1996 ई. मे पटना कालेजक प्रधानाचार्यक पद पर सं अवकाश प्राप्त कैलन्हि।

1975 ई. क घटना सं हिनका पर ततेक प्रतिकूल प्रभाव भेल जे ओ मैथिलीक अभ्युन्नति मे अपन व्यक्तिगत साहित्यिक क्षेत्र मे क्षमता बढैबाक अपेक्षा मैथिलीक मान्यताक आंदोलनक संग अपना के सम्बद्ध क लेलनि। एहि प्रसंग इहो उल्लेखनीय थिक जे मिथिला क्षेत्रक विभिन्न प्रतिनिधि लोकनि के पत्र लिखि अष्टम अनुसूची मे मैथिलीक मान्यताक लेल प्रयास करय लगलाह। अष्टम अनुसूचीक मान्यता कोनो एक व्यक्तिक चेष्टाक परिणाम नहि भ सकैत छल, तैं हिनका अपना के चेतना समिति सं अधिक घनिष्ठ संबंध स्थापित करब आवश्यक है गेलनि। बिन सामूहिक संस्थागत सहयोगक अभाव मे ई महान कार्य संभव नहि छल।

श्री कर्पूरी ठाकुर जीक मुख्यमंत्रीत्व काल मे जखन मैथिलीक मान्यता समाप्त करबाक चेष्टा भेल त गाम गाम मे, पूरा मिथिलांचल मे एकर विरोधक स्वर मुखर भेल। तत्कालीन मंत्री श्री महावीर प्रसाद यादव एवं अन्य प्रतिनिधि लोकनिक घेराव आदि सेहो भेल द्य एसी क्रममे चेतना समिति द्वारा मातृभाषा रक्षा समिति के स्थापना हिनकहि संयोजकत्व मे बनाओल गेल जे चेतना समितिक कार्यालयी मे देखल जा सकैत अछि। एहि प्रसंग इहो उल्लेख करब आवश्यक अछि जे तत्कालीन शिक्षा मंत्री श्री दिगंबर ठाकुर जी सं मातृभाषा रक्षा समितिक प्रतिनिधि मंडल हिनक नेतृत्व मे भेंट कैलन्हि एवं मैथिलीक स्थिति सं करौलन्हि बस्तु स्थिति बुझि श्री दिगंबर बाबू प्रतिनिधि मंडल के आश्वासन देलथिन्ह जे आइए हम मुख्यमंत्री जी सं भेंट क एहि हेतु आग्रह करैत छिएन्हि। कहां लोकनि ई विश्वास करू जे काल्हि मीटिंग मे जं मैथिली के पूर्ववत नहि राखल जाएत त हम मंत्री मंडल सं इस्तीफा द देब। एतावता मुख्यमंत्री के आग्रह क एकर औचित्य सं परिचित कराएं मैथिलीक मान्यता के यथावत रखबाओल। मैथिली मातृभाषाक रूप मे सरलीकृत रहल।

एक आघात सं त मैथिली बांचि गेलीह मुदा के जनैत छल जे पुनः हिनका पर आघात होएतन्हि। श्री लालू प्रसाद जी के मुख्यमंत्रीत्व काल मे मैथिली पर संघातिक प्रहार कैल गेल। मैथिली भाषा के बिहार लोक सेवा

आयोगक परीक्षा मे देल गेल मान्यता के बलजोरी समाप्त क देल गेल। ई बलजोरी एहि लेल लिखि रहल छी जे कालान्तर मे उच्च न्यायालय द्वारा मैथिलीक मान्यताक औचित्य के स्वीकार क मैथिलीक पक्ष मे निर्णय देल गेल। तथापि श्री लालू प्रसाद जीक आक्रोश मैथिलीक विरोध मे कम नहि भेल। ओ एहि निर्णय के मुख्यमंत्रीत्व काल मे ठंडा वस्ता मे रखबाक हेतु सर्वोच्च न्यायालय मे याचिका दायर क देल। श्री लालू प्रसाद जीक मैथिलीक प्रति एहन शत्रुतापूर्ण व्यवहार स क्षुब्ध बुद्धि जीवी वर्ग आचार्य प्रवरक संयोजकत्व मे मैथिली संघर्ष समिति क गठन भेल। मैथिली के पुनः लोक सेवा आयोगक परीक्षा विषयक रूपमे प्रतिष्ठापित करबाक हेतु एवं संविधान मे स्थान दिएबाक हेतु आंदोलनक सूत्र पात आरंभ भेल। एक अभूतपूर्व प्रर्दशनक पश्चात श्री सुशील कुमार मोदी, स्व. राजो सिंह ,श्री शकील अहमद, श्री तारा कांत झा, श्री प्रेम चंद्र मिश्र, श्री वैद्यनाथ चौधरी वैजू आदि विभिन्न जनप्रतिनिधि ओ अन्य अनेकों विधान पार्षद लोकनिक समक्ष विद्यापति भवन मे मैथिलीक एहि आंदोलन के आंगा बढैबाक योजना पर विचार कैल गेल।

एहि संघर्ष समिति द्वारा अनेकों बेर पटना सं ल दिल्ली धरि हजारों छात्र लोकनिक सहयोग सं वोटक्लव एवं पटना मे धड़ना, प्रर्दशन, सड़क जाम, मुख्यमंत्री एवं प्रधानमंत्री के ज्ञापन देल जाइत रहल, आ अंततः मैथिली संविधान संशोधन द्वारा अष्टम अनुसूची मे आबि गेल।

एहि विषयक उल्लेख क हम ई नहि कहय चाहैत छी जे मैथिलीक मान्यताक प्रश्न कोनो एक व्यक्तिक प्रयास स नहि प्रत्युत विभिन्न अवसर पर विभिन्न जन समुदायक धड़ना, सड़क जाम एवं प्रतिरोध आदिक प्रतिफल थिक।

ई ध्यान देबाक विषय थिक जे मैथिलीक मान्यता लेल चेतना समिति द्वारा दू बेर समितिक गठन कैल गेल आ दुनू क संयोजकत्व भार हिनके देल गेल। परिणाम स्वरूप हिनक साहित्यिक अनुसंधानहक विषयक क्षेत्र मे जते ई के सकितथि से नहि क सकलाह किंतु पुछला पर ओ कहैत छलाह जे (मैथिली के संविधान मे मान्यता भेला सं जाहि आनंदक अनुभव कोनो मिथिला वासी के भ रहल छैन्हि ताहि सन अधिक संतोष हमरा अपन क्रिया कलाप पर भ रहल अछि।

मैथिलीक संविधान मे मान्यता पर विभिन्न दलक योगदानक प्रसंग विचार पुछला पर हुनक उत्तर होइत छलैन्हि मोटा मोटी अहां ई बुझि सकैत छी जे ई कांग्रेस पार्टी द्वारा उदासीनता, राजद द्वारा प्रतिरोध ओ एन. डी. ए.क प्रवल समर्थनक परिणाम बुझि सकैत छी।

कैक वेर गप्पक क्रममे कहैत छलाह जे हमरा स कविता आ कथा लिखब पार नहि लगैत अछि, हं अपन गचरुदेवहिक सदृश ओकर समीक्षा करब नीक लगैत अछि। तैं हिनक अनेकों समीक्षात्मक निबंध विभिन्न पत्र-पत्रिका में प्रकाशित अछि। हिनक मौलिक रचना मे मुख्य अछि मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन, निबंध संकलन, नवीन निबंध संकलन, रमानाथ झा विनिबंध आदि। अनेकों पुस्तकक संपादन सेहो कैने छथि। अनेकों छात्र हिनक मार्गदर्शन मे पीएच डी उपाधि प्राप्त केने छथि। हमरो हिनकहि कुशल मार्गदर्शन में पीएच डी प्राप्त करबाक सौभाग्य प्राप्त भेल अछि।

मैथिलीक चिर सेवी एहि सेवक के शरीरक कोनो परवाह नहि रहैत छलैन्हि, ओ मैथिलीक सेवा मे सतत लागल रहैत छलाह। अवकाश प्राप्त कैलाक बाद एक दू बेर वेशी बीमार पड़ि गेलाह। एक वर्ष सं अधिक बीमार छलाह। शारदीय दुर्गा पूजा क पंचमी तिथि 04अक्टूबर 2019ई. क ई अंतिम सांस लेलनि। मैथिली भाषा साहित्यक एहि चिर सेवी क साहित्य साधना अविस्मरणीय रहता।

अध्यक्ष, मैथिली विभाग सी.एम. जे. कॉलेज
दोनवारी हाट, खुटौना मधुबनी।
मोबाइल नं. 9546743796

■

पोथी समीक्षा

श्रीदुर्गासप्तशतीक मैथिली भावानुवाद (वन्दना झा)क बहन्ने

✍ कश्यप रमेश

सब भाषा मे धार्मिक साहित्यक लेखन, पुनर्लेखन, मूल्यांकन, विश्लेषण, अनुवाद आदि काज जतेक भेल अछि, तकर अनुपात मे, मैथिली मे धार्मिक साहित्यक से सब काज बहुत अल्पमात्रा मे भेल अछि, जखनकि 'धर्म-कर्म' के मिथिलाक जीवन सदा बहुते महत्त्व देलक अछि।

जतबो जे पुरूखा साहित्यकारगण रामकथा (अनेक रामायण आ सीतायण), कृष्णकथा (मनबोधक 'कृष्णजन्म' अथवा मध्यकालीन नाटक सब), 'अम्बचरित' (कविवर सीताराम झा) 'उर्वशी आ पुरुरुवा' (राजेश्वर झा) अथवा 'प्रतिज्ञा पांडव'क रचना केलनि, सेहो धारा एम्हर आबि कऽ कए दशक सऽ मकमका गेल, जखनकि 'प्राचीनतावादी ध ारा' आन सब भाषाक अपेक्षा, मैथिली मे बेसी जगजियार रहल आ आइयो जब्बर बनबाक प्रयास मे लागल रहैत अछि।

एतेक धरि, जे लोकधाराक साहित्य-लेखनक तुलना मे सेहो, धार्मिक साहित्यक क्रियाकलाप छुछुन्ने रहल।

मात्र महाकाव्य-लेखनक परंपरा मे गोटपगरा स्थान धार्मिक आ पारंपरिक दृष्टिकोणें, साहित्य- लेखन के भेटैत रहल, जेना 'राधा-विरह' (मधुपजी)।

'स्वयंप्रभा' आ 'श्रीराम हृदय' हो (प्रदीप मैथिलीपुत्र) अथवा 'पंचकन्या' (मैथिलीक गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर), खण्डकाव्यो/धार्मिक- गीतो पारंपरिके दृष्टिकोण सँ लिखाइत रहल।

कहिया-कतऽ ने डा. कोचीनाथ झा 'किरण' 'पराशर' महाकाव्य प्रगतिशील दृष्टिकोणें लिखलनि, मुदा आ बुद्धिनाथ झाक 'ऊं महाभारत' सुमनजीक पारंपरिक दृष्टिकोणक पारंपरिकिते मे लिखायल, किरणजीक दृष्टिकोणक प्रगतिशीलता मे नहि।

धर्मनिरपेक्ष धाराक साहित्य-लेखन जहांकि गति पकड़लक, कि प्राचीनतावादीयो साहित्यकारगण धार्मिक साहित्यक क्रियाकलाप के मन्द कऽ देलनि।

जखन लिखेबे कम कयल, तऽ लिखल गेल धार्मिक साहित्य मे अन्तर्निहित दृष्टिकोणक मूल्यांकन तऽ उपेक्षित भेनाइए छल। आ से अ-घटना, दु-र्घटने साबित भेल!

जखन धर्मनिरपेक्षो साहित्यक समालोचना मे खूब काज आन भाषा जकां नहि भेल, तखन धर्म-सापेक्ष साहित्यक मूल्यांकन लेल कोना उदारतापूर्वक कलम उठितय? मैथिलीक समीक्षकगण अइ क्षेत्र के 'बुइया आ भकौआं' बूझैत रहलाह।

प्राचीनतावादी लेखक लोकनिक महाकाव्य- लेखन-धाराक जखन कलम ठेहिया गेल, तऽ अपना धाराक पैघ लेखक श्याम दरिहरेक, धार्मिक आ प्राचीन दार्शनिकता-आधारित उपन्यास-लेखन, अपन ठस्साक संग, आयल।

मुदा धर्म-सापेक्ष साहित्य-लेखन-पुनर्लेखन-मध्य तैओ, संस्कृतक धार्मिक कृति सबहक अनुवाद- साहित्य, अपेक्षाकृत आर बेसी कमजोर आ पछुआयल रहल।

हेबनि मे, प्रवीण नारायण चौधरी (विराटनगर) आ अमलेन्दु शेखर पाठक हनुमान चालीसा, बजरंग वाण, हनुमानाष्टक आदिक अनुवाद मैथिली मे करबो केलनि, तऽ प्रकाशित नहि भऽ सकल अछि। चन्द्रमोहन झा 'पड़बा'क 'जानकी चलीसा' छपबो कयल, तऽ सर्वसुलभ नहि भऽ सकल अछि।

एहना स्थिति मे, वन्दना झा द्वारा 'श्रीदुर्गासप्तशतीक' मैथिली भावानुवाद प्रकाशित भऽ कऽ जनसामान्य के उपलब्ध हैब, मैथिलीक धार्मिक-साहित्यक एकटा महत्वपूर्ण काज भेल अछि, जे मैथिलीक परंपरा मे विद्यापतिक 'गोसाउनिक गीत' सऽ आरंभ भेल अछि।

'अनुप्रास प्रकाशन', मधुबनी, सऽ प्रकाशित अइ पोथीक आरंभ मे अनुवादिकाक आत्मनिवेदन, स्व-परिचय, श्री दीप नारायण विद्यार्थीक सारगर्भित प्रकाशकीय वक्तव्य आदिक संग, सप्तश्लोकी दुर्गा, श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्, सम्पूर्ण पाठविधि (कवच, अर्गला, कीलक, विविध सूक्तम्, देव्यथर्वशीर्षम्, नवार्ण- विधि, विविध न्यास, ध्यान, ब्रह्मशापविमोचन, तेरहो अध्याय, तीनू रहस्यम्, आ अंततः विधानपूर्वक क्षमा-प्रार्थना, दुर्गामानस पूजा, बत्तिस नामावली,

आदि शंकराचार्य विरचित देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र, सिद्धि-कुंजिकास्तोत्रक संग) सेहो संस्कृत मूलपाठक संग, मैथिली भावानुवाद-सह-तार्किक शब्दानुवाद, प्रस्तुत कयल गेल अछि।

मूलपाठ आ अनुवाद- पाठक प्रकाशन मे, पोथी मे तकर शैली-संयोजन, बहुत नीक आ नव ढंग सऽ कयल गेल अछि, जे हिन्दी- पाठबला संस्करण सऽ बेसी नीक, आकर्षक आ सौविध्यपूर्ण भेल अछि।

अनुवादिका-विरचित देवी गीत आ मैथिली आरती सेहो, आब साधक-भक्त के उपलब्ध भऽ गेलनि अछि।

उक्त पोथीक ई मैथिली-संस्कृत-संस्करण, मार्कण्डेय पुराणक सावर्णिक मन्वन्तरक देवीमाहात्म्यक सात सय श्लोकक (सप्तशतीक) मौलिक आनन्द, पाठकर्त्तृता के दैत अछि। आ कतहु विधि-विधान खण्डित नहि होइत अछि। सेहो देववाणी संस्कृत आ मिथिला-वाणी मैथिली, दुनू मे, एक संग।

अनुवाद-भाषा हिनकर, पूरा प्रांजल अछि।

मुदा मैथिलीक देसज शब्दाबलीक उपयोग मे कोनो टा कोताही नहि कयल गेल अछि। हिन्दीक शब्दावली, आंकड़ जकां कतहु नहि खटकत।

भावानुवाद मे, संस्कृत मूलपाठक मूलभाव, कतहु खण्डित नहि भेल अछि। तें पोथीक प्रति, साधकक श्रद्धाभाव पूर्ववत्, भक्तिवत् आ शास्त्रवत् अनामति रहैत अछि आ रहत। कनियों कतहु व्यतिरेक नहि बुझायत।

कोनो विशेष आश्चर्य नहि,जे भविष्य मे श्रीमद्देवी भागवत पुराणक ई मैथिली भावानुवाद प्रस्तुत कऽ मैथिलीक धार्मिक साहित्यक अपेक्षा सेहो पूर करथि।

आइ धर्मक्षेत्रक मिथिला मे एहेन लोकप्रिय पुस्तकक मैथिली संस्करण प्रस्तुत कऽ, वन्दना मातृ- शक्ति -वन्दनाक संग, मिथिला-मैथिली-वन्दना सेहो प्रस्तुत केलनि अछि।आ एकटा नीक अभाव-पूर्त्ति तऽ करबे केलनि अछि।

अनुवादक स्वरुप के जतेक लौकिक आ जतेक शात्रीय, जतेक प्रांजल बनायब संभव आ उचित छल (साधकक आस्था आ मूलपाठक मौलिकता देखैत), से वन्दना अपना भरि, अपन सर्वोत्तम, अपन कार्यक्षेत्र मे देलनि अछि।

धर्मक्षेत्रक अइ पोथी मे, कोनोटा धार्मिक आपत्ति, विवाद आ धार्मिक हिसाबें आलोचनाक गुंजाइश नहि रहि गेल अछि। आ ने कोनो विशेष गल्तीनामा अछि।

वन्दनाक कथा-संग्रह आ 'व्यक्तित्व विकास' पर सेहो पोथी छपल छनि। 'व्यक्तित्व विकास' पर हिनकर पोथी एखनहुं मैथिली मे असगरे अछि आ से नीक आ अत्यंत महत्वपूर्ण अछि।

लेखन-क्षेत्र, रचनाकार स्वेच्छया चुनैत अछि। मूल्यांकन-संवर्गक दायित्व अछि, उपेक्षा-नीति त्यागि मूल्यांकन करब।

मैथिलीक मूल्यांकन-संवर्ग, धार्मिक साहित्यक मूल्यांकन के, अपन अपरिपक्वता आ अपटुताक कारणें, अपना पर धार्मिक ठप्पा लगबाक भयवश, उपेक्षा करैत रहल अछि।

वस्तुतः धार्मिक साहित्य के 'धार्मिक कृति' बूझल जाइत रहल। 'साहित्यिक कृति' बुझले नहि गेल, जखनकि 'धार्मिक साहित्य' बूझल जायब, उचित आ तत्कालीन समयक मांग छल।

एकटा सक्षम आ इमानदार मूल्यांकनकर्त्ता, कोनोटा क्षेत्रक स्तरीय साहित्यक मूल्यांकन सऽ परहेज नहि करत, बशर्ते कि ओकर कृष्टिकोण परिपक्व आ खास अप्पन होइक आ हेतैक।

भलें, ओ धर्मसापेक्ष- पंथसापेक्ष मूल्यांकन करय अथवा पंथनिरपेक्ष भऽ कऽ! से मूल्यांकनकर्त्ताक स्वेच्छा-स्वाधीनता, सीमा आ विशेषता, अथवा ओकर रणनीति, किछुओ भऽ सकैत अछि।

मुदा मूल्यांकन लेल ध्याने नहि देब आ सायास उपेक्षा करब, आलोचकीय संवर्गक बइमानीए टा थिक!

वन्दना झाक ई भावानुवाद, परभाषिक शास्त्रीय साहित्यक अनुवाद-गति के, अवश्य प्रेरित आ संवेदित करत, से आशा सहजहिं कयल जा सकैछ, भलें कोनो विधा किनको लेल आलोच्य होइक आ किनको लेल स्वीकार्य!

■

हसीना मंजिल-उषाकिरण खान

✍ डॉ० कैलाश कुमार मिश्र

उषाकिरण खान लिखित पोथी हसीना मंजिल बहुत अर्थ मे मैथिली साहित्य लेल महत्वपूर्ण निधि अछि। ई पहिल पोथी अछि जाहि मे लहेरी-चूड़िहारिनक जीवन पर संपूर्णता सँ लिखल मैथिली के कहैत अछि कोनो भाषा मे स्वतंत्र आ सम्पूर्ण साहित्य रचना अछि। दोसर बात ई जे अहि रचना केँ मादें उषाजी एक चुड़िहारिन जे कि मुसलमान छैक, एक लोककला केँ उन्नत कलाकार अछि, ओकरा अपन मिथिला, मिथिलाक माटि-पानि सँ सिनेह छैक, मिथिलाक सन्तति कहबा मे गुमान छैक, मिथिलाक संस्कृति केँ धर्मक सीमा सँ ऊपर उठि देखैत अछि, बुझैत अछि, आ अपन माटि-पानि सँ अतेक सिनेह छैक जे पतिक लाख प्रयासक बाद ओ पूर्वी पाकिस्तान (आजुक बांग्लादेश) नहिं जाइत अछि तकर विवरण दैत छथि। तेसर बात इहो जे भारत आ पाकिस्तानक विभाजन पर अनेक उपन्यास, रचना, सिनेमा, साहित्यक निर्माण भेल अछि, मुदा पूर्वी पाकिस्तान अथवा बंग्लादेश विभाजन पर मैथिली मे तँऽ नहिये हिंदी साहित्य मे सेहो कोनो स्वतंत्र रचनाक निर्माण नहिं भेल अछि। एहि काजक पूर्ति इ उपन्यास करैत अछि। चारिम, एकर मादें नारी अस्मिता आ लुप्त होइत पुरातन-परंपरागत कला केँ कोना बचेबाक चाही ताहि दिशा मे ई पोथी एक महाकुम्भक अमृतक बूंद अछि। ई उपन्यास साहित्य सँग नारी उद्यमिता, सशक्तिकरण, स्त्री मनोदशा, पुरुषक सोच, जेठ बहिनक अपन छोट आ असहाय बहिनक दर्द बॉटब, पुरुषक अपन कृत्य पर पश्चाताप, बटबाराक टीस, ओकर दुष्परिणाम आदि पर ऐतिहासिक दस्तावेज अछि।

कनि उपन्यासक संक्षिप्त यात्रा कऽ ली तऽ जे पाठक नहियो पढ़ने छथि सेहो कथा सँग यात्रा कऽ सकैत छथि। एकर प्लाटिंग एना छैक जे हसीना नामक एक सुंदर, आकर्षक चुड़िहारिन केर निकाह उसमान सँग होइत छैक। उसमानक पिता बहुत नीक लाहक चूड़ी अथवा लहठी बनाबय केर कला मे माहिर रहैत छैक। उसमान ई कला अपन पिता सँग रहैत सिख लैत छैक। उसमान के गाम पर किछु खेत-पथार सेहो छैक। किछु दिनक बाद हसीना गर्भवती भऽ जाइत छैक। ओही समय मे हिन्दू-मुसलमान मे किछु झगड़ा होइत छैक आ लोकक चढ़ेला पर उसमान निर्णय लैत छैक जे ओ पूर्वी पाकिस्तान अर्थात आजुक बांग्लादेश मे जाकऽ बसत आ भारत छोड़ि देतैक। ओ अपन योजना हसीना केँ कहैत छैक, मुदा हसीना ओकर बात मनबा लेल तैयार नहि होइत छैक। अंत मे तमसा कऽ उसमान असगरे अपन बहिनोई आ बहिन सँग बांग्लादेश चलि जाइत छैक। बांग्लादेश मे अपन ज्ञान आ मेहनत सँ ओ बहुत पैसा, सम्पति अर्जित करैत छैक आ दोसर बिआह कऽ लैत छैक जाहि सँ भरि घर बाल बच्चा रहैत छैक। इमहार ओकर पत्नी हसीना ओकरा गेलाक किछु मासक बाद एक बेटी सकीना केँ जन्म दैत छैक।

जखन बहुत दिन धरि उसमान नहिं अबैत छैक तऽ हसीना केर जेठ बहिन मदीना आ आर लोक सब मौलवी केँ कहि खुल्ला करा दैत छैक आ हसीनाक संबंध मादिनाक पति अहमद सँ करा दैत छैक।

मदीना अपन बहिन हसीना केँ कखनो सौतिन नहि मनैत छैक आ ओकर पति हसीनाक बेटी सकीना जे उसमान सँ भेल छैक केँ सदैव अपन बेटी बुईझ पालैत छैक। हसीना अपन जीवन चूड़ी बनबै आ बेचय मे लगा दैत अछि। अहि बीच बांग्लादेश मे रहैत उसमान केँ जखन ई पता चलैत छैक जे ओकर बेटी सकीना के निकाह समद नामक लड़का सँ भऽ रहल छैक जे ओवरसीयर छैक तऽ ओ अपन बेटी लेल रंग विरंगक गहना आदि गुप्त रूप सँ बना गाम अयबाक तैयारी करैत अछि। सब समान कें उसमान एक मोटरी बना राखि लैत अछि। संयोग सं ताबेत बांग्लादेशक निर्माण भ' जाईत छैक आ बिहारक मजदूर आ लोक चाहे ओ कोनो जातिक हो ओतय के लोक पछिमाहा कहैत ओकरा अपमानित करैत छैक आ मार-काट करैत छैक। एकदिन लोकक भीड़ उसमान ओकर पत्नी, बेटा-पुतहु, सबहक हत्या क' दैत छैक। ओहि मृत्युक ढेर मे कहि ने कोना उसमान बचि जाइत छैक। कहुना क' उसमान अपना संग गहनाक पोटरी लेने पुरनिया के कैंप मे आबि जाईत छैक। ओतय सँ लहेरियासराय जतय ओ अपन पहिल पत्नी हसीना केँ छोड़ि गेल रहैक ओतय अबैत छैक। ओतय एला पर उसमान केँ पता लगैत छैक जे हसीना मरि गेल छैक आ ओकर बेटी सकीना अपन एक बेटा आ बेटी संग एक घरक कमरा मे चूड़ी बना जीवन यापन करैत छैक। सकीना के पति समद पढ़ाई केलाक बाद सब सम्पति अतए धरि घर द्वार धरि या त बेचि देलकैक अथवा बन्हक राखि अरब कमेबा लेल चलि गेलैक। अरब मे एक महिला सँ विवाह क' लेलकैक। नहि त' सकीना लेल पैसा भेजैत छैक आ नहिये ओकरा सँ कोनो

सम्बन्ध। बच्चा सभक प्रति सेहो समद केँ कोनो सिनेह नहि छैक। हाँ ओ अपन बेटी कैँ विवाह मे किछु खर्च करतैक से बात लोक सभ लग बाजल रहैक। सकीना अपन भाई कमरू केँ बेटा सँ अपन बेटी केर विवाह करतैक से पहिने सोचि लेने छैक। अहि बीच उसमान अपन बेटी सकीना लग अबैत छैक। लोक ओकर नाम पुछय चाहैत छैक त' ओ अपन नाम पड़उआ बतबैत छैक। सकीना केँ नहि बुझल छैक जे उसमान ओकर बाप छैक। पहिने उसमान दू बरख धरि एकटा मस्जिद मे रहैत छैक। ओतहि वरतन- बासन धोबैत छैक ताहि एबज मे ओकरा भोजन भेट जाईत छैक। मस्जिद केर बाहर ओ सुइत रहैत अछि। बाद मे सकीना आ ओकर बच्चा सभसँ घनिष्टता बढैत छैक त' सकीनाक घर आबि जाईत छैक। कथा केर बीच मे हसीना केँ समय उपेन्द्र महारथी जे मिथिलाक लोक कला लेल समर्पित नाम छथि आ ओ सब तरहक कला केर उत्थान मे अपन योगदान लेल जानल जाईत छथि केर पदार्पण होइत छनि। महारथी जी केँ हसीना केर कुईर आँखि बहुत आकर्षित करैत छनि। ओ अपन अनेक कृति मे हसीना केँ अपन मॉडलक रूप मे व्यवहार करैत छथिन। हुनक इहो सोचब छनि जे लोक कला केँ बचायेब बहुत आवश्यक छैक। अहि सब बात मे सूत्रक काज करैत छथिन चौधरी जीक पत्नी। हसीना-सकीना जकाँ चौधरी परिवार सेहो ओहि परिवार सँ तीन पुश्त सँ जुड़ल छैक। चौधरी जी ओतय पहिने मदीना बाद मे हसीना आ फेरो सकीना अपन लहठी केँ नव-नव डिजाईन संगे अबैत रहलैक अछि। पाबनि-तिहार आ उत्सव एवं ओहुना चौधरी परिवार एहि परिवार स चूड़ी कीनैत रहलैक अछि। उसमान सँ सकीना आ ओकर बाल बच्चा सब घुइल-मिल जाईत छैक। अपन नीक बेजाय सब बात करैत छैक। जखन उसमान अपन बेटीक दर्द सुनैत छैक आ देखैत छैक त' ओकर मोन होइत छैक जे ओ अपन सोना केर गह्नाक मोटरी सकीना केँ द' दैक आ कहैक जे वएह छैक ओकर अब्बा। मुदा ओकरा होइत छैक जे सकीना बहुत आत्मसम्मान मे रहए वाली महिला छैक ओ कहियो उसमानक वस्तु नहि लेतैक। फेर नहुँ-नहुँ सकीना चूड़ी मे अनेक तरहक डिजाईन बनबैत छैक जाहि मे किछु खाश तरहक शीशा केर काज आ ओहि काजक सफाई उसमान बना दैत छैक। जखन ओ चूड़ी ल' क' सकीना चौधरी परिवार मे जाइत छैक त' बूढी चौधराईन कहैत छथिन जे सकीनाक पितामह केँ अतिरिक्त इ डिजाइन ककरो नहि अबैत छलैक। सकीना कहैत छैक जे ओकर माय हसीना ओकरा इ डिजाईन सिखा देने रहैक। खैर सकीना केँ बाद मे किछु बाहर सँ काज भेट जाइत छैक जाहि मे उसमान ओकरा संग दिन राति मदति करैत छैक। थोड़े दिनक बाद सकीना केर बेटा हसमत अपन अमा सँ कहैत छैक जे एक टा सीसाबला अलमीरा राखि ओहि मे रंग-विरंगाक चूड़ी सजा देबाक लेल आ ओकर नाम हसीना मदीना सुहाग मंजिल रखबाक लेल कहैत छैक मुदा सकीना कहैत छैक जे बड़ी अमा आ अमा अर्थात मदीना आ हसीना केर नाम पर राखक हेतु। नाम बनि जाइत छैक- मदीना हसीना चूड़ी स्टोर। बाद मे ओतय फेरो उपेन्द्र महारथी अबैत छथिन आ हुनका संगे अबैत छथिन भारतीय लोककला के महादेवी कमलादेवी चट्टोपाध्याय। ओ सब सकीना के कला देख मुदित भ' जाईत छथिन। किछु दिनक बाद सकीना केँ बिहार सरकार सँ चीट्ठी अबैत छैक जे ओकरा बिहार सरकार द्वारा श्रेष्ट कलाकारक पुरुस्कार आ सम्मान संग 25000 टाका सेहो 15 अगस्त क' मुख्यमंत्री केँ हाथे भेटतैक। खुशी के माहौल भ' जाईत छैक। ओहि सँ पहिने स्थानीय सामाजिक संस्था सेहो सकीना केँ सम्मानित करैत छैक। आब सकीना केँ बेटा हसमत आ उसमान सब मिल क' एक दोकान बनबैत छैक जकर नाम रखैत छैक हसीना सुहाग मंजिल। अहि बीच मे उसमान केँ पता चलैत छैक जे ओकर एक मात्र बहिन अपन गाम मे रुग्न छैक। ओ कोनो बहाने अपन बहिन लग जाइत छैक। बहिन ओकरा चिन्ह जाईत छैक मुदा ओ कहि दैत छैक जे इ बात ओ ककरो लग नहि बाजैक। कथा आगा बढैत रहैत छैक। अहि मे खादी भण्डारक भूमिका, पुस्तक केन्द्रक भूमिका आ समाजक संचेतनाक भूमिका गज्जब छैक। कमरूक ससुर बिक्को आ उसमान बचपन मे एकै संगे गामक मदरसा मे पढ़ैत रहैक। ओना उसमान सकीना केँ इ कहि देलकैक जे ओहो लहेरी छैक। आ पैसा केँ लोभक कारण बांग्लादेश चल गेल छल। इहो कहि देलकैक जे ओकर बंगलादेशक पत्नी, बच्चा सब मरि गेलैक मुदा एक बेटी अपन देस मे छैक। अपन गहनाक पोटरी सेहो जमा करक हेतु उसमान सकीना लग लागि देने रहैक। एक दिन उसमान केँ जखन सकीना इ कहि देलकैक जे ओकर माय हसीना ओकर अब्बा उसमान केँ बहुत प्यार करैत छलैक त' उसमान अपन सत्यक भेद खोलैत-खोलैत रहि गेलैक। खैर, जखन उसमान के इ पता चललैक जे बिक्को सकीनाक घर आबि रहल छैक त' ओकरा भेलैक जे आब ओकर भेद खुइज जेतैक। ओ कोनो बहाने फेरो मस्जिद दिस चल गेलैक। दोसर दिन ओकरा किछु लोक मूर्छित अवस्था मे सकीना केर घर अनलकैक। बिक्को ओकरा अहि आधार पर चिन्ह गेलैक जे उसमान केर दहिना पैर मे छ टा आगूर रहैक आ ओ कहि उठैत छैक ''इ त हमर नेनपनक दोस्त

उसमान अछि।'' अतेक सुनिते देरी सकीना ओकरा भरि पाँज पकड़ि लैत छैक आ कनैत संबोधित करैत छैकरू ''अब्बा, हौ अब्बा सुनै छह तोहर बेटी भेटलह हौ। हइ ये हम तोरा सर पारै छियह, सुनह। नोर आबै जमजम भए गेलै उसमानक लेखें- धक् धक् सेहो बन्न भए गेलैक। बिक्को मियाँ हाथ अकास दिस उठौने फातेहा पढय लगलाह...। मोन मे अएलनि उसमान भाई आइ हसीना मंजिलमे अपन आखरी सांस लेलनि। की हसीना दाई कत्तहु ठाढि छथिन कोनटा फरक मे।'' (111) इ भेल संक्षिप्त मे अहि उपन्यासक कथा वस्तु। आब एकर विवेचना करी। हमरा लगैत अछि इ उपन्यास अनुभव आ ताहू मे कलाकार आ एक एहेन परिवार जे ओहि कलाक सम्मान करैत अछि, ओकर प्रयोग करैत अछि केर मध्य तीन पुश्तक व्यवहारिक उपन्यास अछि। अहि मे तीन पुश्तक लोक अपन संस्कृति केँ कोना अपन मेमोरी मे जोग्बैत अछि तकर अनुपम व्याख्या छैक। पोथी पढ़ला सँ लगैत छैक जे अगर कोनो समाज पर लिखबाक अछि त' ओहि समाजक बोली, परम्परा, पहिरन, ओढन, खान-पान सँ अपना आपकेँ अवगत कराऊ। पहिने ओकर सदस्य बनू, सहचर बनू। केबल बाहरी दर्शक बनि लिखब त' कलमक धार पनिगर किन्नहु नहि हएत। उषाजी ओहि समाजक संस्कार, ओकर व्यवहार, ओकर आर्थिक कर्मक साक्षी नहि जीवन्त साक्षी छथि। ओकर पोर-पोर सँ अवगत छथि। ओकर कहबी, फकड़ा, ओकर घर-द्वार, ओकर वस्त्र सबहक ज्ञान-भान छनि हिनका। भ' सकैत अछि इ सब किछु मे निष्णात हेबाक लेल हिनका कतेको बरख लागल होनि! भ' सकैत अछि हिनकर नोटबुक 500 पन्ना मे भरल होनि टखने ओहि मे सँ तरासि इ अपन 111 पन्नाक निस्सन पोथीक निर्माण केलनि अछि। तिरहुत मे लाहक चूड़ीक महत्त्व बतबैत उपन्यासक एक पात्र कहैत छैक- ''लाह बरकएबा मे कतेक आँचक जरूरति होइत छैक, कतेक लाह, कतेक बालू आ कतेक कचरा फेंटल जाइत छैक तकर सही-सही अनुपातक ज्ञान जाहि लहेरी केँ भ' गेल से सभस सेसर। पन्नी कतरब, मौका पर चप्प द' साटब आ बेलना पर लहठी रोलब, ई सभटा लूरि सकीना अब्बासँ सिखलक। मोट-मोट लहठी बनएबामे ओतेक इलिमक जरूरति नहि छैक। मिहिक्का तीसीफूल, कतरी आ सहाना बनएबामे असली कारीगरी देखल जाइत छैक। आ अइ सभक जोर लगन मे सौंसे तिरहुता मे होइ छै। जहाँ तलुक नजरि जाइ छै सकीना केँ तहाँ तलुक तिरहुता छै। आ तिरहुता मे लगन मे लोक इहे कच्चा लहठी पहिरलक। ओहि बिनु ने बियाह होइ छै, ने दुरागमन। ने बच्चा के छठिहार पुजाइ छैक, ने मूड़न जनउ होइत छैक। छोटका सँ बड़का धरि लहठीक हाहि मारैत रहैत छैक। इएह हाहि तँ सकीना पेट भरलकैक अछि आइ धरि। इएह जरुरति सकीनाक देह झँपैत छैक, अहि सँ सकीना अपन बाल बच्चा सभकेँ पोसैत अछि। इ सकीनाक अप्पन काज रोजगार छैक। एकरा किएक छोड़त?'' (10-11) उपरोक्त संदर्भ सँ एक बात स्पष्ट भ' जाइत छैक उषाजी कला केँ भीतर प्रवेश करबाक क्षमता रखैत छथि। कलाक सब बात बुझैत छथि, कला कलाकर लेल की भ' सकैत छैक, बिपत्ति मे कोना सहायक भ' सकैत छैक, कला कैँ लोक कोन भूगोलीय क्षेत्रक विस्तार धरि देखैत छैक, कला मे कतेक मोटिफ, पैटर्न आ प्रयोग होइत छैक, लोक कला मे सेहो व्यक्ति विशेषक की अजगुत भूमिका होइत छैक, कला कोनो बच्चा अपन माता पिता केर संगति मे सहजे कोना सिख जाइत छैक, आदि आदि। आ इ बात बिना ओहि कला आ कलाकारक परिवेश मे घुसला सँ संभव नहि छैक। भावना मे ध्यान राखय पड़त जे कला पक्ष, प्रयोग पक्ष आ आर्थिक पक्षक संग-संग स्त्री पक्ष पर संतुलन होबक चाही। से नहि भेल त' फील गुड बला स्थिति भ' जाएत। साहित्य रजनीति मे हेरा जाएत। आ से बातक ध्यान उषाजी रखैत छथि। अहि प्रसंग मे काजी बिस्मिल्लाह केँ झीनी-झीनी बिनी चदरिया याद आबि रहल अछि। काजी साहेब शोषण पक्ष पर अतेक भावुक भ' गेल छथि जे वनारासी वस्त्रक श्रृंगार जेना कतौ भागि जाइत हो। उषाजी इ बात हमेशा ध्यान रखैत छथि। पोथी मे लहठी केर डिजाईन जेना किस्मत, अस्मत, बरसात आदि भेटत। इ शोध सँ अबैत छैक, निरिक्षण सँ अबैत छैक, सहभागिता सँ अबैत छैक केवल साहित्यिक अनुराग सँ नहि अबैत छैक। कहि ने कियैक लहेरी समाजक लोक शिक्षा वंचित कोना रहि गेल अछि। शायद गरीबी आ कारोबार अहि समाजक लोक के शिक्षा सँ वंचित केने छैक। उषाजीक एक चरित्र कहैत छैकरू ''शेख पठानक धिया-पूता त पढ़ि गेलै कुजरा, लहेरी-धुनिया कहाँ पढ़लकै।''(25) उषाजी कला इतिहासक विदुषी छथि। हिनक हृदय मे कला बसैत छनि। इ भाव उपेन्द्र महारथीक सोच आ कलाक मादे उषाजी हसीनाक दर्द कमलादेवी चट्टोपाध्यायक हृदय केँ देखैत कहैत छथिरू ''एकर घरबला पाकिस्तान चल गेलै। ई जाए लेल तैयार नहि भेलै। से सभटा भारी-भारी सेर-सेर भरिक चानीक गहना उतारि कए दए देलकै। हमर एतबे कहब छलैक कि हसीनाक आँखि स नोर ढबढबा गेलै आ ओ द्रवित भए गेलाह आ कमला जी त, एहेन कतेको नारीके बोल-भरोस, सहारा देलनि अछि ते ओहो ओकरा दुःख स दुखी भए गेलीह। हसीनाक आब जे समस्या

छलैक ताहि कारणे कनीये काल गप्प भेल आ हम सभ अहीबात पर सहमत रही जे एकरा अहमद सं विवाह कए लेबक चाही। हसीनाक चल गेला पर मधुबनी दिस जाए सँ पहिने महारथी जे एकटा उदास मुसकान संगे हमरा कहलनि- ''भौजी, अइ हसीनाक वएह परि भेलै ने जेना सिद्धार्थक महाभिनिष्क्रमणक पश्चात् गोपाक भेल छलैक। एहने वंचिता रहल होएटैक यशोधरा कि ने?' हम एकर की उत्तर दितियैक। कलाकारक नजरि, कलाकारक आत्मा कालजयी होइत छैक-दुःख, शोक, पीड़ाक सीमा कलाकार निर्बन्ध भाव स त्रिकाल मे व्याप्त छैक। अहर्निश जे एकटा दिवारात्रि बीतैत छैक ताही मे सम्पूर्ण युगक आभास सूर्य तारिका मे, ब्रह्माण्डक स्थिति ना एकटा सोझाँ ठाढ़ मनुष्य मे भूत वर्तमान-भविष्यक स्थिति देखब कलाकारेक सक होइत छैक। इएह छैक कलाकारक प्रेरणाक कथा।''(68) कलाकारक पहिचान कला सँ होइत छैक। धर्म त' मात्र एक अराधनाक विधान छैक। इ बात एक कलाकार नीक जकाँ बुझैत छैक। उसमान सकीना केँ येह बात कहैत छैक- ''गै दाइ, हमरा दिया बड़े तो पुछै छलही तँ सुन। हमरा सब लहेरी जातिक लोक सुरुहे सँ पडौआ छी। जतेक लाहक लहठी गढ़नाहर लोक छै, से हिन्नू छै देखै छहीन। आ काँचक चूड़ी बला सब चूड़िहरा मियाँ छै। चूड़हार मियाँ कि कोनो अरब स आएल छैक। नई, कियो नहि। त अहीठामक लहठी बनौनिहार लहेरी सै दू सै बरिस पहिने किछु गोटा मियाँ भए गेलौं, जेना लेन कातक गामक चौधरी, बाभन आ खान रजिपूत, बनिया बेकाल आ कोइरी धोबी। जे काज करैत रहल से करिते रहल, मुदा धरम बदलि गेलै। पेटक धरम, सुख-दुःखक धरम सँ बेसी कोन धरम होइ छै।''(87) अहि रचना मे सामान्य नारीक मानवीय पक्षक बेजोड़ चित्रण छैक। एक दिस हसीना केँ अपन माटि पानि सँ अतेक प्रेम छैक जे अपन पति केँ सभ दिन लेल छोड़ि दैत अछि। इ एक पक्ष छैक। दोसर पक्ष छैक ओकर अपनी पति उसमान संग प्रेम-अनंत प्रेम। हसीनाक प्रेम उसमान लेल कहेन छैक तकर वर्णन उसमान सँ ओकर बेटी सकीना करैत छैक- ''जनै छह जखन-जखन हमर आमा हमरा चुपचाप अब्बाक कथा सुनबै ओकर सिनेह पघीलि- पघीलि आँखि बाटे बहैत जाइ। आ जेना मोमबत्तीक टेमी लग सँ मोम पघिलैत धरती पर अबिते ठोसगर भए जाइ छैक तहिना हमरो करेज पर आमाक ठोसगर भेल गेल।''(102) अहि सम्प्रेषण मे शब्द आ बिम्ब खांटी देशी छैक, आयातित नहि। सएह छैक साहित्यकारक प्रयोग। मायक भाव बेटी के आत्मा मे आनब केर कला मे साहित्यकारक जवाब नहि! जेना बेटीक करेजक भीतर मायक आत्मा आबि गेल होइक। सकीना फेरो उसमान सँ अपन माय हसीनाक बात करैत कहैत छैकरू ''हमरा आमा केँ मोन मे हमर बंगाली अब्बा लय बड़ सिनेह छलै। कौखन-कौखन सोचौ छियै जे जँ हमर अब्बा भेटतै त' पुछबै एतेक मानै छलहक आमा कैँ तखन छोड़िक किएक चल गेलहक? ओहि बेचारी केँ एहेन दुःख किएक देलहक। ओइ सँ तोरा कोन सुख भेटलह?'' उपरोक्त कथन मे प्रेम आ शिकायत दूनू छैक। अतबे नहि सकीना अपन मायक मादे अपनो व्यथा कहि रहलि छैक। फेर सकीना केँ नारी हृदय प्रेम मे जेना पिघलि जाइत छैक आ ओ बात केँ आगा बढबैत कहैत छैक- ''आर किछु नहि कहबै ओकरा। हमर जन्मदाता छैक। ओकरा देखि नेहाल भए जेबै हो बाबा।''(102) उषाजी नारी पात्रक मर्यादा बुझैत छथि। बेर-बेर उसमान द्वारा अपन कृति पर पछताबा करब अहि बातक प्रमाण छैक जे हसीना सही छलि, ओकर माटिक प्रेम उचित रहैक, उसमान गलत छल। आ अंत मे उसमान अपने शब्द मे कहैत छैक- ''दाइ गै, की पुछबहीं। करमघट्ट लोक के सोनाक कन्नी भेटि जाइत छैक त ओकरा टलहा बूझि घूर पर फेकि दैत छैक। हीराक मोल कदरदान जनै छै। तोहर अब्बा छलौ बानर आ ओकरा हाथ मे पड़ि गेल छलै नारियर।''(103)।

नारी हृदयक दर्द कतेक प्रवल होइत छैक, कनबाक अर्थ आ मर्यादा सम्बन्ध सँ कतेक छैक, कनबा मे आ नोर मे सम्प्रेषण कोना अपन लय आ ताल देखबैत छैक से देखक अछि त' ओ प्रसंग जतय उसमान सकीना केँ इ कहैत छैक जे ओ ओकरा अब्बा कहैक तखन सकीना केँ उत्तर सँ भेटैत छैक- ''हौ बाबा, हमरा करेज पर कठुआएल पीरा दलमलित नहि करह। एकटा मोन छल जे जाहि दिन अब्बा भेटत हम ओकरा करेज मे सटि मोन भरि कनितौं। सूपक सूप नोर झहरैत, अपन उमेर अपना बापक दसा किछु ने बुझितौं, से हक नहि छीनह।'' सूपक सूप नोर बहुत बात कहैत छैक। पूरा उपन्यास अपन बात गंभीर भेल कहैत अछि। हमर अपन इ मानब अछि जे हसीना मंजिल निश्चित रूप सँ मैथिली साहित्यक एक अमूल्य निधि छैक। पाठक लेल अहि मे बहुत किछु छैक।

■

''जेना होइत हो भोर'' प्रसंग किछु बात करब जरूरी भऽ गेल तेँ....

✍ सारस्वत

एखन मैथिल मे अरूण जी (अरूण लाल दास), हितनाथ जी (हितनाथ झा), भवेश जी (भवेश चन्द्र मिश्र) आ रेवती रमण जी (रेवती रमण झा) सेवानिवृत्तिक बाद खुब लीखि रहलाह अछि। से नीक लिखैत छथि। खुब नीक। निष्पक्ष भऽ। से तमाम पूर्ववर्ती लेखक लोकनिक लेल चौलेंज थिक। हृदय सँ सभ गोटे कय बधाइ।

मुदा एखन हम बात करब अरूण लाल दास जीक मादे। शायद एक दू बरख पहिने फेसबुक पर हिनकर मैथिली पोस्ट देखलहुँ। शुद्ध अशुद्धक तराजू कय तियागि आगू बढ़लहुँ। फेर एक दोसराक पर्याय भऽ गेलहुँ। लागल किओ अप्पन भेटि गेलाह।

आइ हमर हाथ मे ''जेना होइत हो भोर'' पोथी अछि। काल्हि सँ आइ धरि मे पूरा पढ़ि गेल छी। हे प्रिये! कनी बाजि दियौ (पेज-15) सँ अहिंसा परमो धर्मः (पेज-127) धरि। औनैहियो किनको भूमिका हम नइ पढ़ैत छी। मूल पोथी पढ़ैत छी। भूमिका खाहे प्रशस्ति होइछ व-भाषणमाला.........वा शादी बियाहक कार्ड.....

ई पोथी प्रेम सँ शुरू होइत अछि आ समर्पण पर खतम भूमि जाइत अछि। अइ मे कविताक दू धार अछि। पहिल प्रकृतिक आङन मे चिंतन करैछ। आ उल्लासक बाट गढ़ैछ। जखनकि दोसर धार थिक ''अन्तर्मनक संवाद'' जे सामाजिक व्यवस्था सँ उपजल अछि। पहिल सँ अंत धरि कविता एतहि स्मूथली बढ़ैत अछि।

हिनक कविता मे प्रेमक अकुलाहट अछि। प्रेमक विघटन अछि। प्रेम मे पसरल कुत्सित चित्कार किछु कविताक आधार बनल अछि। जखनकि बेसी कविता जिनगीक संघर्ष सँ जुड़ल अछि।

मुदा पोथी पढ़य काल कतहु मस्तिष्क तनाव नइ भेल। कतहु काँट-कुश नइ। वाद-प्रतिवाद कतहु नइ। सहजता सँ सब पेज आँखिक सोझाँ ससरैत गेल। से अय पोथीक नीक पक्ष थिक।

हासिया पर लोकक मनोभाव गढ़ैत, मूलधारा सँ कटल जिनगीक संवाद रचौत अछि ई पोथी। मनुक्ख अपन रोजी-रोटी लेल शहर पकड़ैत अछि। एतय पहिल मुठभेड भाषाक सङ होइछ। नवकाक प्रहार लग अपन मातृभाषाक प्रति लगाव जन्म लैत अछि।

एकर ठीक विपरीत जे गाम-घर मे रहैछ तिनका लेल धैन सन। एहीठाँ आबि कवि ललकारैत छथि, जगबैत छथि, हिलबैत छथि। दूबि पर सँ वैचारिक पाथर सब कय हटबैत छथि। आ से अन्तर्मनक विश्वास जखन हिलोरि मारैत अछि ओतय अय पोथी कय ठाढ़ पबैत छी। मैथिली मे एहेने कविताक खगट छैक जै पर समयक गरदा नइ बैसि सकय। आ सर्वकालीन स्थिरताक संवाद गढ़य।

पावनि तिहारक बहन्ने संस्कार मे भऽ रहल बदलाव दिस कविता बात करैत अछि। जेना ''तील करू उत्सर्ग/भव बन्धन निश्चित कटतध्भेटत संभव स्वर्ग।'' एतय बतबैत चली जे स्वर्ग नरक किछु नइ होइछ। पाप पुण्य किछु नइ होइछ। सब वैचारिक अवधारण थिक मनुक्खक। पतनक बाट उत्थान सँ झँपाय जाइछ। अङने-अङने ताहि दिन/चलैत रहय अम्बर चरखा/सूत आ धागा मे फुलाइत रहय/मिथिलाक संस्कृतिक/फुटैत रहय/मैथिलक सुन्नर संस्कार/--(पेज-56) पेज 92 सँ 98 धरि प्रकृतिक गीत गबैत छथि। उल्लासक कविता थिक ई सब। जेना ऋतुपति वसन्त हो/कि फागुन सगुन बनाबय हो/कि हँसि रहल हरसिंगहार/कि साँकल/कि मादकता मे जोबन...../.............तृप्तिक अनंत बाट दिस घुसकैत अछि जिनगीक। दुखक पुनरावृत्ति जखन होइत अछि जिनगी मे तऽ कवि कहैत छथि- ''अहाँ तँ मोम बनि पिघलि जाइत छी मुदा हम तऽ फेर मोम बनय चाहैत छी।'' एकठाँ कवि कहैत छथि- ''लोक तऽ मरबे करैत अछि। सड़को पर आकि स्वभाविक। मुदा ककरो मोन मे पैसि कय जखन मरैत अछि तऽ ओ खास भऽ जाइत अछि।'' ई पाँती जीवन-मूल्य कय दरसबैत अछि। आसे हमरा होइत अछि जे ई पोथी निछच्छ प्रकृतिक बीच अन्तः सलीला बनि प्रेम आ उन्मादक दुई पींडी चेतनाक संग्रह थिक। जिनगी मे हार जीतक खेल मे समर्पणक मूल्य कय स्थापित करैत अछि। आइ हरिमोहन बाबूक प्रेसक लीला मोन पड़ि गेल। एहू पोथी मे वर्तनी दोष अछि। से कम नइ। बोली आ भाषाक द्वन्द कय ठाढ़ करैत अछि ई पोथी। जखनकि दोसर दिस व्यवस्थाक प्रति आक्रोशक जीवन-रथ कय आगू घुसकबैत अछि। पलायन मे दुविधाक शिकार भेल मनुक्खक बात करैत अछि ई।

पेज-68/70/74/75/77/80/84/85/87/सन बहुत एहेन पेज अछि जतय पूर्णविराम आ कौमा नदारथ अछि। किछु शब्द नइ पचल जेना परूक माँउ- माँउ करब (पेज-76)आदि।

एक दिस उन्नतिक गीत गबैत छथि तऽ दोसर दिस खाधिक संताप कय स्वर देलनि अछि। अय पोथी मे किछु एहनो शब्दक प्रयोग भेल अछि जे एखन विलुप्त भेल जा रहल अछि। जेना सिरागू/गोनरि/........ पोथीक छपाई नीक अछि। दाम कम अछि। पोथी पठनीय अछि। आर की चाही पाठक कय।

''बहुत खास अछि ई पोथी। पढ़ि कय तऽ देखू !
थिकीह अनुप्रासक आस, चखि कय तऽ देखू !
भेटत सुकोमल कविक, मधुर मुस्कान
प्रकृतिक आङन मे अरिपन करैत।''

एक बेर फेर सँ हमर हार्दिक शुभकामना भाइ अरूण लाल दास जी केँ।

पोथीक नाम	-	जेना होइत हो भोर
विधा	-	कविता संग्रह
कवि	-	अरुण लाल दास
कुल पृष्ठ	-	128
प्रकाशक	-	अनुप्रास प्रकाशन
प्रथम संस्करण	-	2021
मूल्य	-	150/-

‘महाकविक महाप्रयाण’ : एक विलक्षण पोथी

✍ डॉ. महेन्द्र नारायण राम

महाकवि कालिदास विश्वक शीर्ष कवि मानल जाइत छथि। भारतवर्षक बहुत क्षेत्र हुनकर जन्मस्थान होयबाक दाबी करैत अछि। जेना-मुख्य रूप सँ विदर्भ, गढ़वालक देवगिरि, क्रौचरन्ध्र केर आधार पर रुद्रप्रयागक कविल्ठा, कश्मीर, बंगालक मुर्शिदाबाद जिलाक गढ़सिंगरू गाम, उज्जैन आदि क्रमशः के कृष्णमूर्ति, डा. भगवती लाल राजपुरोहित, राजेन्द्र मिश्रा, प्रो.लक्ष्मीश्वर कल्ला, डॉ. भगवतशरण उपाध्याय, वी.वी. मिरासी आ पं. मोरेश्वर नीलकंठ शास्त्री केर मंतव्य आधारें। एकर अतिरिक्त मिथिलाक सेहो अपन दाबी छैक।

सद्गृहस्थ संत जगन्नाथ चौधरी महाप्रयाण दिवस 24 अप्रैल 2022 कें सुल्तानपुर, कुशेश्वरस्थान, दरभंगामे समारोहपूर्वक ‘‘सद्गृहस्थ संत जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मान’’ हमरा (डॉ. महेन्द्र नारायण राम) देबाक सुअवसर पर मिथिला विभूति, मिथिला रत्न, बिहार प्रशासनिक सेवाक अपर सचिव पद सँ सेवानिवृत्त स्वनामधन्य विद्वान डॉ. रंगनाथ दिवाकर लिखित पोथी ‘महाकविक महाप्रयाण’ केर लोकार्पण कयल गेल छल। महाकवि कालिदास मिथिला के छथि, हिनकर जन्म मिथिलेमे भेल छनि, तकर विद्वतापूर्ण ओ तथ्यात्मक शोधपूर्ण आलेख एवं नाटक के माध्यमे डा. दिवाकर एकरा सद्यः प्रमाणित करैत छथि।

यद्यपि हिनका अतिरिक्त मिथिलाक आनो-आन विद्वतजन एहि पर अपन-अपन विमर्श देने छथि। स्वयं एहि पोथीक माध्यमे डा दिवाकर कहैत छथि जे-

कालिदास कें मैथिल प्रमाणित करबामे पं. आद्याचरण झा, पं. जीवनाथ झा, पं. जयमन्त मिश्र (किं कालिदास मिथिलावासी?), पं. बलदेव मिश्र, पं. लक्ष्मण झा, पं. दिगम्बर झा प्रभृति मनीषी सभक नाम श्रद्धा सहित लेल जाइत अछि। अपन ग्रंथ द्वय- ‘महाकवि कालिदासः कहाँ और कब’ आ ‘Kalidas : A Heritage of Mithila” मे शोध विद्वान वरेण्य पं लक्ष्मण झा विस्तारपूर्वक कालिदास सँ जुड़ल तथ्य सभक मीमांसा करैत महाकवि कालिदास कें मिथिलाक वरदपुत्र प्रमाणित कयलनि। ओ उच्चैठक प्राचीन नाम अचमितपुर कहैत छथि। पं. लक्ष्मण झा अपन ग्रंथ मे कालिदासक भगैत सभक उल्लेख करैत छथि। पं. झा लोकगाथा मे कालिदासक मैथिलत्व प्रशस्त करैत छथि।

मुदा एहि बात पर डॉ. दिवाकर केर कहब अनि जे- ‘‘हमरा जनैत ई भगैत ज्योति पजियारक पौत्र आ कारिख पजियारक पुत्र भगत कालिदास पजियारक थिक महाकवि कालिदासक नहि।’’ (महाकविक महाप्रयाण, पृष्ठ 74)

ओना दिवाकरजी एहि विषयक पं दिगम्बर झाक दीर्घकाय ग्रंथ ‘मिथिला एवं कालिदास’ (कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा), कृष्णानन्दजीक ‘कालिदास बिहार के थे’, डॉ. आदित्यनाथ झा, डॉ. देवनारायण झा, रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर, अनन्त शयनम् आयंगर, डॉ. भारती श्रीवास्तव, डॉ. रामचन्द्र ठाकुर (मिथिलापभ्रंश के आकर स्रोत) आदि लेखक सभक उल्लेख कयने छथि। ई सभ गोटे भिन्न-भिन्न आधार पर महाकविक मैथिलत्व प्रमाणित कयने छथि।

हमरा लगैत अछि जे डॉ. दिवाकर जी उपरोक्त जाहि विद्वान सभक चर्च कयलनि अछि, हुनका सभक ध्यान कालिदासक श्रीलंका यात्रा पर नहि जा सकल वा ओ सब एकरा महत्व नहि देलनि। डॉ. दिवाकर महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रा पर विशद् विचार कयलनि आ ओकर प्रमाण सभक गंभीर मीमांसा करैत कालिदास कें मैथिल प्रमाणित करबा मे सफल भेलाह अछि, ई प्रशंसनीय अछि। श्रीलंकाक शिलालेख सभक अध्ययन, इतिहासक गहन मंथन, परम्परा सभक अनुशीलन, अनुश्रुति सभक परीक्षण, ग्रंथ सभहक मनन सँ डॉ. दिवाकर एहि पोथी रूप मे जे महाकवि कालिदासक मैथिलत्व पर एक अनुपम काज कयलनि एहि लेल मैथिल समाज हुनक कृतज्ञ रहत।

पोथी दू भाग मे विभक्त अछि- प्रथम सैद्धान्तिक आ द्वितीय नाटक। एहि सँ पहिने कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगाक प्रकांड विद्वान प्रो. शशिनाथ झाक शुभकामना संदेश आ लोक नाटककार महेन्द्र मलंगिया जीक भूमिका छनि। एकर पश्चात डॉ. दिवाकरक ‘किछु आखर’- लेखकीय। पुनः डॉ. दिवाकर सैद्धान्तिक पक्ष के सेहो दू भागमे बँटने छथि- प्रथम महाकवि कालिदास आ हुनकर मैथिलत्व आ दोसर इतिहास आ साहित्यक अनुशीलन सँ महाकविक मैथिलत्व। एहि दुनू भागकें सेहो फेर सँ निम्न रूपेण बाँटि कऽ विमर्श कयने छथि- प्रथम भाग- i. महाकविक समय आ जन्म स्थान, ii. रचनामे व्यक्त विचार सभक आधार पर महाकविक मैथिलत्व, iii. पकृति वर्णनमे महाकविक मैथिलत्व, iv. रीति-रिवाज व पावनि-तिहारक चर्चमे महाकविक मैथिलत्व, v. भाषा वैज्ञानिक आधार पर महाकविक मैथिलत्व आ अप प्राचीन राजस्व अभिलेख केर आधार पर महाकविक मैथिलत्व। दोसर भाग सेहो निम्न रूपेण विभक्त अछि- i. महाकवि कालिदास आ सीताक चरित्र-चित्रण, ii. उच्चैठ, उज्जैन आ महाकवि कालिदास, iii. महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रा, iv. कालिदास, कुमारदास आ श्रीलंका, v. महाकवि कालिदास आ कुमारदास : अनंत पथ केर सहयात्री, vi. श्रीलंकाक महातीर्थ माटराः दू महाकविक महाप्रयाण स्थल।

एकर बाद निष्कर्ष आ अंतमे ‘महाकविक महाप्रयाण’ (नाटक) देल गेल अछि।

महाकवि कालिदास आने पुरा प्रातिभ जकाँ अपन जन्म स्थान, समय आ आश्रयदाता विषयक कोनो चर्च नहि कयने छथि। हुनक रचना सभक लालित्य, अर्थगौरव, उपमादि अलंकार एवं अन्य काव्य गुणयुक्त वर्णन तेहन सूक्ष्म आ अपनत्व भरल अछि जे भारतवर्षक बहुत क्षेत्र हुनका अपन मानबाक दाबी करऽ लागल। कोइ क्रौचरन्ध्र केर आधार पर तऽ कोइ केसर, सूर्यपूजा आ प्रत्यभिज्ञान दर्शन सभक कारणें। कोइ भगवती कालीक कृपा आ धानक बिच्चनि कें उखारि दोसर खेतमे खाउर करब केर आधार पर अपन कहलक। तर्क आ प्रमाण सभक आधार पर मिथिलाक अपन दाबी सेहो छैक। एकर समीक्षा आवश्यक। डॉ. रंगनाथ दिवाकर सभ दृष्टिकोण कें मोनमे रखैत एहि पोथीक माध्यमे जे मीमांसा आ विवेचना कयलनि अछि से महाकवि कालिदास मिथिले के छलाह, मानै मे कोनो संशय आ दुविधा नहि रहि जाइत अछि। डॉ. दिवाकर द्वारा प्रस्तुत विवेचन के संक्षेपमे एहि ठाम राखब समीचीन होयत। भारतवर्षक आन क्षेत्र जे महाकवि कालिदास कें अपना ओहिठामक हेबाक दाबी करैत अछि, ओहि पर डॉ. दिवाकर समीक्षाक क्रम मे हुनका सभक दाबी कें विखंडित करैत छथि। ओ निम्न प्रकार समीक्षा कयलनि अछि-

I. विदर्भ सम्प्रति महाराष्ट्रक दू कमिश्नरी नागपुर आ अमरावती कें कहल जाइत अछि। महाकविक रचना रघुवंशम् मे अज अपन राजधानी अयोध्या सँ इन्दुमतीक स्वयंवरमे भाग लेबाक लेल ससैन्य नर्मदा नदी पार कऽ विदर्भ केर राजधानी अबैत छथि-

प्रस्थापयामास ससैन्यमेनमृद्धां विदर्भाधिपराजधानीम् -रघु. 5/21

मालविकाग्निमित्रम् मे विदर्भराज आ विदिशाराज अग्निमित्र मे वैमनस्य आ युद्ध देखाओल गेल अछि। कृष्ण द्वारा विदर्भराजक पुत्री रूक्मिणी केर हरण आदि बात वर्णित अछि। ई एकदम सामान्य अछि। एहि वर्णनमे कविक कोनो मात्सर्य भाव वा कोनो अतिरिक्त विशिष्टता नहि प्रकट भेल अछि जे विदर्भ कें महाकविक जन्मस्थानक संकेत मानल जाय।

II. गढ़वालक देवगिरि वा रुद्रप्रयागक कविल्ठा वा कश्मीर शीतल क्षेत्र अछि। एहि शीतल क्षेत्रक वासी सभक लेल गर्मी से मुक्ति पाबक हेतु धारागृहमे फुहारक (यंत्रधारागृहत्वम्.....पूर्व मेघ 65), आ जलक फुहारसँ शीतल भेल समीर (स्वजलकणिका शीतलेनानि. ...., उत्तर मेघ, 40) केर परिकल्पना करब कने कठिन अवश्य अछि। एहि क्षेत्र कें जन्मस्थान मानलासँ मेघदूत केर नैसर्गिक मार्गमे व्यतिक्रम सेहो अबैत अछि। ई पूर्णतया संभव अछि जे महाकवि क्रौचरन्ध्र होइत हंस कें मानसरोवर जाइत देखने होथि। तथापि एहि वर्णनक आधार पर महाकवि कें एतऽ केर मूल निवासी कहब उचित नहि हैत।

III. केसर केर वर्णन आ सूर्यपूजा-प्रत्यभिज्ञान दर्शन कारणें सेहो महाकवि कें कश्मीरी नहि कहल जा सकैत अछि। केसर केर खेतीक कोनो एहन सूक्ष्म रूप प्रकार आ प्रविधिक बात महाकवि कतहु नहि कयने छथि जखन कि धानक बिआ बाउग कएल गेल खेत सँ बिच्चानि उखाड़ि ओकरा दोसर खेतमे खाउर करबाक चर्च महाकवि करैत छथि-

फलैः संवर्धयामासुरुत्खात प्रतिरोपिताः -रघु. 4/37

IV. बंगाली विद्वान लोकनि सेहो एकरा ध्यान मे रखैत महाकवि कें अपना ओहि ठामक रहबाक बात प्रमाणित करक फेर मे छलाह। अनादि काल सँ मिथिलामे धन खेतीमे खाउर करब आ रघुवंशम् केर एहि उत्खात् शब्दक समानता हुनका लोकनिक समस्त कल्पना कें ध्वस्त कयलक। भगवती कालीक कृपा आ धनखेत मे कमल फुलायब मिथिलाक सेहो प्रसिद्धि अछि। मूर्ख सँ विद्वान बनओनिहारि उच्चैठ भगवतीक कृपा सँ सभ गोटे अवगत छी। एहिना महाकविक पाँति 'आषाढ़स्य प्रथमे दिवसे' केर आधार पर बंगाली लोकनिक दाबी जे बंगालमे अखनधरि समय केर गणनामे पक्ष आ तिथिक प्रयोग नहि होइत अछि तैं महाकवि बंगाली छथि, बालुक भीत पर ठाढ़ अछि। ई दाबी सत्याश्रित नहि अछि। गुप्त नृपति चन्द्रगुप्त द्वितीयक सेनापति आम्रकार्दन केर साँची शिलालेखमे 'सम्वत् 93 भाद्रपद दि. 4' आ कुमारगुप्तक कालमे मनकुवार स्थान सँ प्राप्त मूर्त्तिपर 'सम्वत् 129 ज्येष्ठ मास दि. 18' सँ ई दाबी खंडित होइत अछि। जँ महाकवि बंगाली रहितथि तखन कदाचित रघुक हाथें बंगाली राजा सभक एहन भयंकर पराजय (रघु. 4/36) केर उल्लेख नहि भेल रहैत।

V. कश्मीर कें कालिदासक जन्मस्थान मानबाक क्रममे इहो कहब उचित जे सूर्यपूजाक विशिष्ट रूप महाव्रत छठि पावनि मिथिलामे एखनो प्रचलित अछि। प्रत्यभिज्ञान दर्शन वा इन्दुमतीक स्वयंवरमे सुनन्दा द्वारा अज के वरमाला पहिरायब सँ सेहो महाकविक कश्मीरी होयबाक निर्णायक उद्घोष नहि होइत अछि। स्वयंवरमे सुनंदा द्वारा अज केर माला पहिरायब मात्र हुनक चयन केर द्योतक थिक। विवाह बादमे विधिपूर्वक होइत अछि। प्रत्यभिज्ञान दर्शन केर पताका फहरएबाक कारणें जँ महाकवि कालिदास कें कश्मीरी मानल जाए तखन 'कामायनी' केर प्रणेता जयशंकर प्रसादजी कें सेहो कश्मीरी मानए पड़त। ई उचित हयत की? कश्मीरक ई शैव दर्शन (प्रत्यभिज्ञान दर्शन) अद्वैत दर्शन केर एक प्रकार थिक ओहिना जेना मिथिलाक भावाद्वैत दर्शन। विक्रमोर्यशीयम् केर प्रथम पदमे वेदान्त, द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, भावाद्वैत, सांख्य योग आ भक्ति दर्शन केर अभिव्यक्ति भेल अछि-

वेदान्त्तेषु यमाहुरेकपुरुषं व्याप्य स्थितं रोदती
यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषयः शब्दो यथार्थाक्षरः।
अन्तर्यश्च मुमुक्षुभिर्नियमित प्राणदिभिर्मृग्यते''
संस्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभोनिः श्रेयसायाऽस्तु वः।।

महाकवि परमात्माक स्वतंत्र आ आनन्दमय स्वरूपकें मानितो परमात्माक अवतारी रूपकें सेहो स्वीकार करैत छथि। राम आ कृष्ण कें विष्णुक अवतार कहैत छथि-

रामाभिधानो हरिरित्युवाच (रघु. 13/1), कार्यान्तरमानुषस्य विष्णोः (रघु. 16/82), गोपवेषस्य विष्णोः (पूर्वमेघ,15) आदि।

यथार्थमे महाकविक रचनामे भारतीय दर्शन केर सार सन्निहित अछि आ हुनका मात्र प्रत्याभिज्ञान दर्शन केर आचार्य कहब एवं एहि आधार पर कालिदास कें कश्मीरी कहब भारी अन्याय होयत एहि 'न भूतो न भविष्यति' महाकविक संग। एतऽ इहो उल्लेखनीय अछि जे कल्हण द्वारा कश्मीरी प्रातिभ सभक चर्चामे कालिदासक कोनो उल्लेख नहि अछि। ई महत्वपूर्ण तथ्य कश्मीरी दाबी कें समाप्त करैत अछि।

VI. उज्जैनवासी स्वाभाविक रूप सँ महाकवि कें 'अपन' मानैत छथि। महाकविक रचनामे उज्जैनक मार्मिक वर्णन सेहो भेल अछि। मुदा एकर मूल कारण उज्जैन कें महाकविक जन्मस्थली नहि अपितु कर्मस्थली होयब थिक। इन्दुमतीक स्वयंवरमे महाकवि प्रथम स्थान पर मगध नरेश परंतप आ दोसर स्थान पर अंगराजक वर्णन कयने छथि। वर्तमान बिहारक दुनू क्षेत्रक राजाक बादे ओ अवन्तिराज कें तेसर स्थान पर रखैत छथि। ई अपन क्षेत्रक राजाक प्रति अतिरिक्त आदरक प्रकटन थिक। मगध नरेशक विषयमे उद्गार अछि जे जेना असंख्य तारा ग्रह, नक्षत्र सभक बादो राति तखने इजोरिया राति मानल जाइछ जखन चन्द्रमा पूर्णतामे शोभैत हो, तहिना सहस्राधिक राजाक रहैत पृथ्वी मात्र मगधराजेक कारणें राजायुक्त कहाइत अछि-

कामं नृपाः सन्तु सहस्रशोऽन्ये राजन्वती माहुरनेन भूमिः,
नक्षत्रताराग्रहसङ्कुलाऽपि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः (रघु. 6/22)

इन्दुमती मगध नरेश दिशि तकैत छथि तखने हुनक महुआक माला सरकि जाइत अछि आ ओ मात्र प्रणाम करैत आगू बढ़ि जाइत छथि। अवन्तिराज सहित आन राजा सभकें बिनु कोनो अभिवादन कयने ओ आगू बढ़ि जाइत छथि। एहिना बिहारक सोनपुरक महिमा (5/36 आ 8/95) केर प्रसंग अपना क्षेत्रक लेल स्वाभाविक मात्सर्य केर प्रकटन थिक जे परोक्ष रूप सँ महाकविक जन्मस्थानक संकेत अवश्य करैत अछि। उज्जैनक वारांगना सभक महाकाल मन्दिरमे नृत्य आ नखक्षतपर पर पड़ैत शीतल फुहार सँ सुख भेटला पर दीर्घ कनखी मारबाक बिम्ब (पूर्वमेघ 39) हो वा अभिसारिका सभ कें अन्हारमे मार्ग देखएबाक चित्रण (पूर्वमेघ 27) केर चर्च हो वा दोसर स्त्री संग राति व्यतीत कऽ भिनसरवामे गृह आयल पति द्वारा नोर बहबैत रूसलि प्रियाकें मनुहारमे नोर पोछबाक चित्र (पूर्वमेघ 43) हो वा पण्य स्त्री संग संभोगमे प्रयुक्त सुगंधित पदार्थ सभक गुफा सँ अबैत महक केर चित्र (पूर्वमेघ 27) हो, ई सभ स्पष्ट रूप सँ वर्जना करैत अछि जे उज्जैन महाकविक जन्मभूमि थिक। ई मनोवैज्ञानिक तथ्य अछि जे लोक यथासाध्य अपन गामक गुप्तकथा सभक प्रकटन अन्यत्र नहि करैत अछि आ एतऽ तऽ महाकवि सभटा उघारि कें राखि देने छथि। उज्जैनक गढ़कालिका भगवती कें महाकवि कालिदास पूजित मानल जाइत अछि। सर्वथा सत्य अछि। एहि मंदिर वा गढ़कालिका मंदिरमे लागल शिलालेखमे वर्णित बारह शक्तिस्थल सभ मे सँ कोनो स्थल संग कोनो मूर्ख कें महाकवि बनएबाक कोनो कथा अनस्यूत नहि अछि। संगे ई एकटा महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे एहि मन्दिरक पुजेगरी परम्परागत रूपसँ मैथिल होइत छथि आ एतऽ केर पूजन परम्पराक विधान सेहो मैथिल पूजन परम्परा पर आश्रित अछि। एहि सँ ई धारणा बलवती होइछ जे मैथिल महाकवि कालिदास जखन अपन कर्मक्षेत्र मन्दसौर-उज्जैन (मालवा क्षेत्र) अयलाह तखन एहि गढ़कालिका भगवती कें अपन परम्परानुसार पूजन कयलनि। जे परम्परा एखनो अक्षुण्ण अछि। एहि तथ्य सभ सँ सेहो उज्जैन वा मालवा क्षेत्र महाकविक जन्मस्थली नहि कर्मस्थलीए प्रमाणित होइत अछि।

निष्कर्षतः कहल जा सकैत अछि जे डॉ. रंगनाथ दिवाकर द्वारा महाकवि कालिदासक जन्मस्थान पर विदर्भ, कश्मीर, बंगाल, उज्जैन आदि द्वारा कयल गेल दाबी संदर्भित जे उपरोक्त वैदुष्यपूर्ण विवरण प्रस्तुत कयल गेल अछि, ताहि सँ हुनका सभक दावा स्वयं विखंडित होइत अछि। अपन अकाट्य तर्क आ प्रमाण प्रस्तुत करैत डा दिवाकर आन ठामक दावा कयनिहारक दावासँ अपन पैघ डरीर खींचि कऽ ओहि दावी सभकें छोट कयलनि। ई आन ठामक दावी के निरस्त करबामे पूर्ण सफल भेल छथि। एहि सँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे महाकवि कालिदास विदर्भ, देवगिरि, कविल्ठा, कश्मीर, बंगाल वा उज्जैनक मूलवासी नहि छथि।

आब डॉ. दिवाकर एहि पोथीक माध्यमे अंतिम दावेदार मिथिला पर सेहो अपन तथ्य, शोध एवं प्रमाणपूर्वक अपन मंतव्य देलनि अछि। एहि मंतव्य के सेहो एहि ठाम राखब हमरा लेल समीचीन बुझना जाइत अछि।

(i) सीताक चरित्र-

रघुवंशम् मे जे सीताक चरित्र उकेरित अछि ओ महाकविक मैथिलत्वक स्पष्ट संकेत अछि। एहिमे सुदक्षिणा कें ऋतुस्नानक बाद देखि दिलीपक ई सोचब जे जँ अखन संभोग नहि करब तखन गृहस्थी गड़बड़ा जाइत (रघु.1/76), मथुरा नरेश सुषेणक जल विहारमे रानीक स्तन पर लागल चन्दन कें यमुना जलमे मिज्झर भेला सँ मथुरामे गंगा-यमुना केर संगम केर दृश्य (रघु.6/48) उपस्थित होयब आ कुशक रानी सभक संग जलविहारक मांसल वर्णन भेल अछि। अग्निवर्ण केर केलि वर्णन अत्यन्त उत्कट अछि। ओ नर्तकी, दासी, सेवक लोकनिक स्त्री संग संभोग करैत छथि। (रघु.21/32,45)। रघुवंशमे राम-सीता केलि वर्णन विषयक मात्र दू पद (14/24, 25)

अछि जे दुनू इच्छानुसार भोग ओहि घरमे करैत छथि जाहि घरमे वनवासकालीन चित्र टाँगल अछि। कोनो माँसलता नहि। एहि सँ सीताक प्रति महाकविक अतिरिक्त आदर आ अनुराग प्रकट होइत अछि। अपन बहिन वा बेटीक उत्कट केलि-वर्णन कोन कवि करए चाहत?

सीता परित्याग प्रसंगमे सेहो महाकविके मैथिलत्व सोझाँ अबैत अछि। अपन परित्यागक बात सुनि सीता विह्वल होइत छथि, कुररी जकाँ कनैत छथि। एहि चित्रणमे 'हमर अभाग हुनक नहि दोष' केर भाव अवश्य अछि तथापि सीताक ई प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि जे जखन ओ (राम) अपना सोझा मे हमरा अग्निपरीक्षामे पवित्र पओने छलाह तखन मात्र लोकापवाद सुनि अपयशक भय सँ हमर परित्याग कयलनि, ई कृत्य की रघुकुलक अनुरूप थिक?

वाच्यस्त्वया मदवचनात्स राजा बह्न विशुद्धामपि यत्समक्षम्
मां लोकवाद श्रवणादहासीः
श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य।। रघु. 14/61

रामक विराट व्यक्तित्व पर प्रश्न चिन्ह ठाढ़ करबाक साहस अपूर्व अछि। आगू निःसहाय, निरूपाय, निराश सीता कें वाल्मीकि आबि बोल भरोस दैत छथि जे हे पुत्री! हम योगबल सँ जानि गेल छी जे अहाँक पति मिथ्या अपयश सँ डरि अहाँक परित्याग कऽ देलनि। अहाँ चिन्ता जुनि करू किएक तऽ अहाँ अपन पितृगृह आबि गेल छी-

जाने विसृष्टां प्राणिधानतस्त्वां मिथ्यापवादक्षुभितेन भ्रार्त।
तन्मा व्यथिष्ठा विषयान्तरस्थं प्राप्तासि वैदेहि! पितुर्निकेतम्।।

आगू रामक 'चरित्र' केर प्रशंसा कयलाक बादो ई कहए सँ ओ संकोच नहि करैत छथि जे अहाँक संग जे राम अनुचित व्यवहार कयलनि एहि लेल हुनका पर हमरा भारी क्रोध आबि रहल अछि (रघु. 14/72, 73)। वाल्मीकि द्वारा सीताक लेल पुत्री सम्बोधन, पितृगृह नैहर अयबाक बात एवं राम पर आक्रोशक मर्ममे महाकवि कालिदासक मैथिलत्व नुकायल अछि।

डॉ. दिवाकर उपरोक्त मूल्यांकन मे महाकवि कालिदासक मैथिलत्व के नुकायल कहैत छथि। मुदा हमरा लगैत अछि जे ई नुकायल नहि अछि अपितु महाकवि सद्यः मैथिल छलाह से प्रमाणित भेल अछि। महाकवि कालिदासक रघुवंशम् (14/61) केर ई आक्रोश आनो-आन रामायण सभक रचनाकारमे देखल जा सकैत अछि। जतनपूर्वक ओ एक विशिष्ट परम्पराक दिग्दर्शन करबैत छथि आ एहि आक्रोशक उत्स रघुवंशक 14/61कें मानैत छथि। डॉ. दिवाकर इहो कहैत छथि जे- ''मिथिलाक सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ सुता सीता संग भेल अनुचित परित्यागक दंश पर मैथिल मानस कतेक विचलित छल ओ एहि तथ्य सँ स्पष्ट होइछ जे अनेक सहस्राब्दी व्यतीत भेलाक बादो विवाहपंचमी दिन विवाहक शुभ मुहूर्त रहितो अखनो मैथिल अपन बेटीक विवाह ओहि दिन नहि करैत छथि। एहि सँ मैथिल आक्रोशक गाम्भीर्य अकानि सकैत छी।'' (महाकविक महाप्रयाण, पृ. -98)

एकर कारणो बतबैत डॉ. दिवाकर आगाँ कहैत अछि- ''मिथिलामे रामकाव्य परम्पराक श्रीगणेश कतेक सहस्राब्दीक बादे (17म 18म शताब्दीक सीतायण) होइत अछि। महात्मा सूर किशोर आ महात्मा चतुर्भुज गिरि द्वारा जनकपुरक अधिमान्यता सँ नवस्फूर्तिक संचार आरंभ भेल। सूर किशोरक सत्यप्रयास सँ अवध मिथिला संबंध सेतु पर जमल बर्फ सीताक प्रति अतिशय आदर आ भक्तिक आरतीक धाह सँ पसीझ गेल। संत रामप्रियाशरण दासक सीतायण (1701-2 ई.) जे नवद्वार खोललक ओहि मार्ग कें कवीश्वर चन्दा झा आ पं. लालदास आर प्रशस्त कयलनि। मैथिलीमे कवीश्वर चन्दा झाक मिथिला रामायण (पूर्ण 1886ई., प्रथम प्रकाशन 1892ई.) जाहि राम काव्य परम्पराक श्रीगणेश करैत बंद द्वारा अनावृत कयलक ओहि मार्ग कें लालदासक रामायण, मुंशी रघुनंदन दासक वीर बालक, पं. सीताराम झाक अम्बचरित, बैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' जीक सीतायन, आऽ राम लोचन शरणक मैथिलीक श्री रामचरितमानस, खड्ग बल्लभ दास 'स्वजन' जीक सीताशील, हीरालाल झा 'हेम'जीक सीताचरितामृत, भुवनेश्वर प्रसाद 'अध्यापक' जीक मैथिली बाल रामायण, काचीनाथ झा 'किरण' जीक पराशर, पं. जीवनाथ झाक रावणवध, पं. कपिलेश्वर मिश्र' वैयाकरण'क सीतादाइ, पं. कालीकान्त झाक हनुमान चरित, श्री राजेन्द्र लाल दासक सीताक प्रस्थान प्रभृति कृति आर प्रशस्त कयलक।'' (पृ.-99)

''महाकवि पं. लाल दास रामक लेल बिनु कोनो आक्रोश प्रकट कयने अपन रमेश्वरचरित रामायणमे पुष्कर काण्डक रचना कऽ ओहिमे ग्रियमाण राम केर सीता द्वारा महाकाली बनि रक्षा आ राम द्वारा सीताक स्तुति करा अपन अधिमान स्थापित कऽ देने छथि। पुष्कर काण्ड आ अपन पृथक् जानकी रामायण ग्रंथसँ महाकवि पं. लालदास मैथिली रामकाव्य परम्पराक स्वर रूपमे समाकृत छथि।'' (पृ.-99)

तैं डॉ. दिवाकर जीक कहब छनि जे एहि सभक उत्स महाकवि कालिदासक रघुवंशम् केर पावन गंगोत्री सँ निस्सरित भऽ मैथिल भाव सम्पूर्ण संसार मे पसरि गेल।

(ii) प्रकृति वर्णनमे महाकविक मैथिलत्व-

महाकविक प्रकृति चित्रण अद्भुत अछि। साहित्यिक सौन्दर्य वा विलक्षण स्वरूप सहित महाकविक मैथिलत्वक भाव सँ ओत-प्रोत अछि। महाकवि कालिदासक प्रकृति वर्णनमे अनेकशः एहन प्रसंगक अन्वेषण कयल जा सकैत अछि, जे यथार्थतः मिथिलेमे संभव अछि। डॉ. दिवाकर द्वारा साहित्यिक सौन्दर्य वा विलक्षण स्वरूप छोड़ि महाकविक मैथिलत्व पर अपन पोथी 'महाकविक महाप्रयाण' केर पृष्ठ सं.-57 सँ 63 धरि मूल्यांकन कयल गेल अछि।

ओ मूल्यांकन कतेक प्रामाणिक ओ सटीक अछि से स्वयं देखल जा सकैत अछि। ओ प्रकृति वर्णनमे महाकविक मैथिलत्व पर मूल्यांकन करैत कहैत छथि- जे चूड़ा-गुड़ केर चर्च (ऋतु -5/16), वायु प्रवाहक कारणें बाँसक छिद्रसँ बहराइत बाँसुरीक ध्वनि (कु.सं. 1/8), जमुन टोकी (पूर्वमेघ 21, 25), आमक गाछी आ पाकल धान सँ भरल खेत (ऋतु- 3/5, 6/38)मे जेना महाकविक मोन रमि गेल हो, सिंगरहारक फूल सँ महमह करैत वातावरण आ विपुल जल राशिमे चिड़े-चुनमुनी सभक कलरव (ऋतु- 3/14), तिलकोरक फऽर सँ ठोरक उपमा (पक्वबिम्बाधरोष्ठी) मिथिला छोड़ि आर कतऽ पाबी!

पाछू महाकविक कर्मस्थली उज्जैनक नारी सभक उद्दाम यौवन केर किछु चित्र सभक संकेत तऽ भेले छल। आब एहिठाम महाकविक अपन जन्मस्थलीक स्त्रीगण विषयक चित्र देखब आवश्यक। धानक जजाति केर रक्षा लेल कुसियारक छाहरिमे बैसलि स्त्रीगण अपन राजाक कीर्तिगाथाक गीत बना गाबि रहल छथि (पूर्वमेघ 20)। कृषक सभक भोल स्त्रीगण मेघ दिसि आदर आ नेह सँ देखैत छथि किएक तऽ खेती एक मात्र मेघेक आसरे रहैत अछि आ एहि भोल स्त्री सभकें भौंह चला पटिआबऽ नहि अबैत अछि (पूर्वमेघ 16)। कर्मस्थली उज्जैनक नारी सभक उद्दाम यौवन आ जन्मस्थलीक भोल स्त्रीगण कें भौंह चला पटिआबऽ नहि आएब सँ कवि अपन मैथिल दृष्टि केर संकेत देने छथि। मेघदूतम् केर प्रथम श्लोकमे 'जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु' सँ महाकवि सीताक वन्दना करैत कहैत छथि जे हुनक चरण-कमलक प्रवेशक सँ सरोवर केर जल पवित्र भेल। एहिना 15म् श्लोकमे जखन उधिआएत श्यामवर्णी बादल सप्तवर्णी इन्द्रधनुष पर अबैत अछि तखन इन्द्रधनुष खंडित होइत अछि आ एक समय एहन लगैत अछि जे मोरपंख पहिरने साक्षात् श्री कृष्ण सुशोभित छथि। विलक्षण उत्प्रेक्षाक एहि चित्रमे 'ध नुःखण्डमाखण्डलस्य' सँ महाकवि अपन मातृभूमि मिथिलाक संकेत करैत छथि। सम्पूर्ण संसार जनैत अछि जे श्रीराम द्वारा धनुर्भंग कयलाक बादे सीताजी सँ हुनक विवाह भेल छल। एहि 'धनुः खण्डमाखण्डलस्य' सँ महाकवि अपन मातृभूमि मिथिलाक स्मरण आ वन्दन कयने छथि, एहिमे कोनो संशय नहि। एहिना अगिला श्लोक केर 'सद्यः सीरोत्कषणसुरभिः' पद- खंड पर विचार करी तखन एहि सँ महाकविक अपन मातृभूमिक लेल मात्सर्य प्रकटन केर अनुपम चातुर्यक थाह लागत। हम सब जनैत छी जे सद्यः चासल, समारल आ तेखारल खेत सँ एक अलगे सुगंध अबैत अछि। जँ एहि पर एक अछार पानि बरसि जाय तखन ओ सोन्हगर सुगंध आर दिव्य भऽ जाइत अछि। महाकवि जे मेघ सँ सद्यः जोतल खेत पर एक अछार बरखाक आह्वान करैत छथि ओ ओहि क्रियाक पूर्णता देबाक लेल भेल अछि जे कहियो अकाल समाप्त करबाक लेल राजा जनक स्वयं हरबाह बनल छलाह आ सिया सुकुमारी प्रकट भेल छलीह। तकर बाद भारी बरखा भेल छल आ अकाल समाप्त भेल रहए। एतऽ 'सद्यःसीरोत्कषणसुरभि' सिया सुकुमारी छथि। मेघूदतक केर लगातार मननसँ विशिष्ट भाव उद्‌घाटित होइछ तैं 'मेघे माघे गतं वयः' कहल गेल अछि।

डॉ. दिवाकर जीक उपराक्त विवेचन सँ स्पष्ट अछि जे महाकविक मस्तिष्क मे क्रियाशील मातृभूमि मिथिलाक लेल उद्‌भूत मनोलय केर कल्पना स्वाभाविक अछि। एहि मनोलय मे महाकविक मैथिलत्वक मनोरम चित्र अभरल अछि जे ओकर संकेतेटा मात्र नहि करैछ अपितु हुनक मैथिलत्व केर प्रमाण के पुष्ट करैत अछि। अस्तु डॉ. दिवाकरक ई तथ्यात्मक मूल्यांकन सँ सहमत होयब मजबूरी नहि अपितु यथार्थ केर पुष्टि सेहो अछि। पूर्वी हिमालय मे महाकविक घर आ मेघक मंजिल पश्चिमी हिमालय केर अलकापुरी। मेघदूतम् केर माध्यमे मेघ कें हिमालय अयलाक बाद स्वाभाविक रूप सँ पूर्व-पश्चिमी हिमालयक भेद समाप्त होयब, महाकवि द्वारा मातृभूमि मिथिलाक संकेत थिक।

(iii) रीति-रिवाज व पावनि-तिहारक वर्णनमे महाकविक मैथिलत्व-

प्रत्येक देश/राज्य/क्षेत्रमे अपन-अपन किछु एहन रीति-रिवाज, पावनि- तिहार होइत अछि जेहन आनठाम नहि पाओल जाइत अछि। ई विशेषता ओहि क्षेत्रक खास होइत अछि। तहिना मिथिलाक संस्कृतिक विशेषताक महत्व विश्व प्रसिद्ध अछि एहिठामक किछु एहन रीति-रिवाज/पावनि-तिहार, व्यवहार अछि जे विश्वक आनठाम नहि पाओल जाइत अछि। आ इएह विशेषता मिथिलाक विशेषता होइत अछि। ओकर नीजी पहिचान होइत अछि।

डॉ. रंगनाथ दिवाकर द्वारा अपन पोथी महाकविक महाप्रयाण' (पृष्ठ 64-69) मे कयल गेल मूल्यांकन के माध्यमसँ कहैत छथि जे- 'महाकवि कालिदास वर्णित रीति-रिवाज आ पावनि-तिहार पर मिथिलाक स्पष्ट छाप अछि। भूमि पर भट्ठा सँ शिशु केर अक्षरारम्भ (रघु.18/46), पतिगृह जाइत काल जलाशय तक अरिआतब आ भ्रातारूपमे शार्ङ्गरव आ लोकनी रूपमे गौतमी कें जाएब (अभि. शाकुं), धानक लावा सँ हवन, होमधूप कें सुँघब, दुर्वाक्षत सँ आशीर्वाद, ध्रुवताराक दर्शन, नव-वर-कनियाँक चतुर्थी धरि भूमि पर शयन (कुं.सं.- 7/80,81,88,94), वेदीक धुआँ सँ लाल भेल लोचन (रघु. 13/28), पलवल सँ बहराइत सुगर आ वृषभ केर पंकमय सींग (रघु. 3/24) गुप्तमणि वा गूढ़मणि बालक्रीड़ाक चर्च (उत्तरमेघ 6), महावराह क्षेत्रक चाक्षुष वर्णन (कुं. सं. -8/20), देवोत्थान एकादशी (उत्तरमेघ 47), तरहत्थी पर माटिक महादेव बना पूजा करब (कुं. सं.-5/58) आ द्वार पर शंख-कमल केर चित्र (उत्तर मेघ 20) सँ घरक पता देब मैथिल परम्परागत चित्र थिक।''

डॉ. दिवाकर उक्त चित्र सभमे सँ किछु के आनो क्षेत्रमे हेबाक संभावना करैत ई कहैत छथि जे आब जे चित्र सभहक विषयमे कहब से मात्र मिथिलेमे संभव अछि। ओ आगाँ कहैत छथि-

बिआह सँ पूर्व पार्वती सँ माता मेना कुलदेवता कें प्रणाम करओलाक बाद श्रेष्ठ सभहक चरणस्पर्श करबैत छथि (7/27)। ई चित्र मिथिलामे एखनो देखल जाइत अछि। एतऽ जाँट गुहलाक बाद बेटीक कुमारि मुह देखएबाक आ बेटी द्वारा श्रेष्ठ सभ कें गोर लागबाक प्रथा एखनो अछि। कोहबर घरमे भूमि पर शैय्या आ नगहरमे जल राखल रहैछ-

कनक कलशयुक्तं भक्तिशोभासनाथं

क्षितिविरचितशय्यं कौतुकागारमागात् (कुं. सं.-7/94)।

चतुर्थी दिन पालो पर बैसा वर-वधू कें ओहि जल सँ स्नान कराओल जाइत छैक आ कोहबरमे पलंग पर शैय्या देल जाइत छैक। मिथिलाक विआहमे बरियाती संग वधूक विदागरी नहि होइत छैक। आनठाम वधू बरियाती संगे सासुर जाइत अछि। महादेव अपन बिआहक बाद मास दिन धरि सासुरे रहैत छथि (कुं. सं.-8/20)। कुमार संभव (8/80)मे महादेव-पार्वती बिआहमे मात्र तीन फेरा लगबैत छथि। ई मात्र मिथिलेमे प्रचलित अछि आनठाम सात फेरामे सात वचन लेबाक सप्तपदी केर प्रथा अछि। ई सभ तथ्य महाकविक मैथिलत्व केर स्पष्ट संकेत थिक।

डॉ. दिवाकर जीक उपरोक्त मूल्यांकन जे एहि ठाम संक्षिप्त रूपें देल अछि, पोथीमे विस्तारपूर्वक अछि। से एकदम सटीक अछि। महाकवि कें मिथिलाके छलाह से संदेहमुक्त मूल्यांकन थिक।

(iv) भाषा वैज्ञानिक आधार पर महाकविक मैथिलत्व-

भाषा वैज्ञानिक आधार पर महाकवि कें मिथिलाक होयबाक विशिष्ट तर्क डॉ. दिवाकर अपन पोथी 'महाकविक महाप्रयाण' केर पृष्ठ सं.-69सँ 72 धरि देलनि अछि। तर्कोपरान्त ओ कहैत छथि जे वस्तुतः ई मिथिलांचल केर सौभाग्य अछि जे मिथिलापभ्रंशक आदिकवि कालिदास आ अंतिम कवि विद्यापति दुनू एहि मिथिला धरतीक वरद् पुत्र छलाह।

विक्रमोर्वेशीयम् केर भाषा महाकविक मातृभाषा आ मैथिलत्व केर निर्णायक संकेत करैत अछि। एहिमे विशुद्ध अपभ्रंशक 14पद आ प्राकृत-अपभ्रंश मिश्रित 16टा पद, अछि। एहि पद सभमे 'क्ष' केर 'क्ख'मे विकास, 'ए' आ 'ओ' केर ह्रस्व उच्चारण, करण कारकमे निरनुनासिक 'ए' विभक्ति, संबंध परसर्ग 'क' एवं लोकगीतक टेक रूपमे अद्यतन मिथिलामे प्रयुक्त 'ओ', 'यौ', 'रे', 'ए', 'हो', जान' आदिक प्रयोग भाषा वैज्ञानिक निकष पर विक्रमोर्वशीयमक चारिम सर्गक एहि पद सभ कें मिथिलापभ्रंश प्रमाणित करैत अछि। महाकविक रचना सभमे मिथिलापभ्रंशक स्रोत विद्यमान अछि जे महाकविक मैथिलत्व दिशि स्पष्ट संकेत करैत अछि। भाषा वैज्ञानिक आधार पर महाकवि कालिदासक मैथिलत्व निर्धारण हेतु डा रामचन्द्र ठाकुर केर पोथी 'मिथिलापभ्रंश के आकर स्रोत' एवं प्रस्तुत लेखक (डॉ. रंगनाथ दिवाकर) केर 'हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास मे मिथिला का योगदान' पोथी देखल जा सकैत अछि।

डॉ. दिवाकर जीक इहो तर्क एवं मूल्यांकन सटीक अछि।

(v) राजस्व अभिलेख केर आधार पर महाकवि कालिदासक मैथिलत्व-

महाकवि मिथिला के छलाह तकर अकाट्य पुष्टि राजस्व अभिलेख कऽ दैत अछि। डॉ. दिवाकर जे रेकर्ड (73 सँ 74) उपस्थापित कयलनि अछि से आनठामक दाबी केनिहार सभ के चुप्प करा दैत अछि। ओ कहैत छथि-

महाकवि कालिदास कें कथित रूप सँ अपन कहयवला हर क्षेत्र तखन मौन भऽ जाइत अछि, जखन उच्चैठ (थाना सं.-89)क साबिक सर्वेमे कालिदासक डीह नाम सँ खाता भेटैत अछि। ओ विवरणी सेहो प्रस्तुत कयलनि अछि-

मौजे- उच्चैठ, थाना नं.-89, थाना-बेनीपट्टी, **जिला-दरभंगा**

खाता	खेसरा	रकवा
231	883	1-9-2
	885	1-3-17
192	880	1-0-8

राजस्व अभिलेख केर कैफियतमे अंकित अछि कालिदास डीह। लगभग दू सय वर्ष सँ बेसी पुरान एहि राजस्व अभिलेख (साबिक सर्वे शुरू 1896 मे आ अंतिम खतियान प्रकाशन 1904ई. मे)केर तोड़ भारतवर्षक कोनो क्षेत्रक हाथमे नहि अछि। हाल राजस्व खतियानमे ई प्रविष्टि निम्न प्रकार सँ अछि-

खाता	खेसरा	रकवा
494	2138	12 डिस्मिल
	2139	26 डिस्मिल

महाकवि कालिदास समिति स्थान-उच्चैठ

खाता	खेसरा	रकवा
497	2137	1 एकड़ 1 डिस्मिल

अनावाद बिहार सरकार गढ़ कालिदास डीह। आजुक सरकारी आ सार्वजनिक भूमि कब्जा करबाक प्रतिस्पर्धामे सेहो ई भूमि बाँचल अछि। कालिदास डीह एक ऊँचगर टीला जकाँ अछि जेकरा पूर्व अनुमंडल अधिकारी, बेनीपट्टी रघुनाथ पहाड़पुरीजी कंक्रीट केर विभिन्न मूर्ति आ फलक चित्र सँ सुशोभित करा देलनि। परोपट्टाक लोकमे एहि भूमिक लेल अशेष श्रद्धा अछि। एहि डीह केर माटि सँ भट्टा बना लोक अपन नेना सभक अक्षरारम्भ करबैत छथि। सम्पूर्ण मिथिला (नेपाल सहित)मे ई डीह अत्यंत प्रशस्त अछि।

भारतवर्षक कोनो राज्य, क्षेत्र वा नगरक पुरान राजस्व अभिलेख वा सात्विक सर्वेमे एक बित्ता जमीन महाकवि कालिदासक नाम पर कतहु नहि छल आने एखनो अछि। प्राचीन राजस्व अभिलेख सँ समर्थित मिथिलाक उच्चैठ गामक दावीक आगू आन सभ क्षेत्रक

दावी निर्मूल भऽ जाइत अछि।

पूर्वमे कहलहुँ अछि जे डा दिवाकर जी एहि पोथी के दूखंड आ फेर ओकरा उपखंडमे बाँटि कऽ मूल्यांकन कयलनि अछि। एहि ठाम आब एक उपखंड इतिहास आ साहित्यक अनुशीलन कें माध्यमे ओ महाकवि कें मैथिल सिद्ध करबाक प्रयास कयलनि अछि, जे सिद्ध होइत अछि। ओ पृष्ठ-75 सँ 195 धरि सीताक चरित्र-चित्रण, उच्चैठ, उज्जैन आ महाकवि कालिदासय महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रा; कालिदास, कुमारदास आ श्रीलंका; महाकवि कालिदास आ कुमारदास - अनन्त पथकेर सहयात्री आ श्रीलंकाक महातीर्थ माटरा : दू महाकविक महाप्रयाण स्थल केर माध्यमे मूल्यांकन कयलनि अछि, जकरा संक्षेप मे एहिठाम द्रष्टव्य समीचीन होयत-

''महाकवि कालिदासक समय निर्धारणमे फुलकेशिन द्वितीय केर 634ई.क ऐहोल अभिलेख आ महाकविक मालविकाग्निमित्रम् केर महत्वपूर्ण स्थान अछि। ऐहोल अभिलेखमे रविकीर्ति कें कालिदास समान श्रेष्ठ कवि कहल गेल अछि-

जिनेवेश्म स विजयतां रविकीर्तिः
कविताश्रित कालिदास भारवि कीर्तिः

स्पष्ट अछि जे कालिदासकें 634ई. के बाद नहि राखल जा सकैछ। एहिना पुष्यमित्र आ अग्निमित्रक कथा कहबाक कारणें महाकवि कें ईसा पूर्व दोसर शताब्दी सँ पहिने सेहो नहि राखल जा सकैछ। कारण जे इतिहास सँ ई सिद्ध भऽ गेल अछि जे अंतिम मौर्य सम्राट वृहद्रथ कें सेना निरीक्षण काल ईसा पूर्व 185ई.मे सेनापति पुष्यमित्र शुंग वध करैत शुंग राजवंश केर स्थापना कयने छलाह। हुनक पुत्र अग्निमित्र आ मालविका केर कथा मालविकाग्निमित्रम् मे कहल गेल अछि। ओना बेसी विद्वान महाकविक अवस्थिति गुप्तकालमे चन्द्रगुप्त द्वितीय (राज्य काल 375-414ई.) केर समयमे मानैत छथि। मुदा इहो संदेह रहित नहि अछि। चन्द्रगुप्त द्वितीयक बेटी प्रभावतीक विवाह वाकाटक नरेश रूद्रसेन द्वितीय (राजत्व काल 385-90ई.) संग भेल छल। प्रभावती कें असमय विधवा भऽ गेलाक बाद प्रभावती आ हुनक दुनू नाबालिग पुत्र-दिवाकर सेन आ दामोदर सेन केर अभिभावक बनि कालिदासकें वाकाटक जयबाक बात सेहो कहल जाइत अछि, मुदा इतिहासमे एहि पर मतैक्य नहि अछि। यशोधर्मन (शक्तिकाल 515-543ई.) केर समय महाकतिक अवस्थिति सेहो मानल जाइत अछि। श्रीलंकाक राजा कुमारदास (अपर नाम कुमार धातु सेना, राजत्व काल 513-522ई.) आ कालिदासक संग-संग माटरा मे भेल महाप्रयाण विषयक श्री लंकाक अनुश्रुति ओहिना प्रचलित अछि जेना मिथिलामे जाहि डारि पर बैसल ओकरे काटब, छलपूर्वक राजकुमारी सँ विवाह, तिरस्कार आ उच्चैठ भगवतीक कृपा सँ अज्ञ सँ विज्ञ बनबाक अनुश्रुति प्रचलित अछि। उच्चौठ भगवती आ मूर्ख सँ विश्व विश्रुत होयबाक कालिदास विषयक जनश्रुतिक अभिलिखित प्रमाण तिब्बती बौद्ध धर्मयात्री धर्मस्वामिन (समय 1197-1264ई.) मिथिला आ भारतयात्रा (1234-36ई.) केर उपासक चोस-दार कृत जीवनीमे उपलब्ध अछि। श्रीलंकाक इतिहास आ साहित्यमे राजा कुमारदासक राजनर्तकी द्वारा समस्यापूर्तिक पारितोषिक केर लेभमे माहुर खुआ कालिदासक हत्या, भेद खुजला पर कालिदासक राजकीय चितामे द्रवित राजा कुमार दास (जानकीहरणकार) आ एकर बाद हुनक पाँच रानीक प्रवेश प्रायः मान्य अछि।''

उपरोक्त कथन केर अतिरिक्त डॉ. दिवाकर जीक ई कथन सेहो एहिठाम उद्धृत करब उपयुक्त बुझाइत अछि-

''महाकवि कालिदासक जीवन यात्रा भारतवर्षक बेनीपट्टीसँ शुरू भेल। मिथिला, पाटलिपुत्र, मालिनी नदी कात बसल कोटद्वार (कण्व ऋषिक आश्रम, उत्तराखंड), उज्जैन, मालवा, मन्दसौर आदि स्थान सभकें अपन अपूर्व आभासँ आलोकित करैत ई अप्रतिम जीवन ज्योति श्रीलंकाक वर्तमान माटरा शहरमे कुमारदासक संग अनन्त ज्योतिमे विलीन भऽ गेल। मिथिलाक बेनीपट्टी सँ श्रीलंकाक माटरा तक केर महाकवि कालिदासक ई अप्रतिम जीवन-यात्रा दुनू देशक अनुपम धरोहर थिक।

एकर पुष्टि डॉ. दिवाकरक दोसर खंड लघु नाटिका 'महाकविक महाप्रयाण' केर घटना, वार्तालाप, वाक्यांश, पात्रादि सँ होइछ। नाटिका सात दृश्यमे विभक्त अछि। कालिदासक मिथिला आ कुमारदासक श्रीलंकाक माटराक परिदृश्य केर सत्याश्रित अवलोकनमे किछु वाक्यांश प्रस्तुत करब एहिठाम उपयुक्त हयत।

एतऽ ई कहब उचित जे डॉ. दिवाकर आँखि-मुनि महाकवि कालिदास कें भगवतीक कृपा सँ एकहि रातिमे जतेक पोथी पलटि देब सब कंठाग्र भऽ जायत केर दंत कथा पर विश्वास नहि करैत छथि। एकरा वैज्ञानिक आधार दैत कहैत छथि जे भगवतीक प्रेरणा सँ ओ महर्षि कण्वक आश्रम कोटद्वार जाइत छथि। एतहि सिंहल युवराज कुमारदास सँ परिचय होइत अछि। मिथिला आ श्रीलंकामे प्रचलित अनुश्रुति सभक वैज्ञानिक समीक्षा करैत डॉ. दिवाकर एकरा सभक उपयुक्ता कें रेखांकित करैत छथि। नाटिकामे कालिदास कें मूर्ख आ जाहि डारि पर बैसल ओकरे कटैत, छलपूर्वक राजकुमारी सँ विवाह, विद्योत्तमा द्वारा तिरस्कार, पुरूषार्थ पर उठाओल गेल प्रश्न पर कालिदासक प्रण जे तोहर घमंड चूरबौ आ फेर जयनाद करैत कालिदासक गृहत्याग, उच्चौठ भगवतीक प्रेरणा आ वरदान सँ कण्व ऋषिक कोटद्वार आश्रममे शिक्षा ग्रहण, श्रीलंकाक युवराज आ मित्र कुमारदासकें देल तीन वचन कें पूरा करबाक लेल माटरा गमन, ओहि ठाम सूर्यास्त कालक सूक्ष्म मुदा मनोरम वर्णन, समस्यापूर्ति, राजनर्तकी कामसेना द्वारा लोभवश माहुर खुआ कालिदास के मारि देबाक वर्णन जे डॉ. दिवाकर कयलनि अछि से विलक्षण अछि। श्रीलंकाक राजा कुमारदास कें जखन एहि बातक जनतब होइत छनि तऽ ओ अति विह्वल भऽ जाइत छथि। हुनकर दर्द असीम भऽ जाइत छनि आ ओ पुत्र कीत्तिसेना कें राजमुकुट पहिरा कालिदासक चितामे प्रवेश कऽ

जाइत छथि। फेर हुनक पाँच रानी सेहो ओहि चितामे प्रवेश करैत छथि।

एहि क्रममे डॉ. दिवाकर द्वारा प्रणयन आ शब्द संधान सभक लक्ष्य मात्र महाकवि कालिदासक मैथिलत्वक दिग्दर्शन अछि। एहिमे दिवाकर जी पूर्ण सफल भेल छथि। कुमारदास आ कालिदासक मुँह सँ निःसृत संवाद मिथिला आ श्रीलंका संबंध आ दुनू महाकविक एक दोसराक प्रति नेह आ अपना-अपना देशक प्रति आत्मीयता प्रकट करैत अछि।

नाटिकाक पहिल दृश्यमे नट-नटीक माध्यमसँ नाटिका विषयमे जनतब अछि तऽ अनुचर केर फकरा सभसे भरल संवाद आदृष्ट करैत अछि। दोसर दृश्यमे विद्योत्तमा आ पंडित सभक शास्त्रार्थ वैदुष्यपूर्ण अछि। तेसर दृश्यमे विद्योत्तमा आ कालिदास संवादमे कालिदासक अज्ञानता, हिनकर तिरस्कार आ नपुंसक कहला पर जागल कालिदासक पुरुषार्थ आ प्रण केर नीक समायोजन भेल अछि। एहि ठाम प्रियंवदा एक सुन्दर गीत गबैत छथि मुदा विद्योत्तमा आहत छथि। परित्यागक बात जानि ओ विद्योत्तमा कें गर्दनिमे घैल बान्हि नदीमे डूबि आत्महत्या करबाक निर्णय सँ रोकैत छथि।

दृश्य-चारिमे कुमारदास आ कालिदासक संवाद अनुपम भेल अछि। एहि ठाम कुमारदास कालिदास सँ तीन वचन लैत छथि। प्रथम वचन जे विद्योत्तमा कें क्षमा करैत हुनका संग राखब, दोसर जे विक्रमादित्यक आमंत्रण स्वीकार करब आ तेसर जे एक बेर हमर मातृभूमि माटरा आयब। एहि दृश्य कें विशिष्ट बनबैत अछि लंकापति रावण, कुंभकर्ण, मेघनाद आ विभीषण संबंधी संवाद एवं देश आ धर्म सँ संबंधित दृष्टि। एखन धरि हम रावण संहिता आ शिव तांडव स्तोत्रक विषयमे मात्र जनैत रहि। रावण केर अरुण संहिता, ऋग्वेद पर भाष्य आ रावणीयम, अर्क प्रकाश, कुमारतंत्र, नाडी परीक्षा, इन्द्रजाल, प्राकृत कामधेनु, प्राकृत लंकेश्वर केर रचनाकार रूपमे रावणक परिचय हमरा एहि संवादे सभ सँ भेटल। कुमारदास, कुंभकर्ण आ मेघनाद कें भ्रातृ-धर्म, पुत्रधर्म आ देशधर्मक प्रतिमान कहैत छथि जे निज देशक रक्षार्थ अपन प्राण दऽ देलनि। ओतहि ओ विभीषण कें देशद्रोही कहैत छथि। संवाद केर किछु अंश उद्धृत करैत छी-

कुमारदास- अहाँ समक्ष एक रहस्य अनावृत करैत छी मित्र! जेना भगवान् राम सम्पूर्ण भारतवर्षमे पूजित छथि तेना महाबली दशरथ हमर सम्पूर्ण देशमे पूजित नहि छथि। ओ किछु भागमे पूजित छथि। ई सत्य अछि। मुदा इहो सत्य अछि जे श्रीलंकाक महानायक रूपमे ओ सम्पूर्ण देशमे प्रतिष्ठित अवश्य छथि। हुनका संगे महाबली कुंभकर्ण आ मेघनाद कें हमरा ओतऽ असीम प्रतिष्ठा प्राप्त अछि। भ्रातृधर्म, पुत्रधर्म आ देशधर्मक प्रतिमान छथि ई दुनू। राम-लक्ष्मण भले जे रहल होथि, लंकाक लेल तऽ ओ आक्रमणकारी छलाह आ कुंभकर्ण-मेघनाद अपन कर्तव्य निर्वहन कयलनि। देशक आनपर प्राणोत्सर्ग कयनिहार ई दुनू नरश्रेष्ठ जन-जनकेर हृदयमे वास करैत छथि। ३३.

लोक मानैत छथि जे एहि कुलघाती आ देशद्रोही विभीषणक कारणें महाबली रावण पराजित भेल छलाह। विद्या, शास्त्र, शक्ति, अस्त्र-शस्त्र, सम्पन्नता सभमे श्रेष्ठ रहलाक बादो एकमात्र एहि देशद्रोही विभीषण केर कारण महाबलीक पराभव भेल। एहि कारणेँ एहि कुलधातीकेँ हमरा देशमे कहियो प्रतिष्ठा नहि भेटि सकल। कोइ अपन नेनाक नाम विभीषण नहि रखैत छथि। धर्मक मिथ्या आलम्बन लऽ देश संग घात करब कथमपि उचित नहि। कारण जे रहल हो मुदा श्रीराम दल तऽ लंका पर आक्रमण कयने छल। देश पर आक्रमण कयनिहारक प्रतिकार करबाक चाही आ एहन संकटक स्थितिमे देशत्याग करब कखनो धर्म नहि भऽ सकैछ।

कालिदास- सर्वथा सत्य मित्र। देशक रक्षा करब सभसँ पैघ धर्म थिक जे धर्म देशहित पर भारी पड़ि जाय ओहि धर्मक परित्याग करब, इएह उचित धर्म थिक। धर्मभ्रष्ट भेला पर प्रायश्चित केर प्रावधान अछि, मुदा देश सँ विश्वासघातक कोनो प्रायश्चित नहि छैक। धर्मच्युत व्यक्ति उचित प्रायश्चित कऽ पुनः अपन धर्ममे आपस आबि सकैत छथि, मुदा राष्ट्रदोहक कारणें राष्ट्रकें भेल क्षति वा पराजय केर भरपाई संभव नहि अछि। अपन मातृभूमिक लेल शीशोत्सर्ग कयनिहारसँ पैघ कोइ नहि। शहीद वा बलिदानी सर्वदा नमस्य स्तुत्य वंदनीय पूजनीय होइत छथि। हम सभ हुनकर वंदना करैत गर्वित होइत छी।

कुमारदास- सर्वथा सत्य! सुनैत छी जे हमर पितामह धातुसेना नेनपनेसँ वैराग्य धारण कयने छलाह। जखन देशपर संकट आयल आ दमिल राजा हमर देशकें पददलित कयलनि तखन एक दिन धातुसेना देशक लेल धर्मक त्याग कयलनि। ओ धर्म केर निशानी काषाय रंगक अन्तरवासक, उत्तरासंग आ संघाटी एहि तीनू चीवर के त्याग कयलनि। जपमाला आ भिक्षापात्रक परित्याग करैत ओ हाथमे तरूआरि उठा लेलनि। अपन अतुलित साहस आ शौर्यसँ निज देशकेँ राजा पीठ्य केर चाँगुरसँ स्वतंत्र करओलनि।

कालिदास- हम अहाँक ओहि महान् पितामह धातुसेनाकें प्रणाम करैत छी। ओ वस्तुतः धर्ममर्मज्ञ छलाह। मातृभूमिक रक्षा धर्मक रक्षा थिक। धर्म देशसँ पैघ कथमपि नहि भऽ सकैछ। देशसँ पैघ कोनो धर्म नहि। (दक्षिण दिशामे दुनू हाथ जोड़ैत छथि) नमन अशेष हे! धर्मपालक धातुसेना।

साँचे एहि संवाद सभ सँ डॉ. दिवाकर केर राष्ट्रवादी सोच झलकैत अछि। आइ जे धर्मक नाम पर असहिष्णुता उभरि रहल अछि ओहि पर प्रहार करैत दिवाकरजीक एहि संवाद सभ सँ हमरा भारत-पाक मध्य 1965 केर युद्धमे परमवीर चक्र सँ सम्मानित शहीद अब्दुल हमीद मोन पड़ि गेलाह। धर्म सँ पैघ ओ राष्ट्र कें मानि ओ आत्मोत्सर्ग कयने छलाह। डॉ. दिवाकर केर जे राष्ट्रवादी दृष्टि उभरल

अछि, ई साँचे समसामयिक आ श्लाघनीय अछि। आगू जे कालिदासक संवाद अछि सीताक लेल ओ मर्म कें छूबैत अछि।

कालिदास- हम अवश्य ओ सब जगह देखब जतऽ मैथिली दशानन रावण केर कैदमे रहल छलीह। जगत जननी जानकी मिथिलेश महाराज जनक केर पुत्री छलीह, सम्पूर्ण मिथिलाक गौरव! हम जन्मसँ मैथिल छी। एहि संबंधसँ ओ हमर आराध्य अग्रजा भेलीह, नमस्य माता भेलीह। हमरा सभक देशमे बहिन वा बेटीक सासुरमे कोनो कष्टक विषयमे जानि नैहरसँ पुछारी होइत छैक। पता नहि माता सीताक कष्ट सुनि नैहर मिथिलासँ पुछारी भेल छल वा नहि मुदा हम ई काज अवश्य करब। हम ओहि जगह सभ पर अवश्य जायब। ओहि दर्दकें अनुभव करबाक प्रयास करब जे माता सीता भोगने होएतीह। कम सँ कम अपन दू ठोप नोरसँ माता सीताकें अपन नैहरक अनुभूति तऽ अवश्य कराएब हम। हे जनक दुलारी! हे मैथिली!! ओह!!

एहि मर्मस्पर्शी संवाद सँ कालिदासक मैथिलत्व पुष्ट भेल अछि।

पाँचम दृश्यमे कालिदास विद्योत्तमा संवाद अछि। परित्यागक बाद दुनूक मिलन होइत अछि। छठम् दृश्यमे कालिदास आ राजनर्तकी कामसेनाक संवाद अछि। एहि संवाद सभक माध्यम सँ डॉ. दिवाकर महाकवि कालिदासक जे सृजन प्रक्रिया पर अभिनव रोशनी देने छथि ओ साँचे विलक्षण बनल अछि। डॉ. दिवाकर केर सूक्ष्म दृष्टि अनुपम अछि। किछु संवाद देखल जाय-

कालिदास- समुद्र कात सूर्यास्त केर विलक्षण दृश्य देखल। लागल जेना भगवान् भास्कर भरि दिन ताप बिल्हैत- बिल्हैत ततेक गर्म भऽ गेलाह जे संध्याकाल शीतलताक लेल स्वयं समुद्रमे सन्हिया गेलाह। सम्पूर्ण क्षेत्र सिन्दूरी शोभासँ शोभायमान छल जेना श्रीलंकाक समुद्रमे सुरक्षित समस्त स्वर्ण भंडार सतह पर आबि सोनाक सेतुबंध बना देने हो।

कामसेना- ओह विलक्षण।

कालिदास- हम अपलक ई अपूर्व दृश्य निहारि रहल छलहुँ। ओह! आधा सूर्य समुद्रमे आ आधा बाहर। लगैत छल जेना कोनो स्वर्ण परात ओन्हल हो वा जेना समुद्र पर अर्द्धचन्द्राकार कोनो कनक भवन बनल हो। डूबल भाग सेहो ओहिना देखा रहल छल। ई भागमे जेना सोनाकें अपना दिशि खींचबाक शक्ति हो आ सागरमे सुरक्षित समस्त स्वर्ण भंडार आकर्षित होइत ओतहि जमा भऽ गेल हो।

कामसेना- ओह! सुन्दर बिम्ब विधान!

कालिदास- देवी! जेना-जेना अन्हार बढ़ि रहल छल लगैत छल जेना वसुधा देवीक माथ पर सीउथ बनि रहल हो। एक दिशि समुद्रक एक कात केर गाछ-वृक्षक हरीतिमामे सन्हिआयल अन्हार आ दोसर दिशि समुद्रमे पसरल अनन्त अन्हार जेना वसुधा देवीक अनन्त केश राशिकें सीउथ दू भागमे बाँटि देने हो आ एहि सीउथमे सूर्यक रेख जेना सिन्दूर बनि सुशोभित हो!

कामसेना- सरिपहुँ अपने अद्भुत छी!

कालिदास- तखने बन्नी पड़ब शुरू भऽ गेल। हम दृश्यावलोकनमे तेहन लीन रही जे हम बरखामे भीजैत रहलहुँ मुदा आँखि हटा नहि सकलहुँ। वसुधा देवीक सीउथ केर सिन्दूर जेना सर्वत्र पसरि गेल हो आ बरखाक बुन्नी जखन आरक्त समुद्रक सतहपर खसैत छल तखन जे लघूर्मि उठैत छल ओ सेहो छोट-छोट स्वर्ण कलश समान चमकि वृत्त बनि समुद्रमे समा जाइत छल।

ओह! हम आनंदविभोर भऽ भीजैत रहलहुँ तथापि हटि नहि सकलहुँ। बुन्न खसलापर बनैत लघु स्वर्णकलश आ वृत्त सभक आनंद लैत रहलहुँ।

कामसेना- ओह! एहन सूक्ष्म दृष्टि!

कालिदास- देवी! हम एहि समस्त भावकेँ लिपिबद्ध करब आ भोरमे अहाँके सुनाएब। जे भावचित्र अहाँक सर्वश्रेष्ठ लागत ओहिपर आर परिश्रम करब आ जखन ओ हमर मनोनुकूल भऽ जाइत तखन ओकरा अपन आगामी रचनामे स्थान देब।

कामसेना- हमरा जे सर्वश्रेष्ठ लागत?

कालिदास- हँ देवी! सृजन पाठके लेल ने! हम बड़भागी छी जे अहाँ सन विदुषी एहि सृजन-प्रक्रियामे हमर सहयोग करब। पूर्वमे एक बेर किछु एहने दृश्यक साक्षात्कार हमरा अपन क्षेत्रक महावराह क्षेत्रमे भेल छल आ ओतऽ आकाशगंगाक अवतरण केर कल्पना साकार भेल छल। देखै छी एहि बेर की होइत अछि।..

डॉ. दिवाकर केर ई सूक्ष्म दृष्टि अनुपम अछि। महाकवि कालिदासक सृजन-प्रक्रियासँ साक्षात्कार करएबाक हुनक ई प्रयास प्रशंसनीय अछि।

नाटिकाक अंतिम सातम दृश्य मे श्रीलंकाक वर्णन करैत एक गीत अछि। समस्याक प्रथम पंक्ति-

कमलः कमलोत्पत्ति श्रूयते न तु दृश्यते

पढ़िते कामसेना एकर पूर्ति करैत छथि-

बाले! तब मुखाम्भोजे कथमिन्दीवर द्वयम्

राजा 'बाले' शब्द पर संदेह करैत छथि। कठोर पूछताछ बाद कामसेना सब कथा कहैत छथि जे दोसर पंक्ति कालिदासक छल। हम लोभवश हुनका माहुर खुआ मारि देलहुँ। लाश मंगाओल जाइत अछि। राजकीय चिता सजैत अछि आ मित्रक रक्षा नहि कऽ सकबाक दंश सँ व्यथित कुमारदास पुत्र कें राजतिलक करैत चितामे पैसि जाइत छथि। एकर बाद कुमारदासक पाँच रानी सेहो चितामे प्रवेश करैत छथि।

एहि दृश्यमे कुमारदासक एकल विलापक मुद्रा भाव-विभोर करैत अछि-

कुमारदासक- (एकल विलापक मुद्रा) कालिदास! हमर

मित्र, हमर सखा, हमर बंधु! हमरा क्षमा करब, हम अहाँक रक्षा नहि कऽ सकलहुँ। ओह! एक बेर गुरुकुलमे अपना लेल अग्रज आ बंधु संबोधन सुनि अहाँ द्रवित भऽ गेल छलहुँ। हमर अंक मालिका पर अहाँ केहन भाव-विह्वल भेल छलहुँ मित्र! आ हम केहन अधम आ अभागल जे अपन बंधुकें बचा नहि सकलहुँ। हम कोन मुँहसँ विद्योतक सोझाँ जा सकब? हुनकर पैघ-पैघ आँखिसँ अश्रु-प्रवाह कोना देखि सकब हम? हमरे देल वचन केर निर्वाहक कारणे ँ महाकवि कालिदास आ विदुषी विद्योत्तमाक पुनर्मिलन भेल छल आ एहि अनुपम युगल जोड़ीकें तोड़बाक पापो हमरे माथ बथायल। हाय रे हमर भाग्य! कालिदास आ विद्योत्तमाक बहुत पैघ ऋण हमरापर, हमर देशपर चढ़ि गेल अछि। एहि महाऋणसँ हम कोना उऋण होयब हे महादेव!

कुमारदास- (विलाप करैत) हे मित्र कालिदास! जे हाथ कहियो अहाँके ँ उठा हृदयसँ लगओने छल वैह हाथ आइ अहाँके मुखाग्नि देलक! ओहि दिन अंक मालिका काल हमर हाथ काँपल नहि छल ओ अत्यन्त प्रफुल्लित छल मुदा आइ...आइ मुखाग्नि दैत काल (थरथराइत दुनू हाथ उठबैत) ई दुनू हाथ काँपि रहल छल। हमरा क्षमा करब मित्र! अहाँ हमरा देल अपन तीनू वचन निभा देलहुँ। हमरासँ भेंट करय हमर मातृभूमि श्रीलंका अयलहुँ मुदा हम अकिंचन अपन राजधर्मक निर्वहनमे असफल भऽ गेलहुँ। अहाँ अपन दू ठोप नोरसँ सीता माताकें ँ अपन नैहर मिथिलाक अनुभूति करएबाक मार्मिक कथा कहने रही से हमरे कारण संभव नहि भऽ सकल। हे मित्र हमर! हमरा माफ करब? हमर देशक माटि हमर महाकवि मित्रके ँ उदरस्थ कऽ लेलक तऽ एकर प्रतिदान तऽ हमरे करए पड़त। अहाँके ँ एतऽसँ एसकर कोना प्रस्थान करऽ दी मित्र? हम वचन देने रही जे आपसीमे अहाँक संग मिथिला जायब। जहिना भारतीय सभ प्राण दइयो के अपन देल वचनक रक्षा करैत अछि तहिना हम सिंहलवासी सब सेहो अपन देल वचनक रक्षामे प्राणक मोह नहि करैत छी। हम अपन देल वचनक रक्षा अवश्य करब आ अहाँक संग अपन अनन्त यात्रा शुरू करब। संभव अछि जे एहि अनन्त यात्रामे कहियो हमरा अहाँक संग मिथिलाक दर्शनक सौभाग्य भेटि जाए। ओहि दिन हम R-r होयब आ तखने हमरा एहि जीवन चक्रसँ मुक्ति आ मोक्ष भेटि सकत। हे हमर देश! हमरा क्षमा करब। महाकविक कालिदासक सिंहल देशमे हत्यासँ भारतवर्षक ऋण हमर देशपर चढ़ि गेल अछि। हम कथमपि नहि चाहब जे हमर देशपर कोनो आन देशक ऋण रहय। तैं हे हमर देश! क्षमा करब हमरा! हम आब आर अहाँक सेवा नहि कऽ सकब! हे महाकवि! आइ मित्रधर्मक निर्वहन करैत भारतवर्षक श्रीलंकापर चढ़ल ऋणकें हम चुकता करब। अहाँक देल अपन वचन निर्वहन लेल हम अनन्त पथपर अहाँक संग चलब। प्रायश्चित करबाक लेल हम आबि रहल छी मित्र! एहि पावन नील गंगा नदीक तीरपर हमरा सभक महाप्रयाण संग-संग होयत! हमरा क्षमा करब मित्र! हमरा क्षमा करब हे हमर देश!

कुमारदास युवराजक हाथसँ मुकुट अपना हथ लऽ युवराजकें मुकुट पहिरा अपन माथक तिलकसँ युवराजके तिलक करैत कालिदासक धसकैत चितामे पैसि जाइत छथि। हाहाकार मचि जाइत अछि। फेर पाँच बेर विभिन्न स्त्री स्वरमे 'प्राणनाथ', 'स्वामी', 'लंकेश्वर', 'प्राणेश्वर' आ 'हृदयेश्वर' शब्द अभरैत अछि। वातावरणमे अनेक प्रकारक करुण क्रन्दन केर स्वर, हे महादेव, हे अवलोकितेश्वर केर आर्त्तनाद, चीत्कार, गूंज आ कोलाहल पसरि जाइत अछि।

यवनिका पात

उपरोक्त मूल्यांकन ओ लघुनाटिकाक वाक्यांश केर मादे डॉ. दिवाकर प्रत्यक्ष प्रमाण स्वरूप श्रीलंकाक माटरा शहर केर स्थल एवं एतद् संबंधी जे सबूत प्रस्तुत कयलनि अछि तकरो अवलोकन आवश्यक-

"माटरामे महाप्रयाण स्थलीपर रोपल सात बोधिवृक्ष (माटरा बोधिय), दुनू महाकविक समाधिस्थली, एतऽ भगवान बुद्ध केर मन्दिर निर्माण, माटरामे कालिदास मार्ग (नीलवाला बाइपासक आर्यतिलक मवाथा सड़क केर सोझाँसँ बहराइत मार्ग जे आगू रहुला रोडमे मिलैत अछि) केर अवस्थिति, कालिदास- कुमारदास विषयक अनुश्रुति आदि एहि मार्मिक घटनाक सत्यता केर उद्घोष करैत अछि। कालिदास कुमारदास विषयक ई मर्मन्तुद प्रसंग सिंहल ग्रंथ निकाय संग्रह, सद्धर्म रत्नाकर, राज रत्नाकर, राजावलीय, पूजावली (1265 ई.), पेरू कुम्बसिरित (पराक्रमबाहु चरित, 15म शताब्दी), एच जोसेफ एन्डू फेरन्दाक कालिदास चरिताया (1887ई.), एफ कूरे केर कालिदास नृत्यापोता (साइमन दे सिल्वा सेने विरत्ना आ मुहरन्द्रम द्वारा (The Historical Tragedy entitled Kalidas रूपमे सम्पादित, 1887), शताधिक शोध-प्रबंध, नागिरीकाण्डा शिलालेख (सिद्धम महाकुमारातसा-राजा अपाया ख्हा बामनागा, रीय-वहेर अताया केनावि चदा कोतु....) सँ समर्थित अछि। सेनार्थ पारानविताना (Nagrikanda Rock Inscription of Kumardas, EZ, Vol-4), बी. गुणशेखर (राजावलीय केर सम्पादकीय), एम. मेघनकर (पूजावली केर भूमिका), गेगर (चूलवंश), एच विद्याभूषण/जीआर नादार्गीकर (Kumardas and his place in Sanskrit literature), विलियम नायटन (History of Ceylon), रिया डेविड्स (Journal of the Deptt. of Letters) ए.एम. होकार्ट (Mortuary use of Bo trees), गामिनी जी पूंछीहेवा (The Historic Tales of Matara) प्रभृति विद्वान कालिदास-कुमार दास विषयक एहि प्रसंग के सत्य मानैत छथि।

एहि आधार पर महाकवि कालिदासक अंतिम समय 522ई. मानल जा सकैछ। 70 वर्ष केर आयुक अनुमान करी तखन महाकविक समय 452-522ई. मानल जा सकैछ।"

डॉ. रंगनाथ दिवाकर जीक उपरोक्त मूल्यांकन, शोध निर्माण,

प्रस्तुत लघु नाटिकाक संग एतद् संबंधी साक्ष्यक संग जे 'महाकविक महाप्रयाण'क प्रणयन भेल अछि तकर निष्कर्ष रूपें अंतमे ओ स्वयं फेर कहैत छथि-

राजशेखर तीन एहन कालिदासक चर्च करैत छथि जाहिमे सँ किनको कोइ कखनो श्रृंगार आ लालित्यमे जीति नहि सकल, मुदा महाकविक लोकप्रियता आ हुनक रचना सभक सरसता-सूक्ष्मता सँ तीन की तिरपन कालिदास भऽ जाथि तखनो कोनो आश्चर्य नहि।

डॉ. दिवाकर बहुत रास कालिदासक नाम उद्धृतोपरान्त करैत अनेक कालिदास के सोझाँ लबैत छथि। ओ कहैत छथि जे कालिदास नामक एहन आकर्षण आ प्रभाव सरिपहुँ अद्भूत अछि। ओ फेर बहुत रास काव्यक नामक उल्लेखोपरान्त कहैत छथि जे एहन काव्य सभक रचयिता रूपमे सेहो कोनो-ने-कोनो कालिदासक नाम अबैत अछि। मुदा महत्वपूर्ण प्रश्न अछि जे एहि सभमे मैथिल कालिदास के छथि? तकर प्रत्युत्तरमे ओ स्वयं कहैत छथि जे प्रश्न ओझरायल अवश्य अछि, उत्तरो स्पष्ट नहि अछि, तथापि मेघदूतम, रघुवंशम्, विक्रमोर्वशीयम् आदिक रचयिता रूपमे प्रसिद्ध कालिदास निर्विवाद रूपसँ मैथिल छलाह जे आजीविका लेल मालवा क्षेत्रक दशपुर उज्जैन कें अपन कर्मक्षेत्र बनओने छलाह। एहि पर शक करब सर्वथा अनुचित! मुदा कालिदासके समस्त भारतीय हुनका 'अपन' मानैत छथि। महाकविक ई राष्ट्रीय स्वरूप सरिपहुँ मुदित करैत अछि। महाकवि अनुपम छथि। हिनक कीर्तिकलश केर आसव सँ सम्पूर्ण विश्व विस्मित होइत आप्यायित अछि। विश्व वाङ्मयमे महाकवि सभक मध्य कालिदास अपना सन एसकरे छथि। निष्कर्षतः कहि सकैत छी जे महाकवि कालिदास मैथिल छथि। महर्षि वाल्मीकि आ महर्षि व्यासकेँ 'ब्रह्मा' (सृजनकर्ता) मानल जाए आ महाकवि कालिदासकेँ 'न भूतो न भविष्यति' महाकवि प्रातिभ!''

(पृष्ठ 200) एहि तरहें डॉ. रंगनाथ दिवाकर द्वारा रचित महाकविक महाप्रयाण' एक शोध ग्रंथ तऽ अछिये साहित्य-संसारमे अद्वितीय सेहो अछि। परिश्रमपूर्वक ओ एतेक प्रसंग सभ देने छथि जे सभक चर्चा करब दुष्कर अछि। महाकवि कालिदासक मैथिलत्व केर संबंध मे एतेक सामग्री एक ठाम पूर्व मे कतहु नहि आएल अछि। मैथिलीमे तऽ ई प्रथमे अछि। शोधार्थी लोकनिक लेल ई ग्रंथ अत्यन्त उपयोगी आ लाभदायक अछि। संगहि पाठक, आमजन ओ विद्वतजन लेल उच्चस्तरीय ई पोथी मीलक पाथर सिद्ध होयत। लगन ओ परिश्रमपूर्वक लिखल ई ग्रंथ कालिदासक संदर्भमे बहुत रास भ्रांति ओ संशय के दूर करत। एहि लेल डा. दिवाकर धन्यवादक पात्र छथि। संगहि अनुप्रास प्रकाशन केर श्री दीप नारायणजी सेहो एहिमे खूब परिश्रम कऽ ग्रन्थके अन्तरराष्ट्रीय स्तरक बनएबामे कोनो कसरि नहि छोड़लनि अछि। प्रुफ रीडिंग सँ लऽ कऽ एकर गेटअप-सेटअप सेहो विलक्षण बनओलनि अछि। खासकऽ श्री मिथिलेश कुमार,भा. प्र.सेवा (सेवानिवृत) द्वारा बनाओल एकर मुखपृष्ठ सेहो आकर्षक ओ मनोहारी अछि। श्रीलंकाक माटरामे कालिदासक धधकैत चिता आ ओहिमे हुनक मित्र कुमारदासकें मित्रधर्म निर्वहन हेतु प्रवेश कऽ जेनाइ मार्मिक एवं हृदय स्पर्शी क्षणक चित्रावली उकेरल अछि। कुमारदासक पाँचू रानीक भाव स्पष्ट दृश्यांकित अछि। कवर-पृष्ठक भीतरी भागमे देल चित्र सेहो नयन-सुख दैत अछि।

हँ, एहि पोथीक संदर्भमे हमरा जे अखरल ओ अछि एकर मूल्य। 800/- आठ सय रूपया मे आम पाठक लोकनि लेल खरीद कऽ पढ़ब सहज नहि। नाटकक संवादमे कतहु-कतहु अर्वाचीन शब्दक प्रयोग सेहो खटकैत अछि। मुदा समग्रतामे कही तऽ जेहने वैदुष्यपूर्ण महाकविक कालिदासक मैथिलत्वक निर्धारण भेल अछि ओहने विलक्षण नाटक सेहो अछि। एक संग्रहणीय एवं विलक्षण पोथी।

अंतम एहि अनुपम ग्रंथक लेल दुनू-गोटे कें धन्यवाद समर्पित करैत अपन कलम कें विराम दैत छी।

ग्रंथ	-	महाकविक महाप्रयाण
रचनाकार	-	डॉ. रंगनाथ दिवाकर
प्रकाशक	-	अनुप्रास प्रकाशन
पृष्ठ	-	255
मूल्य	-	800/-

पूर्व अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, बिहार
सम्प्रति-ग्राम+पो0-खुटौना, जिला-मधुबनी (बिहार),
पिन-847227, मो0-9162205484



शालीनता आ सादगीक पर्याय छत्रानंद सिंह झा

✍ अश्विनी कुमार आलोक

बटुक भाई विदा भ गेलाह। 16 सितंबर 2022 हुनक जीवन यात्रक अवसानक तिथि छलनि, से हुनक जनतब में भले नहिं छलैन, मुदा अपन पत्नी आ छोट बेटाक असमय मृत्युक पश्चात् ओ एकदम जीवन सँ विमुख भ गेल रहथि। से चलि गेलाह।

ओ नवम् दशकक पूर्वार्द्धक काल थिक। हमर धरनी पट्टी अवस्थित घरकेँ समीप एकटा घर में डकैती भेलै। गोली आ बमक भयानक ध्वनि सुनि हमर दादी बीमार भ गेलीह। उच्च रक्तचापक रोगी। कतोक चिकित्सकक परामर्शक पश्चात् ओ किछु नीक भेलनि त एकटा चिकित्सक कहैलखनि जे रेडियो सुनथि आ गीत संगीत में मोन लगाबथि। हमर बाबूजी बैद्यनाथ पंडित प्रभाकर एकटा संतोष कंपनी केर रेडियो कीनि लौलनि। ताहि दिनक बाद सँ हमरा घर में रेडियो बजेबाक जे काज शुरु भेल, तें रेडियो से जुड़ेबाक एकटा आत्मीय अवसर कें जन्म देलक। रेडियो केर प्रसिद्ध प्रसारण 'चौपाल' कें हम सपरिवार नियमित श्रोता छली, से एहिना बटुक भाईक शालीन आ शिष्ट आवाज हमरा सभक हृदय में बसि गेल। शुक्रवार कें नेना सभक कार्यक्रम 'घरौंदा' क संचालन में बटुक भाईक सौम्य आवाज 'भइया' क रूपेँ गूँजैत छलनि : "य हिन्द, बच्चो!" नेना सभकेँ कतोक रासक गपक बीच ओ ज्ञान आ मनोरंजनक खजाना ल क अबै छलाह। गामक बच्चा सभक ई कार्यक्रम एकटा सामीप्य दैत छलै आ लोककेँ अनुप्राणित करै छलै। बीच में किछु काल धरि ओ कार्यक्रम बंद भ गेलै। त बाबू जी बतौलनि जे एकटा बुतरू किछु असभ्य गप क देलकै आ एकर दंड बटुक भाई के सेहो भोगे पड़लैन, कार्यक्रम त बंद भ गेल से बंदे भ गेल। बाद में जब फेर सँ प्रसारण आरंभ भेलै त 'घरौंदा' के पहिने ध्वनि प्रत्यंकन हुए लागल।

'चौपाल' कबटुक भाई आ 'घरौंदा' क भइयाक एहि प्रकारें जे प्रसिद्धि भेलै त हुनक सरिपहुँ नाम छत्रनंद सिंह झा लोक बिसरे लगलाह। ओ बटुक भाई नाम सँ अद्भुत ख्याति पैलनि।

ओ जमाना रेडियोक जमाना छल,संचार माध्यमक क्रांति केर अद्वैत विचार विनिमयक विश्वस्त प्रसारण। जखन रेडियो स्टेशन पटना में ग्रामीण लोकक प्रसारण 'चौपाल' आ 'खेती-गृहस्थी' हुए लागल, तें रेडियोक लोकप्रियता में अकाट्य वृद्धि भेलै। ओ कार्यक्रमक सुननिहार लोक कार्यक्रमक बाट तकैत रहथि।

'चौपाल' में गीता बहिनक 'जय हिंद' तकर बाद बुद्धन भाईक 'दंडवत' आ फेर बटुक भाईक 'नमस्कार'। सभक अभिवादन स्वीकारथि मुखियाजी गौरीकांत चौधरी 'कांत'। तकर बाद गामक आ खेती गृरहस्थीक कतोक रास गपक बीच में गीत गौनइ। श्रोता सभक बीच अपन लोकप्रियताकें साक्षात्कार चौपालक दल कें तखन होइत छलै, जखन सोनपुर हरिहर क्षेत्र्क आ एहि जकाँ दोसर मेला-ठेलाक बीच 'खुला मंच चौपाल' क आयोजन होइत छलै। 'चौपाल' पटना रेडियो केर सर्वाधिक प्रसिद्ध कार्यक्रम छल। बुद्धन भाई अर्थात् गोपाल कृष्ण शर्मा कें बाद बटुक भाई अर्थात् छत्रनंद सिंह झा मुखिया जी अर्थात् गौरीकांत चौधरी 'कांत' क संगे ओ कार्यक्रम के शीर्ष तक पहुँचौलनि।

छत्रनंद सिंह झा 1968 में आकाशवाणी, पटना में उद्घोषक आ वार्ताकार क रूपें बहाल भेलनि। तकरा सँ पहिने ओ रेलवे आ संचार विभागक चाकरी में छलनि। छत्रनंद सिंह झाक लोकप्रियता तखन शीर्ष पर फाँदे लगलैनि, जखन 'चौपाल' क बटुक भाईक रूपें हुनक शालीन आ मिठगर आवाज गूँजे लागल। गौरीकांत चौधरी 'कांत' क सेवानिवृत्तिक पश्चात् जमशेदपुर रेडियो से रामनरेश सिंह पटना एलनि आ 'मुखिया जी' बने लगलनि। ताहि समय में सेहो बटुक भाईक मनोहारी गप बजेबाक कला लोक कें आकर्षित कैले रहलै। 'चौपाल' कें अतिरिक्त मैथिली भाषाक एकटा दोसर कार्यक्रम 'भारती' क उद्घोषणा आ प्रस्तुति सेहो केलनि। छत्रनंद सिंह झा आकाशवाणी केंद्र, पटना सँ 2006 में सेवानिवृत्त भेलनि आ तकर बाद किछु दिन इग्नूक रेडियो प्रसारण 'ज्ञानवाणी' से जुड़ल रहलनि। 2016 में हुनक पत्नी गीता झा आ 2017 में छोट बेटा सुनीलक देहांत भ गेलैन, तकर बाद ओ टूटि गेल रहथि आ साल भर धरि गंभीर रूपेँ रुग्ण रहलाक बाद विदा भ गेलाह।

छत्रनंद सिंह झाक रुचि शास्त्रीय संगीत आ नाटक में छलनि। ओ महान् संगीतज्ञ पंडित रामचतुर मल्लिकक शिष्य छलाह। मुदा पारिवारिक दायित्वक संपूर्ति में व्यस्त भ गेलाह आ तखन हुनक संगीत - साधना थम्हि गेलैनि। ओ मगध विश्वविद्यालय सँ मैथिली भाषा आ साहित्य में स्नातकोत्तर केलनि आ रेडियो में बहाल भेलनि।

हुनक जन्म तिरहुतक दरभंगा में 5 अप्रैल 1946 कें भेलनि, आजुक मधुबनी आ दरभंगाक सीमावर्ती गाँव चनौर में। हुनक पैतृक गाँव चनौर दरभंगा जिलाक मनीगाछी प्रखंडाधीन

छल। चनौर अपन सांस्कृतिक महत्त्व दुआरे विख्यात छल। एहि गाम में देवी काली कें पार्थिव पूजाक परंपरा बहुत पुरान छल। कालीक पूजा कें अवसर पर नाटकक मंचन आ स्थानीय संस्कृति कें प्रदर्शनक ख्यातिक महत्त्व एहि जकाँ लगा सकैछी कि प्रसिद्ध कलाकार गुरुदत्त एहि स्थान केर नाटकक प्रकाश संरचनाक रहस्य बुझेबाक लेल काली पूजा कें अवसर पर आएल रहथि। एहि गामे आबि गायक आ अभिनेता कुंदनलाल सहगल 'बाबुल मोरा नैहर छूटा जाये' गैलनि। चनौर तीन गोट रानी बेटी कें जन्म देबाक लेल विख्यात गाम थिक। एहि गामक बेटीक बियाह तिरहुत, सौरिया आ राजनगर कें राजपरिवार में भेल छलै। एहि चनौरक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक संपन्नताक बीच छत्रनंद सिंहक आरंभिक जीवन बीतल। ओ चनौरक नाट्य संस्कार केर उपज छलाह, उहाँक पारंपरिक कलाप्रवीणता हुनक अंग अंग में बसल छलनि। चनौरक नाट्यसंरचनाक अंतिम पीढ़ी में हुनक नाम आदर आ गुमानक संगे लेल जाइत छल। छत्रनंद सिंह झा रेडियो सँ सेवानिवृत्तिक पश्चात् 'भंगिमा' नामक नाट्य संस्थाकें स्थापना केलनि आ अध्यक्ष रहरनि। आकाशवाणी केंद्र, पटना में कतोक नाटकक आ संगीत रूपकक रचना आ प्रस्तुति केलनि। साहित्य कें सृजनात्मक क्षेत्र में हुनक अवदान बहुमूल्य मानल जाएत। ओ एकटा सधल गीतकार- कवि, कथाकार, नाटककार, व्यंग्यकार आ समालोचक छलथि। हुनक दर्जन भर साहित्य कृति सभ प्रकाशित छल, जाहि में 'एक गुलाबक लेल' (काव्य), 'काँट-कुश' (कथा), 'डोकहरक आँखि'(व्यंग्य), 'सीताहरण' (नृत्य नाटक) , 'मैथिली रेडियो नाटक' (आलोचना) बड्ड प्रसिद्ध भेलनि। साहित्य अकादमी सँ हुनक तीन गोट कृति प्रकाशित भेल 'कबीर', 'गौरीकांत चौधरी कांत 'आ' मैथिली नाटकों का अनुवाद'।

छत्रनंद सिंह झा स्थानीय संपदा आ सांस्कृतिक वैभव क बड्ड प्रतिष्ठा दैत छलनि। तीन चार बेर हम हुनका देखने छली। सभ सँ पहिल बेर जब हमर बाबू जी कें प्रयास सँ बरि 1991 में हमर पैतृक गाम धरनी पट्टी में श्री शंकर उच्च विद्यालयक प्रांगण में 'चौपाल' का खुला मंच प्रसारण भेलै। एकटा यज्ञ भेल रहै, ई कार्यक्रम ताहि अवसर पर 'चौपाल' भेल छल। बटुक भाई मंच सँ हमरा बारे में बजलनि-

''एहि गाम में एकटा साहित्यकार आगाँ बढ़ि रहलि छथि। एखन हुनक उमर छोट छनि, मुदा काज पैघ। मैट्रिकक विद्यार्थी छथि आ तीन गोट हस्तलिखित पत्रिकाक संपादक। पत्रका छल 'प्रयास', 'समदिया' आ 'हस्तक्षेप'। हमरा मोन पड़ैत छथि कुशवाहा कांत, जे एहिना तीन गोट पत्रिकाक संपादक छलनि। ओ एकटा कुर्सी पर बैसथि आ बगल में दूटा आरो कुर्सी पर हाथ रखने रहथि, की त हम तीनू कुर्सी कें अधिकारी छी। जीबथि अश्विनी कुमार आलोक आ साहित्य क्षेत्र में नाम करथि।'' हम दर्शक दीर्घा में बैसि हुनक आशीर्वचन सुनि गद्गदग भेल छली। किछु कालक बाद ओ मोहीउद्दीन नगरक बलुआही में राजनेता अनुग्रह नारायण सिंहक प्रयास सँ आयोजित एकटा पैघ कवि सम्मेलन में भाग लेलनि। ओ कार्यक्रम में हुनक गीतक पहिल पांति हम आइ धरि नहिं बिसरलहुँ : ''हवा पानी जहाँ हो मौत का आमंत्रण, ऐसे में कोई गीत लिखे कैसे, बतलायें।''

तकर बाद एक-दू गोट आरो कार्यक्रम में हुनका देखलौं आ सुनलौं। हमर बाबूजी सँ हुनका घनिष्ठता छल। बाबू जी एक बेर महनार में सेहो खुला मंच चौपाल कराक हुनका बजैले रहथि। ओ कार्यक्रम में लोकगायिका कुमुद अखौरी, लोकनर्तक मोथा सिंह, लोककलाकार विष्णुप्रसाद सिन्हा आ छत्रनंद सिंह झा हमरे लिखल अभिनंदन पत्र सँ सम्मानित भेल रहथि। हम कार्डबोर्ड पर अपने हाथ सँ अभिनंदन पत्र लिखने छली आ ओकरा शीशा में भराएल गेल रहैक। सोनपुर मेला में एक दू टा कार्यक्रम में सेहो हुनक दर्शन भेल। हमर बाबू जी बैद्यनाथ पंडित प्रभाकर रेडियो में वार्ताकार छलथि आ ताहि दुआरे अपन आवाजक विशिष्टता सँ एकटा पैघ पहचान बनैलनि। खुला मंच 'चौपाल' में कतोक बेर बटुक भाई आ मुखिया जीक संगे अपन आवाज सँ प्रभावित करबाक मौका भेंटलनि।

अपन शालीन, सुस्पष्ट आ सादगी सँ भरल आवाजक लेल छत्रनंद सिंह झा जीवित रहताह, हुनक विद्वता, कलाप्रियता आ साहित्यिक व्यक्तिव हुनका नहिं बिसर' देतैन।

संपर्क- प्रभा निकेतन, पत्रकार कॉलोनी, महनार, वैशाली (बिहार), पिन - 844506, मो 8789335785

■

सदति स्मरणीय रहत मिथिला-मैथिलीक प्रति मंजु जीक अगाध सिनेह

✍ श्रीमती माला झा-BFM USA

सर्वप्रथम विद्यापति सेवा संस्थान सँ जुड़ल सब महानुभाव संगे समस्त मिथिलावासी कें मिथिला विभूति पर्व के स्वर्ण जयंती वर्षक हार्दिक शुभकामना!

एहि हर्षक बीच हृदय मे एक शून्यताक सदति टीस बनल रहत, कारण एमएलएसएम कॉलेज के पूर्व प्रधानाचार्य आ सम्प्रति ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक अंग्रेजी विभागक पूर्व अध्यक्ष प्रो. मंजू चतुर्वेदी जीक आकस्मिक निधन सँ मर्माहत छी। एखनहुं ओहिना मोन अछि जे पछिला साल विद्यापति समारोह के मंच पर जखन हुनका सँ पहिल बेर साक्षात्कार भेल छल, तऽ मंचे पर एक दोसरा सँ परिचय पात भेल। बहुत सहजताक संग ओ हमरा सँ हिन्दी मे गपशप शुरू केने छलीह। ई हमरा लेल कनी आश्चर्यजनक छल, कियैक तऽ जखने किनको ई पता चलैत अछि जे हम अमेरिका सँ आयल छी तऽ हुनकर हमरा संग बातचीत मे अंग्रेजी शब्दक प्रयोग बढि जाइत छनि आ ई तऽ अंग्रेजी केर व्याख्याता छलीह, बल्कि जखन हुनका पता चललनि जे हम अमेरिकी भारत मीडिया मे मैथिली कार्यक्रम के होस्ट करैत छी तऽ ओ मैथिली बाजय के प्रयास करय लगलीह, सत्य कहब तऽ तखन हमरा मोन में किंचित् प्रश्न अवश्य उठल जे ई एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयक अंग्रेजी के शिक्षिका छथि, कहीं हम सात समुंदर पार सँ आयल छी ई जानि कय तऽ शायद ओ हमरा प्रभावित करय लेल अपन भाषा में गप्प तऽ नहि कऽ रहलीह! कारण हमर एखन तकक ई पहिल अनुभव छल।

ओहि दिन विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा हुनके हाथ सँ ओहि मंच पर हमरा सम्मानित सेहो कयल गेल छल। ओकर बाद 2022 के जून मे मिथिला आयल रही तऽ 2 जून कऽ हमर हुनका सँ दोसर साक्षात्कार भेल, ओहू दिन एहि संस्थान द्वारा एहि मिथिलाक बेटी के मिथिला में स्वागतक तैयारी एमएलएसएम कॉलेजक सभागार में भेल छल, (जाहि लेल एहि संस्थानक सभ माननीय सदस्य कें सदैव हृदय सँऽ अभारी रहब) ओहि दिन हमरा देखिते मंजू जी कहली जे हुनका लगैत छल जे अवश्य हमहीं होयब जिनकर स्वागत में एतेक तैयारी भेल अछि आ लपकि कऽ गरदनि लगा लेलीह, ओहि दिन हुनक आलिंगन में जे स्नेहक अनुभूति भेल ओकर वर्णन नहिं कयल जा सकैत अछि.... ओकर बाद तऽ हुनका संग बहुत रास समय बिताबय के अवसर भेटल, एहि बीच हुनका सँऽ पहिल भेंट में जे हमर मोन में प्रश्न उठल रहय, हम हुनका सँ पूछिए देलियन्हि जे बेसी लोक, हम अमेरिका में रहैत छी ई बुझिते बातचीत में अंग्रेजी भाषा के उपयोग करय लगैत छथि आ अहाँ तऽ..! तकर उत्तर में ओ अत्यंत सहजता सँ हमरा कहलीह जे अंग्रेजी, मनोविज्ञान, गृहविज्ञान या साहित्य आदि भाषाक ज्ञान केर अपन अलग महत्व छैक। मुदा, अपन मातृभाषा आ अपन संस्कृतिकें कखनहुँ नहि बिसरी ....हुनकर पहिरन-ओढ़न आ बात करय में सादगी, कॉलेजक विद्यार्थी, शिक्षक, कर्मचारी आ संस्थानक कार्यकर्ता लोकनि संग हुनक सरल व्यवहार आदि हमर सोच के मिथ्य साबित कऽ देलक, जे हमरा लेल बहुत ही आंतरिक सुखदायक छल, कियैक तऽ बहुत गोटे अपन मातृभाषा अपन संस्कृति कें छोड़ि सिर्फ देखाबा मे लागल रहैत छथि। एहन में एखन तक मंजू जी सन बहुत कम भेटलीह। सामाजिक मंच पर हुनक सोच आ सहजता, समाजक लेल बहुत बड़का सीख आ संदेश दैत अछि। कोना ओ एतेक पैघ जिम्मेदारी के संग अपन परिवार आ पति के बीच सामंजस्य स्थापित करैत अपन कार्यक्षेत्र में आगू बढलीह....।

एक दिनक बात अछि, एमएलएसएम कॉलेज में मीटिंग के बाद हमरा दरभंगा में जतय हम रुकल रही, ओतय वापस जयबाक छल तऽ झट सऽ मंजू जी आगू बढि हमरा ओतय छोड़य के आग्रह केलीह आ दुनू पति-पत्नी अपन गाड़ी सँ हमरा गंतव्य धरि छोड़ने छलीह, रस्ता मे बात-बात मे हमरा बजा गेल जे एतेक व्यस्तता अछि जे की कहू, किछु जरूरत के चीज अछि जे खरीदय के अवसर नहिं भेटल, तुरंत ड्राइवर के गाड़ी बाजार के तरफ मोड़य लेल कहली आ दुनू परानी हमरा संगे दुकान मे जा कऽ चीज पसंद करय मे एक सँ दोसर दुकान जाइत रहलीह३कनी

हमरा संकोच होइत छल मुदा हुनकर दुनू केर आत्मीयता के आगू हम नतमस्तक भऽ गेल रही। दुनू परानी केर जतेक प्रशंसा करी हमर शब्द कम पड़ि जायत। हुनकर स्नेह आ अपनापन देखि हमरा हरदम लागय जेना हम हुनका वर्षों सँ जनैत होइ, एतेक कम समय मे ओ हमर एक प्रिय सखी बनि गेल छलीह। एक दिन तऽ हमरा पकड़ि कऽ ओ कॉलेजक कार्यालय मे अपन कुर्सी पर हमरा बैसा कऽ अपने हमरा बगल में ठाढ भऽ फोटो खिंचाबय के लेल हुनक आग्रह, हुनकर बड़प्पन देखि हमरा हृदय में हुनका लेल एक खास जगह बना गेल, ओहि दिन हम हुनकर जगह पर हुनका बैसा कऽ बगल में दोसर कुर्सी पर बैसि हुनका संग बहुत रास फोटो खिंचेलहुँ, असिस्टेंट के बेर-बेर कहैत रहली जे ''हमदोनों का बहुत सारा और अच्छा फोटो लो, इसबार सभी फोटो सँभालकर रखना है'' कारण पहिलुका किछु फोटो हुनकर असिस्टेंट सँ डिलीट भऽ गेल छल।

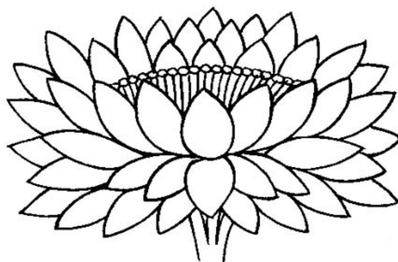
की पता छल जे ओ हमरा सबके बीच सँ अचानक हमेशा के लेल अलविदा कहि कऽ चलि जेती। हम सोचौत किछु और छी आ नियति किछु और तय केने रहैत अछि। हम सब तऽ नियति के हाथक कठपुतली मात्र छी, जकर डोर ऊपर वाला के हाथ में अछि, जतय हम इंसान कतेक विवश भऽ जाइत छी। एखनो मोन ई बात मानय के लेल तैयार नहिं अछि जे ओ आब हमरा सबके बीच नहिं छथि।

बहुत किछु सोचल रहि गेल, अमेरिका मे ओ मैथिली में स्पीच देती, औरो बहुतो किछु... अपन भाषा और संस्कृति के लेल आगू बहुत किछु करबाक हुनक सपना, सबकिछु अपना संगे लऽ कऽ अचानक चलि गेलीह। हुनका संग अंतिम मिलन केर ई तारीख जीवन में कहियो नहिं बिसरि सकैत छी, 5 जुलाई 2022 मंजू जी संग हमर आखरी बहुत रास फोटो आ हुनका संग अंतिम भेट सेहो छल। कहल जाइत अछि जे अंतर्आत्मा के आगू की होयत एकर एहसास पहिने भऽ जाइत छैक। शायद हुनको आत्मा के ई आभास भऽ गेल छल जे ई हमर सबहक अंतिम मिलन अछि। हुनकर मृदुल स्वभाव, मैथिली भाषाक लेल हुनक स्नेह, हमरा संगे हरदम मैथिली मे बात करय के प्रयास और बहुत किछु, जेकरा किछु पांती या शब्द मे समेटब संभव नहिं अछि। मुदा, हुनक शालीनता, हुनका संगे बिताओल एक-एक क्षण आ मिथिला-मैथिलीक प्रति हुनक अगाध सिनेहक स्मरण सदैव हमर हृदय में बनल रहत। बहुमुखी प्रतिभा के धनी एहि विशिष्ट पुण्यात्मा के हमर सादर नमन!

प्रो. मंजू चतुर्वेदी जीक संग साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, सांस्थानिक आदि क्षेत्र में योगदान देनिहार सभ दिवंगत विशिष्ट कें हम, ''श्रद्धा सुमन के संग भावपूर्ण श्रद्धांजलि'' अर्पित करैत छी।

(ग्लोबल एक्जीक्यूटिव हेड मिथिला डायस्पोरा)





''समाजक मौन साधक विमलकांत चौधरी''

✍ डॉ. उषा चौधरी

मौन साधनामे लीन अपन पिता स्व. विमलकांत चौधरीक चरण वन्दन कए अपन वक्तव्य प्रारंभ करैत छी। सर्टिफिकेटक हिसाब सँ हिनक जन्म 11 सेप्टेम्बर 1932ई. मुदा असलमे 11 जुलाई 193ई. ओ मृत्यु 13 अप्रिल 2022ई. मे भेलनि। संभ्रांत जमींदार परिवारमे जन्म होअके कारणे बच्चे सँ खूब साफ-सुथरा रहबाक आदति रहनि जे कि आजन्म रहलनि। अपन शालीन ओ सदिखन परोपकारमे तल्लीन रहबाक कारणें सम्पूर्ण मिथिलामे भारत सँ नेपाल धरि अपन समयमे चर्चित ओ चिन्हित छलाह।

हमर बाबूजीक बाल्यकाल सौविध्यपूर्वक रहल। पिता स्व0 त्रियुगी नारायण चौधी उर्फ कंटीर बाबूक प्रथम सन्तान होअके कारणे लालन-पालन खूब नीक ढ़ंगसँ भेलनि। आरंभिक शिक्षा अपन गाम पंचोभमे मास्टर राखि कऽ पढ़ायल गेलनि लोकसभक दृष्टिमे ई विशेष संस्कारीक रूपमे जानल जाए लगलाह। आगू ई पिण्डारूचमे मिडिल स्कूल आ एम0एल0 एकेडमी सँ हाई स्कूल पास पास कयलनि। महाविद्यालयमे प्रवेशक बाद अन्य समयमे राजनीतिक सभामे जाए लगलाह। ई अध्ययन नीक जकाँ करथि, हिनक अंग्रेजी, हिन्दी, मैथिली, नेपाली आ संस्कृतमे नीक जकाँ ज्ञान रहनि। एहि पाँचों भाषामे लीखि-पढ़ि आ बाजि सकैत छलाह।

एहि बीचमे ई दू गोटे सँ प्रभावित भेलाह प्रथम तँ हमर पीशा स्व. दिगम्बर झा जे नेपालमे आन्दोलनी होअके कारणे जेलमे नजरबंद कऽ देल गेल रहनि- जे पछाति ओतय के अंचलाधीश (Governer) बनाओल गेलाह। दोसर मिथिला राज्य आन्दोलनी बाबू जानकी नन्दन सिंह। एहि दुनू आन्दोलनीक संगतमे स्नातक नहि बनि सकलाह।

बाबू जानकी नन्दन सिंह जखन स्वतंत्र पार्टीक गठन कएलनि तँ ओ अपने अध्यक्षक पद पर आसीन भेला आ हमर बाबूजी स्व. विमल कान्त चौधरी सेक्रेटरी पद पर आसीन करौलनी से भावत तक ओ जीवित रहलनि तावत तक ओहि पार्टी पर हिनके दुनू गोटेके बोलवाला रहनि। प्रथम मिथिला राज्य आन्दोलनक क्रममे बाबू जानकी नन्दन सिंहक संग इहो जेलमे गेल रहथि। बाबू साहेबक मृत्युक पश्चात स्वतंत्र पार्टीक कोनो अस्तित्व नहि रहि गेलैक। ताहि समयमे मिथिलामे भारतीय कम्युनिष्ट पार्टीक बोलवाला रहैक। स्व0 का0 भोगेन्द्र झा, का0 तेज नारायण झा, का0 चतुरानन मिश्र आदि नेतागणक संग पंचोभ गामक का0 श्रीकान्त मिश्र, का0 रामानन्द चौधरीक सेहो सक्रिय योगदान रहैत छनि।

सन 1967 ई.मे पंचोभ गामक नजदीक डिहलाही गाममे का0 तेज नारायण झाके कोनो आन्दोलनक क्रममे कम्युनिष्ट विरोधी लोकनिक द्वारा मरणासन्न कए देल गेलनि। बाबूजी के जखन पता लगलनि तऽ गामक किछु नौजवानक संग जा हुनकर जान बचौलनि। ताहि क्रममे हिनका का0 भोगेन्द्र झाक संग दोस्ती भऽ गेलनि से आजन्म रहलनि। हुनके आह्वान पर बाबूजी कम्युनिस्ट भऽ गेला। ओ आजन्म एकर निर्वाह कयलनि। मिथिला-मैथिलीक लेल समर्पित बाबूजी अखिल भारतीय मिथिला संघ दिल्लीक संस्थापक सदस्य रहथि। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीक तत्कालीन प्रमुख नेता लोकनिक देन थिक ई मिथिला संघ ओ विद्यापति सेवा संस्थान सेहो भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीएक देन थिक। आ बाबूजी एकर संस्थापक सदस्य रहथि आ आजन्म रहला। 1967 ई.मे जखन इ कम्युनिस्ट पार्टी ज्वाइन कयलनि। तेकर बाद सँ आजन्म एकर सक्रिय सदस्य रहला। 1970 ई. भारत सोवियत मैत्री (इसकल)के जिला सेक्रेट्री छलाह 1974ई.मे इसकलक प्रान्तीय सम्मेलनक अध्यक्षता कयलनि।

सेवा भावना सँ ओत-प्रोत हमर पिता स्व0 विमलकान्त चौधरी चाहे जाहि पार्टीमे होथि हम हुनका एकेटा कार्य करैत देखनियनि कोनो बिमार-रोगीके चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराबैत। कि राति की दिन केकरो बेमार नहि देखि सकैत छलाह। चाहे ओ कोनो जाति-वर्गक लोक होअ, ओकर पद पैघ सँ पैघ आ छोट सँ छोट स्तरक सेहो रहैत छलैक। सभ लेल दौड़ गेलहुँ, ओकर इलाजक वास्ते निःशुल्क व्यवस्था करबावए लेल। जाहि कारणे ओ सभहक नजरिमे श्रेष्ठ बनलनि। हमरा जनैत-संभवतः हमर पीशा स्व0 दिगम्बर झाक कारणे- नेपालक उच्चासीन व्यक्ति प्रधानमंत्री तकसँ हिनका वार्तालाप आपकताक संग होइत

रहैत छलनि। भारतवर्ष या कम सँ कम बिहारमे तँ अवश्ये। चाहे कोनो पार्टीक सरकार हो बाबूजी के सभसँ जान-पहिचान सभ खोज पुछारी करनि। परन्तु की महनाल जे ककरो सँ कहियो कोना व्यक्तिगत या पारिवारिक फायदा-लेने होथि। तएँ माँ के थोड़ेक आर्थिक परेशानी होइ आ ओकरा अपन पिता एवं ससुर दुनू सँ सहायता लेबए परै जे ओकरा खराब लगै तऽ बाबूजी पर खौंझा जाए। तखन ओ बहुत शान्त भाव सँ कहथिन। हमरा सेवा करए दिअ। अहाँ केँ एहि धर्म सँ सभ किछु प्राप्त भऽ जायत। धीया-पूता पर एकर नीक असरि परतैक से हुनकर कहल सत्य भेलनि। आ हुनकर बुढ़ापा खूब आरामसँ हँसैत-हँसैत कहलनि। से शायद विरलेक केँ प्राप्त होइत छैक। पाँचो सन्तानसँ सुख प्राप्त भेलनि।

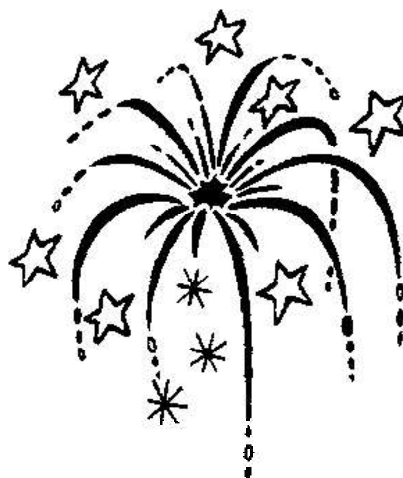
हमर पूर्वज लोकनि बेटी शिक्षाक विरोधी रहथि सर्वप्रथम हमर पिताक ई संकल्प रहथि जे यावत हमर बेटी सभ कॉलेजक शिक्षा प्राप्त नहि करत तावत हम विवाह नहि करायबे। ताहि लेल हुनका विरोधक सामना करय पड़लनि। मुदा ओ हार नहि माननलनि।

विद्यार्थी जीवनसँ राजनीतिमे रहलाक बादो कहियो कोनो पदक लेल लालायित नहि रहला कखनो काम ने नहि कयलनि तएँ शायद हिनक कियो दुश्मन नहि बनलनि। हिनकर जमानाक सभ मैथिली साहित्यकार लोकनि हिनक मिश्र रहथि से भारतसँ नेपाल तकके लगभग सभ हिनक व्यक्तित्व सौम्य स्वभाव ओ सेवा भावनाक प्रशंसक से दक्षिणपंथी होथि या वामपंथी प्रशंसा आ आदरक भाव सबहक मोनमे। सादा जीवन, कर्ममय जीवन, प्रभुदित जीवन-एहि तरहेँ ई एक आदर्श व्यक्ति छलाह।

पुस्तक जँ प्रेम राखयवला विमलकान्त चौधरी सामाजिक कार्य ओ स्वाध्याय संगहि चलैत रहनि मनस्वी, गम्भीर अध्ययनशील एवं कर्मयागी छलाह। हिनक एक साहित्यकार मित्र जे हिनक बाल सखा सेहो रहथिन ओ कहलनि जे जखन हमरा लोकनि स्कूलमे रहि तखन अहाँक पिता हमर वर्गमे असगर विद्यार्थी रहथि जे पैंट शर्ट पहिरि कऽ आबथि। जखन कॉलेजमे रहि तखन हिनकर सेंट चोरा-चोरा कऽ हमरा लोकनि सेहो लगा ली। बेर-कुबेर हिनका दामी चप्पल-जूता के माँगि कऽ उपयोग कऽ ली। आ आब हम सभ पैंट-शर्ट पहिरैत की आ ओ खादीक धोती-कुर्ता पहिरैत छथि। हम हँसए लगलौं। कहलियनि-तखनो ओ महँगें समानक उपयोग करैत छलाह आ अखनो महँगें। किएक तऽ खादी कपड़ा पहिरिनाइ सभसँ महँग छैक जखन कि एखनो हुनकर कपड़ा सब दिन धोबिए घर जाइत छनि घरमे ओ नहि धोआइत छै।

हुनक पाँच सन्तानमे तीन पुत्री -सरोजा मिश्रा, डा. उषा चौधरी, अंजू झा। दू पुत्र-डा. संजीव कुमार चौधरी ओ राजीव चौधरी (मुखिया पंचोभ)। योग्य जमाय, नाति-नातिन, पोता-पोती सँ अलंकृत एहि दुनियाँ सँ आनन्दमय वातावरणमे विदा भेलाह सादर श्रद्धांजलि एवं शत-शत नमन हे पिता।





“डॉ. उमाकान्तक : व्यक्तित्व ओ कृतित्व”

✍ डॉ. उषा चौधरी

साहित्यकारक व्यक्तित्व कें बूझब सर्वप्रथम आवश्यक अछि। बिना व्यक्तित्व के ँ बूझने कृतित्वक तहमे जायब संभव नहि होइछ। व्यक्तित्व निर्माण परिवेश सँ होइछ आ ते ँ कृतित्वक माध्यम सँ रचनाकारक परिवेशकें सेहो बूझल जा सकैछ। साहित्यकारक व्यक्तित्व जाहि तरहक रहैछ। ओ जतेक प्रखर रहैछ, जतेक संघर्षशील रहैछ, ओहि अनुपातमे ओहि रचनाकारक साहित्य समक्ष अबैछ।

स्व. डॉ. उमाकान्त बाबूक जन्म 17 जनवरी 1945ई. मे भेल छलनि। मधुबनी जिलाक ‘ढ़ेंगा हरिपुर’ ग्राममे भेल एक अति साधारण परिवारमे जन्म होअके कारणे आजन्म संघर्षशील रहलनि। हिनक व्यक्तित्वक सभ सँ पैघ विशेषता रहनि जे ई मातृभाषाक सर्वतोमुखी विकासक लेल संघर्षरत सेनानी साहित्यकार अगिला पाँतीमे विराजमान रहलाह। हिनक एहि सक्रियताक दिशा रचनाकारकें प्रेरित करबाक दिश विशेष छल। लोक के ँ साहित्य रचना लेल प्रेरणा भेटौक ताहि लेल सदिखन प्रयत्नशील रहैत छलाह। मैथिली पोथी प्रकाशनक जे समस्या अछि से ओ नीक जकाँ अनुभव करैत छलाह। मुदा मातृभाषा भंडारकें विभिन्न विधाक पोथीसँ भरबाक हुनक लालसाके ँ उमा बाबूक आर्थिक विपन्नता नहि रोकि पबैत छल। जेना-तेना सदिखन मातृभाषाक बलिवेदी पर अपन अर्थक आहुति चढ़बिते छलाह।

विभिन्न विधामे लिखनिहार डॉ. उमाकान्त उपन्यास ओ कथा लिखलनि, नाटक लिखलनि, कविता-काव्यक रचना कयलनि, समीक्षको बनला मुदा, पाठक कें हिनक रसरचना पढ़बामे जे आनन्द भेटैत छैक, से आनमे नहि। हास्य-व्यंग्यक बड़का गुण थिक जे अपने कें हँसबिते रहत आ बनबितो रहत।

हिनक रचनामे मैथिल समाजमे व्याप्त विसंगति आ स्वार्थपटता कें, मैथिली साहित्यमे पसरल अराजकता आ पाठकक संकीर्ण मानसिकताकें, मैथिल समारोहमे, मचैत गर्दे मगोल कें, अमर्यादित आचरणकें खोईंचा छोड़ा कऽ मुदा ललित शैलीमे कहबाक अपन विशेषता रहनि। से गुदगुबितो अछि आ मनकें कुटकुटबितो अछि। साहित्यक काजो तँ लैह थिक। पाठक कें मुखड़ो लगा दैत, अयनो देखाओत हिनक रचनामे मैथिलीमे पत्र-पत्रिका बेचबाक संकट, मैथिली आन्दोलन कें जोर नहि पकड़बाक कारण, सांस्कृतिक कार्यक्रम कें असांस्कृतिक स्वरूप धारण कऽ लेबाक संकेत आ एहन कतिपय ज्वलंत समस्याकें एक दिस उभारनाई तँ दोसर दिस सामान्य ज्ञान कें बढ़यबाक पर सेहो ध्यान देल गेल अछि।

डा. उमाकान्तक कृतिक विभाजन तीन कोटिमे कएल जा सकैछ। पहिल कोटिमे अबैछ ऐतिहासिक वा पौराणिक कथाक आधार पर लिखित पोथी, दोसर कोटिमे अबैत अछि सर्जनात्मक पोथी तथा तेसर कोटिमे हुनक संपादनक क्रिया-कलाप।

ऐतिहासिक वा पौराणिक कथाक आधार पर लिखित पोथी अछि-(1) सीता (नाटक) 1998, (2) प्रस्थान, (3) बाबाजीक वियाह।

दोसर कोटिक पोथीमे अछि-(1) ‘यथार्थ’ (कथा संग्रह) 1991, (2) ‘बाबाक विजया’ (हास्य-व्यंग्य) 2004, (3) ओइल (उपन्यास), (4) बेटीक बाप (लघु उपन्यास), (5) अपन बात।

तेसर कोटिक जे हिनक कृति छन्हि ओ हुनक सम्पादन करबाक अद्भुत क्षमता। विद्यापति सेवा संस्थानक ई संस्थापक सदस्यमे सँ एक गोट रहथि ओतऽ सँ निकलएवला पत्रिका अर्पण (स्मारिका)क अंक 1 सँ 25 धरि ओकर मुख्य संपादकक रूपमे रहलनि।

दोसर मिथिला महोत्सव (स्मारिका) 97 एवं 03 ई. क संपादन कयलनि।

तेसर मिथिलांचल सम्पर्क (मासिक) 2001 सँ 2006 धरि सम्पादकक रूपमे रहलाह।

मैथिलीमे प्रकाशित लगभग सभ पोथी उदाहरण स्वरूप घर-बाहर, भारती मंडन, मिथिला दर्शन, मिथिला दर्पण, मिथिला मोद आदि प्रमुख पत्रिकाक लेखक एवं प्रचार-प्रसारमे सहयोगी डा. उमाकान्त झा संकल्प लोक, लहेरियासराय हो वा विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा दुनू संस्था हुनकर सत्प्रयास सँ स्थापित भेल। एहि ठामक आरंभिक साहित्यिक कार्यक्रम हुनकहि सत्प्रयास छल।

डा. उमाकान्त झाक सर्जनात्मक रचनामे याने हुनक कथा या उपन्यास दुनूक प्रमुख विषय सामाजिक जीवनमे व्याप्त शोषण, प्रताड़न, भेदभाव, सार्वजनिक जीवनमे पसरल दाओ-पेंच, छल-प्रपंच, जातीय-उपजातीय ध्रुवीकरण एवं युग-युग सँ एकठाम रहैत लोकक बीच मनोमालिन्य तथा विभक्त रखबाक व्योंत, सरकारी कार्यालयमे डेग-डेग पर घूस आ भ्रष्टाचार। शिक्षण प्रशिक्षण संस्थामे बढ़ैत कदाचार आदि कतेको विषयमे केन्द्रमे राखि उमाकान्तक कथामे भेटैक।

डा. उमाकान्त झाक कथन रहनि जे मैथिलीमे लेखन करब व्यवसाय नहि थिक। लेखक आ' प्रकाशकेँ ओहि सँ जीविका नहि चलैत छनि। जे कोनो लेखक अपनप पेट काटि, पोथी वा पत्रिकाक प्रकाशन करैत छथि, मात्र मातृभाषाक सेवाभाव सँ। जीवन-यापनक संकटक संबंध भौतिक सुख-सुविधाक संग अछि। परंच भाषा, साहित्य, संस्कृति अथवा विश्वास पर आएल संकटक संबंध भौतिक नहि अछि, भावात्मक अछि, अभूर्त अछि। ओहिमे सहस्रों वर्षक अर्जित भावात्मक आ ज्ञानात्मक सम्पत्ति तहिआएल रहैत छैक।

उमाबाबूक व्यक्तित्व ओ कृतित्व केँ जँ तराजूक पलटा पर राखल जाय तँ कृतित्वक अपेक्षा व्यक्तित्व विशेष भरिगर भए जएतनि। किएक तँ डा. उमाकान्त झा प्रेरणाक काज बड़ करैत छलाह। लोककेँ लिखबाक लेल प्रेरित करैत छलाह। कार्यक्रम आयोजित कए लेखक ओ विद्वान लोकनि केँ नव-नव विषय पर सोचबाक लेल विवश करैत छलाह आ एहि काज लेल ओ स्मरणीय रहताह।

उमाबाबूक 'बाबाक विजया' पोथीमे अपन शुभांषामे प्रो. भीमनाथ झा लिखैत छथि जे- ''विजयाक उमंगमे विचारक तरंग कोम्हर मोड़ लेतैक। ककरा अपन संग लऽ कऽ उलंग कऽ देतैक। क्यो कहि नहि सकैछ। पत्र-पत्रिका बेचबाक संकट, मैथिली आन्दोलन केँ जोर नहि पकड़बाक कारण, सांस्कृतिक कार्यक्रमकेँ असांस्कृतिक स्वरूप धारण कऽ लेबाक संकेत आ एहन कतिपय ज्वलंत समस्या केँ एक दिस उभारल गेल अछि तज दोसर दिस सामान्य ज्ञान केँ बढ़यबाक पर सेहो जोर देल गेल अछि। जेना मिथिलाक कोन-कोन ठामक पान नामी अछि, एखन मैथिलीमे कतेक आ कतऽक साहित्यकार सक्रिय छथि?

मुख्यतः मैथिलीक हास्य-व्यंग्य लेखक, उपन्यासकार, कथाकार एवं महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह मेमोरियल महाविद्यालय, दरभंगाक अवकाश प्राप्त मैथिलीक प्राध्यापक डा. उमाकान्त झाक देहावसान 06 जनवरी, 2022 के 77 वर्षक आयुमे मधुबनीमे भए गेलनि। हार्दिक श्रद्धांजलिक संग सादर नमन।

सम्पर्क-मैथिली विभागाध्यक्ष
म0लि0सिं0मे0 महाविद्यालय, दरभंगा
मो0-9204701325





महाकवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर

✍ कमला कान्त झा

अभिनव विद्यापति मिथिला विभूति स्वनामधन्य रवीन्द्र नाथ ठाकुर, पिता- स्व. केदार नाथ ठाकुर'क जन्म ग्राम- धमदाहा, वार्ड सं.- 07, जिला- पूर्णियाँ (बिहार) मे दिनांक 8 अगस्त 1938 के भेलनि। हुनकर प्राथमिक शिक्षा-संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, धमदाहा (पूर्णियाँ) मे भेलनि। तदुपरान्त इंटर आ स्नातक पूर्णियाँ कॉलेज, पूर्णियाँ सँ कयलनि।

सेवा निवृत्ति- अपन कुशाग्र बुद्धि आ दक्षताक कारणे सर्वप्रथम धमदाहा माध्यमिक विद्यालय मे अस्थायी शिक्षकक रूप में कार्य प्रारम्भ कयलनि। तदुपरान्त क्रमशः माध्यमिक विद्यालय, डुंगरा, भवानीपुर के संस्थापक प्रधानाध्यापक, संस्कृत उच्च विद्यालय, बख्तियारपुर, पटना मे उपप्रधानाध्यापक, वर्ष 1960 सँ 1980 धरि वित्त विभाग, बिहार सरकारक (राष्ट्रीय बचत संगठन) मे राष्ट्रीय बचत पदाधिकारी'क रूप में कार्य करैत वर्ष 1980 मे स्वैच्छिक सेवा निवृति लेलनि। बिहार सरकार'क शिक्षा विभाग द्वारा गठित मैथिली अकादमी मे लियन सेवा'क अन्तर्गत सहायक निदेशक, उपनिदेशक आ निदेशक सह सचिव'क रूप मे सेवा प्रदान कयलनि।

(A) साहित्यिक कृति-प्रकाशित पुस्तक :

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1.	चलू-चलू बहिना (गीत संग्रह)	कन्हैया लाल, कृष्ण दास, दरभंगा	1961
2.	जहिना छी तहिना (गीत संग्रह)	ग्रंथालय प्रकाशन, दरभंगा	1963
3.	त्र-विचित्र (प्रयोगवादी कविताएँ)	स्व प्रकाशित	1966
4.	नर-गंगा (लघु महाकाव्य)	स्व प्रकाशित	1968
5.	सीता (खंड काव्य)	ग्रंथालय प्रकाशन, दरभंगा	1968
6.	श्री गोनू झा (उपन्यास)	ग्रंथालय प्रकाशन, दरभंगा	1969
7.	एक राति (नाटक)	ग्रंथालय प्रकाशन, दरभंगा	1969
8.	एक मिनट की रानी (हिन्दी नाटक)	ग्रंथालय प्रकाशन, दरभंगा	1970
9.	स्वतंत्रता अमर हो अमर (देश भक्ति/लोकगीत संग्रह)	चेतना समिति, पटना	1972
10.	अति-गीत (लोक गीत)	पूर्वाञ्चल प्रकाशन, पटना।	1976
11.	प्रगीत (लोक गीत)	पूर्वाञ्चल प्रकाशन, पटना।	1976
12.	सुगीत (गीत संग्रह)	पूर्वाञ्चल प्रकाशन, पटना।	1976
13.	रवीन्द्र पदावली (भक्ति एवं व्यवहार गीत)	पूर्वाञ्चल प्रकाशन, पटना	1976
14.	पञ्चकन्या (प्रयोगधर्मी खण्डकाव्य)	पूर्वाञ्चल प्रकाशन, पटना।	1976
15	लेखनी एक रंग अनेक (प्रथम मैथिली गजल संग्रह)	पूर्वाञ्चल प्रकाशन, पटना।	1978
16.	दो फूल	दीपायतन बिहार सरकार, पटना	
17.	प्रत्यय (कविता एवं गीत)	पूर्वाञ्चल प्रकाशन, पटना	1999
18.	श्री सीता चालीसा (धार्मिक पुस्तिका)	पूर्वाञ्चल प्रकाशन, पटना	1999

महाकवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर द्वारा लिखित खण्ड काव्य 'द्रौपदी'क अनुवाद अँग्रेजी मे साहित्य अकादमी द्वारा कराओल गेल।

बिहार-सरकार के स्कूल कालेजक पाठ्यक्रम मे हिनक अनेक रचना समाहित अछि। हिनका द्वारा लिखल सीता चालीसा'क पाठ मिथिलाक बहुतो घर मे मनोयोगपूर्वक कयल जाइत अछि।

(B) पुरस्कार/सम्मान एवं अन्य विशिष्ट उपलब्धि :

1. स्व. वैद्यनाथ मिश्र यात्री (बाबा नागार्जुन) द्वारा कला भवन पूर्णियाँ के मंच पर व्यक्तिगत सम्मान अभिनव विद्यापति के नाम से अलंकृत।
2. स्वाती फाउंडेशन कोलकाता (पद्र बंगाल) द्वारा प्रवोध साहित्य सम्मान (वर्ष 2014)।
3. अखिल भारतीय मिथिला संघ नई दिल्ली द्वारा मिथिला विभूति सम्मान वर्ष - 2016।
4. तृतीय अंतर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन मुम्बई-द्वारा मिथिला रत्न सम्मान वर्ष 2016-आयोजक : मैथिल मित्र मण्डल मुम्बई।
5. झारखण्ड मैथिली मंच रांची द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड- वर्ष 2014।
6. विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा द्वारा विशिष्ट मैथिली सेवा सम्मान- 'मिथिला विभूति'
7. काया कल्प साहित्य कला फाउंडेशन, नोएडा (उद्र प्रद्र) द्वारा कायाकल्प साहित्य शिरोमणि सम्मान 2016
8. विश्व मैथिली संघ संतनगर, बुराड़ी, नई दिल्ली द्वारा विशिष्ट सम्मान।
9. जन जागृति मंच, पालम नई दिल्ली द्वारा विशिष्ट सम्मान।
10. वैदेही फाउंडेशन नई दिल्ली द्वारा विशिष्ट सम्मान स्थान मावलंकर हॉल-वर्ष 2017।
11. इला फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2016-2017 के लेल भाषा साहित्य सम्मान।
12. विद्यापति समिति धनवाद (झारखण्ड) द्वारा वर्ष 2016 में विद्यापति सम्मान।
13. वाराणसी (उ.प्र.) मे दूरदर्शन केन्द्र नई दिल्ली द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कविता कुम्भ मे मैथिली भाषा के प्रतिनिधि कवि के रूप मे कविता पाठ।
14. काशी में स्थानीय साहित्यिक संस्था द्वारा विशेष सम्मान।
15. गोहाटी (असम) मे साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा आयोजित

कवि सम्मेलन मे रचना पाठ।

16. साहित्य अकादमी, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा आयोजित पूर्णियाँ में एकल काव्य पाठ।
17. आकाशवाणी पटना, दरभंगा द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन मे नियमित काव्य पाठ।
18. मैथिली भोजपुरी अकादमी नई दिल्ली द्वारा 15 अगस्त एवं 26 जनवरी के कवि सम्मेलन मे अध्यक्षता एवं कविता पाठ।
19. मिथिलांचल साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था, नई दिल्ली द्वारा 'मणिपद्म' सम्मान सँ सम्मानित 20. कुल 40 वर्ष धरि मैथिली मंच पर कलाकार के रूप मे सर्वाधिक लोकप्रिय एवं युवा कलाकार लोकनि के लेल प्रेरणा।

(C)मैथिली लोक संगीत मे विशिष्ट अवदान :-

स्व. रवीन्द्र नाथ ठाकुर आधुनिक मैथिली मंचक जनक'क रूप मे जानल आ मानल जाइत छथि आ रहताह।

ई अपन परम मित्र स्व. महेन्द्र (महेन्द्र झा), ग्राम-यमसम, पंडौल, जिला- मधुबनी, महालेखाकार बिहार, के कार्यालय मे अंकेक्षक) जीक संग 1966-67 मे एक अनुपम जोड़ी बनौलनि, जाहि मे दू टा पुरुष कलाकार बिना कोनो वाद्ययंत्र के स्वरचित रचनाक गायन कऽ राति-राति भरि मनोरंजन करैत चर्चित, परिचित आ अर्चित भऽ गेलाह। मूल रूप मे कवि ओ गीतकार रवीन्द्र जी'क गायन शैली नवीन आ मनोहारी छल, जाहि सँ हिनकर लोकप्रियता उच्च शिखर पर पहुँचि गेल। स्व. रवीन्द्र जीक रचनाश्क विशिष्टता एहन जे रचना मे अपन माटि पानिक सुगन्धक संग मिथिलाक सभ घर-आंगन, खेत-खरिहान, संस्कृति आ संस्कारक आ ज्वलन्त विषय पर अपन कलम उठौलनि। स्वद्र रवीन्द्रजी जोड़ीक एक टा एहन लोकप्रिय परम्परा स्थापित कयलनि। जकरा शशिकान्त-सुधाकान्त, सरस-रमेश, नवल-नन्द, गणेश-भुवन आ एकल मे सुपरिचित गीतकार चन्द्रमणि जी गतिमान आ मतिमान बनौलनि।

(D) रिकॉर्ड्स एवं कैसेट्स :-

1. वर्ष 1966 मे मैथिली लोकगीतक ग्रामोफोन रिकॉर्ड H.M.V. कोलकाता द्वारा गीतकार/संगीतकार के रूप मे रिलीज।
2. सीता चालीसा- टी-सीरीज, नोएडा द्वारा रिलीज।
3. पूर्वांञ्चल म्यूजिकल रिकॉर्ड्स पटना द्वारा भजनामृत, विद्यापति गीत, दोरस (मैथिली, भोजपुरी) के अलावा करीब 15 कैसेट्स रिलीज- वर्ष 1977-78।
4. भजन-भारती- सुयोजन फिल्मस-नई दिल्ली द्वारा रिलीज।
5. सोनी कैसेट्स द्वारा गीतकार के रूप में रिलीज एल्बम।

फिल्म निर्माण एवं टेली सीरियल/वृत चित्र :

1. प्रथम मैथिली फीचर फिल्म ''ममता गाबय गीत'' के निर्माण में प्रमुख भूमिका। गीतकार/पटकथा लेखक सह-दिग्दर्शक के रूप मे सफल प्रदर्शन।
2. मैथिली फीचर फिल्म ''गोनू झा'' के पटकथा लेखक एवं गीतकार।
3. आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति पर आधारित टेलीफिल्म-आयुर्वेदक अमर कहानी के पटकथा लेखक एवं निर्देशक/संगीतकार।

सरकारी विभाग/संस्थानक लेल कयल गेल कार्य :

1. पंचायत मंत्रालय, भारत सरकार के लेल वृत-चित्रक निर्माण-आपका फैसला आपकी मुट्ठी मे।
2. साहित्य अकादमी, भारत सरकार, नई दिल्ली के लिए मैथिली-भाषा के प्रतिष्ठित विद्वान पण्डित गोविन्द झा, श्री मायानन्द मिश्र तथा हिन्दी साहित्य के विद्वान प्रो. श्री राम नरेश त्रिपाठी पर वृत-चित्रक निर्माण।
3. Beware of God अमरीका मे प्रवासी भारतीय के आध्यात्मिक द्वन्द पर आधारित वृत चित्र।
4. ''नारी'' वृत-चित्र।
5. गोनू झा (धारावाहिक) दूरदर्शन केन्द्र, गोहाटी (असम) से कुल 15 एपिसोड के प्रसारण।
6. ''ऐसे बनी बात'' के लखनऊ दूरदर्शन केन्द्र सँ 3 एपिसोड प्रसारित।
7. युवा समस्याओं पर आधारित ''फड़फड़ाते पंख'' (हिंदी) के कुल 5 एपिसोड के दूरदर्शन केन्द्र, गोहाटी सँ प्रसारण।
8. सुनहरा सफर :- सुयोजन फिल्मस नई दिल्ली के बैनर तर (भारतीय सिनेमा के 36 वर्षक इतिहास)
9. साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा निर्मित डा०द्र सुकुमार सेन पर आधारित वृत-चित्र।
10. एम ई ए मंत्रालय के सौजन्य सँ 'भारत के शहीद' 'martyr of India' वृत-चित्र-5 एपिसोड के निर्माण।

(E) नाटक लेखन एवं प्रसारण

क्र. सं.	कृति	श्रेणी	प्रसारण
1.	घड़ी	हास्य नाटिका	आकाशवाणी पटना
2.	मालिक	हास्य नाटिका	आकाशवाणी पटना
3.	गुरु गुड़, चेला चीनी	हास्य नाटिका	आकाशवाणी पटना
4.	सिंहासन बत्तीसी (कुल 34 एपिसोड)	ऐतिहासिक फिक्शन	आकाशवाणी पटना
5.	पेंच-उधार	हास्य नाटिका	आकाशवाणी पटना
6.	माँटी का गन्ध (हिंदी संगीत सभा)		आकाशवाणी पटना
7.	काठक पुतहु चानीक समधि	पदय नाटिका	आकाशवाणी पटना
8.	उत्तर विद्यापति	नाटका	आकाशवाणी पटना

विशेष द्रष्टव्य :

श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर द्वारा लिखित एवं निर्देशित नाटक जीरो माइल, एक दिन एक राति, टू लेट, 'एक मिनट की रानी' (हिंदी) आदि नाटक के मंचन मिथिलांचल सहित बिहार के कई जिलों एवं अनुमण्डल स्तर पर कयल गेल, जकर प्रशंसा सर्वत्र पसरल अछि।

पत्रकारिता के क्षेत्र मे योगदान :

1. स्तम्भकार-मिथिला मिहिर(साप्ताहिक)-सुर-सुर-मुर-मुर
2. स्तम्भकार-(आर्यावर्त, हिंदी दैनिक) गोनू गवेषणा
3. मुख्य सलाहकार सम्पादक-हिंदी मासिक-संपादक-(धर्मयुग प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित)
4. मुख्य सलाहकार सम्पादक-भवदीय प्रभात-(हिंदी दैनिक) (भू भारती मीडिया प्रा. लि. नई दिल्ली)

सामाजिक कार्य :

1. सेवा निवृत्ति के पश्चात् महाकाली कन्या उच्च वि. धमदाहा (पूर्णियाँ) क स्थापना जे आब सरकार द्वारा प्रोजेक्ट स्कूल में अधिग्रहित अछि।
2. नाट्य संस्था 'रंगलोक' क पटना में स्थापना।
3. संगीतायन संगीत महाविद्यालय के नोएडा में स्थापना जाहि सँ करीब 2000 छात्र/छात्रा डिग्री प्राप्त कयलनि।
4. A.A.U इंटर कॉलेज, आदित्यपुर, जमशेदपुर (झारखण्ड)क स्थापना।
5. मैथिलीक संविधान आतम अनुसूची मे स्थान हो ताहि लेल सभ दिन संकल्पित आ समर्पित रहलाह।
6. बेरोजगार युवक-युवती के संगीतक शिक्षा लेलाक उपरान्त रोजगार प्रदान करय मे सभ दिन सहयोग कयलनि।

सम्पूर्ण देश मे मोटा-मोटी दस हजार सँ अधिक मंच पर अपन प्रस्तुति द.अभिनव विद्यापति आ कवि चूड़ामणि मधुप जी जकाँ लोकप्रियता प्राप्त कयलनि।

एहि कालखण्ड मे हिनका लोकनिक संग हमहू सम्पूर्ण देश मे मैथिली मंच पर मंच संचालन करब प्रारम्भ कयलहुँ।

(F) वर्ष 1980 मे राष्ट्रीय बचत पदाधिकारीक रूप मे झंझारपुर अनुमण्डल में पदस्थापित छलाह। ताहि समय मे हमहूँ ओतहि पदस्थापित रही। जखन झंझारपुर आबथि अधिक काल हमरे आवास पर रहथि। ओहि वर्ष हम सभ मिथिला सांस्कृतिक गोष्ठी, झंझारपुरक तत्वाधान मे वृहत स्तर पर एम.पी. रिबड़ेबाल स्कूल मे विद्यापति स्मृति पर्व समारोहक आयोजन कयने रही। एहि कार्यक्रमक उद्घाटन तत्कालीन मुख्य मंत्री ड०द्र जगन्नाथ मिश्र कयने छलाह। श्री शुभकीर्ति मजुमदार, भा.प्र.से. अनुमण्डल पदाधिकारीक रूप में पदस्थापित छलाह जिनक सहयोग आ स्नेह सभ दिन मोन रहत। गीतकार रवीन्द्र जी हमरा संग आयोजन समिति मे छलाह, जिनकर अथक परिश्रम आ सहभागिता सँ कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न भेल। तकर बादे गीतकार रवीन्द्र जी स्वैच्छिक सेवा निवृति लऽ 'ममता गाबय गीत' सिनेमाक काज मे लगबाक लेल मुम्बई विदा भऽ गेलाह।

आब ई सिनेमा, नाटक, मंच आ करोड़ों श्रोता के छोड़ि अन्तिम यात्रा पर दिनांक 18 मई 2022 के निकलि गेलाह। मुदा ओ अपन कृतित्वक कारणे सभ दिन हमरा लोकनिक मध्य जीविते रहताह।

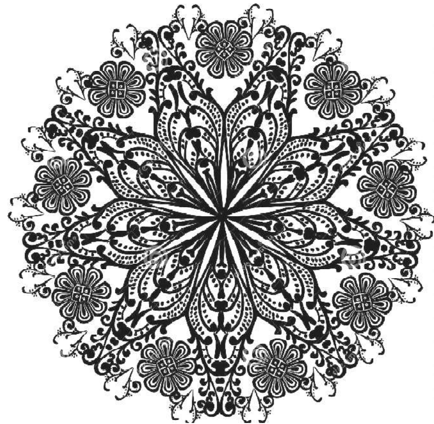
हम मिथिलावासी, विद्यापति सेवा संस्थान आ अपना दिशि सँ एहि महाकवि के विनम्र श्रद्धांजलि निवेदित करैत छी हुनके प०ती सँ -

"मिथिलवासी सुनू पिहानी हम करैत छी तोरे सँ।
मिथिला केर इतिहास लिखायल, सभ दिन अगबे नोरे सँ।।"

जय मिथिला - जय मैथिली - जय भारत।

पूर्व अध्यक्ष मैथिली अकादमी,
बिहार सरकार।
आवास - मिथिला कॉलनी, लक्ष्मीसागर, दरभंगा
मो. नं. - 9110087038

■



मैथिलीक सुच्चा सेवक छलाह डॉ. उमाकान्त!

✍ दिलीप झा, मधुबनी

डा. उमाकान्त माने मैथिली चर्चित व्यंग्य लेखक, मैथिली हितक लेल सतत संघर्ष केनिहार एकटा एहन सेनानी जे मान-अपमानक बिनु कोनो परबाहि कयने निरंतर मैथिलीक काज करैत रहलाह। नीजी जीवनमे अनेक त्रासदीकें झेलैत रहलाह तथापि मैथिलीक काजसँ कहियो विराम नहि लेलनि। से उमाकान्त 6 जनवरी 2022 कऽ गोलोकवासी भय गेलाह। ओना तं हुनक जीवनक अधिकांश भाग दरभंगामे बितलनि मुदा उतरार्द्ध मे ओ मधुबनी रहय लगलाह। जहिया दरभंगा रहथि सामान्य परिचय रहय, दैनिक जागरणमे हिनक 'अपन बात' नामक कालम पढ़ैत रही। जागरणमे हिनक कालम पढ़ि हिनकासँ भेट करबाक इच्छा होइत रहय मुदा ताहि दिन हिनकासँ नीकसँ परिचय पात नहि रहय। मधुबनी रहय लगलाह तँ हिनका सँ नीक सँ परिचय भेल आऐर विशेष सान्निध्य सेहो भेटल। मैथिलीक एकटा समर्पित ओ संघर्षशील सेनानीक हिनक यक्तित्व हमरा आकर्षित करैत छल से हिनक सान्निध्य प्राप्त करबाक हम चेष्टा करैत रहैत छलहुं। ओ मैथिली साहित्यिक सांस्कृतिक समिति, मधुबनी गोष्ठी सभमे अबाय लगलाह, कएकबेर अपना आवासपर सेहो गोष्ठी आयोजित केलनि। ओ मैथिली कार्यक्रयक प्रति सदति उत्साह बढ़बैत रहैत छलाह।

मैथिली साहित्य संसारमे किछु एहन विरल व्यक्तित्व भेलाह जे साहित्य सेवाक संग-संग साहित्य ओ भाषाक प्रचार-प्रचारमे बहुत मनोयोगसं काज करैत रहलाह तेहने साहित्यकारमे सँ छलाह डा.उमाकान्त। मैथिली आन्दोलनक मशाल जरैत रहय ताहि लेल संकल्पलोक, लहेरियासराय सन मैथिली संस्थाक स्थापना केलनि ओहि संस्थाक महासचिवक रुपमे विद्यापति समारोह सहित अनेक आयोजन कऽ दरभंगामे मैथिलीक अभियानकें जीवंत रखलनि। दरभंगामे मैथिलीक कोनो कार्यक्रम हुए, मैथिलीक आन्दोलन हुए उमाकान्त बाबू सक्रिय भागीदारी करैत रहलाह अछि। दरभंगाक विद्यापति सेवा संस्थानक स्थापनामे हिनक महत्वपूर्ण भूमिका छलनि। डा.उमाकान्त विद्यापति सेवा संस्थान द्वारा प्रकाशित स्मारिका 'अर्पण'क निरंतर 21बर्ष धरि संपादन कयलनि। संगहि 1997सँ 2003 धरि मिथिला महोत्सव स्मारिका, समिधा (जनजागृति मंच, नई दिल्लीक स्मारिका) आओर 2001सँ 2008 धरि मिथिलांचल सम्पर्क मासिक पत्रिकाक संपादन कयलनि। स्मारिका आओर पत्रिकाक संपादनक संग ओ लेखक निर्माणक भूमिकामे सेहो रहैत छलाह। ओ अनेक महत्वपूर्ण लोककें लेखन करबाक लेल प्रेरित करैत रहलाह से कैक लेखक अपन संस्मरण मे लिखलनि अछि। मैथिलीक महत्वपूर्ण उपन्यासकार केदारनाथ चौधरी हमरा स्वयं कहलनि जे हमरा लेखक बनेबामे डा. उमाकान्तजीक महत्वपूर्ण भूमिका छनि। नब आ युवा तूरकें विशेष रुपसँ प्रेरित करैत छलाह। कोनो लेखक जे हुनका पुस्तक हस्तगत करबैत छलखिन तँ ओ आद्योपांत पढ़ैत छलाह पछाति पत्र या टेलिफोनसँ पोथीपरअपन ठाहि-पठांहि प्रतिक्रियासँ अवगत करबैत छलाह। मुंह देखि मुंगबा परसब हुनका स्वभावमे नहि छलनि। ओ अपन लेखकीय धर्मक सदति निर्वाह करैत रहलाह से एहन स्वाभिमानी मैथिली सेवीक रुपमे हिनक व्यक्तित्व सदति अपना दिश घिचौत रहल। ओ अभियानी लोकक लेल सदति प्रेरणादायी रहताह।

बात 2013-14 के अछि उमाकान्त बाबू कहलनि जे हम 'प्रस्थान' नामसँ एकटा उपन्यास लिखलहुं अछि। बहुत खुशी भेल। फेर कहलनि जे एहि उपन्यासक प्रकाशन मैथिली साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समिति, मधुबनी करय से हमर इच्छा अछि। समिति दिशसँ प्रसन्नता व्यक्त कयल गेल आओर समिति द्वारा हिनक एकमात्र उपन्यास प्रकाशित कयल गेल। प्रस्थान नामक हिनक ई उपन्यास बेस चर्चित भेल। एहि उपन्यासक कथावस्तु भगवान श्रीकृष्णक जीवनक उत्तरार्द्धक कथा अछि। एहि उपन्यासमे यादववंशक कोना विनाश होइत अछि आओर फेर कृष्णक कोना अंत होइत छनि कोना कृष्ण जरा नामक व्याधाक तीरसँ मारल जाइत छथि ताहि कथावस्तुक बहुत नीकसँ अनुशीलन कयलनि अछि लेखक। संगहि बहुत रोचक ढंगसं कथावस्तुक विश्लेषिण कऽ उपन्यासक रुपमे अनलनि अछि। मैथिलीमे महाभारत महाकाव्यक एहि पक्षपर एहन विलक्षण उपन्यास शाइत दोसर नहि अछि। उमा बाबूकें प्रस्थान उपन्यासपर मैथिल समाज रहिका द्वारा 'किरण पुरस्कार'सँ सम्मानित कयल

गेलनि। मैथिली उपन्यास मैथिलीक महत्वपूर्ण उपन्यास अछि।

उमाबाबू अपन हास्य-व्यंग्य रचना 'बाबाक विजया', अपन बात, बाबाजीक बिआह क लेल खूब चर्चित भेल छथि। हिनक 'यथार्थ' कथा-संग्रह, सीता-नामक नाटक सेहो प्रकाशित छनि। हास्य ओ व्यंग्य हिनक जीवनक अभिन्न अंग छलनि। हुनका जीवनमे अनेक दुखदायी घटना घटलनि, जे जीवनकें त्रासद बना देलकनि। तकर बादो ओ हास्य-व्यंग्य कें नहि छोड़लनि। ओ हास्य-व्यंग्य लिखैत रहलाह, पत्रिका सभमें छपैत रहल। एकटा लेखकक काज छैक अपन नीजी दुखकें अनठाबैत समाजक बातकें सुधी पाठकक सोझां लाबय से उमाबाबू अपन लेखकीय दायित्वक निर्वहनमे कतहु कमी नहि कयलनि। जहां धरि हमरा ज्ञात अछि हुनक कैकटा कथा आओर एकटा अपूर्ण उपन्यास अप्रकाशित रहि गेलनि से दुखक बात।

उमाकान्त बाबू युवा सभकें साहित्यमे आनल जाय, हुनका सबकें उत्साहित, प्रोत्साहित कयल जाय ताहि हेतु और सोचौत रहैत छलाह। हुनके प्रस्तावपर युवा साहित्यकार सभकें प्रोत्साहित करबाक लेल मैथिली साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समिति, मधुबनी 'नवहस्ताक्षर पुरस्कार' आरंभ कयलक जे अद्यावधि चलि रहल अछि। आइ मैथिली जगतमे ई पुरस्कार युवा साहित्यकार लोकनि लेल प्रेरणाक काज कश रहल अछि। ई उमाकान्त बाबूक देन छनि। एहि पुरस्कार संचालनमे अपना पेंसनसँ आर्थिक योगदान सेहो करैत रहलाह।

डा. उमाकान्तक जन्म17जनवरी 1945कऽ ढंगा-मजरही (कलुआही) गाममे भेल छलनि। नेनपनेसँ हिनक जीवन संघर्षपूर्ण रहलनि। जखन ई दस बर्षक रहथि तहिये हिनक पिताक देहावसान भऽ गेलनि। माय कहुनाकऽ पढ़ेलखिन लिखेलखिन, से उमाकान्त बाबू जीवनक संघर्ष पथपर आजीवन संघर्षरत रहलाह। ककरोसं अरारि नहि केलनि मुदा जीवनसँ हारि नहि मानलनि। हुनक निधनपर हुनक नेनपनक संगी श्री कामेश्वर लालदास लिखलनि, ''उमाबाबू स्वनिर्मित रथपर आरूढ़ भऽ समस्याक सोंझा कहियो ठेहुन नहि रोपलनि।''

से ठीके पथ निर्माण विभागमे अपन पहिल नौकरी आरंभ कयलनि। मात्र मैट्रिक पास उमा बाबू उच्च योग्यता हासिल कयलनि प्राध्यापक भेलाह। साहित्यजगतमे अपन फराक स्थान बनौलनि। नीजी जीवनमे बहुत सरल ओ सहज छलाह उमाबाबू। पहिराबा ओढेबा एकटा साधारण मैथिलक जे छैक सैह रहैत छलनि हाफ कुर्ता ओ साधारण खादी ध ोती। भले उमा बाबू नहि छथि मुदा हुनक कीर्ति सदति अमर रहतनि। 'कीर्ति यस्य स जीवति'। हिनक ग्रामीण आओर कवि अरुण कुमार लालदास हिनका सम्बन्धमे ठीके लिखलनि अछि।

'लोक तँ सड़को पर मरैत अछि,
स्वाभिक मृत्यु सेहो
मुदा ककरो मोनमे पइस कऽ जे मरैत अछि
ओ मृत्यु ओकरा बनबैत छैक खास।'

तखन मैथिलीजगत ओ मिथिलावासीक जे असल स्वाभाव अछि से हुनको संगे भेलनि। एतय काज करैवलाकें कहियो उचित सम्मान नहि देल गेलैक।से हुनको संगे भेलनि। यात्रीजी ओहिना नहि लिखलनि मिथिलाक प्रसंग जतय 'बानर भालू कचरय पान/जतय उल्लूक होइछ चुमाओन से एतय अदौसँ होइत रहल अछि तें दुखक कोनो बात नै। मैथिलीक लेल, मिथिलाक लेल काज करैवला काज करैत रहय आओर सम्मान पुरस्कार लूझैवला सम्मान पुरस्कार लुझैत रहय इएह नियति छैक मैथिली भाषाक।

एहत अप्रतिभ वातावरण रहलाक बादो इएह कामना रहत जे मैथिलीक डेग कहियो पाछां मुहे नहि जाय। ताहि यत्नमे हमरा लोकनि लागल रही इएह उमाबाबूक प्रति सत्य श्रद्धांजलि होयत।



'स्व० शंभूनाथ झा : व्यक्तित्व व कृतित्वक दृष्टावलोकन''

✍ ओंकार नाथ झा

सर्वविदित अछि जे समाजमे वएह व्यक्ति अपन व्यक्तित्व व कृतित्व द्वारा यशस्वी होएत छथि जिनक अहर्निश सेवा तत्कालीन, वर्तमान तथा आबयवला संततिके परिवार, समाज, राष्ट्र तथा वैश्विक मंच पर अमिट छाप छोड़ैत ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' सदृश पवित्र चिंतन द्वारा उदाहरण प्रस्तुत करैत विभूति केर रूपमे परिगणित होएत छथि। जखन हमरालोकनि अपन चिंतनकें मिथिलाक संदर्भमे अवलोकित करबाक लेल उद्यत होयत छी डेग-डेग पर एहेन विभूतिक जीवन-गाथा सहजहिं हमरा सभक लेल प्रेरणापुंज बनि चित्त आर चेतनाकें गौरवान्वित कराबैत अछि। सर्वमान्य सिद्धांत छैक जे पंचभूत निर्मित शरीरक अवसान होएत अछि मुदा स्मृतिक रूपमे महापुरुषक जीवन-दर्शन आबयवला पीढ़ीक लेल आदर्शक प्रमुख आधार बनैत अछि। आलेख केर माध्यमें चर्चा करब एक एहने विद्या-विभूति सम्पन्न व्यक्तित्वक विषयमे जिनक विद्वता, सहृदयता, आध्यात्मिकता तथा प्रगतिशील समाज निर्माणक प्रति समर्पणक श्रेष्ठतम भाव स्पष्टतः देखल जा सकैत अछि। दरभंगा जिलान्तर्गत निकाशी ग्राम निवासी स्वद्व शंभूनाथ झा जीक विषयमे चर्चा करब जे एक गुरू, शिक्षक तथा मार्गदर्शक केर रूपमे सर्वश्रेष्ठ योगदान दैत समाजमे यशस्वी भेलाह।

स्व. शंभूनाथ झा जीक जन्म दरिभंगा जिला स्थित निकाशी गाममे 15 जनवरी, 1934 ईस्वीमे भेल छलनि। हिनक बाबूजी स्व. नन्द किशोर झा ख्यातिप्राप्त वैद्यराज तथा कर्मकांडक प्रतिष्ठित ज्ञाता छलाह। हिनक विशिष्टतासँ प्रभावित भै संस्कृत मिथिला विश्वविद्यालय, दरिभंगा, पारितोषिक केर रूपमे प्रतिमाह मानदेय द्वारा सम्मानित करैत छल। अपन बाबूजीक विद्वता तथा सहृदयताक प्रत्यक्ष प्रभाव स्व. शंभूनाथ झा जीक जीवनमे स्पष्टतरू परिलक्षित होएत छल। बाल्यकालहिंसँ शिक्षाक प्रति लगाव तथा झुकाव हिनक शैक्षणिक पिपासाकें तृप्त नहि कै सकल बल्कि नित्य नवीन पाठ्य-चिंतनक प्रति जिज्ञासु बनाबैत रहल। परिणामस्वरूप अंग्रेजी तथा भूगोल दू विषयमे एम.ए. उत्तीर्ण कय शैक्षणिक सफलता प्राप्त कयलनि। चूँकि बचपनसँ शिक्षा प्रति झुकावक अतिरेकताक परिणामस्वरूप विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्तिक उपरान्त पठन-पाठनक क्षेत्रके भविष्यक मुख्य आधार बनौलनि। ई परिकल्पना यथार्थरूपें साकार भेल तथा देवनारायण उच्च विद्यालय, पंचोभमे (दरभंगा) सहायक प्रधानाध्यापक केर रूपमे पदस्थापित भेलाह। सहायक प्रधानाध्यापक केर रूपमे देल गेल अमूल्य सेवा ओहि क्षेत्रक जनमानसकें तथा विशेष कय पंचोभ ग्राम निवासीकें हृदयमे अमिट छाप छोड़लक। जखन दोसर विद्यालय अर्थात् समस्तीपुर जिलान्तर्गत मुक्तापुर उच्च विद्यालयमे स्थानांतरण भेलनि, पंचोभ निवासी हिनका द्वारा देल गेल सेवाकें सम्मानपूर्वक स्मरण करैत व्यथित भेलाह। जाहि दिन मुक्तापुर लेल प्रस्थान कयलनि सगर पंचोभ निवासी वृद्ध, नौजवान, बच्चा/बच्चिया सभक नेत्र सजल आर नोरायल छल। अश्रुपूरित नोर द्वारा अपन हृदयस्थ गुरूवरकें विदाई देलनि। पश्चात मुक्तापुर विद्यालयमे सहायक प्रधानाध्यापक केर रूपमे सेवा प्रदान करैत तथा प्रोन्नति प्राप्त कय प्रधानाध्यापक पदके सुशोभित कय विद्यालयसँ अवकाश प्राप्त कयलनि। लगभग बत्तीस वर्ष शैक्षणिक जीवनमे देल गेल अहर्निश व बहुमूल्य योगदान हिनकर जीवनक स्वर्णिमकाल केर रूपमे सदैव स्मरण कएल जाएत। इएह कारण छल जे शिक्षा क्षेत्रमे निर्गत योगदानक आधार पर शिक्षा विभाग, शिक्षक संघ केर माध्यमें हिनक सेवा प्राप्त कय शिक्षकक मुलभूत समस्याक समाधान करेबाक निर्णय लेलक। परिणामस्वरूप हिनका द्वारा कयल गेल योगदानक चर्चा हिनक सहकर्मी शिक्षकगण मुक्तकंठसँ करैत आह्लादित होएत छथि।

एक शिक्षक केर रूपमे छात्र/छात्राके शैक्षणिक शिक्षा प्रदान करेबाक अतिरिक्त संस्कारोचित्त ज्ञान प्राप्तिक प्रति साकांछ रहब हिनक मूल उद्देश्य छलनि। हिनक सामिप्यतामे सैकड़ों छात्रगण श्रेष्ठ तथा उत्तम शिक्षा प्राप्त कय सम्प्रति भव्य जीवनयापन कै रहला अछि। निर्धन तथा आर्थिक विपन्न छात्रक जीवनमे शिक्षारूपी संस्कार द्वारा ज्ञानक रश्मि-किरण आलोकित होएत रहय ई सोचि लगभग बीस विद्यार्थीके अपना संग राखि भव्य भविष्यक निर्माणक बीजारोपण करबौलनि। शिक्षा आओर शिक्षा क महत्व सं प्रेरित भय मधपुर स्कूलक स्थापना एवं सहयोग दय समाजक कल्याण हेतु सदैव अग्रसर रहलाह हिनक सामाजिक, धार्मिक तथा खेलकूदक क्षेत्रमे देल गेल योगदान सदैव वरेण्य रहत। मिथिलामे दहेजक समस्या जटिल अछि। हिनका द्वारा सामाजिक जीवनमे दहेजक विरूद्ध कयल गेल भूमिकाके कदमपि विस्मृत नहि कयल जा सकैत अछि। अपना खर्चासँ दस कन्याकें योग्यतानुरूप नीक परिवारमे कन्यादान करायब, सामाजिक सेवाक उत्कृष्ट उदाहरण किंचित नहि देखल जा सकैत अछि। एतबहिं नहि गामक रेलवे स्टेशनक समीप बजरंगवली मंदिरक स्थापना कय आध्यात्मिकताक अलख जगेबाक भावना स्तुत्य अछि। मिथिलाक सर्वांगीण विकासक प्रति हिनक तितिक्षा यथा समयानुकूल प्रगति, समान रूपें समाजक सभ वर्गके विकासक लाभ सहजतापूर्वक भेटनि, एहि लेल सदैव मुखर रहैत छलाह। मिथिला, मैथिली एवम् मैथिलक प्रति समर्पित सामाजिक संगठन ''विद्यापति सेवा संस्थान''

सँ जुड़ाव हिनका अपन मातृभूमिक प्रति प्रेमक प्रकटीकरण करबाक आकुलता अन्यक लेल अनुकरणीय अछि। स्व. शंभूनाथ झाजी फुटबॉल व वॉलीबॉलक अनन्य प्रेमीक संग स्वयं नीक खिलाड़ी सेहो छलाह। फुटबॉल खेलबाक लेल दोसर गाम वा अन्य जिला स्तर पर बोरो बनि भाग लैत छलाह। जावत् धरि शिक्षा क्षेत्रसँ जुड़ल रहलाह विद्यालयक विद्यार्थीकें फुटबॉल खेलबाक लेल प्रेरित करैत रहैत छलाह। हुनका विषयमे कहबामे रंचमात्रहुँ संकोच नहि जे अपन जीवनक अवधिमे सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक तथा सेवाक उत्कृष्ट कार्य सम्पादन हेतु स्वयंकें समर्पित करैत, आबयवला पीढ़ीक समक्ष विलक्षण आदर्श स्थापित कयलनि।

मैथिलीमे अनेकों रचना हिनक रचनाधर्मिता तथा सृजनशीलनाक आधार रहल अछि। हिनक मुख्य रचना "पर्यायवाची शब्द कोष" कें विस्मृत कयल जा सकैत अछि? कतिपय रचना द्वारा समाजमे व्याप्त विषमताक जीवंत चित्रण हिनक विद्वताक प्रत्यक्ष बखान स्वतरू करैत अछि। उदाहरणस्वरूप हिनक एक रचना जेकर शीर्षक अछि "शब्द-ब्रह्म" ताहिसँ किछु पांती उद्घृत करय जा रहल छी। शब्दके ब्रह्म कहल गेलैक अछि। ताहिकें रचनाबद्ध करैत लिखैत छथि-

शब्द थिक अनादि,
हद छैक नञि एकर,
शब्दे थिक ब्रह्म
शब्दे हरि, शब्द शंकर।।

वर्णमाला निर्मित ई
अर्थभावक द्योतक,
नीक वा अनीक
उभय पक्षक सम्पोषक।।

शब्दहिं सँ मेल आओर
शब्दहिं सँ झगड़ा,
शब्दहिं सँ हँसी खुशी
शब्दहिं सँ रगड़ा।।

व्याकरणक दृष्टिकोण तथा शब्दक संयोजनक अद्भूत गठजोड़के उदाहरण केर रूपमे प्रस्तुतिकरण हिनक विद्वताक केर माध्यमें देखल जा सकैत अछि। दुर्गासप्तशतीक तेरहों अध्याय हिनक कंठमे वास करैत कंठस्थ छलनि। अनेकों सामयिक विषय पर हिनक रचना उत्प्रेरक बनि सामाजिक क्षेत्रमे नवजागरणक उत्स प्रदान कराबैत आबि रहल अछि।

अपना पाँछा सुन्दर, सुशिक्षित, प्रज्ञावान, संस्कार सम्पन्न तथा सामाजिक सेवाक प्रति सदैव समर्पित परिवारक आधार-स्तम्भ केर रूपमे पिताधर्म तथा अभिभावक धर्मक उदाहरण प्रस्तुत कयलनि। पाँच प्रज्ञावान संतान हिनका जीवनक अनमोल गहना छिएन्हि। चारि पुत्र तथा एक पुत्री हिनक पदचिन्हक अनुरागी बनि सुखपूर्वक पारिवारिक मर्यादाकें अनुपालन करैत प्रगति तथा सुगति पथ पर अग्रसर छथि। जीवनक अंतिम समयमे परिवारकें सभ प्रकारें स्वावलंबी बनाय, स्वयंकें परमात्माक प्रति शरणापन्न करैत विशेष समय आराधना-उपासनामे व्यतीत करैत छलाह। हिनक शुभ्र, सौम्य, सरल तथा सुरभियुक्त मुखमंडलक आभा बहुआयामी व्यक्तित्वक सौरभवता सहजरूपें सभके अपना दिश सहजहिं आकर्षित करैत छल। प्रकृतिक नियमानुसार समयक पहिया निर्धारित लक्ष्य दिश आगु बढ़ैत रहल। पारलौकिक यात्राक समय शनैः शनैः लगीच आबय लागल। उम्रक प्रभाव शरीरके दुर्बल आ कमजोर बना देने छलन्हि। संभवतः विधाताक विधानमे परम प्रस्थानक समय नजदीक आबि गेल छल। अंततरू ओ दिन आबिये गेल। 13 जनवरी, 2022 कें अपन पैतृक गाम निकाशीमे मैथिलीक अनन्य सेवक, भगवती शारदाक वरद् पुत्र, समाजक विभूति, सैकड़ों विद्यार्थीक मार्गदर्शक अपना पाँछा विपुल परिवार समेत समाजके शोकाकुल करैत हमेशाक लेल एहि धराधामसँ महाप्रस्थान कएलनि। जाहिठामसँ कियो घुरि वापस नहि अबैत छथि। हिनक महाप्रस्थानक समाचार सुनितहिं सर्वत्र शोकक लहड़ि पसरि गेल। परिवारक अभिभावक, समाजक रत्न विधाताक शरणापन्न भेलाह। हे महामना ! अहाँ भलेहिं पंचभौतिक स्वरूपमे उपस्थित नहि छी मुदा एक चेतनाक रूपमे अप्रत्यक्षतः अपनेक आशीर्वाद, मार्गनिर्देशन तथा करूणा सदैव परिवार तथा समाजके उत्स प्रदान करैत रहत। विभूति अपन त्यागमय जीवन-दर्शन तथा चेतना केर रूपमे सदैव उपस्थित भै अपन संततिकें दुलार-मलार करैत रहैत छथि। ब्रह्मलीन स्वद्र शंभूनाथ झा जीक चरण-कमलमे नित्य वंदन-स्तवन निवेदित करैत तथा भाव-विभोर होइत शून्य आकाशकें निहारैत अपनेक दिव्य आर मधुरमय स्मृतिके मूल निधि केर रूपमे स्मरण करैत नोरायल नोर द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करैत छी।



मिथिलाक अनुपम विभूति प्रो0 राज किशोर झा

✍ डॉ0 राज किशोर झा

लोक अबैत छथि एहि पृथ्वी पर आ चल जाइत छथि। मुदा किछु एहन व्यक्ति होइत छथि जे अपन स्मृति समाजक मानस-पटल पर छोड़ि जाइत छथि।

प्रो0 राज किशोर झा पूर्व कुलपति ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा एहि धरा धाम कें छोडि गत 4 सितम्बर 2022 के चल गेलाह मुदा अपन स्मृति संपूर्ण मिथिला मे छोडि गेलाह। हमरा मोन अछि हुनक कहल गेल वाक्य 'जे नौकरी मे ज्वाइन करैत छथि हुनका एक दिन अवकाश सेहो ग्रहण करऽ पड़ैत छन्हि। ई वाक्यांश हुनकर स्वयं के द्वारा कहल गेल अछि हुनकर स्वंय के अवकाश ग्रहणक अवसर पर ल0ना0मि0 विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित सेमिनार 'जी0एस0टी0 एन्ड इन्डियन इकॉनामी' दिनांक 30 अगस्त एवं 31 अगस्त 2017) कें।

विदित हो जे प्रो0 झा 31 अगस्त 2017 कें अवकाश ग्रहण कयलन्हि आ ओहि अवसर पर तात्कालिन माननीय कुलपति प्रो0 सुरेन्द्व कुमार सिंह आ अर्थशास्त्र विभागक प्रो0 राम भरत ठाकुर, प्रो0 हिमांशु शेखर, प्रो0 विजय यादव एवं पैघ संख्या में छात्र-छात्रा एवं शिक्षक वर्गक बीच हुनकर भव विदाइ समारोह भेल छल। एहि सुअवसर पर हमहूँ सप्तनीक उपस्थति रही।

प्रो0 झा मिथिलान्तर्गत बेगूसराय जिलाक वीरपुर गाामक छलाह। हिनकर जन्म 11 अगस्त 1952 क भेल छल। हिनकर शिक्षा-दिक्षा मुजफ्फरपुर मे भेल कारण हिनकर पिता प्रो0 शभूदत्त झा हिन्दी क प्राध्यापक बिहार विश्वविद्यालय मे छलाह बाद में ओ ल0ना0मि0 विश्वविद्यालय मे सेहो प्राध यापक भेल छलाह हिन्दी विभागक अध्यक्ष पद सँ सेवा निवृत भेलाह। विदित हो जखनि प्रो0 राजकिशोर बाबू बिहार विश्वविद्यालय मुजफरपुर मे अध्ययनरत रहैथ ओहि समय मे ओहि ठामक कुलपति प्रो0 नागामणी रहाथि। बिहार लोक सेवा आयोग सँ चयनित भऽ 1973 ई0 में राज किशोर बाबू सर्वप्रथम सी.एम. कॉलेज, दरभंगाक अर्थशास्त्र विभागक व्याख्याता पद पर सुशोभित भेलाह। बाद मे स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभागक अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान संकायकर डीन। आदि महत्वपूर्ण पद कें सुशोभित कालन्हि। विश्वविद्यालयक विभागाध्यक्षक नाते विश्वविद्यालय एवं दरभंगा जिलाक अनके विकास कार्यक समितिक सदस्य सेहो रहलाह। अपन शोध पर्यवेक्षण मे दर्जनों शोधार्थी कें विभिन्न आर्थिक विषय पर मार्गदर्शन कयलन्हि। हिनका पर्यवेक्षण मे मखान, उद्योग, अवसंरचना, दरभंगा जिलाक बाढ़िक समस्या आदि विषय पर अपन मार्गशन शोधार्थी सम कें प्रदान केलेन्हि इ एहि बातक प्रमाण अछि जे श्रीमान् मिथिला क्षेत्रक विकासक लेल सतत् प्रयत्नशील रहलाह।

प्रो0 झा धर्म परायण, अनुशासनप्रिय, विधि सम्मत निर्णय लेनिहार आ छात्र-शिक्षक हितैषी छलाह। ओ महादेवक भक्त छलाह आ प्रतिदिन ईश्वरक अराधनाक उपरांत अपन दैनिक कार्य मे रत होइत छलाह।

कर्तव्यपरायणताक मिशालक रूप मे हमरा मोन अछि जे सी.एम. कॉलेज सँ भारतीय अर्थ व्यवस्थाक वर्ग लेब ओ वास्ते स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग मे 80क दशक मे अबैत छालाह आ घंटी प्रारंभ होइतहि ओ प्रवेश करैत छलाह। आ घंटी समाप्त भेला उपरान्त वर्ग सँ प्रस्थान करैत छलाह। ओहि समय मे आकड़ाक संग्रह मे अपन विशिष्ट पहचान बनौने छलाह। ओ समय डिजिटल नई छल। शोध कयनिहार छात्र सभ कें ओ अद्यतन डाटा उपलब्ध करा बैत छलाह। चाहे शोधार्थी किनको अधीन कार्यरत हों। हुनकर दर्शनों आर्थिक लेख इकॉनोमिक टाइम्स, योजना, आदि मे प्रकाशित भेल अछि।

अवकाश ग्रहण सँ पूर्व 05.02.2017 सँ 22.03. 2017 तक ओ ल0ना0मि0 विश्वविद्यालय दरभंगाक कुलपति पद कें सुशोभित कयलाह। अपन कार्यकाल मे ओ अनेको शिक्षक आ छात्र हितक काज कयलन्हि। ओ सरल, मृदुभाषी आ अनुशासन प्रिय प्रशासक छलाह। इमानदारी हुनकर रगा-रग मे समायल छल। सम्बद्ध महाविद्यालय कें शिक्षक कें ओ फराक नहि बूझैत छलाह। हुनकर कहब छलन्हि जे सम्बद्ध महाविद्यालयक समकक्ष छथि कियैक त काज दूनू कें एक छन्हि। कुलपति कें कार्य काल मे रिजर्व बैंक अ०फ इन्डिया कें पदेन सदस्य रूप मे रिक्रूटमेंट बोर्ड मे हुनका सेहो आमंत्रित कयल गेल छल।

विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगाक महासचिव डॉ0 बैद्यनाथ चौधरी बैजू बाबूक आमंत्रण पर कई कार्यक्रम मे ओ अपन उपस्थिति प्रदान करैत छलाह। मिथिला मैथिलीक कोनों कार्यक्रम होइ आमंत्रण भेटला पर ओ अपन उपस्थिति निश्चित रूप दर्ज कराबैत छलाह। हमरा मोन अछि जे भारतक पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी अवसान दिवसर 10 अगस्त 2018 का श्रद्वांजली सभा मे बैजू बाबूक आमंत्रण पर तुरंत ऐलाह आ कहलन्हि जे अपने सभ बहुत नीक काज कयलौ।

विदित हो जो प्रो0 राज किशोर झाक परिणय सूत्र डॉ0 उषा झाक संग मधुबनी जिलान्तर्गत बनौली ग्राम मे भेल छल। सम्प्रति एक गोट पुत्र आ एकटा पुत्री दून नीक कंपनी में अभियंताक पद पर कार्यरत छथिन्ह। पुत्र मुम्बई मे छथिन्ह आ पुत्री सिंगापुर मे। पत्नी डॉ0 उषा झा, लक्ष्मी पार्वती महिला महाविद्यालय, मधुबनी सँ हिन्दीक प्राध्यापक पद सँ अवकाश ग्रहण केलीह अछि। हिनकर साढू स्व0 मदन मोहन झा (आई0ए0एस0) बिहार सरकारक शिक्षा विभागक शिक्षा सचिव छालाह। जनिक नाम पर शिक्षा विभाग, बिहार सरकार मे एकटा कक्षक सेहो निर्माण कयल गेल अछि। हिनक श्वसुर प्रो0 तृप्तिनारायण झा राजनीति विज्ञान कें एस0एस0 क०लेज, दानापुर सँ अवकाश प्राप्त शिक्षक छथि। पिता एवं श्वसुर दुनू क्रमशः 90 एवं 95 वर्षक आयु में कार्यशील छथि। छोट भाइ मुजफरपुर से जन्तु विज्ञान प्राध यापक पद सँ अवकाश प्राप्त कयने छथि।

हिनक निधन पेटक शल्य चिकित्साक उपरांत हृदयगाति बंद भेलाक कारणे मुम्बई मे भेल। शोकाकुल परिवार द्वारा हिनक मृत शरीर कें एयर एबुलेंश सँ सिमरियाघाट हिनक जन्म स्थान अनलन्हि आ गंगाकिनार मे दाह संस्कार 05 सितम्बर 2022 कें कयलन्हि।

नैंन छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चौन क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूतः।।

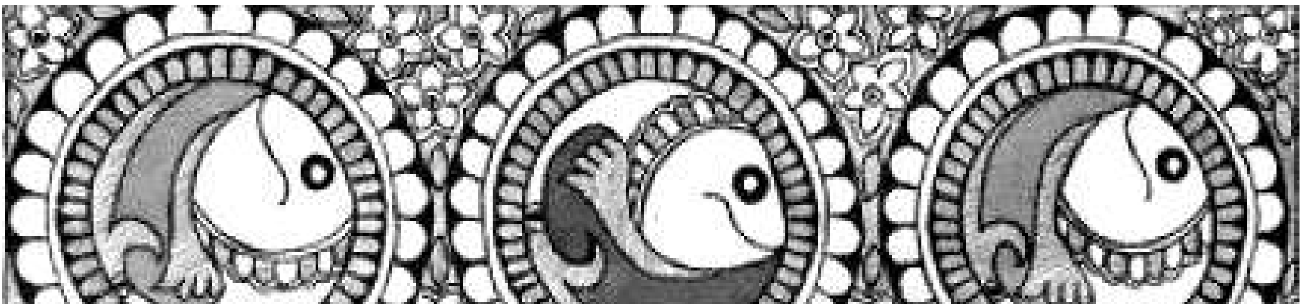
सम्पूर्ण मिथिलाक वासी अपने कें अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करैत अछि।

संदर्भ :

स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग, एल0एन0एम0यू0, दरभंगा द्वारा प्राप्त जानकारी एवं संस्मरण पर आधारित।

अध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग
एम0एम0टी0एम0 कॉजेल, दरभंगा

■



मोन मे सदैव रचल-बसल रहती मंजु दीदी

✍ डॉ. सुषमा झा

भोरका पहर फेसबुक देखबाक क्रम मे शुभंकरपुर निवासी विनोद बाबाक पोस्ट देखि सन्न रहि गेलहुँ, जे एम.एल.एस.एम. कालेजक पूर्व प्रधानाचार्य ओ संप्रति ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक पीजी अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ मंजु चतुर्वेदी जी गोलोकवासी भऽ गेलीह। ई पढ़ि अपन आँखि पर विश्वास नहि भऽ रहल छल! तुरंत प्रवीण भाई सँ फोन पर पुछबाक साहस जुटेलौं, ओहो स्तब्ध छलाह आ कहलाह जे एहन समाचार असत्य नहि होइत अछि! शायद भगवान कें सेहो नीक लोकक खगता बेसी भऽ गेल छन्हि। हम भारी मने फोन राखि मंजु मैडम संग बिताओल क्षण याद करय लगलहुँ, सभटा क्षण मन-मस्तिष्क केर स्मृति पटल पर सिनेमाक रील जेकाँ घूमय लागल।

मैडम सँ हमर पहिल भेंट एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगाक सभागार मे भेल छल। गप्प-शप्प होयबाक क्रम मे जानकारी भेल जे ई महाविद्यालय केर प्रचार्या छथि। हम सोच मे पड़ि गेलौं, जे एतेक सम्मानित पद पर आसीन रहितहु, कतेक विनम्र, शालीन, सौम्य आ सरल व्यक्तित्व केर ई मलकाईन छथि।

समय बितैत रहल, किछु समयक उपरांत हिनका सँ दोबारा भेंट विद्यापति सेवा संस्थान द्वारा आयोजित एकटा विशेष कर्यक्रमक अवसर पर भेल आ बातक क्रम मे कखन ओ ''मंजु मैडम'' सँ ''दीदी'' भऽ गेलथि से नहि जानि। किछु काल बाद संस्थानक महासचिव गार्जियनतुल्य आदरणीय बैजू बाबू हिनका उद्गार लेल दीदी कें मंच पर बजोलखिन, ओ हिंदी मे सकुचाइते बजनाय शुरू केलनि, मुदा सभक आग्रह आ प्रोत्साहन भेटला पर ओ मैथिली मे बाजब शुरू केने छलीह। धीरे-धीरे ओ मिथिला-मैथिली केर सभ मंच पर मैथिली मे बजबाक प्रयास करय लगलीह।

सभ भाषाक एकसमान रूप सँ सम्मान करय वाली मंजू दीदी अँग्रेजी विषयक प्राध्यापिका रहितो मैथिलीक सम्मानक लेल हर परिस्थिति मे तैयार रहैत छलीह। एहन मैथिली प्रेम देखबा मे कम भेटैत अछि। मैथिली केर उन्नयन लेल सदैव निश्छल भाव रखैत सब सँ आगा रहैत छलीह। जाहिमे हुनक पति आदरणीय डॉ ऋषिकेश पाठक जी सदिखन दीदीक उत्साहवर्द्धन करैत रहैत छलाह।

हमरा दुनू गोटाक भेंट अक्सर कोनो ने कोनो कार्यक्रम मे भऽ जाइत छल। एकटा घटना मोन पड़ैत अछि- मिथिला-मैथिलीक कार्यक्रम छल, जाहि मे हम मंच संचालन कऽ रहल छलहुँ, अन्य अतिथिक संगहि मंजु दीदी सेहो मुख्य अतिथिक रूप मे मंच पर विराजमान छलीह। कार्यक्रमक समापन लेल समदाउन शुरू भेल, बीचे मे लगभग अतिथि मंच सँ उतरि गेलथि। मुदा, मंजु दीदी मंच पर असगर अंत धरि बैसल रहलीह आ मंचक मान रखलनि। हिनका सँ सदैव किछु ने किछु नव सीखबाक अवसर भेटैत छल। दीदी कहैत रहथिन, ''मंचक एकटा मर्यादा होइ छै, जकर अपमान करबाक अधिकार किनको नहि छैन। मुदा, हम तऽ सिर्फ अपनेटा के भागी छी।''

धीरे-धीरे दीदी संग एकटा आत्मीय सम्बंध स्थापित भऽ गेल। हमरा दुनू बहिन केर बीचक प्रेम सभ भेंटघाँटक बाद बढ़ैत गेल। दीदी बातचीतक क्रम मे सदिखन अपन लहजा मे कहथिन, ''सुषमा जी, दुनिया मे हर इंसान बराबर छै। प्रेम सँ बढ़ि के कुछो नय छै। सबके मिलि-जुलि के रहबाक चाही आ एक-दोसरक सम्मान व सहयोग करबाक चाही। ताहि मे ना मिथिला-मैथिलीक सम्मान होतै।''

व्यक्तिगत रूप सँ हमरा हुनका सँ छोट बहिन जेकाँ स्नेह भेटल। जखन कहियो भेटैत छलीह तऽ कहैत छलीह- ''हे अहाँ बड़ निम्मन गबैत छी'' हुनक ई पंक्ति सुनि और नीक करबाक इक्षाशक्ति जागृत होइत छल। मंजु दीदी सदिखन हँसैत ममतामयी वाणी सँ लोकक उत्साहवर्द्धन करैत छलीह। जतेक सम्मान ओ मंच पर उपस्थित अतिथिगण कें दैत छलखिन, ततबे मंचक नीचा सभागार मे बैसल लोक कें सेहो।

मंजू दीदी सँ अंतिम बेर भेंट माला दीदीक अभिनंदन समारोह मे भेल छल। अपना ऑफिस मे बजाकऽ उपहार स्वरूप किछु पुस्तक देने छलीह आ कहने छलीह जे पढ़ि क बतायब जे केहन लागल, मुदा ताहि सँ पहिने दीदी कालक गाल मे समा गेली!

मिथिला राज्यक स्वप्नद्रष्टा, अँग्रेजीक अधिष्ठापित प्राध्यापिका, मातृभाषा आ मातृभूमिक उपासक आ सभक लेल प्रेम भाव राखय वाली मंजू दीदी एहि धरतीकें छोड़ि माँ श्यामाक शरण मे चलि गेलीह, मुदा ओ सदैव हमरा सभक याद मँ रचल-बसल रहती।

समयक संग घाव तऽ भरि जायत, मुदा हुनका संग बिताओल समय जिनगी मे फेर कहियो घुड़ि के नहि आओत।

■

संगीत केर अभूतपूर्व साधक छलाह पं. हरिद्वार प्रसाद खण्डेलवाल

✍ नवल किशोर झा

राष्ट्रीय स्तर केर एकटा महान संगीतज्ञ छलाह पण्डित हरिद्वार प्रसाद खण्डेलवाल। जिनक जन्म सन् १९५२ ईस्वीमे मिथिलाक हृदयस्थली दरभंगाक एकटा मध्यम वर्गीय परिवारमे भेल छलनि। हिनक पिताक नाम रघुनंदन प्रसाद खण्डेलवाल आ माताक नाम भवानी देवी छल। हिनक ज्येष्ठ भ्राता श्री केदार प्रसाद खण्डेलवाल जीक कहब छनि जे ई जन्महि सँ चञ्चल प्रकृतिक बालक छलाह। मुदा, संगीतक संगत आ प्रभाव ऐहन होइत गेलनि जेँ ई धीरे-धीरे गम्भीर होइत चलि गेलाह। कहि सकैत छी जे संगीतक अभ्यासआ प्रेमरसमे ओ अपना कें सर्वस्व समर्पित कऽ लेलनि। ओ अन्तर स्नातक तक शिक्षा माड़वाडी उच्च विद्यालय दरभंगा सँ प्राप्त कयलनि तऽ दोसर दिस संगीतक शिक्षा प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद आओर प्राचीन कला केंन्द्र चण्डीगढ़ सँ मास्टर डिग्री प्राप्त कयलनि। स्नातक केश्र शिक्षा बिहार विश्वविद्यालय, मुज्जफ्फरपुर सँ प्राप्त कयलनि। शिक्षा प्राप्ति केर उपरान्त सुपरवाइजर पद पर वयस्क शिक्षा, घनश्यामपुर मे योगदान दऽ कार्य प्रारम्भ कयलनि, मुदा संगीतक आगाध प्रेम केर कारण किछु सालक उपरान्त संगीत शिक्षकक पद पर उच्च विद्यालय, पंचोभमे कार्य आरम्भ कयलनि। एक कुशल शिक्षक आ संगीतज्ञ केर रूपमे सन् 2012 मे एम.आर.एम उच्च विद्यालय, दरभंगासँ सेवा निवृत भेलाह।

हिनका प्रारम्भिक संगीत शिक्षा मे प्रवेश अपन परिवार आ पूज्य पिताजीसँ भेल छलनि। ऐतबे नहि, शास्त्रीय संगीतक शिक्षा अपन पिता सँ प्राप्त कयलनि, अहि क्रममे गुणग्राही पंडित हरिद्वारजी समय अनुकुल संगीतक शिक्षा पंण्डित गणेश कान्त ठाकुर दादा गुरु रशीद खाँ आ उस्ताद मकबुल साहब (सारंगी वादक) सँ प्रमुख रूपमे शिक्षा ग्रहण कयलनि जे हिनक प्रमुख गुरू केर रूपमे सम्मानित छथिन।

ओ मृदुभाषी आ एकटा सुशील अनुशासित गायक कलाकार केर रूपमे जानल जाइत छलाह। ओ जीवन पर्यन्त छोट-पैघ सब कलाकार केर हृदयसँ प्रशंसा करैत संगीतक गुढ़ सँ गुढ़ विषय वस्तु सिखबैत रहल।

युवा हरिद्वारजी अपन गुरुजन केर आशीर्वाद सँ शास्त्रीय संगीतक ऐहन अभ्यास स्वरूप तपस्या कयलनि जेँ कम्मे वयस्कमे एकटा शास्त्रीय संगीतक मर्मज्ञ केर रूपमे ख्याति अर्जित कऽ ध्रुव तारा नक्षत्र केर रूपमे संगीत क्षेत्र मे प्रतिष्ठित भेलाह।

एक कुशल संगीत शिक्षकक संगहि मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकारक गीत एवं नाटक प्रभाग- दरभंगा, हाजीपुर, गोरखपुर, इलाहबाद। संगीत सम्मेलन-दरभंगा, भजन प्रहर, शामे-ए-गजल-पटना, मुज्जफ्फरपुर, राजस्थान हरियाणा कला पर्व समारोह, पुस्तकमेला, संगीत संध्या, संगीत सेमिनार इत्यादि कार्यक्रममे एकटा विशिष्ट व्यक्ति केर रूपमे आओर मंच पर हिनक प्रस्तुतिसँ मंच सम्मानित होइत छल। आकाशवाणी, दरभंगा आ पटनासँ हिनक कार्यक्रम निरंतर प्रसारित होइत रहल। पं हरिद्वार प्रसाद खण्डेलवाल जी हमर पत्नी डॉ सुषमा झाजी केर संगीत गुरु छलखिन। ताहि क्रममे हुनका मुख सँ मंचक अनुभव सुनबाक अबसर अक्सर भेटैत छल। एक बेरक कथा कहल जेऽ मंच पर शास्त्रीय संगीत प्रस्तुतिक क्रममे लोक पाइ दियअ लगलैन। तकलीफ सँ मंच कें प्रणाम' क' कहलखिन जेँ अहाँ सब तऽ शास्त्रीय संगीतक मंच कें आर्केस्ट्राक मंच बना देलियै। गुरुजीकें संगीतक संग खेलरपन कथमपि पसंद नहि छल, अनुशासन प्रिय, झूठ सँ नफरत आ दिखावा सँ बिल्कुल दूर उम्मीद करैत छलाह जे हुनक शिष्य लोकनि सेहो एकर अनिवार्य रूप सँ पालन करथि। हिनक छात्रा भावना माथुर, राजस्थान विश्वविद्यालय मे प्रथम स्थान अनलनि तऽ विभागाध्यक्ष आ कुलपति पुछलखिन जे केना ऐहन परिणाम त गुरुजीकेँ लिखल नोट देखेलखिन तखन हिनका अतिथि प्राध्यापकक लेल आग्रह कयल गेलनि। मुदा, ई कहला जे हम जतय संगीत सीखल ततय केर बच्चाक प्रति सेहो हमर जिम्मेदारी अछि। हम मिथिलेमे रहब। रवि खण्डेलवाल आ मनीष खण्डेलवालक अनुसारे - 'बड़का पापा संयुक्त परिवारक हमेशासँ प्रबल समर्थक रहलनि। कोनो प्रतियोगितामे भाग लेबाक इच्छा रहै तऽ कहथिन जे पूरा तैयारीक साथ जाउ नहि त' नहि जाऊ। हुनक पुत्र बिक्की केर अनुसारे पापा छोट-सँ-छोट गलती पर

हमेशा नजरि रखैत छलाह।

पं0 हरिद्वार जीक विवाह २४ मइ १९८१ ई0 कें खगड़ियाक उषा देवीक संग भेल। दू लड़का आ दू लड़की छन्हि। हिनक धर्म पत्नीक अनुसारे- हमर सौभाग्य छल जे पंडित जी सन मानवतावादी व्यक्तित्व जीवन साथी रूप मे हमरा भेटलाह। हिनक पुतोहुक अनुसार गुरुजी हिनका बेटी जेना मानैत छलखिन, बच्चा सब संगे कैरम बोर्ड, फुटबाल खेलाइत छलखिन तखन एकदम बच्चा बनि जाइत छलाह।

हिनक भाउजक अनुसार गरीब बच्चा सब कें निःशुल्क संगीत सीखाबथि आ फार्म सेहो भरवा दै छलखिन। पिताक मृत्यु उपरान्त ज्येष्ठ भायकें गुरुक स्थान दऽ सब गुरु पूर्णिमा मे सम्मान देथि। गुरु पूर्णिमाक दिन हिनक संगीतक शिष्य सब देश-विदेश सँ आशीर्वाद लेबा लेल उपस्थित होइत छलाह आओर सब कें देखि कऽ कहथिन जे बच्चा सभ क देखि मोन गदगद भऽ जाइत अछि- जे हमर शिष्य हमरा सँ संगीत सीखि कऽ दू पाई अर्जन कऽ अपन परिवारक भरण-पोषण करैत अछि। हमर जीवनक मूल पूंजी हमर शिष्य अछि।

गुरुजी अक्सर कहथिन जे मनुष्यक हृदय मे सूतल भाव केर जगबऽ मे संगीत जतेक सक्षम अछि ओतेक कोनो आन विधा नहि!

गुरुजी द्वारा ''विद्यापति स्वरांजलि'' पुस्तकक लेखन कयल गेल। जाहिमे अट्ठाइस टा राग मे विद्यापतिक रचना कें छोटे ख्यालक रूपमे सजेबाक प्रयास कयल गेल आ किछु कऽ स्वरलिपि पारंपरिक धुन केर अनुरूप कयल गेल अछि। जे एकटा धरोहरक रूपमे हमरा सबहक बीच अछि।

अंतिम अभिलाषाक रूपमे श्री योग नारायण दास रचित ''प्रदर्शिनी पुस्तक सँ''

''अहिंक माँटिमे माँटि मिलए ई
एहन भूमि नहिं आन
पुनि-पुनि जनम होअए एहि भू पर
मांगै छी वरदान''

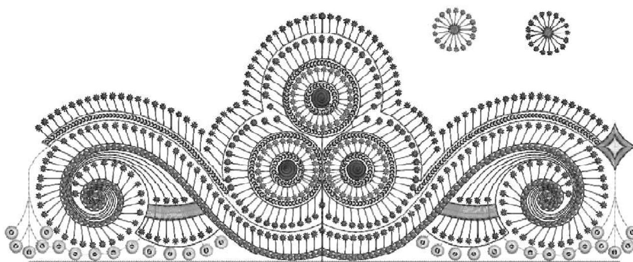
६ मार्च २०२१ कें गुरुजी कें शारीरिक कष्ट होयब शुरु भऽ गेलनि, धीरे धीरे शरीर कमजोर होमय लागलनि । जानलेवा बीमारीक कारणे २७ नवम्बर २०२१ कऽ गुरुजी एहि लोक कें छोड़ि गोलोकवासी भऽ गेलाह। मुदा ई अपन शिष्यक गायनमे हमेशा जीवित रहताह। अपन स्वरांजलिमे सदैव एहि पृथ्वी पर अजर-अमर रहताह। अश्रुपूरित श्रद्धांजलि गुरु पं. हरिद्वार प्रसाद खण्डेलवालजी कें।

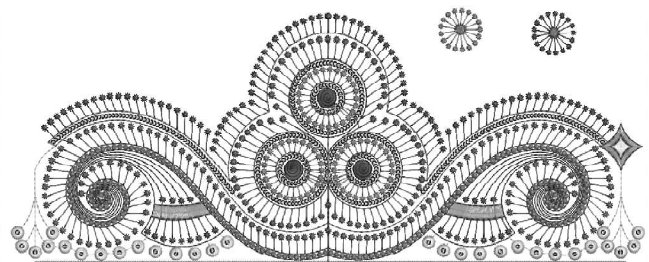
सम्पर्क-केवटी, दरभंगा ६४३१४२५८५८



धर्म विशेषे धर्मकें जोखब, दिअय तुला ने संग।
धर्मक देव धर्मराज स्वयं, रहि जाथि देखि ढंग।।

कलमक नोंक पर जँ करैत रही साहित्य-साधना।
फल निश्चिते भेटत, होइतैक रहौ कतबो प्रताड़ना।।





सदति स्मरणीय आ अनुकरणीय बनल रहत गीतकार रविन्द्र जीक कृति

✍ हीरा कुमार झा

रविन्द्र नाथ ठाकुर मैथिली साहित्यक एकटा एहन विशिष्ट कवि आ गीतकार रहथि, जिनकर लेखनी सँ बहराय बला मधुर गीत नहि केवल सहजहिं मिथिलावासीक जी पर चढ़ि जाइत छल। बल्कि हुनक मन मस्तिष्क मे उतरि दिल कें छूबि जाइत छल। हमरा बूझने हुनकर गीत मे पलायन केर वजह सँ उत्पन्न भेल गामक उदासी सर्वथा व्याप्त छल। इएह कारण जे गाम मे असगर रहि गेल पत्नी हुनकर रचना मे जतय अपना पति कें 'पिरिये पिराननाथ...' कहि बजवैत छलीह ओतहि बूढ़ माय बेटा कें 'चिट्ठी के तार बुझू बुढ़िया बेमार बूझू...' कहि अर्जेंट लेटर लिखैत छलीह। ईहो नहि छल जे ओ सिर्फ रिवर्स माइग्रेशनक रिमेंटिसिज्म केर गिरफ्त मे छलाह। अपितु ओ गाम मे आबि रहल नकारात्मक बदलावक बात करैत लिखलनि 'गाम मे रहि अहाँ की सब देखलौं...'।

मैथिली साहित्यक लिविंग लीजेंड, मैथिली गीतक मूर्धन्य गीतकार रविंद्रनाथ ठाकुर जीक जन्म 08 अगस्त 1938 ईद्र कें धमदाहा (पूर्णिया) मे भेल छल। 80-90 के दशक मे हुनकर गीत मिथिलावासी कें दीवाना बना देने छल। रविंद्र आ महेंद्रक जोड़ी ओहि समय सबसँ मशहूर छल। ओ मिथिला-मैथिलीक सब मंचक शान छल। ओ खूब गीत लिखलनि आ हुनका स्टार सन प्रसिद्धि सेहो भेटलनि। मैथिलीक पहिल सिनेमा 'ममता गाबय गीत' कें सफलताक मुकाम धरि पहुँचेबाक श्रेय सेहो हुनके जाइत छनि। बाद मे ओ अनेक वृत्त चित्र सेहो बनोलथि।

मैथिली सिनेमा 'ममता गाबय गीत' मे बतौर गीतकार हुनकर लिखल गीत 'रे बउआ भरि नगरी मे शोर, बउआ मामी तोहर गोर, मामा चान सनऽ' आइयो खूब पसिन कयल जाइछ। हुनकर लोकप्रियताक अंदाजा एहि बात सँ लगाओल जा सकैछ जे बाबा नागार्जुन हुनका 'अभिनव विद्यापति' केर उपनाम देने रहथि। ओ 'प्रबोध साहित्य सम्मान', 'मिथिला रत्न सम्मान' और 'मिथिला विभूति' सन लगभग डेढ़ दर्जन राष्ट्रीय पुरस्कारों सँ सेहो पुरस्कृत भेल रहथि।

एकटा साक्षात्कार मे ओ अपन साहित्यिक यात्रा के बारे मे बतोने रहथि जे ओ साल 1947 मे जखन आठवां क्लास मे रहथि तखने सँ गीत लिखब शुरू कऽ देने रहथि। 1952 मे जखन ओ कॉलेज गेलाह तऽ एहिमे आओर तेजी आबि गेल। वर्ष 1963 मे पहिला काव्य संग्रह प्रकाशित भेलनि। एकरा बाद हुनक लिखल करीब 16-17 टा कविता संग्रह, खंडकाव्य आ नाटक प्रकाशित भेल। एहि साक्षात्कार मे ओ स्वीकार केने रहथि जे साहित्य जगत सँ पहिले हुनका मंचीय गायन सँ पहिचान भेटल। ओ वर्ष 1966 मे रवींद्र-महेंद्रक जोड़ी बनोलनि आ विभिन्न मंच पर मैथिली गीतक प्रस्तुति देबय लगलाह। महेंद्र जी सँ हुनकर भेंट साहित्यकार राजकमल करोने रहथि। जिनकर अद्भुत गायन शैली श्रोता कें हुनकर दीवाना बना देलक। पटना, राँची, दरभंगा सहित संपूर्ण राज्य में एहि जोड़ीक धूम मचय लागल।

एकटा सौम्य-शालीन एवं व्यक्तिगत महात्वाकांक्षा सँ इतर व्यक्तिक रूप मे आजीवन मैथिली केर हित चिंतन मे लागल रहल रविंद्रनाथ ठाकुर जीक कृति मे मैथिली सिनेमा 'ममता गाबय गीत' केर गीत आइयो लोकक दिलो दिमाग पर अपन अमिट स्थान बनोने अछि। ओ हिंदी सिनेमा 'आयुर्वेद की अमर कहानी' केर लेखन आ निर्देशन सेहो केने रहथि। एकरा अतिरिक्त ओ मैथिली फिल्म 'नाच' केर निर्माण सेहो प्रारंभ केने रहथि, मुदा ई सिनेमा पूरा नहि भऽ पाओल। मैथिली साहित्य मे हुनक रचना संसारक विशेष स्थान अछि। मैथिली गीतक हुनक प्रमुख संग्रह अछि 'चलू चलू बहिना, 'जहिना छी तहिना', 'स्वतंत्रता अमर हो हमर', 'प्रगीत', 'अतिगीत', 'रविंद्र पदावली (मैथिली गीत संग्रह)' आदि। एकरा अतिरिक्त ओ 'पञ्चकन्या' आ 'नरगंगा' नाम सँ मैथिली महाकाव्यक रचना सेहो कयलनि। हुनक मैथिली कविताक का संग्रह अछि- 'चित्र-विचित्र'। जखन कि हुनक मैथिली उपन्यास 'श्रीमान गोनू झा' केर चर्चा मैथिली साहित्य मे खूब भेल। 'एक राति' हुनक मैथिली नाटक अछि जखन कि 'एक मिनट की रानी' हिंदी नाटक। हुनकर मैथिली गजल संग्रह 'लेखनी एक रंग अनेक' प्रयोगधर्मी रचनाशीलताक अनुपम उदाहरण अछि।

एहिना मैथिली मे ओ अपन अनेक कालजयी कृति सँ सम्पूर्ण मिथिलावासी कें अवगत करोलनि। जाहि मे 'चिट्ठीकें तार बूझू...', 'बउआ भरि नगरीमे शोर...', 'के थिक मैथिल-की थिक मिथिला...', 'अर्र बकरी घास खो छोड़ गठूल्ला बाहर जो...', 'माताजी विराजे मिथिले देसमे...', 'चलू चलू बहिना...', 'सुन सुन सुन पनिभरनी गे...', 'पिरिये पिराननाथ...', 'हवा थे हवा चल चल, चल मिथिलामे चल...', 'हम मिथिलेक जलसँ भरब गगरी...', 'चारि पाँति सुनू राम केर नामसँ...', 'यार कुसियार यार...', 'हमर सासुजीक जेठका दुलरूआ...', 'तांगा चलल अलबेला...', 'रूकियौ कने तऽ बारि दिअ...', 'बिढ़नी बिन्हलकौ थुम्हा फुलेलकौ...' आदि अनमोल अछि। मैथिली भाषा आ साहित्य केर श्रीवृद्धि मे हिनकर अभूतपूर्ण योगदान सदति स्मरणीय आ अनुकरणीय बनल रहत।



चेयरमैन, महात्मा गांधी शिक्षण संस्थान,
लहेरियासराय

मैथिलीक अनमोल रचनाकार रहथि रविन्द्र नाथ ठाकुर

✍ प्रो जीवकांत मिश्र

मैथिली कला, साहित्य आ सिनेमा जगत केर महानायक रविंद्र नाथ ठाकुर बिहार सरकारक वित्त विभाग मे नौकरी करैत मैथिली साहित्याकाश कें जे ऊँचाई देलनि, ओ सदैव प्रशंसनीय आ अनुकरणीय बनल रहत। मातृभाषा मैथिलीक असीम अनुरागी रविन्द्र जी जीवन पर्यंत मातृभाषा मैथिलीक भाषा- साहित्य केर उत्तरोत्तर विकास लेल समर्पित रहलनि। एकटा उत्कृष्ट रचनाकार होयबाक संग-संग ओ सभ तरहक कला मे माहिर रहथि आ इएह हुनक विशेषता छल। मैथिली साहित्यक महान साधक रूप मे चर्चित ओ एकटा एहन धरोहर रचनाकार रहथि जिनकर रचना मैथिली भाषी लोकक दिल-ओ-दिमाग मे सदति बसल रहत। भावपूर्ण मधुर गीत लेखन संग एकर आकर्षक प्रदर्शन केर कला मे ओ माहिर रहथि आ ई हुनक खासियत छल। अर्थपूर्ण रचनाक सृजन केनिहार रवीन्द्र जी कवि कोकिल विद्यापति केर बादक पंक्तिक श्रेष्ठ गीतकार मे शामिल रहथि।

मैथिली मंच, रंगमंच आ सिनेमा मे अद्वितीय स्थान पर काबिज रविन्द्रनाथ ठाकुर जीक जन्म हुनक मातृक मधुबनी जिलाक ननौर गाममे भेल छलनि। स्नातकोत्तर कयलाक पछाति बिहारक सरकारक वित्त विभागमे चाकरी कयलाह आ संगहि मैथिली अकादमी पटनामे क्रमशः सहायक निदेशक आ निदेशक केर रूपमें अपन महत्वपूर्ण योगदान देलाह। प्रारम्भ सँ हिनक सोच रहलनि जे साहित्य सृजन जे केओ कश रहलाह अछि हुनक रचनाधर्मिताक धार कुंद नहि होयबाक चाही। कारण कोनो भाषाक समृद्धि मे साहित्यक बड्ड पैघ योगदान होइत अछि। ई स्वयं सेहो एकरा आत्मसात कऽ लिखैत रहलाह, तकरे परिणाम अछि जे हुनक गीत सभमे मैथिलीक आत्मा बसैत अछि ।

चिट्ठीकें तार बूझू, भरि नगरीमे शोर, के थिक मैथिल की थिक मिथिला, अर्र बकरी, माताजी विराजे मिथिले देसमे, चलू चलू बहिना, सुन सुन सुन पनिभरनी गे, पिरिये पिराननाथ, चल मिथिलामे चल, हम मिथिलेक जलसँ, चारि पाँति सुनू राम केर नामसँ यार कुसियार यार, हमर सासुजीक जेठका दुलरूआ, तांगा चलल अलबेला, रूकियौ कने तऽ बारि दिअ, बिढ़नी बिन्हलको थुम्हा फुलेलकौ आदि कतेको रास हिनक लिखल गीत कालजयी अछि। रविन्द्र जी मात्र गीत लिखबे टा नहि कयलाह, अपितु महेंद्र झा जीक संग कतेको मंच पर हुनका संग गेबो केलाह। बिना साज-बाजकें लोक हिनका दुनू कें सुनबा लेल आतुर रहैत छल। बरू आइ महेंद्र जीक बाद रविन्द्र जी सेहो एहि मर्त्यलोक सँ विदा भऽ गेलाह परंच आइयो हुनक अबाज कानमे ओहिना गूंजि रहल अछि। मैथिली गीतक पहिल ऑडियो कैसेट हिनके दुनूक अबाजमे दूभि धान नामसँ बहरायल छल।

मैथिलीक लोकप्रिय सिनेमा 'ममता गाबय गीत' हमरा लोकनिक स्मृति पटल सँ कहियो बिलगा नहि सकैत अछि। ताहिमे मात्र गीतकारक रूपमे नहि अपितु सम्पूर्ण सिनेमाक बनेबामे हिनक एकटा महत्वपूर्ण योगदान छलनि तकर पश्चात एकटा हिंदी सिनेमा 'आयुर्वेद की अमर कहानी' कऽ लेखन आ निर्देशन सेहो कयलनि।

रविन्द्र जीक गीत, कविता, उपन्यास, नाटक आदि सभ मिलाकऽ करीब पन्द्रह गोट पोथी प्रकाशित छनि। जाहि मे बेसी गीत संग्रह अछि। चलू चलू बहिना, जहिना छी तहिना, स्वतन्त्रता अमर हो हमर, प्रगीत, रविन्द्र पदावली, पंचकन्या, एक राति, नरगंगा, चित्र-विचित्र, सुगीत, अतिगीत, एक राति, श्री सीता चालीसा आदि हिनक प्रमुख कृति छनि।

■

बटुक भाइक परदा कहियो नहि खसत

✍ डॉ0 सत्येन्द्र कुमार झा

मैथिली साहित्य आ संस्कृतिक ई विशेषता रहल अछि जे एहिमे किछु एहन विशिष्ट लोकक आगमन होइत रहल अछि जे बहुविधावादी लेखनमे प्रवीण होइत छथि। एहन अनेको नामकेँ गिनाओल जा सकैत अछि मुदा जकरा अतिविशिष्ट कहबैक हुनकामे एहि गुणक समावेश रहब आवश्यक होइत अछि जे ओ जाहि-जाहि विषय वा विधामे प्रवेश करैत छथि ओहि सभमे समान रूपेँ अधिकृत रहैत छथि। अनेक विधा मुदा निपुणता एक्कहि रंग।

एहने अविरल व्यक्तित्वक स्वामी छलाह हमर सभक आदरणीय बटुक भाइ। बटुक भाइ माने छत्रानन्द सिंह झा। बटुक भाइ माने आकाशवाणी, पटनाक चर्चित आ लोकप्रिय कार्यक्रम चौपालक उद्घोषक-कम्पीयर। बटुक भाइ माने मिलनसार स्वभावक जनप्रिय व्यक्तित्व। बटुक भाइ माने मिथिला-मैथिलीक हितचिन्तक, युगचिन्तक, उत्कृष्ट नाटककार, नाट्यकलाक मर्मज्ञ आ तेँ बटुक भाइक अर्थ भेल बहुआयामी व्यक्तित्व आ बहुआयामी कृतित्वक कर्त्ता, सर्जक।

बटुक भाइ अर्थात् छत्रानन्द सिंह झाक जन्म मधुबनी जिलान्तर्गत मनीगाछी प्रखण्डक चनौर गाममे 05 अप्रैल 1946 ईस्वीमे भेल छलनि। नेनहि सँ ई अति प्रतिभाशाली छलाह। अपन स्नातक धरिक शिक्षा पूर्ण कएलाक बाद ई स्नातकोत्तर मगध विश्वविद्यालय, गयासँ 1972-74 मे स्वतंत्र रूपेँ कएलनि आ प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कएलनि। एहि बीचमे ओ आकाशवाणी, पटनामे स्टाफ आर्टिस्ट आ कम्पीयरक रूपमे काज कएनाइ आरम्भ क' देने छलाह। कम्पीयरक रूपमे ई खूब प्रतिष्ठा प्राप्त कएलनि आ तत्कालीन संयुक्त बिहारे धरि नहि अपितु कतेको महानगरमे बटुक भाइ घरैया नाम बनि गेल छल-अछि। जखन रेडियो पर चौपाल जमैत छल त' श्रोतालोकनि मंत्रमुग्ध भ' जाइत छलाह आ हुनका लोकनिकेँ एक्कहि कार्यक्रममे विविध तरहक सुआद भेटैत छलनि। आकाशवाणी पटनाक ई कार्यक्रम एतेक उच्च स्तरीय प्रमाणित भेल जे एकर देखादेखी आकाशवाणी दरभंगा सेहो गामघर सन कार्यक्रमक आरम्भ कएलनि जकर कम्पीयरिंग हुनकहि अनुज इन्द्रानन्द सिंह झा करैत छलाह जे खुरखुर भाइक नामसँ ख्यात छथि।

स्वर साधनाक अतिरिक्त प्रदर्शनकारी विधासँ सेहो जुड़ल रहलाह बटुक भाइ। पटनामे भंगिमा नामक नाट्य संस्थाकेँ परिचितिक खगता नहि अछि। एहि नाट्य संस्थाक संस्थापक सदस्य आ अध्यक्ष रूपमे बटुक भाइक योगदान केँ कहियो नहि बिसरल जा सकैत अछि। एहि संस्थाक स्थापना 4 अगस्त 1984 ईस्वीमे भेल छल। एहि संस्था द्वारा बटुक भाइक मार्गदर्शनमे अनेक नाटकक मंचन भेल जाहिमे अन्तिम प्रश्न, प्रायश्चित, सीताहरण, गाछ, संयोग, रामलीला, आदर्श कुटुम्ब, नट सम्राट, मिले धोंछ मे धोंछ, हीरक जयन्ती, सुनू जानकी, चाही एकटा शिवसिंह प्रमुख अछि। ई सभ नाटक मैथिली नाटकक विकासमे महत्वपूर्ण भूमिका निभौलक अछि। एहि सभ नाटकक प्रदर्शन भेलाक उपरान्त बटुक भाइ नाटकक क्षेत्रमे चर्चित नाम बनि गेल छलाह।

ई त' बटुक भाइक नाटकक क्षेत्रक गप्प अछि मुदा नाटकक इजोतमे हिनक साहित्यिक यात्राकेँ अन्हार दिस नहि धकेलल जा सकैत अछि। ई एकगोट सचर साहित्यकार छलाह आ हिनक साहित्यिक सूझबूझ हिनक रचना सभक मध्य देखल जा सकैत अछि। जतए धरि हिनक साहित्यिक अवदानक प्रश्न अछि त' मात्रामे बड्ड बेसी नहि रहितो गुणात्मक रूपेँ विशाल परिधि धर पसरल- चतरल अछि। हिनक दूगोट व्यंग्य कथा प्रकाशित अछि जे 1971 मे डोकहरक आँखि आ 1977 मे कांट कूश नामसँ प्रकाशित अछि। डोकहरक आँखिमे जतए 07 गोट कथा संकलित अछि ओतहि कांट कूशमे 13 गोट कथा संकलित भेल अछि। एकर अतिरिक्त हिनक प्रकाशित पोथी सभमे एक गुलाबक लेल, सीताहरण आ शोध ग्रन्थ मैथिली रेडियो नाटक अबैत अछि। एकर अतिरिक्त ई अनेक पुस्तकक अनुवाद सेहो कएने छथि आ हिनक अनुदित पोथी सभक नाम अछि- अन्तिम प्रश्न, गाछा, रामलीला, नट सम्राट आ कबीर। हिनक सुनू जानकी नामक नाटक सेहो प्रकाशित अछि। संगहि ई अपन सहकर्मी गौरीकान्त चौधरी कान्त मुखियाजी पर साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीसँ प्रकाशित विनिबन्ध सेहो लिखने छथि। हिनक सभ पोथीक मादे चर्च करब स्थानाभावक कारणेँ एतए संभव नहि अछि मुदा किछु

पोथीक संदर्भमे गप्प कएला पर हिनक साहित्यिक प्रवृति बुझबामे सहजता भ' जाएत।

जखन हिनक व्यंग्य कथा दिस नजरि खिरबैत छी त' पबैत छी जे जाहि तरहक व्यंग्यक परम्परा सीताराम झा, हरिमोहन झा वा अमरजी द्वारा निर्मित भेल अछि तकर अग्रिम कड़ीक रूपमे हिनक नाम लेल जा सकैत अछि। कारण जे उल्लिखित प्रणम्य साहित्यकारलोकनिक व्यंग्यमे एकटा सुधारात्मक प्रवृति देखबामे अबैत अछि जे हिनक कथा सभमे सेहो अभरैत अछि। मिथिलामे हास परिहास आ व्यंग्य विनोदक स्वभावगत नैसर्गिक प्रवृति देखबामे अबैत अछि तखन व्यंग्यक माध्यमसँ अपन गप्प कहनाइ ओतेक सहज नहि होइत छैक जतेक उपरा उपरी देखबामे अबैत अछि। बटुक भाइक व्यंग्य समसामयिक युगक विकृतिक गप्प करैत अछि, लोकक अधोगति जे ओकर स्वार्थ, अवसरवादिता आदिक कारण भ' रहल अछि तकर गप्प करैत अछि। हिनक लेखनी राजनीतिक व्यंग्य दिस सेहो चलैत अछि। कहबाक तात्पर्य ई जे विद्वानलोकनि व्यंग्यक जे विभाजन शैलीगत आ विषयगत रूपमे करैत छथि, बटुक भाइ एहि दुनूमे प्रवीण छलाह आ ई हिनक कथा सभमे उपस्थित अछि।

तहिना यदि हिनक नाटक सुनू जानकीक संदर्भमे चर्च करी त' देखबामे अबैत अछि जे जानकीके ँ ओ आधुनिक सामाजिक परिवेश मध्य ठाढ़ करैत छथि आ कहैत छथि जे आइयो नारीक जीवन अति कुण्ठित आ विसंगतिसँ भरल अछि। आजुक राम सेहो नीक आ बेजायक मिश्रण बनि गेल छथि। ओ एकहि संग मर्यादाक रक्षा कएनिहार सेहो छथि आ मर्यादा भंग कएनिहार सेहो छथि। अर्थात् आजुक राम द्वैध जीवन तंत्रमे अपन जीवन यात्रा क' रहल छथि।

मैथिली रेडियो नाटक पोथी बटुक भाइ रेडियो नाटक पर काज कएनिहार आगामी पीढ़ी लेल पाथेय रूपमे प्रस्तुत कएलनि अछि। पोथी बेसी मोट नहि अछि मुदा एहिमे व्यापक संदर्भके ँ समाहित कएल गेल अछि। रेडियो नाटक की थिक, कोना एकर निर्माण होइत छैक, कोना ई प्रस्तुत होइत अछि आदि-आदि।

एहि तरहे ँ हमरालोकनि देखैत छी जे बटुक भाइक नाट्य रूप जतेक विराट अछि ओहिसँ कनियो झूस हिनक साहित्यिक रूप नहि अछि। ते ँ बटुक भाइक प्रतिभाक सम्मान करैत विभिन्न संस्था सभ समय-समय पर हिनका सम्मानित क'क'स्वयं गौरवान्वित भेल अछि। हिनका मैलोरंग सन यशस्वी संस्था ज्योतिरीश्वर सम्मानसँ 2014 मे सम्मानित कएने अछि। एकर अतिरिक्त विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा मिथिला विभूति सम्मानसँ, भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर ज्योतिरीश्वर राष्ट्रीय शिखर सम्मान, किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान, उजान आ चेतना समिति, पटना सेहो एहि शिखर पुरूषके ँ सम्मानित क' प्रतिभाके ँ उचित सम्मान देबामे सार्थक भूमिकाक निर्वहन कएलक।

मुदा, कालक क्रूरतासँ आइधरि के बाँचि सकल अछि जे मृदुभाषी, सुकोमल, शालीन आ विद्वान बटुक भाइ बाँचल रहि जइतथि। 76 बरिखक उमेरमे बटुक भाइ 16 सितम्बर 2022 के ँ महायात्रा दिस प्रस्थान क' गेलाह आ छोड़ि गेलाह अपन विराट साहित्यिक आ रंगमंचीय परम्परा।

एहि युगपुरूषके ँ बिसरनाइ असंभव अछि, ओ युग-युगान्तर धरि मैथिलीक करेजमे सन्हियाएल रहताह, जीबित रहताह अपन कर्मसँ, अपन कृतिसँ।

सम्पर्क : सहायक प्राध्यापक,
चन्द्रधारी मिथिला विज्ञान महाविद्यालय,
दरभंगा -846 004
मोबाइल : 98356 84869

■

हमर अभिभावक उमाबाबू

✍ प्रो0 रमेश झा

सतत् मुखमे पान आ मुस्की लेने चेहरा पर भाव, कद-काठी छोट सन्। शुभ्रशाभ्र धबल सजल श्वेत वसन। चालिमे चुस्ती-फुर्ती। स्वभावेँ सहमिल्लु! मृदुभाषी, स्वाभिमानी, अनट-विनट पर ढ़ाई-पढ़ाई कहबा सँ बाज नहि, सहृदय दयावान, परोपकारी, उदार स्वाध्यायक प्रति प्रतिबद्ध, संघर्षमय जीवन, तीत मीठ अनुभूति लेने। संकटक क्षणमे धैर्य धारणक पाठ-पढ़ैत, पढ़बैत, साहित्यकारक रूपमे मैथिलीमे चिन्हरगर, सम्पादन-कलामे निपुण, कर्मयोगी बनल, कर्मठताक संग समय-सीमामे कार्य-सम्पादित 'विद्यापति सेवा संस्थान' दरभंगाक 'अर्पण' पत्रिका, छात्र-छात्रा ओ युवा वर्ग केँ अनवरत प्रोत्साहित करबामेरत, पी0डब्लू0, डी0क त्यागि प्राध्यापकक पद पर आसीन, मैथिली विभाग, कॉलेज महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह मेमोरियल। शिक्षकक रूपमे यशी-यशस्वी, सम्बद्ध शास्त्रकेँ धुनने, अन्यान्यहु विषयक अध यन कीर्तिमान स्थापित करबाक आग्रही, विचारक, समीक्षक, आलोचक, बहुआयामी, परम्पराक प्रशंसक आ नवताक उत्साहवर्द्धक, कर्त्तव्यक प्रतिनिष्ठा, धर्मक प्रति आस्था, गुरूजनक प्रति सम्मान, परिजनक प्रति स्नेहभाजन, शिष्यगणक प्रति वात्सल्य भाव आ कहुखन चंचल आ खनहि हास-परिहासक मोती लुटबैत हँसी मसखरीक फुलझड़ी-छोड़ैत।

जाहि विषयवासनाक चर्च ऊपरवर्णित अछि ताहि प्रमुख व्यक्तित्व केँ मिथिलांचलमे लोक सभ उमाबाबू, उमाकान्त, उमाकान्तजी आदि नाम सँ सम्बोधित करैत रहल; एहि व्यक्तिक मूल्यांकन हेतु शब्द सामर्थ्य चाही, मुदा से अछि कहाँ? तथापि यथासंभव स्मरण करैत दू आखर हुनक विगत जीनक कृतित्व ओ व्यक्तित्व पक्ष पर एहि लघुकाय संस्मरण मध्य अंकित करबाक प्रयास कएल अछि।

उमाबाबू सामाजिक लोक छलाह। बजाओल-बिनु बजाओल सभक दुख-सुखमे संग पुरनिहार। हकार-तिहारमे समाजक सभ वर्गक संग ह-हा-हि-ही करैत सबहक संग पुरैत आ आनन्द मधुमन्दाकिनीमे अवगाहन करैत, ककरो प्रति कोनो ईर्ष्या-द्वेषक अन्यथा भाव नहि, सदा-सर्वदा प्रसन्नचित् रहनिहार, महाविद्यालय सँ सम्बद्ध कोनो काज हो, कोनो प्रकारक गोष्ठी संगोष्ठी हो, मिथिला-मैथिली वा मैथिल सँ संबंधित कोनो प्रकारक आह्वान हो ताहिमे दत्तचित्त भऽ ओकर सम्पादनमे तत्परता देखएबाकमे ई अपन पुनीत कर्त्तव्य बुझैत छलाह, जकर निर्वहन ई जीवनक अन्तिम क्षण पर्यन्त कएल, जे यथार्थतः प्रेरक आश्लाध योग्य थिक।

उमा बाबू हमर अभिभावक तुल्य बनल सतत नाना प्रकारक पाठ-पढ़बैत रहलाह, सद्यः गुरू-शिष्य परम्परा सदृश। ओ एक सफल वक्ता छलाह आ प्रसाद गुण युक्त भाषामे श्रोता केँ मंत्रमुग्ध करैत रहलाह अपन वाणी विशेष सँ।

हमरा उमाबाबूक प्रथम दर्शन परम श्रद्धास्पद पं0 कमलाकान्त आक संग आकाशवाणी दरभंगा केन्द्रमे भेल 1983ई. मे आ सेहो 'ऑडिशन हॉल'मे हम कृतकृत्य भेल रही हुनका सँ परिचय प्राप्त भेला पर आ हुनक आशीर्वाद प्रसाद सेहो अहगर केँ प्राप्त भेल छल। एहि वर्ष हम वैवाहिक बन्धनमे बन्हल रही आ निकसी (दरभंगा) गाममे विवाह-यज्ञ श्री सम्पन्न भेल छल जाहिमे उमाबाबू सेहो समुपस्थित भए हमरा दुनू प्राणी केँ अक्षय आशीष दए कृतार्थ कएने रहथि। एहि शुभ अवसर पर आशीर्वाद आ आशीर्वादी दुनू दए अपन उदारता आ व्यावहारिकता परिचय देने रहथि। एतबे नहि उमाबाबू ओहि दिन बलभद्रपुर आवास पर पहुँचि हमरा आशीर्वाद प्रदान कएने रहथि जहिया हमर एम0ए0क परीक्षाफल प्रकाशित भेल छल, संगहि जखन अगिला वर्ष प्राध्यापक रूपमे योगदान हेतु एम0एल0एस0एम0 कॉलेज पहुँचल रहि तहियो तत्कालीन प्रधानाचार्य परम श्रद्धेय दया बाबू लग जाय, हमर योगदान करौने रहथि आ संगहि 'अलंकार'क परिभाषाक प्रश्नक उत्तर पर संतुष्ट भए हमरा पीठ ठोकि वर्गमे जयबाक विनम्र आदेश देने रहथि। एहि सँ विशेष सौभाग्यक बात हमरा लेल आर भइये की सकैत छल। ध्यातव्य जे ओ मैथिली विभागक ओहि दिनक अध्यक्ष रहथि। हुनक महानता एहन जे संसाधन अभावे स्वयं झाडूक बदला झारी सँ ठाढ़ि-पात तोड़ि सफाई-कार्यक कार्यक' लेथि आ एहिमे हुनका यत्किचितो लधवताक अनुभूति नहि होन्हि।

उमाबाबू महाविद्यालयक प्रशासनिक औ शैक्षणिक, विद्यापति सेवा संस्थान ओ मैथिलीक एक स्तम्भ छलाह। हुनक ब्रह्मलीन भेला पर मैथिली-जगत केँ अपूरणीय क्षति भेलैक अछि।

हम ओहि महान व्यक्तिक प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करैत कोटि-कोटि श्रद्धा-सुमन अर्पित करैत श्रद्धांजलि दैत लेखनी केँ विराम दैत छी।

विभागाध्यक्ष, वि0वि0 मैथिली विभाग,
ल0ना0मि0विश्वविद्यालय, दरभंगा।



हरिद्वार रहथि खण्डेलवाल सर

✍ पुष्पलता कुमारी

27 नवम्बर 2021 शनि दिन भोरक प्रायः नओ बजिकए पचीस मिनट विद्यालयक मेन गेट मे प्रवेश करितए रही कि देखलैं किछु वरिष्ठ शिक्षक शिक्षिकाकें विद्यालय सँ वहराइत थोड़िक अचम्भित भेलौं। एखन तऽ विद्यालय आबै केर समय छै। सभ बहरा रहल छथि। जिज्ञासा कएला पर केओ बाजल रहथि- 'खण्डेलवाल सर नहि रहला। हुनके अंतिम दर्शन लेल जा रहल दी सभ गोटे। हम सेहो हनुका सभक संग भऽ गेलौं।

नाम छलनि हरिद्वारा खण्डेलवाल। मुदा खण्डेलवाले सर का नाम सँ विद्यालय वा बहारो चीन्हल-जानल जाइत छलाह। विद्यालयसँ हुनक आवासक दूरी मुश्किलसँ आधा किलोमीटर होयत। दरभंगा टावर चौकक हनुमान मंदिर निकट। तें दस मिनटमे हमरा लोकनि हुनक आवास पर पहुँचि गेलों। उज्जर वस्त्र गरदनि धरि ओढ़ाओल छलनि। मुँह उधार छलनि। पहिने जकाँ हँसमुख चेहरा। थेड़िवो मलिन नहि भेल छलनि। हम आ आरो शिक्षक लोकिन हुनक अंतिम दर्शन आ पार्थिक शरीर पर पुष्प अर्पित कऽ विद्यालय धुरि अएलौं। विद्यालय खुजल रहबाक करार्णें समयक संग बान्हल छलौं।

समय सँ एकटा बात खण्डेलवाल सरक विषयमे स्मरण अबैए। ओ समयक एकदम पकिया छलथि। सम दिन कार्यदिवस मे समय पर विद्यालय आबैत छलथि आ समयसँ आइत छलथ। 2009 ई. मे हमर नियुक्ति एहि (+2 एम. ए. आर. एम.) विद्यालय मे भेल पहिल दिन जखन विद्यालय गेल छलौं कि लंचक बाद एकटा सुमधुर स्वर कानमे गुंजल। पता चलल जे ई छथि हरिद्वार खण्डेलवाल। संगीतक नीक ज्ञाता आ एहि विषयक विद्यालयों शिक्षक। उत्सुकतासँ हम हनुका देखबाक लेले ओही कोठरीक खिड़की धरि गेलौं। देखलौं किछु छात्रकेँ हारमोनियम पर संगीत सिखबैत छलाह। एक सामान्य कद-काठी; हँसमुख चेहरा, भारी आवाज। एकदम साधल स्वरमे छात्र लोकनिकें लोकधुन आधारित गीत-संगीत सिखबैत छलथिन। ओही गीतक पांति एखन धरि मोन अछि-

"मेरो कानहा गुलाब को फूल
राधे जू मोरी कुसुम कली..........."

हम हनुक गायन कला या व्यक्तित्वसँ बहुत-बेसी प्रभावित भेल रही। शिक्षक-पिताक हमउम्र रहबाक कारणें ओ पितातुल्य रहथि। एक दिन तऽ एहन भेल जे हम कहालिऐन- "सर! हमरा बुतें तऽ संगीत सीखल संभव नहि बुझना जाइए, मुदा इच्दा अछि जे हमर बेटी के संगीत सीख दीअ। सर कहने रहथि-जरूर। मुदा ओ सुदिन नहि आबि सकल।

खण्डेलवाल सर विद्यालयक रूटिन प्रभारी सेहो रहथिन आ से अवकाश प्राप्ति दिन धरि एहि दायित्वक सफलतापूर्वक निर्वहन कएलनि। आइयो जहिया कहियो वर्ग-संचालन मे कोनो व्यवधान अबैए तखन खण्डेलवाल सरक कार्य कुशलताक अवश्य चर्चा होइये।

ओ अत्यन्त विनोदी स्वभाव केरे रहथि। कोनो-ने-कोनो प्रसंग चर्चा कऽ सदिखन लोककेँ हँसबैत रहैत छलथिन। एहि विद्यालयसँ पहिने ओ पार्वती लक्ष्मी कन्या उच्च विद्यालय, झंझारपंर मे शिक्षक रहथि। एक दिन ओ पूर्व विद्यालयक एकटा लेट लतीफ शिक्षकक खिस्सा सुनेलनि-

'बुझलौं कि पी एल एम स्कूल मे एकटा शिक्षक रहथि। नाम नै कहब। जखन हुनक घंटी अबैत छलनि ओ निश्चित भऽ गप्पमे लागल रहथि। ओहूठाम हमहीं रूटीन इन्चार्ज रही। टोकला पर उठथि आ कान पर जनअ चढ़बैत बाथरूप दिस विदा भऽ जाइत रहथि। दस-बारह मिनटक बाद घुरैत रहथि। हाथ-मुँह धोइत पन्द्रह सँ सतरह मिनट बिता दैत रहथि। पुछियैन-फ्रेश भेलहो हाँ भैया आबो तऽ वर्ग मे जाहो। तखन कुमोने काँख तडर रजिस्टर रखैत डेग उठबैत छलाह। थोड़-बहुत एहन लक्षण एहूठामक किछु शिक्षक मे छनि '......' आ जोर सँ ठहक्का बहरा जाइत छलनि।

दरभंगा टावर पर हुनक पारिवारिक एकटा मनिहाराक दोकान अछि। विद्यालयक बाद वा छुट्टीक दिन ओतहू समय दैत रहथिन। संयुक्त परिवारक एकटा सशक्त अभिभावक छलाह। 31 जनवरी 2012 कैं सेवासँ ससम्मान अवकाश ग्रहण कएने रहथि 1 एहन प्रखर बुद्धि प्रतिभाशाली व्यक्तित्व आ सहृदय अभिभावक कैं एकबेर पुनः नमन आ श्रद्धांजलि।

सम्पर्कः- सहायक शिक्षिका
+एम.ए.आर.एम. विद्यालय,
लालबाग, दरभंगा

■

लघु कथा

अमित मिश्रक पाँच गोट लघु कथा

✍ अमित मिश्र

डर

बड खराब मौसम छलै। पारा 45°C पार कऽ चुकल छलै। रघुनाथ एसी कारसँ बाहर निकल कन्सट्रक्सन साइटपर पहुँचल। लंचक समय छलै तेँ ओतऽ एक्का-दुक्का मजदूर सब छलै आ छलहियो से लंचक भाद आराममे छल। रघुनाथ आइ भेल सब काजकेँ देख रहल छल। जखन गोदाममे गेल तऽ देखलक जे एकटा अधवयसु मजदूर असगरे ट्रकसँ सिमेंटक बोरा उतारि कऽ गोदाममे राखि रहल छल। ओकरा देख रघुनाथके कने आश्चर्यो भेलै आ तेँ पूछि देलक- अरे तूँ लंचपर नै गेलहीं।

-नै साहेब, सोचली जे खाना तऽ घरोपर हेतै ताले कने काजे कऽ लै छिकियै। घामक बुन्न आंगुरसँ पोछैत ओ जबाब देलक।

- एना कोना काज चलतै। बिन खेने ऐ गर्मीमे तूँ नै सकबिहीं। जो ने जखन कंपनी सबकेँ खाना दै छै त खाइमे कोन हर्ज छौ!

-छोड़ि दियौ मालिक। एक लोटा पानि पीब लेलियै एखने। ओनाहितो तऽ लंच टाइम समाप्ते भऽ गेल छिकै ने।

- नै नै, ई सब नै चलतौ। टाइम खतम भऽ गेलै तैसँ की? चल तोरा हम खाना मँगा दै छियौ।

मजदूरक हाथ-पैर बुझू जे फूलि गेलै। ओ टस-से-मस ने भेल। जखन रघुनाथ बेसी तमसेलै तश ओ डेराइत बाजल- मालिक हम खाना टिफिनमे लऽ लेने छीयै। घर लऽ कऽ चलि जेबै।

- से किए रौ। खेलहीं किए नै।

- मालिक धिया-पुता लेल लऽ जेबै। ओकरा आरकेँ दालि-भातक दर्शनो नै ने होइ छै। असल बात तऽ ई छिकै मालिक जे दालि-भात हमरो नीक लागै छै। सोचौ छिकियै जे एखन छौड़ा आरकेँ खुएबै तखने ने हमरा बुढ़ारीमे दालि-भात खुएतै। बुढ़ारीमे गंजन नै होइ ताहि डरे भुखलो रहि धिया-पुताकेँ नीक-नीकुत खुबै छिकियै मालिक।

रघुनाथक आँखि डबडबा गेल छलै।

समाजक सोच

राति लगभग बारह होइत हेतै। गर्मीसँ लोकक हालत पस्त भेल छलै कि टोलक पुबरिया भागसँ हल्ला उठलै। कोनो अनहोनीसँ छाती धकधक कऽ रहल छल। बातो तेहने छलै। रमरेखबाकेँ अधसर डसि लेने छलै। ओ छटपटा रहल छल। जुआएल अधसर कानेमे अपन दाँत गड़ेने छलै। ओकर हालत देख हम झटपट डॉक्टर लग लऽ चलबाक लेल जोर केलहुँ। हमर एहि बातक टोलक बुढ़ सब विरोध केलनि। आनन-फाननमे भगतकेँ बजाओल गेल। विषहरि थानमे रमरेखबाके सुता देल गेल आ आनधुन चाटी चलऽ लागल। रेमरेखबा चिचियाइत रहल जे हमरा जल्दी सुइया दियाबऽ....डॉक्टर लग लऽ चलऽ मुदा ओकर बात सुनै बला के छलै! मनरिया सब झुमैर गआबैत रहल आ भोर धरि रमरेखबाक गोर देह नील वर्णक भऽ गेल। चाटी चलिते रहल आ ओ चेतनाशून्य भऽ गेल छल। हमर आँखिसँ नोर बहि रहल छल आ मोन पड़ि रहल छल ओकरे कहल बात - भाइ, भले लोक चान धरि पहुँचि गेलै मुदा समाजक सोच बदलैमे एखनो सैकड़ो बर्ष लागतै।

यमराज

पूरा परोपट्टामे आनंदक लहर पसरि गेल छैलै। सभक मोनमे कल्पनाक नव पाँखि उगि गेल छलै। सब अपन-अपन फायदाक हिसाब लगा रहल छल। सब ठाम एक्कै चर्चा छलै। आखिर गाम दऽ कऽ एन.एच पास भेल छलै। साठि हजार कट्ठा बला खेत सड़क किनार पड़ने छअ लाखक भऽ गेल छलै। लोक मुआवजा लऽ कऽ सड़कमे अपन जमीन दऽ रहल छल। गामक अंतमे कलपू डोमक घर छलै। जमीनक आमपर मात्र घड़ारिये टा छलै ओकरा। ओ जमीन दैसँ मना कऽ देलक। गाममे सभक कान ठाढ़ भऽ गेलै। सबके सपना टूटैत बुझाए लागलै। जखन कलपू सुगर चरबै लेल गेल तखन ठीकेदार संग गौआ सब आबि ओकर खोपड़ी उजाड़ि देलकै। कलपू इएहले-वएहले दौड़ल। लोकक

भीड़ देख किछु बाजल ने गेलै। ओ एतबे सोचौत रहल जे आब रहत कतऽ? ठिकेदार ओकरा हाथमे बीस हजार दऽ चलि देलक। साँचो तखन पूरा भीड़ यमराजे जकाँ लागल छलै ओकरा।

बरखा

आइ झमकौआ बरखा भेल अछि। अकाससँ नै, बीस सालक बाद हमर आँखिसँ ई बरखा भेल अछि। बीस वर्ष पहिने जखन बेटा हमरा दुनू प्राणिक बात काटि कोनो शहरी लड़कीसँ वियाह केलक आ तकर बाद हमर सभक चिन्ता छोड़ि विदेश चलि गेल, तहिते एहन बरखा भेल छल।तकर बादसँ कहियो काल बून्दा-बून्दी होइत छलै। जखन रिटाइर भेलौं, पत्नी लकबा ग्रसित भेलीह, जखन पत्नीकेँ कुहरैत आ स्वयंकेँ असमर्थ देखलहुँ, तखन कने मोनमे मेघ लागल आ नैनसँ झीसी पड़ल छल। दस दिन पहिने जखन डॉक्टर हमर किडनी खराब हेबाक घोषना केलनि तकर बाद मोनमे दुखक मेघ नुका कऽ भगवानक भजनमे मगन भऽ गेल छलहुँ। एक्कहि टा चिन्ता छल जे मुइलाक बाद हमर देहक की दशा होयत, मुदा आइ मोनमे नुकाएल मेघ गर्जन-तर्जन संग झूमि कऽ बरसिए गेल। आखिर किए नै बरसत ! जीवनक अंतिम समयमे बेटा अपन किडनी डोनेट कऽ कर्ज उतारबाक लेल हमरा सामनेमे ठाढ़ अछि।

मशीन

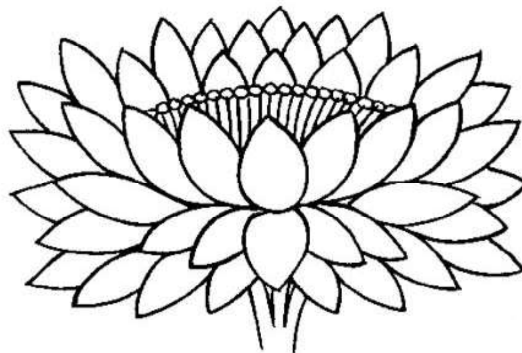
सुतले रही कि फोन बाजि उठल। गामसँ बाबूक फोन छलै। एतेक भोर आ बाबूक फोन? कोनो अर्थ नै लागि सकल। फोन उठेलहुँ। हमरा हैलो कहैसँ पूर्वे बाबूक थरथराइत आवाज कानमे गूँजि उठल- बौआ जल्दी गाड़ी पकड़ि लए। माएक मोन बड खराब छह। लास्ट स्टेज...कोनो चान्स नै ...अपन मुँह देखा दहक।

हमर छाति उठि-उठि बजरऽ लागल। चट दऽ अपन मैनेजरकेँ फोन कऽ छुट्टी माँगलियै। ओम्हरसँ और बेसीए नुनछराएन जबाब भेटल-अगिला एक मास धरि छुट्टी नै भेटत। काजक ओभर लोड छै। बड गिड़गिड़ेलियै। अपन परिस्थिति कहलियै, मुदा ओ नै मानलक। आइ हमरा अनुभव भऽ रहल अछि जे आब लोक संवेदानहीन भेल जा रहल छै। काजक आगू दुनियादारी बिसरि गेल छै। ओनाहितो ई मशीनी दिनचर्या आ औद्योगिक युगक देन छै। आखिर मशीनमे संवेदना तऽ नहिं ने होइ छै?

करियन, समस्तीपुर, 9122105183



जेँ नपुंसक अछि ई मिथिला,
तेँ आइ मिथिला राज्य नहि।
एक बेर जागय जनचेतना,
मिथिला राज्य त्याज्य नहि।।



कथा

ठगक गिरोह

✍ डॉ. अरुणा चौधरी

नीक सँ स्मरण त नहि अछि ओ मास। कारण ई घटना बहुत दिन पहिलुक अछि। संभवतः भादव मास छलैक। बड गर्मी छलैक। सूर्य भगवान अपन बारहो कलाक प्रदर्शन क रहल छलाह। तहिया हमरा लग ड्राइवरक सुविधा नहि छल तेँ एकटा ऑटो रिजर्व क हम बोरिंग रोड चौराहा पर विकासक ऑफिस जा रहल छलहुँ। कार्य अत्यन्त आवष्यक छल तेँ एहि अकाल बेर मे घर सँ निकल' पड़ल छल। रौद बड्ड तिक्ख छलैक। एक बोतल पानि राखि लितहुँ से सोह नहि रहल। विकासक ऑफिस भेटिए नहि रहल छल। ऑटो बाला खिसिया गेल आ कहलक- ''मेरा पेमेन्ट कर मुझे छुट्टी कर दीजिए और ढूँढ़ते रहिए अपना जगह।''

हम ओहि तपैत दुपहरिया मे ऑटो बाला के भाड़ा दय विदा कयलहुँ आ पैदले ऑफिस ताकय लगलहुँ। तावत एक गोटा कनैत दौड़ल आयल आ पूछलक- ''मेरा सामान कहीं देखीं है? बहुत ही मूल्यवान था। पता नहि! कहाँ खो गया?" अस्वीकृति मे हमरा मूड़ी डोलबैत देखि ओ आगा दौड़ गेल। दू-चारिए डेग चलल हएब कि अपना पाछू ककरहु पएरक धाप सुनाइ पड़ल। मूड़ि के देखलहुँ त एकटा मजदूर सन व्यक्ति हमर पाछू-पाछू आबि रहल छल।

जहिना हम घूरि के तकलियेक कि ओ सहटि के हमरा लग आबि गेल आ पूछलक कि ''आपका कोई सामान तो नहीं खो गया है?'' हम ओकरा कहलियेक जे अखने एक गोटा कनैत आगू दौड़ के गेल अछि। संभवतः ई ओकरे सामान छियैक। जाउ, जा कय ओकरा द दियौ। ओ व्यक्ति हमरा सऽ कुतर्क करैत कहय लागल - ''हम कैसे उस आदमी को पहचानेंगे? लिजिए, यह सामान आप ही रख लिजिए।'' हमर मन त गर्मी आ प्यास सँ बेहाल छल से हम खौझाइत कहलियैक - ''त अहीं कियैक नहि ई सामान राखि लैत छी।'' कहि हम झटकि के आगाँ बढ़य लागलहुँ। तावत सामने सँ एकटा मैल-कुचैल, फाटल वस्त्र मे एक गोटा आबि ठाढ़ भ गेल आ कहलक- ''मैडम आपने उस व्यक्ति के हाथ का सामान भी नहीं देखा और कह दिया कि आपका सामान नहीं है। देख तो लेतीं कि कहीं आपही का सामान तो नहीं गिर गया है?''

हम ओहि आदमी के कहलियैक कि आब त हतरा ओहि आदमीक चेहरा सेहो नहि स्मरण अछि। यदि ओ सामना आबि जाएत त ओकरा हम चिन्हबो करबैक की नहि?

कि तुरत ओ एक आदमी के पकड़ि के आनलक आ कहलक- मैडम! यही वह आदमी है। देखिए इसके हाथ का सामान।

हम देखलहुँ - एकटा पुरान सन चौदोबर कपड़ा मे सोनाक बिस्कुट लपेटल छलैक। हमरा आब ओहि दुनू व्यक्ति पर बड्ड तामस चढ़ल। हम तमसाइत कहलियैक- ''त एहि मे हम की क सकैत छी? जाउ अपन सामान ल क, भागैत जाउ एतय सँ।'' ओ दुनू कहलक- ''हम दुनू त बड्ड गरीब छी। रास्ता मे हमरा ई सामान खसल भेटल। अहाँ त सुखितगर लोक छी। एकरा कीनि लिअ आ हमरा सब के वाजिब एकर जे पाइ हेतैक, से द दिऔ।'' ई सुनैत देरी हमरा एड़ी सँ टिकासन धरि लहड़ि गेल। ओ सब आब जिद्द पर उतरि आयल छल।

कहलक- ''इस राज के आप तीसरे राजदार बन गये हैं। इसीलिए आपको तो अब यह लेना ही पड़ेगा।'' हम खिसिआइत कहलियैक- ''हमरा एहि मे कोनो कश्ट नहि अछि। अहाँ दुनू गोटे ई सामान पौने छी तेँ दुनू बाँटि लिअ आपस मे।'' एहन गप नहि छैक कि हमरा सोन सँ प्रेम नहि अछि। कनेकबहि दिन पहिने हम बैंक सँ सोना के सिक्का खरीदने रही। जखन ओ ल सोनार हीरा-पन्ना लग गेलहुँ त ओ कहलनि जे दोसर सामान पर हम 25 प्रतिशत काटि के पाइ देत छियैक। एहि घटना सँ सोन किनैक हमर इच्छा मरि गेल छल आ दोसर जे अखन गर्मी आ प्यास सँ मन लहु-लुहान हालति पर विकासक ऑफिस नहि भेट रहल छल।

एकाएक फोन पर ध्यान गेल। जा फोन सँ विकास केँ पुछि लितियनि जे कतय हुनक औफिस छनि? मुदा ओहि सुनसान-वीरान सड़क पर ओहि दुनू व्यक्ति लग फोन निकालैत डर होमय लागल। कनेक दिन पहिने बड़का बौआ एतेक दामी मोबाइल कीन क देने छल। कनेक साहस करैत उपरे-उपर ओकरा दुनू के डँटलौं- भागए छै कि नहि, की पुलिस के बजबियैक। पुलिसक नाम सुनितेक संग ओ दुनू तुरंत के कतय निपत्ता भ गेल से नहि पता!

हमर जान मे जान आयल। तुरत विकास के फोन कयलहुँ। ओ अपन मोटरसाइकिल सँ आबि हमरा अपन औफिस ल गेल। औफिस पहुचैत-पहुचैत हम अर्ध मुर्छित अवस्था मे भऽ गेल रही। हार हालत देखि विकास अत्यन्त चिंतित होइत। पुछलक- ''की भेल आण्टी? अहाँ अस्वस्थ लागि रहल छी!'' हम कहलियैक- ''पहिने पानि मँगा।'' ओ तुरत बगलक दोकान सँ एकदम बर्फ सन ठंढ़ा पानि मँगौलक। हम खूब नीक सँ ओहि पानि सँ हाथ-मुँह धो, पानि पीबि कनेक सुसतौलहुँ, तखन सबटा घटलाहा वृतांत ओकरा सुनौलियैक।

विकास कहलक- आण्टी! अहाँ लोभ नहि तैँ बाँचि गेलहुँ। ओ त अहाँ बड़का आपराधिक गिरोह सँ धीर गेल छलहुँ। बाँचि गेलहुँ अहाँ आइ। ओ कोनो सोन-तोन नहि छलैक। सुनसान सड़क पर अहाँ के एसगर देखि आ सुखितगर बुझि ओ सभ अहाँ सँ पाइ ऐंठय चाहैत छल। अहाँ के लोभ मे फंसा मोल-तोल क जे पाइ लग मे छल हएत से ठगि, चलैत बनैत।

हाथ-मुँह ठंढ़ा पानि सँ धो लेला सँ आ पानि पीलाक बाद मन कनेक स्वस्थ भेल त मन पड़ल- पोता आयल छल त हमरा लेल टॉफी आनने छल। गोल्डन कलरक रैपर मे गोल्डन कलरक टॉफी रैप कएल छलैक। आब हमरा ध्यान पड़ल जे ओहि दुनू व्यक्ति लग ओहिने कागज मे रैप कएल ओ कथाकथित सोना छलैक।

आब हमरा भीतर डर सन्हियाय लागल सत्ये! आइ त हम बाल-बाल बचलहुँ।

■

कर्फ्यू

✍ चंदना दत्त

पुरब दिशामे लाली पसरि गेल छल। सुर्यदेव अपन सातो अश्वक डोरी थाम्हि विश्वमे स्वर्णिम आभा पसारि चुकल छलाह। अंजनिपति पवनदेव मंद-मंद मुस्कानसँ विश्व के सिंहकी दऽ जगा रहल छलाह। कटहर गाछपर पोरूकीक जोड़ा उठि गेल छल आ घऽरक रोशनदान मे बगड़ाक खोतामे ओकर नान्हिता बच्चा चेहों चेहों कऽ रहल छल। आब भोजनक खोजिमे गीतुक अंगनामे फुदक रहल छल।

'रौ बा, कतेक किरिन उठि गेल, आय सोनुआमाय अंगनो नहि बहारलकऽ, आ गीतु अखन तक सुतले छय आ एखन धरि ओकर मम्मियो नहि चिचिया रहल छथिन-

गय गीत उठ ने, बस छुटि जेतौ, ई सब दिनका नाटक छैक गीतु आ ओकर मम्मीके,

'मम्मी कनि आर सुतय दिय ने अखन आधा घंटा देरि छैक' गीतु सब दिन चद्दरि तानि केर करोट लऽ लै। ताहि पर ओकर पप्पाके ट्रेन छुटबाक धड़फड़ी।

मम्मी ओ सोनुआमाय भोरसँ नचौत रहेत छल सब दिन, धड़फड़मे गीतु आ ओकर पापा जे जलखय करथिन्ह, ब्रेड आमलेट, पोहा, सत्तुपुड़ी, हलुवा, केक, घुघनी, दूध बिस्कुट से आधा-छिधा खाय आ भागय, जातक गीतु आ ओकर पप्पाके विदा कऽ कऽ मम्मी आ सोनुआ माय घुरथि ता नन्हकीं बगड़ो बचल खुजल जलखई अपन खोंतामे धऽ अबय धिया-पुताके जलखय। धिया-पुता खाकऽ मस्त आ फेर ओ भोजनक जोगाड़ मे इम्हर ओम्हर टहलान मारय।

आय कि भऽ गेलय। कोनो अनहोनीक भय भ गेल नन्हकीकें। रवियो दिन तऽ सोनुआ माय अबिते छल आ गीतु माय संगे चाह-बिस्कुट खाए तऽ एकाध टुकड़ी नन्हकीके भेटिय जाए। गीतु आ ओकर पप्पा देरिसँ उठैथ छलथि मुदा ओहिसँ कि मम्मी तऽ चौकामे लगले रहैत छलथि आय ऐना सुन किय?

चिन्ता घेर लेलक नन्हकीके, आय कतेक दिनसँ खोता छल ओकर एहि घरमे।

हारि कऽ जलखइक जोगाड़मे फुर्र फुर्र करैत चौबटिया पर गेल।

ले बलैया, आय तऽ एत्तहु भम्म पड़ि रहल छैक, एत्तए तऽ बारहो मास छतीसो दिन भोर चारिये बजेसँ राति बारह बजे तक जन-मजूर, धिया-पुत्ता, हाकिम हुक्कामक गाड़ी घोड़ाक चिल्लपों लगले रहैत छैक, कोनटा पर शिबुआक चाहक दोकानपर पचासो गाहक लैन-लगेने रहैत छैक, ओ चाह बनविते तत्तै सुअदगर छैक, कहियो काल पैडि लगैत छल ओकरा, बिस्कुट आ नमकीन खस्ता कतेक दिन बच्चा सब लेल लऽ जाएत छैक। आखिर भैलय की मनुख के, काल्हि तक तऽ सबटा ठीके छल।

ओत्तय सँ फिरीसान फिरीसान भय नन्हकी नवकीपोखरि क महार परका बड़गाछ पर उडैत उडैत पहुँचल। ओतय त हरियल सुग्गा, पम्मो पोरूकी, उजरी बगुला, भुल्लीमैना, कजरी कोइली, चमको कौआ, सबके मीटिंग पहिनेसँ चलि रहल छल।

'कि यैय सखी सब, कि हाल चाल?' नन्हकी सवाल कयलक। चुनिया चुनमुनिया चुं चुं करैत पूछलक।

हं, अपना सबके तऽ ठीके छै बाकि मनुक्खे के किदन भ गेल अछि, भोरे सँ बौआ रहल छी, कतहु धियापुता, लोक-वेद के नहि देखलियै, खाली रोड, सुन्न-मसान लगैत छैक।

हमरा त डऽरे सँ हालति खस्ता अछि डाट खाली, बाट खाली, पोखरि इनार खाली, देखु ई इस्कुलो खाली, खाली पुलिसबे देखाइए कजरी कननमुँह भेल कूकूएली।

एहन दिन त अपन जिनगीमे नहि देखने छलौं काकी, नन्हकी चुह-चुहाएल।

'हम तऽ अपन जिनगी मे देखने हे नहि रही आ तों तऽ अखन जनमे लेने छ', बुढ़ा बाबा गिद्ध बाजि उठलाह।

हमरा त अनहोनी लगैये रौ बाप, कि अनर्थ हेतए आए, अपना सब कतय नुकेबय रौ बाप, डऽरे कनैत चमकी कौवी कांव कांव कऽलक।

'आब तोहर रकन्ना कयने अनर्थ टरि जेजय जेना, चुप भऽ जो, एक बेर तऽ भूकम्प तेहन जोर सँ आएल छल कि हमर खोंतासँ सबटा अंडा गुड़क के फूटि गेल छल आब ओहिसँ पैघ कि अनर्थ हेतए?' उजरी बगुली प्रलाप केलक।

कहियासँ ने सुनय छिए जे मनुक्ख चान पर चढ़ि गेल, कतहु चाने पर तऽ नहि चलि गेल निवास करय लेल। रातियो भरि जे गाड़ी घोड़ा बन्न नहि रहए अछि मनुक्खक से काल्हि राति सब बन्न, हमरा तऽ हुअए लागल जे आब हमरा रातियो कऽ सुझब बन्न भऽ गेल अछि कि?

नयनसुख उल्लू अपनो हँसैत अपन दुखड़ा सुनेलक। हँ रौ भाय किछु भारी अनर्थ भऽ गेल अछि। ऐहन तऽ कहियो ने भेल छल जे मातारानी आ भोलाबाबाक दरबारक पट्ट बन्न भेल हों, चढ़ौवा परसादीक अक्षत केरा पर जिनगी बीत गेल अखन ताहू पर आफद भऽ गेल। भुक्खे प्राण जाए वला हई, आब ने प्राण बांचत जनहि हौ राम। नटवर वानर कुहरैत उपरका डाढ़ि सँ सोखियायल।

'गुटर गुं, गुटरगुं, अनेरे घोंघाऊज नहि करय जाए जो, हम जे कहय छी से मोन दऽ सुनयऽ सब गोटे।' उड़ैत आबि बीचुलका डाढ़ि परसँ बाजल सोनकी कबुतरी।

'हँ, हँ बेसु बहिन आ बुझाऊ हमरा सबकेँ एहि दुनिया के हाल, अहाँ तऽ सबतरि जाए छी ने। नीलकंठ सोनकीकेँ स्वागत केलखिन्ह। सोनकी बड़ बुधियारि आ देश-विदेशक सबटा हाल-खबरि रखैत छलीह।

सौंसे नगर-जहान सुन-मसान भऽ गेल छैक। कतहु कतहु मनुक्खक दर्शन भऽ रहल छैक।

बात ई भेलय जे एहि दुनियामे बहुत रास देश छैक, सब आब विज्ञान साहित्य तकनीकके पढ़ि-पढ़ि आगाँ बढ़ल जा रहल अछि, सब ऊपरा-ऊपरी मे एकसँ बढ़ि कऽ एक अस्त्र-शस्त्र, बम-परमाणु बम बनेने जा रहल अछि। ओहिमे जे एगो देश छैक से अपना सबकें पड़ोसेमे छैक ओतुक्का लोक सब खाद्य-अखाद्य खाइते रहैत छैक एत्तय तक जे सांप, बिच्छु, तेलचट्टा, चमगादड़ सबटा खाई छै।

हौ-बाप हौ बाप, सांपों खाई छै लोक, ठीके मनुक्ख बड्ड दुष्ट होइत छैक, बुझि तऽ सांपके जे खा लैत छैक। केहन विषधार होई छैक, गीड़ जाइ छैक, कजरी बाजल।

से जे हो, सांप खाऊ, छुछुंदर खाऊ, पड़ोसिया देश, मुदा अप्पन देशक मनुक्ख किया पतनुकान नेने छैक, चौक चौराहा किये सुन्न भेल छै? चमकी कौवी टप्प सँ बाजल।

हे कनि लोल बन्न करय जाए जाऊ आ सोनकीक' गप्प पर धियान दऽ जाए जाह। ओ देश विदेशक खबरि रखैत अछि। ललकी मैना गंभीर स्वरमे बाजल।

हँ तऽ सुनय जाए जाह, ओतुक्का बुहान शहरक लोक जे चमगादड़क झोर पीलकै, ताहि सँ एहन सर्दी, खोखी बोखार भऽ गेल जे तेहन छुतहा आ पसरौआ छैक जे पूछु नहि, ओहि रोगक रोगी जतय जाए छै वा जे कोनो चीज वस्तु छु दैत छैक से दोसरके पटि जाए छ, सोनकी करिछाक' कहलक।

अखन धरि एहि बीमारीके कोनो इलाजो नहि अछि। आ ओहिठाम सँ ई बेरामी सौंसे पसरि गेल आ पटापटि लोक मरल जा रहल छैक। तैं अपन सबहक जे प्रधानमंत्रीजी छथिन, ओ सब सँ आग्रह कयलनि अछि जे सबकियो घऽरे मे रहू, ककरो सँ अनेरे भेंटघांट नहि करय लेल, रेल-बस, फेकटरी, हाट-बजार बंद करू आ घरे मे रहू। ने बीमार सँ भेंट हैत आ ने बीमारी हैत। तैं ई हाल छै मनुक्खकें।

'आब बुझैत हेत केहन होइत अछि पिंजरामे बंद भेनाई, हमरा कनि नकल करय कि अबैत अछि, जखन देखु बन्न कलैत अछि।'

अपने गोलका आँखि नचबैत हरियल सुग्गा ललका ठोढ़ पर निच्चा करैत बाजि उठल।

'पिंजरामे केहन कष्ट होइत अछि से हमहीं बुझैत छी, उड़वाक क्रममे पांखि टुटि जाएत अछि पिंजरासँ चोट खा खा कऽ।' ओकर दुख सुनि सब दुखी भऽ गेल। पुनः चमको कांव-कांव कयलक 'एय-एंय तखन ओ जे संपखौका-बिच्छु-गिरगिट खौका सबके किछु कहलक ने, ओकरा देशमे अन्न-पानि नहि होइत छैक! कांव-कांव-कांव।'

अपना देशमे कि नहि होइत छैक अन्न पानि तखनो कहाँ जान बचय अछि हमर नेना सबके मे मे मे... 'गोछक नीच्चां मे घास चरैत लाल बकरी बाजल।

'से तँ ठीके कहैत छी लाली बहिन, एखन ई हल्ला-गुल्ला मे कनि चौनसँ भरि नजरि देखय छी धिया-पुताके, कुंकड़े कू....।' धमसँ ऊपरका डाडि पर बैसैत खुशी सँ बाजल।

'माने मनुक्ख दुख अपना सब लेल खुशीके बात, पोखिरमे हेलैत सोनमछरी बाजि उठल।

'कि कहबय सोनमछरी बहिन, हमरो सबके तऽ मनुक्ख कम दुख नहि दैत अछि, खेत-खलिहानमे खाद छिटय, जैह जानवर-चिडै नीक लागल ओकरा घऽरमे कैद करत वा खा जैत, अपन मनोरंजन लेल जानवरके दुख दैत, बड़का शेरके पिंजरामे बंद कऽ देत, मोबाइल के टावर बना बगड़ा-चुनमुनी के नाशक देलक, तहियो हमरा सबके ओकरा गतिमाने रूप नीक लगैत अछिंश सोनकी कबूतरी बाजि कऽ ऊड़ि गेल।



पसरैत माथा, सिकुरैत छाती

✍ रतन कुमार रवि

गोर लगैत छी भैया- ई कहैत सुखेंद्र अपन जेठ भाय वीरेंद्र क चरण स्पर्श केलक।

वीरेंद्र अकचका गेले आ पूछलकै- सुखेंद्र बोआ छी रौ? नीके रह। रौ कतेक रास बरखक पछाति आय तोरा देखी रहल छियो। कनिया आ बच्चा सभक हाल चाल कह।

भैया- सुखेंद्र कहलकै। नीके छथिन। धियो पुत्ता सभ ठीके अछि। अपन कहु।

गामों में सभ ठीके छै-वीरेंद्र कहलकै। मुकदमा क तारीख छल तैं शहर आयल छलहुँ। रौ सुखेंद्र। गाम के त तों साफे बिसैर गेल छी। हम सभ नै मोन परैत छियो? स्मरण छौ जे कतेक रास बरख भ गेलो तोरा अपन गाम गेला। भौजियों सदिखन चर्चा करैत रहैत छथुन। बाल बच्चा त मोन पड़ला पर एके ताले तोहरे सभ के नाम रट लगैत छौ। माललियो जे शहर में तों अपन बड़का मकान बना लेने छी मुदा जन्मडीह आ अपन गामक के दोसरे महत्व होयत छै नै रौ।

ऐहि बेर गर्मी छुट्टी में सभ कोई आ। आमों बड फड़ल छौ। बच्चो सभके त अपन गाम क मनोरथ पूरा क र दहिं।

भैया यौ- सुखेंद्र बात कटैत बाजल। कियो अपन जन्म डीहो बिसरैत छै? केना बिसैर पेबै उ घर आ स्थान के जत हमर जनम भेल आ जत सँ डेग भरैत हम अपन ई मुकाम पर पहुँचल छी मुदा की करी? अहाँक कृपा सँ हम सरकारी महकमा में बड़का अफसर छी। आव हम हाई सोसाइटी के लोग छी। आफिस क काज आ सोसाइटी मेंनटेन करै में भोर सँ ल क राति में सुतै काल धरि हमरा पलखैत नै भेटैत अछि। ठीक छै जे बड रास नोकर चाकर छै मुदा ओकरो पर त हमरा सवार रह पड़ैत अछि। घर मे सदिखन पार्टी वाटी चलते रहैत छै। वीआईपी लोक के एनाय गेनाय हरदम लगले रहैत छै। आईयो हमरा एहिठाम बड़का पार्टी अछि। ओकरे खरीददारी लेल अखन हम बाजार आयल छी। संजोगे सँ अहाँ सँ हमरा भेंट भ गेल।

रौ सुखेंद्र। वीरेंद्र कहलकै- ई जंजाल त सभके जिनगी धरि लगले रहैत छै। लोक ऐकरे में कतरव्योत क आनो आनो सभ काज क लैत छै। मोन बनतौ त तोरो गाम ऐवाक समय भेटिये जेतौ। दूरे कते छौ अपन गाम। तोरा त मोटरों गाड़ी छौ। बंच्चो सभ अपन पीतिओत भाय बहिन के बिसरैत हेतै। गाम आ। एको दू दिन लेल। ललितो त कतेक दिन सँ गाम नै आयल अछि। तों सभ भाय बहिन हमरा सभके बिसैरे गेल छी। पता नै हमरा सभ सँ की मांख छौ? कहियो फोनों फान सँ कुशलों क्षेम नै पूछैत छी तों सभ।

ई सुनी सुखेंद्र किछु क्षण चुप रहल फेर ठहैर ठहैर गम्भीर स्वर में बाजल- धिया पुते टा नै हमहूँ दूनू प्राणी बातानुकूलित घर सँ बाहर निकलैत देरी हक म लगैत छि। टाइल्स बाला घर के नै रहने सभके तड़वा छिला जाइत अछि। बच्चा सभके फास्ट फूड आ मिनरल वाटर आ अंग्रेजी में गप्प करैवाला संगी सभ चाहवे करी। पलंग आ गद्दा बिना हमरा सभके नींदों नै आवैत अछि। हमरा सभके आव टाइल्स लोर, लश बाला बाथरुम, यूरिनल आ वाश रूम सभ क आदत अछि।

भैया! हम जानैत छि जे गाम में अखन तक ई सभ के अभाव अछि। तैं मोन रहितो हम सभ गाम जाई सँ कतराईत रहैत छि। बाल बच्चा कह लागत जे पापा क गाम क परिवार आ लोग कतेक गरीब आ बैकवार्ड छै। उ सभ ई बात अहिठामक हाई सोसाइटी के अपन दोस्त क मध्य फैला देतै। ई सुनि हम सभ लाजे मरी जाएव। आर हां बहिन ललिता सभ ठीक अछि। हमरा सभके एक दोसर अहिठाम आवाजाही आ फोन फान सँ बात होइत रहैत छै। ओकरो हमरे ऐहन स्थिति छै। भैया। बड़का लोक होवै के कारणे हमरा सभ के बड़का सोसाइटी अछि। तैं हाई सोसाईटी जँका वेवस्था क र परैत अछि। बहुत रास मोन रहितो ओकरा मारैय परैत अछि। हम बुझैत छी अहाँक मजबूरी। माय बाप क असमय मरणोपरांत पारिवारि क सभटा भार अहीं पर पड़ी गेल छल। अहाँ हमरा दूनू भाय बहिन के पढेलिये। नीक नीक घर मे बिआह करैलिये। बहिन अपन सासुर गेल और हम त नोकरी भेटैत देरी आहाँ सँ भिन्न भ गेलहूँ। जखन आहांक बेर आयल त आहाँ

असगरे परि गेल छी।

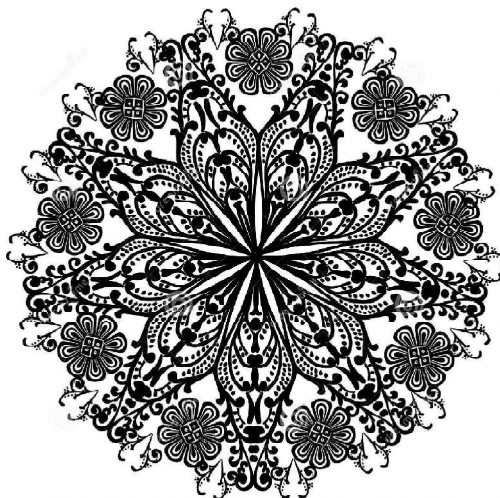
आव आहाँ धिया पुत्ता क पढाई लिखाई क वेक्स्था करव वा रहन सहन क स्तर ऊपर करै में साधन खर्च करब? सभ किछु बुझतो हम दूनू बहिन भाय अहाँक लेल किछु नै क सकैत छी। हमरा सभके अपन स्टेटस निर्वाहन सँ पलकैत कहाँ भेटैत अछि जे दोसरो के देखल जाय। क्षमा करव भैया। दोस्ती, रिश्ता आर दुश्मनी अपन बराबरीये में ठीक रहैत छी। सांच कहु भैया! आगू जे होय मुदा आहाँ अखन हमर स्टेट्स के खाँचा में फिट नै बैस रहल छी। तैं हम अहाँ सभके अपना अहिठाम होबय बाला कोनो काजो प्रयोजन में नै बजबैत छी। हम आ ललिता अपन स्तर क लोग ओहिठाम आवैत जायत रहैत छी। तैं बाल बच्चा के काका, काकी, मामा मामी पिसी, पिसा ऐहन रिश्ता सभक शौक पूरा भ जाइत छै। जहिया अहूं उ स्तर पर पहुंच जैवे तहिया सँ हमरा सभके अहाँ अहिठाम आन जान शुरू भ जाइत। एकटा बात आर भैया। सुनि क दुख नै करव। अहाँ सभ बिना बजौने हमरा अहिठाम नै आयव जाएब करव त नीक रहत।गरीब और बैक वार्ड जानि क हमर बच्चा वा नोकर चाकर अपमान क देतै त हमरा नीक नै लगत मुदा हम ओकरा सभके अपन स्टेटस देखी मनों नै क सकवै। सांच कहु त हम सभ तखन अहाँ सभके चिह्नवो नै करव। ई कही क सुखेंद्र वीरेंद्र के गोर लगैत बाजल-भैया आव हम जाइत छी। हमर बात खराब लागल होयत मुदा ई आजु कालक सांच छै। ई कही क सुखेंद्र विदा भ गेल।

अपन सहोदर छोट भाय क बात सुनी बीरेंद्र छगुनता में पड़ी गेल। ओकरा सुखेंद्र अनचिन्हार जँका ला ग लागल। ओना सुखेंद्र क बात ओकरा बड खराबों नै लगलै। वीरेंद्र सोच लागल-पावर और पैसा अपना संगे कते दुर्गुण आनैत अछि। लोग क मोन कते बदैल जाइत छै। डायर मोटा क अपना के गाछ बुझ लगैत छै। कायल तक हमर छोट भाय आ पारिवारिक सदस्य छल। आय पराया जँका लागैत छल। दोष सुखेंद्र के नै अछि, ई युग आ समय क दौर केर प्रभाव छै। समाज परिवार कमजोर आ बिखण्डित हेतै त अपनो लोग एक दोसर सँ अनचीन्हार हेवे करते। डर ऐतवे अछि जे कही हमर बाल बच्चा सुखेंद्र परिवार सँ बेशी हाई फाई भ जेतै त उ सभ अपन काका काकी आ पीतीओत भाय बहिन के चिन्हवो नै करतै। ओना

हमर भाय बहिन व परिजन बदलैत युग मे जेहन बनै वा करै मुदा हमर हृदय आ घरक दरवाजा ओकरा सभ लेल सदिखन खुजले रहतै। मेघ में उड़ैत उड़ैत चिड़ियां जखन थैक जायत छै त उ घूईर क कोनो गाछ क डायरे वा बैसै लायक जगहे पर बैसैत अछि।

एक दिन बनोआ रिश्ता और हाई फाई सोसाइटी स उईब क ओहन लोक सभ परिवार समाज क मिठास लेल फेर सँ अपन जड़ सँ जुरवे करत। हां! ओहन दिन अवैत तक पसरैत माथा आ सिकुरैत छाती सँ निकलल पीड़ा त लोक समाज के भोगै ये टा पड़तै।

■



....सैह कहलक चोरा

✍ प्रदीप बिहारी

राय दाक फोन आयल। टू कालरमे हुनक नाम देखितहिं अपराध-बोध भेल। हम बिसरि जाइत छी। सभ बेर गप करैत काल कहैत छियनि जे आब हमहीं फोन करब, मुदा से भऽ नहि पबैछ।

''राय दा प्रणाम।''

''की हौ? तोरा भरोसे रहब, तं गप्पो ने हएत।'' अपन चिरपरिचित हंसीक संग ई बात बजलाह।

''हं, राय दा। हमरा बुते गलती भऽ जाइए। कोना छी?''

राय दाक हंसीमे पहिने सन खनहनी नहि छलनि। स्वर क्षीण बुझायल। लगले पूछि देलियनि, ''मोन ठीक अछि ने। आवाज कमजोर बुझाइए।''

''हं, एमहर कने गड़बड़ा गेलियैए।''

''की भऽ गेल?''

''की हएत? लगैए, बुढ़ारी आबि गेल। पचासी-छियासी धरि तं नहि गुदानलियै। मुदा, आब लगै छै जे हिलऽ लगलियैए।''

''अहां सनक सकारात्मक आ अनुशासनप्रिय लोक लेल पचासी-छियासी तं यौवनावस्था होइत छैक।'' हम बजलहुं, 'से भेल-ए की?''

''चारि दिन पहिने घुर्मी लागि गेल आ खसि पड़लहुं। बुझह जे दूध देबऽ बला ताही घड़ी आबि गेल। डब्लुक संगीकें बजा कऽ आनलक आ अस्पताल लऽ गेल।''

डब्लु राय दाक एकमात्र पुत्र छनि। ओ कजाकिस्तानमे रहैत छनि। पुतौहु आ पोती सेहो। डब्लुक मित्र सेहो हुनकहिं कैम्पसमे रहैत छनि। ओ राय दाक धर्मपुत्र सन छनि।

राय दा बजलाह, ''केशव अपन काज-रोजगार छोड़ि दू दिन हमरा संग अस्पताल ओगरने रहल।''

''मुदा, भेल की?''

''से तं एखनो ने कहलक अछि।'' राय दा बजलाह, ''अस्पतालमे पुछलियै तं कहलक जे 'वेट एण्ड वाचऽ मे रखने अछि। रिपोर्ट एखनि धरि भेटल-ए। दवाइ दऽ कऽ अस्पतालसं बिदा कऽ देलक। ओना, आब रिपोर्ट आबि गेल हेतै, मुदा आनत तं केशवे। आ, से ओ तखने आनत, जखन ओकरा छुट्टी भेटतै। नव-नव स्टार्ट अप कयलक अछि। व्यस्त हैत।''

'तं एखनि?

''ओहिना, जेना रहैत छी। देहमे हुब्बा लागि रहल अछि। पहिने जकां किछु-किछु बना लैत छी। टिफिन बला छुट्टी लेने अछि। गाम गेल अछि। रातुक भोजन केशव दऽ जाइए। ओ दऽ जाइए, सेहो अपराधे-बोध होइए। सोचौ छी, काल्हिसं कोनहुना अपने देह उसकाएब।''

''मुदा, से पार लागत?''

''पार लगाबऽ पड़त।'' राय दा बजलाह, 'अस्पतालमे डाक्टरके कहलियै जे हम फौजक मेडिकल कोर मे रही, तें हमरा सभ किछ सुनबाक करेज अछि। बाजू, की भेल अछि हमरा? एहन कोन टेस्ट छै जकर रिपोर्ट चारि दिनमे औतै। तखन ओ कहलक जे चिन्ताक बात नहि छै। हर्ट, फेफड़ा आ किडनीमे थोड़ेक गड़बड़ी बुझाइए। ताहि पर हम कहलियै जे कने-मने रहहु दियौ। आब कते दिन धरतीक भार बनब। हमरा छोड़ू अस्पताल सं।''

''कने-मने तं चुटकी बजबैत अहां अपने ठीक कऽ लेब। खान-पानमे बरनेम आ व्यायाम सं सभटा ठीक कऽ लेब।''

''खान-पान तं तों देखिए कऽ गेल छह। आब पहिने सन व्यायाम नहि भऽ पबैए।''

''डब्लुकें सूचना नहि देलियै?''

''फोन कयने रहियै। नहि उठौलक। ओना पहिल बेरमे फोन उठायब ओकर स्वभावमे नहि छैक।''

''तं कौल बैक कयने होयत?''

''सेहो नहि कयलक अछि, मुदा करत।''

राय दा हमर धीयापुताक हालचाल पुछलनि। तकर बाद बूझऽ चाहलाह जे हम मॉर्निंग वाक करै छी कि नहि। योग करै छी कि नहि? कोन-कोन आसनद्य करै छी? हम हुनक जिज्ञासा शान्त करैत रहलियनि।

मोबाइलक कनेक्शन राय दा ई कहि काटलनि जे हम बरोबरि फोन करैत रहियनि। हफ्तामे कम-सं-कम एको दिन। ओही क्रममे दिनेशक चर्च सेहो कयलनि। ओ लाइफ सर्टिफिकेट अपना शाखासं जमा कऽ देलकनि अछि।

पछिला बेर हम हुनका भेंट करऽ गेल रहियनि। बरोबरि कहथि जे भायसं भेंट करऽ बरौदा अबै छह आ कने घुसकि कऽ आनन्द अयबह, से नहि? आ सभ बेर हम भेंट नहि कऽ पयबा लेल मोनहिं मोन हुनकासं क्षमा मांगी आ अगिला बेर भेंट करबाक बात कहियनि। हुनका जखन जनतब भेलनि जे बरौदासं हमर भायक बदली भऽ गेलैक, तं हतोत्साहित भेलाह। बाजल रहथि, ''आब तं एमहर नहि अयबह। एहि दिस नहिए घुरतह तोहर पयर।''

''एना किएक कहै छी? हम आयब।''

''भरोस नहि दैह।''

हम चुप भऽ जाइ।

से, जखन हमर छोट बेटाक बदली बरौदा भेलैक तं ई जनतब सभसं पहिने राये दा कें देलियनि। सोचलहुं, हुनकर उमेद तं जागि जानि। ओ प्रसन्न भेल रहथि। बाजल रहथि, 'नीक लागल। बेस, ई कहह जे आबो धनुष टुटतै कि नहि?

''हं राय दा। धनुष टुटतै। आब जहिया आयब, अहांसं भेंट कइए कऽ बरौदा जायब।''

तहिना कयलहुं। अहमदाबादमे दिनेशसं भेंट करैत आनन्दमे राय दा सं भेंट कयल।

राय दा आ दिनेश दुनू हमर सहकर्मी। दिनेश बैचमेट आ राय दा एक साल सीनियर। ओ भूतपूर्व सैनिकक कोटामे बहाल भेल छलाह, तें बयसे हमरासं बड़ जेठ। मित्र आ अभिभावक, दुनू छलाह।

अपन दुआरि पर हमरा ठाढ़ देखि राय दा जेना चहकि उठलाह। बैसोलनि। बहुत रास पहिलुक गप सप मोन पाड़ैत रहलाह। कहलनि जे टिफिन बला भोजन करैत छथि। चाह, जलखै अपने बना लैत छथि। छओ मास पहिने डब्लु आयल रहनि, तं जूसर कीनि देलकनि। जूस तैयार कऽ लैत छथि। मोन भेलनि, तं कहियो बजारसं फल कीनि कऽ अनैत छथि, नहि तं ऑनलाइन मंगा लैत छथि।

गामघरमे किछु बांचले ने छनि। नोकरी भरि अपने बाहरे-बाहर रहलाह। घर-दुआरिक सुधि नहि लेलनि। दुनू बेटी आ डब्लुक बियाह बाहरेसं कयलनि। मात्र कुलदेवताक पूजा लेल गाम गेल रहथि। तकर बाद बर्खमे एकाध बेर गाम जाथि। पाहुने सन। आ, जहिया गामक सोह भेलनि, गाम हिनक सोह नहि लेलकनि। राय दा गामक लेल शून्य। एकटा बिन्दुक बिन्दुपथ मात्र। डब्लुकें नोकरी भेलैक। रहऽ लगलाह बेटाक संग। डब्लु जूति चलौलक। गामक घराड़ी बांचले ने रहनि। पितियौत सभ दफानि लेने रहनि। बचल-खुचल सभ बेचऽ पड़लनि।

डब्लु आनन्दमे बड़ीटा बंगला किनने अछि। ओहीमे राय दा रहैत छथि। ओहीमे हम दुनू गोटें बतिआइत रही। राय दा पहिलुक गप कऽ आनन्दित भऽ रहल छलाह।

हम दुनू बेटीक मादे पुछलियनि। कहलनि जे जेठकी आस्ट्रेलिया मे अछि। धीयापुता नमहर भऽ गेलै। अपनो कोनो ट्रेनिंग लऽ रहल अछि। कहैए जे घरमे असगर बोर होइत रहै छी।

छोटकीक मादे चुप भऽ गेल रहथि। हमरा लागल जे अनेरे पूछि देलियनि। हमरा बुझल छल जे छोटकी बेटीसं नीक सम्बन्ध नहि छनि। बेटिएटा नहि, जमाय आ समधिसं सेहो नहि। कतोक बेर ओ सभ हिनका अपमानित कऽ चुकल छनि। एकबेर बाजलो रहथि, ''बेटी जे कहलक, तकर कतेक मान-अपमान बूझी? मुदा, समधि किएक अपमानित कयलक, से नहि जानि। जतेक जे मांगने छल, से देबे केलियै।''

छोटकी बेटी कने बेसी फरहरि छलनि। पढ़ु-लिखश्मे चंसगर। ओकर बियाह जखन तय करऽ लगलाह, तं ओ साफ मना कऽ देलकनि। कहलकनि जे प्रेम बियाह करब। ताकने छी। राय दाक फौजी मन जागि उठलनि। ओ विरोधमे एना मोर्चा धयलनि जेना कोनो युद्ध लड़बा लेल तैयार। ओम्हर बेटी सेहो तहिना एहि पार कि ओहि पार बला हालमे। आखिर बेटी तं बापेक छलि। हमहीं मध्यस्थता कयने रही। दुनूकें भरोस देने रहियै। राय दाकें ई कहि शान्त कयने रही जे ओ जेना चाहताह, तहिने होयतैक। हमरा विश्वास छल जे हम राय दाकें मना लेब।

हम राय दा कें मनौलहुं। बेटीक जिद मानऽ पड़लनि। मुदा, तकर बादो बाप-बेटीमे नहि पटलनि। कहियो सुनी जे बेटी दूटा बात कहलकनि अछि, तं कहियो समधि।

गपक अंतमे राय दा कहने रहथि, ''तों आइ अयलह तं लागल जे किछु औरदा बढ़ि गेल।'' फेर मुस्कियाइत बजलाह, ''भने अयलह। अइ एहि बंगलाक ओगरबाहसं भेंट भऽ गेलह।''

''अरे, अहां स्वयंकें ओगरबाह किएक बुझै छी? अहां मालिक छियै।'' हम बजलहुं, ''जाधरि अहां छियै, अहीं मालिक रहबै। मुंहक अछैत नाकसं पानि नहि ने पीअल जाइ छै।''

राय दा मात्र मुस्किया देलनि। ओहने मुस्की, जेहन मजबूरीक स्थितिमे मुस्किआइत छथि।

से, राय दा सं फोन पर हुनक दुखित होयबाक बातसं चिन्तित भऽ उठल रही। तीन दिनक बाद दिनेशकें फोन कयने रहियैक। ओ कहलक जे दुखित छलाह। डॉक्टर कहलकनि जे हार्ट, लीवर आ किडनी गड़बड़ा रहल अछि। ओ चिन्तित तं लगलाह, मुदा कहलनि जे एहि तीनूकें देखि लेबै। दिनेश कहने रहय जे आब हुनकर बयस भेलनि। आराम आ सेवा चाहियनि। मुदा...।

हम तय कयने रही जे सभ रवि कऽ राय दा सं गप करब। मदा, अगिला रवि कऽ एना भेलैक जे हमरा फोन करश्सं पहिने वैह फोन कयलनि। हालचालक बाद कहलनि जे डब्लु फोन कयने छल। कहलक जे मोन होअय तं आबि जाउ। मुदा ओ दृढ़ रहथि जे ओकरा लग नहि जयताह।

हम पूछि देने रहियनि, ''स्वास्थ्य? भोजन-भात?''

''सभ फर्स्ट क्लास।'' राय दा बजलाह, ''हौ, तों फेसबुक मे रहै छह। लोक कहै छै जे ओहि पर लोकके ताकल जा सकै छै।''

''हं, मुदा जकरा ताकबै, तकर फेसबुकमे एकाउण्ट हेतैक तखन ने!'' हम बजलहं, ''ककरा ताकबाक अछि?''

''आब तं छेटगर होइतहि फेसबुक जोतऽ लगैए लोक। ओकरो एकाउण्ट हेतैक।''

"ककर?"

"रूपालीक।"

रुपाली हुनक छोटकी बेटी छनि।

हमरा कोनादन लागल। कहलियनि, "अहां के की भऽ गेल-ए? जे अहांसं एत्तेक घृणा करैए, अहांकें पिता धरि मानबा लेल तैयार नहि अछि, तकरा लेल अहां एत्तेक चिन्तित कारण किएक होइत छी। किएक तनाओ लऽ कऽ अपन स्वास्थ्य खराप करै छी?"

"सैह तं हम ओकरासं फेर पुछ" चाहै छियै जे हमर कोन दोख?"

"से, तं कतोक बेर अहां पुछलियै। की भेल? बेज्जतिए कयलक ने।"

"ओकर घृणाक कारण बूझि नहि पबै छी। हमरा सन लोक ओकरा लेल की ने सहलहुं। हौ, हम ककरो चितबियै? ने फौजेमे चितेलियै आ ने समाजेमे। से ओकर लव मैरेज लेल हम तैयार भऽ गेलियै। तोरा तं सभटा बुझल छह। ओकर वैवाहिक जीवन सफल नहि भेलै, ताहिमे हमर कोन दोख?"

"ओकरा मोनमे ई बात पैसल छै जे ओकरा पति-पत्नीक बीच जे मनमोटाओ भेलै तकरो कारण अहीं छियै। अहीं ओकरा दुनू प्राणीक बीच कुटचालि चलियैक।" हम बजलहुं, 'पछिला बरख हमरा अनचोके कटिहारमे भेंट भऽ गेल तं कहने रहय। हम अहांक पक्षसं बेर-बेर बुझयबाक प्रयास कयलियै, मुदा नहि मानलकि। हम मोबाइल नम्मर मंगलियै, तं नहि देलकि। हमरे नम्मर लऽ लेलकि आ कहलकि जे फोन करब, मुदा कहां कयलकि? एक बरख बीति गेलैक।"

एना बुझायल जे हमर गप सुनैत-सुनैत राय दा अतीतमे चलि गेल छलाह। हम हेलो कहलियनि तं साकांक्ष भेलाह मने। कहलनि, "तीनू संतानमे रुपाली लेल हम की-की ने कयल। मुदा...। सुनै छियै जे जालंधरमे अछि। दू टा बेटी छै। दुनू प्राणी काज करैए। मुदा, हमरा सभसं संपर्क मे नहि अछि। ने भाइएसं, ने बहिनिएसं। तें सोचलह जे फेसबुक पर जं ओकरा ताकि दितह, तं ओकर हालचाल बुझैत रहितियै। कने तकियहक।"

बजैत हठात् राय दा फोन राखि देलनि।

रुपालीक मनः स्थितिक बारेमे की कहितियनि? कटिहारमे हमरा कहने रहय जे दाम्पत्य जीवन तं एहन अछि जे ने हम मोनसं पत्नी बनि सकलहुं आ ने ओ मोनसं पति। बाल-बच्चा होयब तं जैविक बात छै। कतोक बेर मोन होइए जे एहि देखौआ बन्हनकें तोड़ि दी। मुदा, बेसाहल तं अपने। से, प्रायः दुनू दिसक यैह हाल अछि। हम कहने रहियै जे पिताक सम्बन्धमे अबस्से कोनो भ्रम छौ, मुदा हमर ई बात ओकरा लेल आयल-गेल सन भऽ गेलैक।

ई गप हम राय दा कें नहि कहलियनि। दुखी होइतथि तें। हमरा बुझल अछि, रुपालीक लेल की-की ने कयलनि राय दा। अपन मान्यता धरि तोड़लनि। अपन जिनगीक सभ सुख आ सेहन्ता सिसोहि कऽ बच्चा सभकें देलनि। प्रायः पचीस बरख धरि गठियासं रूग्ण पत्नीक सेवा कयलनि। हुनक पत्नीक हाल ई रहनि जे कोरामे उठा कऽ नित्य-क्रिया कराबऽ लऽ जाय पड़नि। गठियासं एहि तरहें पीड़ित छलीह जे मोटरी भऽ गेल छलीह। से हुनक निमेरा स्वयं कयलनि ओ। बच्चा सभ छेटगर भेलनि, तैयो पत्नीक निमेरा स्वयं करथि। ओकरा सभकें समय पर स्कूल-कालेज पठौलनि। अपने आफिस अबैत रहलाह। एत्तेक दिनक परिचयमे राय दाक बारेमे कहियो केओ बेजाय नहि सुनलक।

आरंभमे पत्नीक इलाजमे स्वयंकें लेपित कऽ देलनि। डाक्टर-वैद्य, ओझा-धामि, देवी-देवता...सभक गह्वर पर माथ रगड़लनि, मुदा जखन कतहु सफल नहि भेलाह, तं पत्नीक रोगकें नियति मानि हुनक निमेरामे लागि गेलाह। हं, एकटा परिवर्तन हुनकामे भेलनि। गह्वर सभ परसं उनका विश्वास उठि गेलनि। हुनका लेल दुनियामे कोनो देवी-देवता नहि, कोनो ओझा-धामि नहि। कोनो अवसर विशेष पर कुलदेवताक पूजा लेल गाम जाय पड़नि, तं पत्नीकें नेने जाथि। कहियो पूजा पर नहि बैसलाह। जेठ भाय वा भातिज बैसनि। स्वयं एहि सभसं निस्पृह।

हमरा मोन अछि, एकबेर राय दाक संग इलाहाबाद गेल रही। हुनके कार्य रहनि, जे समयसं एकदिन पहिने पूरा भऽ गेलनि। राय दा हमरा कहलनि जे 'संगम'मे नहयबाक मोन होइए। हमरा अचरज भेल। हम प्रश्न दृष्टिएं तकलियनि तं कहलनि जे पत्नी सपनामे कहलखिन जे संगम-स्नानसं मोनक बात पूर होइ छै।

हमरा रहल नहि गेल, तं कहलियनि, "ई केहन बात अहांक मोनमे उपजल अछि? एहि सभ पर अहां भरोस तं नहि करैत रही। तखन?"

राय दा कहलनि, "छोड़ह ई सभ। चलह संगम देखि आबी।"

हम दुनू गोटें तांगा पर बैसि गेलहुं। राय दा संगममे डुबकी लगौलनि। विधिवत् पूजा-पाठ कयलनि। हमरा मोनमे एकटा बात आयल रहय-राय दा हारि गेलाह कि टूटि गेलाह?

संगमसं घुरैत काल पुछलियनि, "राय दा, अहां हारि गेलहुं कि टुटि गेलहुं?"

राय दा एहिबातक उतारा एहि तरहें देलनि, "अपना सभक ओहिठाम एकटा पढ़ुआ पढ़ल जाइ छै-हारने नटुआ झिटुका बेचय। सुनने होयबह।"

"हं, मुदा ई बूझऽ चाहै छी जे ककरा लेल झिटुका बीछलहुं अछि।"

राय दा भावुक भऽ गेलाह, "रुपाली लेल। तीनू संतानमे

वैह बेसी कष्टमे अछि। सोचलहुं, भने सपनेमे सही, पत्नीक मान्यता सांच भऽ जानि। तें ई प्रयास कयलहुं।''

बड़ी कालधरि हम दुनू गोटें चुप रहलहुं। तांगाक चलबाक स्वर टा आबि रहल छल।

एकबेर शनिए दिन राय दा फोन कयलनि। चिन्ता भेल। पुछलियनि, ''नीके छी ने! कोनो विशेष बात?''

''नीके छी। मोन भेल जे आइए गप कऽ ली।''

''पुतौहु आ पोती आयल छलीह।''

''नीक बात।''

''हौ, नीक बात की? आयल छलीह अपन मायकें देवघर पहुंचाबऽ। कोरोनामे ओकरे सभ लग घेरा गेल रहथिन। पांच दिन देवघरमे रहलीह आ बहत्तरि घंटा एतऽ। डब्लु के जिद जे आब एसगर रहऽ के जरुरति नहि। ओत्तहि संगहि रहब। पुतौहु तं कहै छलीह जे संगहि चलू। मुदा...''

''मुदा की?''

''हौ, ओतऽ बौक भऽ कऽ रहऽ पड़त। तीन गोटें अछि- पति, पत्नी आ बेटी। तीनूक तीनटा दुनिया। तीन तरहक विचारधारा।''

''तखन संग कोना रहि रहल अछि?''

''एकटा कौमन प्वाइंट पर एकमत अछि- परिवारमे संगहि रहबाक नाम पर। ओ सभ जे अछि, से अछि। हम तं ओतश औना जाइ छी। हौ, घरमे टी वी नहि रखने अछि। कहै छै जे तीनूक मोबाइल पर सभ किछु छैहे तं टी वी किएक? खाली समय पर भोजन आ दवाइ भेटैत रहत। एकसर बाहरो जयबा पर रोक। कतोक रास टोक-टाक। कत्ते दिन बांचि सकबै हौ?''

''तं जेठकी लग आस्ट्रेलिया चलि जाउ।''

''हं, से ठीक। ओतऽ सभ तरहक सुविधा छै। डेरासं बहरयलाक बाद जं भोतिआइयो गेलहुं तं ओहिठामक पब्लिक सभ खूब मदति करै छै। खाली अपन डेराक पता होमक चाही। जेठकी कहितो अछि जे एत्तहि रहू। जमाय सेहो। मुदा..।

''की?''

''जानि नहि, एकरा केहन लगतै?'' कने थम्हैत राय दा बजलाह, ''जत्तेक दबाओ छै जे जाइए पड़तै कतहु। मुदा, जाइसं पहिने एकबेर ओमहर अयबह। तोरा सभ सं भेंट कइए कऽ देश छोड़ब। एकबेर अपन माटि के देखि-छूबि कऽ परदेश जायब। आ हं...''

''फेसबुक पर हमर छोटकी भेटलह?''

''नहि ताकि सकलियैए।'' कोना कहियनि जे ओकरा नामक जते फेसबुक एकाउण्ट छैक, सभ अपन प्रोफाइल लौक केने छैक। एहनामे तय करब मोश्किल जे ओ रुपाली कोन अछि, जकरा हम ताकि रहल छी।

''तकियहक ने। कहांदन नामक संग शहरक नाम देने सेहो भेटि सकै छै। देखऽ चाहै छी जे दुनू नातिन कतेटा भेलि।''

राय दाक ठोंठ बाझि गेलनि। कने काल दुनू गोटें चुप रही। तकर बाद राय दा फोन काटि देलनि।

मास दिनक बाद एकटा फोन आयल। नम्मर सेभ नहि छल। ट्रू कालरमे कोनो दोसर नाम रहैक। मुदा, स्वर राय दाक छलनि, ''हौ हम राय दा बजै छियह।''

''बहुत दिन पर राय दा। अहांक फोन नहि लगैत छल। फोन खराप अछि?''

''नहि हौ, तोहर राय दा आब आजाद भऽ गेलह। आनन्द बला घरक ओगरबाही छोड़ि देलकह। ताला बन्न कऽ केशवके पठा देलियै। कहबा देलियै जे गाम जाइ छी।''

''मुदा, अहां छी कतऽ?''

''वृद्धाश्रम मे। एकटा मित्र बनल छथि हुनके फोनसं गप करै छिअऽ। अपन फोन तोड़ि देलियै। तोहर नम्बर कंठस्थ अछि तें सूचना देलियह। मुदा, मोन राखिहह। ई सूचना मात्र तोरे लेल, तोहर कनियो लेल नहि। कोनो-कोनो फोनसं हम गप कऽ लेबह कहियो काल। रखै छियह। अपन स्वास्थ्य पर ध्यान दैत रहिहह।''

फोनक कनेक्सन कटल नहि छल। राय दा फेर कहलनि, ''रुपाली के फेसबुक पर ताकि कऽ राखने रहिहह। ओकर समाचार बुझबाक मोन होइत रहैए। मात्र ओकरे...। एकबेर फेर पुछबै जे हमर कोन कसूर?''

राय दा भावुक भऽ गेलाह। जाबत हम भरोसक किछु कहितियनि, मोबाइल बन्न भऽ गेलै।

हमर दिमागमे बाजि उठल-झन्न...झन्नाक।

■



धर्मक प्रबल पसाही करय, जय समाजके ँ खाक।
दिनादृष्टिए मचय बवंडर, होअय विपदा जाक।।

असगरुआ (हास्यकथा)

✍ मिथिलेश ''मिसिदा''

एहि बेर मस्त लगन छैक। केओ मस्त बेटाक बियाहमे, केओ मस्त बेटीक बियाहमे। ताहि पर किनको घर मुड़न आर किनको घर उपनयन सेहो बड्ड भऽ रहल छैक। हकारे हकार। टोल-मोहल्ला वाला केर हकार टाइरो सकैत छी मुदा सऽर-कुटूंब केर हकार कोना टाइर सकैत छी...? जँ, टाइर देबै, तखन टायर जकाँ रगड़ा जाएब संग स्टेपनीसँ निकालि देबाक धमकी सेहो भेट जाएत। कहू तऽ बिनु स्टेपनी, टायरक कोन मोल? तखनहुँ लोक सभकेँ संतोष नहि भेंटतनि ओ सभ ओहि टायरकेँ काटि-काटि कऽ जगहे-जगह चिप्पी साटने घुरताह।

पूर्वजक .पासँ, सऽरो-कुटूंब सभ आठो कोणमे बसल छथि। अपन एहि दू टा टांगसँ कतेक संभव छैक जे सभक मान राखब? जखन नेना छलहुँ तखनसँ सुनैत एलहुँ जे अहाँ असगरुआ छी, चिन्तामुक्त छी..। आइ बूझना जा रहल अछि असगरुआक दुख। की करु, पूर्वजकेँ आब कोसियो नहि सकैत छी ने!

नवका युगक बच्चा सभकेँ, एहि संबंध सबसँ कोनो चिन्ता-फिकीर नहि। ''पपा, ई अहाँक हेडेक अछि, हमरा सबकेँ एहि पिचपिच्चीसँ दूरे राखियौ'', कहि, कानमे इयरफोन ठोंकि..। अपन-अपन कोठरीमे ढूकि जेताह। हम दुनू परानी..। ठकमुँहा सन।

एहि बेर एकहि दिन दू ठाम मुड़न केर हकार भेटल। एकटा भागिनक बेटा केर दोसर पितियौत बाबा केर पोता केर। दुनू दू कोण पर। मुड़न एक्के दिन। दिमाग किछु काजे नहि करय। दुनू तरफ हकार पूरऽब जरुरी छलै। भागिन ओहिठाम नहि जाउ तऽ बहिन-आर बहनोइसँ संबध खराब..। आर बाबा तऽ घश्रे के छथि..। हमर ठोर पर स्वतः एगो गजल केर पांति आबि कऽ गुनगुनबऽ लागल...

''ऐ गम-ए-जिंदगी कुछ तो दे मशवरा
एक तरफ उसका घर, एक तरफ मयकदा
मैं कहाँ जाऊँ होता नहीं फैसला
एक तरफ उसका घर, एक तरफ मयकदा...''

नीन नहि आबि रहल छल..। की करु, कि नहि ? जँ हम किनको कहि दय छी जे हम बेमार पड़ि गेलहुँ, तखन तऽ आठो कोणसँ सऽर-कुटूंब केर फोन तऽ अलग, हुनकर सभक आगमन-खर्च हम कोना कऽ सहि पाएब? सोचि कऽ अधरतियेमे नीन्न फुजि गेल। बौआमाँ बगलेमे सुतल छलीह। चाह बनौबाक लेल, हुनका हिलैलहुँ, कोनो सुगबुगाहट नहि..। हमर हाथ थड़थड़ा गेल..। हाय रौ बा..। की भऽ गेलनि, कोनो सुगबुगाहटि नहि छनि..। हे भगवान..। कींसाइत...मोनमे भिन्ने शंका अभरऽ लागल। फेर चित शांत कऽ जोड़सँ हिलौलियनि..। ओ अचानक चौंकि कऽ उठि कऽ बैसि गेलखिन आर हमरा हिलबैत पुछलखिन, ''की भेल..। की भेल अहाँकेँ..।? नहि..। नहि..। हम एना नहि जाय देब..। हमहूँ संगहि चलब...'' कहि कानऽ लगलीह। आब ई कोन समस्या आबि गेल ? हम जगमे राखल पानि आंजुरमे राखि, हुनकर मुँह पर छिट्टा मारलहुँ, तखन हुनकर भक टूटलनि। तखन ओ बजलीह जे ओ सपना देखि रहल छलीह जे हम एहि दुनियाँसँ विदा भऽ गेलहुँ आर ओ हमर वियोग मे विलाप कऽ रहल छलीह। मोन पड़ि गेल कालेजमे मनोविज्ञान केर विषयमे पढ़ने छलहुँ, जे जेहन सोचौत अछि ओ ओहने स्वप्न देखैत अछि..।

खैर जे से, बौआमाँ हमरासँ नीन्न नहि औबाक कारण पुछलीह, हम अपन सभटा समस्या हुनका बतौलियनि। ओ चोट्टहि हमर समस्या सुनि बजलखिन, 'हमरा पास एकर समाधान अछि मुदा अहाँ छी मक्खीचूस, हमर बात केर मोजर देबै नहि..।'

- ''कहू ने, बेसी बात नहि घुमाउ...'' हम खौंझायत जबाव देलियनि.

- ''सुनू, भैया ओहिठाम तऽ मुड़न, दिने-देखार छनि आर दीदी ओहिठाम रातिमे, तखन एगो गाड़ी कऽ लिय..। जाहिसँ आरामसँ दुनू ठाम हकार पुरा जाएत।'' बौआमाँ केर ई बात हमरा जंचि गेल। मोन थीर भेल, तखन जा कऽ नीन भेल।

भिनसरमे चौक पर गेलहुँ। बिशुनदेव चौक पर चाह पिबैत भेंट गेल। ओ दू गो बेलोरो सवारी गाड़ी राखने अछि। हम ओकरा अपन समस्या बतौलहुँ। ओ दांत चिबबैत बाजल, ''यौ ओकील साहेब..। बड्ड लगन छै...''

- ''तखन?'' हम पुछलियै।

- ''अहाँ नहि बूझै छियै जे इएह सीजन तऽ हमर सभक अनुकूल थीक जाहिसँ साल भरि केर खुराकी केर सरंजाम भऽ जाइयै..।' बिशुन देव बाजल।

- ''साफ-साफ कहऽक ने...?'' हम ओकर बात बीचमे कटैत बजलियै।

- ''ओकील साहेब..। अहाँक जे प्रोग्राम अछि ओहिमे अहाँकेँ चौबीस घंटासँ बेसी समय लागत। हम एहि लगनमे एतबे समयमे चारि टा साटा घींच लेबै...''

- ''हौ बुझौवल नहि बूझाबऽ...''

- ''सैह तऽ कहि रहल छी..। अहाँ लेल, पंद्रह हजार टाका लागत, तेल-मोबिल, ड्राइवर, टॉल-टैक्स सभटा ओहिमे..।'' बिशुन देव चाहक घुंटि लैत बाजल।

हम गुणा-भाग करैत बजलियै, 'जँ हम आई गाड़ी दू बजे दिनेमे छोड़ि दिय तखन...?

- ''तहन तऽ आरो नीक..। तीन हजार दऽ देबै, जाउ...''

- ''नहि हम, पच्चीस सै देबऽ...''

- ''ठीक छै..। जाउ, अहाँ लेल हम गछि लेलहुँ। हे..। कनेक ड्राइवरकेँ सेहो भोजन करा देबै...''

- ''ऐं.। ई कोनो कहला पर...?'' हम खुश होइत जबाव देलियै। मोनमे सोचलहुँ, जे दीदी ओहिठाम ट्रेनसँ चलि जेबै, दुनू प्राणीमे तऽ जाइत-अबैत अस्सीये टाका ने...? साढ़े बारह हजार तऽ ठारे-ठार बांचि गेल।

समय पर हम सब अपन भैयारी ओहिठाम पहुँचि गेलहुँ। सभटा काज बाबा केर निर्देशनमे ससमय संपन्न भऽ गेल। हम सब भोजन कऽ दीदी ओहिठाम जेबाक लेल..। अपन डेरा लेल प्रस्थान कऽ गेलहुँ। भरो रस्ता गाड़ीमे बौआमाँ ओकियाइत एलीह। ओ बजलखिन, ''हमर मोन ठीक नहि अछि, अहाँ असगर दीदी ओहिठाम चलि जाउ...'' हम बूझि गेलियनि जे ओ दीदी ओहिठाम नहि जेबाक लेल बहन्ना बना रहल छथि। हम चलबाक लेल बेसी जिद्दो नहि केलियनि।

सांझमे दीदी ओहिठाम पहुँचि गेलहुँ। एहन एकटा परिपाटी बनल छैक जे हमरा संग कि वा किनको संग ओकर घऽरक फलना-फलना नहि एलखिन तऽ उपरो मोनसँ कहि देल जाइत छैक जे फलना किएक नहि औलाह..। ई नीक बात नहि?..। आदि-आदि अलंकरणसँ विरोध स्वरक मंत्र पढ़ि कऽ सुना देल जाइत छनि..। हम ओहि विधकेँ सम्पन्न करैत, दरवाजा पर आबि कऽ बूढ़ सभक बीच बैसि रहलहुँ। ओतऽ एगो बात केर जबरदस्त नोटिस लेलहुँ जे सासुर केर लोक केर कतेक मान भेटैत छनि? हमरा सभक जमानामे, बाबू डऽरसँ पत्नी की, सासुरक लोक सबसँ बजितो संकोच करैत छलहुँ..। मुदा, आब? भागिन केर सासुरसँ, सासु-ससुर एबै केलथि, संगमे हुनकर छहो भैयारीक परिवार आर भागिनक ममिया ससुर धरि नोतल छलाह। सबसँ मजेदार बात ई जे सभकेँ सभ काल्हिएसँ विराजमान भनऽ अपन निर्देशनमे विध-व्यवहारमे जुइत चला रहल छलाह। हमर दीदी आर बहनोइ मड़वा कातमे कुर्सी पर बैसल अपन-अपन दुनू गोटे गाल तऽर पान दाबि कऽ मुँह बंद केने बैसल छलाह।

हम विचारने छलहुँ जे राति सवा दस बजे वाला ट्रेनसँ घुरि आएब..। मुदा ऐन वक्त पर जनतब भेल जे ई ट्रेन कोरोना कालसँ पहिने चलैत छल, मुदा आब बन्न भऽ गेल अछि, ट्रेन पौने चारि बजे भोरमे भेटत, मजबूरीमे रुकऽ पड़ल।

मुड़न आर भोज संपन्न होइत..। राति एक बाजि गेल। आब समस्या आबि गेल जे सूतब कतऽ? सभटा कोठरी तऽ भागिनक सासुर केर लोकसँ भरल छैक..। शेष दरवाजा पर स्थान भेटल। पंखा लागल छल..। दू टा। एकटा पंखा अपन न्यूनतम गतिसँ अपन जीवित होबाक प्रमाण दऽ रहल आर दोसर तुफान गतिसँ चलि रहल छल ओहि पंखा तऽर जगहकेँ पहिनहि सँ हमर बहनोइक किछु आगंतुक हथिया लेने छलाह। हमर भाग वैह दम घींचौत पंखा तश्र !

सुतऽ केर प्रयास आरंभ केलहुँ। आब मच्छर अपन लोरी आरंभ केलक। ओहि मच्छरमे गोटैक खुरलुच्ची मच्छर सेहो छल जे रहि-रहि कऽ कखनहुँ पेडूमे, तऽ कखनहुँ पीठ आर पएर पर चुटकियाबश्र लागल..। हद्द तऽ तखन भऽ गेल जखन..। ओ नाक आर ठोरकेँ चुमैक प्रयत्नमे एतेक ने जोरसँ दांत काटि लेलक..। बिलबिला कऽ उठि कऽ बैसि रहलहुँ। चारुकात घुप अन्हार। घरक ग्रील पर ताला लागल। लघुशंका लागि गेल, महाविपति, की करु? सिरमा तऽरमे राखल मोबाइल केर इजोतमे बाथरुम तकलहुँ..। हाय रे किस्मत..। मोबाइल डिस्चार्ज, दीर्घशंका लागि गेल। खिड़कीक फांफरिसँ स्ट्रीट लाइट केर इजोत आबि रहल छल। साढ़े तीन बाजि रहल छल। घरऽक लोक सब थाकल सूतले छलाह। हम लेट्रीन केर केबार फुजले बैसि रहलहुँ जाहिसँ इजोत अबैत रहए। पनिछुआ घड़ीमे नल खोललहुँ, हाय रे बा पानि खत्म भऽ गेल छलै..। घोर समस्या। आब की करब? तखनहि ओहि प्रकाशमे नजरि गेल, टेबूल कात राखल पानि वाला ड्राम पर। आव देखल ने ताव..। अन्हारेमे एक जग पानि निकालि लेलहुँ। पनछू करैते छलहुँ तखन एना लागल जेना मिरचाइ केर घोर छनाक सन लागल..। जलन बर्दाश्त नहि भेल..। मुँहसँ चीख निकलऽ लागल। घरबारी सब जागैत गेलाह। टिप-टिप..। बत्ती जलैत गेल। हमर हाल पर भागिन बाजल, 'की भऽ गेल मामा?''

हम जखन सभटा हाल बतौलियै तखन जनतब भेल जे घरक लोक सब भोजन कऽ एहि ड्राममे अपन-अपन हाथ धोने छलाह, ओ वैह ऐंठ पानि छलै..।

■

देखियौ ने

फूलचन्द्र झा 'प्रवीण'

बिनु आगिक घर कोना जरै छै देखियौ ने।
इलटि- बिलटिकऽ कोना मरै छै देखियौ ने।।

जांघक ढोलक बना- बना हम सभ बजबी
ढोल देलापर कोना बजै छै देखियौ ने।।

बाबा हाथक तं कोदारि होइ छै हल्लुक।
बेंट पकड़िकऽ कोना तमै छै देखियौ ने।।

गप्पक खेती बीघा-बीघा कऽ लै छी।
घाम चोआकश कोना खटै छै देखियौ ने।।

ढेरी लग नहि जायब कात- करोटेसं।
अप्पन बखड़ा कोना बटै छै देखियौ ने।।

कोपड़ छोड़ल बड़का-बड़का आब कने।
दाहा बांसक कोना बनै छै देखियौ ने।।

बैसि घूर तर टिटकारी बहुतो देलियै
समर- भूमिमे कोना लड़ै छै देखियौ ने।।



गुमसल बसात

कुशेश्वर 'कश्यप'

बसात गुमसल बुझा रहल छै
मनुजक अँतड़ी गन्हा रहल छै

दोख ककर ई केहन व्यवस्था
एके लाड़निसँ लड़ा रहल छै

गीदरकेर छै तानल छाती
सिंह खोहमे नुका रहल छै

बानर सहजे मस्त कलन्दर
भालू कनखी चला रहल छै

मानव बनल छै रक्त पिपासु
अपन तिकरम ओछा रहल छै

किट-किट कारी भेल जगत ई
कत्तहु किछु नहि सुझा रहल छै

चलु न असगर एहन बाट पर
ब्याल निशाना लगा रहल छै



गजल

सौरभ सिद्धार्थ

ओ हमर टुटल हृदय सँ आह आबैत तऽ हेतै
आँखि मे अगबे तरेगन राति ताकैत तऽ हेतै

प्रेम के रस्ता छै डगमग छोड़ि असगर जाउ नै
याद आबिते प्रीत हम्मर ओ मुस्कियाबैत तऽ हेतै

ओ रहै हमरा हृदय मे हम ओकरा में रही
सोचि सदिखन राति ओ सपना सजाबैत तऽ हेतै

छोड़ि अपन सब सेहन्ता पुरा ओकरा कऽ देलौं
हमरा बिन एखनहु ओ प्रेमक गीत गाबैत तऽ हेतै

आँखि ओकर जाल छल देखि हम ओझरा गेलौं
हमरे सन ओ प्रेम कऽ सबके घुमाबैत तऽ हेतै

साथ छी हम सब विपति मे अहाँ कनै घबराऊ नै
फुसि बाजि-बाजि लोक लग हमरा उड़ाबैत तऽ हेतै

प्रेम जत्ते हम केलियै तकरा ओ बिसड़त केना
आन देह मे हृदय सौरभ ओ तलाशैत तऽ हेतै



कविता :

भारत अंग्रेज आगमन

डॉ. शुभ कुमार वर्णवाल

चौबीस अगस्त सोलह सै आठ
भारत अंग्रेज आगमन;
सूरत शहर बंदरगाह उतरल
व्यापारिक उद्देश्य छल मन।

मुदा सात बरख जे बीतल
सर थामस अगुवाई शान;
कारखाना स्थापित होअए
अंग्रेजी शासन फरमान।

व्यापारिक समृद्धि सुरक्षा
अंग्रेज केर भेल शीघ्र प्रतीत;
सत्ता राजनीतिक कायम हो
लोभ बढ़ल-बिसरल अतीत।

बहुत दिन धरि चलल संघर्ष
प्रतिद्वंद्वी पर पाओल विजय;
सत्रह सै तेहत्तरि पश्चात
अंग्रेजक दबदबा आ जय।

ईस्ट इंडिया कंपनी वृहत
राजनीति दिसि भेल मुखर;
अत्याचार, घूसखोरी बढ़ल,
चरित्रहीन अंग्रेजी सफर।

जहाँगीर मुगल सँ मीलिकऽ
व्यापारिक कोठी बनाओल;
राजकुमारी कैथरीना केँ
दहेज मे मुंबई दियाओल।

बंगाल, बालासोर, चेन्नई, पटना
ठाम-ठाम कोठिक निर्माण;
कंपनीक व्यापार अचानक
भारत मे फेर चढ़ल परवान।

किला बनाओल कएल सुरक्षित
शनैः-शनैः साम्राज्य पसारल;
मुगल सम्राटसँ मीलि देशद्रोही
संपूर्ण भारत कब्जा जमायल।

देश केर मिर जाफर-जयचंद
भारत केँ गुलाम करबायल;
अंग्रेजी जुल्मी शासन केर
गद्दारी कए संग निभायल।

अंग्रेजक चंगुलमे भारत
पूर्ण रूपसँ गेल जकड़ि;
माँ-बहिनक अस्मत लूटल
डेग बढ़ाओल गाम-नगरि।

कतेक जुलुम सहल भारतीय
बरखो-बरख रहल गुलाम;
शीश कटाओल प्राण न्यौछावर
तखन जागल भारत तमाम।

इतिहासक पन्ना मे बहुतो
देश कलंकित घटना-ए;
अंग्रेज सभकेँ धूल चटाओल
भारत युव-नव यौवना-ए।

गाँधी जी केर सत्य-अहिंसा
कलम बनल तलवारक धार;
महावीर, मैथिली शरण गुप्त,
माखन, प्रेमचंद साहित्यकार।

भारतेन्दु, तिलक, नेहरू, सुभद्रा,
निराला, कवि श्याम नारायण;
शर्मा, शुक्ल, माधव, बंकिम,
रवीन्द्र, इकबाल, बद्रीनारायण।

शिवमंगल, राम नरेश, गोस्वामी,
राधाकृष्ण, सियाराम, दिनकर;
सुमित्रानंदन, कामता प्रसाद,
अज्ञेय, शरद, श्रीधर, जयशंकर।

आजादी केर परवाना केँ
अगाध देश-प्रेम संचार;
साहित्यकारक कलम उठल
अलख जलाओल भरि हुंकार।

'भारत छोड़ो आंदोलन' सँ
जागि पड़ल भारत जन-जन;
मरि मिटैक लेल भारतवासी
तखन भागल अंग्रेज दुश्मन।

भारतवर्ष आजाद भेल
देश विखंडित पाकिस्तान;
भारत माता उर भेल छलनी
आहत पूरा हिन्दुस्तान।

प्रधानाचार्य
कालिदास विद्यापति साइंस कॉलेज
उच्चौठ, बेनीपट्टी, मधुबनी (बिहार)
मो. 9430631411



जखन डूबि रहल छल गाम हमर

✍ **मनोज झा**
(मिथिला राज्य आन्दोलनकारी)

जखन डूबि रहल सब किछु
हेलि रहल छल गाम हमर
तूं छलएं अपन मजबूत किला मे बंद
जखन डूबि चुकल अछि सबटा
तोरा चेहरा पर छौ अफसोस
तूं प्रायः बिसरा गेल छएं
या फेर बिसरि जेबाक आदी

डूबल सगरों आबादी के
जन प्रतिनिधि सेहो छैं तूं
जनिका चरण मे लोटि कऽ
पओने छलएं हुनक अमूल्य वोट
खेने छलएं हिनक रक्षाक सप्पत
वादा छलौ सुख-दुख मे
हिनका सबहक संग रहबाक
तो जो! डूबि मर हिनके संग
बाढ़ि के एहि अथाह पानि मे
समेट ले हिनका अपना छाती मे

की सोचौत छैं खद्दर गीला हेतौ
पांक मे फंसि कऽ मटमैला हेतौ
किछुओ त शरम कर बेशरम
कनियो त रहम कर बेरहम
किएक बिसरि जाइत छैं
अपन नैतिक जिमेदारी-जवाबदेही
साल भर रहैत छएं अलमस्त
हमर सबहक चिंता से बेफिकर
अपन आलाक तलवदारी मे

मुदा हम त रहैत छी निश्चिंत
पता अछि हमसब छी अभिशप्त
एहि बाढ़ि के बेर बेर एयबाक छै
हमरा पर कहर बरपेबाक छै
हमरा त अनवरत हेलैत जेबाक अछि

अपन आश्रित के सेहो बचेबाक अछि
उजड़ल चमन के बसेबाक अछि
मुदा तों कतय रहैत छएं सालो भरि
बिसरि कऽ हमरा सबके एहेन हालत मे

अब एयलैंह अछि राहत लऽ कऽ
जखन हम सब डूबि चुकल छी
अपना घर मे पानिक ठेलमठेला मे
जखन हम बिछुड़ि चुकल छी
अपना सऽब स एहि बाढि के रेला मे
आखिर हमरा किएक फंसा रखने छैं
एहि प्रलयकारी बाढ़ि के झमेला मे

हे भाई! कनी याद कर ने
केहेन-केहेन योजना बनबैत छएं
अपन कुर्सी बचेबा लेल
अपन आलाकमानक तरबा के
क्रीम मलाई स सहलेबाक लेल
ओहिना हमरो लेल एक-आध टा योजना
किएक नहि बनाबैत छएं हमर भैयारी
हमरा एहि अभिशाप स बचेबा लेल
हमरा एतिहासिक मिथिला के
एहि बाढ़ स मुक्ति दियेबा लेल

राष्ट्रीय अध्यक्ष, मिथिला लोकतांत्रिक मोर्चा
मोबाइल नं - 7701948646



क्षण भरि

ॐ मंजू ठाकुर

आबि कऽ एकांत में बैसल करी दुई चारि क्षण
दर्द जिनगी केर कनेक बिसरल करी दुई चारि क्षण।।

क्लेश-दुखक मैं कमी अछि, विष भरल संसार में
प्रेम रस केर वृष्टि में भीजल करी दुई चारि क्षण।।

स्वर्ग-नर्कक कल्पना में, दिवस बीतल जाय अछि
यथार्थक संसार में, बूलल करी दुई चारि क्षण।।

चान-सूरज छू लेलहुँ, इ कोन बड़का गप्प छै
मानवक दग्धल हृदय, छूवल करी दुई चारि क्षण।।

बस अपन परिवार के अप्पन बुझैत एलहुँ सदा
कनेक जग भरि के अपन बूझल करी दुई चारि क्षण।।

मानलहँ सब दिन हृदय सौं, रीत बिधि व्यवहार कें
लीक सँ हटिक कनेक, देखल करी दुई चारि क्षण।।

सुनि बहुत चुकलहुँ मधुर, वंशी सितारक तान कें
टूटल मोनकऽ टीसकें सूनल करी दुई चारि क्षण।।

■

जिनगी

ॐ राम सेवक ठाकुर

गरल सुधा जिनगीमे, एकत्सिंग पीबि चल।
मखमल पर सूतब छौ, गुदरी कें सीबि चल।।

होयेतै वै इजोरिया, अन्हरिया धरि पहिनै।
पैन आकि पाथर कें, संग-संग अँगेजि चल।।

कर्तव्य केर बाट तोहर, चलैत-चल बढ़ैत चल।
घास हौक कॉट हौक, शीर्ष कें, मरैद चल।।

परम धीर! परम वीर! मैथिलीक सबल पूत,
नूतन पथ नाम अपन, एक-एक करैत चल।।

दुनिया के बनल बाट, कायर लए छोड़ि चल।
अरजल जे राजपाट, काहिल लए छोड़ि चल।।

धारा के संग बहब, लाश भेल काया की?
उमतल प्रवाह ओकर, अपना संग मोड़ि चल।।

गप्पक जे खेती ताहि जड़ि कें खोधैत चल।
सूतल शैथिल्यक से कोढ़ कें कोरैत चल।।

सिनेही सिनेह भड़ल बात कर कात आब।
मुट्ठीमे आगि लए, अंदरे सुगनैत चल।।

■

धर्मक प्रबल पसाही करय, जन समाजके खाक।
दिनादृष्टिए मचय बवंडर, होअय विपदा जाक।।

नाममे की नै राखल छैक?

✍ अयोध्यानाथ चौधरी

नामक बड्ड महत्व छैक जगमे, भाग्यवान जकर सुन्दर नाम
आइ तक ने दोसर रावण भेलै, मुदा घर-घरमे रामक नाम।

अपना ओइठां चलन देखैत छी, अधिकांश चूनत भगवानक नाम
तदुपरान्त घषि- मुनि, साधु-संत, पर्वत, नदी, योगी आ विद्वान।

की कहियो सोचल अछि ओकर पीड़ा जकर नाम पड़ि गेल कुरूप
ढोढबा, चोन्हा, गरीब, भिखारी, नंगरा, खेसारिया यद्यपि रूप अनूप।

नाम जन्य कष्ट अत्यन्त दुखदायक, पछताबय जीवन पर्यन्त
बापक नाम पूछय बेटाकेँ, ओकरो कष्टक नहि पुछू अन्त।

आबि जाउ तेसर पुस्ता पर, बाबाक नाम जखन पूछल जाय
की करत निर्दोष बेचारा, कहैत-लिखैत मुदा बड्ड सकुचाय।

नामक दोष खेहारय पुश्त-पुश्त धरि, सन्तानक सन्तान
भोगय हेतु लोक अभिशप्त होइछ, पश्चाताप संग अपमान।

अपन सन्तानक नाम रखबाकाल, हम रहैत छी कतेक सतर्क
सुन्दरता आ सौभाग्य जुड़ल होइ, लाख करैत छी तर्क-वितर्क।

कने सोचियौ, ब्यक्तिसँ उपर होइछ संस्था, सबसँ उपर राज्य
नाम ओकर हो सर्बगुणसम्पन्न, ब्यापक अर्थ आ अबिभाज्य।

केओ जखन मधेशी कहैत छल, होइत छलहुँ अपमानित
आइ मधेश प्रदेशक निर्णयपर, कोना भेलहुँ गौरवान्वित?

की आठेटा जिला मात्र छै बास्तबिक मधेश प्रदेश?
पूरब छटलहुँ, पच्छिम छटलहुँ, तकर ने कनिञे क्लेश!

बाइस जिला, आथा जनसंख्या, करैत रहलौं सदा गुमान
संकीर्णताक भाव परिलक्षित, किए ने गेलनि किनको ध्यान?

राजनीतिकेर उद्देश्य होइत छै सदा फुटाकय शासन करब
कोन हिसाबे स्वयं फुटशलिए, अपयश कत्ते कतऽ धरब?

धोती, भैया आर मधेशिया, रखने छल आहाँक कतेक नाम
गरीब, मदिसे, मर्सिया, मधिसे आदि आदि कतेक उपनाम।

उपर कहल जतेक सम्बोधन, छल राजा-राणा केर उपहार
मुदा हमसब सोचि नै सकलौं, कयलहुँ ओकरा सहर्ष स्वीकार।

पहिने दोख लगश्बैत छलहुँ, खेल खेलाइछ केंद्र सरकार
आब तश स्वयं कर्ता- हर्ता, कहू ओकर कोन दरकार?

केंद्रक राजनीति छलै विभाजन, से आब पूर्ण सफल भेलै
ओकर दुनूक नाम की हेतै जे संगभैया छुटि गेलै?

सांस्कृतिक सम्पदाक अनन्य धरोहर जखन एतेक हमरा संग
निर्णयकर्ता अनेक, विशिष्ट विद्वान, तखन किए भेल मति भंग?

आनो प्रदेश पर ध्यान करितहुँ, प्राकृतिक सम्पदाक कयलक प्रयोग
अनन्त सम्पदाक धनिक रहितहुँ, कऽ नै सकलहुँ हम उपयोग।

जानकी मन्दिर छै केंद्र बिन्दु, लाखों लोक ओतय नित्त जाथि
नै जानि कोन अपराध भेल छै, दर्शनकाल जेना लोक लजाथि?

सीता बिलखथि अस्फुट श्वरमे, नैहर कतऽ हमर भेल बिलिन?
एखन जे मन्दिर बासस्थल अछि, की सेहो लेतै एक दिन छिन?

जानकी स्वर्गमे ताकथि जनक दिशि, अपन राज्य केर देखू हाल
पहिने खण्डित, आब नाम मेटायल, परिचिति बिना बनल बेहाल।

आब सोचौछी अपन राज्यमे किएक पड़ल ओहन अनिकाल?
नै हम जन्म लितहुँ धरतीसँ, नै आइ देखितहुँ हाल- बेहाल।

राजा जनककेर हाल नै पुछू, मथाहाथ जेना स्वयम्बर काल
अशोथकित आ दिग्भ्रमित सन, राहुकेँ जेना ग्रसित कैल काल।

आब नै दृष्टि देब धरती दिशि, मोन पड़ैए सुदीर्घ जनक-बंश
त्याग आ बलिदानक साम्राज्य, सबटा भेल सब तरहें ध्वंस।

महाकाव्य रामायण अछि पसरल, आधार भूमि जनकपुरधाम
एकसँ एक स्थान आ पात्रसँ, चूनि लितहुँ कोनो सुन्दर नाम।

जनक, जानकी, सीता, सुनयना, लक्ष्मण, भरत अनेकहु नाम
बाबन कुटी आ सहस्रों पोखरिसँ भरल पुरल अछि रामकेर धाम।

हमर संस्कृतिसँ केंद्र प्रभावित, चयन कैलक कतेक सुन्दर नाम
पालिका सभक नाम जे चुनलक, एक सँ एक अनुपम सब ठाम।

जनकनन्दिनी, कमला, विदेह, शहीद, क्षीरेश्वर आ मिथिलाधाम
किए ने ककरो मोन पडल, कंचनवन आ धनुषाधाम?

बनगमन, सीताहरण, राबणत्रास, अग्निपरीक्षा आ पृथ्वी प्रवेश
सीता धरतीए सन सर्वसहा, कतबो कष्ट देबनि, ने कहती क्लेश।

साढे पांच हजार बर्षक सभ्यताकेँ, कोना कऽ देलियै क्षणमे ध्वस्त
विद्वान- विदुषी, देबी- देवता, ऋषि-मुनि, साधु-संत सब भेला अस्त।

जनकवंशक आदर्श परम्परा, केहन दिव्य छल मनोहर
सोन छोडि चानी जे बिछलौं, विस्मृत होयत धरोहर।

मानव सभ्यताक विकासक क्रममे, कतेक उनटन-पुनटन छै भेल
आरो कतेक उनटन-पुनटन हेतै, के जनैत अछि प्रारब्धक खेल?

अपन क्षेत्र आध्यात्मिक स्थल, उत्खननसँ भेटैछ नब नब प्रमाण
धसल छलै आर फेर धसतै, मन्दिर-मस्जिद, शहर आ गाम।

पुनि पुनि सीता मैया जेती, असली नैहर धरती गाम।
आब नै अओतीह एहि धरापर, एखनुक हेतु सब काम तमाम।

मुदा निराश नै होथि ज्ञानीजन, एहिठामक छै इएह चलन
''सम्भाबामि युगे- युगे'' मे, एखनो बाँचल एक आश-किरन।

■

पूनम झा सुधाक चारि गोट कविता

1. शक्तिक गुंजितगान

हम शिवक तऽ शिवानी छी, आ गगनमे पूनमक चान छी
भोर-साँझ हमरेसँ गम-गम, परिवारकऽ हम शान छी

नव प्रयास सँ भरब उडान, हम कएने मोनमे ध्यान छी
शोणित हमर नस-नसमे नाचय, बनबय लेल पहिचान छी

छथि विद्वानों अहि धरती पर बहुतो, नारी बिनु नहि घर एको
कंचन काया नेहक मुसकी, हम भौंराकेँ रसपान छी

हम नारी छी अधिकारी छी हम, अहि देशक हम गुमान छी
अछि पुण्यक प्रतिबोध हमरामे, हम सरस्वतीक वरदान छी

सत्यक पथ पर सदिखन हम चलि, पिताक पैघ मान-सम्मान छी
बनिकऽ राधा रहब हम सीता, हम घरे-घर शक्तिक गुंजितगान छी..।।

2. सुन्दर हृदयमे

चौपेतल जे स्वप्न छल सपनेटा रही गेल
कखनो हसाइत अछि तऽ कखनो कनाइत अछि
आशो दैत अछि आ निराशो करैत अछि

सचे ई जीवन सपनहि जकाँ क्षणभंगुर
स्वाक्षु दूधमे अन्चेतेमे पड़ल चूक,
बे-स्वादु फटौन सन जकरा हम सत्य, बुझि रहल छी ओ असत्य
सेहो भऽ सकैत अछि, आ

प्रमाणित भऽ जायत एकदिन, बदलि जेतैक ओहि मनुक्ख केँ
दृष्टि आचार विचार आ संगमे सभटा व्यवहार, आ कि-कि नहि

बदलि जेतै सभ किछु होश अयलापर, से कहनाय कठिन अछि
अनमन ओहिना सभटा गप्प, राग दुलार फूसिये बुझाए ओकर आ
आँखि फोलि दैत अछि, हमरा ओकर अनुभव
हमरा ओकर अनुभव...।।

3. औनाइत नेह

मनुख जीबाक आशमे, पल-पल कतेक नेह बटोरैत अछि
आ ओकर एकताक माला गुथि, जीवनक एकटा नव रूप देबश चाहैत अछि
सुन्दर सृष्टि सृजन एकटा पूर्ण प्रेम विनोद नव जीवन मुदा

जखन कैंचल नेह स्वार्थ बस मुँह फेर लैत अछि तऽ
फेर ओ कोन आससँ ओकरा जोड़बाक प्रयास करत
तन-मनसँ अंतरआत्मा भीतर जोगायल सिनेहमे
जखन पसाहि लागैत छै तऽ
मुँह सँ फुकैत-फुकैत ओकर आँखि लाल भुभुक्का भऽ
फेर सँ नोराकऽ टऽघर लागैत छै

आ सदेरिखन ओकर मोनक आंगन सँ, ककुरा संग लहाश मिश्रित होइत
धुआं चकभाउर मारैत रहैत रहै छै, आ ओ टुकरि-टुकरिमे विभक्त भे
शून्यता मे बिलाइत रहैत छै

जोगायल सिनेह मोनक आंगन सँ मुँह फुला
बहराकऽ झलफलाइत दुनू नैनमे औनाकऽ रही जाइत छैक
आ छाउर होबऽ लागैत छै ओकर जिनगी

तागल सिनेह पुनः तलफैत
पूर्ण जीवन पाओत कि नहि तकर उम्मीद केने
ओहि छनक नव आसक संग नेह पन्हकैत
पम्हिंछोड़त कि नहि से सोइच के
तिल-तिल गलैत जीवन बितबैत रहैत छैक ..।।

4. चलि आउ

भिनसरे कहने रही आब चलि आउ,
बहुतेक दिन भऽ गेल अहाँकेँ निहारला, मुदा
अहाँ हमर बात मानय लेल तैयार कहाँ छी
हम ककरा कहि अप्पन आ ककरा कहि आन

हमर मोनक आंगन मे अहींटा बैसल छी
सुनि रहल छी ने, अहींकेँ कहि रहल छी
फेरसँ कहैत छी सुनू धियान सँ, हम अहाँके संगमे रहीकऽ
देख चाहैत छी

एहि दुनियाँक बहुतरास रमणीय स्थल
चलश चाहैत छी संग-संग सुगम आ दुर्गम पथ पर
घेटजोड़ीकऽ पढ़ चाहैत छी दुनियाँक श्रेष्ठतम काव्य
अहींक इच्छा अनुसार गाबि रहल छी साँझ पराती आ बटगमनी

हमर गीतक अहाँ नायक आ नायिका छी हम
परिछाहीं बैनि भैरि मोन अहींसँ बतियाइत, रहैत छी सदेरिखन

घीचकऽ राखि लेने छी अहाँकेँ फोटो, सभसँ नुकाकऽ रखने छी अपन मोनमे
कहुना अहाँ बाँचल रही ककरो दीठ-मुठसँ
कियैक की अहुँ कहने रही हमरा जे
अहाँ हमर छी तखन ने हमहूँ कहने रही
हँ हम अहींकेँ छी, हँ हम अहींकेँ छी....।।



गाम हेरा गेल! गाम तकै छी..!!

✍ हरिश्चन्द्र हरित

नवका कलमक सुपक-सिनुरिया
गाछीकेर ओ केरबी-गोपिया
गोनसारिक ओ फजुली-चोरबी
पछिमा-बाधक ओ करपुरिया
बुढ़िया-बोनक सोन्ह-लरुब्बा
संग-सपेता आम तकै छी
कनियाँकाकी के बाड़ीकेर ओ डम्होड़ लताम तकैछी।
गाम हेरा गेल! गाम तकै छी !!

गमहारिक सुखैल बीया सँ
सतघारा केर घर सजाबी
चिक्कन गोल घसल डिग्गा सँ
एक्कठ-दुक्कठ राज लगाबी
सौंसे गामक अंगना अपने चोरा-नुक्की झात बजाबी
बुढ़िया-चेत कबड्डी-ताली
कीत-कीत मे की नै पाबी !
गुल्ली-डंटा, गिद्धा-गुड़कन
टन्ना-दुक्खी, अटकन-मटकन
चोर-सिपाही, घोग्घो-रानी
आनी-मानी, हम नै जानी
आस-पास मे ताकी ककरा से नै कोनो नाम पबैछी
मन आंगन मे लालपरी संग करिया झुम्मरि नाच करै छी।
गाम हेरा गेल! गाम तकै छी!!

नानी-हाथक लड्डू-मठड़ी
कमला कातक झिल्ली-कचड़ी
रूसी तँ भेटय बसकुनमा तैले आँचर दौड़ा-पकड़ी
लालककाके कनहा झूली,दादाकेर पीठेपर बूली
भुभुआ चोरक नामी खिस्सा
मैयाँकोरा हमरे हिंस्सा
खर्रखबाली खबासनीकेर कोरा मे सुखधाम तकैछी।।
गाम हेरा गेल! गाम तकै छी!!
गड़हन-खाँत, सबैया-हुट्टा
मुगली बान्हल गेलै सुट्टा
काल्हि सुनायब सत्त कहै छी
सभदिन मुदा बनै छल झुट्टा
घोरन केर छत्ता झड़ैत छल
तै पर सँ छौंकी पड़ैत छल
ओइ करबीरक दुखमोचनकेर आइयो तँ हम नाम जपै छी।
गाम हेरा गेल! गाम तकै छी!!
बाँसक सुपती ऊक्का-लोली
आँगन-आँगन रचय रंगोली
टोल-टोल सँ निकलय टोली
गाबय मस्त-मजीड़ा भोली
एहेन मचय समगर्दा होली
की बलचनमा, की बमभोली

लालनबाबू केर ललकारा
डिल्लीलालक सारा रा रा
ढोलक बान्हि फनै छल जनका
नाचय बच्चा, बूढ़, जुअनका
जूड़-शीतलक घोल-फचक्का
आँगन-आँगन डोल-फुचुक्का
बनय महादेव भुखना-ताँती
भूत-प्रेत सन सजय बराती
सुखराती मे माल-जालकेर गरा लाल गरदाम तकै छी।।
गाम हेरा गेल! गाम तकै छी!!

ढुनमुन-काकी केर आपकता
गीता-मौसी केर व्यापकता
सगरे टोल-पड़ोसक चिंता
ककरा पड़लै कोन बेगरता
बिध-बेबहारक हींग-हड़दि सँ
गीत-नाद केर ओ वितपनता
अरिपन-पुरहड़ि ओरियानक संग
बचचा-बूढ़-बेमारक तलत
गुलबी-माय सन फुर्तीवाली आब ने कोनो ठाम पबै छी।।
गाम हेरा गेल! गाम तकै छी!!!

उत्तर ताकी गौरीशंकर पच्छिम ताकी बाबा बटेसर,
पूब सुतल संसारनाथ छथि, बीच घेरायल
बाबा-भैरव। राम-जानकी केर सेवा मे,
दक्षिण पवन-पुत्र छथि तत्पर।
अपने गामक डीह-टोल सँ, हम तँ अपनहि गाम तकै छी।।
रुगाम हेरा गेल,गाम तकै छी !!!
कत-कत कत्ते की ताकब, हम तँ झूड़-झमान झखै छी।
गाम हेरा गेल!! गाम तकै छी!!!



बाढि

☙ अशोक झा

बहल जा रहल अछि
असेसरा के बरद
बहल जा रहल अछि
भदेसरा के छागर
जिम्हर देखै छी
घड़ द्वारि बहि रहल अछि
सजल सपना के दहाइत
असेसरा हतास अछि
कियो कतौ नहि देखाइत अछि
जलक बेग मे सब दहा गेल अछि
चहु दिस जले जल देखाइत अछि
ढोरवा के बेटी जुबान भऽ गेल छै
बेटी के विवाहक चिन्ता सतवैत छै
असेसरा बिदेसरा के ओ कहने छलै
अहि बेर बेटी के विवाह करा देबै
पटना सऽ सारी आ गहना लेबै
वाढिक जल मे सपना बहि गेलैं
विवाहक सपना सेहो दहि गेलैं
असेसरा के बड़द बहि गेलैं
भदेसरा के छागर बहि गेलैं
ककरो घड़क चिनवार दहि गेलैं
ढोरवा के बेटिक बिवाहक
सपना बहि गेलैं
बाढिक पानि सब दहा कऽ लऽ गेलैं
कोशीक बाढि के नियतक सामने
असेसरा विदेसरा कुसेसरा सन
अनेको के सपना दहा गेलैं
प्रसासन हवाई सर्वेक्षण सऽ देखैत
बाढि नियंत्रणक फारमुला बनवैत अछि
नित के नियत मे खोट रहैत अछि
हर बेर बाढिक पानि मे
विंदेसरा, कमेसरा, जीवेसरा के
सपनाक घड़ माल जाल जंका दहा जाइत अछि
कोशी नादिक कोन गप्प
मिथिला के नैहर बाढि बनल अछि
प्रसासन के संग जनप्रतिनिधिक देखायल सपनाक
सामने असेसरा, बिदेसरा, कमेसरा सन अनेको के सपना
कनिते दिन काटैत अछि

■

भूमिजा

☙ शम्भुनाथ मिश्र ''आसी''

आइ आयल हम अयोध्या राम केर, भव्यता कें देखि अछि चंचल नयन।
देखि नहि रहलहुं सिया केर छांह टा, भटकि रहलहुँ हम अवध कुटिया अयन।।

जानि नहि केहि हाल मे सीता हेती, नहि नगर केर गेह मे देखी कतहु।
राम राजा की एते निरदय हेता, की हमर धी भटकि रहली छथि कतहु।।

आइ केकय केर मनोरथ पूरलै, माण्डवी की रहि सकत सुख चौन सँ।
उर्मिला श्रुतकीर्ति दृग झरझर बहय, बस देखा रहली विवशता शैन सँ।।

तृणक छाजन भूमि सय्या मे सिया, वीर लछुमन धनु शरक संधान मे।
राम वन वन भटकि रहला शान्त भऽ, लोकहित आ जन मनक कल्याण मे।।

भूमिजा रावणक त्रसद सहि चुकल, दश्परीक्षा अग्नि केर आयल एतय।
किन्तु तखनहुँ नहि रहल सुख चौन सँ, गेह निष्कासित कहू गेलय कतय।।

बहिन वैदेही भटकि रहली व्यर्थे, आश्रित भऽ वाल्मीकिक नेह मे
एतय उत्सव राम राजा केर महल, दीप जगमग अवध केर सब गेह मे।।

अश्वमेधक विजय हय साजल चलल, विश्व विजयक कामना लश्माथ मे।
रोकि देलक बाट मे लव कुश युगल, शस्त्र सज्जित शर धनुष लऽ हाथ मे।।

मेटि गेलै राम केर चतुरंगिनी, हारि गेला अवध केर भट वीरवर।
आबि बालक दुहु समर मे ठाढ छै, पूछि रहलै राम हे के छी प्रवर।।

ज्ञात नहि के छी पिता हम के थिकहुँ, माय हम दुहु भाय केर छी जानकी।
टूटि गेला राम तहिखन ग्लानि सँ, राज की राजा कतय अभियान की??

तदपि भगिनि भूमिजा एखनो विकल, आंखि झरझर नोर अविरल बहि रहल।
अग्नि पुनि नांघय पड़त हमरा कहू, माय वसुधा आब नहि जाइछ सहल।।

डोलि गेलै मेदिनी अम्बर भुवन, फाटि गेलै माय धरती छलि जतय।
पूछि रहलहुँ आइ मिथिला अवध सँ, जनकनन्दिनि जा समेली छलि कतय।।



अमरनाथ चौधरीक तीन गोट कविता

1. भवानी के आँगन

बैसल संग कैलाश मे देखल
शिव आ शिवानी के,
कार्तिक गणपति गोद देखल
माता आदि भवानी के।
बैसल संग कैलाश मे देखल......

अचरज अनुपम संगहि देखल
बैसल बाघ बसहा के,
विषधर मूसक मोर खेलैत
आँगन मे जगदम्बा के।
बैसल संग कैलाश मे देखल......

आपस के सब द्वेषक त्यागल
देखल एक दोसर के,
हिल मिल छथि सब वास वसैत
एकहि आँगन मैया के।
बैसल संग कैलाश मे देखल......

हितगर बतिया सुनू मन सज्जन
द्वेष त्यागू निज निज के।
निश-दिन पूजू भबं भवानी
पावन करु जीवन के।।
बैसल संग कैलाश मे देखल......

अमर नाथ रचला शुभ रचना
रचना देखि कैलाश के,
धन्य भेल देखि भक्तक जीवन
माता श्री परिवार के।
बैसल संग कैलाश मे देखल......

■

2. राधा-कृष्ण स्तुति

मोहन ब'सथि राधा चितवन
राधा मोहन चितवन मे।

युगल परस्पर रास रचाबथि
वृन्दावन केर निधिवन मे।
लता-लता पर संग झुमै छथि
पावन ब्रज केर उपवन मे।
मोहन बश्सथि..........

बसिया रोटी ल मैया केर
गाय चराबथि कानन मे।
राधा-मोहन संगहि राजथि
रास रसिक केर प्रानन मे।
मोहन बश्सथि..........

स्वीकारी प्रभु दास चिरौरी
अमर शरण दी चरनन मे।
राधे-राधे रटिते-रटिते
साँस तजी पद सेवन मे।
मोहान बश्सथि..........

■

3. आह्वान

अछि मिथिला राजक माँग प्रबल
जे चिरकालहि सँ माँगै छी।
हम मैथिल मैथिलीक संतति
जे चाहै छी से पाबै छी।
अछि मिथिला..........

कसि डाँर चलू सब डेग मिला
आ तितगर मिठगर के बिसरा।
नहि चाही हमरा भीख अना
अधिकार अपन हम माँगै छी।।
अछि मिथिला राजक..........

छल कल करखाना भरल पुरल
जे आइ परल उजरल पुजरल।
सबरी सन रखने आश अचल
प्रभु रामक बाट निहारै छी।।
अछि मिथिला राजक..........

कान खोलि सुनू राज महल
नहि हैत उपेक्षा आब सहल।
देश के जहिया बेर परल
मन सोरहि कंचन देने छी।।
अछि मिथिला राजक..........

छी हम भूमिजा केर तिनका
जे रावण दर्प बिदारल अछि।
सामर्थ मैथिल समर देखव
हम अमर ज्योति जड़ाबै छी।।
अछि मिथिला राजक..........

■

अतीतक बात उठाकऽ, राजनीति गाबय डाहक गीत।
बिनु जीवन कविता नहि सम्भव, समरस धारे प्रवहित मीत।।

मणिकांत झाक दू गोट कविता

1. खाइक गीत

आदिकाल सँ खाइकक चलन
मिथिला मे चलि रहलैए
फेर हमरो ओतय एलैए

थारी अढ़िया टिफिन बाटी
डिब्बा डिब्बी संठेलैए
फेर हमरो ओतय एलैए।

तुलसीफुल गमकउआ चाउरक
दप दप उज्जर साँठल भात
आलू कोबी केरा कचरी
तरुआ मे तिलकोरा पात
पापड़ फरके पाँच रंग के
कनियों ने मेहेलैए
फेर हमरो ओतय एलैए।

मधुर मिठाइक चर्चा नहि हो
छेना खोआ केर पचमेर
फूलल फूलल बड़ी सेहो
बट्टा भरि भरि सेरक सेर
ओलक चटनी नेबो गाड़ल
देखिते जीह ललचेलैए
फेर हमरो ओतय एलैए।

नवकनियाँ के स्वागत खातिर
टोल परोसे आबय खाइक
अद्भुत चलनि मिथिला मे छै
हेम क्षेम अछि देखय लाइक
मणिकांत टुक टुक ताकि रहल छथि
थाड़ी जे परसेलैए
फेर हमरो ओतय एलैए।

■

2. कोजागरा गीत

भार साँठय मे काकी हलचल
ओझाक हेतनि चुमान
डाला सजौलनि
दऽ कऽ रंगल धान।

खजुर पिरुकिया गुजिया आ
गाजा बनलय
बड़का मूंगबा ओ केहुनियाँ
खाजा सजलय
भरल चँगेरा चिनियाँ केरा
छोड़ि रहल मुस्कान
डाला सजौलनि
दऽ कऽ रंगल धान।

गमकउआ चूड़ा भरि भरि कूड़ा
बासमती
दही पौरलनि मटकुर अथरा
खूब जती
बोड़ा भरिकय साँठल गेलय
गोल गोल फोक मखान
डाला सजौलनि
दऽ कऽ रंगल धान।

कौर बाती मंगबाओल गेल
सोनराक दोकान
पाग घुनसि आ दोपटा के
सेहो ओरियान
मणिकांत बैसल घड़ी ताकथि
उगतय कखन चान
डाला सजौलनि
दऽ कऽ रंगल धान।

■

सिया

♋ सोनी चौधरी

पडल अकाल मिथिक भूमि
नृप यज्ञ ठानल हे
सीत के जागल भाग्य
सिया अवतरलनि हे

जगदम्बा लय कोर विदेह घर आयल हे
धन्य भेली रानी सुनयना
जगतारिणी पाओल रे

पुलकित तिनहु लोक महि मन मगन भेली हे
क्षिति भेली पुण्य पुनीत जनक लली आओल रे

पाप सघन आब फाटल धरम उदय भेल हे
प्रकृती सुधा रस सिंचित
आनंदविह्वल रे

व्योम बनल सतरंगी गद गद दिनकर हे
यामिनी सजल सुवासिनी मंगल गाओल रे

मेटत सभक संत्रस दुर्जन गति पाओत रे
जिह्वा बसत भाषा मैथिली
जग सुख पाओत रे

धन्य भेल मिथिला मैथिलजन धाम जनकपुर हे
मिथिला हिरण्मयी भेल सुरभि बरसाओल रे

नई दिल्ली

■

मिथिला राज्य अभियान गीत

♋ कालीकान्त झा ''तृषित''

एकता आ एक स्वर मे, एकटा आवाज होए।
लक्ष्य एके जय भवानी, हमर मिथिला राज होए।।
जय भवानी जय भवानी हमर मिथिला राज होए।

केओ उँच नहि केओ नीच नहि, (बस) सब समादर भाव मे।
मिथिला बसल छी सकल मैथिल, भूमिजाक प्रभाव मे।।
शपत के पालन करू नहि आपसी विवाद होए।
जय भवानी जय भवानी.......

बनि दधिची सहैत रहलहुँ, कष्ट पर उपकार मे।
आश्ब जग संघर्ष देखत, मैथिलक अधिकार मे।।
पुनः मिथिलाराज आर्यावर्त के, भू भाग होए।
जय भवानी जय भवानी.........

एकरा ने बूझू तेहन उपमा, भैंस आगा बीन के।
सूतल ज्वालामुखी देखाबी, शीघ्र सत्तासीन के।।
तैँ शीघ्र निर्णय हेतुए, सदभाव मे सम्बाद होए।
जय भवानी जय भवानी........

हएत आन्दोलन अहिंसक, मुदा झंझावात सन।
भूल नहि केओ करथु एकरा, बूझि व्यर्थ प्रलाप सन।।
केन्द्र बूझथु ''तृषित'' जन केँ, मुखर जे आवाज होए।
जय भवानी जय भवानी हमर, मिथिला राज होए।।

■

समरस समाजमे सत्ते जीवी, मनुक्खे मात्र सन्तान।
धो-धो चाटब नहि मूल-गोत्र लऽ, हम मनुक्खे इन्सान।।
जातिवादक घेरामे कहै छी, अहाँक जाति अछि निम्न।
गौरवबोध अछि हमरा सत्ते, छी हम अहाँसँ भिन्न।।

तिरंगा

☙ शारदानंद सिंह

नील गगन मस्ते मगन
भू मध्य फहराइत तीरंगा
उछलि-2 उदधि उछलए
हर्षे उधिआइत आकाश गंगा।

चढ़ि-चढ़ि चान देवगण
देखे लाल किला भारतीय गणतंत्र
चौकि-चौकि तड़ित चौके
दृष्य मनोहर भारत स्वतंत्र

मेघ पयर्स्वनी अप्रतीम छवि
सजल नयन निपाप्ति अश्रुकण
रवि संग प्रभा स्वागत
नमित विथरथि रश्मि किरण

मन मुदित तन पुलकित
रहि-2 उसके चाँ सितारा
गीत-गान सुनि हलचल
गगन मध्य गूँजय भारत प्यारा जग से न्यारा

भरि यामनि अन्रीक्षों
तिरंगा पर हो डिवेट।।

किल कलंकित इ
अ0 धारा 35ए हटा तोड़ल गेल
पूर्ण गणतंत्र स्वतंत्र
पुनि ''मोदी'' फूलक महामंत्र
पूर्ण स्वतंत्र चाँद-सितारा

गाँधी सपना पूर्ण करत
मोदी आषीश अशेष
जय भारत गूंजि देश-विदेश
जय हे भारत देश
तीरंगा प्रण प्यारा

■

कोना भेटत मिथिला राज्य

☙ मिक्की झा

मिथिला मैथिली के उद्धार मे,
आब बढ़ेलहुँ हम सब हाथ
जागू मैथिल, जागू मिथिला,
जागू अपन सकल समाज।

चारि सौ सँ अस्सी हजार होई मे,
देखू लागल कतेक साल
आठ लाख होई मे आब ने,
कनियो देरी लागत आब।

स्वर्णजयन्ती पार्क मे देखलहुँ,
मिथिलानीक अजगुत संसार
दरभंगाक दरबार हॉल मे गूँजि,
उठल हुनक जयकार ।

ठाम ठाम समुह बनल अछि,
होई अछि रंगविरंगक काज
मिथिलानी सब निकलि गेली,
आब हाथ मे लऽ के जड़ैत मशाल।

जागू बाबू, जागू कक्का,
जागू अपन घर परिवार
बेटी बचाऊ आ बेटी पढाऊ,
मिथिला केँ तखने होयत उद्धार।

मैथिल छी तऽ मैथिली बाजू,
मिथिला के होई मे कोन लाज
अपने घर सँ शुरू करब,
तखने भेटत मिथिला राज्य।

मिथिला-मैथिली के उद्धार मे,
आऊ बढ़ाबू सब कियो हाथ
जागू मैथिल, जागू मिथिला,
जागू अपन सकल समाज।

■

जागू मैथिल जागू

✍ मधुकर

भारत देशक मानचित्र मे, मिथिला अछि गुमनाम,
भावी पीढ़ी बुझि ने पाओत, छल तिरहुत कोन ठाम?

सात कोटि अछि बजनिहार, मैथिली बिगत सम्मान,
भाषा रूप में पाबि सकल नहि, अपन उचित स्थान,
जगबियौ मिथिला मैथिल जागू,
मातृभूमि केर अभ्यूदय मे,तन-मन धन सँ लागू,
जागू-जागू मैथिल जागू...

अपन मातृभाषाक माध्यमे नेना नहि पढ़ि पावय,
टो-टा सिखय विदेशी बोली, प्रतिभा व्यर्थ गमाबय,
राज काज मे जेहि भाषा केर, नहि होइछ व्यवहार,
अपनहुँ बात कहैले सदिखन, अनकर हो दरकार,
कते दिन रहत ई स्थिति लागू। जागू-जागू मैथिल जागू।
जे भाषा नहि देश कोश केर, राज काज मे अंकित,
सरकारी अनुदान मान सँ, रहय सवर्था वंचित,
लेखक लोकनि व्यक्तिगत रुपेँ, करता कते प्रकाशित,
हो समग्र साहित्य ने पोषित, सर्वांगिण नहि वर्द्धित,
भाषा केर विकास मे लागूय जागू-जागू मैथिल जागू।

गीत कला साहित्य संस्कृति, सँ जे रहय विहीन.
विद्या ज्ञान ओ सकल संपदा, रहितहुँ ओ अछि दीन,
देथि महत्व ने मातृभूमि केँ, बिसरि देल निज भाषा,
मैथिल डाहि अपन घर 'मधुकर,' देखथि मात्र तमाशा,
करए विरोध जे मिथिला मैथिल, लोह धिपा मुँह दागू।
जागू-जागू मैथिल जागू। 2

■

मिथिला भेल अन्हार यौ

✍ एस. के. विद्रोही

जागू, हे मैथिल जागू! मिथिला भेल अन्हार यौ।
जाहि पावन धरती पर लक्ष्मी, सीता बनि भेल अवतार यौ।
जनक जतए हरवाहा बनलथि, खेती छल आधार यौ।
जनक जतए हरवाहा बनलथि, खेती छल आधार यौ।
मजदूर ओतए पलायन करथि, पेटो भेल पहाड़ यौ।।
जागू, हे मैथिल जागू! मिथिला भेल अन्हार यौ।
ऋषि-मुनि बनौलनि कुटिया, पावन नदीक किनार यौ।
शिक्षा-दीक्षा, तंत्र-मंत्र, दिव्य दर्शन केर संस्कार यौ।
जाग, हे मैथिल जागू, मिथिला भेल अन्हार यौ
भारती मंडन, वाचस्पति भेला कालीदास आ अयाची के विचार यौ
कवि कोकिल के बाते अनुपम, उगना संग घर-द्वार यौ
जागू हे मैथिल जागू! मिथिला भेल अन्हार यौ
अंग्रेजक कूटनीति सँ, मिथिलाक भेल दू फार यौ
मैथिल बसथि देश-विदेश मे, गाम-घरक बंद केबाड़ यौ
जागू, हे मैथिल जागू, मिथिला भेल अन्हार यौ
मैथिली आइ बिलखि रहल, सुनैत ने कियो पुकार यौ
मायक दूधक कर्ज चुकाबी, जाहि भाषा में भेटल दुलार यौ
जागू हे मैथिल जागू मिथिला भेल अन्हार यौ
काज-राज सरकारमर्जी शिक्षा भेल व्यापार यो
उद्योग-धंधा सब चौपट भए गेल, ककरो ने कोनो दरकार यौ
जागू हे मैथिल जागू मिथिला भेल अन्हार यौ
सनातनी जे राज बनल छल, ओकरो केलक विहार यौ
नै अछि उद्धार मिथिलाराज बिन, दैत छी हम हकार यौ
जागू हे मैथिल जागू मिथिला भेल अन्हार यौ

■

पाबि मनुष्यक देह रहब जा धाना खसौने, बनि कायर पुनि अपन पूर्वजक नाम हंसौने।
ताबत दुश्मन दशो दिशासँ रहत दबौने, सुख स्वतन्त्रता हेतु रहब एहिना मुँह बौने।।
पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने? अछि सलाइमे आगि, बरत की बिना रगड़ने?
बिसरय जे निज रूप तकर जग मे की सेखी? बकरीक डरे पडाय सिंह, सरकस मे देखी।।
- कविवर सीताराम झा

नो मोबाइल डे

✍ सदरे आलम गौहर

घर में रहितहु, नहि छी घर मे
भरि घर भरल लोक, तइयो छी हम असगर
एना बूझ पड़इऐ, जेना छी हम षमषान मे
वा कबरिस्तान मे, वा मरघट मे
जतय कोनो आवाज नहि, कोनो खुसुर फुसुर नहि
कोनो जीवनक उल्लास उमंग नहि
नहि कोनो वार्तालाप, नहि कोनो गप षप
एना बूझाइत छल जेना हम
घर में नहि, कोनो बन में छी, सुनसान जंगल में
जतय कोनो मनुखक अवर जाइत नहि,
निःशब्द, गुम सुम, कोनो आहटि नहि
एकटा खामोषी, एकटा चुप्पी, मुदा छी तँ हम घर में
तखन एना कियैक, किऐक भ' रहल अछि एहन अनुभूति
किएक हम घर में रहितहुँ घर में नहि छी
बौक बनल छी हमही नहि सउँसे घर
ई नहि जे हम निःसंतान छी, पत्नि नहि अछि
धीआ पूता नहि अछि, बेटा बेटी नहि अछि
अछि तँ सभ, मुदा सभ अछि कतय?
कोनो गाम गमात गेल अछि सभ
कोनो डयूटी पर गेल अछि सभ
घर में कोनो अप्रत्याशित घटना घटल अछि
घर में ककरो देहांत भ' गेल अछि?
नहि नहि ई सभ किछु नहि
घर में सभ हंसी खुषी अछि
सभ प्रसन्न अछि। सभ स्वस्थ अछि
तखन ई निःशब्द घर किएक
घर में सभ गोटे बौक छी की?
नहि सेहो नहि, सभ बाजै छी
तखन ई चुप्पी किएक, पत्नि चुप, बेटा चुप, बेटी चुप
एकर कारण एकेटा अछि, एकेहिटा एकर जबरदस्त कारण अछि
ओ कारण अछि मोबाइल, सउँसे घर मोबाइल में लागल अछि
पत्नि लागल छथि मोबाइल में, बेटा लागल अछि मोबाइल में
बेटीक हाथ में सेहो मोबाइल, आ सबहक कान में हेडफोन वा ब्लूटूथ
सबहक हाथ चलैत अछि, आंखि चलैत अछि
मुदा ककरो ठोर नहि चलैत अछि,
बुझाइत अछि जेना सभ क्यो बौक अछि
आ सोचने छलहुँ हम, आइ रवि अछि
आइ सभके फुसर्ति छैक
सउँसे घर बैसिके अपन सुख दुख बतियाएब
भूत, वर्ततान आ भविश्यक गप करब
मोन भरि बतियाएब, मुदा ई कि?
सभगोटे ठनेल अछि मोबाइल में
सभगोटे भ्रमण क' रहल अछि दोसर लोक में
जतय लगक लोक नहि देखइ दैत छै।
देखइ दैत छै दोसर गामक, दोसर षहरक
दोसर राज्यक,, दोसर देषक लोक।
ओकर सभक सुख, दुख, ओकर सभक हंसी मजाख,
ओकर सभक खिस्सा पिहानी।
हम जे सोझा मे छी
नहि देखाइ दै छियैक ओकरा सभकें।
नहि आभास होइ छै ओकरा सभके हमर उपस्थितिक।
अजिब समय आबि गेल अछि।
अजिब युग मे जी रहल छी हम सभ।
बेगरता लगतै तँ दसटा टाका नहि देतै
Facebook friend,
whatsapp वला मित्र, Instagram वला सेगी,
Youtube वला लोक सभ,
हमही देबै, भगवान नहि करै जे बीमार पड़ै।
बीमार पड़त तँ नहि औते Social media क लोक,
दवाई दारू, सेवा सुश्रुषा लेल
हमही करबै सब किछु
मुदा हम एखन कियो नहि।
सभ सोशल मीडिया।
तैं आइ हम निर्णय लेल
आइ सँ सप्ताह में एक दिन, रवि दिन
हमरा घर में रहत, नो मोबाइल डे
ओहि दिन ककरो हाथ में नहि रहत कोनो मोबाइल
नहि देखत किओ मोबाइल, सभटा नेट बंद।
चालू रहत केवल फोनक एनाइ जेनाइ।
घरक सभ लोक आपस में गपषप करत
सुख दुख बतियाएत, किछु लिखत पढ़त
सप्ताह मे एक दिन रहत।

पुरसौलिया, मधुबनी, बिहार
मो. 7715980144

■

मेनका मल्लिकक दू गोट कविता

हरियर

(सिरियाक बम धमाकामे मुइल नेनासभकें समर्पित)

नेना सभ कें स्कूल पठा
लागल छलि माय सभ
अपन-अपन दिन-दुनियांमे
सोचि रहल छलि
ओकर सभक भविष्यक वितान
देखि रहल छलि सपना
ओकरा सभकें पल्लवित-पुष्पित होयबाक।

आ तखने बम फटबाक आवाजक थर-थराहटिसं
कांपऽ लागलि धरती
छिड़िआ गेल-
मनुक्ख, महल आ गाछ-बिरीछ
बुकनी भऽ गेल-
पजेबा, गिट्टी आ छड़
शोणिता गेलीह धरती
लागि गेल बारुदक ढ़ेरी चारुदिस।

सुखायलो नहि छल नेनाक ढोंढ़ीक घाओ
माय सभ बिसरलो नहि छलि प्रसव पीड़ा।

मुदा, तोरा बुझल नहि हेतह
ओहि बारुदक ढ़ेरी पर एखनहुं
बांचल छैक किछु, जकरा
ताकि रहल अछि ओकर माय
माउसक लोथडाम्मे।

अपन थरथराइत करेजकें
सक्कत कऽ घुरा आनति
नेनासभक प्राण वायु
अबस्से तैयार करति
कतोक नव- नव पीढ़ी
जे पोछत धरतीक रक्तिम नोर
शोणितायल धरतीकें
बनाओत हरिअर कचोर

ओ छथि तं.....

उज्जर दप-दप आकृति
अनारक दाना सन एक रंग
बत्तीसीक सेट, रुईक फाहा सन उज्जर केश
झुलैत चाम, पहीरि लोअर आ
छिटदार टीशर्ट।
स्पोर्ट्स सूज, ताहि परसं
माथ पर हैट, करैत छथि वाक
भिनसर-सांझ।

धिआ-पुताक बीच, बनि जाइत छथि नेना
खेल-खेलमे किछु-किछु, रहैत छथि पुछैत
जे नहि बुझै तकरा, रहैत छथि बुझबैत
बनल रहैत छथि, ओकरा सभक प्रिय दादाजी।

ङ्त्येक दिन चाटि लैत छथि अखबार
देश दुनियाक रखैत छथि खबरि
हुनका रहने निश्चिंत, भे जाइत छथि घरक लोक
नहि रहै छनि चिन्ता, मेन गेट खुजल अछि की बन्न।

अधरतियोमे, अपनेसं उठि कऽ अबैत अछि
धिआ-पुता लग्घी, गहींर नीनमे सुतैत छथि
घरक सदस्य गण।

ओ कखनो नहि करैत छथि अनुभव
जीवनक उत्तरार्द्ध मे छी।

करैत छथि बागवानी, बुझैत छथि कोन पौधमे
चाही कतेक पानि आ, कतेक रौद
कहिया फुलायत कोन फूल, से सभटाक रखैत छथि जनतब
करैत रहैत छथि काट-छाट, लगबैत रहैत छथि नित्य
नव-नव पौध।, लागल रहैत छथि सांगहमे।

जीवनक एहि पड़ाव पर, हमरा लगैत अछि
बयसक गिनती सं आजाद छथि ओ।



डॉ. विनय विश्वबंधुक चारि गोट कविता

1

दर्द दबाई भेटि जायत जत्त'-तत्त'
मुदा फाटल हृदय जुड़ायव आल क्षत',

बेस! सेहन्ता पोसने बैसल रही हम,
मुदा ओ सेहनता बुझु आब 'पूरत कत',

दिन-दनियाँ बदलन अछि जेना सगरो
आबू पुरना जमाना सँ भेंट होयत छल'

नहि आछ भरोक्ष आब अपनहुं पर
तखन आन पर भरोसा हम करब कत्त',

जेना-तेना बोझ जीबि रहल सगरो
नीक जकां जिनगी बीतत से आब' कत्त',

समयक मार सँ सभ त्रस्त जकां भेल
अधलाहे के नीक आ शुध्धा के नीक कत्त',

2

जिनगी जीबि हमसभ सगरो नीक जकां
जिनगी ओरिआएत सगरो बुझु रहरहां,

कथनी आ करनी मे से तालमेल सगरो
अहित नहि करी ककरो एत्त' हम-अहाँ

नकी कयने नीक होइछ सगरो बुझी
एहि गप्प पर ध्यान ही हम-अहाँ

मेहनति कयने सफलता भेटत अब्बसे
जं त्यागि आलस्य कैं एत' हम-अहाँ

त्याग, तपस्या, धर्माचरण केर महत्त्व पैघ
एहिबाव कैं बुझी सगरो हम-अहाँ,

सत्य, सदाचार, स्वाभिमान मे रहलकरी
अधमंक हाहों मे नँ जाइ हम-अहाँ

'विश्वबंधु' केर विनती अछि सम्पूर्ण जनमानस सँ
जे एहि सभ गप्पा पर अमलकरी हम सभदिना,

3

गाम-घरक स्थिति जेना नव सन भेल अछि
सभ्यता आ संस्कृति-जेना अनभुआर सन अछि,
बेना-भुटका सभी आब पश्चिमी सभ्यता मे
मिथिलांचल शान जेना अनचिन्हार अछि
छल कतेक सुभरक्षक सम्पूर्ण मिथिलांचन छय
मुदा ओहि मर्यादा केर ध्यान आब 'कत्त' अछि
यही जे पढ़ि एतुक्का इतिहास आ भूगोल नीकजकां
तं जानम आपूर्व मर्यादा केर सान एतहि रहल अछि
आबि जोगाबी हमसभी मिलिकए ओद्धि मर्यादा कें
जाहि मान-मर्यादा केर झंडा अहाँ सँ रल अछि
'विश्वबंधु' केर आग्रह अहि एतुक्का जन-जन सँ
जे अपन गौरव-गाान कें सुरक्षित रखबाक अछि'

4

गाम-घरक संस्कृति कें बचायब अछि जरूरी सगरो
नहि वे अपन संस्कृति भऽ सक्षुण कोनाड़ राखब सगरो
नदी, गाछ, इनार, पोखरि सभ भेल जा रहक निपत्त
एहि वस्तुजात सभ सँ महत्ता छल सगरो
सरकारी क्रिया-कलाप मात्र मीडिया आ दूरदर्शन पर
वास्तविकता सँ कोसी दूर अछि व्यवस्था सगरो
आबि हमसभ मिलि-बैझि चिन्तन आ मनन करी
जे हमर घरोहर सभ सुरक्षित रहत कोनहि सगरो
बुझु देश-दुनियाँ बदहाल जा रहल अछि सगरो
अपन रीति-रेवाज, भाखा, संस्कृति परमपरा जोगबी सगरो
कल्छि भए नेना-भुटका सभ कोना संद्धतिकैं
जखन अपन भाखा आ संस्कृति मेय जायत सगरो

रेड क्रॉस रोड, मधुबनी
पत्रलय एवं जनपद-मधुबनी
पिन- 847211 (बिहार)
चलन्त- 8987331435

